

गोमटेश्वर सहस्राब्दी महोत्सव दर्शन

प्रेरणा

कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी

परिकल्पना एवं मार्गदर्शन

श्रावकशिरोमणि, समाजरत्न, साहु श्रेयांस प्रसाद जैन

लेखन

नीरज जैन

प्रकाशन

श्रवणबेलगोल दिगम्बर जैन मुज़रई इन्स्टीट्यूशंस मैनेजिंग कमेटी,
श्रवणबेलगोल (कर्नाटक)

प्रकाशन सहयोग

भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

गोमटेश्वर सहस्राब्दी महोत्सव-दर्शन 1981

लेखन : नीरज जैन

प्रकाशन
श्रवणबेलगोल दिगम्बर जैन मुज़रई इन्स्टीट्यूशंस मैनेजिंग कमेटी
श्रवणबेलगोल (कर्नाटक)

प्रकाशन-सहयोग
भारतीय ज्ञानपीठ, बी/45-47, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली

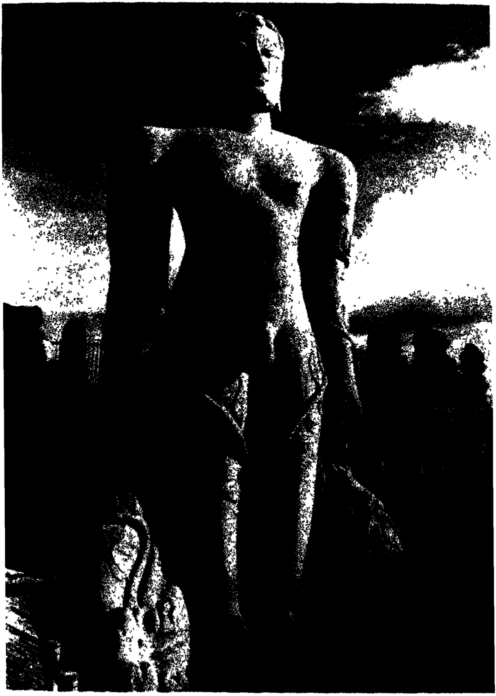
मुद्रण
अंकित प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा, दिल्ली

चित्रमुद्रण
प्रभात आफसेट प्रेस, दिल्ली

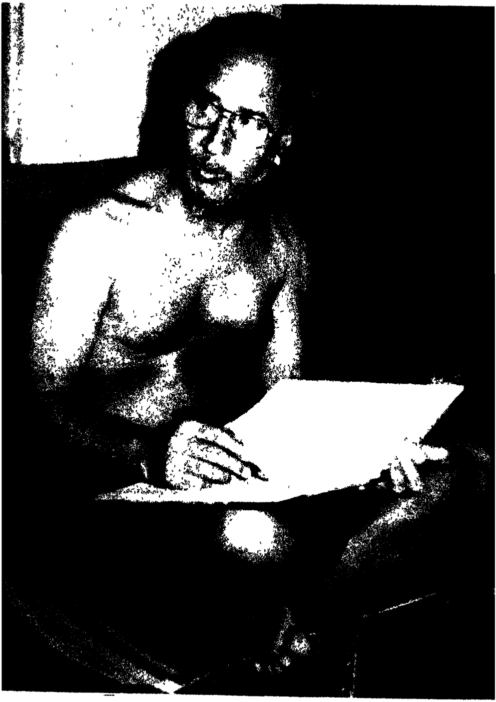
साज-सज्जा
हरिपाल त्यागी

छायाचित्र
टाइम्स ऑफ इण्डिया
डॉ० सरयू दोशी
कीर्ति, मंगलोर
हरीश जैन, दिल्ली
सुरेश इगले, हुबली
एम.बी. पाल, श्रवणबेलगोल

श्रुतपंचमी : 4 जून 1984
प्रथम संस्करण
Rs. 150/-



1 गोमटेश बाहुबली



2 महोत्सव के प्रेरणास्रोत एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी महाराज

सिद्धान्तचक्रवर्ती एलाचार्य
मुनिश्री विद्यानन्दजी महाराज

भारत-भ्रमण करता हुआ जनमंगल महाकलश कर्नाटक की सीमा पर शेडवाल पहुँचा। महाकलश के संचालक कार्यकर्ता वहाँ एक छोटे से घर में गये। उन्होंने उस घर की माटी का वन्दन किया और गृहिणी वृद्धा को कलश-वाहन पर बिठाकर, कार्यकर्ताओं की वह मण्डली, शेडवाल की सड़को पर घण्टों तक नाचती रही। उनकी प्रसन्नता का कारण यही था कि पचपन वर्ष पूर्व इस ग्राम में, श्री कालप्पा अण्णप्पा उपाध्ये के धार्मिक वातावरण वाले इसी घर में, इसी सरल और श्रद्धावती जननी 'सरस्वती' की कोख से एक होनहार बालक का जन्म हुआ था। 22 अप्रेल 1925 को जन्मा कर्नाटक की धरती का वही सपूत, अपने पुरुषार्थ से विश्वधर्म का सहारा लेकर, आज एक राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त संत के रूप में, साधना की अनेक सभव ऊँचाइयो को छूता हुआ, एलाचार्य मुनि विद्यानन्द के नाम से भगवान महावीर के शासन की प्रभावना मे संलग्न है।

कुलदीपक के जन्मते ही कालप्पाजी ने भविष्य के लिए समृद्धि के अनेक सपने सजोकर उन सपनो का नाम रखा 'सुरेन्द्र'। इस नामकरण के समय भवितव्य के आनन पर व्यग्य की जो मुस्कान सहसा नाच उठी होगी, उसे तब शायद कोई देख नहीं पाया। पिता होकर भी स्वय कालप्पा तक नही जान पाये कि कृष्णपक्ष की अँधेरी अमा मे जो ज्योतिवत नक्षत्र उनके वश मे उदित हुआ है, वह अपने जीवन भर अज्ञान, अधर्म और अनीति के अधकार से जूझता हुआ, विवेकी जनो के लिए 'प्रकाश-पुज' बनकर उनका मार्गदर्शन करेगा। स्वाति नक्षत्र मे जो सरस्वती की कोख से जन्मा है, वह सुरेन्द्र नही 'सारस्वत' बनकर ही अपनी जननी को गौरव दिलायेगा।

सामान्य बल बुद्धि वाले विद्यार्थी की तरह दानवाड के स्कूल मे प्रारम्भिक शिक्षण प्राप्त कर बालक सुरेन्द्र ने तरलगाँव मे सगीत का अभ्यास किया। आगे पढ़ाई के लिए अपने ही गाँव के स्कूल मे प्रवेश दिलाया गया पर, मराठी माध्यम के अभ्यासी मन को कन्नड का प्राणायाम अनुकूल नही लगा। तब उसे वही 'शान्तिसागर आश्रम' मे आश्रय मिला। बस, यही से सुरेन्द्र की जीवनधारा का प्रवाह नयी दिशाओ की ओर मुडना प्रारम्भ हो गया। अपने वर्तमान के प्रति असंतोष और अप्रगट अनागत की जानने-देखने की तृषा जैसे उसकी जीवन-सगिनी ही बन गई। फिर उस तृषा ने जितना भटकाया, उसका लेखा-जोखा आसान नही है। कभी बागवानी सीखी, कभी तैरने मे महारत हासिल की। कभी पूना की आयुध निर्माणी मे काम किया, पर अधीरता और असंतोष की प्रवृत्ति ने कही पैर टिकने नही दिये, परन्तु यह अवश्य हुआ कि पूना जैसे नगर का प्रवास बालक सुरेन्द्र के दृष्टिकोण मे कुछ व्यापकता का समावेश कर गया। अब रोटी से आगे राष्ट्र तक और आजीविका से आगे आत्मा तक उसकी कल्पनाएँ दौड़ने लगी।

1942 मे 'भारत छोडो' आन्दोलन के समय एक रात्रि को तरुण सुरेन्द्र ने अपने कुछ साथियो के साथ गाँव की चौपाल पर तिरंगा फहरा दिया। स्वाधीनता के प्रति इतना प्रेम-प्रदर्शन, उन दिनो सर्वनाश को न्यौतने के बराबर था। परिवार पर विपत्ति के बादल मँडराने लगे जिन्हे टालने के लिए उसने चुपचाप, घर छोड़कर एक शक्कर कारखाने मे छद्म नाम से नौकरी कर ली। वही ऐनापुर के पाटिल परिवार के सपर्क मे उसे कुछ जैन ग्रन्थ पढ़ने

का सुयोग प्राप्त हुआ । इसी बीच सुरेन्द्र को मोतीझिरा का असाध्य रोग हुआ जो बड़ी कठिनता से ठीक हो सका । अज्ञातवास और अस्वस्थता मे उसे अनेक अनुभव हुए थे अत संसार के रागरंग से सुरेन्द्र का मन उपराम होने लगा । माता पिता ने विवाह का प्रस्ताव किया पर वह उस जाल से अपने आप को बचा ले गया ।

शेडवाल मे 1946 मे आचार्य महावीरकीर्ति का चातुर्मास हुआ । इस सुयोग का सुरेन्द्र ने पूरा लाभ उठाया । उसकी ज्ञान-पिपासा, निष्ठा और जिज्ञासा ने आचार्यश्री को भी प्रभावित किया । एक दिन सुरेन्द्र ने आचार्य महाराज से क्षुल्लक दीक्षा का निवेदन किया । आचार्यश्री ने उसे समझाया कि गृह त्याग के लिए माता-पिता की अनुमति आवश्यक है । सुरेन्द्र ने प्रयास तो किया, पर पिता का आक्रोश और माता की ममता, जटिल बन्धन की तरह उसके मार्ग मे बाधक बने रहे । चातुर्मास के उपरान्त, जब सघ का विहार हुआ तब, माता पिता से अन्तिम बिदा लेता हुआ युवक सुरेन्द्र आचार्य महावीरकीर्ति का अनुगामी बन सघ के साथ विचरण करने लगा । गुरु के समक्ष दीक्षा का अनुरोध भी वह दोहराता रहा । अत मे 1946 मे फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशी को उसके जीवन का वह शुभमुहूर्त आ ही गया जब श्री महावीरकीर्तिजी ने उसे दीक्षित करके क्षुल्लक का श्रावकोत्तम पद प्रदान कर दिया । सुरेन्द्रजी अब क्षुल्लक पार्श्वकीर्ति हो गये थे । स्वाध्याय और साधना ही अब उनकी दिनचर्या थी । कोण्णूर मे 1947 का चौमासा बिताने के बाद आचार्यश्री ने पार्श्वकीर्ति को 'शान्तिसागर छात्रावास' का अधिष्ठाता पद ग्रहण करने का आदेश दिया जिसे उन्होंने 1948 से 1956 तक, आठ वर्ष कर्मठता के साथ सम्हाला ।

1957 मे पार्श्वकीर्तिजी का चौमासा हुमचा मे हुआ । उसके बाद उनकी उत्तर भारत की यात्रा प्रारम्भ हुई । 58 और 59 के दो चौमासे सुजानगढ मे बिताकर उन्होंने हिन्दी पढने, लिखने और बोलने का अभ्यास किया । फिर सात वर्ष तक जगह जगह विचरते हुए वे धर्म की प्रभावना करते रहे । सन् 1962 मे दिल्ली मे उन्हे आचार्य देशभूषणजी की शरण प्राप्त हुई । उनकी पात्रता का अनुमान करके आचार्यश्री ने मुनि दीक्षा की उनकी याचना स्वीकार कर ली और 25 जुलाई 1963 को, दिल्ली के सुभाष मैदान मे, अपार जन समूह के समक्ष क्षुल्लक पार्श्वकीर्ति को जैनेश्वरी दीक्षा देकर गुरु ने उनका नाम 'मुनि विद्यानन्द' घोषित किया । इस प्रकार इस बालब्रह्मचारी साधक को, अड़तीस वर्ष की आयु मे मुनिपद का गौरव प्राप्त हुआ । मुनि दीक्षा प्राप्त होते ही वे अपने नवीन नाम को सार्थक करने मे लग गये । प्रयत्नजन्य संस्कृत, प्राकृत और उत्कृष्ट हिन्दी का प्रसाद उनके व्याख्यानो, वार्ताओ और लेखन को गभीर तथा आकर्षक बनाने लगा । उनकी सभा मे तीस-चालीस हजार की उपस्थिति सामान्य बात हो गई । मुनिश्री की लिखी बीस से अधिक पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है ।

दिगम्बर मुद्रा धारण करने के उपरान्त, 1963 से 83 तक, विद्यानन्द मुनिराज का बीस वर्षों का इतिहास, भगवान महावीर द्वारा निर्दिष्ट विश्वधर्म की व्यापक प्रभावना का ही इतिहास कहा जा सकता है । आसेतु हिमालय उनकी यात्राओ से धर्म-प्रचार और जैन शासन का प्रभाव सर्वत्र फैलता-बढ़ता रहा है । जयपुर, फिरोजाबाद, दिल्ली, मेरठ, बड़ौत और सहारनपुर मे एक एक चातुर्मास व्यतीत करते हुए 1969 मे उनके पग हिमालय की

ओर बढ़े। फिर तो अनेक ऐसी अनजानी हिमाच्छादित घाटियों मे, जहाँ कभी किसी दिगम्बर साधु का विहार सुना भी नहीं गया था, मुनि विद्यानन्दजी ने महावीर का जयघोष किया। समुद्रतल से सात हजार फुट की ऊँचाई पर श्रीनगर मे उनका एक चातुर्मास भी हुआ। इसके बाद मालवा मे विचरण करते हुए 1971 में इन्दौर मे उनका ऐतिहासिक चौमासा हुआ। अब 'मुनि विद्यानन्द' राष्ट्रीय ख्याति का एक प्रातःस्मरणीय नाम बन चुका था। श्रीमहावीरजी और मेरठ मे काल यापन करते हुए मुनिश्री 1974 में पुन. दिल्ली पधारे।

विश्वधर्म के रूप मे अहिंसा की प्रतिष्ठा, जैन शासन की देशव्यापी प्रभावना और महावीर के अनुयायियों के बीच समन्वय के प्रयास, हमारी वर्तमान पीढ़ी को मुनि विद्यानन्दजी की प्रमुख देन कही जा सकती हैं। भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव वर्ष की अचिंत्य सफलता मे उनका सुविचारित मार्गदर्शन रहा है। उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए, दिल्ली की जैन समाज ने उन्हे उसी वर्ष 'उपाध्याय' पद से विभूषित किया।

1974 से 78 तक पाँच वर्ष दिल्ली मे और उसके आस-पास विचरण करते हुए उपाध्याय मुनि विद्यानन्दजी ने धर्म प्रचार की अनेक योजनाओ को अपना कुशल मार्गदर्शन और परामर्श दिया। समयसार की मूल गाथाओ मे प्रचलित पाठभेदो पर विचार करते हुए उन्ही के सान्निध्य मे उसकी एक प्रामाणिक आवृत्ति प्रकाशित की गई। इसी बीच समयसार, द्रव्यसग्रह तथा छहढाला आदि के कैसेट तैयार कराने का महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ। तभी उन्हें 'एलाचार्य' उपाधि से अलंकृत किया गया। उन्हीं के समीप बैठकर श्रवणबेलगोल के 'बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव' की योजना को अन्तिम रूप दिया गया। श्रवणबेलगोल के भट्टारक स्वस्तिश्री चारुकीर्ति स्वामीजी ने स्वय दिल्ली पधारकर एलाचार्यजी से महोत्सव के लिए श्रवणबेलगोल पधारने की प्रार्थना की, जिसे स्वीकार करते हुए. सोलह वर्ष के पश्चात् मुनिश्री ने दक्षिणापथ की ओर पयान किया।

दक्षिण प्रवास के समय 1979 मे इन्दौर मे एलाचार्यजी का दूसरा चौमासा हुआ। यहीं उनके प्रति भक्ति का प्रतीक 'दिव्यावदान-आलेख' उन्हे समर्पित किया गया। सर्व प्रथम यही उनके लिए 'सिद्धान्त-चक्रवर्ती' सम्बोधन का प्रयोग उनके भक्तो ने किया। सात नवम्बर 1979 को इन्दौर से विहार करके बम्बई होते हुए एलाचार्य, उपाध्याय मुनि विद्यानन्दजी ने 20 जुलाई 1980 को श्रवणबेलगोल मे प्रवेश किया। सहस्राब्दि महोत्सव की सयोजना मे उनकी जो महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है, वह प्रसगानुसार इस ग्रन्थ मे यथास्थान अकित है। इस पावन तीर्थ पर दो वर्षावास व्यतीत करके 20 दिसम्बर 81 को श्रवणबेलगोल से चलकर, उन्होंने फरवरी 82 मे धर्मस्थल मे बाहुबली के प्रतिष्ठा कार्यक्रमो का अवलोकन किया। अगले चातुर्मास के लिए एलाचार्यजी ने अपने दीक्षागुरु आचार्य देशभूषणजी की कर्मस्थली कोथली को चुना। फरवरी 83 मे बानवे वर्षीय, तपस्वी, वयोवृद्ध और ज्ञानवृद्ध साधक, पूज्य आचार्य समन्तभद्र स्वामी के 'दिव्यावदान-समारोह' के अवसर पर उन्हे नमस्कार करने के लिए मुनिजी कुम्बोज बाहुबली पधारे। 1984 का चातुर्मास बम्बई मे होने जा रहा है, अतः यथाशीघ्र पुनः उत्तरांचल को उनके साक्षात् सम्पर्क का सौभाग्य प्राप्त होगा। □



3. 'कर्मयोगी' स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी
अध्यक्ष, एम डी जे एम आई मैनेजिंग कमेटी, श्रवणबेलगोल

स्वस्तिश्री कर्मयोगी
चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी

जैन मठ श्रवणबेलगोल के सम्प्रति पीठासीन भट्टारक, कर्मयोगी चारुकीर्ति स्वामीजी का नाम, और उनका सुदर्शन व्यक्तित्व, इस पावन तीर्थ के साथ, हमारी पीढ़ी के लिए ऐसा घुलमिल गया है कि श्रवणबेलगोल की कल्पना करते ही, स्वामीजी की छवि साकार होकर मस्तिष्क मे छा जाती है। कोई व्यक्ति अपनी कल्पना-शीलता, अपनी सूझबूझ और अपने दृढ सकल्पो के बल पर, किसी तीर्थ के उत्कर्ष की दिशा मे कितना कुछ कर सकता है, श्रवणबेलगोल के संदर्भ मे स्वामीजी इसका श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

उत्तरी कनारा जिले मे सिद्ध क्षेत्र वारंगा की पावन भूमि पर, श्री चन्द्रराज इन्द्र और श्रीमती श्रीकान्ते के घर, तीन मई 1949 को स्वामीजी का जन्म हुआ था। उनका नाम रत्नवर्मा रखा गया। तीन भाइयो और तीन बहिनो का यह भरा-पूरा परिवार आज भी वारंगा का सुसस्कृत, सुखी और श्रेष्ठ श्रावक परिवार माना जाता है। बाल्यावस्था मे रत्नवर्मा को कन्नड, सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी और अग्रेजी का थोडा-थोडा अभ्यास करने का अवसर मिला था। कन्नड तो उनकी मातृ-भाषा ही है, पर निरन्तर अभ्यास के द्वारा अब उन्होने सस्कृत, हिन्दी और अग्रेजी पर भी अच्छा अधिकार कर लिया है।

सन् 1969 मे, जब रत्नवर्मा अपनी आयु के बीस वर्ष भी पूरे नही कर पाये थे और कारकल के गुरुकुल मे उनका अध्ययन चल रहा था, तभी श्रवणबेलगोल के तत्कालीन भट्टारक भट्टाकलक स्वामीजी ने उन्हे अपना उत्तराधिकारी चुन लिया था। इस पद के लिए उनका चयन एक नाटकीय घटना की तरह घटित हुआ जिसका उल्लेख 'जैन मठ का इतिहास' शीर्षक के अन्तर्गत आगे किया गया है। श्री रत्नवर्मा प्रारम्भ से ही मृदु-स्वभावी, सकोची, विनम्र किन्तु दृढ सकल्पी रहे है। समग्र मे देखे तो उनका चरित्र, एक आस्थावान जैन साधक का चरित्र है। भट्टारक पद के माध्यम से जैन शासन की प्रभावना और अतिशय प्रभावना, उनके जीवन का पवित्र अभिप्राय है। स्वामीजी के हर पुरुषार्थ मे, उनकी हर सयोजना मे, यह पवित्र प्रयोजन अनिवार्यतः उपस्थित रहता है। देश-विदेश मे विख्यात इस विशाल तीर्थ के प्रबधकीय और प्रकाशकीय उत्तरदायित्वो का कुशलता पूर्वक निर्वाह करते हुए भी, चारुकीर्ति स्वामी जी ने अपने आचरण मे दृढता, समता और सरलता का जो अद्भुत समन्वय किया है, कठिन परिश्रम करके ज्ञानार्जन मे जो सफलता प्राप्त की है और बीच-बीच मे एकान्त मौन साधना के द्वारा अपने आत्मबल का जो विकास किया है, वह अपने लक्ष्य के प्रति उनके समग्र समर्पण का ही फल है। वास्तव मे ऐसे ही धुन के पक्के लोग अपने जीवन मे कुछ कर पाते हैं।

भट्टारक पद पर आसीन होते ही चारुकीर्ति स्वामीजी ने क्षेत्र की अभिवृद्धि के लिए सक्रिय होकर कार्य करना प्रारम्भ कर दिया था। सन् 1971 मे, एलाचार्यजी के इन्दौर चातुर्मास के माध्यम से, उत्तर भारत से मठ के सम्पर्कों का नवीनीकरण प्रारम्भ हुआ। स्वामी जी ने उन रिश्तो को दिन दूना-रात चौगुना बढाकर क्षेत्र के लिए कल्पतरु जैसा फलदायक बना दिया। महावीर निर्वाण महोत्सव वर्ष मे कर्नाटक मे 'धर्म-चक्र प्रवर्तन' का नेतृत्व करते हुए, 'श्री-विहार' सयोजन का प्रमुख बनकर उन्होने कर्नाटक की जनता के मन मे अपने लिए सम्मान पूर्ण स्थान बनाया। सन् 1976 मे सिंगापुर मे आयोजित एशियाई धर्म

और शान्ति सम्मेलन मे, तथा बाद मे न्यूयार्क के प्रिंसटन टाउन मे सम्पन्न विश्व शान्ति सम्मेलन मे, जैन धर्म का सरल और सुग्राह्य प्रतिपादन करके स्वामीजी ने समुद्र पार तक श्रमण संस्कृति की ध्वजा फहराई।

गोमटस्वामी का प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि महोत्सव एव महामस्तकाभिषेक, जैन मठ की प्रबन्ध क्षमताओ को देखते हुए, सचमुच बहुत बडा आयोजन था। वैसे भी बारहवे वर्ष होने वाला मस्तकाभिषेक, मठ का विशालतम आयोजन होता है, फिर यह तो उससे कई गुना बडा और अभूतपूर्व कार्य था। पीठासीन भट्टारक ऐसे समस्त आयोजनो की धुरी होते हैं। स्थापना से लेकर समापन तक पग-पग पर उन्हे सतर्क, और सक्रिय रहना पडता है, तभी ऐसे कार्य सफल हो पाते हैं। स्वामी जी को ऐसे आयोजनो का कोई पूर्व अनुभव नही था, अतः इस महोत्सव को स्वामीजी की क्षमताओ का परीक्षा-काल कहा जा सकता है।

चारुकीर्ति स्वामीजी ने इस आयोजन को सम्पूर्ण दैहिक तथा मानसिक एकाग्रता के साथ, श्रम-साध्य मंत्र की तरह सिद्ध किया। उन्होने जैसी आसानी के साथ बडी बडी कठिनाइयों को पार किया, जिस निर्भीकता पूर्वक, स्वयं निरुद्विग्न रहते हुए, अनेक बार विषम परिस्थितियो का सामना किया, और जिस दक्षता के साथ अपने दायित्वो को निभाया, वह सब सचमुच श्लाघनीय था, स्तुत्य था। उनका प्रभावक व्यक्तित्व सारे मेले पर छाया रहा। जन-मानस मे उनकी सौम्य छवि प्रति दिन अधिक-अधिक गहराई से अंकित होती रही।

इस महोत्सव के सदर्भ मे स्वामीजी का पुण्य भी बडा प्रबल रहा। दस वर्ष के कार्यकाल मे उनके सम्मोहक व्यक्तित्व और सौजन्यपूर्ण व्यवहार के कारण पूरे देश की जैन और जैनेतर जनता मे उनके प्रति सम्मान की भावना निर्मित हो गई थी। पग पग पर उन्हे सहयोग और समर्थन मिल रहा था। वास्तव मे वह समर्थन ही उनकी सबसे बडी शक्ति थी। एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी का कुशल मार्ग-दर्शन और अनेक पूज्य आचार्यों-मुनिराजो का आशीर्वाद उनके साथ था। धर्मस्थल के श्री वीरेन्द्र हैगडे अपने परिवार और दल-बल सहित हर समय उनकी सहायता मे सलग्न थे। सकेतमात्र से अतरग का अभीष्ट हृदयगम करके, तदनुकूल व्यवस्था के लिए तत्काल तत्पर, विश्वसेन जैसा विश्वस्त सहायक, सदा छाया की तरह उनका अनुगामी रहता था। उधर मैनेजिंग कमेटी के उपाध्यक्ष के रूप मे सेठ लालचन्द हीराचन्द सा नियत्रणप्रिय सहकारी उनके पार्श्व मे बैठा था। परन्तु स्वामीजी के लिए एक और बड़ा, शायद सबसे बड़ा, शुभ सयोग यह था कि महोत्सव समिति के अध्यक्ष के रूप मे श्रावक-शिरोमणि साहु श्रेयांसप्रसाद जैसा उदार, सक्षम, विवेकवान और प्रभावशाली सरक्षक उन्हे प्राप्त हुआ था। पाँच सप्ताह तक वहाँ रह कर मैंने स्वय यह अनुभव किया कि साहुजी के अध्यक्षीय आवास के परिसर मे सारी समस्याओ का समाधान प्रस्तुत रहता था। कल्पतरु की छाया के समान, उस समर्थ सरक्षक की छाया मे, सारी समस्याओ का निर्मूलीकरण स्वयमेव होता चला जाता था। समस्या चाहे आर्थिक हो या राजनैतिक, धार्मिक हो या सामाजिक, किसी की व्यक्तिगत हो या सार्वजनिक, छोटी हो या बडी, उसकी सूचना साहुजी के कानो तक पहुँचा देने मात्र से उसका समुचित समाधान सदैव वहाँ होता रहा। यहाँ यदि मैं यह कहूँ कि अपने स्नेहशील अध्यक्ष की उपस्थिति का एहसास स्वामीजी

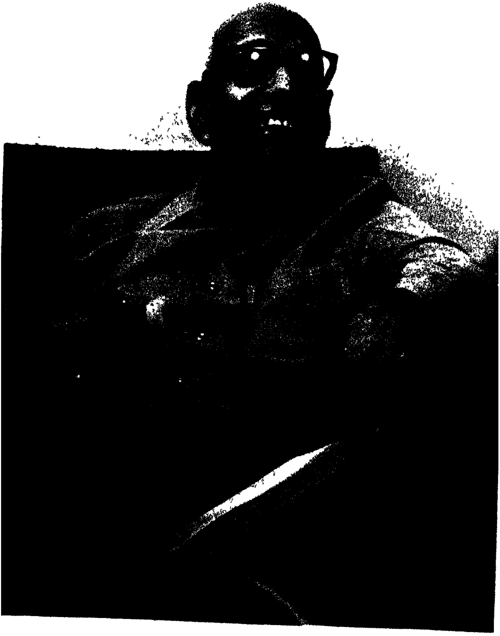
के लिए, और सारे कार्यकर्ताओ के लिए, यहाँ तक कि शासकीय अधिकारियो के लिए भी, सदैव सुरक्षा, साहस और प्रेरणा का स्रोत रहा, तो यह कोई अतिशयोक्ति नही होगी । हाँ, सफलता के भागीदारो की यह सूची तब तक अधूरी रहेगी जब तक उसमे उन हजारो ज्ञात-अज्ञात कार्यकर्ताओ का नाम न गिन लिया जाय जो श्रवणबेलगोल मे और उससे बाहर भी, दूर दूर तक इस महोत्सव की सफलता के लिए अपना महत्त्वपूर्ण योगदान अर्पित कर रहे थे ।

इस महोत्सव की सफलताओ के सदर्भ मे दिगम्बर जैन समाज के कर्णधारो ने जब निकट से स्वामीजी के अथक परिश्रम का आकलन किया और उनके भीतर की अशेष क्षमताओ का दर्शन किया, तब उन्ही ने उनके लिए 'कर्मयोगी' उपाधि का चयन किया । इसीलिए तो 21 फरवरी को जब श्रीमती इन्दिरा गाधी ने स्वामीजी को सर्वप्रथम 'कर्मयोगी' कहकर नमन किया, तब मैंने लिखा था कि—"इस सम्बोधन मे तनिक भी अतिशयोक्ति नही है । यह उपाधि सही अर्थो मे स्वामीजी का 'स्वभुजोपार्जित' अलकरण है । उनका निखरता व्यक्तित्व जैन शासन के लिए अनेक सुखद आश्वासनो से परिपूर्ण है ।"

स्वामीजी का व्यक्तित्व अनेक विलक्षणताओ से ओत प्रोत है । एक ओर मैं उन्हे इतना स्नेहिल और चिन्ताशील पाता हूँ कि दूर से आया हुआ अपरिचित दर्शक भी, और समाज का सामान्य कार्यकर्ता भी, उनकी निकटता और उनके स्नेह से गौरवान्वित हो रहा है, वही दूसरी ओर मैंने उनका वह निस्पृह और उदासीन रूप भी देखा है कि इस महोत्सव के लिए पधारे हुए, उनके गृहस्थावस्था के बन्धु-बान्धव, और इस पर्याय के माता-पिता भी, सामान्य यात्रियो की तरह जन समूह का अग बनकर ही श्रवणबेलगोल मे रहते रहे । कही और कभी उन्हे विशिष्ट पुरुष की तरह, न तो स्थापित किया गया, और न किसी को ऐसा करने दिया गया । देश की सबसे बडी जैन पीठ पर विराजमान इस महापुरुष के आचरण मे, धर्माध्यक्ष के नाते साधर्मी के प्रति अगाध वात्सल्य, मठ के शीर्षस्थ अधिकारी के नाते कडा अनुशासन, और एक साधक के नाते कठोर आत्मानुशासन की झलक पग पग पर दिखाई देती है ।

इस सब के बावजूद, जिनवाणी के प्रति दृष्टि सम्पन्न मुमुक्षु जैसी श्रद्धा और निरभिमानी विद्यार्थी जैसी जिज्ञासा, सदैव उनके आनन पर अकित रहती है । वही उनके अतरग की सरलता और नम्रता को प्रतिक्षण व्यक्त करती रहती है । मठाधीश की गरिमा से मण्डित उनका सामान्य व्यक्तित्व, या यो कहें कि उनका 'कर्मयोगी' रूप, श्रवणबेलगोल के हर यात्री को सुलभ है, परन्तु जिनागम के गहन अध्येता और चिन्तक जिज्ञासु के रूप मे, अपने आप से सघर्ष करता हुआ, स्वामीजी का विशिष्ट व्यक्तित्व कभी कदाच ही किसी किसी को देखने को मिल पाता है । मेरी ऐसी धारणा है कि उनके भीतर के इन दोनो परस्पर विरोधी व्यक्तित्वो को साथ मिलाकर देखे बिना, चारुकीर्ति स्वामीजी का वास्तविक परिचय पा लेना सभव नही है ।

□



4 श्रावकशिरोमणि साहु श्रेयांसप्रसाद जैन

अध्यक्ष, भगवान बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति, श्रवणबेलगोल

श्रावकशिरोमणि, समाजरत्न, समाजभूषण साहु श्रेयांसप्रसाद जैन

'श्रेयास' नाम ही मानव-सस्कृति के आदि-सस्थापक, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के उस पावन प्रसग से जुडा हुआ है, जहाँ उन्हे एक वर्ष की निराहार तपस्या के उपरान्त, गन्ने का मधुर रस देकर राजा श्रेयास ने 'प्रथम आहारदान' का यश प्राप्त किया। सस्कारो मे श्रद्धा की पृष्ठभूमि, स्वभाव मे इक्षुरस सा माधुर्य और जीवन की कल्याणकारी प्रवृत्तियो मे से निष्पन्न हुआ सहज श्रेय, इन तत्वो के समन्वित सुयोग का ही नाम है श्रेयासप्रसाद जैन।

उत्तरप्रदेश के नजीबाबाद नगर मे, 3 नवम्बर, 1908 को साहु परिवार मे जन्मे श्रेयासप्रसादजी का, 75वे जन्मदिन के उपलक्ष्य मे नवम्बर 83 मे, बम्बई मे सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। इस आयोजन मे जिनका सक्रिय योगदान रहा, वे देश के विख्यात औद्योगिक घरानो के शिखरस्थ नाम थे। साहित्यिक, सास्कृतिक और कलाक्षेत्रो के विशिष्ट जनो की, तथा जैन-जगत के समस्त सम्प्रदायो के अगनित व्यक्तियो की श्रद्धासिक्त प्रेमाभिव्यक्ति जिसे प्राप्त हुई, उसके व्यक्तित्व और कृतित्व पर समाज को गौरव होना स्वाभाविक है।

साहुजी की जीवनयात्रा के आयाम इतने विविध हैं, और उनमे प्रत्येक आयाम इतना समृद्ध है, कि उनमे से यहाँ कुछेक का सकेतमात्र ही किया जा सकता है। बालपन मे धार्मिक और चारित्रिक सस्कारो के निर्माण मे धर्मपरायणा, वात्सल्यमूर्ति, माता मूर्तिदेवी का स्नेहिल अनुशासन, तरुणाई मे व्यक्तित्व के बहुमुखी विकास के बीच राष्ट्र और समाज की मिली-जुली सस्कृति के उज्ज्वल पक्षो का बोध, और जमीदारी के वशानुगत कार्यकलापो का व्यक्तिगत अनुभव, उनके व्यक्तित्व का अग बनता गया। स्वाधीनता सग्राम के साथ भावात्मक लगाव और अनेक स्वाधीनता सेनानियो के साथ सक्रिय सहयोग रहा। 'भारत छोडो आन्दोलन' मे इतना प्रगट योगदान दिया कि ब्रिटिश सरकार ने, जमीदारी की समस्त मान-मर्यादाओ को तोडकर, श्रेयासप्रसादजी को दो मास तक, लाहौर जेल के कष्टकर वातावरण मे नजरबद रखा। अनशन और एकान्तवास जैसी अनेक यातनाओ के बाद जब मुक्त किया तो लाहौर से ही निष्कासित कर दिया। तभी बम्बई आकर निजी उद्योगो और व्यापारिक इकाइयो की स्थापना, देश के सर्वोच्च औद्योगिक सगठन 'फैडरेशन ऑफ इण्डियन चैम्बर्स ऑफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज' की अध्यक्षता, राष्ट्रीय शासन द्वारा प्रदत्त राज्यसभा की सदस्यता, उद्योग-व्यापार के विस्तार के साथ शिक्षा-सस्थाओ की स्थापना, नारी-शिक्षा को प्रोत्साहन, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण भारत मे लोक-कल्याणकारी न्यासनिधियो की सयोजना तथा बम्बई मे भारतीय विद्याभवन के तत्त्वावधान मे 'श्रेयासप्रसाद जैन इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट एण्ड रिसर्च' के स्थापनार्थ पचहत्तर लाख का उल्लेखनीय योगदान और बॉम्बे हास्पिटल की अध्यक्षता का दीर्घ काल तक सफल निर्वाह आदि अनेक सार्वजनिक सेवा सम्बधी प्रवृत्तियो के लिए साहु श्रेयासप्रसादजी ने पूरे देश मे ख्याति अर्जित की है।

जैन धर्म, दर्शन, साहित्य, इतिहास, सस्कृति और कला के सरक्षण-सवर्द्धन मे साहु श्रेयासप्रसादजी का योगदान, साहु जैन परिवार की इकाई के रूप मे, जिनमें उनके अनुज स्व साहु शान्तिप्रसाद जैन एव अनुजवधू स्व रमा जैन का अतुलनीय कृतित्व सम्मिलित है, अपने आप मे इतना महान है कि उसे 'समाज के सास्कृतिक इतिहास मे युगान्तकारी और अग्रणी योगदान' के रूप मे पीढियो तक कृतज्ञता पूर्वक याद किया जायगा।

राष्ट्र के सांस्कृतिक और साहित्यिक गौरव का एक अमर प्रकाश-स्तम्भ है 'भारतीय ज्ञानपीठ', जिसकी स्थापना स्व साहु दम्पती द्वारा जिस दिन की गई, उसी दिन से साहु श्रेयासप्रसादजी जैन उस संस्था के कार्यकलापो से और उसकी प्रगति मे सम्बद्ध हो गये। अब तो लगभग सात वर्षों से, संस्था के अध्यक्ष के रूप मे उसके उत्कर्ष के लिए, वे और भी अधिक सक्रिय हैं। साहु दम्पती के निधनोपरान्त, उनके सुपुत्र अशोककुमार जैन ज्ञानपीठ प्रबंध-न्यासी के रूप मे, उन्ही के वात्सल्यपूर्ण मार्गदर्शन के सहारे उत्तरोत्तर यश अर्जित कर रहे हैं।

समस्त दिगम्बर जैन समाज की राष्ट्रीय स्तर की प्रतिनिधि संगठन संस्था 'दिगम्बर जैन महासमिति' की स्थापना, और उसके कार्यकलापो मे विस्तार लाने की चिन्ता, साहुजी के नेतृत्व का और उनके कृतित्व का उल्लेखनीय आयाम है। भा दिग. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष होने के नाते तीर्थक्षेत्रो की सुरक्षा, यात्रियो के लिए सुविधा-व्यवस्था और तीर्थों के अधिकार तथा स्वत्व संरक्षण के लिए अनेक चुनौतियो का सामना करने के साथ-साथ, अपने व्यक्तित्व की गरिमा से परस्पर सद्भावना के संचार और सौहार्द के संवर्धन का प्रयत्न करते हुए, जैन पुरातत्त्व और कला-सम्पदा की सुरक्षा हेतु बाबूजी दिन-रात चिन्तित रहते है। अभिनव, सचित्र कला प्रकाशनो द्वारा जैन कला के विश्वव्यापी प्रचार के लिए आधुनिकतम माध्यमो का सक्षम उपयोग आदि अनेक ऐसी वीथिकाएँ है, जिनमे उनके प्रयत्नो से अभूतपूर्व प्रगति हुई है, और नई-नई संभावनाओ के क्षितिज उजागर हुए है। प्राचीन जैन शास्त्रो का उद्धार, अहिंसा, सत्य, अनेकान्त और अपरिग्रह आदि धर्म के मूल सिद्धान्तो के सुगम प्रतिपादन के लिए आधुनिक साहित्यिक शैलियो मे सृजनमूलक रचनाओ को प्रोत्साहन, तथा 'मूर्तिदेवी साहित्य पुरस्कार' की परिकल्पना और इसके माध्यम से इन सिद्धान्तो की व्यापक स्वीकृति आदि कार्यकलाप, बाबूजी के जीवन मे अब नित्यप्रति के रचनात्मक प्रसंग हैं।

उर्दू शायरी मे बाबूजी की विशेष रुचि है। प्रसिद्ध शायरो के हजारो उत्कृष्ट शेर उन्हे कण्ठस्थ हैं। अभी हाल ही मे उन्होने लगभग छह सौ चुनिंदा शेरो का संकलन 'उर्दू शायरी मेरी पसन्द' तैयार किया है। भारतीय ज्ञानपीठ मे प्रकाशित यह संकलन साहित्य जगत मे चर्चित हो रहा है। इस समय बाबूजी के नेतृत्व मे चार विशाल योजनाएँ चल रही हैं। वैशाली मे भगवान महावीर का स्मारक, खजुराहो मे शान्तिप्रसाद जैन कला संग्रहालय, श्रवणबेलगोल मे शान्तिप्रसाद जैन कला मन्दिर, और दिल्ली मे भगवान महावीर स्मारक। इन योजनाओ को यथाशीघ्र कार्यान्वित कराने के लिए उनके मन मे छटपटाहट जैसी आतुरता है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष होने के नाते श्री श्रेयासप्रसादजी श्रवणबेलगोल दिगम्बर जैन मुजरई इन्स्टीट्यूशन्स मैनेजिंग कमेटी, श्रवणबेलगोल के पदेन उपाध्यक्ष है और उसकी गतिविधियो मे पूरी रुचि लेते है।

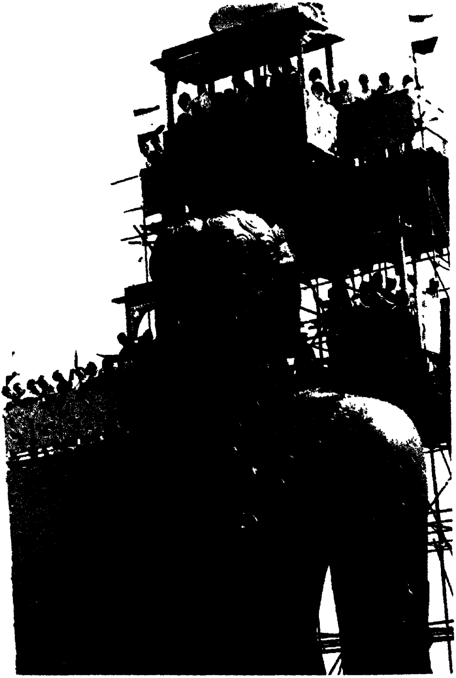
'भगवान बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक' के आयोजनार्थ गठित महोत्सव समिति की अध्यक्षता स्वीकार करके तो वे स्वयं पाँच वर्षों के लिए श्रवणबेलगोल को समर्पित हो गये थे। जिस प्रकार वह विशाल आयोजन, पग-पग पर बाबूजी के योगदान से उपकृत होकर सफल हुआ, वे चंद दिन उनकी पर्याय-पुस्तिका के श्रेष्ठतम पृष्ठ हैं। बाबूजी महोत्सव की तिथि से तीन सप्ताह पूर्व अपने दल-बल सहित श्रवणबेलगोल पहुँच

गये थे। उसके उपरान्त महोत्सव की कोई ऐसी गतिविधि नही थी, जिसमें बाबूजी ने व्यक्तिगत रुचि लेकर, उसके संचालन का प्रत्यक्ष या परोक्ष दायित्व न सम्हाला हो। वहाँ वे स्वयं मुनिश्री विद्यानन्दजी और कर्मयोगी भट्टारक स्वामीजी के दाहिने हाथ बन कर रहे। हजारो छोटी-बडी समस्याओ को उन्होने धीरज, प्रेम और सद्भावनापूर्ण कौशल से सुलझाया। महोत्सव के इतिहास के साथ उनका व्यक्तित्व और कृतित्व स्वर्णाक्षरो मे अंकित रहेगा।

महोत्सव की सफलता के लिए बाबूजी के दृढ-संकल्प, उनकी उत्कट लगन और विलक्षण कार्य-क्षमता को देख 'इण्डियन एक्सप्रेस' के विशेष संवाददाता ने श्रवणबेलगोल से 20 फरवरी, '81 को ठीक ही लिखा था—"इस महान आयोजन के पीछे आशा और आत्म-विश्वास की मूर्ति, प्रेरणा का एक अजस्र स्रोत, दैवी वरदान की तरह संलग्न है, वह हैं महोत्सव समिति के बहत्तर वर्षीय अध्यक्ष, वरिष्ठ उद्योगपति, साहू श्रेयासप्रसाद जैन। श्री जैन अपने आप मे एक परिपूर्ण संस्था हैं। इस आयोजन को सर्वांगीण सफलता दिलाने का संकल्प लेकर वे पिछले चार-पाँच वर्षों से दिन रात उसी चिन्ता मे लगे है। आयोजन के हर छोटे-बडे कार्य को, अनुभव संगत मार्गदर्शन प्रदान करते हुए, अपनी अतिसतर्क और अनुपम व्यवस्था प्रणाली के अंतर्गत, प्रतिक्षण सफलता की ओर अग्रसर करने के लिए श्री जैन चौबीसो घण्टे अनवरत और अथक परिश्रम कर रहे है।"

बाईस फरवरी को, जब महोत्सव का मुख्य अभिषेक निर्विघ्न और शानदार ढंग से सम्पन्न हो चुका, तब दूसरे दिन श्रवणबेलगोल मे उपस्थित विशाल जनसमुदाय ने अपने प्रिय अध्यक्ष को, आचार्यों, मुनियो और विशिष्ट अतिथियो की उपस्थिति मे, 'श्रावक-शिरोमणि' की सम्मानपूर्ण उपाधि से विभूषित किया। उस अवसर पर आभार व्यक्त करते समय श्री साहूजी ने अपने कृतित्व को भगवद्-भक्ति द्वारा अर्जित पुण्य का फल निरूपित करते हुए, अपने लिए जन्म-जन्मान्तर तक धर्म समागम की कामना की थी। उनकी यह भावना उस समय उन्ही के शब्दो मे पुन व्यक्त हो उठी, जब बाबूजी ने विख्यात अमरीकी पत्रिका 'टाइम्स' को साक्षात्कार देते हुए एक बहुत आस्थापूर्ण बात कही। पत्रिका के प्रतिनिधि की इस टिप्पणी पर कि 'ऐसा समारोह अब यहाँ हजार साल बाद फिर होगा, पर उस समय आप नही होगे'। बाबूजी का उत्तर था—**"हजार साल बाद, जब यहाँ द्विसहस्राब्दि महोत्सव आयोजित होगा, तब भी मैं गोमटस्वामी के चरणों मे उपस्थित रहूंगा। उस समय किस पर्याय में रहूंगा यह तो मैं नहीं जानता, पर जब तक आवागमन के चक्र से मुक्ति नहीं मिलती तब तक मैं भगवान बाहुबली की भक्ति मे संलग्न रहने की भावना नित्य दोहराता हूँ।"**

□



5 महामस्तकाभिषेक अविस्मरणीय छवि

मंगल आशीष

—एलाचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज

साहुजी के परिवार की साठ-सत्तर साल की सुदीर्घ सेवा परम्परा है। उनके पिताश्री ने उनका नाम 'श्रेयासप्रसाद' रखा। हस्तिनापुर के पास होने से शायद ऐसा होगा। भगवान् बाहुबली के दो पुत्रो मे से एक का नाम श्रेयास हुआ था, जिन्हे अपने पितामह भगवान् आदिनाथ को प्रथम आहार देने का श्रेय मिला। यही से दान-तीर्थ स्थापित हुआ।

साहु घराने में संस्कृति को बनाये रखने के लिए, आदर्श कायम रखने के लिए, बच्चो मे सुसस्कार डालने की उज्ज्वल परिपाटी पूर्व से चली आयी है। आज श्रावक-शिरोमणि के रूप मे श्रेयांसप्रसादजी का समाज मे बहुत बडा त्याग है। 2500वे महावीर निर्वाण महोत्सव मे उन्होने बडा योगदान दिया। उसके बाद महासमिति का उन्हें अध्यक्ष बनाया गया। साहु शान्तिप्रसादजी के जाने के बाद समाज को नेतृत्व कौन दे, यह बहुत बडी चिन्ता थी। ऐसे मे श्रेयासप्रसादजी उपलब्ध हुए। वे बहुत विनम्र, शान्तिप्रिय और कार्यकर्ताओ को साथ मे लेकर चलने मे कुशल हैं।

बाहुबली के सहस्राब्दि-महोत्सव मे श्रेयांसप्रसादजी ने स्वय को अर्पित कर दिया, यह बहुत बडी घटना थी। उनके माता-पिता ने जिस अन्तःप्रेरणा से उनका नाम 'श्रेयास' रखा था, कदाचित् वही भावना उनमे जागृत हुई। इतिहास उनमे जी उठा था। विश्व के कोने-कोने मे धर्म-भावना फैले, सभी जातियो और सम्प्रदायो मे सह-भाव बने, दुनिया के लोगों के मन मे सात्त्विक भावना उत्पन्न होकर मानवीय सद्-भावना स्थापित हो, इस दृष्टि से उन्होने तन-मन-धन से सेवा की और अथक परिश्रम किया। उन्हे सफलता भी मिली। उनकी समर्पण भावना उल्लेखनीय है। वास्तव मे समाज में वे कर्मठ, शान्तिप्रिय और समाज को सगठित करने वाले व्यक्ति हैं। न 'धर्मो धार्मिर्कैबिना' धर्मात्मा के बिना धर्म नही टिकता, समन्तभद्र स्वामी की यह उक्ति उन पर अक्षरशः चरितार्थ होती है। उनके वात्सल्यपूर्ण आचरण से श्रावक वर्ग सगठित हुआ है। समाज पर उनका यह बहुत बडा उपकार है। उनकी सेवाओ को तो हम शब्दो में कह नही सकते। उन्होंने धर्म को चमकाने मे अपना सर्वस्व ही अर्पित कर दिया है।

श्रेयासजी द्वारा धार्मिक-सामाजिक उत्थान के विविध सेवा-कार्यों मे निरन्तर अभिवृद्धि होती रहे, ऐसा हम उन्हें आशीर्वाद देते हैं।

['तीर्थंकर' को दिये गये साक्षात्कार पर आधारित]



मंगल मनीषा

श्रीपौदनेशं पुरुदेवसूनु तुंगात्मकं तुंग-गुणाभिरामम् ।
देवेन्द्र-नागेन्द्र-नरेन्द्र-वंद्यं, तं गोमटेशं प्रणमामि नित्यं ।।

अति कठिन और असम्भव कार्य भी जिनके स्मरण से सहज-सम्भव हो जाते है, उन गोमटेश्वर भगवान् बाहुबली के चरणो मे श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए, जिनकी अनुग्रह पूर्ण कृपा मे हमे इस पर्याय मे गोमटस्वामी की सेवा का अवसर प्राप्त हुआ, उन कृपालु गुरुवर स्वस्तिश्री भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी को हम भक्तिपूर्वक स्मरण करते है । गुरुवर का मंगल आशीर्वाद सदा सर्वदा हमे अपने साथ अनुभव होता है ।

सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक एक यशस्वी अनुष्ठान के रूप मे, सफलता के कल्पनातीत शिखर छूता हुआ, सातिशय, सानन्द सम्पन्न हुआ । जन-जन के मुख से जब उसकी प्रशसा सुनते हैं तब हर्ष की अनुभूति से हमे रोमाच हो उठता है । दृष्टि के समक्ष वह सारा दृश्य प्रतिबिम्बित दिखाई देता है और मन मे प्रश्न उत्पन्न होता है—क्या वह दृश्य फिर कभी देख पाना सम्भव होगा ? प्रश्न का समाधान भी निश्चित और निर्धारित है कि—और एक सहस्र वर्ष व्यतीत हो तभी यह सुयोग पुन उपस्थित होगा, उसके पूर्व नही । मन निराशा से भर उठता है । तब कौन कहाँ होगा ? कौन किस पर्याय मे होगा ?

परन्तु काल का परिणमन किसी व्यक्ति या घटना का मुखापेक्षी नही है । उसकी गति मे निराशा के लिए स्थान ही कहाँ है ? पूर्व पुण्य के प्रताप से हमारे और आपके जीवन मे यह महान् अवसर उपस्थित हुआ था । धर्म की प्रतिष्ठा यदि आचरण मे रहे तो अगले भवो मे पुन: ऐसा पुण्योदय हो सकता है और भव-भवान्तर मे ऐसे अवसर उपलब्ध होते रह सकते हैं । धर्म जीवन का अनिवार्य तत्त्व है और उसे हमारे आचरण मे अविभाज्य होकर प्रवर्तना चाहिए, तभी हमारा जीवन सतुलित और सार्थक हो सकता है । यह इसीलिए कि, वह धर्म हमारा अपना सहज स्वभाव है । उसे कही बाहर से तलाशकर लाना नही है । अपने विकारो का शमन करने पर, जीवन को विसंगतियो से मुक्त कर लेने पर, हमारे ही अन्तर से फूटने वाला वह सुख, शान्ति और सन्तोष का झरना है । ऐसे सहज 'मानव धर्म' के प्रति जिज्ञासा और उसे पाने की विकलता आपके मन मे जागृत हो, यही हमारी भावना है ।

सहस्राधिक वर्षों से अपनी गौरवशाली परम्पराओ में प्रवर्तमान यह दिगम्बर जैन मठ, वर्तमान मे सीमित ससाधनो वाला एक संस्थान है, परन्तु भारत मे आसेतु-हिमालय प्रकीर्ण श्रद्धालु और भक्ति-सम्पन्न, समृद्ध शिष्यमण्डली, आज भी उसकी सबसे बडी और वास्तविक शक्ति है। गोमटस्वामी का महामस्तकाभिषेक बडा कार्य है और इसी भक्ति के द्वारा वह सदा सफल होता आया है। सन् 1981 में वह समारोह 'भगवान् बाहुबली सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना एव महामस्तकाभिषेक महोत्सव' के रूप मे आयोजित हुआ। चतुर्दिक् विस्तृत सन्दर्भों के कारण वह अन्तर्राष्ट्रीय उत्सव बन गया। उसके आयाम फैलते गए, परन्तु गोमटस्वामी के चरणानुरागी भक्तो की सन्नद्धता और सहकार भी वैसा ही विस्तार पाते गए और भक्ति की शक्ति से ओत-प्रोत, लक्ष-लक्ष भक्तो के सहयोग और समर्थन ने समारोह को सहज ही सफलता के शिखर पर पहुँचा दिया।

सम्यक्त्व-चूडामणि, आचार्यरत्न, परमपूज्य देशभूषणजी महाराज और सन्मार्ग-दिवाकर, पूज्य आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज सहित अनेक आचार्यों, मुनिराजो और आर्यिका माताओ ने सघ सहित अपनी उपस्थिति से इस नगरी को धन्य किया। परमपूज्य आचार्य धर्मसागरजी महाराज के सघस्थ मुनि श्री दयासागरजी ने दो वर्ष पूर्व क्षेत्र पर चातुर्मास करके साधु-सेवा का अवसर प्रदान किया। महोत्सव मे पुन उनका सान्निध्य प्राप्त हुआ। उनके विहार से कर्नाटक मे जगह-जगह मुनि-भक्ति की भावना जागृत हुई। उन सभी सन्तो का वह अनुग्रह प्रणम्य है। हम उन्हे सादर नमन करते हैं।

परम पूज्य, सिद्धान्तचक्रवर्ती, एलाचार्य, श्री विद्यानन्दजी मुनिराज की प्रेरणा, मार्गदर्शन और मगल-आशीष इस महोत्सव को प्रारम्भ से अन्त तक उपलब्ध रहे। महोत्सव की सफलता अनेक वर्षों से सतत उनके चिन्तन मे थी। इसी निमित्त सुदूर दिल्ली से मंगल विहार करते हुए यहाँ उनका पदार्पण हुआ। उन्होंने क्षेत्र पर दो चातुर्मास व्यतीत करने की कृपा की। समारोह मे उनकी उपस्थिति हमारे लिए उत्साहप्रद रही। क्षेत्र अभिवृद्धि के लिए उनके इस अमूल्य अवदान के प्रति हम सादर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते है।

महोत्सव मे पधारे सभी सहृदयी स्वस्तिश्री भट्टारको के सहयोग का हम समादर करते है। धर्मस्थल के धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगडे अपने प्रत्यक्ष सहकार के लिए धन्यवाद के पात्र हैं। जिनवाणी के प्रवक्ता अनेक सुधी विद्वानो की उपस्थिति से महोत्सव मच अलकृत हुआ, उनमे प. जगन्मोहनलालजी शास्त्री, सिद्धान्ताचार्य पण्डित कैलाशचन्द्रजी, न्यायतीर्थ डॉ० दरबारीलाल कोठिया और संहितासूरि पडित नाथूलालजी शास्त्री का नाम सम्मान सहित स्मरणीय है।

आज 'गोमटेश्वर सहस्राब्दि महोत्सव दर्शन' के लिए अपनी भावनाएँ व्यक्त करते समय महोत्सव के समस्त सहयोगियो का नामोल्लेख भी संभव नही हो पा रहा है। अत प्रतीक रूप मे कुछेक नाम अकित करके, उन्ही के माध्यम से हम उस श्रद्धालु समुदाय के लिए धर्म-वृद्धि और मगल की कामना करते है, जिसके अतुलित योगदान मे महोत्सव सफल हुआ।

भारतीय गणराज्य की लोकप्रिय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने अपने स्वर्गीय पिता पडित जवाहरलाल नेहरू की तरह आनुवशिक निष्ठा के साथ विन्ध्यगिरि की गगन-परिक्रमा करके गोमटेश्वर के चरणो मे अपनी श्रद्धा का सार्वजनिक उद्घोष किया। तत्कालीन गृहमन्त्री (सम्प्रति महामहिम राष्ट्रपति) ज्ञानी जैलसिहजी ने महोत्सव के समापन समारोह की शोभा

बढ़ाई और सचारमन्त्री श्री सी० एम० स्टीफन तथा ऊर्जा मन्त्री श्री प्रकाशचन्द सेठी की उपस्थिति से उत्सव को गरिमा प्राप्त हुई। सांसद श्री जे० के० जैन प्रारम्भ से सक्रिय रहे। मैसूर नरेश के वशज श्री श्रीकण्ठदत्त नरसिंहराज वाडियार ने गोमटेश्वर की वन्दना की। अनेक ससद सदस्यो और विधायको ने भी आयोजन की श्रीवृद्धि में योग दिया।

कर्नाटक शासन ने उत्सव को अपना ही आयोजन मानकर, सदैव की भांति यात्रियो की सुख-सुविधा का अधिकाश भार उठाया। पूर्व मुख्यमन्त्री स्वर्गीय श्री देवराज अर्स ने 1977 मे तैयारियो का समारम्भ किया था। 1981 मे तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री आर० गुण्डूराव ने अपने कार्यकाल मे सक्रिय सहयोग देकर उसकी सम्पन्नता का श्रेय अर्जित किया। स्थानीय विधायक एवं मन्त्री श्री एच० सी० श्रीकण्ठैया की सेवाएँ अहोरात्र हमे उपलब्ध रही।

इन महानुभावो की प्रेरणा से जिन शासकीय अधिकारियो ने उत्साह और लगनपूर्वक अपना सहयोग दिया, उनकी सूची बडी है, पर उनमे मुख्य सचिव श्री नरसिंहराव, राजस्व सचिव श्री वेंकटेशन, मुख्यमन्त्री के निजी-सचिव श्री अनगोल, आई० जी० पुलिस श्री जी० बी० राव, अतिरिक्त आई० जी० पी० श्री गरुडाचार एव एण्डाउमेण्ट कमिश्नर श्री कृष्णमूर्ति के नाम उल्लेखनीय हैं। विशेषाधिकारी श्री ए० एस० शेट्टी ने अति चिन्तापूर्वक दिन-रात परिश्रम से अपने दायित्व का निर्वाह किया। उक्त सभी महानुभावो के लिए हम निरन्तर अभिवृद्धि की भावना करते है।

महोत्सव समिति के अध्यक्ष पद पर श्रीयुत् साहु श्रेयांसप्रसादजी का चयन शुभतर सयोग था। जिस गौरव और औदार्य के साथ साहुजी ने महोत्सव की सफलता के लिए कार्य किया, वह क्षेत्र के लिए उनका ऐतिहासिक और चिरस्मरणीय योगदान है। साहुजी के मन में सहयोग की अनुपम भावना है। वे सही अर्थों मे 'भद्र परिणामी श्रावक' हैं। कर्त्तव्य के प्रति उनकी निष्ठा आदर्श है। श्रवणबेलगोल क्षेत्र अभिवृद्धि के लिए उनका सत्प्रयास स्फूर्तिदायक है। उन जैसे सृजनशीलव्यक्ति को पाकर जैन समाज गौरवान्वित है। महोत्सव के सम्बन्ध मे जो भी व्यावहारिक सुझाव आये, उन्हे साहुजी ने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया, कभी नकारात्मक रुख नही अपनाया। इससे असम्भव लगने वाले कार्य भी सम्भव होते चले गये।

हमारे सामने जब भी कोई कठिनाई आयी, या हमने कोई समस्या साहुजी के समक्ष प्रस्तुत की, उन्होंने गहन सद्भावना के साथ हमारी बात सुनी और सतोषप्रद समाधान प्रदान किये, शासन से सहयोग करके कार्य करना सरल काम नहीं है। यह वही व्यक्ति कर सकता है जो स्वयं निस्पृह हो तथा जिसका यश और प्रभाव सर्वमान्य हो। साहुजी के व्यक्तित्व में वे सारी विशेषाएँ होने से ही महोत्सव के सभी कार्यों मे समय पर सफलता मिलती गयी। इस सहयोग के लिए उन्हे जितना भी साधुवाद दिया जाये वह थोडा है।

साहुजी का विशाल परिकर कई सप्ताह तक यहाँ कार्य में संलग्न रहा। पी० एस० जैन मोटर्स दिल्ली के श्री रमेशचन्दजी को साहुजी ने अपना प्रमुख सहयोगी बनाया। उन्होंने बडी कुशलता और लगन से उल्लेखनीय सहयोग प्रदान किया। वे प्रशंसा के पात्र हैं।

स्वर्गीय साहु शान्तिप्रसादजी की सेवाओं के परिप्रेक्ष्य मे देखें तो यह एक सुयोग ही है कि भगवान महावीर का 2500वाँ निर्वाण महोत्सव अनुज के तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ था और

सहस्राब्दि महोत्सव की संयोजना का पदभार अग्रज ने ग्रहण किया। समाज ने जिस प्रकार साहु शान्तिप्रसादजी को उस समय 'श्रावकशिरोमणि' उपाधि प्रदान की थी, उसी प्रकार इस महोत्सव मे श्रीयुत् श्रेयासप्रसादजी को उस उपाधि से अलकृत करके सम्मानित किया। इस प्रतिष्ठित परिवार से श्रीयुत् साहु अशोक कुमारजी का भी सक्रिय सहयोग इस क्षेत्र को प्राप्त हो रहा है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष सेठ लालचन्द हीराचन्द जी ने भी सपरिवार सहयोग दिया। एम० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी के उपाध्यक्ष के नाते सेठ साहब पर बहुत भार था। क्षेत्र की उन्नति में उनका प्रारम्भ से ही सहयोग रहा। उनकी पुत्री श्रीमती शरयू दफ्तरी ने विभिन्न क्षेत्रो मे अपनी सेवाएँ दी तथा पुत्रवधू श्रीमती डॉ० सरयू दोसी ने श्रवणबेलगोल की प्राचीन कला पर सुन्दर सचित्र ग्रन्थ प्रस्तुत किया। श्रीमती दोसी के द्वारा सम्पादित अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त पत्रिका 'मार्ग' के विशेषांक रूप में, श्रवणबेलगोल पर अग्रेजी मे यह अपने ढग का प्रथम प्रकाशन है। श्री अरविन्द दोसी की सेवाएँ भी विशेष उल्लेखनीय रही।

सामयिक साहित्य के प्रणेता सुधी साहित्यकार, और पुस्तको, विशेषाको के लेखक, सम्पादक तथा प्रकाशक, विशेषकर भारतीय ज्ञानपीठ, टाइम्स ऑफ इण्डिया समूह तथा इण्डियन एक्सप्रेस समूह, हिन्दुस्तान टाइम्स समूह, प्रजावाणी समूह, उदयवाणी समूह, सयुक्त कर्नाटक, प्रजामत, हिन्दी तीर्थकर, और इण्डिया टू डे आदि प्रकाशन तथा प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया, यू० एन० आई०, समाचार भारती, और हिन्दुस्तान समाचार समिति ने महोत्सव के व्यापक प्रचार-प्रसार मे स्मरणीय योग दिया और उत्सव की छवियो को विश्व के कोने-कोने तक प्रेषित किया। समस्त जैन पत्र-पत्रिकाओ का सहयोग भी सहज प्राप्त होता रहा।

श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन और श्री नीरज जैन ने अपनी लेखनी से श्रवणबेलगोल के अतीत को वर्तमान मे द्रष्टव्य बनाकर प्रस्तुत किया। श्री लक्ष्मीचन्द्रजी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कुन्था जैन ने वृत्त-चित्र तथा नृत्य-नाटक के आलेख तैयार किये। पुरातत्त्व विभाग के महानिदेशक श्री बालकृष्ण थापर ने क्षेत्र की पुरा-सम्पदा के सरक्षण के बहुविध उपाय किये।

बम्बई के बाबा शकरलालजी कासलीवाल प्रारम्भ से ही इस तीर्थ के सक्रिय सहायक रहे हैं। उन्होने स्वर्णकलश से अभिषेक की कामना की थी। उत्सव के पूर्व उनके आकस्मिक निधन के उपरान्त, उनके सुपुत्र श्री अभयकुमार एवं श्री शम्भूकुमार कासलीवाल ने उनकी भावना की पूर्ति की। इनका सहयोग सदा-स्मरणीय है। राजश्री पिक्चर्स के श्री ताराचन्दजी एव उनके सुपुत्र श्री कमलकुमार बडजात्या ने महामस्तकाभिषेक का वृत्त-चित्र बनाकर उसे पूरे देश में प्रदर्शित किया। सगीतज्ञ कवि श्री रवीन्द्र जैन की वाणी ने गोमटेश का कीर्ति-गान जन-जन तक पहुँचाया।

इन्दौर के श्री राजकुमारसिंहजी कासलीवाल का पूरा परिवार तथा श्री देवकुमारसिंहजी कासलीवाल और श्री मिश्रीलालजी गगवाल ने जनमगल महाकलश की विहार-यात्रा में सक्रिय योगदान दिया। श्री कैलाशचन्द चौधरी, प० जयसेन और डॉ० प्रकाशचन्द जैन की सेवाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। श्री शान्तिलालजी पाटनी, रतलाम तथा श्री शान्तिलालजी पाटनी इन्दौर आदि सज्जनो का भी बहुमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ। सरसेठ भागचन्द सोनी पिछले कई

मस्तकाभिषेक से श्रवणबेलगोल आते रहे हैं। इस बार भी उन्होंने अपनी उपस्थिति से उत्सव को गरिमा दी। इस बीच श्री गगवालजी और श्री सोनीजी की पर्याय समाप्त हो गयी है, यह पूरे दिगम्बर जैन समाज की अपूरणीय क्षति है। उन दोनो महानुभावो के सत्कार्यों से समाज को प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलता रहे ऐसी हमारी भावना है।

दिल्ली के श्री प्रकाशचन्द्र शीलचन्द्र जौहरी, श्री सागरचन्द जी कागजी श्री कश्मीरचन्द जौहरी, श्री सुरेन्द्र कुमार जौहरी, श्री ललितकुमारजी तथा राजाबाबू, और श्री सुरेशचन्द्र (पहाडी धीरज) का सहयोग अविस्मरणीय है। समाचार भारती के अध्यक्ष व नवभारत टाइम्स के भूतपूर्व सम्पादक श्री अक्षयकुमार जैन, श्री देवकुमार, श्री एम० के० धर्मराज, श्री सतीश ज्वालापुर, श्री देवेन्द्र जैन दिल्ली और श्री रमेशजी (न्यू रोहतक रोड) की कार्यकुशलता को भी भुलाया नही जा सकता। आकाशवाणी के श्री सतीश जैन की सेवाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। श्री एम० के० जैन दिल्ली का सहयोग भी प्रशसनीय रहा।

जयपुर के श्री नानकरामजी जौहरी, श्री महावीरप्रसादजी, श्री मोहनलालजी काला और श्री ज्ञानचन्दजी खिन्दूका तथा वैद्य सुशीलकुमारजी, रानी मिल मेरठ के श्री शिखरचन्द जैन, मद्रास के श्री कन्हैयालालजी, कलकत्ता के श्री अमरचन्दजी पहाडिया, श्री कमलकुमार जैन और श्री गणपतराय जी तथा गोहाटी के श्री गणपतराय जी सरावगी का सहयोग सदा प्राप्त होता रहा। श्री रतनलालजी गगवाल की विविध उल्लेखनीय सेवाए है। गोरखपुर के राय देवेन्द्रप्रसादजी ने स्वय कई मास तक यहाँ उपस्थित रहकर सहयोग प्रदान किया है। बगलोर के श्री बी० जे० जीवेन्द्रैया, मैसूर के श्री एस० पी० शान्तिराज और हासन के श्री एच० एम० नागरत्नराज और श्री एच० एन० राजेन्द्रकुमार की भी क्षेत्र के लिए उल्लेखनीय सेवाएँ है।

महोत्सव का अधिकाश कार्य उप-समितियो मे बाँटा गया था। परिशिष्ट में इन सभी समितियों के सयोजको और सदस्यो की तालिका अकित की गयी है, फिर भी कुछ सयोजको की सेवाएँ विशिष्ट उल्लेखनीय हैं। अभिषेक पूजा-समिति का कार्य जटिल और विचार साध्य था। मैसूर के श्री डी० निर्मलकुमारजी ने उसकी निर्दोष व्यवस्था की। दैव विपाकवश आज श्री निर्मलकुमारजी हमारे बीच नही रहे, पर उनकी भक्ति और निष्ठा की स्मृतियाँ दीर्घ-काल तक जीवित रहेंगी। श्री एम० सी० अनन्तराजैया ने त्यागी सेवा समिति के सयोजक के रूप मे साधु-सघो की उत्तम व्यवस्था की। इन दोनो समितियो के सहयोगी के रूप मे श्री शान्तिवर्मा बैनाड का सराहनीय योगदान रहा।

श्री ए० शान्तिराज शास्त्री पच-कल्याणको की प्रभावक सयोजना करते रहे। श्री श्रीकान्त जी शास्त्री ने बोलियो के माध्यम से चार माह तक अर्थ सग्रह का कार्य किया। श्री ए०आर० नागराज ने कन्नड स्मारिका के साथ-साथ सभाओ के सचालन का भार भी सम्हाला। बिजली व्यवस्था पर भी उनकी सूक्ष्म-दृष्टि रही। इन्दौर के कर्मठ कार्यकर्ता श्री बाबूलाल जी पाटोदी ने हिन्दी मे सभा-सचालन के दायित्व का सफलता से निर्वाह किया। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक समिति के श्री ओमप्रकाश जैन, आवास व्यवस्था समिति के श्री सुकुमारचन्द जैन, स्वयसेवक समिति के डॉ० धनजय गुण्डे, भरतेश प्रदर्शनी के श्री एच० बी० आदिराजैया, सुरक्षा समिति के सरदार चन्दूलाल शाह तथा एस० पी० श्री पार्श्वनाथ ने भी विशेष सक्रिय रहकर कार्य किया।

बगलोर के डॉ०आर० सुरेन्द्र, कलश आबंटन समिति के श्री नेमीचन्द जैन, समाचार प्रकाशन-

समिति के श्री के० नेमीनाथ और तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामन्त्री श्री जयचन्द लोहाडे ने श्रम-साध्य कार्य किया। सिद्धान्त-दर्शन मे दर्शको की नियन्त्रण व्यवस्था का दायित्व श्री साकरलाल बुलाकीदास शाह बम्बई व उनके पुत्रो पर, और मठ की व्यवस्था का भार श्री राजरत्न आरिगा और उनके साथियो पर रहा। आमन्त्रित अतिथियो की व्यवस्था धर्मस्थल के श्री सुरेन्द्र हेगड़े और जनमगल महाकलश की शोभा-यात्रा में उनके भ्राता श्री हर्षेन्द्र हेगड़े की उत्तम सेवाएँ रही।

महोत्सव समिति और एस०डी०जे०एम०आई० मैनेजिंग कमेटी के सदस्य तो इस आयोजन के संयोजक ही थे। उनका उल्लेख करना भी अप्रासगिक नही लगेगा। इन दोनो कमेटियो के सहयोग के लिए शासकीय स्टेट लेवल कमेटी और लोकल कमेटी के सदस्यो ने जैसी विस्तृत और उदार दृष्टि लेकर उत्सव की संयोजना मे हाथ बटाया वह सराहनीय था।

कार्यालयीन व्यवस्था का स्मरण करने पर कमेटी के पूर्व सेक्रेटरी श्री बी० जयप्पा और वर्तमान सेक्रेटरी श्री जी० बी० शान्तिराज की उत्तरदायित्वपूर्ण सेवाएँ उल्लेखनीय रही है। कमेटी द्वारा नियुक्त विशेष अधिकारी श्री के० जी० राजन्ना ने प्रारम्भ मे कुछ समय कार्य किया था। श्री एच० पी० अशोक कुमार तथा मठ के एजेन्ट श्री धनजयकुमार भी सावधानीपूर्वक अपने कार्य सम्पन्न करते रहे। इनकी सफलता के पीछे इनके सहयोगियो की लगन और श्रम ही है। ग्राम की जैन और जैनेतर जनता और श्रवणबेलगोल नगरपालिका परिषद् का उल्लेख करते हुए हम यहाँ अंकित करना चाहते हैं कि इन समस्त जनो के सहयोग और समर्थन से ही यह महान कार्य इतनी कुशलतापूर्वक, निर्विघ्न सम्पन्न हुआ है। उन सबका कल्याण हो।

इस 'महोत्सव दर्शन' ग्रन्थ के लेखक श्री नीरज जैन सिद्धहस्त लेखक और सतुलित तथा प्रभावी वक्ता हैं। उनकी 'गोमटेश-गाथा' को पढने पर हजार वर्ष पूर्वक गोमटस्वामी की प्रतिष्ठा का दृश्य सजीव होकर दिखाई देने लगता है। श्रवणबेलगोल पर 'गोमटेश-गाथा' जैसा विस्तृत, सुस्पष्ट, सरस और सार्थक लेखन इसके पूर्व किसी भी भाषा मे नही हुआ था। अब यह सयोग की बात है कि सहस्र वर्ष पूर्व हुए प्रथम अभिषेक का कल्पना जनित वर्णन जिस लेखनी से प्रसूत हुआ, उसी यशस्वी लेखनी से इस सहस्राब्दि-महोत्सव की यह गौरव-गाथा लिखी गयी है। श्री नीरजजी एक अध्येता मनीषी और सकल्पशील कार्यकर्ता है। जो काम हाथ मे लेते हैं उसे एकाग्रता पूर्वक पूरा करना अपना कर्तव्य मानते हैं। इस ग्रन्थ को लिखने मे उन्होने बहुत परिश्रम किया है। इसकी सामग्री जुटाना ही एक कठिन कार्य था। उन्होने कई स्थानो से, और कई स्रोतो से सामग्री का सकलन करके इतने विशाल महोत्सव का यह विस्तृत और प्रामाणिक वर्णन तैयार किया है। प्राय हर प्रसग को इतिहास की भूमिका देकर अंकित करना उनकी विशेषता है। इससे घटना प्राणवान बनती गयी है और लेखक के अतीत सम्बन्धी गहन ज्ञान का परिचय मिलता है।

इस महोत्सव के लिए दो वर्ष पूर्व से नीरजजी का सहयोग मिलता रहा। हम समझते हैं कि पूर्व मस्तकाभिषेको के कुछ विवरण लिपिबद्ध किये गये होते तो वे आज अनेक दृष्टियो से उपयोगी हो सकते थे, परन्तु प्रायः ऐसा नही हुआ। अब श्री नीरजजी के परिश्रम से यह ग्रन्थ तैयार हुआ है जो क्षेत्र के इतिहास को और महोत्सव की बहुरगी छवियो को दिखाता हुआ भविष्य के लिए मार्गदर्शन भी देता रहेगा। उत्सव का इतिहासपरक वर्णन होते हुए भी यह लेखन ऐसी रोचक और प्रभावक शैली मे सम्पन्न हुआ है जिससे इसे स्थायी साहित्य की कोटि मे ग्रहण किया जाएगा और प्रबुद्ध जगत मे इसका समुचित समादर होगा। क्षेत्र के इतिहास में इस अपूर्व योगदान के लिए हम श्री नीरजजी के जीवन मे धर्मवृद्धि और कल्याण की कामना करते हैं।

श्रीयुत श्रेयांसप्रसादजी के द्वारा आकल्पित इस ग्रन्थ की तैयारी में, सयोजन से लेकर मुद्रण तक सहयोग देने के लिए श्री नीरज जी के सहायक मित्र डॉ. कन्हैयालाल अग्रवाल, भारतीय ज्ञानपीठ के श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन, श्री बालस्वरूप राही, और डॉ. गुलाबचन्द्र जैन तथा साहुजी के निजी सचिव श्री अश्विनीकुमार जोशी का उल्लेखनीय योगदान है। श्री अश्विनीकुमार जोशी एक जागरूक पत्रकार और साहित्यकार होने के नाते विविध सन्दर्भों मे श्रवणबेलगोल के लिए उपयोगी रहे हैं। इसी तरह साहुजी के बम्बई स्थित 'शिखरकुज' के व्यवस्थापक श्री गौरीदत्त बिनबाल श्रवणबेलगोल मे अतिथि-सेवा के लिए सदा सन्नद्ध रहे हैं। इन दोनो जनो के उत्कर्ष के लिए हमारे आशीर्वाद हैं।

अपने निजी सचिव श्री विश्वसैन का उल्लेख किये बिना हमारा यह वक्तव्य अपूर्ण रहेगा। जब से हमने मठ का कार्यभार सम्हाला तभी से उनका सक्रिय सहयोग हमें प्राप्त हो रहा है। क्षेत्र पर होने वाले निर्माण कार्य भी प्राय उन्ही की देख-रेख मे होते हैं और भी अनेक उत्तरदायित्व उन पर रहते है। श्री विश्वसैन निस्पृह और नि स्वार्थ, मेवाभावी, विनम्र और उत्साही युवक हैं। क्षेत्र के सवर्द्धन मे उनका महत्त्वपूर्ण सहयोग है। मठ मे और कमेटी में हिन्दी का अभ्यास रखने वाले वे अकेले कार्यकर्त्ता हैं, इसलिए उत्तर भारत के साथ सम्पर्क और हिन्दी भाषी यात्रियो की अभ्यर्थना उनका विशेष कार्य है। महोत्सव के अवसर पर श्री विश्वसैन ने अपनी शक्ति से अधिक परिश्रम करके अपने दायित्वो का निर्वाह किया। उनके लिए हम सुख-समृद्धि की कामना करते हैं।

महोत्सव की सफलता मे हमारा कोई श्रेय नही है। किसी भी एक व्यक्ति को, या कुछेक व्यक्तियो को, उसका श्रेय हो भी नही सकता। उस सफलता के पीछे तो अगनित जनो की अनुरक्ति और भक्ति की शक्ति रही है। पूर्व से पश्चिम और उत्तर मे दक्षिण तक, जन-जन ने उसे अपना आयोजन, अपने ही आराध्य का महोत्सव माना। छोटे और बडे सब इस प्रकार उसकी सफलता के लिए प्रयत्नशील हो गए थे कि हम भी जान नही पाए किसने, कब, कहाँ बैठकर, हमे क्या सहयोग दे दिया। इसी का फल है कि उत्सव की सफलता ऐतिहासिक उपलब्धि बन गयी। यहाँ तक कि जो उत्सव की उपयोगिता और औचित्य मे आश्वस्त नही थे और उसकी सफलता के प्रति सशकित थे, वे भी चकित होकर आपके प्रयासो के प्रशसक बन गए। यह सब व्यापक जन-सहयोग और जन-समर्थन से ही सभव हो सका।

इस छोटे से ग्राम का यह उत्सव, कर्नाटक का पारम्परिक महोत्सव बनकर, राष्ट्र की श्रद्धा और सहयोग प्राप्त करता हुआ, प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि वर्ष के प्रसग से, अन्तर्राष्ट्रीय पर्व बन गया। केन्द्रीय शासन के प्रकाशन 'भारत 1981' मे इस आयोजन को राष्ट्रीय गौरव की घटना के रूप मे अकित किया गया है। हम आशा करते हैं कि इसी प्रकार सन्नद्ध होकर हमारा समाज इस देश की गौरवमयी सस्कृति और समन्वय-स्वरूपा धर्मधारा का वहन करता हुआ, भविष्य में ऐसे अनेक आयोजनो का श्रेय प्राप्त करेगा। इस महोत्सव के लिए जिन्होंने तन से, मन से या धन से, तनिक भी सहयोग दिया है, उन सबके प्रति हम मगल मनीषा अभिव्यक्त करते हैं।

'जैन मठ'
श्रवणबेलगोल
8 जून, 1984

(चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी)

पुण्य प्रसंग : महोत्सव दर्शन



श्रवणबेलगोल के ऐतिहासिक एवं पावन-तीर्थ पर प्रतिष्ठित भगवान बाहुबली की विश्वविख्यात मूर्ति, पिछले हजार साल मे लाखो देशी-विदेशी यात्रियो को पवित्र भावनाओं की रोमांचकारी अनुभूति प्रदान करती रही है। जब सन् 981 मे परम प्रतापी अमात्य, सम्यक्त्व-रत्नाकर, प्रमुख सेनानायक, वीर चामुण्डराय ने मूर्ति की प्रतिष्ठापना, आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती के अनुष्ठान सचालन मे की, उस समय के अभिषेक का इतिहास सदा परम्परागत कथाओ के माध्यम से प्राप्त होता रहा है। इतिहास, आख्यान और काव्य, उस कथानक मे एकरस हो गये हैं। प्रत्येक बारह वर्ष के उपरान्त मूर्ति का महामस्तकाभिषेक परम्परा का अग बन गया है। प्रतिष्ठापना की प्रत्येक शताब्दी के अवसर पर होने वाले महामस्तकाभिषेक के विशेष आयोजनो की कल्पना की जा सकती है। पर यह सौभाग्य हमारी पीढी को ही मिला कि प्रतिष्ठापना का सहस्राब्दि महोत्सव हमारी आँखो के आगे सम्पन्न हुआ, हम इस पुण्य के सहभागी बने। 22 फरवरी 1981 का दिन हम सबके सौभाग्य का शुभ दिवस था। आने वाली पीढियाँ इस दिन को, महोत्सव की इन छवियो को, अपनी विरासत के रूप मे सजोकर रखेंगी। सन्दर्भित सभी पुस्तके, वर्णन, पत्र-पत्रिकाओं के विशेषाक, और अग्रलेख, काव्य, नाटक, उपन्यास, रेडियो रिपोर्ट, टेलीविजन और वीडियो की छवियाँ, चित्रपटो पर उकेरे गये चित्र, फोटो और फिल्म, आधुनिक विज्ञान के सारे साधन, यहाँ तक कि विमान द्वारा पुष्पवर्षा और जलधारा का रगीन प्रवाह, सब साकार रूप मे भविष्य के लिए चिरन्तन हो गये, विज्ञान जितना भी उनको चिरन्तन बना सके।

जनता ने एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी महाराज को 'सिद्धान्तचक्रवर्ती' का विरुद दिया, क्योंकि प्रेरणा के मूल स्रोत वही रहे। परिकल्पना की रूप-रेखाओं को स्पष्ट आकार देने वाले, श्रावकशिरोमणि भाई शान्तिप्रसाद, एलाचार्य महाराज के दाहिने हाथ थे, जो आयुशेष करके अन्तर्धान हो गए—अपनी अमर स्मृति छोड गये। संचालन योजनाओ के अध्यक्ष तरुण साधक चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने अपने समर्थ कृतित्व, साहस और निष्ठा द्वारा 'कर्मयोगी' के वास्तविक अर्थ को चरितार्थ कर दिया। श्रवणबेलगोल तीर्थ के नये युग के कर्णधार वही है। 12-13 वर्ष पूर्व जबसे इस गुरुपीठ पर स्वामीजी का पट्टाभिषेक हुआ तभी से इस पीठ के उत्कर्ष मे वे दत्तचित होकर लगे हुए हैं। अपने सरल स्वभाव और मृदु व्यवहार के बल पर उन्होने सारे देश मे मठ के शुभचिन्तको और गोमटस्वामी के भक्तों का बडा समूह तैयार कर लिया है। इस महोत्सव के अवसर पर उनकी अनेक विशेषताएँ समय-समय पर उजागर होती रही

है। जो भी इस महोत्सव पर उपस्थित हुआ उसे कर्मयोगी स्वामीजी का वन्दनीय व्यक्तित्व सदैव स्मरणीय रहेगा।

इसे मैं अपने पुण्य का उदय मानता हूँ, कि भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक और मूर्ति-प्रतिष्ठापना के सहस्राब्दि महोत्सव मे, मुझे अपनी भक्ति भावना की सार्थकता, और आयोजनो की सफलता के लिए अपनी सेवाएँ समर्पित करने का अवसर मिला। एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्द जी की प्रेरणा और आशीर्वाद, कर्मयोगी स्वस्तिश्री भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी की कृपा और प्रोत्साहन, मुनिसघो का विश्वास तथा समस्त समाज के प्रमुख महानुभावो, कार्यकर्ताओं और जन-जन का मुझे इतना व्यापक सहयोग प्राप्त हुआ, कि महोत्सव समिति की अध्यक्षता का गुरुतर दायित्व मैं निभा पाया। समाज के अनेक वयोवृद्ध नेताओ और ज्ञानी गुरुजनो ने स्नेहभाव रखा, योजनाओ की परिकल्पनाओ मे हार्दिक सहयोग दिया और आश्वस्त रखा कि उनका परामर्श मुझे पग-पग पर उपलब्ध है। स्व० सरसेठ भागचन्द सोनी एव स्व० भैया मिश्रीलालजी गगवाल ने अपने जीवन की अन्तिम आकाक्षा को श्रवणबेलगोल मे सफल होते देखा, व मेरे साथ-साथ रहकर मार्गदर्शन दिया। सेठ लालचन्द हिराचन्द ने एस डी जे एम आई. मेनेजिंग कमेटी के उपाध्यक्ष के रूप मे भी दायित्व वहन किया। धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगड़े के अनुभव, प्रभाव और कार्यक्षमता ने महोत्सव की सार्थकता मे श्रीवृद्धि की। आचार्यश्री देशभूषणजी, आचार्य विमलसागरजी, समस्त आचार्यगण, मुनिसघ और मान्य भट्टारक वर्ग ने तथा सिद्धान्ताचार्य प० कैलाशचन्द्रजी शास्त्री, प० जगन्मोहनलालजी शास्त्री और डॉ० दरबारीलालजी कोठिया आदि अनेक गण्यमान्य विद्वानो ने, वातावरण के अनुरूप जन-जन को धार्मिक भावनाओ से ओत-प्रोत रखा। मुनिवर्ग और विद्वानो का ऐसा अद्‌भुत समागम अब जीवन मे देख पाना दुर्लभ है।

जनमगल महाकलश की योजना को क्रियान्वित करने मे इन्दौर समाज के प्रमुख बन्धुओ ने अद्‌भुत कार्यकुशलता और सयोजन क्षमता का परिचय दिया। भगवान् महावीर के पच्चीस-सौ वे निर्वाण महोत्सव की प्रभावना मे धर्मचक्र का जो महान योगदान था, लगभग उसके समकक्ष, बल्कि कई अर्थों मे उससे भी बडा प्रभाव और जन-जागरण उत्पन्न किया 'जनमगल महाकलश' ने। श्री देवकुमारसिंह कासलीवाल, श्री कैलाशचन्द चौधरी, प० जयसेनजी और डॉ० प्रकाशचन्द आदि अनेक महानुभावो ने भैया मिश्रीलालजी गगवाल के नेतृत्व में अद्वितीय सफलता प्राप्त की। दिल्ली से श्रवणबेलगोल तक, जहाँ-जहाँ से जनमगल महाकलश की यात्रा सम्पन्न हुई, प्रत्येक राज्य, क्षेत्र और नगर-ग्राम के मुख्य महापुरुषो ने, मुख्यमन्त्री, मन्त्री, जज, मजिस्ट्रेट, वाइसचासलर आदि ने तथा मन्दिरो, मस्जिदो, गिरजाघरो के धर्मगुरुओ ने महाकलश का अभिवादन किया और भगवान् बाहुबली के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित की।

वास्तव मे महामस्तकाभिषेक का प्रथम चरण था जनमगल महाकलश का प्रवर्तन, जिसे 29 सितम्बर 1980 को राष्ट्र की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने, दिल्ली की विशाल जनसभा को सम्बोधन करने के उपरान्त सम्पन्न किया। यही उपयुक्त अवसर है कि मैं श्रीमती इन्दिरा गाधी के प्रति, सारी दिगम्बर जैन समाज का आभार व्यक्त करूं कि उन्होंने न केवल जनमंगल महाकलश का प्रवर्तन किया, अपितु महामस्तकाभिषेक के अवसर पर स्वय श्रवणबेलगोल पधारकर, हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्पवृष्टि करते हुए, गोमटेश की वन्दना की, और पुष्पाजलि मे ताजे सुगन्धित पुष्पो के साथ 'मन्त्रों' के द्वारा आच्छादित पुष्प भी शामिल किये।

उन्होंने वहाँ पधारकर लाखो देशवासियो की भक्तिभावना के साथ तादात्म्य स्थापित किया। यहां यह उल्लेखनीय है कि महोत्सव के थोड़े दिनो बाद भारत के वर्तमान राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी ने, तत्कालीन केन्द्रीय गृहमन्त्री के रूप में, भगवान् बाहुबली के दर्शन किये और जनसभा को सम्बोधित भी किया। केन्द्रीय मन्त्री श्री प्रकाशचन्दजी सेठी ने निरन्तर महोत्सव की प्रगति के सम्बन्ध मे जानकारी रखी और अभिषेक के अवसर पर श्रवणबेलगोल की वन्दना की। श्री स्टीफन ने विशेष डाक टिकिट के विमोचन की व्यवस्था की तथा श्रवणबेलगोल में जनसभा के समक्ष, भगवान् बाहुबली के जीवन-सिद्धान्तो की इतने प्रभावकारी ढग से चर्चा की कि जनता विमुग्ध हो गयी।

महोत्सव की सफलता का सर्वाधिक श्रेय कर्नाटक सरकार को है, जिसके दोनो मुख्यमन्त्रियो, दिवगत श्री देवराज अर्स और बाद मे श्री आर० गुंडूराव ने भगवान् बाहुबली की भक्ति का परिचय देकर महोत्सव के अवसर पर विशेष सुविधाएँ प्रदान कर जनता का हृदय जीत लिया। कर्नाटक के राज्यपाल, मन्त्रि परिषद्, संसद सदस्य और विधायक तथा सभी विभागीय अध्यक्ष कृतसकल्प थे कि महोत्सव सब प्रकार से सफल हो। कर्नाटक के बाहर के भी अनेक-अनेक बन्धु, इस हार्दिकता के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कर्तव्यरत थे कि वहाँ दक्षिण उत्तर का भेद भी विलुप्त हो गया था। भगवान् बाहुबली की दिव्य आभामण्डित मूर्ति ही सबके नयनो के सामने थी, वही सबके मन मे विराज रही थी।

अभिषेक पूजा की व्यवस्था मैसूर के श्री डी० निर्मलकुमार सम्हालते रहे। उनकी प्रबध कुशलता के कारण पूजन सामग्री की पूर्ति सदैव समय पर होती रही। आचार्य संघो, मुनियो, आर्यिकाओ और त्यागियो की व्यवस्था का दायित्व बगलोर के श्री एम० सी० अनन्तराजैया के हाथो में रहा जिसे उन्होने निष्ठा और कुशलता मे निभाया। श्री सुरेन्द्र हेगडे ने अभिषेक-मच की व्यवस्था मे अपनी सक्रिय भूमिका निभायी। डॉ० आर० एस० सुरेन्द्र ने महोत्सव के कार्यों मे कर्नाटक शासन के अधिकारियो से सम्पर्क व योजना बनाने मे मुझे सहायता की। डॉ० धनजय गुण्डे ने स्वयंसेवक व्यवस्था का योग्यतापूर्वक सचालन किया।

लाखो की जनता और हजारो यात्रियों के आवास, खानपान की सुविधा जुटाने का दायित्व जिन बन्धुओ ने साहस के साथ लिया, और तत्परता से निभाया, उनकी नामावली इतनी लम्बी है कि सबका उल्लेख भी करना कठिन है। जिन्होने महोत्सव देखा है, उसमे सम्मिलित हुए है, वही समझ सकते हैं कि कैसी-कैसी कठिन मजिलो से प्रबन्धकर्ताओ को गुजरना पड़ा। दिगम्बर जैन महासमिति के महामन्त्री श्री सुकुमारचन्द जैन और उनके सभी साथियो ने जनता की सेवा मे [illegible] एक [illegible] श्री [illegible] जैन (पी० एस० जैन मोटर्स, दिल्ली) ने तो सेवा, तत्परता और निष्ठा का एक नया मानदण्ड ही स्थापित कर दिया। दिगम्बर जैन महासमिति के मन्त्री श्री नेमीचन्द जैन ने समारोह की रूपरेखा, कलशों का आवंटन और व्यवस्था मे श्री रमेशचन्द जैन के सक्रिय साथी के रूप मे अनेक कठिन परिस्थितियो का साहस के साथ निराकरण किया।

महोत्सव के प्रचार और सास्कृतिक पक्ष के दायित्व [illegible] और [illegible] से थे; श्री अक्षयकुमार जैन और श्री धर्मराज ने प्रचार-प्रसार और केन्द्रीय मन्त्रियो से सम्पर्क निर्वाह

का दायित्व पूरी लगन के साथ निभाया। देश-विदेश के रेडियो, टेलीविजन, वीडियो आदि पत्रकारिता के सारे माध्यम, श्रवणबेलगोल मे एक साथ उमड पडे। इस प्रभावना का दर्शन जीवन का अप्रतिम अनुभव है। श्री जे के जैन संसद सदस्य के प्रति अनुगृहीत हूँ, जिन्होंने श्रीमती इन्दिरा गाधी और केन्द्रीय मन्त्रियो के कार्यक्रम के दायित्व को लगन और कुशलता से निभाया। श्री ओमप्रकाश जैन के साहस और अनुभव को इस बात का श्रेय जाता है कि अनेक कठिन परिस्थितियों का सामना करके, अपने सहयोगियो के साथ सास्कृतिक कार्यक्रम के लिए, रातोरात उन्होंने मच तैयार करवा दिया। उनके सहयोग मे ही भारतीय कला केन्द्र, दिल्ली की नाट्य मण्डली के लिए यह सम्भव हो पाया कि कार्यक्रम के अनुसार, श्रीमती कुन्था जैन द्वारा इस अवसर के लिए विशेष रूप से लिखित 'महाप्राण बाहुबली' का अत्यन्त आकर्षक और प्रभावपूर्ण मचन उस सस्था ने प्रस्तुत किया। यह अविस्मरणीय रहेगा कि सास्कृतिक कार्यक्रमो की एक पूरी शृखला ही वहाँ प्रस्तुत हो गयी जिसने सब प्रकार के दर्शकों को मुग्ध रखा। कवि सम्मेलन, सगीत कार्यक्रम आदि के सयोजन मे श्री ताराचन्द्रजी प्रेमी तथा तीर्थक्षेत्र प्रदर्शनी मे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामत्री श्री जयचन्द जी लोहाडे और श्री नीरज जैन का कौशल सक्रिय रहा।

श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन प्रारम्भ से ही महोत्सव के प्राय. सभी साहित्यिक-सास्कृतिक कार्य-कलापों की परिकल्पना मे सक्रिय रहे। मुझे मालूम है कि उनके कृतित्व ने किन-किन दिशाओं मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। 'अन्तर्द्वन्द्वो के पार' का सृजन उनकी उपलब्धि का चिरस्मरणीय प्रकाश-स्तम्भ है।

महोत्सव के अवसर पर बनायी गयी समितियो के सदस्य एव सयोजको ने अपने कार्य-कौशल का परिचय दिया, जिससे समस्त कार्य करने मे आसानी रही।

कर्मयोगी स्वस्तिश्री भट्टारक स्वामीजी के निजी सचिव श्री विश्वमन ने रात-दिन लगन के साथ योजना को सफल बनाने के लिए अत्यधिक परिश्रम किया। मेरे निजी सचिव श्री अश्विनी-कुमार जोशी यद्यपि सामने बहुत नहीं आये, परन्तु वे नीव के पत्थर की तरह काम करते रहे और प्रत्येक महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ मेरी जानकारी के लिए उनके ध्यान में रहा।

कार्य की अधिकता को देखते हुए मैं 25-30 दिन पहले अपने समस्त सहयोगियो एवं सहायकों के साथ श्रवणबेलगोल पहुँच गया था। प्रतिदिन 'श्रेयासप्रसाद अतिथि-गृह' मे महोत्सव की व्यवस्था से सम्बन्धित समितियो की बैठकें होती रहती थीं। राज्य शासन के उच्च अधि-कारियों एव मन्त्रियों का भी आना होता था और महोत्सव सम्बन्धी विचार-विमर्श चलता रहता था। इन सबके लिए मेरे यहाँ पर अल्पाहार एवं भोजन की व्यवस्था मे बम्बई से आये हुए मेरे सहायक श्री गौरीदत्त बिनवाल ने रात-दिन एक कर दिया और बहुत विस्तापूर्वक सभी अभ्यागतों की आवभगत का प्रबन्ध किया। श्री गौरीदत्त का यह विशेष गुण है कि उन्हें सौंपी गयी जिम्मेदारी वे बडी सतर्कता से संभालते हैं जिससे मैं निश्चिन्त रहता हूँ।

अन्त मे, 'गोमटेश्वर सहस्राब्दि महोत्सव दर्शन' के प्रतिभाशाली लेखक श्री नीरज जन के सम्बन्ध में दो शब्द लिखना चाहता हूँ। 'गोमटेश गाथा' के लेखक के रूप में उन्होंने यश कमाया है। इस महोत्सव दर्शन के लेखन में श्री नीरजजी ने अथक परिश्रम किया है। इस कृति को हर प्रकार से उन्होंने सम्पूर्ण बना दिया है। भगवान् बाहुबली के आख्यान, मूर्ति निर्माण की कथा,

श्रवणबेलगोल की तीर्थयात्रा से लेकर महोत्सव की परम्परा, मठ का इतिहास और सहस्राब्दि महोत्सव के प्रत्येक चरण का ऐसा वर्णन इस ग्रन्थ मे उनकी लेखनी से प्रस्तुत हुआ है, जो जीवन्त और भावनाओ से स्पदित है। मैं पूरी पुस्तक के विकास और लेखन का साक्षी हूँ, इसलिए कह सकता हूँ कि यह कृति अद्भुत और अद्वितीय है। हमारे युग के अत्यन्त भव्य इतिहास का यह गुफन बार-बार पढ़ा जायेगा और सबको प्रमुदित प्रभावित करेगा ऐसी मुझे पूर्ण आशा है।

प्रस्तुत ग्रन्थ की मुद्रण व्यवस्था मे भारतीय ज्ञानपीठ के श्री बालस्वरूप राही और डॉ० गुलाबचन्द्र जैन ने जिस लगन व परिश्रम से कार्य किया, वह प्रशसनीय है।

महामस्तकाभिषेक के अवसर पर जिन लोगो ने अपना सहयोग दिया है उन सभी का उल्लेख व्यक्तिगत रूप से यहाँ करना सम्भव नही है, केवल कुछ सज्जनो को ही यहाँ धन्यवाद दिया जा सका है और उनके प्रति आभार प्रकट किया जा सका है। पूज्य स्वामीजी एव श्री नीरजजी ने अपने-अपने वक्तव्य मे यथासम्भव सभी के प्रति आभार व्यक्त किया ही है। प्राय सभी सहयोगियो की नामावली ग्रन्थ के अन्त मे परिशिष्ट मे भी जा रही है।

महामस्तकाभिषेक और मूर्ति-निर्माण के सहस्राब्दि महोत्सव ने मेरे जीवन को भक्ति, श्रद्धा और सार्थकता मे ओत प्रोत किया है। जीवन मे इतनी बडी उपलब्धि कितनो को प्राप्त होती है? मेरी साँस-साँस मे भगवान् बाहुबली का स्मरण स्पन्दित रहे, यही मेरी हार्दिक कामना है।

बम्बई,
3 नवम्बर 1983

(श्रेयांसप्रसाद जैन)

सफलता के सहभागी

गोमटस्वामी का श्रद्धालु भक्त-समुदाय
पूज्य आचार्य और मुनिसंघ
महाभाग राजपुरुष
कर्नाटक शासन
कलशधारक भव्य
जनमगल महाकलश के सहयोगी
बाहुबली साहित्य के लेखक/प्रकाशक
आकाशवाणी और दूरदर्शन
सवाद-समितियाँ
देशी-विदेशी पत्रकार और छायाकार
समाजसेवी सगठन
स्वयसेवक और श्रमदानी
भवन-निर्माता और दातार
राज्य स्तरीय समिति
महोत्सव समिति
एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिग कमेटी
अन्य सभी सहयोगी तथा समर्थक

साभार-स्मरण

—श्रेयासप्रसाद जैन —कर्मयोगी चारुकीर्ति स्वामी

प्रस्तावना

—"सोलह मार्च को श्रवणबेलगोल के सम्बन्ध में एक मीटिंग है। उसके लिए आपको बगलोर चलना है।"

श्रीयुत साहु श्रेयासप्रसादजी ने यह प्रेम-पूरित आदेश मुझे कारंजा मे दिया। वहाँ श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम की षष्ठिपूर्ति के समारोह में उनसे मिलना हुआ था, यह 1979 मे मार्च के द्वितीय सप्ताह की बात है। तब भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामन्त्री श्री जयचन्दजी लोहाडे वहाँ सपरिवार उपस्थित थे। उन्ही के साथ हैदराबाद होता हुआ मैं निर्धारित समय पर बगलोर पहुँच गया। कर्नाटक शासन की ओर से 'भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एव महामस्तकाभिषेक महोत्सव' की प्रारम्भिक तैयारियो का उस दिन मुझे विशेष परिचय मिला। उसी दिन महोत्सव की राज्य-स्तरीय समिति—स्टेट लैवल कमेटी—की बैठक मे, बाबूजी की अभिस्तावना पर, श्री लोहाडे को और मुझे समिति का सदस्य मनोनीत किया गया। इस महान महोत्सव के साथ प्रत्यक्षतः मेरे जुड़ने का वही श्रीगणेश था।

इस महोत्सव की पूर्व भूमिका पर दृष्टि डालें तो भगवान् महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव की विराट परिकल्पना और ऐतिहासिक सफलता ने, सन् 1974 मे ही एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी और श्रावक-शिरोमणि साहु शान्तिप्रसादजी के मन मे, गोमटस्वामी के महामस्तकाभिषेक की परिकल्पना को मूर्त रूप दिया था। उसके पूर्व भट्टारक स्वामीजी आयोजन की चर्चा प्रारम्भ कर ही चुके थे। साहु शान्तिप्रसादजी ने उसी समय समाज से अपने इस विचार की अनुमोदना प्राप्त कर ली थी कि 'भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एव महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति' की अध्यक्षता स्वीकार करने के लिए साहु श्रेयासप्रसादजी से अनुरोध किया जाय। इस विचार को एलाचार्य मुनिजी और भट्टारक स्वामीजी का भी भरपूर समर्थन प्राप्त हुआ था। इस परिप्रेक्ष्य मे, 24 दिसम्बर 1976 को बंगलोर के गोयनका गेस्ट हाउस मे, समिति के प्रस्ताव पर जब बाबूजी ने यह दायित्व स्वीकार किया, तभी उन्होने अपने जीवन के आगामी पाँच वर्ष, गोमटस्वामी की सतत और सक्रिय उपासना के लिए, संकल्प पूर्वक समर्पित कर दिये थे। 'तीर्थंकर' के सम्पादक डॉ० नेमिचन्द जैन से हुई 'वार्ता' मे एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी ने उपयुक्त ही कहा है—"बाहुबली के सहस्राब्दि महोत्सव मे श्रेयासप्रसादजी ने स्वय को अर्पित कर दिया। यह बहुत बडी घटना थी। कदाचित् इतिहास उनमे जी उठा था।"

सहस्राब्दि महोत्सव एक बड़ा आयोजन होगा, यह तो सभी जानते थे, किन्तु वह इतना विशाल और अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व का उत्सव बनेगा, तथा उसके अनेक-अनेक आयाम पूरे समाज और देश को अपने वृत्त के अन्तर्गत ले लेंगे, यह कल्पना तब किसी को नहीं थी। अध्यक्षता का भार ग्रहण करते समय साहु श्रेयासप्रसादजी अपने जिस यशस्वी अनुज के अनुभव और कल्पनाशीलता पर आश्रित हो रहे थे, उन साहु शान्तिप्रसादजी का एक वर्ष के भीतर ही वियोग हो गया। यह आकस्मिक और दुखद घटना साहु श्रेयासप्रसादजी की आन्तरिक शक्ति और निष्ठा के लिए चुनौती बन गयी। बड़े धीरज से बाबूजी ने यह आघात सहा और दो माह के भीतर

दिल्ली में स्व० साहु शान्तिप्रसादजी के निवास-स्थान पर ही, विधिपूर्वक गठित महोत्सव समिति की बैठक आयोजित करके वे तन-मन और धन से इस काम में लग गये।

महोत्सव की कल्पना धीरे-धीरे आकार ग्रहण करती गयी। अगले चार वर्षों तक, एक के बाद एक, महत्त्वपूर्ण बैठकें होती रही। वैयक्तिक सम्पर्कों-परामर्शों की शृंखला तो अनन्त है। एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी, भट्टारक स्वामीजी और साहु श्रेयासप्रसादजी, एक ही ध्येय के लिए समर्पित तीन विभूतियों का प्रभा-मण्डल। सभी अपने-अपने दायित्व के प्रति सावधान, जागरूक और दत्तचित्त। कभी दिल्ली, कभी बम्बई, कभी बगलोर, कभी श्रवणबेलगोल और कभी इन्दौर। और जब कभी त्रिमूर्ति का यह प्रभा-मण्डल एक ही स्थान पर एकत्र हो जाता तब तो प्रकाश की नयी-नयी रंगोली और उत्साह के नूतन उत्स, उछल-उछल कर सहस्रों अनुगामियों के मन को अभिभूत कर देते। ऊर्जा के अजस्र स्रोत की तरह समाज को उनसे प्रेरणा प्राप्त होती। हर कही, हर समय, हर महत्त्वपूर्ण गोष्ठी या बैठक में, अध्यक्ष की आसन्दी पर जब हम बाबूजी को बैठा देखते, तब बार-बार यही विचार हमारे मन में आता कि सौभाग्य से ही यह चमत्कारी नेतृत्व, ठीक समय पर दिगम्बर जैन समाज को प्राप्त हुआ है।

बाबूजी ने एक अति-विशिष्ट दायित्व, जो अन्य किसी के भी वश का नही था, स्वेच्छा से अपने ऊपर लिया। उन्होंने कर्नाटक के समूचे शासन को, दो-दो मुख्यमन्त्रियों, अनेक मन्त्रियों और विभागीय अधिकारियों को, यहाँ तक कि स्थानीय स्तर के सैकड़ों अधिकारियों तक को, महामस्तकाभिषेक के गुलदस्ते में फूल-पत्तियों सा गुम्फित कर लिया। इसका फल यह हुआ कि गोमटस्वामी के चरणों का हर स्तबक, पग-पग पर, अपनी वर्ण-छटा और आन्तरिक सुरभि बिखेरता चलता था। इसी कारण तो यह सम्भव हो सका कि एक ओर बगलोर के विधान सौध में मुख्यमन्त्री श्री देवराज अर्स और उनके बाद श्री आर गुण्डूराव अपने सहयोगियों के साथ, और दूसरी ओर दिल्ली में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी तथा उनके सहयोगी महामस्तकाभिषेक की सर्वांगीण सफलता के लिए प्रतिबद्ध हो गये थे।

बाबूजी की इसी चुम्बकीय पद्धति का फल था कि इस कार्य में, जब, जहाँ, जिससे, जो सहयोग उन्होंने चाहा, उसमें वह, उसी समय, वही उन्हें मिलता चला गया। उनके नेह निमन्त्रण को नकारने का साहस किसी में नही था। मैं भी 16-3-79 को, बगलोर की उस बैठक के बाद उनके साथ श्रवणबेलगोल गया, जहाँ दो दिन तक महोत्सव के अनेक पहलुओं पर विचार-विमर्श हुए। तभी भट्टारक स्वामीजी से मेरा विशेष परिचय हुआ। फिर श्रवणबेलगोल के साथ मेरे भी राग के बन्धन कसते चले गये। मुझे महोत्सव समिति का सदस्य बनाया गया। बाद में काम के बँटवारे के लिए जब समितियों का गठन हुआ तब, 'त्यागी-सेवा समिति' में अपनी रुचि से मैंने अपना नाम रखाया। कुछ अन्य समितियों में भी मुझे शामिल किया गया। इससे यह हुआ कि अगले दो वर्षों तक, प्राय प्रति दूसरे माह, किसी न किसी बहाने मुझे गोमटस्वामी के चरणों का स्पर्श मिलता रहा। इस बीच अपनी फितरत के मुताबिक जब मैंने श्रवणबेलगोल के अतीत में झाकने का प्रयास किया, तब उसकी गरिमा को देख-जान कर तो मैं मन्त्र-मुग्ध ही रह गया। एक के बाद एक, इस तीर्थ के इतिहास की परतें मेरे सामने खुलती चली गयी। कुछ अपनी लगन से और अधिकाशत. बाबूजी की प्रेरणा से, उन पर विचार करता हुआ मैं उन्हें लिपिबद्ध करता गया। इस प्रकार 'गोमटेश-गाथा' की रचना प्रारम्भ हुई जिसे मैं अपने जीवन की विशिष्ट

उपलब्धि मानता हूँ। इस कृति से मेरी लेखनी को उत्साह मिला है।

महोत्सव के अवसर पर पूरे फरवरी माह भर मुझे श्रवणबेलगोल में रहने का सुयोग मिला। अपने कर्तव्य के सिलसिले मे इस बीच प्रतिदिन बार-बार मुझे स्वामीजी और बाबूजी का सामीप्य मिलता रहा। इस स्थिति मे महोत्सव की अतरंग व्यवस्थाओं को मैंने निकट से देखा और समझा। रोजमर्रा की अनेक समस्याएँ, और उनके समाधान की प्रक्रियाएँ, अनायास मेरी जानकारी में आती रही। कुछ ऐसी घटनाएँ और अनेक ऐसे प्रसग, जिनके प्रचारित या प्रकाशित होने की कभी कोई सम्भावना ही नही थी, सहज ही मेरी स्मृतियों मे व्याप गये। इस प्रकार इस अद्वितीय आयोजन के गहन अनुभवो के साथ, स्मरणीय स्मृतियो का अक्षय कोष अपने मस्तिष्क मे संजोये हुए, मार्च 81 मे जब घर लौटा, तब मैं समझता था कि दो वर्ष की सलग्नता के उपरान्त, श्रवणबेलगोल के साथ मेरा यह भावनात्मक अनुबन्ध पूरा हो गया है। परन्तु शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि मेरा वह सोचना सही नही था।

यह नवीन दायित्व

एक वर्ष उपरान्त, मार्च 82 के अन्तिम सप्ताह मे मुझे दिल्ली बुलाकर बाबूजी ने इस ग्रन्थ का काम मेरे जिम्मे सौपने का प्रस्ताव किया। इतने बडे और ऐसे दुरूह कार्य का भार मेरे निर्बल कन्धो पर डाला जायेगा, इसकी मुझे कभी कोई कल्पना नही थी। उस दिन मैंने इस जिम्मेदारी से बचने का प्रयास तो किया, पर बाबूजी के सामने पूरे जोर से मैं अपनी बात नही कह सका। उधर पाँच ही मिनट की चर्चा मे उनका प्रस्ताव 'आदेश' में बदल गया। इन तीन वर्षों से मैंने बाबूजी को बहुत निकट से जान लिया था। उनका कहा, या लिखा, सरलतम वाक्य भी कितना अर्थपूर्ण, कैसा अनुबन्धक होता है, 'गोमटेश-गाथा' के लेखन काल में इसका अच्छा अनुभव मैं कर चुका था। यद्यपि गोमटेश-गाथा को पाठकों से जो सराहना मिल रही थी उससे मेरा आत्म-विश्वास बढा था, तथापि अपनी सारी सीमाएँ मेरे सामने स्पष्ट थी। पर इससे क्या? अपने प्यार का सम्बल देकर छोटो से भी बड़े काम करा लेने की बाबूजी की क्षमता भी तो मुझे मालूम थी। बस, इसी बल पर, उनके आदेश को अनुल्लघ्य मानते हुए, उस दिन मैंने यह कठिन कार्य स्वीकार कर लिया। वास्तव मे बाबूजी अपनी बात इतनी गहरी आत्मीयता से, ऐसे अधिकार पूर्वक कहते है कि उसे टालना किसी के लिए भी आसान नही हो सकता। मेरे लिए तो वह कभी सम्भव ही नही है।

('पुण्य-स्मरण ग्रन्थ') नाम से इस योजना का सूत्रपात बाबूजी ने महोत्सव के तुरन्त बाद किया था। उसके अनुसार सभी समिति-सयोजको से प्रतिवेदन मंगाकर, कुछ विशेष जनो से संस्मरण लिखाकर, उसी सामग्री को सकलित-सम्पादित करके प्रकाशित करना था। इस परि-कल्पना की विषयवार सूची, हिन्दी और अंग्रेजी में तैयार कराकर, लक्ष्मीचन्द्रजी ने शताधिक जनों के पास भेजी थी। उन सबको उन्होने बार-बार स्मृति-पत्र दिये थे, पर उस समय, मार्च 82 तक प्रायः कही से भी कोई सामग्री प्राप्त नही हुई थी। लक्ष्मीचन्द्रजी के ही निर्देशन मे श्रीमती शोभिता जैन ने कुछ दिन मठ मे बैठकर, समाचार पत्रों के सहारे कुछ नोट्स तैयार किये थे। उत्सव मे पधारे मुनियों-आर्यिकाओं की एक सूची भी वहाँ उपलब्ध रिकार्ड के आधार पर उन्होंने बनाई थी। इस सारी स्थिति का अवलोकन करने पर उस दिन दिल्ली में यही निष्कर्ष

निकल सका कि इतने समय बाद अब किसी से कुछ संतोषप्रद लिखा लेना सम्भव नहीं होगा। तब ग्रन्थ की रूपरेखा मे परिवर्तन करते हुए यह निर्णय लेना पड़ा कि अब मैं स्वयं पूरे ग्रन्थ का आलेख अपनी लेखनी से रूपायित करूँ। इस बदली हुई स्थिति में अपनी सुविधानुसार, मैंने नवीन विषय सूची तैयार की। इसी बीच बाबूजी ने ग्रन्थ के लिए 'पुण्य-स्मरण' की जगह 'महोत्सव-दर्शन' नाम सुझाया जो मुझे भी अच्छा लगा।

प्रस्तुत आलेख की रूपरेखा

सहस्राब्दि महोत्सव हर दृष्टि से अपूर्व और बहुत बड़ा आयोजन था। अभिस्तावना से लेकर समापन तक उसके कार्य-कलाप पाँच वर्षों की कालावधि में फैले हुए थे। प्रकारान्तर से पूरा देश ही उसका कार्यक्षेत्र बन गया था। पूरी दिगम्बर जैन समाज के उत्साह के कारण, एक वर्ष पूर्व से पूरे देश मे ऐसा माहौल बनने लगा कि लाखो कार्यकर्ता, सैंकडो विभिन्न आयोजनों के माध्यम से, सैंकडो जगह इस महोत्सव से जुड रहे थे। दिल्ली से दक्षिणापथ तक एलाचार्यजी का मगल विहार अपने आप मे एक मिशन था। फिर जन-कल्याण के अनेक कार्यों की संयोजना, और जनमगल महाकलश का देशाटन आदि अनेक ऐसे प्रसंग थे, जिनका विस्तृत उल्लेख किये बिना, राष्ट्र के जैन और जैनेतर जन-मानस में व्याप्त उस उत्साह को, उनकी उस समर्थन भावना को आका ही नही जा सकता था, जो इस महोत्सव की सबसे निराली, और सबसे बडी ऐतिहासिक उपलब्धि थी।

जनमगल महाकलश की योजना, साहु श्रेयासप्रसादजी के निर्देशन मे, अनेक जनों के सहयोग से बडी मन्त्रणाओ और विचार-विमर्शों के उपरान्त तैयार की गयी थी। फिर स्वनामधन्य भैया मिश्रीलालजी गगवाल की अध्यक्षता मे इन्दौर के संकल्पशील बन्धुओ ने ऐसी कुशलता के साथ उस योजना का कार्यान्वयन किया कि सारा देश भगवान् बाहुबली के पवित्र आख्यान से परिचित हो गया। यह भी बाबूजी की ही प्रेरणा का प्रभाव था कि विविध विधाओ मे श्रवण-बेलगोल मे सम्बद्ध सत्साहित्य का निर्माण हुआ। 'अन्तर्द्वन्द्वो के पार' और 'गोमटेश गाथा' की परिकल्पना मे, और उसके सृजन मे भी, बाबूजी की भावनाओ का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। अनेक नाटक और अन्य मचीय प्रस्तुतियां तथा वृत्त-चित्रो का निर्माण भी रुचि लेकर उन्होंने कराया था। महोत्सव के लिए ये सब कोई सामान्य उपलब्धियां नही थी।

इस प्रकार ग्रन्थ मे लेखबद्ध करने योग्य प्रसग तो मेरी दृष्टि मे बहुत थे, पर अपने आलेख में यह सब अपने ढँग से अकित करने के लिए मेरे सामने, उन प्रसगो की अथ-इति पर प्रकाश डालने वाली सामग्री का नितान्त अभाव था। पिछले किसी भी महामस्तकाभिषेक के कोई स्मृति-लेख प्रकाशित नही हुए थे। सन् 1940 और 1953 मे मैसूर सरकार के मुजरई विभाग ने अंग्रेजी मे अति सक्षिप्त 'विभागीय प्रतिवेदन' निकाले थे, पर दफ्तरी भाषा में, शासकीय योग-दान की महत्ता के अतिरिक्त उनमे प्राय किसी तथ्य का उल्लेख नही था। सन् 1967 के महोत्सव की ऐसी कोई रिपोर्ट भी प्रकाशित नही हुई थी। जैनमठ का भी कोई इतिहास कभी लिखा नही गया था। इतिहास का विद्यार्थी होने के कारण, उस पूरी पृष्ठभूमि को इस ग्रन्थ में समाहित करना मुझे प्रिय तो था ही, महोत्सव की घटनाओं को सही परिप्रेक्ष्य में समझने-समझाने के लिए, उस सारे इतिहास का प्रस्तुतीकरण मुझे आवश्यक और अनिवार्य भी लगा।

यही दृष्टिकोण लेकर उस विशाल महोत्सव से सम्बद्ध हर परम्परा, हर प्रसग और हर घटना को उसके इतिहास की पृष्ठभूमि पर अंकित करते हुए, वर्तमान के सारे सन्दर्भों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने का सकल्प लेकर, मैंने अपना लेखन प्रारम्भ किया। बाबूजी की यह कल्पना सदा मेरे ध्यान में रही कि यह "ग्रन्थ श्रवणबेलगोल का ऐसा अपूर्व दस्तावेज बने, जिसमें इस तीर्थ के अतीत की झाकियाँ देखने को मिलें, इस महोत्सव का आँखो देखा हाल पढने का आनन्द प्राप्त हो और भविष्य के लिए कुछ दिशा-सकेत भी मिल सकें।" उस कल्पना को कितना आकार दे पाया हूँ, यह मैं नही कह सकता, पर इतना अवश्य जानता हूँ कि अपनी पूरी क्षमता और निष्ठापूर्वक मैंने यह कार्य सम्पन्न किया है। इसके लिए तीन-चार बार कई-कई दिनों तक श्रवणबेलगोल मे ठहर कर दिल्ली, बम्बई, बगलोर और इन्दौर में विचार-विमर्श तथा सामग्री की तलाश करके, मैंने इस लेखन को अधिक से अधिक विवरणात्मक और प्रामाणिक बनाने का प्रयत्न किया है। प्रचुर संख्या मे श्याम-श्वेत तथा कितने ही बहुरगे चित्र साथ में देकर इसे 'पठनीय' के साथ 'दर्शनीय' बनाने का भी प्रयास किया गया है।

यह काम हाथ मे लेते समय इसे एक वर्ष में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया था, पर मेरी पारिवारिक उलझनो के कारण बीच मे पाँच-छह माह का व्यवधान पड़ जाने से इसकी तैयारी मे पौने दो वर्ष लग गये। फिर भी मुझे सन्तोष है कि, भले ही समय कुछ अधिक लगा, पर स्वामीजी और बाबूजी की कल्पना के अनुरूप, तथा अपने सकल्प के भी सर्वथा अनुरूप, यह ग्रन्थ आपको अर्पित करने का अवसर आज मैं पा रहा हूँ। इसमे मुझे जिस प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है, उसे शब्दो मे बिखेरने की अज्ञानता मुझे यहाँ नही दर्शानी चाहिए।

ग्रन्थ की विषय-संयोजना

चन्द्रगिरि के आत्म-कथ्य को मगलाचरण मानकर, सर्व प्रथम महोत्सव की भूमिका और उसमे प्राप्य कर्नाटक शासन के सहयोग की भूमिका दर्शायी गयी है। इसके बाद श्रवणबेलगोल के अतीत की सक्षिप्त झाँकी प्रस्तुत करते हुए, उसी सन्दर्भ मे बाहुबली का घटनामय जीवन अकित किया गया है। पश्चात् गोमटेश-बिम्ब के निर्माण की इतिहास सम्मत कथा प्रस्तुत की गयी है। पुराण और इतिहास के उन तमाम पात्रो के सूक्ष्मतम अन्तर्द्वन्द्वो को इस आलेख मे समाहित करने का प्रयत्न किया गया है। इन सभी अध्यायों के लेखन मे अपनी 'गोमटेश-गाथा' की सामग्री का भरपूर उपयोग मैंने किया है।

'ऐसे बीते बरस हजार' एक विस्तृत अध्याय है। इसमे गोमटस्वामी के प्रतिष्ठा-काल, सन् 981 ईस्वी से लेकर, इस सहस्राब्दि महोत्सव तक की श्रवणबेलगोल की सहस्र वर्षीय यात्रा का शब्द-चित्र प्रस्तुत है। पिछली एक शताब्दी मे सम्पन्न छह महामस्तकाभिषेको का विवरण इस अध्याय की विशेषता है। इन सारी महत्त्वपूर्ण घटनाओं मे से उभरा हुआ, 'आज का श्रवणबेलगोल' आपको दिखाकर तब मैंने जैन मठ के इतिहास की एक झाँकी प्रस्तुत की है। यही एक ऐसा अध्याय है जिससे मैं स्वय सन्तुष्ट नही हूँ। मैं समझता हूँ कि तलस्पर्शी शोध के द्वारा इस अध्याय को अधिक परिपूर्ण बनाने की आवश्यकता है। पिछले सत्तर वर्षों में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने श्रवणबेलगोल के उत्कर्ष के लिए जो योगदान दिया उसका उल्लेख करते हुए, प्रारम्भ के इन बारह अध्यायों में श्रवणबेलगोल के इतिहास से परिचित कराने के

बाद ही मैंने आपको 1981 के महोत्सव की ओर लाना चाहा है।

सन् 1973 से 1980 तक, आठ वर्ष मे बिखरी महोत्सव की तैयारी की घटनाओ का संक्षिप्त अकन 'क्षण-क्षण के आलेख' मे किया गया है। उसके बाद पदयात्रा से आधा भारत नापकर श्रवणबेलगोल मे एलाचार्यजी का मगल-प्रवेश है। पूरे भारत मे गोमटस्वामी का जयघोष करने वाले 'जनमंगल-महाकलश' का देशाटन चित्रित करने के बहाने मैंने इस अभियान के कुछ ऐसे स्मृति-चित्र आपके लिए रूपायित किये हैं जो समूची भारतीय सस्कृति की अनमोल मणियाँ हैं। इनमे जगह जगह जन-सामान्य के मन की आस्था और भारतीय चरित्र की सहज सहिष्णुता रेखांकित होती गयी है। दिगम्बर जैन महासमिति के माध्यम से महामस्तकाभिषेक का कलश आवटन, श्रवणबेलगोल के बारे मे आयोजित 'सेमिनार और सगोष्ठियाँ' तथा 'जन-कल्याण के कार्य' इस महोत्सव की पूर्व तैयारियो की तरह पहले ही सम्पन्न हो चुके थे। उनका उल्लेख करने के बाद वर्तमान महोत्सव का वर्णन प्रारम्भ होता है। जहाँ तक सम्भव हुआ है, कार्यक्रम के शीर्षक देकर उसी के अन्तर्गत उसका विवरण सकलित कर दिया गया है। छोटी-छोटी घटनाओ और स्फुट कार्यक्रमो को, जिन्हे पृथक् शीर्षक देना उचित नही लगा, एक सामान्य शीर्षक 'क्षण-क्षण के आलेख' के अन्तर्गत समाविष्ट किया गया है। किसी पर्यटक की डायरी के पन्नो की तरह ये 'क्षण-क्षण के आलेख' बीच-बीच मे कई जगह आपको मिलेंगे।

समारोह का वर्णन लिपिबद्ध करते समय कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमो को, पूरे सन्दर्भों के साथ, विस्तार से लिखना मुझे आवश्यक लगा। उद्घाटन समारोह मे श्री सी एम स्टीफन का वक्तव्य, तथा मुख्य अभिषेक की पूर्व सन्ध्या को श्रवणबेलगोल मे दिया गया प्रधान मन्त्री श्रीमती गाधी का उद्बोधन इसीलिए विस्तार से लिखा गया है। महाकलश प्रवर्तन के अवसर पर दिल्ली मे दिया गया उनका भाषण भी अविकल ही प्रस्तुत किया गया है। बाईस फरवरी के महामस्तकाभिषेक का आनन्द मेरे लिए अनिवर्चनीय था। उस सौन्दर्य को, और उससे उपजी मन की अनुभूति को, शब्दो मे बाँधना हास्यास्पद प्रयास के अलावा कुछ नही हो सकता। फिर भी महोत्सव का यह इतिहास अधूरा न रहे, इस अभिप्राय से मैने उसे लिपिबद्ध किया है। शब्दो की इस सीमा को दृष्टि मे रखकर ही उसे पढा जाना चाहिए। मेरी धारणा है कि महामस्तकाभिषेक को साक्षात् देखे बिना उसका वास्तविक रूप जाना ही नही जा सकता।

तेईस फरवरी को 'कृतज्ञता-ज्ञापन' के रूप मे तीन प्रमुख पुरुषो के प्रति समाज की ओर से सम्मान व्यक्त किया गया। महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयासप्रसादजी को 'अभिनन्दन और अलकरण प्रशस्ति' अर्पित की गयी। स्व. साहु शान्तिप्रसादजी की स्मृति मे श्रद्धा-प्रशस्ति' का वाचन किया गया और कर्मयोगी चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी को 'अभिनन्दनार्पण' सम्पन्न हुआ। सम्मान का यह शुभकर आयोजन मंच को गौरवान्वित करने वाला प्रतीत हुआ। उन्हें दिये गये सम्मान-पत्र, जैन शासन की प्रभावना की दिशा मे उनके द्वारा किये गये सेवा कार्यों के अतिशयोक्ति-विहीन ऐतिहासिक अभिलेख थे। वे समूची जैन समाज की भावनाओं को व्यक्त करते थे। अतः उनका भी अविकल प्रस्तुतीकरण आवश्यक मानकर मैंने उन्हे शब्दशः उस अध्याय मे प्रस्तुत किया है।

प्रचुर सख्या मे पिच्छीधारी सयमी साधको की उपस्थिति इस उत्सव की उल्लेखनीय उपलब्धियो में गिनी जायगी। देश मे सम्पूर्ण सख्या के लगभग आधे मुनियो आर्यिकाओ का एक

स्थान पर एकत्र होकर कुछ समय तक विराजना सचमुच दुर्लभ सयोग ही था। वहाँ सम्पन्न 'निर्ग्रन्थ मुनि सम्मेलन' और 'श्रमण-परिषद्' ऐतिहासिक महत्त्व के आयोजन थे। वे सम्मेलन हमे प्राचीन 'आगम वाचनाओ' और 'युग-प्रतिक्रमणो' की याद दिलाते थे। उस अध्याय को भी मैंने कुछ विस्तार से, पूर्व सूचनाओ के साथ निबद्ध किया है, त्यागी सेवा समिति ने वहाँ उपस्थित प्रत्येक साधक का सक्षिप्त जीवन-परिचय और चित्र प्राप्त किया था जो मठ मे सुरक्षित रखा गया है। उसी के आधार पर मैंने अपने आलेख मे उन सभी साधको की तालिका शामिल की है। उस पूरी सामग्री को चित्रो सहित अलग पुस्तिका रूप मे प्रकाशित करना भी उपयोगी हो सकता है।

आलेख के अन्त मे 'जन-सहयोग' और 'शासकीय-सहयोग' शीर्षको के अन्तर्गत कुछ सहयोगियो का उल्लेख करने का प्रयत्न किया है, किन्तु महोत्सव के वास्तविक सहयोगियो की वह सख्या इतनी विशाल है कि उसकी सूची प्रस्तुत करना भी शक्य नही है। उन सबके बारे मे पूरी जानकारी कही भी दर्ज नही है। वह हो भी तो नही सकती थी। परिशिष्ट मे एस. डी. जे. एम. आई मैनेजिंग कमेटी, स्टेट लैवल कमेटी, और समस्त समितियो के सदस्यो की नामावली अकित है। प्रमुख बोलियाँ प्राप्त करने वालो और कलश-धारको की सूची है। श्रवणबेलगोल के सभी भवनो और आवासीय अतिथिगृहो आदि की पूरी तालिका है। कमेटी और मठ की कार्यालयीन व्यवस्था का परिचय है और महोत्सव के समग्र आय-व्यय का सक्षिप्त लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है। उत्सव के सन्दर्भ मे हिन्दी, अग्रेजी, कन्नड़ और मराठी में जो भी साहित्य प्रकाशित हुआ, यथाशक्य उसकी तालिका भी परिशिष्ट मे सम्मिलित कर दी गयी है। सबसे अन्त मे 'जन जन की अनुभूति' अध्याय मे वे पत्र-लेख दिये गये हैं जो बाबूजी के अनुरोध पर कुछ सज्जनो से प्राप्त हुए थे। अग्रेजी मे प्राप्त पत्रो का भावानुवाद किया गया और सामग्री मे एकरूपता लाने के लिए एक-दो लेखो का सक्षिप्तीकरण करना पड़ा। मेरी मजबूरी समझ कर इसे स्वीकार किया जाना चाहिए।

बस, यही इस ग्रन्थ की विषय सयोजना है।

आभार प्रदर्शन

इस ग्रन्थ की सरचना प्रारम्भ करने से लेकर, आज इसके लिए यह अन्तिम आलेख लिखने तक, जिन्होने इसकी तैयारी मे किसी भी रूप मे मुझे सहयोग दिया है, उन सब कृपालु जनो के प्रति यहाँ आभार व्यक्त करना मेरा सुखद कर्तव्य है। श्रीयुत श्रेयांसप्रसादजी ने अति विश्वास पूर्वक यह कार्य मुझे सौंपा और निरन्तर प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा परामर्श देकर उसे पूरा करा लिया, यह उन्ही के बस की बात थी। स्वस्तिश्री चारुकीर्ति स्वामीजी ने रुचि पूर्वक मेरा मार्ग दर्शन किया, विविध सामग्री उपलब्ध करायी और अनेक उपयोगी सुझाव देकर इस आलेख को त्रुटिहीन बनाने में सहयोग दिया। यह कोई अतिशयोक्ति नही होगी कि किसी न किसी प्रकार, इस ग्रन्थ के हर पृष्ठ को बाबूजी और स्वामीजी ने प्रभावित किया है। किन शब्दो मे उनका मैं आभार मानूँ ?

सामग्री जुटाने के लिए कुछ प्रारम्भिक पत्राचार भाई लक्ष्मीचन्द्रजी ने किया। आकाशवाणी दिल्ली के श्री सतीशजी ने श्रीमती गांधी के दोनों भाषणों की स्क्रिप्ट, एलाचार्यजी के

मंगल विहार का विवरण, और कुछ अन्य जानकारी मुझे उपलब्ध करायी। प्रकाशित साहित्य की तालिका बनाते समय, डा. नेमीचन्द जैन द्वारा सम्पादित हिन्दी 'तीर्थंकर' मे प्रकाशित सूची बहुत सहायक सिद्ध हुई। सन् 1887 के महामस्तकाभिषेक की मराठी मे मुद्रित रिपोर्ट जैनमठ कोल्हापुर के भट्टारक स्वामी श्री लक्ष्मीसेनजी से प्राप्त हुई। 1967 के उत्सव के समाचारो वाले पुराने अखबार, टाइम्स ऑफ इण्डिया के बगलोर स्थित अधिकारी श्री नेमिनाथ के० द्वारा तलाश कर मेरे पास भेजे गये। एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी और कर्मयोगी चारुकीर्ति स्वामीजी का जीवन परिचय लिखते समय तथा मुनियो आर्यिकाओं की तालिका बनाते समय श्री लक्ष्मणप्रसाद 'प्रशान्त' द्वारा सकलित सामग्री का मैंने उपयोग किया। श्रीमती शोभिता जैन द्वारा भी इसी सामग्री के आधार पर सूची तैयार की गयी थी।

'जनमगल महाकलश' के सस्मरण और यात्रा-विवरण लिखने के लिए महाकलश सचालक दल के निदेशक प. जयसेन और डा. प्रकाशचन्द जैन से लिया गया साक्षात्कार उपयोगी रहा। महाकलश समिति द्वारा प्रकाशित स्मारिका मे योजना के तथ्यो का पूर्ण अकन नही हुआ। उसमे सारी योजना का श्रेय दो-चार व्यक्तियो की ओर ही प्रवाहित हुआ है, अत. उस योजना की जन्म-कथा लिखने के लिए मुझे अन्य स्रोतो से सामग्री एकत्र करनी पडी। श्री अश्विनी कुमार जोशी ने इसमे मेरी सहायता की। सास्कृतिक कार्यों के बारे मे 'जिनेन्द्र कला-भारती' के श्री निहाल अजमेरा ने पर्याप्त जानकारी दी। श्री एम. सी अनन्तराजैया, श्री ए आर. नागराज, डा. टी. जी. कलघटगी, श्रीमती विजया देवेन्द्रप्पा, श्री ओमप्रकाश जैन और डा. धनजय गुण्डे ने अपनी-अपनी समितियो का प्रतिवेदन उपलब्ध कराकर मेरा काम आसान किया। एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी के सेक्रेटरी श्री एस. बी. शान्तिराज ने कमेटी कार्यालय से तथा अपनी स्मृति से सब प्रकार की जानकारी उपलब्ध कराने मे बहुत सौजन्यता का परिचय दिया। कमेटी के सभी कर्मचारी कुशल और कर्मण्य हैं तथा श्री शान्तिराज के नियन्त्रण मे उनका कार्य पूर्ण व्यवस्थित है। जब भी उनसे कोई कागज या फाइल मैंने चाही, वह तत्काल मुझे उपलब्ध कराई गयी।

ग्रन्थ के मुद्रण कार्य मे साहु अशोककुमारजी का वाछित सहयोग प्राप्त हुआ। उनके निर्देश पर टाइम्स ऑफ इण्डिया के फोटो सेक्शन से कई अच्छे चित्र उपलब्ध हुए, और भारतीय ज्ञानपीठ के तत्त्वावधान मे मुद्रण की सुचारु व्यवस्था दिल्ली मे सम्भव हो सकी। टाइम्स ऑफ इण्डिया के कला निदेशक श्री रमेश सक्सेना ने प्रकाशन मे भव्यता लाने के लिए उपयोगी सुझाव तो दिये ही, अपने अकूत भण्डार मे से अनेक सुन्दर बहुरगी पारदर्शियाँ भी उपलब्ध करायी। टाइम्स ऑफ इण्डिया, डा. श्रीमती सरयू दोसी, सर्वश्री कीर्ति मगलोर, हरीश जैन दिल्ली, सुरेश इगले हुबली और एम. बी. पाल श्रवणबेलगोल के चित्रो ने ग्रन्थ को समृद्ध बनाया है। प्रकाशन की साज-सज्जा का श्रेय श्री हरिपाल त्यागी को है। श्री प्रदीप जैन, मेसर्स अंकित प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा दिल्ली ने समय सीमा का निर्वाह करते हुए भी, शुद्ध और स्तरीय मुद्रण का प्रयत्न किया। और भी कुछ सहयोगी हैं जिनका नाम मैं यहाँ स्मरण नही कर पा रहा हूँ, उन्हे शामिल करते हुए, इन सभी महानुभावो के उपरोक्त सहयोग के लिए, मैं अत्यन्त आदर और कृतज्ञता पूर्वक हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

जिन्हें सिर्फ याद करता हूँ

कुछ ऐसे मित्रो को स्मरण करना अभी शेष है जिनका आभार तो नही माना जा सकता है क्योंकि जानता हूं, उन्हें धन्यवाद देना अपने आपको सराहने जैसा ही है, पर यह उल्लेख बहुत आवश्यक है कि उनके सहयोग के बिना यह ग्रन्थ, इस रूप में तैयार कर पाना मेरे लिए कभी सम्भव नही था। उस पंक्ति में सर्वप्रथम याद आते हैं स्वामीजी के निजी सचिव और सहायक श्री विश्वसैनजी। इस कार्य में मेरा सहयोग करना तो उनका कर्तव्य ही था, पर उस कर्तव्य को जिस जागरूकता और जैसी आत्मीयता से उन्होने पूरा किया वह सराहनीय था। मैं जितने दिन श्रवणबेलगोल मे रहा, या जब जब उनसे मिला, सदा अग्रज सा सम्मान देकर उन्होने विनम्र और शालीनता भरा व्यवहार ही मुझे दिया। महोत्सव काल में प्राय: सब ने विश्वसैनजी को दिन रात सक्रिय देखा है, पर, इस लघुकाय व्यक्ति मे अनेक ऐसी विशेषताएं हैं जो निकट से उसे जाने बिना दिखायी नही देती। मठ के हजारो अतिथियो की यथानुकूल अभ्यर्थना करना, उनकी हर सुख-सुविधा का ध्यान रखना, बाहर दूर-दूर तक हर स्तर के लोगो से समुचित व्यवहार बनाकर रखना, मठ से सम्बद्ध हर प्रकरण की पूरी जानकारी रखना और समय पर स्वामीजी को सम्यक् परामर्श देना विश्वसैनजी का नित्य का काम है। उनकी व्यवस्थित कार्यकुशलता और व्यस्तता देखते ही बनती है। इस पर भी उनका व्यक्तित्व आकर्षक, सरल, निरभिमानी और मिलनसारिता से परिपूर्ण है। काम के समय तन-मन से जुट जाना और श्रेय प्राप्ति के समय नैपथ्य मे विलीन हो जाना उनकी विशेषता है। इसी कारण इस पूरे ग्रन्थ मे उनके लिए चार पंक्तियां भी लिखने का प्रसंग मुझे प्राप्त नही हुआ। कन्नड मे प्रकाशित सामग्री के सन्दर्भ और अर्थ समझकर उसे हिन्दी मे प्रस्तुत करने का कार्य श्री विश्वसैन के सहयोग से ही मेरे लिए सम्भव हुआ है।

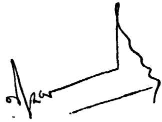
इस क्रम मे दूसरा नाम मेरे मित्र डॉ. कन्हैयालाल अग्रवाल का है। इस काम मे अथ से इति तक उन्होने मेरा हाथ बटाया है। मेरे साथ श्रवणबेलगोल में ठहर कर ग्रन्थ की विषय संयोजना से लेकर उपलब्ध सामग्री के अनुवाद और संक्षिप्तीकरण तक वे मेरे सहायक रहे हैं। बाबूजी के निजी सहायक श्री अश्विनीकुमार जोशी ने समय-समय पर कई उपयोगी सुझाव दिये। जोशीजी स्वयं सुधी साहित्यानुरागी हैं और सामयिक घटनाओं का लेखा-जोखा अपने पास संजोकर रखना उनकी आदत है। जनमंगल महाकलश योजना की पूर्व भूमिका को स्पष्ट करने वाली प्रामाणिक सामग्री मुझे उनसे प्राप्त हुई। श्रवणबेलगोल मे और बम्बई मे संकलित इस महोत्सव के लगभग साढे तीन हजार चित्रो मे से प्रकाशनीय प्रतिनिधि चित्रों का चयन और उन्हे शीर्षक पहनाने का पेचीदा काम श्री जोशी के सहयोग से ही चार-पांच दिन मे सम्भव हो सका। स्वामीजी ने और विश्वसैनजी ने भी उस अभियान मे पूरा समय दिया। पाण्डुलिपि तैयार करने मे भाई अमरचन्द जी और मेरे अनुज श्री निर्मल जैन मेरे सहायक रहे। मुद्रण का काम भारतीय ज्ञानपीठ के सचिव श्री बालस्वरूपजी राही ने अपनी देख-रेख मे सम्पन्न कराने की कृपा की है। उनके अनुभव और कल्पनाशीलता के फलस्वरूप ही इस रचना की इतनी सुरुचिपूर्ण प्रस्तुति सम्भव हो सकी है। पाण्डुलिपि मे टंकण की, और मुद्रण मे प्रूफ की अशुद्धियो को खोज मिटाने का श्रमसाध्य काम ज्ञानपीठ के डॉ. गुलाबचन्द्र जैन ने गहरी रुचि से किया। मेरी तरह उन्हे भी इस छिद्रान्वेषी विद्या मे महारत हासिल है। 'गोमटेश-गाथा' को भी त्रुटिहीन बनाने का यह काम उन्हीने किया था। इन सब मित्रों को यहां सादर याद करता हूं।

यहाँ उन दो अति विशिष्ट व्यक्तियों का स्मरण किये बिना मुझे सन्तोष नही होगा जिनकी उपस्थिति श्रवणबेलगोल मे श्रावकों के हर सम्मेलन को सदा भव्यता प्रदान करती रही। यद्यपि आज उन दोनो ही महानुभवो का वरद हस्त हमारे सिर पर नही है, फिर भी इस पीढी का कौन कार्यकर्ता होगा जो भैया मिश्रीलाल गगवाल और सरसेठ भागचन्दजी सोनी को जीवन भर आदर पूर्वक याद नही करेगा। भैया तो महोत्सव के बाद शीघ्र ही चले गये थे, पर सोनीजी ने मेरे इस प्रयास की सफलता के लिए अपना आशीर्वाद देते हुए एक सस्मरणात्मक लेख प्रकाशनार्थ भेजने की कृपा की थी। यह शायद उनका अन्तिम आलेख था। इसे यथा-स्थान प्रस्तुत किया गया है। इन दो सज्जनों की उपस्थिति मात्र से कार्यक्रमो की जैसी गरिमा बढ जाती थी, उसे याद करके अब हर सामाजिक मच पर उस सफेद टोपी और गुलाबी पगडी का अभाव हमे सदैव अखरता रहेगा।

अन्त मे विनीत भाव से उन महाप्रभु गोमटम्वामी का स्मरण करता हूँ, जिनके चरणों की भक्ति के प्रभाव से ही मैं यह कार्य पूरा करने मे समर्थ हो सका हूँ। उनकी भक्ति की शक्ति, इस सकल्प की पूर्ति के लिए, मेरा सबसे बडा सबल रही। आगे बारम्बार ऐसे अवसर प्राप्त हो कि उनके गुणानुवाद मे नियोजित होकर इस पर्याय के कुछ क्षण पवित्र होते रहे, अपने अंतर की इस निरतर वेगवती भावना के साथ—

तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।

अक्षय तृतीया, 1984
शान्ति-सदन, सतना



(नीरज जैन)

पुण्य स्मरण पूर्वक

सहस्र - विनयांजलि

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

और

[illegible]

981–1981

अनुक्रम



अमर हुई चामुण्डराय की भक्ति विश्व-विख्याता,
रूपकार की कला, विंध्य की शिला, गुल्लिका, माता।
'नीरज' ऐसे धीरज धारी की रज माथ लगाऊँ,
गोमटेश के श्री चरणों में बार-बार सिर नाऊँ ।।

चन्द्रगिरि का आत्मकथ्य

गोमटेश के दर्शन से तृप्ति नही हुई ?

अभी तुमने उन महाप्रभु का दर्शन किया ही कहाँ है प्रवासी !

जो प्रतिक्षण रूप बदलते हों, क्षण-क्षण जिनमे नवीनता का संचार होता हो, कैसे उनके दर्शन से किसी को तृप्ति मिला सकती है ?

फिर तुम्हे यहाँ आये अभी समय ही कितना हुआ है ?

मेरी ओर देखो, सहस्र वर्षों से निहार रहा हूँ उस भुवनमोहिनी छवि को, पर लगता है दर्शन की पिपासा और-और बढती ही जाती है। लोकोत्तर छवि का आकर्षण सदा ऐसा ही अनन्त तो रहा है। काल की सीमाएँ उसकी दर्शनाभिलाषा को क्या कभी तृप्त कर पायी हैं ? दृष्टि पडते ही भक्ति विह्वल हृदय स्वय चितेरा बनकर, स्मृतिपटल पर उस छवि को, अमिट रगों मे अकित कर लेता है।

सामने के पर्वत पर गोमटेश बाहुबली का यह रूप ऐसा ही लोकोत्तर रूप है। संसार मे बैर और प्रीति के जटिल बन्धनो से मुक्त होकर भी, वे यहाँ कोमल लता-वल्लरी से बंधे खड़े हैं। उत्तर मे जन्म लेकर भी वे यहाँ दक्षिण मे अवस्थित हैं, फिर भी उत्तर, निरन्तर उनकी दृष्टि मे है।

यहाँ उनके चरणो मे आते ही मनुष्य, केवल मनुष्य रह जाता है। उसके साथ लगे हुए सारे मानवकृत भेद यहाँ स्वत' समाप्त हो जाते है। गोमटेश के दर्शन के लिए जाति-पाँति का, ऊँच-नीच का, छोटे-बडे का कोई बन्धन यहाँ कभी नही रहा। वे सबके भगवान् है। सब उनके भक्त हैं। यहाँ वे जन-मानस के सच्चे लोकदेवता हैं। किसी एक भू-भाग से बंधे नही हैं, इसलिए वे जगत् के नाथ है। किसी एक के नही हैं, इसलिए इस विश्व मे वे सबके हैं।

कामदेव होकर भी निष्काम वीतराग साधन से वे स्वतः पूर्णकाम हुए हैं। पुराण पुरुष होकर भी, इस विग्रह मे वे चिर नवीन है। वज्र-पुरुष की तरह कठोर होकर भी वे पाँखुरी की तरह मृदुल है। अपराजेय शक्ति के स्वामी होकर भी अनन्त करुणा के धाम हैं। नित-नूतन आकर्षण से भरा उनका दिव्य सौन्दर्य दर्शक की दृष्टि को बाँध ही लेता है।

जड और चेतन, प्रकृति और पुरुष, सभी यहाँ उन महिमामय की दिव्य महिमा से सदा अभिभूत रहते हैं। इन्द्रधनुष उनका भामण्डल बन जाता है। मेघ-मालाएँ उनका मस्तकाभिषेक करती हैं। उनचासो पवन उनके चरणो मे अर्घ्य चढाते हैं। दामिनी उनकी आरती उतारती है। नक्षत्र निरन्तर परिक्रमा के द्वारा उन्हें प्रकाशित करते हैं। स्वर्ग-पटलो पर बैठे-बैठे ही देवगण नित्य उनका दर्शन करते हैं।

धूलि और धुएँ के बवण्डर, कभी उन निरजन की देह को मलिनता नही दे पाते। पश्चिम की समुद्री वायु उन निर्लेप को अपने रूप-रस से प्रभावित नही कर पाती। नभचर कभी उनका अविनय नहीं करते।

महायोगी की अखण्ड एकाग्रता से मण्डित होकर भी, वे निरन्तर बाल-सुलभ मुस्कान बिखेरते रहते हैं। अनन्त मौन मे लीन उनकी यह जीवन्त प्रतिमा, प्रतिक्षण आश्वासन देती रहती है कि बस, अब वे बोलने ही वाले हैं।

मैं साक्षी हूँ, उन त्रैलोक्यनाथ की ऐसी लोकोत्तर मर्यादा का सहज निर्वाह यहाँ सहस्र वर्षों से हो रहा है। मुझे विश्वास है कि सहस्रो वर्षों तक उनकी यह मर्यादा अटूट ही रहेगी। तब तुम्ही कहो पथिक! ऐसी अलौकिक छवि के दर्शन से कैसे किसी की आँखे अघायेगी? जनम-जनम तक यह मनमोहन रूप निहारकर भी, निहारते रहने की आकांक्षा तो बढने ही वाली है। उस तृषा की तृप्ति कभी सम्भव नही है।

अपने बाल्यकाल से सुनता आया हूँ—भगवान् के जन्म के समय उनके रूप का आकर्षण देवेन्द्र को विह्वल कर देता है। वे सहस्र नेत्र होकर उस रूप-सुधा का पान करते हैं, पर अतृप्त ही रहते है। तीर्थंकरो का वह रूप देख पाना मेरे भाग्य मे नही था। पर मेरा भाग्य इन्द्र के भाग्य से कम भी नही है, तभी तो गोमटेश क यह मनोहारी छवि यहाँ मेरे नयनपथ पर अवतरित हुई। दर्शन पाकर मैं तो धन्य हो गया।

मैं इन्द्र होता, वैसी विक्रिया मेरे पास होती, तो मैं भी सहस्रों नेत्रों से इस दिव्य रूप को निहारकर तृप्त होने का प्रयास करता। पर इसमे क्या, दर्शन की अभिलाषा तो मेरी भी वैसी ही अदम्य है। इन्द्र ने सहस्र चर्म-चक्षुओ से जो पाने का प्रयत्न किया, उसे मैं अपने अनन्त अन्तश्चक्षुओं के द्वारा, सहस्र वर्षों से पा रहा हूँ, सहस्रो वर्षों तक पाऊँगा, मुझे अपने इस सौभाग्य पर गर्व है।

—'गोमटेश गाथा' से

महोत्सव की भूमिका

अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर के निर्वाण का पच्चीस सौवाँ महोत्सव सन् 1974 में 'निर्वाण महोत्सव वर्ष' के रूप मे सारे देश में मनाया गया। जैन उत्सवों और आयोजनों के इतिहास में यह सबसे अधिक क्षेत्र-व्यापी, सबसे बडा जनव्यापी और सबसे अधिक सुसंयोजित महोत्सव था।

बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण से ही समूचे विश्व में, और विशेषकर भारतवर्ष में, अहिंसा और सह-अस्तित्व का मूल्यांकन होने लगा था। चाहे उसके प्रयोग की जोखिम उठाने मे हिचकिचाते रहे हों, परन्तु विश्व के प्रमुख राजनीति विचारक, विश्व-शान्ति के एकमात्र उपाय के रूप मे, अहिंसा का महत्त्व प्रतिपादित करने लगे थे : द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति होते-होते यह विचारधारा बलवती होकर जनमानस को भी प्रभावित करने लगी। इस शताब्दी के मध्य में अणु अस्त्रों की भीषण सहारक शक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव, विश्व के जन-मानस को झकझोर गया। समूचा विश्व, भौतिक प्रतिस्पर्धा और ईर्ष्या की दाहक ज्वालाओं में, मानवता के विनाश की विभीषिका का मरण-सन्देश पढता हुआ, अपने ही अस्तित्व के प्रति चिन्तित हो उठा।

यही वे परिस्थितियाँ थी जिनमे विश्व धर्म के रूप में अहिंसा की प्रतिष्ठा के अनुकूल और अनिवार्य अवसर अपने आप विश्व के समक्ष आए। भारत मे महात्मा गाधी के सत्प्रयत्नो से अहिंसात्मक विचारधारा का जो पौधा, शताब्दी के प्रथम चरण में रोपा गया था, वह आधी शताब्दी बीतने तक पुष्पित और फलित होने के लिए तैयार हो गया। विश्व क्षितिज पर राष्ट्रसघ का उदय, भारत में, तथा और भी अनेक ब्रितानी उपनिवेशो मे रक्तहीन सत्ता-परिवर्तन आदि ऐतिहासिक घटनाएँ इसी भूमिका मे घटित हुई थी। 'जिओ और जीने दो' का सर्वजन-कल्याणकारी नारा देने वाले, अहिंसा की सूक्ष्मतम व्याख्या करके जीवमात्र को अभय का आश्वासन देने वाले भगवान् महावीर की प्रासगिकता, अपने पूरे सन्दर्भों के साथ स्वयंसिद्ध हो उठी थी।

निर्वाण महोत्सव वर्ष में यह भलीभाँति सिद्ध हुआ कि भगवान् महावीर इस देश के जनमानस मे 'लोकदेवता' की तरह प्रतिष्ठित हैं। उनके उपदेश, देशकाल की सीमाओं से परे, सर्वत्र और सदैव उपयोगी रहे हैं, उपयोगी हैं, और भविष्य में भी उपयोगी रहेगे। अहिंसा और सह-अस्तित्व किसी वर्ग विशेष के सिद्धान्त हो ही नहीं सकते। ये तो लोक-कल्याणकारी सिद्धान्त हैं। लोकमानस की इसी अडोल आस्थामयी भावभूमि में अपनी गहरी जडों के कारण, भगवान् महावीर का वह पच्चीस सौवाँ निर्वाण महोत्सव एक गरिमाशाली राष्ट्रीय महोत्सव बन गया। भारतीय लोकतन्त्र की प्रत्येक इकाई अपनी आन्तरिक भावनाओं के साथ उस महोत्सव की इकाई बन गई। दिगम्बर और श्वेताम्बर, मन्दिरमार्गी और स्थानकवासी, तथा दिगम्बरों में तेरहपंथी और बीसपंथी, चतुर्थ-पंचम तथा खण्डेलवाल परवार आदि सभी छोटे-बड़े भेद भुलाकर सम्पूर्ण जैन समाज, महावीर की जय बोलता हुआ जब एक साथ उठ

बड़ा हुआ, तब हिन्दू और मुसलमान, सिख और ईसाई, उत्तरवासी और दक्षिणवासी, शासित और शासक सब अपना उन्मुक्त और उदार हृदय लेकर उस परम ईश्वर की अभ्यर्थना में तन-मन से सलग्न हो गये ।

भगवान् महावीर की पच्चीसवी शताब्दी को रेखांकित करने के लिए, देश में सर्वत्र, तथा विदेशो मे कही-कहीं आयोजित 2500वे निर्वाण महोत्सव वर्ष की अनेक महान् उपलब्धियों से जैन समाज लाभान्वित तो हुआ ही गौरवान्वित भी हुआ । समाज मे अभूतपूर्व सगठन की भूमिका बनी और अनेक स्तरो पर परस्पर एकता की भावना प्रकट हुई । उसी एकता की चरम परिणति के रूप में 'दिगम्बर जैन महासमिति' की स्थापना हुई । बहुमुखी आयोजनो के माध्यम से भगवान् महावीर के उपदेशो का गहन प्रचार हुआ जिससे समाज मे प्रभावपूर्ण वात्सल्य का उदय और प्रभावना का प्रसार हुआ । सैकडो प्रकार के ग्रन्थो, पुस्तिकाओ, काव्यो और चित्रो का प्रकाशन हुआ । महावीर के उपदेशो और 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' के सिद्धान्त वाक्य से अंकित, भाँति-भाँति के उपहारो का प्रचार-प्रसार हुआ । देश की विशाल जनता के कानो तक भगवान् महावीर का पवित्र नाम बार-बार पहुँचाते रहने में ये सभी माध्यम बडे उपयोगी सिद्ध हुए ।

अखिल भारतीय स्तर पर निर्वाण-महोत्सव की यह अकल्पित सफलता किसी व्यक्ति विशेष की, सम्प्रदाय विशेष की, या प्रदेश विशेष की सफलता नही थी । यह तो महावीर की उस स्व-पर कल्याणकारी सिद्धान्त की सफलता थी जो व्यक्ति, समुदाय और प्रदेश से ऊपर, जगत् के सब जीवो के लिए अपनी कल्याणकारी उपयोगिता बार-बार प्रमाणित कर चुका था । यह तो भारत भर मे फैले महावीर के अनुयायियो की उस विशाल जन शक्ति की सफलता थी जिसने एकजुट होकर उस महान् आयोजन को प्राणवान् बनाया । इस महोत्सव में इतनी सूझ-बूझ और इतनी शक्ति नियोजित हुई जिसका लेखा-जोखा आसान काम नही है । परन्तु फिर भी इस सफलता का श्रेय प्राप्त करने वालो की जो दीर्घ तालिका बनेगी, या बन सकनी है, उस तालिका मे अद्वितीय, अविस्मरणीय और निरपेक्ष योगदान के कारण, जो नाम हमे बहुत ऊपर, शायद सबसे ऊपर अंकित करना पडेंगे, वे नाम हैं ऐलाचार्य उपाध्याय मुनि विद्यानन्दजी, श्रावक शिरोमणि स्व० साहू शान्ति प्रसाद जैन और उनकी जीवन-सहचरी स्व० श्रीमती रमारानी जैन तथा आनन्दजी कल्याणजी पेढी के प्रमुख सेठ कस्तूरभाई लालभाई ।

मस्तकाभिषेक और सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना महोत्सव

श्रवणबेलगोल में गोमटेश भगवान् बाहुबली का बारह वर्ष के अन्तराल से होने वाला महामस्तकाभिषेक पिछली बार 1967 ई०मे हुआ था । परम्परानुसार बारह वर्ष के उपरान्त 1979 में पुनः वह महोत्सव आयोजित होना चाहिए था । अब तक के महामस्तकाभिषेक शासन की देखरेख में आयोजित होते आये थे । परन्तु 1967 के बाद श्रवणबेलगोल की परिस्थितियो मे कुछ बडे परिवर्तन हुए थे । भट्टारक की गद्दी पर एक लगनशील, सौम्य और शान्त, युवा-साधक श्री रत्नवर्मा का पट्टाभिषेक 1970 मे हो चुका था । ऐलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी के निर्देशन और अनुशासन मे इन युवा भट्टारक स्वस्तिश्री चारुकीर्ति स्वामीजी का शिक्षण और प्रशिक्षण सतत रूप से चल रहा था । क्षेत्र पर अनेक वर्षों से चला आने वाला राजकीय प्रशासन समाप्त हो चुका था और क्षेत्र की व्यवस्था 'श्रवणबेलगोल दिगम्बर

जैन मुजरई इन्स्टीट्यूशंस मैनेजिंग कमेटी' (एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी) के अन्तर्गत आ गई थी। अध्यक्ष के रूप में स्वस्तिश्री भट्टारक स्वामीजी का प्रत्यक्ष प्रशासन, एवं पदेन उपाध्यक्ष के रूप में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष का योग-दान, श्रवणबेलगोल क्षेत्र पर भारत की समस्त दिगम्बर जैन समाज के स्वामित्व का द्योतक था। इस नवीन व्यवस्था के अन्तर्गत महामस्तकाभिषेक समारोह आयोजित करने का यह प्रथम अवसर उपलब्ध हो रहा था।

गोमटेश्वर भगवान् बाहुबली की अनुपम प्रतिमा की प्रतिष्ठापना ईसवी सन् 981 मे हुई थी। 1981 में इस प्रतिष्ठापना के एक हजार वर्ष पूरे हो रहे थे। इस अवसर पर 'सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना महोत्सव' मनाने का उत्साहपूर्ण सकल्प भी दिगम्बर जैन समाज के मन मे था। श्रवणबेलगोल, दिल्ली, बम्बई और इन्दौर मे महोत्सवो के आयोजन के सम्बन्ध मे अनेक वर्षों से विचार-विमर्श चल रहा था। निर्वाण महोत्सव वर्ष में कई बार विचार किया गया और अन्त में जो विकल्प सबसे अधिक सुविधाजनक माना गया वह यह था कि महामस्तकाभिषेक को दो वर्ष टालकर 1979 की जगह 1981 मे 'सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना महोत्सव' के साथ सयुक्तरूप से आयोजित किया जाए। इस प्रकार ऐलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी और साहु शान्ति प्रसादजी के परामर्श से महावीर निर्वाण महोत्सव में ही यह विचार स्थिर कर लिया गया था कि सन् 1981 मे इस महोत्सव का आयोजन किया जाए। किन्तु इस समारोह के आयो-जन का विधिवत् संकल्प 24 दिसम्बर 1976 को, एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी की बगलोर बैठक मे पारित किया गया। कमेटी की यह बैठक स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी की अध्यक्षता में 'गोयनका गेस्ट हाउस' बगलोर में सम्पन्न हुई।

इस बैठक मे महोत्सव के लिए एक 'महोत्सव समिति' के गठन का प्रसग आया। महोत्सव समिति की अध्यक्षता के लिए सहज ही सबकी दृष्टि श्रावकशिरोमणि साहु शान्ति प्रसादजी पर थी। साहु जी निर्वाण महोत्सव वर्ष के अपने विशाल अनुभव के कारण ऐसे आयो-जनो के लिए वांछित शक्ति और प्रयत्न से परिचित थे, और कुछ कारणो से यह महान् उत्तरदायित्व अपने कधो पर लेने में अपने आपको असमर्थ पा रहे थे। उनके हर सकल्प की पूर्ति में अनवरत सहयोग देने वाली और छाया की तरह उनकी सहगामिनी श्रीमती रमाजी के आकस्मिक और असमय वियोग से साहुजी भीतर ही भीतर टूट चुके थे। उनका अथक पौरुष परास्त होना जानता ही नही था, इस अभ्यास के कारण वे समाजसेवा की अनेक व्यस्तताओं से अपने आपको जोड़े हुए अवश्य थे, परन्तु एक गहरी उदासी की छाया उनके मुख पर निरन्तर मँडराने लगी थी। शायद अपने जीवन के निकट अन्त का भी उन्हें कुछ आभास हो गया था। इन सब कारणों से उन्होंने उस दिन बड़ी ही शालीनता पूर्वक, नम्रता के साथ इस नवगठित तदर्थ समिति की गौरवमय अध्यक्षता के प्रस्ताव को नकार दिया। महोत्सव के प्रति उनकी भावना बड़ी उत्कट थी, इसलिए उसके सुचारु आयोजन की आकांक्षा पूर्वक, उन्होंने स्वत. अपने ज्येष्ठ भ्राता, श्रीमान् साहु श्रेयांसप्रसादजी का नाम अध्यक्षता के लिए प्रस्तुत किया। साहु शान्तिप्रसादजी की वर्जना और उसकी वास्तविक पृष्ठभूमि से वाता-वरण इतना गम्भीर हो उठा कि श्री श्रेयांसप्रसादजी को यह प्रस्ताव स्वीकारने के अतिरिक्त कोई मार्ग ही नहीं रहा। बिना किसी औपचारिकता के, सर्व सम्मति से उस बैठक में 'भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव कमेटी' का गठन हो गया।

समिति की अगली बैठक 14 नवम्बर 1977 को दिल्ली में प्रस्तावित थी, किन्तु इस बीच 28-10-77 को समिति के सक्रिय सदस्य, दिगम्बर जैन समाज के अनभिषिक्त सम्राट् श्रावक शिरोमणि साहु शान्तिप्रसाद जी का दुखद निधन हो गया, अतः समिति की आमन्त्रित बैठक स्थगित कर दी गयी। बाद में दिनांक 18-12-77 को उन्ही के निवास पर दिल्ली में ही यह बैठक सम्पन्न हुई। उस दिन स्व० श्री शान्तिप्रसादजी के स्थान पर उनके सुपुत्र, प्रसिद्ध उद्योगपति, साहु अशोक कुमार जैन को समिति का सदस्य मनोनीत किया गया। साथ ही समिति मे कुछ अन्य सदस्य भी मनोनीत किए गये। इस महोत्सव समिति की सदस्य संख्या पचास से ऊपर हो गयी जिसकी पूर्ण तालिका परिशिष्ट मे दी जा रही है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 1981 के इस सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना एव महामस्तकाभिषेक महोत्सव की सयोजना पाँच वर्ष पूर्व सन् 1976 में सकल्पित की गयी और महोत्सव के चार वर्ष पूर्व 1977 मे विधिवत् उसका कार्य प्रारम्भ हो गया।

महोत्सव समिति की बैठकें

महोत्सव के लिए गठित तदर्थ समिति की पहली बैठक 2 जुलाई 77 को 'गोयनका गेस्ट हाउस' बगलोर मे हुई। दूसरी बैठक 18 दिसम्बर को और तीसरी 27 फरवरी 78 को को दिल्ली मे साहु अशोक कुमार जी के निवास पर बुलायी गयी। इसके बाद 'भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एव महामस्तकाभिषेक महोत्सव कमेटी' जिसे हम आगे 'महोत्सव समिति' कहेगे, पूरे देश के गण्य-मान्य प्रतिनिधियो को लेकर विधिवत् गठित कर ली गयी।

इस महोत्सव समिति की अक्टूबर 78 से मई 81 तक कुल दस बैठके बुलायी गयी। पहली बैठक 13-10-78 को दिल्ली मे हुई। इसके बाद प्राय सभी बैठके श्रवणबेलगोल मे या बगलोर मे होती रही। बीच मे 5-10-79 को इन्दौर मे ऐलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी के सान्निध्य में एक बैठक बुलायी गयी जिसमे बडी सख्या मे मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और राजस्थान के लोगो का योगदान प्राप्त करने की भूमिका बनायी गयी। बाद मे राज्य-स्तरीय समिति की बैठको के साथ समन्वय बिठाकर तीन बैठके बगलोर मे और दो श्रवणबेलगोल मे बुलायी गयी। इन बैठको मे केन्द्रीय और प्रान्तीय शासन के साथ समन्वय रखते हुए उनका सहयोग प्राप्त करने पर विचार किया गया। सामाजिक कार्यकर्ताओं को विभिन्न उत्तरदायित्व सौंपे गये और कार्य की प्रगति का अवलोकन करते हुए समय-समय पर महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये। इस दृष्टि से श्रवणबेलगोल मे सम्पन्न 19-7-80 की बैठक को बहुत महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है जिसमे महोत्सव के लिए सारी उप-समितियों का चुनाव करके उनके बीच कार्य का बँटवारा किया गया।

इन सभी बैठको की अध्यक्षता साहु श्रेयासप्रसादजी ने की। बाबूजी की असीमित क्षमता और सुलभ सहयोग का सबके मन मे ऐसा अडिग विश्वास जमा था कि उसी बल-बूते पर कोई भी आगे आकर किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेने के लिए सहज तैयार हो जाता था। स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी का मार्गदर्शन भी बराबर इस समिति को प्राप्त होता रहा। महोत्सव के लिए अपनी सेवाएँ अर्पित करने की लोगो के मन मे ऐसी लगन थी कि इन बैठको मे सदस्यों का उत्साह देखने लायक होता था।

परम्परा और परिवेश

सहस्र वर्ष पूर्व श्रवणबेलगोल के बड़े पर्वत विन्ध्यगिरि पर जैन संत बाहुबली की यह 57 फुट ऊँची प्रतिमा बनायी गयी थी। यह विश्व की विशालतम पाषाण-प्रतिमा है। इजिप्ट में रेमजे बन्धुओं की मूर्तियाँ इससे बड़ी हो सकती हैं, पर वे अनेक पाषाण खण्डो को जोड़कर बनायी गयी हैं, जबकि यह एक ही पाषाण मे निर्मित कलाकृति है। किसी कला-समीक्षक ने कहा है कि "बाहुबली एक हज़ार वर्षों से भारत-भूमि को निहार रहे हैं। यद्यपि रेमजे प्रतिमाएँ चार हज़ार वर्षों से नील नदी का निरीक्षण कर रही हैं, परन्तु, आयु में हज़ारो साल छोटी होने पर भी, गोमटेश्वर की मूर्ति अधिक—बहुत अधिक—प्रभावक है। इस बार उस विशाल प्रतिमा का 'सहस्राब्दि- महामस्तकाभिषेक' हो रहा है।"

श्रवणबेलगोल में बाहुबली का मस्तकाभिषेक एक महत्त्वपूर्ण महोत्सव होता है। उत्सवो के इस देश में इस जैसा अन्य कोई उत्सव नही है। इस अनुपम उत्सव की विशेषता यह है कि जल के एक हज़ार आठ कलशो से अभिषेक के अतिरिक्त, ग्यारह अन्य उत्तम पदार्थ भगवान् के ऊपर बरसाये जाते हैं। हर बारहवें वर्ष इस उत्सव के अवसर पर श्रवणबेलगोल का छोटा-सा गाँव जन-संकुलित हो जाता है। यह उत्सव भारत मे जैन संस्कृति के स्वर्णिम अतीत की याद दिलाने लगता है।

पश्चिमी गगो का राज्यकाल दक्षिण भारत मे जैनो का 'स्वर्ण-युग' कहा जाता है। जैन संस्कृति की उसी सौभाग्य वेला में, गगराज राचमल्ल के सेनाध्यक्ष चामुण्डराय के आदेश पर, दिगम्बर आचार्य श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती के निर्देशन में, 981 ई० मे एक समर्पित शिल्पी ने इस मूर्ति का निर्माण किया। उस अमर कलाकर का नाम इतिहास ने अभी तक हमे बताया नही है, परन्तु बिना नाम जाने भी, उस मौन साधक की महान् साधना के प्रति विश्व का मस्तक श्रद्धा से नत है।

दसवी शताब्दी के अन्त मे विन्ध्यगिरि पर गोमटस्वामी की प्रतिष्ठा हो जाने के बाद बाहुबली की मान्यता में लगातार वृद्धि होती रही। साढ़े चार सौ वर्षों के भीतर तेरह जनवरी 1432 को कारकल मे बयालीस फुट ऊँची बाहुबली प्रतिमा की प्रतिष्ठा हुई। इसके पौने दो सौ वर्ष बाद उनतालीस फुट की एक और वैसी ही मूर्ति वेणूर ने सोलह मार्च 1604 को विराजमान की गयी।

ऐसी विशाल प्रतिमाओ के लिए नित्य पूजा-प्रक्षाल की योजना व्यावहारिक नही होती, इसलिए प्रतिदिन इनकी पाद-पूजा की पद्धति अपनायी गयी। अनुकूलता मिलने पर, श्रवणबेलगोल की तरह, बारहवें वर्ष यहाँ भी मस्तकाभिषेक के संकल्प किये गये होगे, परन्तु ये प्रतिमाएँ न तो इतनी अधिक लोक-प्रसिद्धि प्राप्त कर सकी, न ही इनके नियमित मस्तकाभिषेक आयोजित हो सके। कारकल मे सन् 1951, 1957 और 1962 में, इस प्रकार बारह वर्ष की अवधि मे तीन बार मस्तकाभिषेक हुए। परन्तु इधर बीस वर्ष से वहाँ कोई मस्तकाभिषेक नही हुआ। वेणूर में 1956 मे मस्तकाभिषेक हुआ। उसके उपरान्त जब धर्मस्थल के लिए बाहुबली स्वामी की नव-निर्मित विशाल मूर्ति लेकर जाते हुए धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगड़े कारकल से वेणूर आये तब उन्होने वेणूर के बाहुबली का एक सामान्य अभिषेक कराया। विधिवत् मस्तकाभिषेक का आयोजन वहाँ भी पच्चीस वर्षों से नहीं हुआ।

महोत्सव में मठाधिपति की भूमिका

श्रवणबेलगोल में महामस्तकाभिषेक सबसे महत्त्वपूर्ण आयोजन माना जाता है। बारह वर्ष के बाद होने वाले इस महोत्सव के विधि-विधान की पूरी जिम्मेदारी भट्टारक स्वामीजी पर होती है। महामस्तकाभिषेक के कई महीने पूर्व से कई माह बाद तक उन्हें परम्परानुसार अनेक अनुष्ठान और प्रत्याख्यान करना पड़ते हैं। वर्तमान भट्टारक श्री चारुकीर्ति स्वामीजी लगभग दो वर्ष पूर्व से ही उन सारी पारम्परिक विधियों के अनुसार इस महोत्सव की तैयारी मे संलग्न हो गये थे।

महोत्सव समिति द्वारा फरवरी 1981 का समय निर्धारित होते ही भट्टारक स्वामीजी ने ग्रहयोगों का विचार करके, महोत्सव का मुहूर्त शोधन किया। इसमे ज्योतिष-मर्मज्ञ श्री शशिकान्तजी, पंडित बाहुबलीजी और श्री वेंकट सुब्बैया से भी परामर्श किया गया। इस प्रकार मुख्य अभिषेक के लिए 22 फरवरी 81 का दिन निर्धारित हुआ।

एक वर्ष पूर्व से भट्टारक स्वामीजी ने उत्सव के निर्विघ्न सम्पन्न होने तक के लिए कुछ नियमित अनुष्ठान प्रारम्भ किये, तथा अपने भोजन में से कुछ वस्तुओ का प्रत्याख्यान कर दिया। दो माह पूर्व मठ-मन्दिर मे कुष्माण्डिनी देवी के समक्ष उत्सव की निर्विघ्न सम्पन्नता के लिए भगवान् जिनेन्द्र से प्रार्थना की गई, और शुभ घडी मे 'नान्दिमगल विधान' पूर्वक अभिषेक के मच का स्तम्भ आरोपण किया गया।

महामस्तकाभिषेक सम्पन्न होने के बाद पूर्व परम्परा के अनुसार मठ के भट्टारक स्वामी जी को देश के प्रसिद्ध तीर्थों की वन्दना के लिए जाना होता है। तभी वह अभिषेक अनुष्ठान सम्पूर्ण माना जाता है। चारुकीर्ति स्वामीजी ने इस परम्परा के निर्वाह के लिए महोत्सव के उपरान्त श्री सम्मेदाचल की वन्दना करके अपने प्रत्याख्यान पूर्ण किये।

कर्नाटक शासन के सहयोग की भूमिका

दिसम्बर 1976 मे 'भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एव महामस्तकाभिषेक कमेटी' का गठन होते ही तत्काल इस महोत्सव की रूप-रेखा निर्धारित कर ली गई। फरवरी 1981 मे विशाल आयोजना के साथ राष्ट्रीय स्तर पर यह महान् उत्सव मनाने का कार्यक्रम तैयार किया गया। पूर्व में परम्परानुसार महामस्तकाभिषेक का आयोजन मैसूर राज्य की ओर से होता था, फिर राज्यो के विलीनीकरण के बाद प्रान्तीय शासन की ओर से वह आयोजित हुआ। इस वार समाज के स्वतन्त्र-सयोजन मे यह विराट् आयोजन होने जा रहा था। इस महोत्सव में प्रान्तीय शासन के पूर्ण सहयोग की अपेक्षा स्वाभाविक ही थी। उत्तम व्यवस्था के लिए जैन समाज और शासन के बीच ताल-मेल बिठाने का प्रयत्न चार वर्ष पूर्व से प्रारम्भ कर दिया गया था।

कर्नाटक शासन के सहयोग के लिए पहला प्रयास फरवरी 77 मे किया गया। महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयांसप्रसाद जैन की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधि मंडल ने कर्नाटक के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री डी० देवराज अर्स से भेंट करके एक लिखित प्रतिवेदन उनके समक्ष प्रस्तुत किया। मूलत इस प्रतिवेदन मे उत्सव की भूमिका दर्शाते हुए मुख्यमत्री से इस प्रकार निवेदन किया गया—

"सन् 1967 के उपरान्त परम्परानुसार 1979 में महामस्तकाभिषेक आयोजित होना चाहिए किन्तु उसके दो वर्ष बाद ही सन् 1981 मे गोमटेश्वर भगवान् बाहुबली की स्थापना को एक हजार वर्ष पूरे हो रहे हैं, इसलिए 1981 मे 'प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि महोत्सव' और 'महामस्तकाभिषेक' सम्मिलित रूप से आयोजित करना अधिक उपयुक्त समझा गया है।

इसी अवसर पर श्रवणबेलगोल के इतिहास से सम्बन्धित महापुरुषों, आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती, वीरमार्तण्ड चामुण्डराय, सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य, प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ महामत्री चाणक्य, महाकवि पम्प और महाकवि रण्ण आदि महापुरुषो के प्रति श्रद्धा अर्पित करने का संकल्प किया गया है।

इस महोत्सव की पूर्व तैयारी के रूप मे श्रवणबेलगोल मे पिछले तीन-चार वर्षों में विकास के कुछ कार्य सम्पन्न हुए हैं या हाथ में लिये जा चुके हैं—

1. आपके ही हाथों से उद्घाटित, श्रेयांसप्रसाद अतिथि निवास' पर्यटकों और यात्रियो के ठहरने के उपयोग मे आ रहा है।
2. कर्नाटक पर्यटन विभाग द्वारा निर्मित 'उपाहार भवन' (केन्टीन) बनकर तैयार है और शीघ्र ही यात्रियों के उपयोग मे आने लगेगा।
3. रसोईघर और स्नानगृह से युक्त अट्ठाइस कमरो और छोटे-बड़े तीन हाल सहित एक विशाल धर्मशाला 'मुनि विद्यानन्द निलय' निर्मित हो चुकी है और यात्रियो के उपयोग के लिए उपलब्ध करा दी गई है।

4. नगर मे सडको और गलियो की मरम्मत, नालियो का निर्माण, जल-कल व्यवस्था और वृक्षारोपण आदि कार्य किये जा रहे हैं।
5. मन्दिरो के जीर्णोद्धार और उनकी सज्जा का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है।
6. शासन द्वारा नगर में और विन्ध्यगिरि पर, जलपूर्ति की योजना कार्यान्वित की जा रही है।

इसके अतिरिक्त—

7. विन्ध्यगिरि और चन्द्रगिरि के प्रवेश-पथ पर तोरणद्वार बनवाने के लिए कर्नाटक के मुख्य वास्तुकार की सहमति प्राप्त कर ली गई है।
8. अनेक धर्मशालाएँ, सांस्कृतिक हाल और उद्यान आदि के निर्माण की योजना तैयार की जा रही है।

यह महोत्सव, कर्नाटक शासन और केन्द्रीय शासन के सहयोग से, 'राष्ट्रीय स्तर' पर नाने की योजना है। इसमे कर्नाटक शासन के अनेक विभागो का सक्रिय और उदार सहयोग अपेक्षित है। मुख्यत राजस्व, पुलिस, स्वास्थ्य, जलपूर्ति, परिवहन, सचार, जनकल्याण विद्युत, तथा नागरिक-आपूर्ति विभागो का योगदान महत्त्वपूर्ण और अनिवार्यत. आवश्यक है। इन कार्यों मे सामजस्य बिठाने के लिए शासन के विभागीय सचिवों, विशेष अधिकारियों, समाज-सेवी, धार्मिक तथा सेवाभावी सस्थाओ और व्यक्तियो की एक राज्यस्तरीय समिति का गठन बहुत उपयोगी हो सकता है। यह महोत्सव समिति इस महान आयोजन की सफलता के लिए, आपके शासन के सहयोग की, और आपकी शुभ कामनाओ की आकाक्षा करती है।"

पृष्ठभूमि संस्कारों की

मैसूर राज्य के एक छोटे से ग्राम 'कलहल्ली' मे कभी एक घटना घटी थी। ग्राम के सम्मानित प्रमुख के घर मे आग लग गई। सारा घर चारो ओर से अग्नि की विनाशक लपटो मे घिर गया। घर के सदस्य और नौकर-चाकर किसी प्रकार भागकर बाहर निकल आये, परन्तु थोडा-सा भी सामान उस जलते हुए घर मे से निकाला नही जा सका।

गृहपति को एकाएक कुछ स्मरण हुआ। वे अद्‌भुत कुशलता से उन धधकती ज्वालाओं को पार करते हुए, घर के भीतर गये और हाथो मे काष्ठ की एक मजूषा लिये हुए एक क्षण ही वापिस लौट आये। लोगो का अनुमान स्वाभाविक ही था कि अवश्य इस मजूषा मे स्वर्ण अलकार अथवा ऐसी ही कोई बहुमूल्य सामग्री होगी। परन्तु सारे अनुमान गलत निकले। लोगो ने देखा, मजूषा मे था गृहपति के पितामह मंगरस कवि द्वारा लिखा हुआ, कन्नड का एक हस्तलिखित शास्त्र 'नेमिजिनेश-सगति'।

किसी परिजन ने परामर्श दिया—"जब जलते घर में भीतर पहुँच ही गये थे, तब आपको कुछ मूल्यवान सामग्री लाकर अवसर का लाभ उठाना था। यह आप क्या उठा लाए ?" एक सहज मुस्कान से अयाचित परामर्श का स्वागत करते हुए, सन्तुष्ट भाव से गृहपति ने उत्तर दया—"स्वर्ण और मुद्राओ का अर्जन तो मेरे पुत्र के जीवन मे बहुत हो जायेगा, परन्तु जिनवाणी की यह धरोहर, जो पूर्वजो से मुझे मिली है, नष्ट हो जाने पर फिर कहाँ उपलब्ध होती ?"

भद्र गृहपति सामने खड़े जिस होनहार बालक के लिए, उस अनुपम धरोहर को अग्नि में से सुरक्षित निकाल कर लाये थे, आज 2-7-77 को वही महाभाग, कर्नाटक के मुख्यमंत्री की असन्दी पर बैठा हुआ, श्रवणबेलगोल महोत्सव समिति की ओर से, साहु श्रेयांसप्रसाद जी द्वारा प्रस्तुत, उपर्युक्त प्रतिवेदन स्वीकार कर रहा था। उस भाग्यशाली पुरुष का नाम था डी० देवराज अर्स।

श्री देवराज अर्स के व्यक्तित्व पर पूर्वजो के उन सस्कारो की गहरी छाप थी। महत्त्वपूर्ण शासकीय दायित्वों का निर्वाह करते हुए भी उन्होने नैतिकता और प्रामाणिकता को सदैव सर्वोपरि सम्मान दिया। जैनधर्म में उनकी आस्था समय-समय पर उनके आचरण मे झलकती रहती थी।

गोमटेश्वर भगवान् बाहुबली के श्रद्धालु भक्तो में श्री अर्स का तथा उनकी धर्मपत्नी का अपना स्थान था। श्रवणबेलगोल मे 8 नवम्बर 1973 को, कर्नाटक के तत्कालीन राज्यपाल श्री मोहनलाल सुखाडिया ने, जब श्रेयांसप्रसाद अतिथि निवास का शिलान्यास किया, तब अध्यक्ष पद से बोलते हुए मुख्यमत्री श्री अर्स ने गर्व के साथ कहा था—"जैनधर्म के प्रति मेरे पूर्वजो की आनुवशिक निष्ठा रही है। अर्स वश ने कर्नाटक मे जैनधर्म के प्रचार-प्रसार मे ऐतिहासिक भूमिका निभायी है। कन्नड मे उपलब्ध 'नेमिजिनेश सगति' और 'हरिवश पुराण' अर्स वंशीय महाकवियो की ही देन हैं। आज भी हमारे कुल मे इन ग्रथो की पूजा होती है।" इसी प्रकार 25 अप्रैल 1975 को भी, उसी 'श्रेयासप्रसाद अतिथि-निवास' भवन का उद्घाटन करते हुए, उन्होने अत्यन्त मार्मिक शब्दो मे जैनधर्म के प्रति अपनी आस्था और भक्ति का उद्घोष किया था।

राजनीति की सहज-सामान्य गति के अनुसार एक दिन अकस्मात् श्री अर्स ने कर्नाटक के मुख्यमत्री का पद रिक्त कर दिया। उनके स्थान पर श्री आर. गुण्डूराव मुख्यमत्री हुए। इस ऊर्जावान् और लगनशील मुख्यमत्री ने, श्रवणबेलगोल के इस महोत्सव मे स्वयं रुचि लेकर, प्रायः हर क्षेत्र मे, कर्नाटक शासन के हर विभाग से, ठीक समय पर, हर सभव सहयोग उपलब्ध कराया। उत्सव की समाप्ति तक लगभग दस बार स्वय श्रवणबेलगोल पहुँचकर, कई-कई घटो तक वहाँ ठहरकर, सारी व्यवस्था का निरीक्षण किया और अधिकारियो को निर्देश तथा मार्गदर्शन प्रदान किया। इसमे अधिक प्रशसा की बात यह रही कि महोत्सव मे सहयोगी बनकर श्री गुण्डूराव ने सदैव गौरव का अनुभव किया और बाद मे भी वे उन प्रसगो को अपना अहोभाग्य ही निरूपित करते रहे।

समितियों का गठन

महोत्सव समिति के प्रतिनिधि मडल के प्रतिवेदन पर चर्चा करने के उपरान्त, मुख्यमंत्री श्री अर्स ने महोत्सव के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए कर्नाटक शासन की ओर से हर सभव सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया। थोड़े ही समय मे, श्री अर्स की ही पहल पर, कर्नाटक शासन ने इस महोत्सव की सुचारु व्यवस्था के लिए, शासकीय आदेश क्रमाक आर. डी. 89, एम.एल. डी. 78, दिनाक 4 जनवरी 1979 के द्वारा एक राज्यस्तरीय समिति और एक स्थानीय समिति का गठन कर दिया। 'स्टेट लैवल कमेटी फार सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना महामस्तकाभिषेक श्रवणबेलगोल' नाम से गठित राज्य-स्तरीय समिति में अध्यक्ष का पद

नागर-विकास मंत्री को दिया गया था परन्तु बाद में मुख्यमंत्री ने स्वय इस पद को सुशोभित किया। पर्यटन और परिवहन मंत्री इस कमेटी के सहाध्यक्ष रहे और श्री ए.बी. जबनूर, विपणन राज्यमत्री को उसका उपाध्यक्ष बनाया गया। चौंतीस सदस्यो की इस कमेटी में आधे सदस्य दिगम्बर जैनसमाज के कार्यकर्ताओं मे से लिये गये थे। 'महोत्सव समिति', एस. डी.जे.एम.आई. मैनेजिग कमेटी' और 'भारत वर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी', के पदाधिकारियो को, तथा जैन सासदों और विधायको को भी राज्य-स्तरीय समिति की सदस्यता प्रदान की गई थी। कर्नाटक के मुख्य सचिव सहित अनेक सम्बद्ध विभागो के सचिव, उपसचिव, निदेशक और राजस्व अधिकारी समिति मे मनोनीत किये गए। राजस्व विभाग के उपसचिव को इस कमेटी का पदेन सचिव नियुक्त किया गया। बाद में कमेटी मे कुछ और सदस्यों का सहयोजन भी हुआ। उन सबकी नामावली परिशिष्ट मे दी जा रही है।

लोकल कमेटी मैसूर संभाग के कमिश्नर की अध्यक्षता मे गठित की गई। कमिश्नर से लगाकर तहसीलदार तक नौ शासकीय अधिकारी और उतने ही अशासकीय समाजसेवी व्यक्तियो का समावेश इस कमेटी मे किया गया।

राज्य स्तरीय समिति की बैठकें

मार्च 79 से जनवरी 81 के बीच राज्य-स्तरीय समिति की कुल सात बैठके हुईं। इनमे 4-8-79 को समिति की दूसरी बैठक श्रवणबेलगोल मे हुई थी, शेष पाँच बैठके बगलोर मे विधानसौध के सभागृह मे ही हुई। प्राय ये बैठके वहाँ सुबह साढ़े दस बजे से प्रारम्भ होती थी और मुख्यमत्री श्री गुण्डूराव स्वय उनकी अध्यक्षता करते थे। महोत्सव के सम्बन्ध मे शासकीय सहयोग के प्राय सभी महत्त्वपूर्ण निर्णय इन्ही बैठको मे लिये गये। महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयामप्रसादजी अपने सहयोगियो के साथ हर बैठक मे नियम से उपस्थित होते रहे। उनके अनुभव जनित परामर्शों ने सदैव इस समिति के निर्णयो को प्रभावित किया। सामान्य सदस्यो से लेकर मुख्यमत्री तक सभी, बाबूजी की टिप्पणियो को पूरी सावधानी के साथ सुनते थे और उन पर विचार करते थे। शासकीय योजनाओ की पारम्परिक खामियो पर सबसे पहिले उन्ही की निगाह जाती थी और वे उन्हें उजागर करने मे जरा भी विलम्ब नही करते थे। आवास के लिए जनकार्य विभाग द्वारा प्रस्तावित एक सौ पचास लाख की 'टपरा-झोपडी योजना' को बदलकर, मात्र पैंतालीस लाख की, अपेक्षाकृत अधिक सुविधा-जनक और सुरक्षित 'टेण्ट-तम्बू योजना' में क्रियान्वित कराने का सारा श्रेय बाबूजी को ही है। बाद मे स्वयं मुख्यमत्री ने इस मार्गदर्शन के लिए साहुजी का आभार माना था।

कर्नाटक शासन के प्राय सभी विभागाध्यक्ष अधिकारी तो इन बैठको मे उपस्थित रहते ही थे, अनेक केन्द्रीय विभागो के अधिकारी भी बराबर बैठको मे आते रहे। हर बैठक में प्राय: सभी विभागो के कार्यों की प्रगति का आकलन करते हुए उनकी असुविधाओ तथा बाधाओ का निराकरण किया जाता था और हर विभाग को समय-प्रबद्ध कार्यक्रम सौंप दिया जाता था। इतना भर नही, समय के भीतर इन कार्यों को क्रियान्वित कराने, और कार्य की गति पर दृष्टि रखने की जिम्मेदारी अलग-अलग अधिकारियो को सौंपकर उनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे समय के भीतर अपने कार्य में वांछित प्रगति करके समिति को सूचित करेंगे।

राज्य-स्तरीय समिति की सातवीं अन्तिम बैठक 27 जनवरी 81 को श्रवणबेलगोल में

सम्पन्न हुई। समारोह के उद्घाटन के मात्र बारह दिन पूर्व होने वाली यह बैठक शायद समिति की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बैठक थी। उपस्थिति भी इसी बैठक मे सर्वाधिक देखी गयी। विशेष आमन्त्रितो को मिलाकर पिछली बैठको मे पैंसठ से अधिक उपस्थिति नही हुई थी, जब कि श्रवणबेलगोल की इस बैठक में भाग लेने वालों की संख्या छियासी रही। श्रेयास-प्रसाद अतिथि-निवास के विस्तृत लान मे शामियाना और कनातें लगाकर राज्य-स्तरीय समिति के लिए अस्थायी सभागृह तैयार किया गया था। मुख्यमंत्री श्री आर. गुण्डूराव के अतिरिक्त उनके मंत्री-मंडल के चार सहयोगी सदस्य, वित्त-मन्त्री, श्रम-मंत्री, सहकारिता-मन्त्री और मुजरई विभाग के प्रभारी राज्य-मंत्री इस बैठक में भाग लेने के लिए श्रवणबेलगोल आये थे। सभी ने एलाचार्य विद्यानन्द मुनिराज और भट्टारक स्वामीजी के समीप जाकर अपनी विनयांजलि अर्पित की। मुख्य सचिव सहित प्रायः हर विभाग के उच्चाधिकारी और उनके सहायक अधिकारी उस बैठक में उपस्थित थे। पुलिस और नगर-सेना के ही बारह अधिकारी वहाँ थे। इसके अतिरिक्त रेल, डाक-तार, आकाशवाणी, दूर-दर्शन, फिल्म-डिवीजन और -पुरा तत्त्व आदि केन्द्रीय विभागो के भी अनेक अधिकारी उपस्थित थे। इस विशाल आयोजन मे जहाँ, जो भी समस्याएँ थी, या हो सकती थीं, उस दिन सबका समाधान उस सज्जित शामियाने के नीचे सुलभ हो रहा था। राज्य-स्तरीय समिति की बैठको मे भाग लेकर ही मुझे निकट से यह जानने के अवसर मिले कि कितनी चिन्ता के साथ, कैसी लगन और सतर्कता-पूर्वक यह समिति महोत्सव की सफलता के लिए काम कर रही थी।

बैठक के उपरान्त मुख्यमंत्री ने अपने चारों सहयोगी मंत्रियों तथा उच्च अधिकारियो के साथ मेले की तैयारियो का अवलोकन करने के लिए पूरे 'गोमटनगर' का भ्रमण किया। इस भ्रमण मे प्रधानमन्त्री के लिए मच का स्थान निर्धारित किया गया, ठेकेदार द्वारा बनाये सभी प्रकार के आवासो का निरीक्षण किया गया, अस्थायी अस्पताल, अग्निशामक केन्द्र और नियंत्रण-कक्षो का अवलोकन किया गया, अधिकारियो के निवास के लिए बसाये गये दोनो उपनगर देखे गये और सबसे अन्त में जल-कल विभाग के नलकूपों के बटन दबाकर दो उप-नगरो मे जल प्रदाय का शुभारम्भ किया गया। लौटते समय पर्यटन विभाग के उपाहार-गृह में सामूहिक भोज के समय मुख्यमत्री ने, महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयांसप्रसादजी के साथ सम्पूर्ण स्थिति का जायजा लेते हुए, अपने सहयोगी मत्रियो को और अधिकारियो को, हर दिशा मे उत्तम तैयारियो के लिए बधाई देते हुए, हर किसी को अपने निर्धारित कर्तव्यों के प्रति पुन पुन सावधान किया। समारोह की शानदार सफलता के प्रति बार-बार अपनी आश्वस्ति और शुभकामनाएँ दोहराते हुए ही उस दिन श्री गुण्डूराव बंगलोर लौटे। आने वाले चार सप्ताहो मे हम सबने स्वतः देख लिया कि वह अनोखा, अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। निश्चित ही इस सफलता में कर्नाटक शासन का बहुमूल्य सह-योग स्मरणीय भी है और सराहनीय भी।

श्रुतकेवली भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मौर्य का आगमन

इतिहास-ग्रन्थो और पुराणो मे इस बात के सैकडो प्रमाण मिलते हैं कि 'श्रवणबेलगोल अत्यन्त प्राचीनकाल से जैन तीर्थ के रूप मे विख्यात रहा है। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के प्रारम्भ मे, अन्तिम श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु ने, उत्तर भारत के बारह वर्षीय दुर्भिक्ष के कारण दक्षिण की ओर प्रस्थान किया था। यह भी प्रमाणित तथ्य है कि मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त भी राज-सिंहासन का परित्याग करके भद्रबाहु स्वामी के साथ दक्षिण चले गये थे।

प्राचीन भारतीय इतिहास के अधिकारी विद्वान डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी ने, समकालीन ऐतिहासिक घटनाओ का विश्लेषण करते हुए, यह निष्कर्ष निकाला है कि "322 ईसा पूर्व मे सार्वभौम शासक के रूप मे चन्द्रगुप्त का राज्याभिषेक हुआ, और उसी वर्ष उसने मौर्य राजवश की नीव डाली। उसने चौबीस वर्ष तक शासन किया और 299 ई०पू० मे मगध की सत्ता अपने पुत्र बिन्दुसार को सौपकर वह श्रुतकेवली भद्रबाहु का अनुगामी बन गया।"

राज्याभिषेक के समय चन्द्रगुप्त की आयु पच्चीस वर्ष के आस-पास रही होगी। उस समय राज्याभिषेक के लिए इतनी आयु होना आवश्यक माना जाता था। ऐल सम्राट् खारवेल के सम्बन्ध मे यह तथ्य ज्ञातव्य है कि यद्यपि उसने पन्द्रह वर्ष की आयु मे युवराज बनकर प्रशासन मे दक्षता प्राप्त की थी, किन्तु नौ वर्ष बाद, चौबीस वर्ष की आयु प्राप्त करने पर ही, उसका राज्याभिषेक किया गया। इसी प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य के पौत्र अशोक ने भी, यद्यपि बीस वर्ष की आयु मे राजसत्ता सँभाल ली थी, परन्तु चार वर्ष उपरान्त, चौबीस वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने पर ही उसका राज्याभिषेक हुआ।

उपर्युक्त परम्परा के अनुसार अनुमान किया जाता है कि अपने जीवन के पचास वर्ष पूरे करने के पूर्व ही सम्राट् चन्द्रगुप्त ने सिंहासन छोड दिया और दिगम्बर मुनिसघ मे सम्मिलित होकर ही वह दक्षिणापथ की ओर अग्रसर हुआ।

जैन ग्रन्थो मे इन गुरु-शिष्य की कथा बहुत विस्तार से कही गई है। हरिषेण के 'वृहत्कथाकोष' मे, रत्ननन्दि लिखित 'भद्रबाहुचरित' मे, 'कन्नड पुराण' मे और 'मुनिवसाभ्युदय' तथा 'राजावली कथे' आदि अनेक ग्रथो मे यह तथ्य वर्णित है कि मगध मे भीषण दुर्भिक्ष पड जाने पर, भद्रबाहु स्वामी ने अपने अनुयायियो को लेकर दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। पाटलिपुत्र का राजा चन्द्रगुप्त, अपने बेटे को राज्य सौपकर, भद्रबाहु स्वामी के साथ गया, और मुनि दीक्षा लेकर, उनका मुख्य शिष्य बना। जिस समय श्रवणबेलगोल मे भद्रबाहु का समाधि-मरण हुआ उस समय चन्द्रगुप्त ही मुनि होकर उसकी सेवा सुश्रूषा कर रहा था। इसके बाद कुछ वर्षों तक वही तपस्या करते हुए चन्द्रगुप्त ने भी जैन परम्परा के अनुसार सल्लेखनापूर्वक समाधि-मरण किया।

डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी ने अपने ग्रन्थ 'चन्द्रगुप्त मौर्य और उसका काल' मे इस तथ्य का गहन अध्ययन करते हुए विन्सेण्ट स्मिथ की इस धारणा का समर्थन किया है—"केवल जैन

ग्रन्थों में व्यक्त किये गये मत से ही यह बात समझ मे आती है कि चन्द्रगुप्त ने अचानक ऐसे समय पर राजसिंहासन क्यों त्याग दिया, जब उसकी अवस्था भी बहुत अधिक नही थी और वह सत्ता के शिखर पर था। चन्द्रगुप्त मौर्य का घटनामय शासन जिस ढग से समाप्त हो गया, उस पर प्रकाश डालने वाला एक मात्र प्रामाणिक आधार इन ग्रन्थो मे ही मिलता है। बहुत ही कम आयु में उसके विलुप्त हो जाने की समस्या का पर्याप्त समाधान भी इस बात से हो जाता है कि उसने स्वय स्वेच्छा से राजसिंहासन त्याग दिया था।"

डॉ मुकर्जी आगे चलकर अपनी स्थापना प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं कि 'चन्द्रगुप्त ने जैनधर्म अंगीकार कर लिया था, यह सभी जैन लेखकों ने बिना किसी शंका या विरोध के स्वीकार कर लिया है, और इसका खण्डन करने वाला भी कोई प्रमाण नही मिलता। तब यह मान लेना भी अनुचित न होगा कि वह किसी ऐसे स्थान में ही जाकर बसा होगा, जो इसके साम्राज्य की सीमा के भीतर और अशोक के शिलालेखों के कही निकट ही रहा हो।"

उज्जयिनी से चलकर आचार्य भद्रबाहु के बारह हजार मुनियो वाले विशाल सघ ने जिस धरा-खण्ड को अपनी साधना से पवित्र किया, वह पुण्यभूमि यही श्रवणबेलगोल की धरती थी। आचार्य भद्रबाहु श्रुतकेवली तो थे ही, बहुत बडे तपस्वी भी थे। निमित्तज्ञान आदि के आधार पर जब उन्हे आभास हुआ कि उनकी वह पर्याय अधिक समय स्थिर रहने वाली नही है, तब अविलम्ब उन्होने एक दृढ सकल्पी, आत्मनिग्रही साधु की तरह सल्लेखना का नियम धारण कर लिया। आचार्य पद पर विशाखाचार्य को प्रतिष्ठित करके उन्होने सघ के नायकत्व से अपने आपको मुक्त कर लिया। इतना ही नही, प्रेरणा देकर उस विशाल मुनि सघ का तमिल देशो की ओर विहार कराया और चन्द्रगिरि की पवित्र भूमि पर एक प्राकृतिक गुफा मे अपनी एकान्त साधना प्रारम्भ कर दी। गुरु की सल्लेखना मे सेवा करने के लिए अकेले चन्द्रगुप्त ही आग्रह और अनुनय करके उनके पास रह सके। कालान्तर मे उसी गुफा मे समाधिमरण पूर्वक भद्रबाहु स्वामी की समाधि सम्पन्न हुई।

इतने बडे मुनि सघ के देशान्तर विहार मे निश्चित ही हजारो श्रावक भी साथ रहे होगे। इस विशाल सघ ने सुदूर उज्जयिनी से आकर श्रवणबेलगोल को एक प्रकार का शरण-स्थल बनाया, यह तथ्य अपने आप मे इस बात को सिद्ध करता है कि उस समय भी श्रवणबेल-गोल एक तीर्थ के रूप मे, तथा जैन साधना के केन्द्र के रूप मे, इतना विख्यात था कि उसकी कीर्ति मगध तथा उज्जयिनी तक गूजती थी। क्षेत्र की प्रसिद्धि और चारित्र-निर्वाह के अनुकूल वातावतण की सतृप्ति ही ऐसे विशाल सघ को अपनी ओर खींचने मे कारण बनी होगी।

अन्तिम श्रुतकेवली की साधना-भूमि का गौरव प्राप्त कर लेने पर चन्द्रगिरि की ख्याति कई गुनी बढ गई। समय-समय पर अनेक अतिशय-पूर्ण घटनाएँ भी इस ख्याति का प्रसार करती रही। कहा जाता है कि भद्रबाहु स्वामी के समाधिकाल मे, उनकी सेवा मे लगे हुए चन्द्रगुप्त, जो अब मुनि चन्द्रगुप्त हो गये थे, एक निश्चित समय पर आहार के लिए निकलते थे। समीप ही श्रावको के अस्थायी आवास उन्हें मिलते थे जहाँ नवधाभक्ति पूर्वक निर्दोष आहार उपलब्ध हो जाता था। एक दिन चन्द्रगुप्त महाराज लौटते समय अपना कमण्डलु श्रावक के घर पर भूल आये। किसी चिन्तन मे लीन जब वे अपनी गुफा के समीप पहुँचे तब उन्हे कमण्डलु का स्मरण आया और वे वापस लौटे। आहार-स्थल पर चन्द्रगुप्त महाराज ने देखा कि उनका कमण्डलु एक वृक्ष की सूखी टहनी पर टँगा है, और दूर-दूर तक किसी प्रकार के

आवास-निवासो का वहाँ कोई अता-पता नही है । महाराज चकित थे, कौन है जो उनको इस एकान्त साधना में सहायक हो रहा है ? कौन है जो इस प्रकार निर्जन वन में उनके लिए संयम साधना की अनुकूलता जुटा रहा है ?

सन् 600 ई० से श्रवणबेलगोल के शिलालेखों मे भी भद्रबाहु तथा चन्द्रगुप्त मुनि की जोडी (युग्म) का उल्लेख मिलने लगता है । लगभग 900 ई० के दो शिलालेख कावेरी के तट पर श्रीरंगपट्टम् मे मिले हैं, जिनमे चन्द्रगिरि पर्वत पर आचार्य भद्रबाहु तथा मुनिपति चन्द्रगुप्त के पदचिह्न अंकित होने का उल्लेख है । सन् 1129 ई० के एक अन्य अभिलेख में यह कहा गया है कि चन्द्रगुप्त ने गुरु की सेवा करके इतना पुण्य अर्जित कर लिया था कि वन देवता उनकी सेवा और आराधना करते थे । सन् 1432 ई० का एक शिलालेख यतीन्द्र भद्रबाहु और उनके प्रमुख शिष्य चन्द्रगुप्त की सस्तुति इन शब्दो मे अंकित करता है कि "उनकी तपस्या की ख्याति दूसरे लोको तक फैल चुकी थी ।"

भद्रबाहु स्वामी की सल्लेखना के पश्चात् चन्द्रगुप्त महाराज ने अधिक भ्रमण नही किया । इसी चन्द्रगिरि पर, सम्भवतः इसी भद्रबाहु गुफा मे, उनकी एकांत साधना चलती रही । वैभव, विलासिता और वीरता का अनुभवी उनका तन और मन, उदासीनता और वैराग्य भावनाओ के चिन्तन से अनवरत अभिभूत होता रहा । तपश्चरण की अग्नि मे तप-तप कर कुन्दन बनता रहा । अन्त मे यही उन्होने समाधिपूर्वक शरीर त्याग किया । उस लोकोत्तर तपस्वी के नाम पर ही यह चिक्कबेट्ट (छोटा-पर्वत) 'चन्द्रगिरि' कहलाने लगा । चन्द्रगिरि पर उन दिनो यहाँ जो छोटा-सा जिनालय था, वह उन महाभाग की स्मृति मे 'चन्द्रगुप्त बसदि' के नाम से विख्यात हुआ । चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ चन्द्रगिरि की यह ख्याति कभी इतिहास के पन्नो मे विलीन नही हुई । वह सदैव एक जीवित आख्यान बनकर रही । पीढियो तक मौर्य और गुप्त सम्राट् अपने उस महान् पूर्वज की समाधि को नमन करने के लिए श्रवणबेलगोल आते रहे । सदियो से इस तथ्य का वहन करने वाली अनेक किंवदन्तियो के अतिरिक्त गिरनार की चट्टानो पर उत्कीर्ण, सम्राट् अशोक, रुद्रदामन् और स्कन्दगुप्त के ऐतिहासिक अभिलेख उनकी यात्राओ के सबल प्रमाण है ।

बाद की शताब्दियो में तीव्र गति से श्रवणबेलगोल का उत्कर्ष होता रहा । चन्द्रगिरि अपने आप मे देवायतन की तरह प्रतिष्ठित हो गया । निर्विघ्न तपश्चरण के लिए श्रवणबेलगोल तपोभूमि माना जाने लगा और समाधि-मरण पूर्वक जीवन का उत्सर्ग करने के लिए यह चन्द्रगिरि, सिद्धभूमि की तरह विख्यात हो गया । श्रवणबेलगोल मे विभिन्न मुनियो और गृहस्थो द्वारा सल्लेखना धारण करके समाधिमरण प्राप्त करने वालो के लगभग एक सौ शिलालेख अब तक वहाँ प्राप्त हुए हैं । क्रमबद्ध इतिहास कभी कही लिखा नही गया, इसलिए इस पावन तीर्थ के विषय मे हम बहुत अल्प ही जानते हैं, फिर भी कतिपय ग्रन्थो और शिलालेखो से जो जो जानकारी हमे मिली है उसे हृदयगम करने पर हमे इस तीर्थ का कण-कण पूज्य और महान् लगने लगता है । 'श्रवणबेलगोल' और 'चन्द्रगिरि' ये दोनो नाम सहसा वन्दनीय लगने लगते हैं । उनका स्मरण आते ही हमारा मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है।

गोमटेश्वर के निर्माण की भूमिका

नवमी-दशवी शताब्दी का काल कर्नाटक में जैन-सस्कृति का स्वर्णकाल कहा जा सकता है। अनेक प्रभावक आचार्यों और मुनियो के तपश्चरण के प्रभाव से, अनेक त्यागमूर्ति, उदार और सेवाभावी महिलाओ के योगदान से तथा अनेक शूर-वीर सामतों एवं सूझ-बूझवाले राजपुरुषो के कौशल से, इन शताब्दियो मे यहाँ जैन धर्म की प्रभावना दिगन्त को छूने लगी थी। सातवाहन राजवंश का जो सरक्षण कर्नाटक में जैन धर्म को पीढ़ियो से प्राप्त होता आया था, इन शताब्दियो मे वैसा ही संरक्षण और पोषण, कुछ अन्य प्रभावशाली राजवशो के द्वारा भी मध्यकाल मे जैनधर्मियों तथा धर्मायतनो को यहाँ प्राप्त हुआ।

उस समय कर्नाटक के तीन प्रमुख राजवंशो में से दो, राष्ट्रकूट और गग, स्वयं जैन धर्मानुयायी थे। चालुक्य शासक जैन नही थे पर राष्ट्रकूटो के अधीन होने के कारण, और इस कारण भी कि चालुक्यों के सभी उच्चाधिकारी, महामात्य और सेनापति तक जैन थे, चालुक्य राजवंश भी जैन धर्म और सस्कृति के प्रति प्रायः उदार और सहिष्णु ही रहा। जैन धर्म ने उस काल मे बहु-संख्यक जन समुदाय की आस्था और भक्ति-भावना अपनी ओर मोड़ने मे उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर ली थी।

दसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे जैन साहित्य, संस्कृति और कला की वह पावन त्रिवेणी कर्नाटक की धरती पर प्रवाहित हुई, जिसकी तरगो ने इस भूमि के इतिहास को अपूर्व निर्मलता प्रदान करके पवित्र कर दिया। इस अनोखी त्रिवेणी का संगम बनने का सौभाग्य मिला श्रवण-बेलगोल को। गग राजवश के एकाधिक शासको के अधीन, महामात्य और सेनाध्यक्ष के दोनों महत्त्वपूर्ण पद एक साथ धारण करनेवाले 'वीर-मार्तण्ड' चामुण्डराय इस दुर्लभ संयोग के सूत्रधार बने। श्रवणबेलगोल मे विन्ध्यगिरि पर गोमटेश्वर भगवान् बाहुबली की लोकोत्तर प्रतिमा निर्माण कराने की प्रेरणा, चामुण्डराय को अपनी माता काललदेवी के भक्तिपूरित सकल्प से मिली। उस अनोखी कल्पना को मूर्तिमान् करने की संयोजना का दिग्दर्शन सिद्धान्त-चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य ने किया। पाषाण मे प्राण फूंकनेवाले उस प्रतिमा के अमर शिल्पी का नाम इतिहास मे अभी हम ढूंढ नही पाये।

इतिहास के वातायन से, उस शताब्दी के अन्तिम चरण मे कर्नाटक की छवि देखने पर हम पाते हैं कि एक ओर बंकापुर में शताब्दियो से सचालित जैन विद्यापीठ अपने विद्यादान के लिए दूर-दूर तक विख्यात हो रही थी। आचार्य अजितसेन महाराज ने इस विद्यापीठ के सचालन और उत्कर्ष के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था। उनके अगाध शास्त्र-ज्ञान और निर्मल-चारित्र के बल पर वह विद्यापीठ किसी सम्मानित विश्वविद्यालय की तरह मानी जाने लगी थी। वयोवृद्ध आचार्य की लगन और अनुकम्पा से, राज्य के अनेक प्रतिष्ठित कुलो मे दो अथवा तीन पीढ़ियो तक को, उनका साक्षात् शिष्यत्व प्राप्त करने का गौरव मिला था। दूसरी ओर आचार्य नेमिचन्द्र जैसे सिद्धान्त के पारगामी, मननशील, चिन्तक-तपस्वी अपने मगल विहार के

द्वारा कर्नाटक धरा को धन्य कर रहे थे। उनकी प्रेरणा से हजारों शिष्यों का समुदाय, सिद्धान्त-ग्रन्थो का सहारा लेकर तप और ज्ञान की आराधना से अपने जीवन को संस्कारित कर रहा था।

इधर एक ओर चामुण्डराय जैसा महापुरुष, अपनी बहुमुखी प्रतिभा से, जैन संस्कृति का सर्वथा नवीन अध्याय लिखने का पुरुषार्थ कर रहा था। इस महापुरुष ने एक हाथ में शस्त्र और दूसरे मे शास्त्र ग्रहण करके अपने जीवन मे दोनो का भरपूर उपयोग किया। दोनो की मर्यादा रखने मे उसे पूरी सफलता मिली और दोनो का फल अपने जीवनकाल मे ही उसने प्राप्त किया। गग शासको की चार पीढ़ियो तक राज्य को निष्कटक संरक्षण, निर्दोष अनुशासन और निरन्तर उत्कर्ष प्रदान करने के लिए, कर्नाटक के राजनैतिक इतिहास मे चामुण्डराय को 'अद्वितीय राजपुरुष' कहा गया है। राजकाल की इन भारी व्यस्तताओ के बीच चामुण्डराय का शस्त्राभ्यास और शास्त्र-लेखन साथ-साथ चलता रहा। कन्नड मे उसके द्वारा लिखित 'त्रिषष्ठि-शलाका-पुरुष-चरित्र' अथवा 'चामुण्डराय पुराण' तथा सस्कृत मे 'चारित्र सार' इसके प्रमाण हैं। वीरता के लिए जहाँ एक ओर उसे 'समर-धुरन्धर', 'रणरगसिंह', 'बैरिकुल-काल-दण्ड', 'प्रतिपक्ष-राक्षस', 'समर-परशुराम', 'सुभट-चूडामणि', 'वीर-मार्तण्ड' आदि उपाधियो से अलकृत किया गया था, वहाँ दूसरी ओर उसकी धर्ममय प्रवृत्तियो के लिए, और प्रामाणिक आचरण के लिए उसे 'देवराज', 'सत्य-युधिष्ठिर', 'शौचाभरण', और 'सम्यक्त्व-रत्नाकर' जैसी गरिमामय उपाधियाँ भी प्राप्त हुईं।

उधर दूसरी ओर काललदेवी जैसी निष्ठावान और जिनेश्वर के चरणो मे अनुपम भक्ति रखने वाली, तथा दानचिन्तामणि अत्तिमब्बे जैसी धर्म की अनुपम प्रभावना करनेवाली श्राविकाएँ, धर्म की ज्योति जन-जन मे पहुँचाने के लिए दीपक के तेल की तरह अपना जीवन समर्पित कर रही थी। चालुक्य सेनापति वीर नागदेव की पत्नी अत्तिमब्बे, यौवन मे ही वैधव्य का अभिशाप झेलनेवाली वह महिला थी, जिसने अपने पुरुषार्थ से दुर्भाग्य को भाग्य मे बदल लिया। वह अपनी सेवा-भावना और प्रेम के कारण 'कर्नाटक-माता' कहलायी। उसकी उदारता के कारण इतिहास मे उसे 'दान-चिन्तामणि' नाम से स्मरण किया गया। कहा जाता है कि विवाह के बाद दूर-दूर से वर-वधू उस सती का आशीर्वाद लेने आते थे। अत्तिमब्बे उन सबको भगवान् की मूर्ति का उपहार देकर उनके जीवन मे धर्म और सदाचार का अकुर रोपती और उस नव-दम्पती से किसी ग्रन्थ की पाँच प्रतियाँ तैयार कराकर मन्दिरो मे स्थापित कराने का नियम कराती थी। इस प्रकार अपने जीवन मे हजारो तीर्थंकर मूर्तियो का अनूठा उपहार और शास्त्रो की लाखो प्रतियो के निर्माण की प्रेरणा, जैन शासन को अत्तिमब्बे के योगदान के रूप में प्राप्त हुई। कहा जाता है कि उसने पोन्न कवि रचित 'शान्ति पुराण' की सहस्र प्रतियाँ कराकर वितरित करायी।

कर्नाटक में मध्य युगीन इतिहास के ये कुछ अतिविख्यात नाम हैं। वस्तुतः तो उस समय जैन सस्कृति के सरक्षण, प्रचार और प्रसार का ऐसा वातावरण वहाँ बन गया था जो कमोवेश कई पीढियो तक प्रभावशाली रहा। इस धर्ममय वातावरण के प्रसाद स्वरूप निष्कलंक नैतिक और धार्मिक आचरण वाले अगणित व्यक्तित्व, उस धरती पर जन्मते और पनपते रहे। एक से एक सुन्दर मूर्तियो तथा विशाल जिनालयों का निर्माण होता रहा। कन्नड़ मे जैन साहित्य के

अगणित काव्यों तथा पुराण-ग्रन्थो की रचना होती रही। श्रवणबेलगोल का उस वातावरण मे जो रुचिर सस्कार हुआ, उसी से यह स्थान विश्व के दर्शनीय स्थानो मे विख्यात हुआ, और देश का एक अनुपम तीर्थ बन गया।

चामुण्डराय का आगमन

दसवीं शताब्दी का तीन-चौथाई भाग व्यतीत हो चुका था। सन् 975 ई० के आस-पास की बात है, गंगराज राचमल्ल की राजधानी तलकाडु में एक दिन प्रातः कोई मुनि किसी पुराण का वाचन कर रहे थे। पुराण मे प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव, आदि सम्राट् भरत और मोक्षमार्ग के प्रथम-पथिक भगवान् बाहुबली का जीवन-चरित कहा गया था। कुछ तो पुराण की अलकृत भाषा, और कुछ मुनि महाराज की रोचक शैली, दोनों ने मिलकर श्रोताओ को श्रद्धा भक्ति और विराग की त्रिवेणी मे सराबोर कर दिया। कथा में बताया गया था कि बाहुबली का निर्वाण हो जाने पर, भरत ने पोदनपुर में उनकी एक तदाकार प्रतिमा का निर्माण कराया था।

महामात्य चामुण्डराय की जननी काललदेवी इस कथा को सुनकर, उस अद्भुत मूर्ति के दर्शन करने के लिए लालायित हो उठी। उनकी यह अभिलाषा जानकर मुनिराज ने उन्हें समझाया कि इस कलिकाल मे देव और विद्याधर ही उस मूर्ति का दर्शन कर पाते हैं, मनुष्यो के लिए वह स्थान अत्यन्त दुर्गम हो गया है। दूर-दूर तक कुक्कुट सर्पों ने अपने निवास से उस स्थल को भयानक बना दिया है। काललदेवी की भक्तिभावना अत्यन्त प्रबल थी। अपने आज्ञाकारी, लोक-विजेता, पुरुषार्थी पुत्र की शक्ति पर भी उन्हें बडा विश्वास था। जिनालय मे ही उन्होंने उन बाहुबली के दर्शन करने की प्रतिज्ञा ठान ली और जब तक प्रतिज्ञा पूरी न हो, तब तक के लिए अपने भोजन से दूध का त्याग कर दिया।

चामुण्डराय को जब माता की इस कठिन प्रतिज्ञा की सूचना मिली, तब उन्होने उन्हें समझाने का प्रयास किया। उनके शरीर की अशक्ति और मार्ग के कष्टो का स्मरण दिलाया, परन्तु पुत्र के तर्क माता के सकल्प को डिगाने मे समर्थ नही हुए। भक्ति का प्रवाह बहुत प्रबल होता है। बाहुबली के चरणो मे काललदेवी की जैसी उत्कट भक्ति थी, चामुण्डराय की मातृ-भक्ति भी उससे कम नही थी। उन्होने यात्रा के उपयुक्त सारी व्यवस्था बनायी और सेवको तथा सैनिकों का एक बडा समूह साथ लेकर, वे अपने परिवार के साथ, उस अज्ञात प्रतिमा की तलाश मे निकल पड़े।

चामुण्डराय का जन्म प्रतिष्ठित कुल में हुआ था। बचपन में बहुत सुन्दर और प्रियदर्शी होने के कारण उनका नाम ही 'गोमट' पड गया था। कन्नड में गोमट का अर्थ होता है 'मनोहर' या 'सुन्दर'। उस समय के प्रख्यात तपस्वी और सर्वमान्य शास्त्रज्ञ, आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती चामुण्डराय के समवयस्क थे। बाल्यावस्था में दोनों अभिन्न सखा तो थे ही, सम्भवतः दोनो का विद्याध्ययन, पठन-पाठन, एक साथ एक ही गुरु के द्वारा सम्पन्न हुआ था। दोनो ने बकापुर के आचार्य अजितसेन को जिस प्रकार मान्यता दी है उससे यह अनुमान करना अनुपयुक्त नहीं लगता कि इन दोनो ने अजितसेन महाराज के पास, बंकापुर की जैन विद्यापीठ में भी अध्ययन किया होगा। माता को बाहुबली के दर्शन की जो लगन लगी थी वह आचार्य नेमिचन्द्र को बताकर बहुत आग्रह पूर्वक चामुण्डराय ने आचार्यश्री को इस यात्रा मे साथ ले लिया।

यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि सम्राट् भरत की बनवायी किसी प्रतिमा का दर्शन मिलेगा, आचार्यश्री को इस बात पर थोड़ा भी विश्वास नहीं रहा होगा। करोड़ो वर्षों का अन्तराल बीत जाने पर, तीन-तीन बार भरतक्षेत्र से धर्म का उच्छेद हो जाने पर भी, कोई मानवकृत मूर्ति अवस्थित रहे, इसकी क्षीण-सी भी सम्भावना नही हो सकती। परन्तु ऐसा लगता है कि नेमिचन्द्राचार्य ने सारी बातो पर बहुत गम्भीरतापूर्वक विचार किया होगा। काललदेवी की भक्ति और लगन खण्डित न हो, चामुण्डराय की शक्ति और साधनो का धर्म के प्रसार मे उपयोग हो, और शायद इसी बहाने जिनधर्म की प्रभावना का कोई नया आधार निकल आवे, ऐसा विचार कर ही उन्होंने इस यात्रा की स्वीकृति दी होगी।

तलकाडु से चलकर यात्रियो का यह सघ एक दिन श्रवणबेलगोल पहुँच गया। श्रवण-बेलगोल एक प्राचीन धर्म तीर्थ के रूप मे दूर-दूर तक विख्यात था। महाव्रतो की उत्तम साधना के लिए, और निराकुल सल्लेखना की प्राप्ति के लिए, चन्द्रगिरि पर्वत कई शताब्दियो से ख्याति प्राप्त कर रहा था। जब भी अवसर मिलता, चामुण्डराय और उनका परिवार इस तीर्थ की वन्दना को आता रहता था। इस यात्रा के बीच भी कुछ दिन तक यहाँ रुककर धर्म-ध्यान करने की उनकी योजना थी।

चन्द्रगिरि के शान्त और पावन वातावरण मे सबके मन भक्ति से ओत-प्रोत हो उठे थे। बाहुबली का चिन्तन सबके मन मे सदाकाल बना रहता था। काललदेवी तो उनके नाम की माला ही फेरती थी। चामुण्डराय भी, माता के सन्तोष के लिए ही सही, बाहुबली के दर्शन के लिए व्यग्र थे। पोदनपुर के उन 'कुक्कुट-जिन' ने नेमिचन्द्राचार्य के चिन्तन को भी अभिभूत कर लिया था।

एक दिन अनायास काल का वह प्रबल योग उपस्थित हो गया जब मनुष्य के सपने भी साकार हो उठते हैं। जब मन के विचार रूप और आकार ग्रहण कर लेते है। जब अनचीती और असम्भव घटनाएं भी सहज घट जाती है। बाहुबली के चिन्तन मे तल्लीन चामुण्डराय ने एक स्वप्न देखा। कोई कह रहा है—"भक्त और भगवान् मे दूरी नही होती। तुम्हारे बाहुबली इसी अटवी मे छिपे हैं। जिसे तुम प्रतिदिन सैकडो बार निहारते हो। दृष्टि अगर उन्हे देख नही पाती तो युक्ति का आश्रय लो। उन्ही का नाम लेकर चलाओ एक वाण इन चट्टानो की ओर। वह वाण ही बता देगा कि तुम्हारे बाहुबली कहाँ प्रकट हो सकते हैं।"

बात सपने मे सुनी थी पर चामुण्डराय को लगता था जैसे उन्हे साक्षात् निर्देश मिला हो। कोई अदृश्य शक्ति बार-बार वही शब्द उनके कानो मे दोहराती थी। उन्होने काललदेवी के साथ आचार्यश्री के चरणो मे बैठकर सारी घटना उन्हे सुनाई और उनका परामर्श माँगा। आगम के मर्मज्ञ नेमिचन्द्राचार्य ने भी इस स्वत स्फूर्त निर्देश मे किसी दिव्य सकेत का दर्शन किया। चामुण्डराय को इस संकेत का अनुसरण करने के लिए उत्साहित करना उन्हें सार्थक लगा।

काललदेवी और आचार्य नेमिचन्द्राचार्य, दो ही थे जिनका निर्देश चामुण्डराय के लिए 'आदेश' का अर्थ रखता था। ये दो ही थे जो आज भी उस इतिहास पुरुष को सिर्फ 'गोमट' कहते थे। स्नेह-सिक्त वाणी में आचार्य ने परामर्श दिया—"गोमट ! पोदनपुर कहाँ है, इसकी चिन्ता छोडो। वहाँ बाहुबली का दर्शन होगा या नहीं, यह विकल्प भी मन से निकाल दो। जो

कार्य बड़े-बड़े साधनों से सम्भव नही हो पाते, भक्ति की भावना उन्हें सहज ही पूरा कर लेती है। अवसर स्वयं तुम्हें पुकार रहा है। अपनी अटूट क्षमता के साथ तुम प्रयत्न करोगे तो मातेश्वरी को यहीं बाहुबली का दर्शन करा सकोगे। पोदनपुर तुमने पा भी लिया, एक माता को उन प्रभु का दर्शन करा भी दिया, तो इससे तुम्हारा कर्तव्य कहाँ पूरा होता है? असंख्य भक्तो की भावना का विचार करो, तुम किसे-किसे पोदनपुर ले जा सकोगे? यदि तुम्हारे बाहुबली यहाँ श्रवणबेलगोल मे साकार होते हैं, तो दीर्घकाल तक लाखो करोड़ों नेत्र उनके दर्शन से तृप्त और पवित्र होते रहेंगे। युग-युग तक तुम्हारे यश की पताका फहरायेगी। धर्म की इस कालजयी प्रभावना मे निमित्त बनने का आज अवसर मिला है, यह तुम्हारा अहोभाग्य है।"

दूसरे ही दिन, चन्द्रगिरि पर्वत पर खडे होकर चामुण्डराय ने शर-सन्धान किया। विन्ध्यगिरि के जिस उत्तुग भाग को महामात्य के बाण ने चिह्नांकित किया, उसी का तक्षण कराकर बाहुबली प्रतिमा का निर्माण कराने की योजना बनाई गई। एक अनुभवी मूर्तिकार को यह महान् कार्य सौंपा गया। नेमिचन्द्राचार्य महाराज ने निर्माण की संयोजना को अन्तिम रूप दिया, और शास्त्रोक्त पद्धति मे प्रतिमा के शारीरिक अनुपात तथा परिकर के प्रकार निर्धारित किये।

गोमटस्वामी का कलाकार निश्चित ही मूर्तिकला का मर्मज्ञ, सिद्धहस्त कलाकार था। पत्थर मे प्राण फूंकने की कहावत को, इस प्रतिमा के रूप मे उसने चरितार्थ कर दिया था। उसकी साधना अद्भुत थी। मूर्ति के सामने जाने वाला प्रत्येक दर्शक आज भी, गोमटेश को नमन करने के साथ ही साथ कलाकार की उस अमर साधना को भी नमन करता है। ऐसे महान् कलाकार प्राय. निर्लोभ और निस्पृह हुआ करते हैं। अपनी कला के प्रति उनका समर्पण इतना गहरा होता है कि अपनी कृति के साथ वह एक-रूपता और आत्मीयता का अनुभव करने लगते है। तभी लोकोत्तर कला-कृतियो का निर्माण सम्भव हो पाता है।

गोमटेश्वर का कलाकार उन सब महानताओ से परिपूर्ण रहा होगा। इसी का प्रमाण है कि इतने विशाल-विग्रह का तक्षण करके भी उस सौन्दर्य-शिल्पी ने कही भी अपना नाम या गोत्र अंकित नही किया। दसवी शताब्दी के उस काल मे स्तुति, यश और इतिहास, शिलांकित करने की पद्धति बहुत प्रचलित हो चुकी थी। श्रवणबेलगोल मे ही तब तक सैकडो अभिलेख अंकित हो चुके थे। इस सबके बावजूद भी बाहुबली के निर्माता शिल्पी का अपने सम्बन्ध में एकदम मौन रह जाना, उसकी निस्पृहता को, उसकी आत्मलीनता को, और कला के प्रति उसके समर्पण भाव को बहुत ऊंचा उठा देता है। आज तक जितने भी ऐतिहासिक प्रमाण, साहित्य और पुरातत्त्व मे प्राप्त हुए हैं, उनसे हमे उस महान् मूर्तिकार के विषय में कोई सूचना प्राप्त नही होती। यह एक विडम्बना ही है कि जिस कला-साधक ने गोमटेश्वर जैसी कलानिधि प्रदान की, हम उस महापुरुष का नाम तक नही जान पाये। उस अनाम साधक की साधना को नाम रहित प्रणाम करके ही हमे सन्तोष करना पडता है।

बाहुबली-आख्यान

काल की गति

इस भरत क्षेत्र मे अनादि अनन्त कालचक्र का प्रवर्तन सुखमा-सुखमा, सुखमा, सुखमा-दुखमा, दुखमा-सुखमा, दुखमा और दुखमा-दुखमा, इन छह नामो से जाना जाता है। इसी क्रम से इन्हे पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवां और छठा काल भी कहा जाता है। इन कालखण्डो के प्रवर्तन मे मनुष्यो के शरीर की ऊँचाई, आयु, बल, वैभव, सुख और शान्ति सब क्रमश: घटते जाते हैं और उसकी आकुलताएँ, संक्लेश, बैर-विरोध, मान और दुःख बढते जाते है।

छठे काल के व्यतीत हो जाने पर महाप्रलय मे सारी सृष्टि का विनाश हो जाता है। महावेग से चलने वाली कल्पान्त पवन, सृष्टि की सारी व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर देती है। सात-सात दिवस तक आँधी, पानी, क्षार, विष, अग्नि, धूल और धुएँ के प्रकोप से महानाश का वातावरण प्रकट हो जाता है। तब श्रावण मास के प्रथम दिवस से पृथ्वी पर सात-सात दिन तक जल, दुग्ध, घृत, अमिय एव रस आदि सात स्निग्ध पदार्थों की वर्षा होती है। इसके उपरान्त भाद्र मास की शुक्ल पंचमी से, यह पृथ्वी नवीन उष्मा का अनुभव करती है। पर्वत कन्दराओ और नदी घाटियो मे बचे मनुष्य और पशु बाहर निकल आते हैं। विनष्ट मर्यादाओ की पुन: स्थापना होती है। सृष्टि के नव-सृजन का वह प्रारम्भ, पुन आनेवाले छठे काल का मंगलाचरण है। अब धीरे-धीरे उत्कर्ष काल का उदय होता है, और छठे के बाद पाँचवाँ, चौथा, तीसरा, दूसरा और फिर पहला काल प्रवर्तित होने लगता है। पहिले काल के उपरान्त उसी क्रम से पुन पहला फिर दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ और छठा काल आता है। प्रथम से छठे तक, अवनति की ओर चलनेवाली कालचक्र की गति 'अवसर्पिणी' कहलाती है। छठे से पहिले की ओर उसके उत्कर्षगामी प्रवाह को 'उत्सर्पिणी' कहा गया है।

उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी की ऐसी लम्बी शृंखला व्यतीत हो जाने पर, कभी-कभी एक अशुभ और मर्यादाविहीन अवसर्पिणी काल का आगमन होता है। इस काल मे अनेक मर्यादाएँ स्वत भंग हो जाती हैं। इस गर्हित काल को 'हुण्डावसर्पिणी काल' कहा गया है। हमारा यह वर्तमान काल, ऐसी ही हुण्डावसर्पिणी का पाँचवाँ काल है। इसके केवल पच्चीस सौ वर्ष व्यतीत हुए हैं। साढे अठारह हजार वर्ष अभी शेष हैं।

भोगभूमि की सुविधाएँ

उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल की ऐसी यह शृंखला, इस जगत् में अनादि अनन्त प्रवहमान है। इनमें सदैव पहला, दूसरा और तीसरा काल, भोगभूमि के वातावरण से व्याप्त रहता है। तब जीवन के लिए कोई संघर्ष, आनेवाले कल की कोई चिन्ता, और संतति का कोई निर्वाह, इन कालखण्डों मे, किसी को भी करना नही पड़ता। मात्र एक युगल संतति को जन्म

दते ही माता-पिता का देहावसान हो जाता है। जनसंख्या स्वतः सीमित रहती है। उस व्यवस्था मे दस प्रकार के कल्पवृक्षो से मानव की समस्त आवश्यकताएँ, इच्छा करने मात्र से पूरी हो जाती हैं। प्रकाश, जल, वस्त्राभरण, आभूषण, भोजन-पान, सभी कुछ यथा समय सतुलित मात्रा मे इन कल्पवृक्षो से सबको प्राप्त हो जाता है। प्राप्ति के लिए संघर्ष और भविष्य के लिए सघर्ष की कोई चिन्ता किसी को करनी ही नही पड़ती। रोग, शोक और अकाल-मरण कही सुनाई नही देता।

कर्मभूमि : जीवन के संघर्ष

अवसर्पिणी के प्रवाह मे चौथा काल प्रारम्भ होते ही इस पृथ्वी पर 'कर्मभूमि' का उदय होता है। उस समय कल्पवृक्षो से वस्तुओ की उपलब्धि बाधित हो जाती है। तब मनुष्यो को कर्म के सहारे अपना जीवन निर्वाह करना पडता है। उन्हें 'असि' या शस्त्रो की सहायता से अपनी और अपने परिकर की रक्षा करनी पडती है। 'मसि' के द्वारा वे ज्ञान-विज्ञान और ललित कलाओ की साधना करते हैं। 'कृषि' उनकी जीविका और आवासों का आधार बनती है और 'वाणिज्य' के द्वारा वे अर्जित वस्तुओ का आवश्यकतानुसार आदान-प्रदान और सग्रह करने लगते है। 'विद्या' उन्हे छन्द, व्याकरण, नृत्य, सगीत, इतिवृत्त आदि के सहारे पठन-पाठन, शिक्षण आदि का वरदान देती है तथा 'शिल्प' की साधना से मूर्ति, चित्र, यन्त्र, भवन, देवालय, नगर आदि की वे रचना करते हैं। कर्म के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, इन चार वर्णो मे मानव समाज विभाजित हो जाता है। परिग्रह की हीनाधिकता के आधार पर भी इनमे वर्गभेद प्रारम्भ हो जाते हैं।

इस प्रकार सारा मानव समाज धीरे-धीरे आन्तरिक असन्तुलन की आँच मे तपने लगता है। मनुष्यो की आवश्यकताएँ बढने लगती हैं। सन्तान के पालन का उत्तरदायित्व सिर पर आ जाने से, उनमे वस्तुओ के सग्रह की मनोवृत्ति प्रबल हो उठती है। परिग्रह एकत्र होते ही, अन्य असत् प्रवृत्तियाँ समाज मे पनपने लगती है। जीवन के संघर्ष उत्तरोत्तर बढते जाते हैं। धर्म नीति के स्थान पर 'राजनीति' की प्रतिष्ठा होने लगती है। काल का प्रभाव सतयुग के शान्त निर्द्वन्द्व वातावरण को, धीरे-धीरे कलियुग की आकुलताओ और सघर्षों मे परिवर्तित कर देता है।

कलियुग के ये सारे अभिशाप चौथे काल मे एक मर्यादा के भीतर ही प्रवर्तन करते हैं, परन्तु चौथे काल की समाप्ति पर, पंचम काल का प्रारम्भ होते ही वे सारी मर्यादाएँ भग होने लगती हैं। यहाँ से कलियुग का अनियन्त्रित ताण्डव धरती पर प्रारम्भ होता है। हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार और अनावश्यक संग्रह की भावना, मनुष्य के विवेक को दूषित कर देती है। समाज की सुख शान्ति विशृंखलित होकर अशान्ति और आकुलता मे परिणत हो जाती है। छठे काल मे स्थिति और भी भयावह हो जाती है। इसी समय अवर्षण, अतिवर्षण, दुर्भिक्ष, बैर, महामारी, युद्ध और धार्मिक तथा राजनैतिक विकृतियों का वातावरण, मानव समाज को दैहिक, दैविक और भौतिक इन तीनो प्रकार के तापो से सक्लेशित करता है। धीरे-धीरे धरती पर महाप्रलय की भूमिका तैयार होती जाती है। पाँचवाँ, छठा तथा पुनः छठा फिर पाँचवाँ ऐसे इक्कीस, इक्कीस सहस्र वर्ष की अवधिवाले ये चार दुखद कालखण्ड, चौरासी सहस्र वर्ष

में व्यतीत होते हैं, तब पुनः चौथा काल प्रवर्तित होता है। यही कालचक्र की गति है। तीर्थंकर महावीर के निर्वाण के साथ चौथा काल समाप्त होकर यह पाँचवाँ प्रारम्भ हुआ है। हमने इसी पाँचवें काल मे यहाँ जन्म लिया है।

अपवाद काल

चौथे काल मे ही कर्मभूमि की वे उत्तम सम्भावनाएँ भी उपस्थित होती हैं, जब मनुष्य सत् कर्मों से अपने जीवन का उत्कर्ष करके अपना कल्याण कर सकता है। मनुष्य, देव, नारकी और पशु इन चारो गतियो मे से केवल मनुष्य गति मे, और छह कालो मे से केवल चौथे काल में ही ऐसा सुयोग मिलता है कि जब यदि जीव प्रयत्न करे, तो अपनी श्रद्धान, ज्ञान और सयम की साधना के सहारे, जन्म-मरण के अनादि-चक्र मे मुक्त हो सकता है। 'नर' को 'नारायण' बनने का यही एक अवसर होना है। चारो गतियो के परिभ्रमण से रहित मोक्ष का मार्ग, इसी चौथे काल में इस भारतभूमि पर प्रस्तुत होता है।

चौथे काल मे ही, प्रारम्भ से अन्त तक थोडे-थोडे काल के उपरान्त, चौबीस तीर्थंकर इस धरती पर अवतरित होते हैं। उनके द्वारा ससार मे गृहस्थो और यतियो के योग्य धर्म का प्रचार और प्रसार होता है। उनका चिन्तन और जीवन पर उनके प्रयोग, लोक के लिए कल्याणकारी होते है। वे वीतरागी, हितोपदेशी, सर्वद्रष्टा अर्हन्त, प्राणिमात्र के कल्याण की भावना से ओत-प्रोत होते हैं। इन्ही चौबीस तीर्थंकरो की निष्परिग्रह-निरावरण प्रतिमाएँ बनाकर, उनकी पूजा-अर्चना करने की परम्परा रही है। अभी-अभी जो चौथा काल व्यतीत हुआ है, आदिनाथ ऋषभदेव उस काल के प्रथम तीर्थंकर थे तथा निर्ग्रन्थ महावीर अन्तिम चौबीसवे तीर्थंकर हुए। इन चौबीस तीर्थंकरो के अतिरिक्त चौथे काल मे लाखो करोडो मनुष्य, घर कुटुम्ब से विरागी होकर मुनि बनते हैं। उनमे से बहुतेरे तो तपश्चरण द्वारा मोक्ष भी प्राप्त करते है, परन्तु उनके द्वारा ससार मे भटकते प्राणियो को मार्ग सुझाकर पार लगाने के लिए तीर्थ सचालन की भूमिका नही बनती, अत वे 'तीर्थंकर' नही कहलाते। सिद्धो के निराकार रूप मे उनकी समुच्चय अर्चना की जाती है, परन्तु उनकी प्रतिमाएँ स्थापित करने की परम्परा नही है। परन्तु आदि तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र बाहुबली इस परम्परा के अपवाद हैं। जैन आराधना पद्धति मे वे एक मात्र ऐसे पुराण-पुरुष है जो तीर्थंकर तो नही थे, परन्तु तीर्थंकरो के ही समान उनकी मूर्ति बनाने और पूजा-अर्चना करने की परम्परा पूर्वाचार्यों ने स्थापित कर दी। बाहुबली के चरित्र की कुछ विलक्षण विशेषताओ के कारण ही उन्हे इतनी श्रद्धा और ऐसी भक्ति का पात्र माना गया। उनके घटनामय जीवन से उन विशेषताओ का परिचय आगे हमे मिलेगा।

युग का परिवर्तन

वर्तमान कालचक्र का तृतीय अक्ष, तीसरा काल जब समाप्ति की कगार तक पहुँच गया, तब चौथे काल की रीति-नीति के अनुकूल धीरे-धीरे स्वत सारे परिणमन होने लगे। भोगभूमि का वातावरण कर्मभूमि के रूप मे बदलने लगा। युग के इस सन्धिकाल मे क्रमशः बड़े-बड़े प्राकृतिक परिवर्तन होते रहे। वन्य पशु, हिंस्र और भयानक हो उठे। मनुष्य ने उन्हे बन्धन, दण्ड, अकुश और बल्गा के सहारे अनुशासित किया। अनेको को उसने अपनी सेवा मे भी

नियोजित कर लिया। धीरे-धीरे कल्पवृक्षो की शक्ति क्षीण होती गयी और एक दिन वे विलुप्त हो गये।

अब तक तो प्रत्येक दम्पती अपने जीवन के अन्तिम दिनो मे, एक युगल सन्तति को जन्म देकर सृजन का दायित्व पूरा कर लेते थे। अब माता-पिता को अनेक सन्तानो का जन्मदाता बनना पडा। उनके लालन-पालन की, संयोजना भी उन्हें स्वय करनी पडी। माता-पिता को रुग्ण, असक्त और अन्त-समय की दारुण स्थिति मे सन्तान की सेवा भी आवश्यक लगी। मनुष्य को अपने नवीन दायित्वो का निवाह करने के लिए अनेक पदार्थों के सग्रह की आवश्यकता प्रतीत हुई, फिर उस सग्रह की सुरक्षा के उपाय भी उसे ढूंडना पडे।

जीवन पद्धति मे इस सक्रमण से मानव समाज को कुछ सर्वथा नवीन अनुभव हुए। भय, आतंक और असुरक्षा के अभिशाप पहिली बार उसने भोगे। परिग्रह आया तब उसके साथ ही उसके सकलन के लिए, और उसकी रक्षा के लिए, विवाद और सघर्ष प्रारम्भ हुए। हिंसा, झूठ और चोरी की भावना का प्रादुर्भाव हुआ। अधिक सन्तति के जन्म के कारण, तथा स्त्री और पुरुष के पृथक् जन्म और पृथक् मरण के कारण, उनके जीवन मे एक से अधिक जीवन-सगी आने लगे। इसके फलस्वरूप मनुष्य के दाम्पत्य में कुशील तथा व्यभिचार का समावेश हुआ। उसी समय समाज की सामान्य व्यवस्था के लिए, और मर्यादा की रक्षा के लिए, कुलो की स्थापना करके, लोगो ने स्वत. अपने लिए शासन व्यवस्था का आविष्कार किया।

कुलकर व्यवस्था और ऋषभदेव

तीसरे काल के अन्त मे ये सारे परिवर्तन एक साथ नही आये। क्रमश. अनेक पीढियों में वह भोग-प्रधान व्यवस्था समाप्त हुई और इस कर्म-प्रधान जीवन पद्धति का रूप प्रकट हुआ। इस परिवर्तन काल मे समस्त मानव जाति को, समूहो या कुलो मे व्यवस्थित करने वाले चौदह 'मनु' या 'कुलकर' अवतरित हुए। उन्होने मनुष्यो को उस परिवर्तित व्यवस्था मे जीवन यापन के लिए उपयुक्त मार्गदर्शन दिया। नवीन समस्याओ का समाधान बताकर प्राकृतिक विपत्तियो से उन्हे अभय दिया।

अयोध्या के शासक नाभिराय चौदहवे और अन्तिम कुलकर हुए। उन्होंने प्रजा को उपयोगी और अनुपयोगी वनस्पति का विवेक देकर, पेड पौधो के सहारे विविध आवश्यकताओ की पूर्ति करने का मार्ग बतलाया। सहज जीवन यापन के और भी अनेक परामर्श नाभिराय ने अपनी प्रजा को दिए। उनके पश्चात् व्यवस्था का सचालन उनके पुत्र ऋषभदेव के हाथो में आया। यही 'ऋषभदेव' जैनो के चौबीस तीर्थंकरों मे प्रथम तीर्थंकर थे। विष्णु के चौबीस अवतारो मे इन्हे आठवाँ अवतार कहा गया है। आदिनाथ इन्ही का दूसरा नाम था। आदि सम्राट्, योगिराज भरत और क्षमा-पुरुष बाहुबली इन्ही ऋषभदेव के पुत्र थे।

ऋषभदेव ने मानव सभ्यता को सँवारने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किये। उन्होने नगर, ग्राम और पुर बसाये। असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, विद्या और शिल्प, ये छह प्रकार के कौशल सिखलाकर प्रजा को सार्थक और उत्पादक श्रम का महत्त्व समझाया। जीवन मे उसकी अनिवार्यता का प्रथम पाठ पढाया। अपनी पुत्रियो ब्राह्मी और सुन्दरी को शिक्षित करने के

बहाने, उन्होंने लिपि और अंक विद्या का परिष्कार किया। शिक्षा और कला-प्रधान कार्य-कलापो के माध्यम से, मानव समाज मे नारियो के समान महत्त्व का यह प्रथम उद्घोष था। अपने पुत्रो को ऋषभदेव ने राजनीति, युद्धनीति और धर्मनीति, तीनो की मर्यादा रखते हुए, स्वतन्त्र और निर्भीक जीवन जीने की प्रेरणा दी। अत्यन्त वात्सल्य के साथ प्रजा का पालन-पोषण करते हुए ऋषभदेव ने दीर्घकाल तक अयोध्या का राज्य किया।

ऋषभदेव का वैराग्य

एक बार राजसभा मे भगवान् ऋषभदेव की वर्षगाँठ का उत्सव मनाया जा रहा था। तरह-तरह के आमोद-प्रमोद उस दिन वहाँ आयोजित किये गये थे। तभी देवराज इन्द्र ने नीलाजना अप्सरा को नृत्य के लिए सभा मे प्रस्तुत किया। उत्तम वस्त्रो और दिव्य अलकारो से सज्जित उस देवागना ने ऋषभदेव के समक्ष, मनोहारी नृत्य उपस्थित किया। बिजली की चमक के समान चचल वह अप्सरा, अपने सयत शरीर सचालन के द्वारा, ललित भाव भगिमाओ का प्रदर्शन करती हुई, बेसुधसी होकर नृत्य कर रही थी, तभी उसकी आयु पूर्ण हो गयी। नृत्य की भाव मुद्रा पूर्ण होने के पूर्व ही उसका शरीर विलीन हो गया। देवराज इन्द्र इस घटना के प्रति पूर्व से ही सावधान थे। उन्होने उसी निमिष वहाँ उस नृत्य के लिए दूसरी दिव्यागना को उपस्थित कर दिया।

नर्तकी नीलांजना के देहपात की इस घटना को सामान्य दर्शकों की, नृत्य के मोहक पाश मे बँधी हुई आँखे देख ही नही पायी। उन्हे इस परिवर्तन का आभास भी नही हुआ। ऋषभदेव को क्षण के हजारवे अ श के लिए इस रस भग का बोध हुआ। तीर्थंकर जन्म से ही 'अवधि-ज्ञान' के स्वामी होते हैं। उस ज्ञान की सहायता से वास्तविकता उनके प्रत्यक्ष हो गयी। जन्मदिन के महोत्सव मे आनन्द बिखेरती हुई नीलाजना का मरण, और मरण की विभीषिका को छिपाते हुए उसी क्षण, वही, दूसरी नीलाजना का जन्म, भले ही देवताओ के लिए सामान्य घटना रही हो, भले ही सामान्य जनों को उसका बोध भी न हुआ हो, परन्तु ऋषभदेव को उस घटना ने भीतर तक झकझोर दिया।

सभा उसी प्रकार चल रही थी, परन्तु महाराज ऋषभदेव के लिए वहाँ अब कुछ भी शेष नही था। सिंहासन पर वे उसी तन्मयता के साथ विराजमान दिखायी देते थे, परन्तु यह आसन अब मात्र उनके जड शरीर का आसन था। उनकी चेतना बहुत दूर, किसी दूसरे ही लोक मे खो गई थी, जहाँ ससार के समस्त पदार्थ अपनी भाँति-भाँति की पर्यायों मे, अनवरत नृत्य करते उन्हे दिखाई दे रहे थे। पहली नीलाजना की तरह प्रतिक्षण जो ध्वंस होते हैं, दूसरी नीलांजना की तरह प्रतिक्षण जो उत्पन्न होते हैं और नृत्य के तारतम्य की तरह जो अवस्थित रहते है, ऐसे उत्पाद, व्यय, और ध्रौव्य को को एक साथ धारण करने वाले, वस्तु-स्वरूप के अनादि अनन्त नृत्य का साक्षात्कार, अब उनकी आत्मनिष्ठ चेतना को सहज रूप से हो रहा था। अब वह सारा राग-रग उन्हे नीरस प्रतीत होने लगा।

भगवान् ऋषभदेव ने वह पूरी रात्रि चिन्तन में ही व्यतीत की। राग के शैवाल से भरा हुआ उनका मानव सरोवर आज उद्वेलित हो उठा था। विराग की तुग तरगें उस शैवाल को निर्मूल करती जा रही थी। वीतरागता और निस्पृहता के पकज उस सरोवर मे अकुरित

हो उठे थे। उन्हे खिलने के लिए जिस मगल प्रभात की प्रतीक्षा थी, ऋषभदेव के दार्शनिक चिन्तन मे उस प्रभात का उदय होने लगा था।

दीक्षा और निर्वाण

वैराग्य की उस हिलोर में सराबोर होते हुए भी उस दिन अयोध्यापति आदिनाथ ने उत्कृष्ट पारिवारिक परम्पराओ की स्थापना करते हुए ज्येष्ठ पुत्र भरत का राज्याभिषेक किया। द्वितीय वरिष्ठ बाहुबली को युवराज घोषित करके उन्हें पोदनपुर का स्वतन्त्र राज्य प्रदान किया। शेष पुत्रो को छोटे-छोटे राज्य बाँट दिये। इस प्रकार निर्ममत्व भाव से, अल्पकाल में ही उस विशाल राज्यलक्ष्मी का त्याग करके उन्होंने आत्म-कल्याण के लिए वन गमन किया। अहिंसा, सत्य, अनृत, शील और अपरिग्रह, इन पाँच महाव्रतों की उत्कृष्ट मर्यादा धारण करके, वे परम दिगम्बर योगिराज, वन के उस नीरव एकान्त में समाधि का सहारा लेकर आत्मशोध मे संलग्न हो गये। भरत बाहुबली आदि समस्त पुत्रों ने प्रजाजनों सहित उनकी पूजा की।

इस प्रकार महापुरुष ऋषभदेव ने एक ओर वहाँ विषम परिस्थितियो से जूझते हुए सदाचारपूर्ण, मर्यादित जीवन पद्धति का आदर्श, लोक के समक्ष प्रस्तुत किया, वही उन्होने इन्द्रिय और मन पर अकुश लगाकर, रागद्वेष की भावनाओ का उन्मूलन किया। विषय-कषायो पर विजय प्राप्त करके सयम और त्याग का भी श्रेष्ठ उदाहरण उन्होने जग के समक्ष रखा। अपने स्वय के स्वाधीन प्रयत्नो-प्रयोगो से आत्मा को परमात्मा बनाने का रहस्य, नर से नारायण बनने की प्रक्रिया, उन्होंने अपने जीवन मे उतारकर स्वय उसका आदर्श, मानव समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। योग-विद्या के साथ निस्पृह मौन साधना अंगीकर करके वे योगेश्वर कठोर तपश्चरण मे लीन हो गये। दीर्घकाल तक सयम, तप ओर योग की एकनिष्ठ साधना के उपरान्त ऋषभदेव ने केवलज्ञान प्राप्त किया। कैवल्य प्राप्ति के पश्चात् वे सर्वज्ञ, हितोपदेशी, वीतरागी भगवान्, देश-देशान्तरो मे उस अनुभूत आत्मधर्म का उपदेश करते हुए, अन्त मे कैलाश पर्वत के शिखर पर शरीर त्यागकर मोक्ष गये। जन्म-मरण के ससार चक्र से सदा के लिए मुक्त हो गये।

भरत की दिग्विजय

ऋषभदेव के दीक्षित हो जाने के उपरान्त महाराज भरत ने अत्यन्त निस्पृहता पूर्वक अयोध्या पर शासन किया। उनके शासन मे अनीति, अनाचार, पक्षपात और उत्पीडन का नाम भी नही सुना जाता था। दूर-दूर तक उनका यश व्याप्त हुआ। वे प्रजावत्सल और प्रजापालक 'राजर्षि भरत' के नाम से विख्यात हुए। कालान्तर मे उन्ही के यशस्वी नाम पर इस देश का नाम 'भारतवर्ष' प्रसिद्ध हुआ।

एक दिन महाराज भरत को तीन सवाद एक साथ प्राप्त हुए। वनमाली ने सभा मे उपस्थित हो कर सूचना दी कि भगवान् ऋषभदेव को केवलज्ञान प्राप्त हो गया है। सवाद सुनते ही भरत का मन भगवान् के प्रति श्रद्धा और भक्ति से भर उठा। उसी समय शस्त्रागार के प्रभारी ने आकर आयुधशाला मे चक्ररत्न प्रकट होने की सूचना दी। यह भरत महाराज के चक्रवर्तित्व का मगलाचरण था। उनका हर्ष दो गुना हो उठा। तभी अन्तःपुर का सेवक उनके

लिए पुत्रोत्पत्ति का सुखद समाचार लेकर सेवा मे उपस्थित हुआ। इस संवाद ने उनके हर्ष को कई गुना कर दिया।

महाराज भरत विचारने लगे कि चक्र की उत्पत्ति और सतति की प्राप्ति, ये सब पुण्य के उदय मे प्राप्त होनेवाले सामान्य सासारिक सुख हैं। धर्म की साधना के मार्ग मे ऐसा पुण्य अनचाहे मिलता है। पिताश्री को तीर्थंकर पद प्राप्त हुआ है, यही सबसे अधिक सुखद, सबसे बडा मगल सवाद है। उन्होंने सर्व प्रथम ऋषभदेव के समवसरण मे जाकर उनका पूजन किया। लौटकर पुत्रोत्पत्ति का उत्सव मनाया और तब आयुधशाला मे जाकर चक्र के स्वागत का अनुष्ठान किया। चक्र की उत्पत्ति के साथ ही उनके परिकर मे नवो निधियाँ और चौदहो रत्न अनायास प्रकट हो गये थे। इन दिव्य उपकरणो का स्वामी बनकर, अब छह खण्ड पृथ्वी पर अपना निष्कण्टक साम्राज्य स्थापित करना उनका अनिवार्य कर्त्तव्य था।

कुछ ही दिनो मे चक्रवर्तित्व की उद्घोषणा के लिए भरत का दिग्विजय अभियान प्रारम्भ हुआ। देवरक्षित, सहस्र आरोवाला उनका दिव्य चक्र, सेना के आगे-आगे चलता था। अयोध्या की चतुरगिणी सेना उस चक्र की अनुगामिनी होकर भरत की अजेय शक्ति का डका पीटती हुई, देश-देशान्तर मे भ्रमण कर रही थी। प्राय प्रत्येक नरेश अपने राज्य की सीमा पर उनकी अगवानी करते, उनका अनुशासन शिरोधार्य करते, और अपने राज्य मे सम्मानपूर्वक उनकी विजय-यात्रा को सचालित करते थे। जो नरपति भरत का प्रतिरोध करने का सकल्प करते थे, चक्रेश की सेना की विराटता और उनके दिव्य अस्त्रो का तेज दृष्टि मे आते ही उनके विरोध सकल्प टूट जाते थे। इस प्रकार भरत के चक्र की अनुगामिनी होकर दिग्विजय की गरिमा स्वयमेव उन्हे प्राप्त होती गयी। नगर जनपद और राज्य, वन, पर्वत और सरिताएँ, समुद्र, उप-समुद्र और महासागर, जल और थल, सब भरत के साम्राज्य के अग बनते चले गये। विध्यगिरि से हिमवान पर्वत तक 'भरत-क्षेत्र' का भूखण्ड उनकी साम्राज्य सीमा के बाहर न रहा।

छह खण्ड पृथ्वी पर अपनी विजय पताका फहराते हुए सम्राट् भरत जब अन्तिम सीमा पर वृषभाचल पर्वत की तलहटी मे पहुँचे, तब उस उतुंग शिखर पर अपना जयलेख अकित करने की भावना उनके मन मे उदित हो उठी। एक ऐसा अमिट सूत्र वहाँ शिलाकित करने की उनकी इच्छा हुई जिससे आनेवाली पीढियाँ भी जान सकें कि चौदहवे कुलकर नाभिराज का पौत्र, आदि तीर्थंकर ऋषभदेव का पुत्र, सम्राट् भरत ही वह प्रथम चक्रवर्ती हुआ, जिसने इस दुर्गम प्रदेश मे इन दुरूह शिखरो तक अपनी जय-पताका फहराई। भरत के शिल्पियो ने शिलालेख के लिए जिस चट्टान को चुना, उस पर पहिले से ही कोई लेख अकित दिखा। दूसरी शिला पर भी कुछ पक्तियाँ अकित मिली। तीसरी, चौथी और फिर जितनी भी शिलाएँ देखी गयी, सबने बड़े विस्मय से देखा कि, उन सब पर पूर्व चक्रवर्तियो के जयलेख अकित थे। "पूर्वकाल मे मुझ जैसे साम्राज्य के सस्थापक अनगिनते चक्रवर्ती यहाँ आये और लौटकर इसी धरती की धूल में मिल चुके हैं। मैं इसका प्रथम विजेता नहीं हूँ" ऐसा विचार आते ही भरत के मन का मान तिरोहित हो गया। सामने की चट्टान पर किसी विजेता का पूर्वांकित अभिलेख मिटाकर, अपने नाम की कुछ पक्तियाँ उन्होने अकित करायी और अयोध्या की ओर प्रस्थान कर दिया।

महाराज भरत छह-खण्ड पृथ्वी पर विजय प्राप्त करके अयोध्या लौटे। दीर्घ विजय-यात्रा से उनका तन और मन क्लान्त हो रहा था। बहुत समय के बाद अब विश्रान्ति के क्षण में

आत्मचिन्तन का अवसर मिलेगा, यह आशा उनके क्लान्त मन को सान्त्वना दे रही थी। अयोध्या अपने विश्वजयी स्वामी का सत्कार करने के लिए उत्सववती होकर हर्ष मना रही थी। तभी एक अनचीती घटना घट गयी। नगर-द्वार के समक्ष सम्राट् भरत का चक्र स्थिर हो गया। विजेता चक्रवर्ती के स्वागत का सारा उत्साह खण्डित हो गया। मंगल-ध्वनि करते हुए वाद्य मौन हो गये।

कौन-सा विघ्न, कैसी बाधा चक्र के अवरोध का कारण बनी, किसने उसे स्थिर कर दिया, यही प्रश्न जन-जन के मन मे गूँजने लगा। परन्तु अमात्यो की व्याकुलता और सेनाध्यक्ष की उत्तेजना के बीच चक्रवर्ती भरत, अपनी महानता के अनुरूप निरुद्विग्न बने रहे। निमित्तज्ञानी विचारको के परामर्श से उन्हे यह जानते देर न लगी कि उनके अपने बन्धु-बान्धव अभी भी उनका अनुशासन स्वीकार नही करते। भू-मण्डल पर एक भी व्यक्ति जब तक मनसा, वाचा, या कर्मणा, चक्रवर्ती के स्वामित्व को नकारता है, उनके प्रतिरोध का सकल्प रखता है, तब तक चक्रेश की विजय अधूरी ही तो रहती है।

भरत ने विचार किया कि भूल तो मेरी थी। जय-यात्रा की इस आपा-धापी मे बन्धु-बान्धवो को मैं स्वय ही भुला बैठा। अभी भी निमन्त्रण भेजूँगा तो वे सब सहर्ष उपस्थित होगे। भला उनमे ऐसा कौन है जो बडे भ्राता को प्रणाम नही करेगा? कौन है जो अपने आपको मेरा वशवर्ती मानकर गौरवान्वित नही होगा? समस्या का समाधान कठिन नही है। तत्काल ही राजसी परम्पराओ मे निष्णात, विश्वस्त राजपुरुषो को दूत बनाकर भरत ने अपने भाइयो के पास भेज दिया। सेना का कटक कुछ समय और नगर के बाहर रहने के लिए बाध्य हुआ।

अधिक समय नही लगा, एक-एक कर दूत लौटने लगे और सवाद प्रस्तुत करने लगे। माता यशस्वती की कोख से जन्मा हुआ भरत का एक भी भ्राता उन्हे मस्तक झुकाने नही आया, परन्तु प्रतिरोध का बिगुल भी किसी ने नही बजाया। वे सब ऋषभदेव की शरण मे पहुँच कर दीक्षित हुए और मुनियो की सभा मे विराजमान हो गये।

युवराज बाहुबली, भरत की विमाता महारानी सुनन्दा के एकमात्र पुत्र थे। वे बहुत बल-शाली, नीति-परायण और स्वाभिमानी पुरुष थे। अयोध्या से आया हुआ, कूटनीतिक निमन्त्रण उन्हे रुचिकर नही लगा। दूत के द्वारा सम्राट् को भेजा गया उनका उत्तर बहुत स्पष्ट था—"जिस प्रकार पिताश्री ने भरत को अयोध्या का राज्य दिया था, उसी प्रकार उन्होने हमे पोदनपुर का आधिपत्य प्रदान किया था। हम उसमे सतुष्ट हैं, परन्तु अपनी राज्य सीमा के बाहर जाकर, किसी चक्रवर्ती की अभ्यर्थना करने की हमे आवश्यकता नही है। पोदनपुर पर यदि कोई आक्रमण होता है तो अवश्य, फिर चाहे वह आक्रान्ता सम्राट् भरत ही क्यो न हो, अपने राज्य की सीमा पर उसका प्रतिकार करना हमारा कर्त्तव्य होगा।"

पोदनपुर से लौटा हुआ दूत दक्षिणाक इस अभियान का अन्तिम दूत था। बिना बोले ही उसके शिथिल शरीर और विवर्ण मुख से उसकी असफलता प्रकट हो रही थी। सन्देश वाहक जैसे किसी अशुभ सवाद को प्रकट करने मे झिझकता है, ऐसी झिझक के साथ दक्षिणाक ने घोषित किया, "बाहुबली को स्वामी का अनुशासन स्वीकार नही है। पोदनपुर की सीमा पर युद्ध की चुनौती उन्होने स्वीकार कर ली है।"

सुनते ही सारी सभा सन्न रह गयी। भरत एक अनोखी पीड़ा का अनुभव करने लगे। भाई

से लडाई, वह भी राज्य की एक सामान्य-सी औपचारिकता के लिए, उन्हें यह कल्पना भी पीडा दे रही थी। दूसरी ओर यशस्वती और सुनन्दा दोनो माताएं विह्वल हो उठी। किसी प्रकार भाई-भाई का टकराव टले यह सबकी चिन्ता थी। राज्य के वृद्ध महामन्त्री को युद्ध टालने का उपाय करने के लिए दोनो माताओ ने प्रेरित किया।

अमात्यो और सैन्य प्रमुखो का गणित दूसरा था। छह खण्ड पृथ्वी पर विजय का डंका वजाते हुए वे लौटे थे, उनके सामने पोदनपुर की सेना का अस्तित्व ही क्या था? इस छोटे से युद्ध के पीछे, इतनी दुर्लभ विजय को अधूरा या खण्डित कहलवाना उन्हे किसी भी तरह स्वीकार्य नही था। आज उनका सारा कौशल इस अन्तिम युद्ध के लिए अपने स्वामी को सन्नद्ध करने मे लग गया। किसी ने राजनीति की निर्ममता की दुहाई दी, किसी ने दिव्यचक्र के नियोग का स्मरण दिलाया और किसी ने चक्रवर्ती के कर्त्तव्य का पहाडा पढा। वह नीति प्रधान युग था। चक्रवर्ती के लिए भी नीति का उल्लघन उस युग मे शक्य नही था। राज-काज को पारिवारिक सम्बन्धो की तुला पर तौलने का 'कलियुगी-कौशल' तब तक प्रचलित नही हुआ था। फलत छह खण्ड पृथ्वी का वह अकिचन अधिपति, एक छोटे से भूमिभाग के लिए भी, मनचाहा समझौता करने मे समर्थ नही हुआ। अपार वैभव और असीमित अधिकारो के स्वामी होकर भी, होनहार के सामने निरीह भरत, विचारने लगे—'पाप के उदय की पीडा से पीडित प्राणी तो जग मे अनन्त है, आज पुण्य के उदय की पीडा से पीडित कोई मुझे देखे।" परिस्थितियो के सामाने विवश, खिन्न-मन भरत के लिए, पोदनपुर के विरुद्ध युद्ध-अभिनय की स्वीकृति देने के अतिरिक्त कोई मार्ग नही था।

पीडा बाहुबली के मन मे भी कम नही थी। भरत पुण्य के उदय मे जिस छटपटाहट का अनुभव कर रहे थे, परिग्रह का परिणाम और कषाय की विषाक्तता देखकर बाहुबली उनसे कम दुखी नही थे। दोनो के मन मे एक दूसरे के लिए निश्छल प्यार विद्यमान था। विधि की विडम्बना थी कि जो लडना नही चाहते थे, वे लडने जा रहे थे। कभी-कभी ऐसा भी होता है जब हम अपने ही मन के विरोध मे खडे होकर कोई आचरण करने को बाध्य हो जाते हैं। शायद यही मानव की निरीहता है।

विवशता का युद्ध

पोदनपुर की सीमा पर, वितस्ता नदी के पश्चिमी किनारे, भरत और बाहुबली की सेनाओं का सामना हुआ। इस सघर्ष मे दोनो ओर के सैनिको की मनस्थिति सामान्य नही थी। वे सोचते थे कि "एक दिन अयोध्या की सेना के विभाजन से ही पोदनपुर की सेना का गठन हुआ था। अपनी जन्मभूमि के लिए और अपने स्वामी के लिए हमारा जीवन निछावर है, परन्तु क्या आज एक ही शरीर के दाहिने हाथ को बाये हाथ से लडना होगा? अरिमर्दन करनेवाले अपने शस्त्रो से क्या हमे आत्म-घात करना होगा? एक ही पिता के इन पुत्रो का विवाद सुलझाने के लिए सेनाओ के प्रयोग के अलावा क्या कोई अन्य उपाय नही है?" भरत और बाहुबली दोनो बलशाली महापुरुष हैं, दोनो मोक्ष के मार्ग पर खडे हैं। किसी प्रकार युद्ध मे इनका घात तो होगा नही, जय पराजय का निर्णय होगा तो किसी युक्ति के आधार पर ही होगा, तब सैनिको के जीवन से खिलवाड़ क्यो हो?

कहते हैं, 'जहाँ चाह वहाँ राह' होती ही है। कुछ वरिष्ठ जनो के हस्तक्षेप से और कुछ राजपुरुषो के परामर्श से, एक विकल्प वहाँ प्रस्तुत हुआ कि दोनो वीर परस्पर शक्ति परीक्षण करके विवाद का निर्णय कर लें। भरत और बाहुबली दोनो ने इस सुझाव को अपनी स्वकृति दे दी। दृष्टि-युद्ध, जल-युद्ध और मुष्टि-युद्ध, इन तीन प्रतिस्पर्धाओ के माध्यम से जय पराजय का निर्णय करना निश्चित किया गया। दोनों भ्राता वाहन त्याग कर रण-भूमि मे उतर आये।

अब जहाँ वह भाग्य-लीला प्रारम्भ हुई, उसे रंगमंच कहना अधिक उपयुक्त होगा। एक ही मच पर भरत और बाहुबली, विरोधी दिशाओ से प्रकट हुए। सौम्य और शान्त, निरुद्विग्न और निर्भ्रान्त। एक क्षण को दोनो की दृष्टि टकराई और उसी समय बाहुबली की दृष्टि सदा की तरह अग्रज भरत के चरणो पर आकर टिकी। भरत की दृष्टि से दृष्टि टकराने की धृष्टता उनसे कभी नही बनी। भरत ने अनुज का सदैव सा नम्र और निर्विकार रूप देखा। उनकी झुकती दृष्टि को लक्ष्य किया, जैसे यहाँ भी वे अभिवादन की मुद्रा मे खडे हो। चिन्तनशील भरत की चेतना कभी अपनी परवशता पर टीसती, कभी निर्दोष अनुज पर अनुकम्पा से भर उठती, और कभी उस कामदेव के नयनाभिराम रूप के दर्शन मे तल्लीन हो जाती। ऐसे ही कोमल चिन्तन के, न जाने किन सुकोमल क्षणो मे, भरत के तृप्ति-आकांक्षी नयन, आनायास मुँद गये। निर्णायक मण्डल ने घोषित कर दी बाहुबली की विजय। तन्द्रा टूटते ही भरत ने, चरणो की ओर झुकते अनुज को बाहो मे भरकर, छाती से लगा लिया।

अब जल-युद्ध की बारी थी। मुख पर शीतल जल पडते ही भरत की भावुक तन्द्रा टूटने-सी लगी। अनुज का अकल्याण वे नही चाहते थे, परन्तु अब विजय की अनिवार्यता ने पहली बार उन्हे प्रभावित किया। पूरी शक्ति से वे बाहुबली के मुख और नेत्रो की ओर तीक्ष्णता पूर्वक जल-क्षेपण करने मे सलग्न हुए। परन्तु शीघ्र ही उन्हे बोध हो गया कि सरयू मे पैठकर जलक्रीडा करने मे, और जल युद्ध परिणाम को अपने अनुकूल बनाने मे बडा अन्तर है। बाहुबली के शरीर की ऊँचाई भी उनके लिए बाधक थी। भरत को इस प्रतिस्पर्धा मे भी पराजय ही हाथ लगी।

अब अतिम सघर्ष सामने था। अयोध्या की व्यायामशाला मे क्रीडा के लिए उतरते थे, वैसे ही आज मल्लयुद्ध के लिए सन्नद्ध दोनो वीर, रेणु-क्षेत्र मे प्रविष्ट हुए। उनके सुन्दर सुडौल शरीर, तैल से सुचिक्कण होकर चमक रहे थे। दोनो एक-दूसरे से अधिक सुन्दर, अधिक आकर्षक, अधिक मन-भावन लग रहे थे।

लगातार दो बार की पराजय ने भरत के मन को खीझ से भर दिया था। उन्हे लगा कि उनकी हार से साम्राज्य की सेना मे, और देश-विदेश के नरेशो-सामन्तो मे उनका उपहास होगा। ससार उनके अपयश पर हँसेगा। अब बाहुबली को पराजित किये बिना उन्हे अपनी दिग्विजय निरर्थक दिखाई देने लगी। चक्रवर्तित्व निस्सार और स्वादहीन लगने लगा। आक्रोश का विषधर धीरे-धीरे उन्हे अपनी कुण्डली में लपेटने लगा। बाहुबली पर उनके घात-प्रतिघात असन्तुलित होने लगे। भरत की उद्विग्नता ने बाहुबली को भी क्षणिक आवेश से भर दिया। अब भरत के अहकार का खण्डन करना उन्हें आवश्यक लगने लगा। इसी समय कोपाविष्ट भरत ने द्वन्द्व के सारे नियमो को तिलाजलि देते हुए, पूरे वेग से उनके मर्मस्थल पर मुष्टि प्रहार किया। तडित वेग से झुक कर बाहुबली वह प्रहार तो बचा गये, परन्तु उनके मन का संयम उस प्रहार से

टूँट गया। झपटकर उन्होंने क्रोध और अहकार की उस प्रतिमूर्ति को दोनो हाथो पर अधर मे उठा लिया।

मतवाला हाथी अपनी सूड मे महावत को उठाकर जैसे फिराता हो, उसी प्रकार बाहुबली, भरत को अपनी बाँहो पर सिर से ऊपर उठाये, उस रेणु-क्षेत्र मे चतुर्दिक् घूम गये। प्रवरगण देख ले—अहकार का पराभव। चक्रवर्ती की चतुरगिणी भली भाँति समझ ले—अनीति की नियति। साक्षी रहे चारो दिशाएँ कि आज बाहुबली पछाडता है इस पृथ्वीपति को—इसी की धरा पर।

सारा समुदाय स्तम्भित रह गया। उस निमिष लोगो की सास तक रुद्ध हो गयी। किसी अनहोनी की आशका से बहुतो ने नेत्र मीच लिये। क्षण भर मे, नही क्षण तो बहुत बडा होता है, क्षण के शताश मे यह सब घट गया। बाहुबली की भुजाएँ भरत को पछाडने के लिए सक्रिय हुई। चिन्तन मे था ही कि "इसी धरा पर इसे पछाडता हूँ।" तभी उस 'धरा' शब्द ने बाहुबली को झकझोर दिया। इस शब्द के सदर्भ ने 'लोक-भावना' का रूप धारण करके तत्क्षण बाहुबली को आवेग के शिखर से उतार कर यथार्थ की धरा पर खडा कर दिया। इसकी धरा? किसकी धरा? क्या यह धरती भी कभी किसी की हुई है? यह तो स्वमेव शाश्वत है। इसका अस्तित्व तो कभी किसी के स्वामित्व का आकाक्षी रहा नही। इसकी प्रभुता तो कल्पित और परिवर्तनशील है। इस धरती के मिथ्या स्वामित्व मे इतना सक्लेश? यह मै क्या कर रहा हूँ?

जल की धारा से जिस प्रकार पावक का प्रकोप शान्त हो जाता है, यथार्थपरक इन विचारो से उसी प्रकार बाहुबली का आवेग शान्त हो गया। कषाय के घनान्धकार मे विवेक की बिजली कौंध गयी। समकित की ज्योति-किरण चिन्तन को आलोक दे गई। बज्र-पुरुष के वक्ष मे वात्सल्य और विराग की सरिता ही फूट पडी। विजय गर्व से अकडती ग्रीवा विनय से नत हो गई। अतुलित बलशाली उन हाथो ने भरत को धीरे से उतारा और धरती पर खडा कर दिया। शान्त, मौन, अन्तर्मुख बाहुबली विचारो मे लीन हो गये। ससार की लीला के चिन्तन मे खो गये।

धरती पर पाँव टिकते ही भरत जैसे वही लज्जा से गड गये। ग्लानि की एक भस्मक ज्वाला उनकी एडी से उठी और चोटी तक चली गई। कुचले हुए फण वाले क्रुद्ध फणधर की तरह वे प्रतिहिंसा से उबल पडे। क्रोधावेश मे उनका विवेक निरोहित हो गया। विचारने की सामर्थ्य लुप्त हो गई। नेत्र अगार की तरह लाल हो उठे। पूरे गात मे कम्पन होने लगा। इसी आवेश मे सहसा उन्होंने बाहुबली पर प्राण घातक चक्र का वार कर दिया।

भरत का यह नीति-विरुद्ध आचरण देखकर समुदाय मे हाहाकार मच गया। बाहुबली के सुभट पुत्र महाबली सहित पोदनपुर के सैनिक तलवारे निकालकर हुकार उठे। तभी सबने देखा, चट्टान की तरह अडिग बाहुबली की ग्रीवा के समीप जाकर चक्र की गति स्वत. रुद्ध हो गई। उनके मस्तक की तीन परिक्रमा देकर, अपने स्वामी के आदेश की अवज्ञा करता हुआ वह दिव्य चक्र, मन्द गति से भरत के ही पास लौट आया।

बाहुबली इस सारे उपद्रव से अनजान, अपने ही भीतर खोये हुए, अब तक उसी चिन्तन मे मग्न थे। दोनो पक्ष के सहस्रो-सहस्र कण्ठो ने उनकी जय की ध्वनि से उस युद्ध-क्षेत्र का गगन गुँजा दिया।

पश्चात्ताप की पीड़ा

चक्र के लौटते ही भरत की स्वाभाविक चेतना भी लौट आयी। क्रोध के स्थान पर पश्चात्ताप की भावना से उनका मन अभिभूत हो गया। वे विचारने लगे—"यह कैसा अपराध मुझसे बन गया ? शस्त्र-विहीन बाहुबली पर चक्र का प्रहार, अपने ही अनुज के घात का विचार ! हाय, कितनी भीषण अनीति हुई मेरे द्वारा ! ऋषभदेव का पुत्र मैं भरत, कैसे इतना विवेकहीन हो गया ? मैं भूल गया कि बाहुबली मेरा भ्राता है। मैं यह भूल गया कि मेरा यह अनुज मोक्षगामी शलाका-पुरुष है। ऐसे उत्तम शरीर का असमय अवसान कर दे, काल मे भी ऐसी सामर्थ्य कहाँ है ?

—"आज इस सघर्ष मे मेरे भाग्य और मेरी शक्ति का निर्णय बार-बार हो गया। तीन बार होना था सो चार बार हो गया। अयोध्या के सिंहासन पर अब मेरा कोई अधिकार नही। चक्रवर्ती को पराजित करने वाला बाहुबली ही अब इस पृथ्वी का वास्तविक अधिपति है। यह साम्राज्य उसे सौंप कर अब आत्म-कल्याण की साधना में लगूँ, यही मेरे अपराध का परिमार्जन होगा।"

प्रबुद्ध भरत के नेत्रो से पश्चात्ताप के अश्रु झरने लगे। किसी की ओर बिना देखे, किसी से बिना बोले, धीमी गति से वे आगे बढे और अपराधी की तरह हाथ बाँधकर बाहुबली के समक्ष खडे हो गये। उनकी वाणी मूक थी परन्तु भगिमा भ्राता से क्षमा की भिक्षा माँग रही थी। ग्रीवा तक बहती अश्रुधार, उनकी मनस्थिति को उन्ही के वेदना-विदीर्ण मुख पर अकित करती जा रही थी।

बाहुबली का नवनीत-सा कोमल हृदय भरत के मनस्ताप से द्रवित हो गया। अग्रज का लज्जानत निस्तेज मुख देखकर करुणा से उनके नेत्र सजल हो आये। शान्त मन से उन्होने भरत को सम्बोधित किया—"तुम्हारा कुछ दोष नही भैया ! कषाय का उद्रेक ऐसा ही दुर्निवार होता है। परिग्रह की लिप्सा ही अनर्थों की जड़ है, अत: हमने राज्य त्यागकर दीक्षा लेने का निर्णय कर लिया है। हमारे कारण तुम्हे सक्लेश हुआ इस अपराध के लिए हमे क्षमा कर देना। तुम्हारे चक्र को आयुधशाला तक जाने मे अब कोई बाधा नही होगी। अयोध्या का सिहासन अपने स्वामी की प्रतीक्षा कर रहा है।"

"बडे तो तुम हो कुमार ! अपनी ही करनी से आज यह भरत छोटा हो गया है, लज्जित करके उसे अब और छोटा मत करो। अयोध्या का सिंहासन, यह चक्र, और यह चक्रवर्तित्व अब तुम्हारा है। इसे स्वीकार करो। भूल सबसे होती है भ्रात ! किन्तु क्षमा करने की उदारता सबमे नही होती। वह जिनमे होती है वे महान होते है। उनकी पूजा करके यह ससार पवित्र होता है।" हाथ जोडकर भरत ने उत्तर दिया।

अग्रज की अधीरता देखकर बाहुबली ने उन्हे पुनः समझाया—"तुम अकेले तो पराजित नही हुए भैया ! आज तो हम दोनो ही हारे हैं। अपने भीतर पनपते हुए राग-द्वेष से हारना ही हमारी पराजय है। कषाय के वशीभूत होकर आज हम दोनो ने उस पराजय की पीडा भोगी है। अब व्यर्थ का मनस्ताप मेटकर अपने कर्त्तव्य की ओर देखो। इस हठी अनुज ने बहुत क्लेश दिया है तुम्हे। सदा की तरह इसे क्षमा कर देना। बस।" अपना कथ्य पूरा करके बाहुबली ने वन की ओर दृष्टि उठाई और चलने का उपक्रम किया।

भरत ने रूठे हुए अनुज को एक बार और मनाना चाहा। प्रयास करने पर भी, इस बार वाणी ने साथ नही दिया। दौडकर वे उस रमते जोगी के चरणो मे गिर गये। उन गमनोद्यत चरणो को भुजाओ मे भर कर वे चीख पडे—"नही, नही, नही कुमार! इतना कठोर दण्ड भरत नही सह पायेगा। एक बार क्षमा दान उसे मिलना ही चाहिए।"

विरक्त बाहुबली स्तम्भित खड़े थे। जिन भरत को सदा पिता की तरह पूज्य माना, उन्हीं भरत का सिर आज उनके चरणो मे लोट रहा था। मोह की जटिलता कैसी विचित्र है! राग का नाग-पाश कितना सशक्त है! मेरी हठधर्मी ने कितनी वेदना दी है भरत को! सोच-सोच कर क्षमा-सिन्धु बाहुबली का हृदय पसीज उठा। अश्रुकणो का रूप लेकर उनकी अनुकम्पा भ्राता के सिर पर बरस पडी। प्रशम, सवेग, अनुकम्पा, वात्सल्य और ममता की पच धाराओ से उन दोनो भ्राताओ का तन और मन सराबोर हो गया। बाहुबली के नेत्रो से निसृत करुणा विगलित पवित्र जल के द्वारा उस समय भरत का राज्याभिषेक हो रहा था। उसी समय भरत की अश्रुधाराओ के प्रासुक उष्णोदक से मानो बाहुबली के चरणो का दीक्षाभिषेक हो रहा था।

बाहुबली ने भरत को उठाया और गले से लगा लिया। सिर पर हाथ फेरकर वे उन्हे मौन सान्त्वना देते रहे। उसी समय उनके पुत्र महाबली ने चरणो मे मस्तक रखकर पिता को प्रणाम किया। पुत्र को भी बाहुबली ने भ्राता के साथ ही भुजाओ मे भर लिया। अब उनका एक हाथ चक्रवर्ती के सिर पर था, दूसरे हाथ से वे पोदनपुर के युवराज के मस्तक का स्पर्श कर रहे थे। वहाँ सबके आनन पर सूक्ष्म भावो का कल्पना थकित नर्तन हो रहा था। उस दृश्य की महिमा केवल दर्शनीय थी, शब्द वहाँ वर्जित थे। भरत को प्रकृतिस्थ देखकर बाहुबली ने पुत्र का हाथ भरत के हाथो मे दे दिया, पलक उठाकर एक बार दोनो पर दृष्टि डाली, फिर शान्त गम्भीर उस वैरागी ने नीची दृष्टि करके वन की ओर अपने पग बढा दिए।

बाहुबली की तपस्या और निर्वाण

दीक्षा के उपरान्त बाहुबली ने घनघोर वन मे कठोर तपश्चरण किया। ध्यान मुद्रा मे, बिना हिले-डुले वे एक वर्ष तक खडे आत्म-शोधन करते रहे। ससार की परिणति और राग-विराग के अन्तर्द्वन्द्वो पर उन्होंने बहुत विचार किया। मन के मन्थन से आत्मबोध का नवनीत प्रकट होता गया और बाहुबली अपने ही भीतर अपने आप को उपलब्ध होते चले गये। स्मृति की एक रेखा अवश्य, कभी-कभी दामिनी सी कौंध कर, ध्यान के घनाकाश मे चमक जाती थी —"मेरे कारण भरत को बहुत क्लेश हुआ।"

पश्चात्ताप की भावना से द्रवित भरत ने राज्य-विजेता बाहुबली को परम अकिंचन होकर आत्म-विजेता के रूप मे वन गमन करते जब से देखा, तभी से उनका मन बाहुबली के लिए अनूठे प्रेम, श्रद्धा और भक्ति से भर उठा था। बार-बार वे उस वन मे योगीश्वर भ्राता के पास जाते और उनके अविचल अटूट ध्यान की सराहना करते हुए लौट आते थे। परन्तु बाहुबली की छवि एक निमिष को भी भरत की आँखो से टलती नही थी। एक दिन भगवान् ऋषभदेव की धर्मसभा मे उन्होंने बाहुबली की उस कठोर साधना का प्रसंग चलाया। समाधान मे सुना भरत ने कि "दिग्विजय की वेला मे पोदनपुर को लेकर उपजा, भरत के मन का संक्लेश ही, जब तब

चिन्तन मे बाधक होकर बाहुबली की समाधि को खण्डित करता है। सूक्ष्म राग का यही एक कण्टक उनके साधना-पथ मे शेष है। इस सोच का विसर्जन होते ही, प्रतिमा योग की उनकी बारहमासी समाधिपूर्ण होगी तभी, आज से बारहवें दिन, ज्ञान का निष्कटक साम्राज्य बाहुबली को प्राप्त होगा।"

बाहुबली के क्लेश का कारण सुनकर भरत अवाक् रह गये। "राग के बन्धन कितने दीर्घ-जीवी, कितने शक्तिशाली हैं ? मैं सोचता हूँ कि यह भरत ही उनका अपराधी है, वे विचारते हैं कि वे स्वयं मेरे क्लेश का कारण बने हैं। क्या अपने आप को एक-दूसरे का अपराधी मानकर हम स्वय अब अपना अपराध नही कर रहे हैं ?" तत्क्षण उन्होंने सकल्प किया—"बारहवें दिन बाहुबली के चरणो मे जाकर बैठना है। उनकी समाधि खुलते ही, अपना हृदय भी उनके सामने खोलकर रख देना है। जिन्होने मेरे गुरुतर अपराध क्षमा कर दिये, वे क्या अपने आप को क्षमा नही करेंगे ? अवश्य करेंगे। उस क्षण करेंगे। करना पड़ेगा उन्हें।"

राजमाता यशस्वती और सुनन्दा, महारानी सुभद्रा, पोदनपुर की राजमाता जयमजरी, ब्राह्मी और सुन्दरी, सबको साथ लेकर सम्राट् भरत बारहवे दिन बाहुबली के तपोवन मे उप-स्थित हो गये। अयोध्या और पोदनपुर के नागरिको की भी वहाँ भीड लग गई।

दीक्षा लेते ही बाहुबली ध्यान लगाकर जहाँ, जैसे खडे हो गये थे, बरस बीत जाने पर भी आज तक वे वही, वैसे ही ध्यानमग्न खडे थे। उनका महाकाय योगी का समाधिस्थ शरीर पाषाण सा सवेदहीन लगता था। उनके चरणों मे कुक्कुट सर्पों की बाँबियाँ बन गई थी। कितने ही साँप घुटनो तक उन्हे घेरे थे। शरीर पर अनेक जन्तु रेंगते दिखाई दे रहे थे। माधवी-लता की दो शाखाएँ उनकी देह के सहारे बढती चली गई थी। लता के वृन्तों ने योगी की जंघाओ और भुजाओ को अपनी गूढ कुण्डलियो मे लपेट लिया था। आधे मुँदे हुए उनके नयनो की नासाग्र दृष्टि अपने ही आनन्द मे खोई सी लगती थी।

तपोवन के पूरे परिवेश मे अहिंसा और प्रेम का साम्राज्य था। मृग और मृगराज, वृषभ और व्याघ्र, नाग और मयूर, सभी वहाँ एक साथ विचरते थे। तपस्वी बाहुबली के दर्शन मात्र से सबके मनो मे श्रद्धा, भक्ति और प्रेम की निर्झरिणी फूट पडी। राजमुकुट उनके चरणो मे रख कर भरत उन महायोगी की स्तुति करने लगे। माताओ ने शरीर पर से जीव-जन्तुओ को हटाया। सहोदराओ ने लता-वल्लरियो के वृन्त खीच खीच कर उन्हे वनस्पति के बन्धन से मुक्त किया। जयमजरी ने बाँबी की मृत्तिका हटाकर चरणो का प्रक्षाल किया। पुत्रो ने वन-भूमि को स्वच्छ और निष्कण्टक किया। सबने उनकी वन्दना का उत्सव मना लिया।

स्तुति करते हुए भरत ने अपना मस्तक बाहुबली के चरणो पर रख दिया। तभी वह शुभ घडी प्रकट हो गई। योगेश की समाधि सम्पन्न हुई। शरीर मे किंचित् सा स्पन्दन हुआ, पलक थोडे से खुले। हर्ष की एक लहर सबके मन को छू गई। भरत के स्तवन की शब्दावली बाहुबली के कानों से टकराई। उसी समय भरत के सक्लेश की चिन्ता उनकी चेतना से तिरोहित हो गई। साधना ने सफलता का शिखर छू लिया। उपलब्धि के आनन्द से चककते हुए उनके दोनो नेत्र, अर्द्धोन्मीलित मुद्रा मे स्थिर हो गये। बाहुबली ने अर्हंत पद प्राप्त कर लिया। उन्हें कैवल्य उप-लब्ध हो गया। वे सर्वज्ञ हो गये। अनिरुद्ध चेतना का अनन्त आलोक अब उनके अन्तर मे प्रकट हो गया।

ऋषभदेव की धर्मसभा में केवलज्ञानी अर्हन्तों के मध्य बाहुबली विराजमान हुए। थोड़े ही काल मे, ऋषभदेव के निर्वाण के पूर्व ही, उनका निर्वाण हो गया।

अनुपम आदर्श-पुरुष

इस प्रकार क्षमा-पुरुष बाहुबली के अद्वितीय व्यक्तित्व मे हमे अनेक विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। शक्ति सचालित साम्राज्य-व्यवस्था के विरुद्ध सिर उठाने वाले वे विश्व के प्रथम विद्रोही थे। चक्रवर्ती की अपार सैन्य-शक्ति को चुनौती देने वाला अतिशय साहस और धैर्य उनके पास था। युद्ध मे जीती हुई साम्राज्य लक्ष्मी को घास के तिनके की तरह उपेक्षा से त्यागकर उन्होंने जिस निस्पृहता का परिचय दिया, उसकी कोई उपमा, वैसा कोई दूसरा उदाहरण, हमारे पुराणो में या इतिहास मे नही मिलता।

भरत के साथ युद्ध मे सेनाओ का सघर्ष टालते हुए, द्वन्द्व युद्ध का प्रस्ताव स्वीकृत करके भरत-बाहुबली ने ही सर्व प्रथम इस धरती पर रक्तपात-विहीन सघर्ष की अभिस्तावना की अनुमोदना की। ऋषभदेव के धर्म साम्राज्य मे हिंसा पर अहिंसा की विजय का वह प्रथम प्रयास था। रणागन की धरती पर 'अहिंसा का श्वेतपत्र' लिखने वाले वे विश्व के प्रथम योद्धा थे। इन सारी विशेषताओ मे बडी, बाहुबली की त्रैलोक्य वन्दनीय विशेषता यह थी कि दीक्षा के उपरान्त वे एक ही आसन से खडे रहकर, लगातार, एक वर्ष तक लोकोत्तर तपस्या करते रहे। इस युग मे सर्व प्रथम, अपने पिताश्री से भी पहले निर्वाण प्राप्त करके पचम गतिपाने वाले वही इस युग के प्रथम-पुरुष हुए।

बाहुबली की इन सब विशेषताओ के कारण उनकी प्रतिमा बनाकर लोक उन्हे पूजता है। भले ही कोई शब्दात्मक उपदेश न दिया हो, परन्तु अपने मर्यादित जीवन-चक्र के माध्यम मे सघर्ष और स्वाभिमान, साहस और शौर्य, सत्याग्रह और सतुलन तथा सन्यास और साधना का जो पाठ बाहुबली ने विश्व को पढाया, तीर्थंकरो की दिव्य-ध्वनि के समान ही उससे हमे आत्मोत्कर्ष की प्रेरणा और परामर्श प्राप्त होता है। दीर्घकाल तक होता रहेगा। यही कारण है कि तीर्थंकर न होते हुए भी भगवान् बाहुबली, तीर्थंकरो के ही समान हमारी भक्ति और पूजा-अर्चना के केन्द्र बनकर जन-जन के मन मे प्रतिष्ठित हो गये।

बाहुबली बिम्ब का निर्माण

दसवी शताब्दी के अन्त में श्रवणबेलगोल जैसे प्राचीन तीर्थ पर ससार के इस आठवें आश्चर्य का निर्माण, मात्र एक प्रासगिक घटना भर नही थी। उसके पीछे कर्नाटक की तात्कालिक परिस्थितियो का भी बडा योगदान था। यह वह समय था जब राजनैतिक अस्थिरता और प्रभुता के लिए संघर्ष अपनी चरम सीमा पर पहुँच रहे थे। 'राष्ट्र' नाम की किसी सार्वभौमिक सत्ता का अस्तित्व कही शेष नही रह गया था। बहुत छोटे-छोटे हिस्सो मे राजसत्ताएँ विभाजित हो गई थी और एक-दूसरे पर अधिकार करके पराजित का अस्तित्व मिटा देने की उनमे होड लगी थी। जाति, समाज या सम्बन्धो की चिन्ता किये बिना, दिनरात परस्पर मे सीधे नर-सहार करके युद्ध लडे जा रहे थे। बलात् दूसरे की भूमि, भामिनी और सम्पत्ति पर अपना स्वामित्व स्थापित कर देना नीति सम्मत ही नही, धर्म सम्मत भी माना जाने लगा था।

अराधना के क्षेत्र मे सामान्य मनुष्य की यह मनोवृत्ति होती है कि वह अपनी सासारिक समस्या का समाधान भी अपने आराध्य के व्यक्तित्व मे ढूंढना चाहता है। ऐसे समाधान देने वाले व्यक्तित्व की आराधना मे मनुष्य अधिक रुचि, अधिक आकर्षण अनुभव करता है। उत्तर भारत मे भयानक राजनैतिक उत्पीडन के काल मे सर्वत्र शान्तिनाथ स्वामी की बडी-बडी प्रतिमाओ की प्रतिष्ठा हमे कुछ ऐसी ही मनःस्थिति का परिचय देती है। अत. मुझे लगता है कि कर्नाटक की उपर्युक्त पृष्ठभूमि मे वहाँ का जनमानस स्वत. अपने आराध्य के रूप मे किसी ऐसे सर्वांगीण व्यक्तित्व की तलाश मे था, जिसमे साहस, शौर्य, सघर्ष, सतुलन और स्वाभिमान के सभी तत्त्व उपलब्ध हो और जो तात्कालिक स्थितियो मे 'आदर्श' का स्थान ग्रहण करके उसे प्रेरणा और प्रोत्साहन दे सके। कहने की आवश्यकता नही कि बाहुबली के घटना-प्रधान जीवन मे इन सभी तत्त्वो का समन्वित समावेश था। उस मानसिकता मे बाहुबली ही जनमानस के सर्वाधिक अनुकूल आराध्य हो सकते थे। इसलिए यह तनिक भी आश्चर्यजनक नही है कि भगवान् महावीर के निर्वाण के उपरान्त हजार-सवा हजार वर्ष तक जो बाहुबली, भारतीय मूर्ति संरचना के संसार में अनजाने बने रहे, वे सातवी-आठवी शताब्दी मे जिनालयो की दीर्घाओ मे, उपदेवता के रूप मे उत्कीर्ण होते ही, दो सौ वर्ष के अल्पकाल मे मूलनायक के रूप मे प्रमुखता से प्रतिष्ठित हो गये। इतना भर नही, अपितु गोमटस्वामी के रूप मे सहज ही उनके ऐसे विशाल विग्रह की रचना हो गई जैसा बिम्ब भारत के कलाकारों ने अपने किसी भी आराध्य का, न तब तक बनाया था, न उसके बाद बनाया जा सका। आज के कम्प्यूटर युग मे भी नही।

बाहुबली आख्यान की प्राचीनता

आगम मे बाहुबली का प्राचीनतम उल्लेख पहली-दूसरी शताब्दी में कुन्दकुन्द आचार्य के 'भाव-पाहुड' मे मिलता है। यद्यपि बाहुबली पर कोई स्वतन्त्र पुराण नही लिखा गया, परन्तु कुन्दकुन्द आचार्य के पश्चात्वर्ती प्रायः सभी प्रमुख पुराणकारो ने उनकी कथा का पुराणो मे समावेश किया है, या कम से कम उनका उल्लेख अवश्य किया है। तीसरी शताब्दी के आचार्य

विमलसूरि अपने 'पउम-चरिउ' में, तथा चौथी-पाँचवीं शताब्दी के यतिवृषभाचार्य अपनी 'तिलोय-पण्णत्ति' मे उनका उल्लेख करते हैं। सवत् 791 मे रविषेण के 'पद्म-पुराण' मे और सवत् 849 मे जिनसेनाचार्य के 'आदि पुराण' मे भी बाहुबली की कथा विस्तार से कही गई है। इन उल्लेखो के अतिरिक्त पुन्नाट् वशीय जिनसेन के 'हरिवश-पुराण' मे, स्वयंभू के 'पउम-चरिउ' मे तथा हरिषेण के 'पद्म-पुराण' मे भी बाहुबली की कथा का समावेश है।

इतने आगमिक उल्लेखो के बावजूद, यह आश्चर्य की सी बात लगती है कि मन्दिरो मूर्तियों मे बाहुबली का दर्शन हमे बहुत काल बाद होता है। पाँचवी-छठी शताब्दी ईस्वी तक की मौर्य शुग, गुप्त और वाकाटक कला मे हमे आज तक कही भी बाहुबली का अकन प्राप्त नही हुआ। अभिलेखीय साक्ष्य के अनुसार पाँचवी शताब्दी ईस्वी मे बाहुबली का एक मन्दिर कर्नाटक मे कदम्ब राजा रविवर्मा द्वारा बनवाया गया था। उत्तर कनारा मे वनवासी के निकट 'गुदनापुर' ग्राम मे यह अभिलेख एक स्तम्भ पर अंकित है। सत्ताईस पक्तियो का यह लेख नीचे से ऊपर की ओर लिखा गया है, इस प्रकार इस लेख ने एक लता की तरह इस स्तम्भ को वेष्ठित किया है। इस जैन अभिलेख मे राजा रविवर्मा द्वारा 'मन्मथनाथ' के मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। समझा जाता है कि प्रथम कामदेव और प्रथम मोक्षपथिक बाहुबली ही वे मन्मथनाथ हैं। राजा रविवर्मा का काल 485-515 ईस्वी है, अत. अब तक ज्ञात अभिलेखो मे यही बाहुबली का प्राचीनतम उल्लेख माना जाता है। सबसे पहिले हमे उनका दर्शन बदामी और ऐहोल के गुफा-मन्दिरो मे शिलोत्कीर्ण प्रतिमाओ के रूप मे होता है। उन्ही गुफाओ मे भित्ति-चित्रो मे भी बाहु-बली का यदा-कदा अकन मिलता है। एलोरा के गुफा-मन्दिरो मे हम उन्हे कुछ बडे आकार मे उत्कीर्ण पाते हैं। चालुक्य और राष्ट्रकूट कलाकारो की इन सारी कलाकृतियो ने सातवी से नवमी शताब्दी के बीच रूपाकार ग्रहण किया। उसी काल की बनी बाहुबली की डेढ हाथ ऊंची एक धातु-प्रतिमा श्रवणबेलगोल में मिली थी जो आज कल बम्बई के 'प्रिंस ऑफ वेल्स सग्रहालय' मे प्रदर्शित है। उत्तर भारत मे बिलहरी, मेरोन, खजुराहो, देवगढ आदि की मध्यकालीन कला मे बाहुबली का अकन उपलब्ध तो है पर वह कही भी नवमी-दसवो शताब्दी के पूर्व का नही है।

बाहुबली की लोक मान्यता

काललदेवी की भक्ति, चामुण्डराय की शक्ति और नेमिचन्द्राचार्य की प्रेरणा के सगम से विंध्यगिरि पर विश्व-विजेता बाहुबली के विराट् बिम्ब के निर्माण की भूमिका बनते ही कर्नाटक के जनमानस ने उनके व्यक्तित्व मे अपने आदर्श का अवलोकन कर लिया। इस नव-नायक की प्रेरक जीवनी दिनो दिन अधिकाधिक लोकप्रिय होती चली गई। जहाँ राज्य-वृद्धि की कामना से विजय अभियान मे सलग्न लोग, भरत के दिग्विजय अभियान से आश्वस्त हुए, वही दूसरी ओर अकारण आक्रमण के शिकार निर्बल नरेश भी, अनीति को चुनौति देने वाली बाहुबली की संकल्प-निष्ठा से अपनी-अपनी स्मिता की रक्षा का साहस अपने भीतर अनुभव करने लगे। छह खण्ड पृथ्वी के 'स्व-भुजोपार्जित साम्राज्य' को निस्पृहता पूर्वक ठुकरा कर वन गमन करने वाले साधक का अलौकिक आचरण उन्हे समाधि और सल्लेखना के पाठ पढाने लगा। भावना और कर्तव्य के बीच, अथवा सत्ता और सबधों के बीच जहाँ, जिसे, जैसी उलझन महसूस होती, सबका समाधान उन लोक-नायक के जीवन मे उन्हे दिखाई दे जाता था। इसलिए बाहुबली के जीवन-वृत्त का पारायण और उन्ही का गुणानुवाद घर घर में होने लगा। इस प्रकार जब चामुण्डराय

ने विंध्यगिरि पर गोमटस्वामी की प्रतिष्ठा कराई, उसके बहुत पूर्व ही कर्नाटक की धर्म-प्राण जनता के हृदयो में बाहुबली प्रतिष्ठित होकर विराज गये। दक्षिण मे बाहुबली की लोकप्रियता का यही मुख्य कारण रहा। इसीलिए बाद की शताब्दियों में भी कारकल और वेणूर आदि स्थानों पर उस निराकार विराटता को आकार देने के प्रयास हुए। धर्मस्थल मे अब हो रहे हैं। इसी के अनुकरण मे पिछले चालीस-पचास वर्षों से उत्तर भारत मे, जगह जगह उनकी स्थापना की होड सी लग गई है।

महामात्य चामुण्डराय का आदेश होते ही प्रतिमा के निर्माण का कार्य प्रारम्भ हो गया और एक दिन मूर्ति के प्रथम अभिषेक के साथ उसकी प्रतिष्ठा का अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। बस, इतिहास तो हमे इतना ही बताता है। किस दिन कार्यारम्भ हुआ, कितने दिन इस निर्माण मे लगे, पाषाण मे प्राण फूंकनेवाले उस अमर शिल्पी का नाम धाम, पता-ठिकाना क्या था, वह किस दिशा से कैसे आया, और कहाँ, क्यो चला गया, यह कुछ भी तो नहीं बताया हमारे इतिहास ने। प्रतिष्ठा की तिथि के बारे मे भी अनेक विवाद रहे और फाल्गुन शुक्ला पचमी, रविवार तारीख तेरह मार्च सन् 981 ईस्वी का दिन भी हमे उपलब्ध सूत्रों के बहुमत से ही स्थिर करना पडा।

इतिहास का बटवृक्ष जहाँ नही होता वहाँ किंवदंतियो के एरण्ड-द्रुमो से ही हमे अपना उपवन सार्थक मान लेना पडता है। गोमटेश्वर की निर्माण कथा के बारे मे भी यही करना पडा। वैसे तो हजार साल मे किंवदंतियो का भी पूरा बगीचा उग आया है पर दो कहानियाँ गोमटस्वामी के साथ अभिन्न होकर बहुत गहरे तक जुडी हैं। उन कथाओ का स्मरण किये बिना गोमटेश का स्मरण भी सभव नही लगता। पहली कथा है मूर्तिकार के पारिश्रमिक की और दूसरी है गुल्लिका अज्जी के द्वारा सम्पन्न दुग्धाभिषेक की। सैकडो बार सुनकर भी उन का नावीन्य अछूता ही लगता है शायद इसीलिए वे दोनों कथाएं आपको सुनाये बिना मेरी लेखनी आगे बढने से इन्कार कर रही है।

एक स्वर्णिम अभिशाप

कहा जाता है कि गोमटेश्वर के मूर्तिकार ने अपने मुंह से कोई पारिश्रमिक माँगा नही। चामुण्डराय ने ही विचार किया कि गरीब मनुष्य लोभी तो होता ही है, जितना अधिक पाने की आशा रहेगी उतना ही अधिक मन लगाकर काम करेगा, अत उन्होने स्वय कह दिया कि चट्टान मे स्थूल आकार बन जाने पर फिर तक्षण प्रारम्भ किया जाय। तब जितना पाषाण तुम्हारी छेनी से उत्कीर्ण होकर झरेगा, तुला पर तौल कर उतना ही स्वर्ण तुम्हे पारिश्रमिक मे मिलता जायेगा। बस यही स्वर्णिम-आश्वासन कलाकार के लिए अभिशाप बन गया। एक बार यह मोहक मजदूरी हाथ मे आते ही उसका मन उसी मे रम गया। सारी कलाकारी भूलकर वह स्वर्णाराधना मे ही निमग्न हो गया। परिग्रह पिशाच से पीडित वह गरीब, काम छोडकर विक्षिप्त सा फिरने लगा। तब उपाय ढूंढा उसकी माता ने। शिल्पी को उसके पिता की निर्लोभ वृत्ति का स्मरण कराते हुए उन्होंने अपने पुत्र पर स्पष्ट कर दिया कि शिल्प का निर्माण और स्वर्ण का संग्रह एक साथ संभव नही। इन दोनो मे से किसी एक को छोडना ही होगा।

समय रहते कलाकार की बुद्धि लौट आयी। स्वर्ण का व्यामोह और पारिश्रमिक की चिन्ता

छोडकर वह अपने सकल्प की पूर्ति मे दत्त-चित्त होकर लग गया। हजारो श्रमिको के परिश्रम से, अनेक सहायक कलाकारो की सहायता से, अपार द्रव्य व्यय करके भी विध्यगिरि की उस अनगढ़ चट्टान को बाहुबली का रूप देने मे प्राय छह वर्ष का समय लगा। सन् 981 के प्रारम्भ मे मूर्ति बनकर तैयार हुई और उसकी प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया।

इस अप्रतिम प्रतिमा के निर्माण का अभियोजन, भारतीय मूर्तिकला के इतिहास का अनोखा अभियान था। मौर्य और शुग कलाकारो से लेकर भारतीय कला-कोष को समृद्धि देनेवाले गुप्त कलाकारो तक किसी ने भी इतने विराट रूप की अवतारणा का प्रयत्न नही किया था। मध्य युग मे स्थापत्य या प्रासाद विधा (टेम्पल आर्किटेक्ट) के अनेक विशाल और अलकृत उदाहरण प्रस्तुत करते हुए भी मूर्ति-विज्ञान तब तक ऐसी किसी प्रतिमा की सयोजना नही कर पाया था। शेषशायी की लेटी हुई मूर्तियो मे भी, जहाँ भूमि के समतल लेटी हुई अनुकृति के कारण तक्षण की अनेक सुविधाएँ थी, देश मे कही भी इतने बडे आकार की प्रतिमा नही उकेरी जा सकी। गुफा-मन्दिरो की सरचना मे भी, एक पत्थर के पूरे मन्दिर तो उकेरे गये परन्तु मूर्तियो के लिए इतना बडा फलक वे कलाकार भी नही ढूंढ़ पाये थे।

विध्यगिरि पर बाहुबली की अवतरणा के लिए नेमिचन्द्राचार्य और चामुण्डराय की कल्पना जैसी विशाल थी, दोड्ड-बेट्ट की इस चट्टान के रूप मे, भाग्य से उन्हे शिलाखण्ड भी वैसा ही विशाल प्राप्त हो गया। सफेद ग्रेनाइट की यह कठोर शिला उनके सकल्पो की ही तरह स्थिर और सुदृढ थी। काललदेवी की भक्ति की तरह इसका भी विस्तार बहुत गहरा, अडोल और अकम्प था। बाहुबली के जीवन की सारी महानताओ को रूपायित करने मे सक्षम इस शिला-फलक का चयन किसी सामान्य प्रक्रिया का फल नही था, वह अवश्य ही उन भक्तो की आस्था और भक्ति से प्रेरित बुद्धि का ही परिणाम था।

इतनी विशेषताओ को लिये हुए, इतने विराट रूपाकार मे जब उस विलक्षण-विजेता की मूर्ति का निर्माण प्रारम्भ हुआ, तब सहज ही उसने दूर-दूर से लोगो को आकर्षित करना प्रारम्भ किया। बाहुबली का चरित्र सुनकर उनके दर्शन की अभिलाषा जन-जन मे उत्पन्न होने लगी। बनती हुई स्थिति मे तो ऐसी कृतियो का दर्शन दुर्लभ ही होता है, अत. प्रतिदिन सैकडो हजारो लोगो की भीड विध्यगिरि की प्रदक्षिणा करने लगी। दूर-दूर तक चामुण्डराय के इस अनोखे अभियान की प्रसिद्धि होने मे अधिक समय नही लगा। इसीलिए तो मैंने ऊपर लिखा है कि "जब चामुण्डराय ने विंध्यगिरि पर बाहुबली की प्रतिष्ठा करायी, उसके बहुत पूर्व ही कर्नाटक की धर्म-प्राण जनता के हृदयो मे बाहुबली प्रतिष्ठित होकर विराजमान हो गये थे।"

गुल्लिका अज्जी

श्रवणबेलगोल से सम्बन्धित दूसरी घटना गुल्लिका अज्जी द्वारा भगवान् के अभिषेक की है। गोमटस्वामी के सबध मे यह सर्वाधिक प्रचलित किंवदन्ती सबसे प्राचीन भी है। उतनी ही प्राचीन जितने स्वय गोमटेश्वर। कहा जाता है कि जब मूर्ति की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई और उसका प्रथम अभिषेक हुआ तब उनकी माता काललदेवी ने दुग्धाभिषेक कराने का आग्रह किया। काललदेवी ने बाहुबली के दर्शन पाने तक के लिए अपने आहार मे दुग्ध का त्याग कर दिया था और भगवान् का दुग्धाभिषेक देखने के बाद ही दूध ग्रहण करने का उनका अभिप्राय था। इतनी बड़ी मूर्ति का

निर्माण और उसकी इतनी शानदार प्रतिष्ठा करानेवाले चामुण्डराय के लिए दुग्धाभिषेक कोई कठिन अनुष्ठान नही था। तत्काल उसकी व्यवस्था की गई, परन्तु तभी वह अचरज घटित हो गया। शायद महामात्य के मन मे कर्त्तव्य का कुछ अहंकार समा गया था, अतः सैकड़ो कलश दूध का अभिषेक भी बाहुबली को सर्वांग सराबोर करने में समर्थ नही हुआ। अभिषेक की असफलता से वे चिन्तित हो गये। तभी एक दीन-हीन सी दिखने वाली वृद्धा अपने हाथ मे वन के एक सूखे फल की गुल्लिका में थोडा-सा दूध लेकर उपस्थित हुई। इतनी विशाल प्रतिमा के अभिषेक के निमित्त इतने थोडे से दूध के कारण पहले तो वृद्धा को सबकी हँसी का ही पात्र बनना पड़ा, परन्तु अनुनय-विनय करने पर जब उसे अभिषेक का अवसर दिया गया, तब यह देखकर वहाँ सब अवाक् रह गये कि उस छोटी-सी गुल्लिका से अक्षीण दुग्ध-धार निकली और उसी धारा से बाहुबली आपाद-मस्तक अभिषिक्त हो गये। भक्ति की शक्ति का यह साक्षात्कार करके चामुण्डराय के मन का अहंकार स्वय निरस्त हो गया। उनके मन की मृदुता और नम्रता सौगुनी हो गयी। इन दोनो घटनाओ का औपन्यासिक चित्रण मैंने अपनी पुस्तक 'गोमटेश-गाथा' मे विस्तार से किया है।

इस प्रकार एक दिव्य अतिशय के साथ विंध्यगिरि पर बाहुबली की प्रतिष्ठा 981 ईस्वी मे सम्पन्न हुई। उसी समय से गुल्लिका अज्जी का यह आख्यान उनके साथ प्रसिद्ध हुआ और तब से अब तक निरन्तर उसकी प्रसिद्धि होती रही। बाहुबली का भक्त क्षण भर को भी गुल्लिका अज्जी को बिसार नहीं सका। प्रथम अभिषेक के बाद दो सौ वर्ष के भीतर जब गोमटस्वामी की परिक्रमा, प्रवेश-द्वार, प्रागण और परकोटे आदि का निर्माण हुआ, तब तक तो गुल्लिका अज्जी ने जन-मानस मे इतना अचल आसन प्राप्त कर लिया था कि उनकी एक तदाकार प्रतिमा ही बनकर वहाँ स्थापित कर दी गयी। एक सामान्य स्वस्थ कन्नड़ महिला के बराबर ऊँची, और वैसी ही साज-सज्जा से युक्त, देवी की इस प्रतिमा के हाथ मे फल की गुल्लिका है। गोमटेश्वर भगवान् के चरणों के ठीक सामने, मन्दिर के बाहर प्रवेश-द्वार पर, एक प्रथक् मण्डप मे इस प्रकार देवी को खड़े दिखाया गया है कि निरन्तर उनकी दृष्टि भगवान् के चरणो का अवलोकन करती सी लगती है। इस देवी मूर्ति की स्थापना से गुल्लिका अज्जी की कथा गोमटेश्वर के साथ सदा सदा के लिए मूर्तिवन्त होकर वहाँ स्थापित हो गयी है।

प्रश्न सिद्धान्तो का

कुछ लोग ऐसी घटनाओ को, या इन्ही घटनाओ को, सिद्धान्त और तर्क की कसौटी पर परखना चाहते है। शासन देवताओ के वर्चस्व और स्त्रियो द्वारा अभिषेक के अधिकार के सन्दर्भ मे इनके औचित्य का निर्णय करना चाहते है। मुझसे प्राय. इन प्रश्नो का उत्तर चाहा जाता है। 'गोमटेश-गाथा' मे वर्णित ये प्रसंग मेरे पाठको में बहुचर्चित रहे हैं। ऐसे सुधी पाठको से मुझे इतना ही कहना है कि 'गोमटेश-गाथा' एक ऐतिहासिक उपन्यास है और यह 'महोत्सव-दर्शन' एक इतिहास परक आलेख है। इन दोनो आलेखो मे ऐसे सैद्धान्तिक प्रश्नो के समाधान के लिए कोई अवकाश नही है। अधिक-से-अधिक इस प्रकार के चित्रण मे यही देखा जा सकता है कि जो लिखा गया वह वास्तव मे घटित हुआ है या लेखक ने अपनी कल्पना से उसकी सृष्टि की है? इस परीक्षण मे मुझे कोई परेशानी नही है। मैंने केवल ऐतिहासिक तथ्यो

को ही अपनी लेखनी पर उतारा है। इनकी यथार्थता बतानेवाले एक नही अनेक सूक्ष्म और स्थूल शिलांकित प्रमाण, वही चन्द्रगिरि और विन्ध्यगिरि पर उपलब्ध है। यह अवश्य मेरा निवेदन है कि अपने आग्रह के वशीभूत होकर, या पक्ष-व्यामोह में पड कर इतिहास के तथ्यो को, किसी भी दशा मे, और किसी भी दिशा मे, तोड़ने-मरोडने का प्रयत्न नही किया जाना चाहिए। तथ्य को 'तथ्य' की ही तरह स्वीकार करते हुए अपने सिद्धान्त का पोषण या औचित्य-समर्थन करने का प्रयास होना चाहिए।

गुल्लिका अज्जी की कथा या दुग्ध का अभिषेक इस प्रकार के अकेले प्रश्न नही हैं। काल के आदि से ही हमारे सामने ऐसे प्रश्न उठते रहे है। परन्तु हमारे पूर्वाचार्यों ने वास्तविकताओं का लोप नही किया, उन्हे स्वीकारा और हेतुमत्ता के साथ अपने सिद्धान्तो का निरूपण किया। तीर्थंकर के घर कन्या का जन्म नही होता इस कारण से ब्राह्मी और सुन्दरी को पुराण कथाओ से या मूर्ति-शिल्प मे से निष्कासित नही किया गया। चक्रवर्ती का मान भग नही होता इस विशिष्टता की रक्षा के लिए भरत-बाहुबली युद्ध के कथानक का लोप नही किया गया। तीर्थंकर पर उपसर्ग की घटना सिद्धान्त-समर्थित नही है महज इसलिए पार्श्वनाथ की प्रतिमाओ पर बनने वाली फणावलि को हमने उपसर्ग या परिग्रह नही माना। स्वय आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने 'फणावलि-मण्डित' रूप मे पार्श्व भगवान् का स्मरण किया है। जब यही हमारी ऐतिहासिक, दार्शनिक और सैद्धान्तिक परम्परा रही है तब फिर गोमटस्वामी के सन्दर्भ मे गुल्लिका अज्जी का किया अभिषेक या दुग्धाभिषेक, ऐतिहासिक तथ्य की तरह स्वीकार करने में क्यो आपत्ति होनी चाहिए? मैंने इतना ही कहना चाहा है कि यदि दूध का अभिषेक हमारे सिद्धान्त से मेल नही खाता तो भी यह विशिष्ट पद्धति कम-से-कम हजार साल से तो वहां प्रवर्तमान है। इसी प्रकार यदि गुल्लिका अज्जी द्वारा अभिषेक के अतिशय की कथा, केवल काल्पनिक कथा है, मात्र किंवदन्ती ही है, तो भी उस किंवदन्ती की आयु अब हजार वर्ष से ऊपर हो गयी है। रही बात सिद्धान्त-समर्थन की या औचित्य की, सो मैं समझता हूँ कि उस पर चर्चा करने का मेरे लिए न यह अवसर है, न अवकाश।

इस सम्बन्ध मे कुछ बातें और ध्यान मे रखनी होंगी। पूजा-अनुष्ठान के निर्धारित विधि-विधान प्राय. सम्प्रदायगत होते है। उत्तर और दक्षिण मे, तथा तेरहपथ, बीसपथ और काष्ठासघ आदि मे पूजन-अभिषेक की पद्धतियो मे कुछ-कुछ अन्तर होता है। इतने विशाल दिगम्बर जैन समाज मे कुछ और भी पद्धतियाँ हो सकती है। दूसरी बात यह कि इस प्रकार की सारी रीतियाँ सामान्य प्रतिमाओ के लिए निर्धारित होती है। विशिष्ट और अतिशयशाली लोकपूज्य मूर्तियो के सन्दर्भ मे ऐसे छोटे-मोटे बन्धन स्वत. टूट जाते हैं। उनके भक्तो का समुदाय इतना विविध और इतना विशाल हो जाता है कि उन सबकी आराधना पद्धति मे ये अन्तर अनिवार्य हैं। यहाँ गोमटेश्वर भगवान् किसी सम्प्रदाय विशेष के आराध्य नही हैं। पूरी दिगम्बर जैन समाज सदा से उनकी आराधना करती आयी है, और निस्सदेह उनकी गणना 'विशिष्ट' और 'अतिशयशाली' मूर्तियो मे होती है इसलिए उनके सम्बन्ध मे ऐसे सकीर्ण विकल्प उठाये ही नही जाने चाहिए।

ऐसे बीते बरस हज़ार

इतिहास का सिंहावलोकन

सन् 981 ईस्वी मे गोमटेश्वर भगवान् की प्रतिष्ठा सम्पन्न होने के उपरान्त थोड़े ही वर्षों मे अजितसेन आचार्य का समाधिमरण हो गया। काललदेवी ने अपने बाहुबली की छवि का दर्शन करते-करते सल्लेखना-मरण किया। चामुण्डराय अपने जीवन के अन्तिम समय तक गोमटेश की सेवा, पूजा और व्यवस्था करते रहे। श्रवणबेलगोल के दिगम्बर जैन मठ को उन्होंने बहुत समृद्ध और प्रभावशाली बना दिया। एक दिन वे सम्यक्त्व-रत्नाकार चामुण्डराय भी, जहाँ बैठकर मूर्ति के निर्माण का निरीक्षण करते थे, उसी पुण्य भूमि पर, सल्लेखना के शरणागत हुए।

बकापुर की जैन विद्यापीठ को गग नरेशो से प्राप्त होने वाली सहायता दिनों दिन घटती गयी। सन् 973 ई० मे चालुक्यो द्वारा इन्द्र चतुर्थ की पराजय के साथ राष्ट्रकूटों की सत्ता का उन्मूलन पहिले ही हो चुका था। पराजित नरेश इन्द्र चतुर्थ ने श्रवणबेलगोल मे गोमटस्वामी की शरण में ही 982 ई० मे सल्लेखना पूर्वक मरण किया। इस प्रकार विद्यापीठ को मिलने वाला राजकीय सरक्षण समाप्त-प्राय हो गया। तब एक दिन उस विद्यापीठ को बकापुर से स्थानांतरित करके श्रवणबेलगोल मे स्थापित किया गया। उन दिनो जैन सस्कृति के लिए श्रवणबेलगोल का मठ कल्पतरु के समान था। यहाँ की दानशाला और विद्यापीठ दीर्घकाल तक सुचारु रूप से चलती रही किन्तु काल के प्रभजन ने धीरे-धीरे उन्हे भी जर्जरित कर दिया।

सिद्धान्तचक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य महाराज ने चन्द्रगिरि को ही अपनी साधना-भूमि बनाकर गौरवान्वित किया। गोमटसार की रचना पूरी करने के उपरान्त उनके स्वाध्याय और तत्त्व-चिन्तन से जैन आगम को और भी अनेक निधियाँ प्राप्त हुईं। क्षपणासार, लब्धिसार और त्रिलोकसार की रचना सम्पन्न हुई। जैनमठ को उनका कुशल मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा। उत्कृष्ट धर्मायतन के रूप मे मठ की प्रतिष्ठा दिन पर दिन बढती रही। आचार्यश्री ने अपनी ही तरह सयम की साधना और ज्ञानाभ्यास करने वाले, अहर्निश ज्ञान, ध्यान और तपस्या मे सलग्न रहनेवाले मुनियो की एक बडी शिष्य-मण्डली, अपने अनुशासन मे तैयार की। वेणुपुर, वर्तमान बेलगाम की कमलनयन वसति के शिलालेख मे भी आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती का उल्लेख मिलता है। उनके शिष्यो-प्रशिष्यो ने दीर्घकाल तक आचार्यश्री की महान् परम्पराओं को जीवित रखा।

जैसे-जैसे श्रवणबेलगोल की ख्याति बढ़ती गई, वैसे ही वैसे कर्नाटक में अनेक जैन तीर्थों का अभ्युदय होता रहा। मूडबिद्री मे अनेक सुन्दर मन्दिरो का निर्माण हुआ और एक दिन श्रवण-बेलगोल के भट्टारक स्वामी श्री शुभचन्द्र के द्वारा वहाँ के जैन मठ की स्थापना हुई। कुछ समय उपरान्त कारकल में अनेक मन्दिरों का निर्माण हुआ और गोमटेश्वर की प्रतिष्ठा के लगभग चार सौ वर्ष पश्चात् वहाँ बयालीस फुट ऊँची बाहुबली की प्रतिमा का निर्माण हुआ, जिसकी प्रतिष्ठा 13 फरवरी 1432 को सम्पन्न हुई। इसके पौने दो सौ वर्ष उपरान्त वेणूर में

उनतालीस फुट ऊँची बाहुबली मूर्ति स्थापित हुई। इस मूर्ति की प्रतिष्ठा 16 मार्च सन् 1604 को सम्पन्न हुई।

चामुण्डराय का वंश

वीर मार्तण्ड चामुण्डराय के दान से कर्नाटक मे अनेक मन्दिरों के जीर्णोद्धार और मूर्तियो की स्थापना का कार्य अनेक वर्षों तक होता रहा। चन्द्रगिरि पर चामुण्डराय बसदि का निर्माण यथा समय पूरा हुआ। इस मन्दिर मे नीलमणि से निर्मित भगवान् नेमिनाथ की मनोहर मूर्ति का वर्णन आचार्य नेमिचन्द्र ने 'गोमटसार' मे किया है। चामुण्डराय के उपरान्त उनके पुत्र जिनदेवन ने, अपने यशस्वी पिता के द्वारा निर्मित उसी मन्दिर के ऊपर, एक वेदी का निर्माण कराकर, सन् 995 ई० मे उसमे पार्श्वनाथ तीर्थंकर की प्रतिमा विराजमान करायी। जिनदेवन की ओर से धर्मायतनो की स्थापना का यह कार्य बहुत समय तक चलता रहा। जिनदेवन के मन मे अजितसेन स्वामी के प्रति उत्कट भक्ति की भावना थी। अपने आपको उनका 'प्रिय शिष्य' कहने मे वह गौरव का अनुभव करता था।

जिननाथपुर

होयसल राजा विष्णुवर्द्धन के सेनापति गगराज ने सन् 1117 ई० मे चन्द्रगिरि के उत्तर में जिननाथपुर नगर की स्थापना की। सगरनन्दि सिद्धान्तिदेव के उपदेश से अमात्य राचीमैया ने जिननाथपुर मे शान्तिनाथ मन्दिर का निर्माण कराया। श्रवणबेलगोल मे होयसल शैली का यही सबसे सुन्दर जिनालय है। मण्डप के खम्भो का गुठाव, छतो की सयोजना और बाह्य भित्तियो पर तीर्थंकरो, शासन देवताओ, यक्षों और अप्सराओ की वैभवपूर्ण मूर्तियो का अकन इस मन्दिर की विशेषता है।

इस मन्दिर की तुलना हम बेलूर और हलेबीड के कलात्मक मन्दिरो से कर सकते हैं। वर्तमान मे मन्दिर का शिखर भग्न है। उस पर ईंट-चूने की छत डाल दी गयी है। बाह्य भित्तियो के तक्षण मे भी मन्दिर का निर्माण अधूरा-सा रह गया लगता है। ज्ञात होता है कि स्थपति ने पीछे की ओर से मूर्तियो का तक्षण कार्य प्रारम्भ कराया, परन्तु प्रवेशद्वार तक आते-आते, सम्भवत· राजनैतिक उथल-पुथल के कारण, यह काम अधूरा छूट गया। फिर भी बाह्य भित्तियो पर तीनो ओर जो भी शिल्पाकन हैं, वे होयसल मूर्तिकला का पूरा प्रतिनिधित्व करते हैं। रूपसी अप्सराओ के भिन्न-भिन्न रूप, तथा गायको और वादको के अनेक अकन, अपनी पूरी मोहकता के साथ दर्शको को प्रभावित करते हैं।

इस महोत्सव की तैयारी के साथ ही जिननाथपुर मन्दिर के कायाकल्प का भी कार्य प्रारम्भ हुआ। श्रवणबेलगोल से मन्दिर तक पक्की सडक का निर्माण किया गया। छत की मरम्मत करके गिरती हुई दीवार को साधा गया। मन्दिर के तीनो ओर पचास फुट भूमि का अर्जन करके परकोटे को विशालता दी गयी और उसका नवीनीकरण किया गया। रासायनिक प्रक्रिया से मूर्तियों को स्वच्छ किया गया। मन्दिर के भीतर छतो पर जो अद्भुत शिल्पांकन हैं उनकी सफाई आदि का बहुत-सा काम अभी शेष है। मन्दिर की सुरक्षा भी बहुत आवश्यक कार्य है। गाँव के उपद्रवी, अज्ञानी बालक बाह्यभित्ति की मूर्तियो को कई प्रकार से क्षति

पहुँचाते रहते हैं।

सन् 1980 में, जीर्णोद्धार का काम करते समय, मन्दिर की उत्तरी दीवार में एक प्राचीन अभिलेख प्राप्त हुआ है। कन्नड का यह शिलालेख अब तक अज्ञात था। अभिलेख मे लक्कनन्दिदेव, कनकसेन, पण्डित मचैयन हेगड़े और गाँव के समस्त गावडो के द्वारा इस शान्तिनाथ जिनालय को दान दिये जाने का उल्लेख है। अभिलेख के द्वितीय भाग से होयसल कालीन कांस्य-प्रतिमाओ की अवस्थिति ज्ञात होती है। अभिलेख मे कहा गया है कि आरसीकेरे के बोमीशेट्टी के द्वारा पन्द्रह कास्य पक्तियो और चार ताम्रपक्तियो वाला एक तोरण, पाँच मणि-मय दीपक और एक दर्पण शान्ति-जिनालय को प्रदान किया गया था।

जिननाथपुर के इस मन्दिर की व्यवस्था अभी कर्नाटक शासन के पुरातत्त्व विभाग द्वारा होती है। यह व्यवस्था एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी के अन्तर्गत आने पर ही इस स्थान का वास्तविक विकास हो सकता है और मन्दिर को पूरी सुरक्षा मिल सकती है। चन्द्र-गिरि से इस मन्दिर तक सीधा मार्ग बनवा देने से भी इस कलापूर्ण मन्दिर का प्रचार-प्रसार होने लगेगा।

गोमटस्वामी का परकोटा और अन्य रचनाएँ

बारहवी शताब्दी ईस्वी मे गगराज ने ही गोमटेश्वर के चारो ओर परकोटे का निर्माण कराया। मूर्ति के दोनो ओर शासन-देवता प्रतिमाएँ, और सामने मण्डप मे कूष्माण्डिनी देवी की मूर्ति भी उसी काल मे स्थापित की गयी। धीरे-धीरे वहाँ चौबीसी प्रतिमाओ, दिक्पाल मूर्तियो, तोरण-द्वारो और सीढियो आदि का निर्माण हुआ। गगराज की पत्नी लक्ष्मीमती ने 1122 ई० मे यही समाधिमरण किया। गंगराज ने पत्नी की स्मृति मे वहाँ एक निषधिका का निर्माण भी कराया।

क्षेत्र को राजकीय सरक्षण

इस श्रवणबेलगोल की पावनता का प्रभाव ही मानना पडेगा कि जैन और जैनेतर जन-समुदाय की श्रद्धा और भक्ति के साथ-साथ, सदैव उसे राजकीय सरक्षण भी प्राप्त रहा है। तलकाड के गगनरेशो की अनेक पीढियो द्वारा प्रदत्त बहुविध योगदान के लिए इस क्षेत्र का इतिहास सर्वाधिक कृतज्ञ है। हलेबीड के होयसलों के संरक्षण मे क्षेत्र का पश्चात्वर्ती उत्कर्ष हुआ। चालुक्य राजाओ के प्रमुख अधिकारी प्रायः जैन रहे, इस कारण राजनैतिक उथल-पुथल के बावजूद श्रवणबेलगोल की स्थिति यथावत् सुरक्षित बनी रही। इसी प्रकार मैसूर का वाडियार राजवश भी, अपनी स्थापना काल से ही, गोमटस्वामी का भक्त और श्रवणबेलगोल का संरक्षक रहा है।

सोलहवी शताब्दी के अन्त मे अनेक कारणो से क्षेत्र की स्थिति खराब हो गयी। सन् 1611 में मैसूर महाराजा कृष्णराजा वाडियार (प्रथम) ने क्षेत्र की व्यवस्था के लिए राज्य कोष से आर्थिक अनुदान देना प्रारम्भ किया, परन्तु उससे परिस्थिति मे सुधार नही हुआ। सन् 1630 ई० के आस-पास क्षेत्र को गहरे आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। पूरा क्षेत्र सूदखोर महाजनों के पास बन्धक हो गया। उन्ही दिनो चन्नपट्टन के तैलगुराजा जगदेव की द्वेष बुद्धि

के कारण, मठ के समक्ष अनेक बाधाएँ आने लगी। निरीह भट्टारक चारुकीर्ति पण्डित देव इन प्रतिकूल परिस्थितियो का सामना नही कर पाये, और मठ छोडकर, भट्टातकीपुर के भैरवराज के आश्रय मे, गेरुसोप्पे मे रहने लगे। सम्भवतः इसी विषमकाल में षट्खण्डागम आदि सिद्धान्त-ग्रन्थो की दुर्लभ ताडपत्रीय प्रतियाँ यहाँ से ले जाकर मूडबिद्री के भण्डार में स्थापित की गयी होंगी।

सन् 1634 ई० मे महाराज चामराज वाडियार ने स्वय श्रवणबेलगोल आकर गोमटस्वामी का दर्शन किया। क्षेत्र की दशा पर अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए भट्टारकजी को वापस बुलाकर मठ की पुन स्थापना करायी। राजा ने राजकोष से ऋण की राशि का भुगतान करके क्षेत्र को मुक्त कराने का आदेश दिया, पर राजकोप के भय से सभी महाजनो ने स्वतः क्षेत्र को ऋण-मुक्त करके, गोमटेश्वर भगवान् की साक्षी मे सारे ऋण-पत्रक भट्टारकजी को सौंप दिये। मैसूर नरेश ने देव-स्थानो पर ऐसे ऋण और ब्याज के लेन-देन को निन्द्य, अवैध और पाप का काम बताते हुए एक अभिलेख मे यह आशय घोषित किया कि "भविष्य मे जो ऐसा करेगा वह काशी और रामेश्वर तीर्थों पर, सहस्र गौओ और ब्राह्मणो की हत्या के पाप का भागी होगा।"

दुग्धाभिषेक की परम्परा

प्रतिष्ठा के अवसर पर गोमटेश भगवान् बाहुबली के दुग्धाभिषेक के समय गुल्लिका अज्जी का जो अतिशय हुआ, उसने भगवान् के दुग्धाभिषेक का महत्व जनमानस मे स्थापित हो गया। दूर-दूर से आकर बडी आस्था भक्ति के साथ, भक्त जन गोमटेश के चरणो का दुग्धाभिषेक करने लगे। सैकडो लोगो ने पाद-पूजा और अभिषेक की स्थायी व्यवस्था के लिए मठ को भूमि, स्वर्ण और अन्य मूल्यवान वस्तुओ का दान दिया। अनेक शिलालेखो मे ऐसे दान के उल्लेख यहाँ प्राप्त हुए हैं।

मस्तकाभिषेक : एक प्राचीन महोत्सव

नित्य चरणाभिषेक की तरह गोमटेश के नैमित्तिक मस्तकाभिषेक का भी बडा पुण्य माना गया। पारम्परिक अनुश्रुतियो के अतिरिक्त, अनेक शिलालेखो मे भी, समय-समय पर सम्पन्न हुए मस्तकाभिषेकों का उल्लेख प्राप्त होता है। सबसे प्राचीन उल्लेख 31 जनवरी सन् 1398 ई० को पण्डिताचार्य द्वारा कराये गये महामस्तकाभिषेक का उपलब्ध हुआ है। इसी लेख मे कहा गया है कि इसके पूर्व भी पण्डिताचार्य द्वारा गोमटस्वामी के सात मस्तकाभिषेक सम्पन्न कराये जा चुके थे। इन उल्लेखो पर से यह मान्यता युक्ति-सगत लगती है कि 'पण्डितार्य' या 'पण्डिताचार्य' किसी व्यक्ति का नाम नही था, वरन् यह जैनमठ के प्रबन्धक या मठाधीश का पद नाम रहा होगा। सन् 1398 के इस अभिलेख के पश्चात् प्रत्येक शताब्दी मे सम्पन्न हुए अनेक मस्तकाभिषेक श्रवणबेलगोल के अभिलेखो मे अंकित हैं। ऐसा लगता है कि प्रारम्भ से ही यहाँ, विशेष अवसरों पर मस्तकाभिषेक पूजा की परम्परा प्रारम्भ हो गयी और कुछ समय बाद उसे प्रति बारहवें वर्ष के महोत्सव का रूप दे दिया गया।

शृंखला अभिषेकों की

सन् 1398 के मस्तकाभिषेक के प्राचीनतम उल्लेख के उपरान्त, सन् 1612 ई० के एक अभिलेख मे, कवि पचबाण ने शान्ति वर्णी द्वारा सम्पन्न अभिषेक का उल्लेख किया है। सन् 1659 ई० मे मैसूर नरेश दोड्ड देवराज वाडियार के द्वारा सम्पन्न महामस्तकाभिषेक का शिलालेख प्राप्त होता है। सन् 1672 ई० मे उन्होंने पुन: अभिषेक कराया और मठ को एक ग्राम दान मे दिया। तीन वर्ष पश्चात् 1675 ई० मे मैसूर नरेश चिक्क देवराज वाडियार द्वारा मस्तकाभिषेक के साथ कल्याणी सरोवर के जीर्णोद्धार का भी उल्लेख मिलता है। सन् 1677 ई० मे मैसूर राज्य के महामत्री विशालाक्ष ने महामस्तकाभिषेक कराया। उस समय के प्रत्यक्षदर्शी 'अनन्त कवि' ने इस महोत्सव का सुन्दर वर्णन किया है। सन् 1699 ई० मे देवराज वाडियर ने अर्हनहल्लि, होसहल्लि, राजनहल्लि, उत्तनहल्लि, जिन्ननहल्लि, बस्तिय ग्राम और जिननाथपुरम् ये सात ग्राम जैनमठ को दान मे प्रदान किये। कल्याणी सरोवर के समीप स्थित दानशाला को भी उन्होने एक ग्राम 'कबालु' दान मे दिया।

इन उल्लेखो के उपरान्त एक सौ वर्ष तक, पूरी अठारहवी शताब्दी मे जो मस्तकाभिषेक सम्पन्न हुए, उनका कोई लिखित प्रमाण हमे उपलब्ध नही है। परन्तु यह मानना चाहिए कि प्रति बारहवें वर्ष या उसके आस-पास, मस्तकाभिषेक आयोजित करने की जो परम्परा सत्रहवी शताब्दी मे विकसित हो चुकी थी, अठारहवी शताब्दी मे, किसी न किसी रूप मे, उसका पालन अवश्य किया गया होगा। इस शताब्दी मे हुए मस्तकाभिषेक का एकमात्र उल्लेख, शताब्दी के अन्तिम वर्ष का प्राप्त होता है। सन् 1800 ई० मे मैसूर महाराजा मुम्मदी कृष्णराज वाडियार (तृतीय) के द्वारा अभिषेक कराये जाने का वर्णन शिलालेख मे उपलब्ध है।

इन्ही कृष्णराज वाडियार तृतीय ने पच्चीस वर्ष के बाद, 1825 ई० मे पुन: जो मस्तकाभिषेक कराया उसका वर्णन पण्डित शान्तिराज ने एक अन्य शिलालेख मे किया है। यह भी उल्लेख मिला है कि वैसा ही एक और मस्तकाभिषेक दो वर्ष बाद पुन: 1827 ई० मे भी सम्पन्न हुआ।

मैसूर कमीशन के कैप्टन जे. एस.एफ. मैकेन्जी के एक आलेख के अनुसार, बीस वर्षो मे एक बार गोमटस्वामी का मस्तकाभिषेक नियम से होता था। कैप्टन मैकेन्जी जून 1871 मे सम्पन्न हुए मस्तकाभिषेक का प्रत्यक्षदर्शी लेखक था। इस मेले के वर्णन मे बाहुबली मूर्ति के अग-प्रत्यगो की नाप भी लिखी मिलती है।

समय-समय पर होनेवाले इन महामस्तकाभिषेको के अवसरो पर, प्राय हर बार बहुत दूर-दूर से आये हुए दिगम्बर जैनों के, अपने समय के विशाल मेले श्रवणबेलगोल मे लगते रहे हैं। उत्तर भारत के धर्मानुयायिओ और आचार्यों मुनिराजो को मेले के अवसर पर निमन्त्रित करना, और साग्रह उन्हे क्षेत्र पर लाना, एक परम्परा ही बन गई थी। इन्ही मेलो के बहाने देश की सारी दिगम्बर जैन समाज, स्त्री और पुरुष, बाल और वृद्ध, अमीर और गरीब तथा साधु और गृहस्थ, दस-बीस वर्ष मे एक बार इस जगह एकत्र होते थे और कई सप्ताह तक वहाँ रहते थे। इस प्रकार श्रवणबेलगोल के इन समारोहो ने, उत्तर और दक्षिण भारत की समाज और संस्कृति के मिलन के लिए, सेतु का काम किया है।

समाज में सामाजिक चेतना का उदय होने पर, धीरे-धीरे इन मेलों में धर्मप्रचार, तीर्थों की रक्षा और सामाजिक संगठन आदि आवश्यक विषयों पर विचार-विमर्श होने लगे। फलस्वरूप अनेक महान् और फलवती योजनाओ का अंकुरारोपण श्रवणबेलगोल के पावन प्रांगण में ही हुआ।

सन् 1871 ई० के बाद अब तक बड़े पैमाने पर सात मस्तकाभिषेक आयोजित हुए हैं। उनकी तिथिवार तालिका इस प्रकार है—

1. 14 मार्च 1887, कोल्हापुर के भट्टारक श्री लक्ष्मीसेन स्वामीजी द्वारा।
2. 30 मार्च 1910, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के द्वारा।
3. 15 मार्च 1925, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के द्वारा।
4. 26 फरवरी 1940, मैसूर राज्य शासन के तत्त्वावधान मे कमेटी बनाकर।
5. 5 मार्च 1953, मैसूर राज्य शासन के तत्त्वावधान मे कमेटी बनाकर।
6. 30 मार्च 1967, कर्नाटक शासन और एस. डी. जे. एस. आई. मैनेजिंग कमेटी की मिली-जुली व्यवस्था के अन्तर्गत।
7. 22 फरवरी 1981, एस डी जे. एम आई मैनेजिंग कमेटी के तत्त्वावधान मे, अखिल भारतीय 'भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति' के द्वारा आयोजित।

1981 के उस अनुपम और विशालतम आयोजन का वर्णन करने के पहले प्रस्तुत है उपर्युक्त छह मस्तकाभिषेको का सक्षिप्त परिचय—

1887 का महामस्तकाभिषेक

पिछली शताब्दी के अन्तिम चरण मे जैनमठ कोल्हापुर-बेलगाम सस्थान के पचपन वर्षीय मठाधिपति, जिनधर्माचार्य, स्वस्तिश्री लक्ष्मीसेन भट्टारकपट्टाचार्य अनेक मन्त्र-तन्त्रों के ज्ञाता और अपने समय के बड़े प्रभावक पट्टाचार्य थे। शक सवत् 1808 मे फाल्गुन कृष्णा पचमी दिनाक 14 मार्च 1887 ई. को उन्होने अपनी ओर से श्रवणबेलगोल मे गोमटेश्वर बाहुबली का मस्तकाभिषेक बडे उत्साह के साथ सम्पन्न कराया था। इस उत्साह का वर्णन एक प्रत्यक्षदर्शी अजैन लेखक विट्ठल अप्पाजी मडुरकर ने उसी समय लिपिबद्ध किया जो सन् 1891 मे कोल्हापुर के ज्ञानसागर प्रेस से मुद्रित हुआ। इसकी प्रति कोल्हापुर के वर्तमान भट्टारक लक्ष्मीसेन स्वामीजी की कृपा से मुझे उपलब्ध हुई। उसी के आधार पर यह सक्षिप्त वर्णन लिखा गया है। श्री मडुरकर के अनुसार वे कोल्हापुर भट्टारकजी के साथ श्रवणबेलगोल आये और भण्डार बस्ती मे ठहरकर उन्होने उत्सव को जैसा देखा, वैसा ही वर्णन अपने आलेख मे किया है।

उस समय श्रवणबेलगोल मठ के भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी की आयु पैंतालीस वर्ष की थी। वे मृदु स्वभावी, ज्ञानवान, श्रमशील और निष्ठावान सन्त थे। कन्नड़ भाषी होने पर भी वे तमिल, तेलुगु और सस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे। उस समय ग्राम में पूजा-अर्चना करनेवाले

अर्चकों के बत्तीस घर थे। मठ के संचालन के लिए स्वामीजी को मैसूर राज्य से सात हज़ार रुपये का वार्षिक अनुदान प्राप्त होता था। उन्हें जब लक्ष्मीसेनजी के द्वारा मस्तकाभिषेक कराने का मन्तव्य ज्ञात हुआ, तब उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया, और उन्हें आदरपूर्वक आमन्त्रित किया।

भट्टारक लक्ष्मीसेनजी उस महोत्सव को पूरी दिगम्बर जैन समाज के उत्सव के रूप में मानना चाहते थे। अनेक स्थानों पर जाकर इसके लिए उन्होंने समाज को प्रेरणा देकर राशि एकत्र की। कन्नड़, मराठी, गुजराती और हिन्दी मे पत्रिकाएं छपाकर सभी प्रदेशो में दूर-दूर तक निमन्त्रण भेजे, और महीनों पूर्व अपने कार्यकर्ता श्रवणबेलगोल भेजकर अभिषेक की तैयारियाँ प्रारम्भ करा दी। राज्य की अनुमति लेकर लगभग सात हज़ार की लागत से अभिषेक के लिए लकड़ी का मंच बनवाया गया। रंगीन कपड़ों और चित्रो से इसकी सज्जा की गयी।

अभिषेक के पन्द्रह दिन पूर्व बसंत पंचमी को ही लक्ष्मीसेनजी श्रवणबेलगोल पहुँचने वाले थे। परन्तु मार्ग में उन्हें दो दिन अधिक लगे। सप्तमी को आते ही उन्हें ग्राम के बाहर बगीचे मे ठहराया गया। सूरत के भट्टारक धर्मकीर्तिजी पहले से वहाँ ठहरे थे। मधुगिरि के भट्टारक लक्ष्मीसेनजी भी उसी समय पधारे। श्रवणबेलगोल के स्वामीजी उन अतिथियो की अगवानी के लिए आये। पण्डित ब्रह्मसूरि शास्त्री ने मठ की ओर से उन सबका स्वागत और अभिनन्दन किया। चारो भट्टारकों की मातृभाषा अलग-अलग थी, अतः उनमे संस्कृत में परस्पर कुशल-वार्ता हुई। साढ़े दस बजे चारो भट्टारको की पालकी गाजे-बाजे के साथ, शोभा-यात्रा के रूप में मठ तक लायी गयी। पूरा गाँव बन्दनवारो और पुष्प मालाओ से सजाया गया था। जगह-जगह महिलाएँ कलश-आरती लेकर खड़ी थीं। कुछ समय बाद लातूर के भट्टारक विशालकीर्तिजी के आगमन से समारोह मे पाँच भट्टारको की उपस्थिति हो गयी।

उसी दिन, माघ शुक्ला सप्तमी को ही, नान्दिमगल, ध्वजारोहण और इन्द्र प्रतिष्ठा के साथ उत्सव के अनुष्ठान प्रारम्भ हो गये। नवमी को सुबह सभी भट्टारको ने एक साथ पर्वत पर जाकर गोमटस्वामी की वन्दना की। अपराह्न मे श्रीजी की पालकी निकाली गयी और रात्रि को दीपोत्सव के साथ आतिशबाजी के प्रदर्शन हुए। दसमी को कल्याणी सरोवर से जलयात्रा का जुलूस निकला। एकादशी से प्रतिपदा तक पंचकल्याणक महोत्सव हुआ। प्रतिदिन सभी मन्दिरों मे आरती और कीर्तन में, तथा बाहुबली की पाद-पूजा में, खूब भीड होती थी।

मेले मे दूर-दूर से यात्री, स्त्री-पुरुष और बालक एकत्र हुए थे। अधिकांश यात्री बैलगाडियों और घोडागाडियों से आये थे। एक महीने तक यह मेला चलता रहा। नाना प्रकार की वस्तुओ का विनिमय करनेवाली सैकडो दूकानें बाहर से आयी थी। मेले में अनेक विद्वान, सन्त, मठाधीश और राजपुरुष एकत्र हुए थे। मयूरपिच्छी धारण करने वाले दिगम्बर साधु तथा केसरिया वस्त्र-वाले क्षुल्लक, त्यागी तो थे ही, अन्य साधु सन्त भी बाहुबली का दर्शन करते हुए दिखाई दे जाते थे। देश के सभी भागों से भिन्न-भिन्न रूप-रंग और रहन-सहन वाले हज़ारों व्यक्तियों का समूह एक साथ अनेक दिनों तक श्रवणबेलगोल में ठहरा रहा।

अभिषेक के लिए पचमी को दोपहर साढ़े बारह बजे भट्टारक स्वामीजी पर्वत पर पहुँच गये। दोनों पर्वतों पर दूर-दूर तक अभिषेक देखने के लिए लोग बैठे हुए थे। विन्ध्यगिरि पर जाने के लिए लोगों को अनुज्ञापत्र दिये गये थे। चन्द्रगिरि पर भी बहुत भीड़ थी। कल्याणी सरोवर

से, पवित्र जल के 1008 कलश महिलाओं द्वारा जुलूस बनाकर ऊपर पहुँचाये गये। इस जल यात्रा मे हर प्रदेश की महिलाएँ थी। उनके रंग-बिरंगे, तरह-तरह के वस्त्रालंकारो से, तथा भिन्न-भिन्न भाषाओ के कीर्तन-गीतों से जुलूस की छटा मनोहारी लग रही थी। हासन के जिला दण्डाधिकारी और पुलिस के सहायक आयुक्त स्वतः व्यवस्था की देख-रेख कर रहे थे।

दोपहर एक बजे महामस्तकाभिषेक प्रारम्भ हुआ। बाहुबली स्वामी के आँगन मे धान्य बिछाकर उस पर 1008 कलश सजाकर रखे गये थे। मिट्टी के ये कलश रंग-बिरंगे थे। उन पर आम्र-पत्र और श्रीफल रखकर उन्हे सजाया गया था। भट्टारक लक्ष्मीसेनजी का सकेत होते ही, जैसे किसी मन्त्र शक्ति से, क्षणभर मे ये सारे कलश हाथों-हाथ ऊपर मंच पर पहुँच गये। सिद्धोदक के 1008 कलश पहले ढारे गये, फिर दूध का अभिषेक प्रारम्भ हुआ। दुग्ध-कलश भी 1008 थे। अभिषेक के मंच से दूध की लगभग पच्चीस धाराएं एक साथ भगवान् के ऊपर गिरती थी। यह क्रम लगातार पौन घण्टे तक चलता रहा। इसके बाद दही के तीन सौ कलश ढारे गये। बाद मे तीन खण्डी गुड, दो खण्डी शक्कर, उतना ही खसखस दाना और आधा-आधा खण्डी चने तथा मूग की दाल से गोमटस्वामी का अभिषेक हुआ। खण्डी लगभग ढ़ाई मन की मानी जाती थी। इन पदार्थों के उपरान्त तीन कलशा घी, छह मन चावल और पचास कलशा चन्दन का केसरिया घोल भगवान् पर बरसाया गया। केसरिया घोल मे कश्मीरी केसर आदि कई मँहगी वस्तुओ का समावेश था। इस घोल पर सात सौ रुपया खर्च हुआ था। बाद मे हज़ारो केले और सन्तरे तथा बहुत सा अरगजे का चूर्ण प्रतिमा पर बरसाया गया, फिर दो मन हल्दी के घोल से अभिषेक किया गया। छः सौ रुपयो मे खरीदे गये चाँदी और सोने के फूलो से पुष्प-वृष्टि सम्पन्न हुई। इन फूलों मे नौ प्रकार के रत्न भी सम्मिलित थे। सबमे अन्त मे चाँदी के दो सौ नगद रुपये और पाँच सौ रुपयो के छोटे सिक्को की वर्षा करके, मगल आरती पूर्वक, यह अभिषेक सम्पन्न हुआ। अभिषेक की इस बहुरगी सामग्री से आँगन का चौक घुटनो तक भर गया था। अर्चक पुजारियो को बड़ी देर तक उसी मे खड़े रहकर पूजा-आरती करनी पड़ी।

अभिषेक के समय एकत्रित जन समूह बीच-बीच मे उत्साह से गोमटस्वामी की जयकार करता था। उसे सुनकर चन्द्रगिरि पर से दूने उत्साह के साथ जय बोली जाती थी। यह स्पर्धा पूरे समय चलती रही। एक बजे दोपहर प्रारम्भ हुआ अभिषेक सूर्यास्त के साथ ही समाप्त हुआ। लोगों को पर्वत से उतरते समय रात हो गयी थी। मार्ग मे कई जगह मशालें जलाकर प्रकाश किया गया। उत्सव की निर्विघ्न समाप्ति की प्रसन्नता मे मठ के सामने घण्टो तक अग्निबाण, गरनाल, चन्द्रज्योति तथा कई प्रकार की कलात्मक सामग्री से आतिशबाजी जलायी गयी। कई लोगों ने खुशाल तोपें चलाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

मैसूर नरेश इस महोत्सव मे नही पहुँच सके थे। उनकी ओर से गोमटेश्वर के चरणों मे भेंट अर्पित की गयी। लक्ष्मीसेन स्वामीजी ने हासन के कलेक्टर श्री टी० आनन्दराव के द्वारा महाराजा के लिए अभिषेक का गन्धोदक, एक बहुमूल्य शाल, जरी के कामवाला एक पीताम्बर और नागपुरी धोती का एक जोड़ा, प्रसाद के रूप मे मैसूर पहुँचाया।

सोलापुर की एक धर्मात्मा महिला श्रीमती रत्नाबाई ने पाँच हज़ार रुपया अर्पित करके दुग्ध अभिषेक का अवसर प्राप्त किया। अभिषेक के बाद उन्होंने गरीबो को बहुत-सा दान भी

दिया। सोलापुर के ही रावजी कस्तूरचन्द गूजर ने भी पर्याप्त राशि देकर अभिषेक किया। बाद के दिनों मे सोलापुर, फलटण और दक्षिण महाराष्ट्र आदि के लोगों ने अलग-अलग दिन अपनी ओर से पूजा और मस्तकाभिषेक कराये। इस प्रकार अभिषेकों का यह क्रम लगभग पन्द्रह दिनों तक चलता रहा। श्री मडुरकर के अनुमान के अनुसार इस उत्सव में लगभग पचास हज़ार जनता एकत्र हुई तथा लक्ष्मीसेन भट्टारकजी ने साठ-सत्तर हज़ार रुपया खर्च किया। उन दिनो सचमुच यह एक बडी राशि थी।

उन दिनो 'हार्वेस्ट-फील्ड' नाम की एक अंग्रेजी पत्रिका प्रकाशित होती थी। इस पत्रिका में मई 1887 के अंक में इस मस्तकाभिषेक का विवरण प्रकाशित हुआ था। इस विवरण से श्री मडुरकर के उपर्युक्त विवरण की प्रायः पुष्टि ही होती है। 'हार्वेस्ट-फील्ड' के अनुसार इस महोत्सव पर भट्टारक स्वामीजी ने लगभग तीस हज़ार रुपया व्यय किया था और 14 मार्च 1887 को मुख्य अभिषेक के समय श्रवणबेलगोल में बीस हज़ार से अधिक लोग उपस्थित थे।

1910 का मस्तकाभिषेक

सन् 1910 ई० का महामस्तकाभिषेक बडी शान-बान से सम्पन्न हुआ। यहाँ स्मरणीय है कि पहले महामस्तकाभिषेक का आयोजन मैसूर राज्य की ओर से होता था। सन् 1887 में कोल्हापुर सस्थान मठ के भट्टारक पट्टाचार्य लक्ष्मीसेन स्वामीजी ने अभिषेक कराया था। उसके बाद बीस-बाईस वर्ष तक अभिषेक का योग नही लगा। सन् 1910 मे भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी यद्यपि केवल आठ वर्ष की छोटी सी संस्था थी, परन्तु उसके उद्देश्य महान् थे। दानवीर सेठ माणिकचन्द जी जवेरी के मन मे गोमटेश्वर के प्रति अपार भक्ति थी। तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष और मन्त्री दोनों पदो का भार वे प्रारम्भ से सम्हाल रहे थे। परन्तु अपने ही सामने इस सस्था की बागडोर सुयोग्य हाथो मे सौंपकर वे निश्चिन्त हो जाना चाहते थे। इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उन्होंने भगवान् गोमटेश्वर के महामस्तकाभिषेक को निमित्त बनाया।

कुछ समय पूर्व सेठ साहब के ही प्रयत्नों से विन्ध्यगिरि पर जाने के लिए सीढ़ियों का निर्माण हुआ था। सन् 1910 मे उन्होने तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्त्वावधान मे, समस्त दिगम्बर जैन समाज का सहयोग लेकर, महामस्तकाभिषेक का सफल आयोजन किया। इस मेले मे लगभग तीस हज़ार दिगम्बर जैन जनता एकत्र हुई थी। सेठ माणिकचन्दजी ने इसी अवसर पर भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी का अधिवेशन किया। उन्होंने तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष का पद स्वतः रिक्त करके, अपनी जगह सर सेठ हुकुमचन्दजी को आग्रहपूर्वक अध्यक्ष बनाया। श्रवणबेलगोल तीर्थक्षेत्र की व्यवस्था के लिए एक पृथक् कमेटी का निर्माण भी इस अवसर पर किया गया। यद्यपि सर सेठ हुकुमचन्दजी ने अस्थायी रूप से तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षता ग्रहण की थी, परन्तु सन् 1913 के कानपुर अधिवेशन में उन्हें विधिवत् अध्यक्ष चुना गया और 26-2-59 तक, अपने जीवन पर्यन्त उन्होने उस पद को सुशोभित किया।

इसी मेले पर सर सेठ हुकुमचन्दजी की ही अध्यक्षता मे, श्रवणबेलगोल में प्रथम बार, दिगम्बर जैन महासभा का अधिवेशन सम्पन्न हुआ। सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जवेरी और

ब्र० शीतलप्रसादजी की विशेष प्रेरणा से, समाज उत्थान और शिक्षा प्रचार की अनेक योजनाओं पर इस मेले में विचार किया गया। जैन विद्या के पठन-पाठन के लिए जगह-जगह जैन विद्यालय और छात्रावास स्थापित करने का संकल्प पारित किया गया। इसी संकल्प के फलस्वरूप कालान्तर में पूना, सांगली, बेलगाँव, अहमदाबाद, इलाहाबाद और मेरठ तक जैन विद्यालयों और छात्रावासों की स्थापना हुई। ब्रह्मचारीजी के सत्प्रयत्नों से बम्बई, सोलापुर, सूरत, कोल्हापुर और हुबली आदि अनेक स्थानों पर पहले ही इस तरह के शिक्षा संस्थान अस्तित्व मे आ चुके थे।

मुख्य अभिषेक 30 मार्च 1910 को सम्पन्न हुआ। मैसूर नरेश कृष्णराजेन्द्र वाडियार मेले में पधारे और उन्होंने गोमटेश्वर की पूजा मे भक्तिपूर्वक भाग लिया। अभिषेक की बोलियो से रु० 22,500-00 की राशि प्राप्त हुई, जबकि कमेटी ने पूरे मेले मे केवल रु० 2250-00 खर्च किये। आमदनी की राशि कमेटी के पास 'गोमटस्वामी महा-मस्तकाभिषेक फण्ड' मे जमा कर दी गयी।

30-3-1910 को अभिषेक प्रारम्भ होने पर, पत्रकार श्री जी० एम० एडवर्ड्स ने अभिषेक का समाचार एक कबूतर के पाँव में बाँधकर कबूतर को आकाश मे छोड दिया। यह प्रशिक्षित कबूतर पौने चार घटे मे लगभग तीन सौ मील की दूरी तय करके मद्रास मे 'मद्रास-मेल' अखबार के कार्यालय मे पहुँच गया। कबूतर से प्राप्त समाचार उसी सध्या 'मद्रास-मेल' में प्रकाशित किया गया। इस प्रकार यह महा-मस्तकाभिषेक का सर्वप्रथम 'ऐरियल न्यूज' सम्प्रेषण था।

1925 का मस्तकाभिषेक

सेठ माणिकचन्दजी जवेरी ने प्रेरणा देकर मैसूर के श्री वर्धमानैयाजी को श्रवणबेलगोल क्षेत्र की व्यवस्था में सक्रिय किया था। सन् 1914 में जवेरीजी का निधन हो जाने के बाद भी वर्धमानैयाजी की रुचि क्षेत्र के प्रति बराबर बनी रही। उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप पन्द्रह वर्षों के अन्तराल से तीर्थक्षेत्र कमेटी का सहयोग लेकर सन् 1925 में पुनः महा-मस्तकाभिषेक आयोजित किया गया।

उस समय श्री नेमिसागरजी वर्णी जैनमठ की आसन्दी पर विराजमान थे। वर्णीजी जैन सिद्धान्त के पारगामी और प्रभावक भट्टारक थे। अपनी व्यवहार कुशलता से उन्होने क्षेत्र के शुभ-चिन्तको का बडा समुदाय आस-पास के नगरो में तैयार कर लिया था। तीर्थक्षेत्र कमेटी के साथ भी उनका सहयोगात्मक व्यवहार था। उनके कार्यकाल में श्रवणबेलगोल की व्यवस्था में कई सुधार हुए। अनेक नयी परम्पराएँ प्रारम्भ हुईं। उन्होंने बड़े उत्साहपूर्वक महामस्तकाभिषेक का आयोजन कराया।

सन् 1925 के इस मस्तकाभिषेक समारोह में भी समाज की अच्छी उपस्थिति रही। भट्टारक स्वामीजी की अध्यक्षता मे महोत्सव कमेटी बनायी गयी। मन्त्रीपद का भार श्री एम० एल० वर्धमानैया मैसूर ने स्वयं ग्रहण किया। श्री वर्धमानैया ने गोमटेश्वर के महा-मस्तकाभिषेक को समस्त भारत की दिगम्बर जैन समाज का महोत्सव बनाने का संकल्प लिया। यह बड़ी सूझ-बूझ

का काम था। उन्होंने स्वयं अनेक नगरो मे पहुचकर समाज के सामने अपना निवेदन किया। उनकी प्रेरणा से दूर-दूर की समाज ने इस महोत्सव के बहाने दक्षिण-यात्रा के कार्यक्रम बनाये। इस प्रकार इतिहास मे पहली बार, महा-मस्तकाभिषेक के आयोजन को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान हुआ।

मुख्य अभिषेक 15 मार्च 1925 को सम्पन्न हुआ। परन्तु अभिषेक का क्रम कई दिनो तक चलता रहा। लगभग दो सप्ताह तक श्रवणबेलगोल मे मेला लगा रहा। मैसूर राज्य की ओर से परम्परागत चढ़ावा तथा आर्थिक सहयोग मठ को प्राप्त हुआ। समाज की अनेक छोटी-बड़ी संस्थाओ के अधिवेशन और सम्मेलन आयोजित हुए। व्यवस्था मे कुछ स्वयंसेवी सस्थाओ का भी सहयोग रहा। कोई बीमारी या बडी दुर्घटना मेले मे नही हुई। अधिकाश यात्री बैलगाडियो से आये।

सदैव की तरह इस बार भी मेले मे अनेक दिगम्बर जैन साधुओ का पदार्पण हुआ। चारित्र-चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागरजी महाराज ने इसी वर्ष आचार्य पद ग्रहण किया था। वे अपने सघ सहित इस मस्तकाभिषेक के अवसर पर पधारे और कई दिनों तक श्रवणबेलगोल मे रहे। दीक्षा कल्याणक के समय उन्होंने अपने सघस्थ क्षुल्लक श्री देवसेन गुरु को दिगम्बरी दीक्षा देकर मुनि पद प्रदान किया।

1940 का महामस्तकाभिषेक

इस शताब्दी का चौथा दशक बीतते-बीतते जैनमठ के भट्टारक नेमिसागर वर्णीजी वृद्ध और अशक्त हो चले थे। उनमे लौकिक कार्यों के प्रति अत्यन्त उदासीनता का भाव आ गया था। भट्टारक पद का त्याग करके दीक्षा लेने का उन्होने सकल्प कर लिया था। क्षेत्र के प्रबन्ध मे भट्टारक की उदासीनता से उत्पन्न अनुशासन हीनता के कारण क्षेत्र मे राज्य का हस्तक्षेप बढ़ने लगा था। इन परिस्थितियों मे 1940 मे मैसूर राज्य के प्रबन्ध मे ही महामस्तकाभिषेक का आयोजन किया गया।

इस महोत्सव के लिए तीन समितियाँ बनाई गयी। प्रमुख समिति में देश के ग्यारह प्रतिष्ठित जैन सदस्यो के साथ भट्टारक स्वामीजी को अध्यक्ष बनाया गया। मैसूर राज्य के उन्नीस जैनो और चार शासकीय अधिकारियो को शामिल करके डिप्टी कमिश्नर हासन की अध्यक्षता मे शासकीय समिति बनायी गयी। बाद मे उत्तर भारत से तीन और सदस्य इस समिति मे लिये गये। समाज की ओर से एक स्वागत समिति का गठन अलग से किया गया। परन्तु इन समितियो का कोई वास्तविक महत्त्व नही था। सारा नियन्त्रण अधिकारियो के हाथो मे था। समिति ने रु० 50,000.00 की आय और रु० 45,045.00 के व्यय का बजट शासन को प्रस्तावित किया। इस बजट मे अभिषेक के लिए लोहे के पाइप का मंच बनाने का प्रावधान था। शासन ने लोहे का मंच अनावश्यक मानकर, पहले की तरह लकड़ी का मच ही स्वीकृत किया। प्रस्तावित बजट में एक तिहाई कटौती करके, केवल रु० 30,045.00की राशि खर्च के लिए स्वीकार की गयी। यह बंदिश भी लगाई गयी कि मंच के निर्माण मे रु० 5000.00 से

अधिक खर्च न किया जाय। भट्टारक स्वामीजी को उत्सव की तैयारियों के लिए, पाँच प्रतिशत ब्याज पर, दस हज़ार रुपये तक अग्रिम प्राप्त करने की सुविधा प्रदान की गयी।

पर्वत पर बिजली का प्रकाश इस मेले की विशेषता रही। मैसूर नरेश ने पूरे नगर में और पर्वत पर बिजली फिटिंग करा दी थी। हासन के श्रृंगेरीपुट्ट सामैया ने बिजली लगाने के लिए पाँच हज़ार का दान दिया जिससे प्रथम बार गोमटेश्वर मूर्ति के पास फ्लड लाइट और चौबीसी मन्दिर में प्रकाश की व्यवस्था हो गयी।

एक हज़ार आठ कलश

अभिषेक के लिए स्वर्ण के 51, रजत के 300, जर्मन सिल्वर के 300, और पीतल के 357, इस प्रकार कुल 1008 कलश उपलब्ध कराये गये। उनमें से स्वर्ण के 51, रजत के 129, जर्मन सिल्वर के 88, और पीतल के 278, इस तरह कुल मिलाकर 546 कलश ही बेचे जा सके। स्वर्ण कलशो के लिए कोई राशि निर्धारित नही थी, उनके लिए बोलियाँ लगायी गयी। पहला कलश रु० 8001.00 मे श्री केवलचन्द्र उग्रचन्द्र, फलटणवालो ने लिया। बारामती के ज्योतिचन्द्र बालचन्द्र ने दूसरा कलश रु० 3500.00 मे लिया। यही दो बडी राशियाँ थी। शेष कलश, अलग-अलग मूल्यो में दिये गये। स्वर्ण कलश की न्यूनतम राशि रु० 501 00 थी। एक रजत कलश रु० 301.00 में बिका, शेष 188 कलश रु० 111.00 प्रति कलश पर दिये गये। जर्मन सिल्वर कलश रु० 25.00 और पीतल कलश रु० 7.00 की दर से प्रदान किये गये। इस प्रकार—

		रु० पै०
51 स्वर्ण कलशो से	राशि	58,548 00
129 रजत कलशो से		14,499.00
88 जर्मन सिल्वर कलशो से		2,200 00 और
278 पीतल के कलशो से		1,946.00
कलश बिक्री से कुल आय	रु०	77,193.00 हुई।

सरसेठ हुकुमचन्दजी ने इस आयोजन मे बहुत सहयोग प्रदान किया। उन्होने स्वयं रु० 2,100.00 मे एक कलश लिया और रु० 101.00 में एक रजत कलश श्री तोलाराम नथमलजी कलकत्ता वालो के लिए अग्रिम आरक्षित कराया। अग्रिम बिकने वाला यह एकमात्र ऐतिहासिक कलश था। अपने भाई श्री ओकारमल कस्तूरचन्द की ओर सन् 1910 की क्षेत्र की बकाया राशि रु० 6102.00 भी सेठ साहब ने इस अवसर पर हुण्डी से चुकायी।

कलश बिक्री में रु० 37,010.00 की राशि 48 हुण्डियों के द्वारा प्राप्त हुई थी। ये सब हुण्डियाँ मैसूर बैंक के द्वारा भेजकर वह राशि वसूल की गयी। कुछ हुण्डियाँ पते ठीक न होने से या अन्य कारणो से वापस लौट आयी, उन्हें सेठ हुकुमचन्द ने इन्दौर मँगाकर पूरी राशि का भुगतान कर दिया। मंगलोर के रघुचन्द्र बल्लाल ने रु० 2201.00 की अपनी राशि यह कह कर रोक ली कि इस धन को क्षेत्र के संरक्षण के लिए अक्षयनिधि (ध्रुव फण्ड) मे रखने का प्रावधान हो जाने पर ही भुगतान करेंगे। राज्यकोष मे जमा कराने के लिए राशि नहीं देंगे।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने महोत्सव के लिए दस हज़ार रुपया इस शर्त पर देना स्वीकार किया कि मेले की आमदनी से, लाभ की स्थिति में, यह राशि कमेटी को वापस लौटा दी जाये। मैसूर शासन को यह शर्त स्वीकार नही हुई अतः कमेटी की ओर से खर्च के लिए केवल चार हज़ार का अनुदान दिया गया। इस मेले की सारी बचत राज्य मे जमा कर ली गयी। इस बीच मठ के भण्डार मे आठ सौ सतत्तर रुपये पाँच आना नौ पाई की नगद आमदनी हुई। मुज़रई विभाग ने यह राशि भी सरकार में जमा कराने के लिए मठ को आदेश दिया।

दूर-दूर से विहार करके अनेक मुनिसघों ने तथा त्यागी-ब्रह्मचारियो ने इस महोत्सव मे भाग लिया।

महोत्सव मे कुल आय एक लाख पन्द्रह हज़ार पाँच सौ चार रुपये नौ आने छह पाई, और खर्च पैतालीस हज़ार बासठ रुपये सात आने ग्यारह पाई हुआ। इस प्रकार आय बजट से सवा दो गुनी और व्यय डेढ़ गुना हुआ। अन्त मे सत्तर हज़ार पाँच सौ बयालीस रुपये एक आना सात पाई बचत मे रहा। इस राशि मे से सत्तर हज़ार रुपया मैसूर राज्य के चेरिटेबिल डिपाजिट मे चार प्रतिशत सालाना ब्याज पर जमा कर लिया गया ताकि वह राशि अगले महोत्सव पर उपलब्ध हो सके।

प्रमुख महोत्सव

महोत्सव का प्रारम्भ 11 फरवरी से हुआ। मुख्य अभिषेक 26 फरवरी 1940 को हुआ। 26-27 फरवरी को पर्वत पर केवल पास लेकर ही जाया जा सकता था। मैसूर नरेश श्री कृष्णराज वाडियार, राजकुमार जयचामराज वाडियार के साथ सुबह साढ़े सात बजे श्रवणबेलगोल पधारे। उनकी अगवानी करके एक बड़े जुलूस के रूप मे उन्हे विन्ध्यगिरि पर ले जाया गया, जहाँ उन्होंने ठीक साढे नौ बजे भगवान् बाहुबली की प्रथम पूजा की। इसके उपरान्त महामस्तकाभिषेक प्रारम्भ हुआ। अभिषेक देखकर मैसूर नरेश, सरसेठ हुकुमचन्दजी और भट्टारक स्वामीजी, अन्य अनेक प्रतिष्ठित पुरुषो के साथ पर्वत से लौटकर मठ पर पधारे। भोजन के पश्चात् महाराजा ने स्वागत कैम्प मे विश्राम किया।

समिति ने एक हज़ार रुपया व्यय करके एक विशाल पाण्डाल बनवाया था। अपराह्न चार बजे से इसी पाण्डाल मे 'आल इण्डिया दिगम्बर जैन महासभा' का अधिवेशन हुआ। अध्यक्ष सरसेठ हुकुमचन्दजी ने मैसूर नरेश को तथा राजकुमार जयचामराज वाडियार को इस सभा मे सम्मानित किया। सूर्यास्त के समय महाराजा हासन के लिए प्रस्थान कर गये। महासभा के अधिवेशन की अध्यक्षता सरसेठ भागचन्दजी सोनी ने की।

मुज़रई विभाग ने राज्य की ओर से दो रुपया प्रतियात्री मेला टेक्स लगाने का प्रस्ताव किया था। तीर्थक्षेत्र कमेटी तथा अन्य सगठनो के भारी विरोध के कारण राज्य को यह प्रस्ताव वापस लेना पड़ा। उस समय श्रवणबेलगोल में म्युनिसिपल कमेटी की स्थापना हो चुकी थी। कमेटी ने सफाई आदि का प्रबन्ध किया। चोरों, बदमाशो पर निगाह रखने के लिए मुफ्ती ड्रेस मे भी पुलिस नियुक्त थी। नहाते समय लोगो का सामान चुराने की, और पाकिट काटने की 37 घटनाओं की रिपोर्ट हुई। 22 लोग पकड़े गये। मजिस्ट्रेट की स्पेशल कोर्ट श्रवणबेलगोल मे लगाई गयी थी जिसमे 23 चालान प्रस्तुत हुए और 4 लोगों को सजा हुई।

भारत सेवादल ने मेले में स्वयंसेवको की व्यवस्था की थी। पर्वत पर जाने के लिए डोली का भाड़ा दो ढाई रुपया लगता था। भिखारियो के लिए अलग प्रबन्ध किया गया था। मेले से पकड़कर भिखारी वहाँ रखे जाते थे। उनके भोजनादि की व्यवस्था की जाती थी।

हासन के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर श्री टी. सामैया ने अपनी रिपोर्ट राज्य को भेजते हुए आगामी मस्तकाभिषेक के लिए तीन सुझाव लिखे। पहले सुझाव मे बाहुबली के परकोटे की पश्चिमी दीवार मे एक दरवाजा बनाने की आवश्यकता बतायी गयी थी जिससे दर्शनार्थी पीछे के रास्ते से उतर सके और मन्दिर प्रागण मे भीड को नियन्त्रित किया जा सके। उनका दूसरा सुझाव था कि मस्तकाभिषेक के समय तीन दिन तक बाहुबली के दर्शन के लिए दस, पाँच और एक रुपये टिकट लगा दिया जाय। श्री सामैया का विचार था कि टिकट लगा देने पर अवाछित भीड वहाँ नही होगी। बाहर से चन्दा मँगाने की और कलश बेचने की आवश्यकता भी नही पडेगी। अपने तीसरे सुझाव मे उन्होंने मेले के समय श्रवणबेलगोल मे मैसूर बैंक की शाखा खोलने की आवश्यकता निरूपित की थी।

मैसूर राज्य के मुजरई कमिश्नर ने 4 नवम्बर 1938 को अपनी अभिस्तावना-पत्र से इस महोत्सव की योजना का प्रारम्भ किया था। 24 अक्टूबर 1940 को दो वर्ष की कालावधि मे उन्ही की अन्तिम रिपोर्ट के साथ, इस प्रकरण की फाइल बन्द कर दी गयी।

1953 का महामस्तकाभिषेक

पिछले मस्तकाभिषेक के उपरान्त भट्टारक नेमिसागरजी अपने सकल्प के अनुसार दीक्षा लेकर कारकल चले गये। उनके अभाव मे क्षेत्र की व्यवस्था पुन अस्त-व्यस्त हो गयी। नवीन भट्टारक ब्र० कुन्दकुन्द स्वामी कतिपय कारणो से पूरी तरह व्यवस्था और अनुशासन अभी स्थापित नही कर पाये थे, इसलिए सन् 1940 की ही तरह मार्च 1953 मे भी मैसूर राज्य की देख-रेख मे ही महा-मस्तकाभिषेक का आयोजन किया गया।

परम्परानुसार भट्टारक स्वामीजी की अध्यक्षता मे महोत्सव समिति बनायी गयी, इसमे अठारह सदस्य थे। साहु शान्तिप्रसादजी भी इस कमेटी के सदस्य बनाये गये। हासन के डिप्टी कमिश्नर की अध्यक्षता मे सैंतीस सदस्यो की समिति राज्य की ओर से बनायी गयी। इस समिति मे बाबू निर्मलकुमारजी आरा, रायबहादुर सर सेठ भागचन्दजी सोनी अजमेर, भैया साहब राजकुमारसिहजी, साहु श्रेयासप्रसादजी, साहु शान्तिप्रसादजी, सेठ रतनचन्द हीराचन्द दोसी, मोहनलालजी बडजात्या, और धर्मस्थल के धर्माधिकारी श्री डी. मजैया हेगडे शामिल किये गये। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामत्री रतनचन्द चुन्नीलाल जवेरी भी इस समिति के सदस्य थे। दो अगस्त 52 से तीन मार्च 53 तक इस समिति की आठ बैठकें हुई।

समिति ने रु० 1,89,250 00 की आय और रु० 1,78,375.00 के व्यय का बजट शासन के समक्ष अनुमोदना के लिए प्रस्तुत किया। शासन ने डिप्टीकमिश्नर, हासन की सन् 1940 की अभिस्तावना के अनुसार मेले मे यात्रीकर लगाकर रु० 20,000.00 प्राप्त करने के निर्देश दिये, और स्वास्थ्य सेवाओ के लिए रु० 14,000.00 का अतिरिक्त प्रावधान किया।

इस प्रकार रु० 2,09,250.00 की आय और रु० 1,92,375.00 के व्यय का संशोधित बजट स्वीकृत होकर समिति को प्राप्त हुआ। प्रारम्भिक खर्चों के लिए भट्टारक स्वामीजी को पाँच प्रतिशत ब्याज पर रु० 50,000.00 अग्रिम की सुविधा प्रदान की गई। स्वामीजी ने सन् 1940 की बचत की राशि, जो राज्य के चेरिटेबिल डिपाजिट में जमा थी उसमें से रु०30,000.00 और ब्याज की राशि निकालकर काम चलाया। उन्होंने ब्याज पर कोई अग्रिम लेना स्वीकार नही किया।

बजट मे दर्शायी गयी आय की कुछ मदो से प्राप्तियाँ नही हो सकी। रु० 25,000.00 दान और चंदे से प्राप्त होना था, इसमें रु० 5,000.00 भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से अनुदान के रूप में प्राप्तव्य था। तीर्थक्षेत्र कमेटी ने यह अनुदान नही दिया। इसी प्रकार कलशों की बिक्री पर विपरीत प्रभाव पड़ने की आशंका से मेले मे सामान्य चंदा भी नही किया गया, अतः इस मद मे कोई प्राप्ति नही हुई। बजट में यात्रीकर से रु० 20,000.00 की प्राप्ति का अनुमान था। इस नव प्रस्तावित यात्रीकर का ऐसा सशक्त विरोध हुआ कि इसे लागू ही नही किया जा सका। इसके विकल्प के रूप मे, राज्य के बाहर से आनेवाली मोटर गाडियो पर स्पेशल टैक्स लगाने का, अथवा दूसरे विकल्प के रूप मे, चन्नरायपाटन से श्रवण-बेलगोल आनेवाले वाहनों पर टोल टैक्स लगाने का सुझाव भी महोत्सव समिति के सामने आया, परन्तु जनमत का सम्मान करते हुए वे सारे सुझाव निरस्त कर दिये गये। वाहनो पर भी कोई टैक्स नही लगाया गया।

अभिषेक का मच इस महोत्सव की विशषेता रही। 'गोमटेश्वर रिसर्च कमेटी' द्वारा मूर्ति का निरीक्षण-परीक्षण करने के लिए, और उसका अभिषेक-पूर्व रासायनिक उपचार करने के लिए पहले बाहुबली भगवान के आँगन मे एक ऊँचा मचान बाँधा गया। बाद में उस मचान को तोडकर मूर्ति के पीछे छत पर अभिषेक के लिए लोहे का मच बनाया गया। हरे बन्दनवारो से और बिजली से उसे सजाया गया। इस मच की बहुत सराहना हुई क्योंकि पहली बार यह ऐसा मंच बना था जिस पर मूर्ति के पीछे की ओर खड़े होकर अभिषेक किया गया। अभिषेक के समय दूर-दूर तक से मूर्ति का दर्शन हो रहा था और अभिषेक भी भली-भाँति दिखाई देता था। मच बनाने का ठेका रु० 10,500.00 में दिया गया था किन्तु ठेकेदार के कार्य की सराहना करते हुए बाद मे उसे दो सौ रुपये मूल्य के शाल आदि से पुरस्कृत भी किया गया।

अभिषेक के कलश

अभिषेक के लिए कलशो की सख्या 1008 ही थी, परन्तु इस बार केवल दो प्रकार के कलश उपलब्ध कराये गये। स्वर्णकलश 108 थे जिनमे से पहला कलश श्री जवानमल सुगनचन्द मेन्सल (बीकानेर) वालों ने रु० 18,001.00 देकर प्राप्त किया। शेष 107 स्वर्णकलश रु० 5501.00 से लेकर रु० 101.00 तक विभिन्न राशियो मे प्रदान किये गये। चाँदी के सभी 900 कलश रु० 101.00 प्रति कलश के मूल्य पर दिये गये। चतुष्कोण कलशो की बोलियाँ और पुष्पवृष्टि इस मेले मे आय के विशेष साधन बने। बजट मे कलशो से एक लाख रुपये की आय का अनुमान किया गया था, परन्तु कुल 1008 कलशो से राशि रु० 1,59,799.00 प्राप्त हुई।

महोत्सव मे कलश बिक्री से रु० 1,59,799.00, आवासीय झोपडियो के किराये से रु० 20,071.00 और फुटकर प्राप्तियो से रु० 24,934.00 इस प्रकार कुल मिलाकर रु० 2,04,804.00 की आय हुई। धार्मिक और प्रबन्धकीय कार्यों में कुल मिलाकर रु० 1,47,054.00 खर्च हुआ । इस प्रकार रु० 57,750.00 पूरे महोत्सव की बचत हाथ में आयी। डिपाजिट से पूर्व मे निकाली गयी राशि को मिलाकर जो नगद अन्त में शेष रही उसमे से रु० 99,500.00 जमा करके मैसूर राज्य का 1963 का चार प्रतिशत ब्याज वाला रु० 1,00,000.00 एक लाख का बाण्ड खरीदा गया ।

एक ऐतिहासिक घटना

नाम के लिए राज्य की ओर से उत्सव के आयोजन के लिए दो कमेटियो का गठन कर दिया गया था, पर प्राय सारे काम शासकीय मशीनरी द्वारा अपने ही ढग से चलाये जा रहे थे। इसी कारण इस बार एक ऐसी घटना घट गयी जिसने जैन समाज और मैसूर राज्य के बीच मे भले ही थोड़े समय के लिए तनाव पैदा कर दिया हो, परन्तु उससे गोमटस्वामी की पूजा अभिषेक का दिगम्बर जैनो का परम्परा से चला आ रहा, बाधा रहित सर्वाधिकार, सदा के लिए एक बार पुनः प्रसिद्ध हो गया।

घटना यह थी कि हासन के डिप्टी कमिश्नर ने परम्परा के खिलाफ, कुछ कलश ऐसे लोगो को बेच दिये जो दिगम्बर जैन नही थे। पूरी दिगम्बर जैन समाज इसके विरोध मे खड़ी हो गई। मेले मे पधारे दिगम्बर मुनिराजो ने ऐसे कलश वापस नही होने की हालत मे अनशन की घोषणा कर दी, तब जाकर डिप्टी कमिश्नर को बुद्धि आयी। उसी समय महोत्सव के दो दिन पूर्व कमेटी की बैठक बुलाकर उन कलशो का आवटन निरस्त किया गया और प्रस्ताव मे इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया गया कि ,"दिगम्बर जैनो के अतिरिक्त किसी को भी गोमटस्वामी बाहुबली के मन्दिर मे कलश लेने, व अभिषेक-पूजा करने का अधिकार नही है।"

इस घटना का पूरा विवरण और पारित प्रस्ताव इसी ग्रन्थ मे तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रकरण मे दिया गया है।

प्रमुख महोत्सव

महोत्सव के कार्यक्रम 18 फरवरी से प्रारम्भ हुए। मुख्य अभिषेक पांच मार्च 1953 को हुआ। 25 फरवरी से भीड बढ़ना शुरू हो गई थी। अभिषेक के दिन एक अनुमान के अनुसार ढाई-तीन लाख लोग उपस्थित थे। 5 मार्च को दर्शनार्थियो के लिए पर्वत पर प्रवेश निषिद्ध था। विशेष अतिथियो के अतिरिक्त स्वयसेवको को, दोनो समितियो के सदस्यों को और कलश करने वालो को पास दिये गये थे। धार्मिक समिति ने अपने पूर्व पारित प्रस्ताव के द्वारा मैसूर नरेश श्री जयचामराज वाडियार से गोमटेश्वर की प्रथम पूजा करने का अनुरोध किया, परम्परानुसार उनके द्वारा प्रथम पूजा सम्पन्न की गई। उसके पश्चात् श्री जवानमल सुगनचन्द बीकानेर वालो के द्वारा स्वर्णकलश के साथ अभिषेक प्रारम्भ हुआ। केन्द्रीय खाद्य एवं आपूर्ति मन्त्री श्री अजित प्रसाद जैन तथा दिगम्बर जैन समाज के अनेक अन्य प्रमुख जन, दूर-दूर से आकर इस अवसर पर उपस्थित हुए थे।

सभा-सम्मेलन

मेले में अनेक जैन सस्थाओ के अधिवेशन हुए। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन सभा के अधिवेशन के पश्चात् 5-3-53 को ही 'विश्व जैन मिशन' का दूसरा अधिवेशन सम्पन्न हुआ। दूसरे दिन 6 मार्च को 'अहिंसा कल्चरल कान्फ्रेन्स' का दूसरा अधिवेशन हुआ। इसमें भाग लेने के लिए कुछ विदेशी भी आये। इन संस्थाओं के अतिरिक्त जैन यंग मेन एसोसिएशन मद्रास, जैन महिला परिषद् बम्बई, तथा वीर सेवा मन्दिर सहारनपुर के भी अधिवेशन सम्पन्न हुए। इन विभिन्न आयोजनो से मेले मे प्रतिदिन नवीनता और विविधता का समावेश होता रहा। महा-सभा का अधिवेशन सरसेठ भागचन्दजी सोनी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

आवास तथा स्वास्थ्य

यात्रियो को ठहरने के लिए 10×10, 10×15 और 10×20 फुट के झोपड़े बनाये गये थे। पूरे समय के लिए उसका किराया 15, 35 और 50 रुपये रखा गया था। केवल 150 झोपडो का अग्रिम आरक्षण हुआ था, किन्तु मेले के समय प्राय: सभी झोपडे भर गये थे। मेले मे बक्का टैंक से पानी पहुँचाया गया। कल्याणी सरोवर में लोग नहाते थे। ह्यूम पाइप कम्पनी बम्बई के सेठ रतनचन्द हीराचन्द ने तीन हजार फुट पाइप नि शुल्क उपलब्ध करा दिया था, जिससे जल व्यवस्था में बहुत आसानी हुई। थोडे दिन पूर्व ही आस-पास के ग्रामो मे हैजा फैल गया था, इसलिए मेले मे स्वास्थ्य सेवा बडी तैयारी के साथ गठित की गई। यात्रियो को हैजा विरोधी टीके लगाये गये। धूल से बचने के लिए सडको पर पानी का छिडकाव किया गया, और सफाई का विशेष ध्यान रखा गया। श्री जैन ग्लीफ सोसायटी मद्रास, दिगम्बर जैन समाज बम्बई, और सर सेठ हुकुमचन्द आयुर्वेदिक औषधालय इन्दौर, की ओर से नि.शुल्क औषधियाँ उपलब्ध करायी गयी। लगभग 500 लोगों ने अस्थाई अस्पताल का लाभ लिया। उन दिनो आस-पास कई जगह हैजा फैल रहा था, परन्तु विशेष सावधानी बरतने के कारण हैजा की कोई घटना मेले मे नही हुई। एम्बुलेंस कार भी मेले मे उपलब्ध थी। बहुत लोग बैलगाडियों से आते थे, इसलिए मेले में पशु-चिकित्सालय भी स्थापित किया गया था।

सचार और सुरक्षा

15 फरवरी से 20 मार्च तक अस्थाई पोस्ट ऑफिस चलाया गया, जिसमे तार भी लिये जाते थे। हाथो-हाथ चन्नरायपाटन भेजकर उनकी व्यवस्था की जाती थी। इसी प्रकार आनेवाले तार भी वहाँ से हाथो-हाथ लाकर मेले में पहुँचाये जाते थे। टेलीफ़ोन की व्यवस्था नही थी परन्तु वायरलेस वाहन मेले मे रखा गया था। अग्निशामक वाहन भी उपलब्ध था, परन्तु उसकी एक बार भी आवश्यकता नही पडी। मजिस्ट्रेट का अस्थाई कोर्ट मेले में लगाया गया। चावल गेहूँ, आटा, दाल बडी मात्रा में मँगाकर रखे गये थे। बहुत सा सामान बिना बिका पडा रह गया।

फ़िल्म डिवीजन ने महोत्सव की फ़िल्म बनायी। आकाशवाणी मैसूर से अभिषेक का आँखों देखा हाल प्रसारित किया गया। पूरे महोत्सव में एक बार भी बिजली फैल नहीं हुई। पिछले

महोत्सव की तरह भारत सेवा दल ने दो सौ स्वयंसेवक भेजकर भी व्यवस्था में हाथ बटाया। रोवर स्काउट दल के सौ स्वयंसेवक व्यवस्था मे संलग्न रहे। इस बार भी भिखारियों को मेले में नहीं रहने दिया गया। लगभग एक हजार भिखारी मेले से ले जाकर बाहर केम्प मे रखे गये और वही उनके भोजनादि की व्यवस्था की गई।

पर्वत पर जाने के लिए डोली का भाड़ा पाँच रुपये लगता था। अच्छे होटल में प्रतिदिन खाने का खर्च सवा रुपये से डेढ रूपये तक आता था। शासन ने मेले की ड्यूटी पर नियुक्त अधिकारियो का भत्ता बढ़ाकर ढाई रुपया और भृत्यों का भत्ता डेढ रुपया प्रतिदिन कर दिया था। उत्तम सेवा के लिए पन्द्रह शासकीय कर्मचारियों को पचास, तीस और बीस रुपयो के पारितोषिक से पुरस्कृत किया गया।

मैसूर राज्य के मुजरई कमिश्नर ने 2 मई 1952 को मस्तकाभिषेक की स्वीकृति के लिए राज्य शासन को अभिस्तावना भेजी, जिस पर 11 नवम्बर को शासन की स्वीकृति प्राप्त हुई। 5 मार्च 1953 को अभिषेक हुआ और 31 जुलाई, 1955 को डिप्टी कमिश्नर, हासन की अनुशसा के साथ इस प्रकार की फाईल बन्द कर दी गयी।

1967 का महामस्तकाभिषेक

1967 का महा-मस्तकाभिषेक सामान्य परिस्थितियो मे नही हुआ। जब 1953 के उत्सव के उपरान्त बारह वर्ष बीत गये और मठ की ओर से मस्तकाभिषेक के लिए कोई पहल नही की गयी तब कर्नाटक शासन ने 17-6-65 को पिछली बार की तरह डिप्टी कमिश्नर हासन की अध्यक्षता में एक जनरल कमेटी और भट्टारक स्वामीजी की अध्यक्षता मे एक धार्मिक कमेटी का गठन कर दिया। पिछले दो महोत्सव, सन् 1940 मे और 1953 मे शासकीय प्रबन्ध के अन्तर्गत ही हुए थे। उनके बहुत अप्रिय अनुभव हमारे पास थे और समाज का कोई व्यक्ति मन से यह नही चाहता था कि देश का अद्वितीय गरिमावाला यह उत्सव, पुन· शासन के लालफीताशाही अनुशासन मे मनाया जाय, परन्तु सामयिक परिस्थितियो मे, मठ और समाज के बीच आपसी समझाइस और समन्वय के अभाव के कारण, और तीस-पैंतीस वर्षों मे शासन की बढी हुई हस्तक्षेपी नीति के कारण, इस उत्सव के लिए कोई स्वतन्त्र व्यवस्था सम्भव नही हो सकी अत उसी पराधीन व्यवस्था के अन्तर्गत महोत्सव का कार्यारम्भ हुआ। फरवरी-मार्च 66 मे महा-मस्तकाभिषेक करने की योजना बनायी गयी और धार्मिक कमेटी ने पंच-कल्याणक पूजा और महाभिषेक के लिए रुपया 1,18,530.00 का अपना बजट शासन की अनुमोदना के लिए प्रस्तुत कर दिया। उस वर्ष देश में खाद्यान्न की कमी थी और अवर्षण के कारण पीने के लिए पानी की भी कमी पड़ने की आशका थी, इसलिए 1966 मे प्रस्तावित उत्सव स्थगित करना पडा।

फिर कमेटियों के प्रस्ताव और स्वामीजी के स्मरण-पत्र सचिवालय की टेबिलों पर वर्ष भर टहलते रहे, तब कही जाकर शासन ने महा-मस्तकाभिषेक के लिए तीस मार्च, 1967 का दिन अन्तिमरूप से नियत किया। महोत्सव के स्पेशल ऑफिसर के पद पर एक कर्त्तव्यनिष्ठ

अधिकारी श्री ए० एस० चिप्रे, असिस्टेंट कमिश्नर की नियुक्ति की गयी। यह एक अच्छा चुनाव था क्योंकि हम देखते हैं कि इस उत्सव में श्री चिप्रे ने अनेक विषमताओं का सामना करते हुए और समस्याओं से जूझते हुए, अक्टूबर, 66 से जून, 67 तक बड़ी कर्मठतापूर्वक अपने पद का निर्वाह किया। इस उत्सव की सफलता मे उनका स्मरणीय योगदान रहा।

उत्सव के लिए नवीन तिथि की घोषणा होने पर धार्मिक कमेटी ने पुनः रु० 1,46,650/- का अपना पुनिरीक्षित बजट प्रस्तुत किया जिसे कई जगह काट-पीटकर शासन ने केवल 1,08,600/- की स्वीकृति दी। जनरल कमेटी का अपना अलग बजट था और वह मेले की व्यवस्था के लिए अपने ढंग से तैयारियाँ कर रही थी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने यद्यपि श्रवणबेलगोल में तब तक बहुत कुछ कार्य किया था, परन्तु स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ताओ के साथ और भट्टारक स्वामीजी के साथ समन्वय स्थापित करने मे वह असफल रही थी। भट्टारक स्वामीजी को भी विश्वास मे न लेकर शासन से सीधा सम्पर्क स्थापित करना, क्षेत्र की व्यवस्था के लिए समानान्तर कार्यालय चलाना आदि अनेक ऐसे कार्य-कलाप तीर्थक्षेत्र कमेटी के थे, जिनसे आपसी सद्भाव और सौजन्य वहाँ प्रायः समाप्त-सा हो गया था। तीर्थक्षेत्र कमेटी का इतना अधिक एकांगी हस्तक्षेप भट्टारकजी को रुचिकर नही लगता था।

इन परिस्थितियो मे महा-मस्तकाभिषेक जैसे विशाल आयोजन का भार उठाने के लिए परस्पर सौहार्द्र और समन्वय सबसे आवश्यक समझा गया। तभी यह विचार लोगो के मन मे आया कि कोई ऐसी सर्वमान्य व्यवस्था लागू करने का प्रयत्न किया जाय जिससे तीर्थक्षेत्र कमेटी के उद्देश्यों के अनुसार क्षेत्र का सरक्षण और सचालन हो सके। शासन की देख-रेख बनी रहे, पर भट्टारक स्वामीजी के सम्मान्य पद की गरिमा भी रक्षित रहे, तथा महा-मस्तकाभिषेक का आयोजन भी पूरी सक्षमता के साथ किया जा सके।

थोडे ही समय पूर्व 1964 मे साहु शान्तिप्रसादजी ने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष का पद ग्रहण किया था। साहुजी भी उन अनेक विचारको मे से एक थे जो अपने तीर्थों पर अनावश्यक शासकीय हस्तक्षेप को जैन शासन पर आया हुआ उपसर्ग मानते हैं। तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षता ग्रहण करते ही उन्होंने श्रवणबेलगोल आकर सारी परिस्थितियो का अध्ययन किया और वे स्पष्टत. इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जब तक पूरी दिगम्बर जैन समाज के प्रतिनिधियो की कोई सक्षम कमेटी गठित नही की जाती, तब तक महा-मस्तकाभिषेक के लिए समस्त दिगम्बर जैन समाज का सहयोग प्राप्त करना, और एक राष्ट्रीय महोत्सव की तरह विशाल स्तर पर उत्सव का आयोजन करना, सम्भव नहो हो सकता।

इस विचारधारा से प्रेरित होकर 1965-66 मे तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष साहु शांतिप्रसादजी के नेतृत्व मे, समाज के अनेक प्रमुख लोगों ने कई बार यह आवाज उठाई कि इस महान् क्षेत्र के प्रबन्ध के लिए पूर्ण अधिकार सम्पन्न एक स्वतन्त्र कमेटी का गठन होना ही चाहिए। साहुजी ने इस प्रयोजन की सिद्धि के लिए समाज के अनेक प्रभावशाली व्यक्तियो का सहयोग लिया। कर्नाटक शासन पर श्री श्रेयांसप्रसाद जैन के प्रभाव का भी उपयोग किया गया। इस प्रकार लगातार किये गये इन सम्मिलित प्रयत्नों ने कर्नाटक के मुख्यमन्त्री श्री निजलिंगप्पा को प्रभावित किया और उन्होंने शासकीय आदेश क्रमांक आर० डी० ए०/एम० एस० टी०/67

दिनांक 18-1-67 के द्वारा, 'श्रवणबेलगोल दिगम्बर जैन मुजरई इन्स्टीट्यूशन्स (एस० डी० जे० एम०आई०) मैनेजिंग कमेटी' का गठन कर दिया। इसके पूर्व तक हमेशा महा-मस्तकाभिषेक के लिए तात्कालिक कमेटियाँ बनती थी, जो महोत्सव का कार्य सम्पन्न करके स्वत. समाप्त हो जाती थी। फिर दस-बारह वर्ष तक क्षेत्र की व्यवस्था और सारी जिम्मेदारियों का भार मठ पर ही होता था। भट्टारक स्वामीजी को अकेले ही सारी देख-रेख करनी पडती थी। अब क्षेत्र की व्यवस्था इस कमेटी के अन्तर्गत आ गयी और शासकीय हस्तक्षेप लगभग समाप्त हो गया।

एस० डी० जे० एम० आई० का गठन करते समय भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, जैन मठ और कर्नाटक शासन के समन्वित सहयोग का ध्यान तो था ही, कमेटी मे पूरे देश की दिगम्बर जैन समाज के प्रतिनिधित्व का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा गया। कमेटी के विधान के अनुसार चौबीस सदस्यो की इस कमेटी मे नौ सदस्य कर्नाटक प्रदेश की दिगम्बर जैन समाज मे से, कर्नाटक शासन के तीन दिगम्बर जैन प्रतिनिधि, और कर्नाटक के बाहर की दिगम्बर जैन समाज मे मे बारह सदस्य मनोनीत किये गये। जैनमठ श्रवणबेलगोल के भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी इस कमेटी के स्थायी अध्यक्ष है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष इस कमेटी के पदेन उपाध्यक्ष है। इस प्रकार कमेटी की कुल सदस्य सख्या छब्बीस है। सदस्यो मे मे ही एक निर्वाचित उपाध्यक्ष भी होता है। प्रतिनियुक्ति पर लिया हुआ द्वितीय श्रेणी का कोई दिगम्बर जैन शासकीय अधिकारी इस कमेटी का सेक्रेटरी नियुक्त किया जाता है। कमेटी का गठन और उसमे समय-समय पर होनेवाले सारे परिवर्तन भट्टारक स्वामीजी की सहमति से ही किये जाते हैं। कमेटी के एक तिहाई सदस्य प्रति तीसरे वर्ष निवृत हो जाते हैं। निवृतमान सदस्यों के स्थान पर भट्टारक स्वामीजी की अभिस्तावना के अनुसार नवीन सदस्यो की नियुक्ति शासन द्वारा घोषित कर दी जाती है। इन नवीन सदस्यों की नियुक्ति अथवा सेक्रेटरी की नियुक्ति भट्टारक स्वामीजी की सहमति के बिना नही की जा सकती। किसी भी हालत मे दिगम्बर जैनेतर किसी भी व्यक्ति को कमेटी का सदस्य बनने की पात्रता नही है। प्रथम मनोनीत कमेटी और 1981 की कमेटी की सदस्य तालिका परिशिष्ट मे दी गयी है।

एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी का गठन होते ही सम्पूर्ण श्रवणबेलगोल क्षेत्र और जैन मठ उसके अधिकार मे आ गया। रूल्स मे जोडी गयी परिशिष्ट तालिका के अनुसार, श्रवणबेलगोल के सभी 34 सस्थानो पर तत्काल कमेटी का नियन्त्रण प्रभावी हो गया। किन्तु मठ पर कमेटी का नियन्त्रण हो जाने से कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ सामने आने लगी। मठ का सारा आय-व्यय कमेटी की अनुमोदना का मुखापेक्षी हो गया। पारम्परिक प्रभुता-सम्पन्न, जनमान्य पीठाधीश के लिए ऐसा नियन्त्रण अनेक आकुलताएँ उपजानेवाला था, अतः दूरदर्शी भट्टारक स्वामीजी ने अधिक विलम्ब किये बिना, मठ को कमेटी के अधिकार क्षेत्र से बाहर करा लिया। इस प्रकार श्रवणबेलगोल मे ऐसी सक्षम प्रबन्ध व्यवस्था का प्रारम्भ हुआ जिसमे क्षेत्र का सरक्षण और सचालन उत्तम ढग से होने लगा, मठ की अस्मिता अप्रभावित बनी रही और भट्टारक पद का गौरव और प्रभाव यथावत् सुरक्षित रहा। आज भी पास के और दूर के सैकड़ो लोग भट्टारक स्वामीजी के पास बडे विश्वासपूर्वक अपनी अनेक प्रकार की समस्याएँ लेकर आते हैं और मठ से उनके समाधान की अपेक्षा करते हैं। स्वतन्त्र रूप से सामर्थ्यवान होने

के कारण भट्टारक स्वामीजी यथासम्भव सबकी बात सुनते हैं, उनकी सहायता करते हैं और इस प्रकार जैन शासन की प्रभावना मे मठ के द्वारा पूर्व परम्पराओ के अनुसार अभिवृद्धि होती रहती है।

12-1-67 से श्रवणबेलगोल दिगम्बर जैन मुजरई इन्स्टीट्यूशन्स रूल्स 1967 प्रभाव मे आये। इन रूल्स के अन्तर्गत महा-मस्तकाभिषेक कराने के सारे अधिकार और कर्तव्य एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी को प्राप्त हुए। तदनुसार 17-1-67 को शासन द्वारा पूर्व मे गठित दोनों कमेटियाँ भंग कर दी गयी। एस० डी० जे० एम० आई० रूल्स के अन्तर्गत नव गठित मैनेजिंग कमेटी ने 5-2-67 को अपनी प्रथम बैठक मे सारी स्थिति का जायजा लिया। अभी तक सेक्रेटरी की नियुक्ति न होने से कमेटी का कार्य आरम्भ भी नही हुआ था। ऐसे मे कार्य की विशालता, प्लानिंग का अभाव, और समय की अत्यन्त कमी को देखते हुए मैनेजिंग कमेटी ने निर्धारित तिथि 30 मार्च को महा-मस्तकाभिषेक सम्पन्न कराने मे अपनी असमर्थता जताकर शासन को इसकी सूचना दे दी। कमेटी ने अपने पत्र में शासन से अनुरोध किया कि समय की कमी के कारण और साधनों के अभाव के कारण, नवीन बजट बनाकर अपनी कल्पनाओ और योजनाओ के अनुसार कार्य करना कमेटी के लिए इतनी जल्दी मे सम्भव नही है, इसलिए इस स्थिति मे उत्सव की जिम्मेवारी लेने का उसके लिए कोई औचित्य नही है, अत. पूर्व निर्धारित व्यवस्था के अनुसार, उन्ही दोनो कमेटियो के माध्यम से उत्सव का कार्य चलने दिया जाय। मैनेजिग कमेटी उसमे यथा-शक्ति सहयोग करती रहेगी। इसके बाद फरवरी का पूरा महीना बीतने तक इस प्रकरण मे किसी ओर से किसी प्रकार का कोई निर्णय नही लिया जा सका और स्थिति ऐसी ही अनिश्चयात्मक बनी रही।

इस प्रकार कमेटियाँ भग हो जाने पर सत्रह जनवरी से फरवरी के अन्त तक, पूरे डेढ़ माह श्रवणबेलगोल के आकाश पर अनिश्चय के बादल छाये रहे और अनुत्साह की आँधियाँ चलती रही। भट्टारक स्वामीजी और हासन के डिप्टी कमिश्नर, दोनो ही अधिकार विहीन हो गये थे। कोई किसी कागज पर हस्ताक्षर करने के लिए अधिकृत नही रह गया था। ऐसी स्थिति मे किसी विभाग का कोई अधिकारी किसी काम की जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार नही था। बहुत से काम तो अभी प्रारम्भ भी नही हुए थे। जिनकी शुरूआत हो चुकी थी वे अधूरे पड़े थे। काम की प्रगति शून्य पर टिकी थी। उधर उत्सव की तिथि प्रतिदिन निकट आती जा रही थी। इस विषम परिस्थिति में स्पेशल ऑफिसर श्री चिप्रे ने कुछ साहस दिखाया। एक ओर तो वे थोड़ी जोखिम उठाकर भी तैयारियो मे सलग्न रहे और पूर्व बजट के अनुसार खर्च आदि करते रहे, दूसरी ओर शीघ्र कोई प्रभावक निर्णय लेने के लिए शासन को लिखते रहे। उधर मैनेजिंग कमेटी के सदस्य भी, अपनी असमर्थता जताने के बावजूद, उत्सव के लिए चिन्तित थे। एक बार बढायी जा चुकी तिथि को पुन आगे बढाने के लिए कोई तैयार नही था। तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष साहु शान्तिप्रसादजी अब मैनेजिंग कमेटी के पदेन उपाध्यक्ष थे। वे भी कमेटी के सदस्यों को प्रेरणा देते रहे। भट्टारक स्वामीजी भी कमेटी को सक्रिय करने के लिए प्रयत्न करते रहे।

अन्तत· सबके प्रयास और सबकी भावना ने उत्सव को अनिश्चय की भँवर से उबार ही लिया। बंगलौर मे 5-3-67 को एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी की दूसरी महत्त्व-

पूर्ण बैठक हुई जिसमें कमेटी ने 5-2-67 का अपना निर्णय बदलते हुए 30-3-67 को आयोजित महा-मस्तकाभिषेक की सारी व्यवस्था करने का जिम्मा ले लिया। वही तत्काल शासन को इस निर्णय की सूचना दी गयी। शासन ने दूसरे ही दिन कमेटी और सरकार के बीच समन्वय की दृष्टि से, डिप्टी कमिश्नर हासन की अध्यक्षता मे, दस शासकीय अधिकारियो की एक लायजन कमेटी का गठन कर दिया। उसी समय मैनेजिंग कमेटी के सेक्रेटरी पद पर एच० पी० ब्रह्मप्पा असिस्टेण्ट कमिश्नर को नियुक्त किया गया जिन्होंने 8-3-67 को अपना कार्यभार ग्रहण कर लिया। कमेटी सेक्रेटरी को बैठने के लिए अभी तक वहाँ कोई स्थान नही था, स्टाफ की नियुक्ति करने और फर्नीचर खरीदने तक के लिए समय नही था। अत: स्पेशल ऑफिसर के साथ उन्ही के ऑफिस मे बैठकर श्री ब्रह्मप्पा ने कार्य प्रारम्भ किया। इन दोनो अधिकारियो ने आपसी सौजन्य और सहयोग की भावना से दिन और रात परिश्रम करके उत्सव को सफल बनाने के लिए अपनी शक्ति भर काम किया।

मुख्य अभिषेक के लिए 30 मार्च की तिथि निर्धारित थी अत: पचकल्याणक आदि के कार्यक्रम 16 मार्च से प्रारम्भ होना थे। इतने बडे कार्य के आरम्भ होने के केवल दस दिन पूर्व उसकी सारी जिम्मेदारी स्वीकारना सचमुच एक साहस भरा निर्णय था। इतने थोड़े समय के भीतर, जब साधन जुटाने का भी अवसर नही रह गया था, इस महान कार्य को सफल बनाना निश्चित ही एक चुनौती भरा काम था। परन्तु मैनेजिंग कमेटी को अपने उपाध्यक्ष साहु शान्तिप्रसादजी की कर्मठता और कार्य-क्षमता का बडा भरोसा था। वास्तव मे उन्ही के बल-बूते पर कमेटी ने अपना निर्णय बदल कर यह जिम्मेदारी उठायी थी। साहुजी की पहल पर बगलौर मे उसी दिन, 5-3-67 की उसी बैठक मे, उत्सव का कार्य सचालन करने के लिए अपने बीच से ग्यारह सदस्यो की एक विशेषाधिकार उपसमिति—हाई पावर कमेटी बना दी गयी। उत्सव सम्बन्धी सारे निर्णय लेने और सारे खर्चों की स्वीकृति देने के लिए इस कमेटी को अधिकृत कर दिया गया। साहुजी की अध्यक्षता मे साठ सदस्यो की स्वागत-समिति बनायी गयी और स्वामीजी की अध्यक्षता मे तैंतीस सदस्योवाली धार्मिक कमेटी का गठन किया गया। शासन के पास क्षेत्र का जो धन जमा था उसे वापस प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया। सबसे पहले कमेटी के नाम 30,000/- की राशि 11-3-67 को ट्रान्सफर हो पायी। यह कमेटी का प्रथम कोष था।

पचकल्याणक पूजा भण्डार बस्ती मे 16 मार्च से प्रारम्भ होकर 22 मार्च को समाप्त हुई। पण्डित वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री सोलापुर ने स्वामीजी के तत्त्वावधान मे सारे विधि-विधान सम्पन्न कराये। विन्ध्यगिरि पर प्रारम्भिक पूजा 29 मार्च को ही प्रारम्भ हुई। एक सप्ताह पूर्व से अच्छी सख्या मे यात्रियो का आना प्रारम्भ हो गया था। 29 मार्च तक श्रवणबेलगोल मे आशातीत जन समुदाय एकत्र हो गया और पूरी पारम्परिक तैयारियो के साथ, बडी धूम-धाम से निर्धारित समय पर गोमटस्वामी के मस्तकाभिषेक का अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ।

मस्तकाभिषेक

भारत के सर्व धर्म समभाव सिद्धान्त का एक बार पुन: प्रत्यक्ष दर्शन हुआ जब 30 मार्च 67 को लगभग दो लाख जैन-जैनेतर जनता के समक्ष विन्ध्यगिरि की चोटी पर गोमटस्वामी का मस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ।



1—2 महामस्तकाभिषेक समिति की बैठक







3 — 4 श्रवणबेलगोल मे स्टेट लैवल कमेटी की बैठक



5 नलकूप का निरीक्षण करते हुए कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री आर गुंडूराव



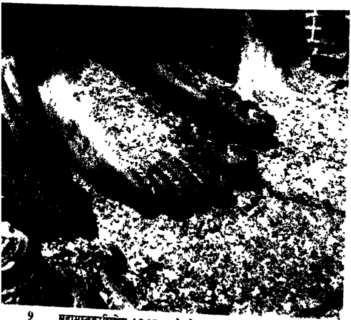
6 1967 के अभिषेक मच का एक दृश्य : हेलीकॉप्टर से पुष्पवृष्टि



7
सौ साल पूर्व का
विन्ध्यगिरि
जब गोमटस्वामी तक
जाने के लिए
सीढ़ियां नहीं थी



8 महामस्तकाभिषेक 1967 चरणाभिषेक



9 महामस्तकाभिषेक 1967 गोमटेश्वर के चरणो में बिखरी पाखुरियां



10 गत 1967 के महोत्सव मे दुग्ध से अभिषिक्त गोमटेश्वर



11 महामस्तकाभिषेक 1967
अभिषेक की तैयारी मे



12 1967 मे आचार्य देशभूषणजी से व्यवस्था सम्बन्धी मार्गदर्शन लेते हुए साहु शान्तिप्रसाद जैन



13 1967 मे मस्तकाभिषेक के समय दिगम्बराचार्य देशभूषणजी की
वन्दना करते हुए तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री एम. निजलिंगप्पा



14 जैन मठ के पूर्व भट्टारक
स्वर्गिनश्री नेमिसागर वर्णी चारुकीर्ति स्वामीजी, श्रवणबेलगोल

15 जैन मठ के पूर्व भट्टारक
स्वर्गिनश्री भट्टाकलंक चारुकीर्ति स्वामीजी, श्रवणबेलगोल



16 स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के
पुन पट्टाभिषेक की तैयारी।
गुरुपीठ वदना, मठ मन्दिर





17 पालकी मे शोभा-यात्रा



18 पुन पट्टाभिषेक की बधाइयाँ

बाहुबली का महा-मस्तकाभिषेक यद्यपि एक पूर्णतः जैन महोत्सव है परन्तु अपनी गरिमा और जैन धर्म के सर्वमान्य सिद्धान्तो के कारण, बारह वर्ष मे एक बार होनेवाला यह महोत्सव पूरे देश की जनता को आकर्षित और प्रभावित करता है। सत्तावन फुट ऊँची, विश्व की इस सबसे विशाल मूर्ति का सतरगा अभिषेक देखना सचमुच में एक बड़ा सौभाग्य है और जीवन की एक बहुत प्रिय अविस्मरणीय घटना है।

विन्ध्यगिरि के सामने चन्द्रगिरि पर्वत पर अभिषेक देखनेवालो का समूह समुद्र की ऊँची लहरों की तरह लहरा रहा था। चन्द्रगिरि का वह स्थान इन सैकडो हजार दर्शको के लिए बहुत दूर, परन्तु बहुत पास था। विन्ध्यगिरि के ऊपर पहुँचने वाले भाग्यशाली लोगो की संख्या पाँच हजार से अधिक नही थी। अभिषेक के कलश प्राप्त करके ये लोग बाहुबली के चरणो तक पहुँचे थे।

आज लाखो लोगो का दस बारह वर्ष पुराना सपना साकार हो रहा था। गत रात्रि को बोलियाँ बोलकर कलश आवटित किये गये थे। ऊँची-से-ऊँची रुपया 47,001-00 से लेकर कम-से-कम रुपया दो सौ तक की बोलियाँ लगाकर लोगो ने कलश प्राप्त किये थे। इन्ही बोलियो के आधार पर क्रम से अभिषेक करने का अवसर लोगो को दिया गया था। अपने परिवार जनो और महिलाओ के साथ अभिषेक करनेवाले अपने क्रम की प्रतीक्षा करते हुए मन्दिर के आँगन मे बैठे थे। ऊपर जाने वालो का यह सिलसिला दिन निकलने के काफी पहले प्रारम्भ हो गया था। अभिषेक का पूरा कार्यक्रम कई घण्टो का होने पर भी उबानेवाला नही था। विविध नवीनताओ के कारण वह बराबर दर्शको की दृष्टि को बाँधकर चल रहा था। कार्यक्रम ठीक साढे सात बजे प्रारम्भ हो गये थे। मार्च की तेज धूप मे जलती चट्टानो पर लोग भूखे प्यासे कई घण्टो तक बैठे हुए थे परन्तु उनके चेहरो पर भक्ति का आह्लाद और प्रभु के प्रति समर्पण का आनन्द ही तैरता दिखाई देता था। थकावट या परेशानी किसी चेहरे पर दिखाई नही दी।

स्थान की कमी के कारण विन्ध्यगिरि पर थोडी-सी अव्यवस्था भी देखने मे आयी। कही-कही धक्का-मुक्की और विवाद के अवसर भी आये परन्तु तीर्थ के अनुरूप, परस्पर सौजन्य से ही लोगो ने स्वत. अपने आपको व्यवस्थित कर लिया।

दिगम्बर आचार्य देशभूषण महाराज, पिछले महोत्सव की तरह इस बार भी मस्तकाभिषेक मे उपस्थित थे। जयपुर से चलकर वे कुछ दिन पूर्व यहाँ आये थे। उनके साथ अनेक दिगम्बर आचार्य व मुनिराज नीचे आँगन मे विराजमान थे। आठ घण्टो तक वे सब एकाग्र होकर अभिषेक का कार्यक्रम देखते रहे। हिलना-डुलना तो दूर की बात है, उनके तो पलक तक झपकते नही दिखाई देते थे। उनके साथ बहुत-सी आर्यिका माताएँ भी उसी प्रकार एकाग्र मन से यह महोत्सव देख रही थी।

मैसूर के मुख्यमन्त्री श्री एस. निजलिंगप्पा, राजस्व एव मुजरई मन्त्री श्री बी० राचैया, अनेक विधायक और विधान परिषद् के सदस्य, मैसूर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉक्टर कालूलाल श्रीमाली, विधान सभा मे विरोधी पक्ष के नेता श्री एस० शिवप्पा और अनेक अधिकारी विशेष आमन्त्रितो की श्रेणी मे बैठकर अभिषेक देख रहे थे।

जैनमठ के वयोवृद्ध भट्टारक श्री चारुकीर्ति पण्डिताचार्य स्वामीजी पूरे अभिषेक कार्यक्रम का निर्देशन कर रहे थे। कई बार अनुष्ठान की प्रक्रिया के बारे मे विवाद उठने पर उन्होने तत्काल

उसका समाधान किया।

अभिषेक के पूरे समय भजन, कीर्तन, सगीत और 'वाह-वाह' तथा 'जय-जय-महाराज' के नारे गगन मे गूँजते रहे। परन्तु सबसे अधिक हर्षध्वनि और उत्सुकता लोगो मे तब दिखाई दी जब, 1008 कलश हो जाने के बाद लगभग एक बजे, बहु-प्रतीक्षित पचामृत-अभिषेक प्रारम्भ हुआ। यह कार्यक्रम धार्मिक कमेटी की जिम्मेदारी का काम था और वह अपनी सहज शोभा के कारण, चमत्कार की सीमा तक सफल हुआ। अभिषेक के अनेक द्रव्यो से प्रतिक्षण आपाद-मस्तक नहाये हुए गोमटस्वामी के जो नयनाभिराम रूप बनते उभरते थे उनकी सुन्दरता का अन्दाजा उस दृश्य को देखे बिना नही लगाया जा सकता। देखकर ही उस पर विश्वास किया जा सकता है।

नीचे से सकेत मिलते ही ऊपर खडे लगभग पन्द्रह अर्चको ने प्रतिमा के दोनो कॉंधो पर और मस्तक पर अभिषेक की मोटी-मोटी धाराएँ छोडना प्रारम्भ कर दिया। बिगुल की गूँज, घण्टा-निनाद और समवेत स्वरो मे गूँजती मन्त्रो की पवित्र ध्वनि के साथ, एक के बाद दूसरे द्रव्य से अभिषेक होता जा रहा था और दर्शको का समूह जैसे किसी कल्पना-लोक मे अपने आप को खोया हुआ-सा अनुभव करता, अपने वर्तमान को भूला हुआ, मन्त्रमुग्ध-सा बँधा बैठा था।

पर्वत शिखर पर दर्शको के बैठने के लिए जो वर्तुलाकार व्यवस्था थी उसमे लगभग तीन हज़ार दर्शक ही इस महोत्सव का अवलोकन कर सके। इनमे कलश करने वाले लोग, अतिथि और अभ्यागत, सरकारी अधिकारी तथा कमेटी के सदस्य आदि सभी थे। इससे अधिक लोगो को पर्वत पर स्थान देना किसी भी प्रकार सम्भव नही हुआ। कमेटी के कार्यालय से, तीन श्रेणियो मे से कोई भी कलश प्राप्त करके भक्त लोग सीधे ही इस आयोजन मे भाग ले सकते थे।

470 फुट ऊँचा विन्ध्यगिरि पर्वत विभिन्न रगो के प्रकाश से सजाया गया था। यह प्रकाश पन्द्रह मील दूर से दिखाई देता था। 30 और 31 मार्च को प्रवेश पत्र लेकर ही पर्वत पर जाया जा सकता था।

इस महोत्सव की एक विशेष बात यह थी कि लखपति, करोडपति और गरीब, सब कन्धे-से-कन्धा मिलाकर इन कार्यक्रमो मे सम्मिलित थे। वे सब एक साथ एक ही प्रकार के आसन पर बैठते थे, एक साथ भीड मे चलते और खडे होते थे, और एक ही साथ भगवान् के चरणो मे वन्दना और अर्चना करते थे।

मुनि और त्यागी

गोमटस्वामी के मस्तकाभिषेक के दुर्लभ सयोग पर उनकी चरण-वन्दना करने के लिए बडी सख्या मे दिगम्बर मुनिराज, त्यागीवृन्द और भट्टारक स्वामी मेले के पूर्व ही श्रवणबेलगोल पधार चुके थे। मन्दिरो मे उनके आवास के लिए, जो व्यवस्था की गयी थी वह छोटी पड गयी, तब मठ के पास और मन्दिरों के बीच खुले मैदान मे चटाई की छाया डालकर उनके विश्राम का प्रबन्ध किया गया। इसी प्रकार अनेक मठाधिपति और योगियो की भी व्यवस्था की गयी।

हेलीकॉप्टर से पुष्पवृष्टि

अभिषेक के कार्यक्रम सुबह साढ़े सात बजे से प्रारम्भ हो गये थे। गोमटस्वामी पर पुष्प-वृष्टि करने के लिए भारतीय वायुसेना का हेलीकॉप्टर बंगलोर से चलकर 10 बजकर 20 मिनट पर पहुँचा। आते ही हेलीकॉप्टर से रंग-बिरंगे पुष्प गोमटस्वामी पर बरसाये जाने लगे। इस पुष्पवृष्टि में प्राकृतिक पुष्पो के साथ बनावटी पुष्प, ककुम, हल्दी और चन्दन भी बरसाया गया। दस मिनट तक चलनेवाली पुष्पवृष्टि ने मूर्ति पर कई चक्कर लगाये। हर चक्कर में भारी मात्रा मे रग-बिरगे फूल मूर्ति के ऊपर बरसाये जाते थे और इस प्रकार जल-अभिषेक तथा पचामृत-अभिषेक के बीच मे 'पुष्प-अभिषेक' का एक अनोखा दृश्य वहाँ उपस्थित हो गया था। शायद पुष्पवृष्टि का ऐसा कार्यक्रम श्रवणबेलगोल मे पहली बार हुआ था। लोग बडी उत्कण्ठा और उत्सुकता से आकाश मे यह आश्चर्य देखते थे और ऊँचे स्वर में जय-जयकार करते थे। पुष्पवृष्टि के लिए हेलीकॉप्टर इतना नीचे उड़ान भरता था कि मच से उसकी दूरी चार-पाँच मीटर ही रह जाती थी। मच पर अभिषेक करनेवाले कई बार हेलीकॉप्टर की इस निकटता से आतंकित और विचलित होते देखे गये। दस मिनट का यह कार्यक्रम लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा और एक लुभावनी स्मृति के रूप में उनके पास सुरक्षित हो गया।

अनेक विदेशी पत्रकारो और कैमरामैनो ने अभिषेक का विवरण लिया और चित्राकन किया। जर्मन टेलीवीजन का एक दल प्रारम्भ से अन्त तक अपने कैमरो मे इस दुर्लभ सयोग को अकित करता रहा। निश्चित ही घर लौटकर ये कैमरामैन एक अद्भुत और अनोखा दृश्य अपने देश-वासियों के समक्ष प्रदर्शित कर सके होगे।

आकाशवाणी बंगलोर से 30 मार्च को रात्रि 9-30 से 10-39 तक महा-मस्तकाभिषेक के सम्बन्ध मे विशेष कार्यक्रम और मस्तकाभिषेक का आँखो देखा विवरण प्रसारित किया गया।

आभार

पचामृत अभिषेक, जो वास्तव मे एकादश-अमृत अभिषेक हो गया था, समाप्त होने पर नौ-रत्न और सोने-चाँदी के पुष्पो की वर्षा की गयी। उसके पश्चात् महामंगल आरती के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। चौदह वर्ष के बाद यह शुभ दिन आया था। अब कम-से-कम बारह वर्ष के लिए, और शायद अधिक के लिए यह महोत्सव स्थिगिन हुआ। अभिषेक समाप्त होने पर अतिथियो को प्रसाद वितरण किया गया। शाम को रत्नत्रय-मण्डप मे सभा करके साहु शान्ति-प्रसादजी ने मुख्यमन्त्री श्री एस० निजलिंगप्पा का सार्वजनिक सम्मान किया। उन्हे एक मानपत्र समर्पित किया गया जिसमे उत्सव की सफलता मे शासकीय योगदान की सराहना की गयी थी तथा एस० डी० जे० एम० आई० के गठन के लिए श्री निजलिंगप्पा के प्रति समस्त जैन समाज की ओर से कृतज्ञता प्रगट की गयी थी। सभा के अन्त मे भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी ने भी मुख्यमन्त्री का आभार मानते हुए उन्हे आशीर्वाद दिया।

1967 की यह प्रथम तिमाही देश के लिए स्थिरता की अवस्था नही थी। देश में खाद्यान्नों का अभाव था। पूरे वर्ष के लिए भी सरकार के भण्डार मे अनाज नही था। खाद्यान्न के आयात के प्रयास किये जा रहे थे। मँहगाई बढ रही थी। यद्यपि आज के मुकाबिले वह कुछ नही थी क्योंकि उस समय सोना पौने दो सौ रुपया तोला और चाँदी पौने चार सौ रुपया किलो थी।

एक वर्ष पूर्व पाकिस्तानी आक्रमण से उबरे देश मे अभी एक माह पूर्व ही आम चुनाव हुए थे और उत्तर भारत मे जगह-जगह राजनैतिक उथल-पुथल का पूर्वाभ्यास हो रहा था। विद्यार्थियो की परीक्षाएं चल रही थी। गर्मी खूब पडने लगी थी। पानी की भी तगी थी। इन परिस्थितियो मे उत्सव की यह सफलता सन्तोषजनक भर नही, सयोजको के लिए आशातीत कही जानी चाहिए।

कलश वितरण

इस बार सभी कलश श्रवणबेलगोल में ही आवंटित किये गये। एक भी कलश का पूर्व आरक्षण नही हुआ। एक हजार आठ कलशो का वर्गीकरण करते समय प्रथम 51 कलश बोलियाँ बोलकर प्रदान करना तय किया गया। यह भी शर्त रखी गयी इनमे से कोई भी बोली एक हजार से कम पर समाप्त नही की जायेगी। 28 मार्च को बोलियाँ बोलनेवाले कम थे अत 29 की रात्रि मे बोलियाँ करायी गयी जिनमे 41 कलशो का ही आवटन हो सका। शेष 857 कलश निर्धारित राशियो मे उपलब्ध कराये गये। एक सौ रत्न कलश एक हजार रुपये की दर से, तीन सौ स्वर्ण कलश पाँच सौ रुपया प्रत्येक की दर से और शेष 557 रजत कलश दो सौ रुपया प्रत्येक की दर से उपलब्ध कराये गये। इस प्रकार कलश वितरण से लगभग पाँच लाख की आय का अनुमान किया गया था। 1008 मे से कुल 797 कलश ही आवंटित किये जा सके जिनसे वास्तविक आय लगभग तीन लाख की हुई। यह राशि 1953 मे प्राप्त राशि से लगभग दोगुनी थी। कलशो के आवटन से इतनी भारी राशि अर्जित करने मे पूज्य देशभूषणजी महाराज की प्रेरणा और पण्डित वर्द्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री के प्रयास सहायक रहे। जो लोग इतनी राशि देकर कलश नही ले पाये उनके लिए 31 मार्च से दस रुपये का टिकिट लेकर अभिषेक करने का अवसर दिया गया। पचामृत अभिषेक के कलशो की बोलियाँ अधिक राशि नही ला सकी। मुख्य अभिषेक के उपरान्त अन्य दिनो मे पचामृत अभिषेक कराने के लिए 1001/- की राशि निर्धारित की गयी। दिनाक 2, 16, 23, 27 और 30 अप्रैल, 7, 12 और 28 मई, एव 4 जून को, कुल मिलाकर 9 पचामृत अभिषेक और हुए। साधुओ और विद्वानो के लिए 4-6-67 का अन्तिम अभिषेक मठ की ओर से कराया गया।

भण्डार सहायता

प्राय: सभी जैन तीर्थों की यह परम्परा है कि वहाँ जाकर हर यात्री क्षेत्र अभिवृद्धि के लिए कुछ न कुछ दान अवश्य करता है। राशि भले ही थोडी हो परन्तु वह समाज के आम आदमी की अपनी सस्कृति के प्रति सहज चेतना का प्रतीक है। इस मेले मे भी भण्डार सहायता देने के लिए लोगो की भारी भीड आती रही। रेगुलर स्टाफ से जब काम नही चला तब यह सहायता प्राप्त करने के लिए सात अतिरिक्त कर्मचारी पाँच दिन के लिए नियुक्त करने पड़े। कुल मिला-कर पैंतीस हजार रुपया इस मद से प्राप्त हुआ जो पिछले उत्सव से तीन गुना है।

प्रवेश शुल्क

शासकीय कमेटी के पूर्व निर्णय के अनुसार विन्ध्यगिरि पर जाने वाले हर यात्री से 25 पैसे प्रवेश शुल्क वसूल करना तय हुआ था। इस प्रस्तावित शुल्क का चारो ओर से विरोध हुआ।

मैनेजिंग कमेटी ने अपनी बैठक में यह प्रस्ताव समाप्त तो नही किया पर उसमें कुछ सुधार किये। अब इस वसूली को प्रवेश शुल्क की जगह 'श्रवणबेलगोल क्षेत्र-वृद्धि फण्ड' कहा गया। त्यागियों, विद्वान अतिथियों और व्यवस्था से सम्बद्ध जनो को इस लेवी से मुक्त माना गया और जो बार-बार टिकिट लेने से बचना चाहे उनके लिए पूरे मेले तक प्रभावशील एक रुपये का टिकट जारी किया गया। सोलह मार्च से जब इस राशि की वसूली प्रारम्भ की गयी तब यात्रियो ने इसका भारी विरोध किया। कई लोग झगडने को तैयार हो गये और वसूली लगभग असम्भव हो गयी। मुख्य अभिषेक के समय तीन दिन तक तो यात्रियो ने वसूली स्टाफ का प्रवेशद्वार पर बैठना असम्भव कर दिया। तब सामने मण्डप मे काउण्टर लगाकर, यात्रियों को समझा-बुझाकर, अनिवार्य नही ऐक्षिक बताते हुए इस क्षेत्र-वृद्धि फण्ड की वसूली का प्रयास किया गया। प्रवेशद्वार मुक्त हो जाने पर और अनिवार्यता हट जाने पर विरोध समाप्त हो गया। प्रायः यात्रियो ने इस फण्ड मे पैसा दिया और मई तक इस मद से कुल मिलाकर कमेटी को बत्तीस हजार की राशि प्राप्त हुई। परन्तु यह भी स्पष्ट हो गया कि प्रवेश शुल्क की कोई भी अनिवार्य शर्त यात्रियो को सहज स्वीकार्य नही हो सकती।

अन्य कार्यक्रम

पूरे मेला नगर मे रात-दिन भजन, कीर्तन, व्याख्यान और अनेक सास्कृतिक कार्यक्रम होते रहते थे। रत्नत्रय मण्डप इस मेले का मुख्य पाण्डाल था। इस सजे-धजे पण्डाल मे नित्य प्रति धार्मिक आयोजन, उपदेश, प्रवचन आदि होते थे। यही दिगम्बर जैन महासभा का दो दिवसीय अधिवेशन हुआ। अखिल भारतीय महिला परिषद् और जैन सिद्धान्त सरक्षिणी सभा के अधिवेशन भी सम्पन्न हुए। कन्नड साहित्य परिषद् बगलोर ने 26 से 28 मार्च तक कन्नड सम्मेलन के छियालीसवे अधिवेशन का आयोजन किया। यह त्रिदिवसीय अधिवेशन जैन विद्या के मर्मज्ञ विद्वान डॉ० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। अनेक ख्याति प्राप्त विद्वानो मनीषियों ने इस सम्मेलन मे भाग लिया।

दिगम्बर जैन महासभा के अधिवेशन मे भूतपूर्व केन्द्रीय शिक्षा मत्री और मैसूर विश्वविद्यालय के वर्तमान उपकुलपति श्री कालूलाल श्रीमाली ने अपने उद्घाटन भाषण में कर्नाटक की जैन संस्कृति की भरपूर सराहना की। जैन-विद्या के अध्ययन अध्यापन के लिए उन्होने विश्वविद्यालयो मे जैन पीठ की स्थापना पर भी जोर दिया। आगे चलकर श्रीमालीजी ने मैसूर विश्वविद्यालय मे जैन चेयर की स्थापना कराने में सफलता भी प्राप्त की। इस विभाग से जैन-विद्या के अध्ययन अध्यापन का महत्त्वपूर्ण कार्य हुआ है व हो रहा है।

कलशो की नीलामी मे पहला कलश श्री एम० के० जिनचन्द्रन बैनाण ने रु० 47,500 00 मे बोली बोलकर प्राप्त किया था। प्रथम कलश प्राप्त करने के सम्मान स्वरूप उन्हे हाथी पर बैठाकर जुलूस में लेजाने का आयोजन किया गया, परन्तु उन्होने हाथी पर बैठना स्वीकार नही किया। उन्होंने प्रथम कलश द्वारा अभिषेक अपने साथी विद्वान पण्डित श्रीकांत भुजबली शास्त्री के हाथ से कराया।

महामस्तकाभिषेको के निकटवर्ती इतिहास मे पहली बार मैसूर नरेश महाराजा चामराज वाडियार की अनुपस्थिति प्रायः सभी को खल रही थी। राज्य के मुख्यमंत्री श्री निजलिंगप्पा

शासन का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

अभिषेक का मच लकडी के खम्भो से तैयार किया गया था। यह सकीर्ण तो था ही, कमजोर भी था। मुख्य अभिषेक के बाद एक दिन मच का एक हिस्सा यात्रियो के भार से टूटकर गिर गया परन्तु भाग्य से किसी को भी अधिक चोट नही आयी।

हज़ारो दर्शनार्थी, जो आगामी दो दिनो तक पर्वत पर नही जा सकते थे, 28 और 29 मार्च को विंध्यगिरि पर गये। दोनो दिन यात्रियो का ताता लगा रहा। कुछ महिलाएँ, वृद्धजन और अपग डोली पर जाते थे। डोली से ऊपर जाने का भाडा दस रुपया तथा नीचे लौटने का पाँच रुपया निर्धारित था पर 29 और 30 मार्च के लिए इसे बढ़ाकर पन्द्रह और दस रुपया कर दिया गया था।

बिजली की व्यवस्था उत्तम रही। यात्रियो के उपयोग मे आने वाले प्राय. सभी मार्गों और मन्दिर-मूर्तियो पर पर्याप्त प्रकाश बना रहता था। सारा मेला रात्रि मे स्वप्न-लोक-सा आकर्षक लगने लगता था। बिजली फेल होने की शिकायत प्राय. नही रही।

स्वास्थ्य सेवाएँ

स्वास्थ्य सेवाओ का आवश्यक प्रबन्ध किया गया था। मेले मे तीन डिस्पेन्सरी खोली गयी थी। मेले मे आनेवाले हर यात्री को हैज़े का टीका लेकर उसका प्रमाणपत्र पूरे समय अपने पास रखना आवश्यक था। स्वास्थ्य विभाग का एक उडनदस्ता पाँच मील के भीतर से सभी ग्रामो को लगातार देखता था ताकि छूत की किसी भी बीमारी की सूचना मिलने पर तत्काल कार्यवाही की जा सके। लगभग 400 सफाई कर्मचारी बाहर से बुलाये गये थे। कुल मिलाकर स्वास्थ्य सेवाएं सन्तोषप्रद रही। यद्यपि मौसम उस दृष्टि से अच्छा नही था। पीने के पानी की अव्यवस्था के कारण किसी भी क्षण सक्रामक रोगो का आक्रमण हो सकता था। सफाई का प्रबन्ध भी नियोजित ढग से नही हुआ परन्तु इतना सब होते हुए भी यह सौभाग्य की बात कही जानी चाहिए कि मेले मे कोई सक्रामक बीमारियाँ उत्पन्न नही हुईं। छोटी-मोटी बीमारियो, चोटो आदि के लगभग साढे तीन सौ रोगियो का अस्पतालो मे इलाज किया गया। मार्च समाप्ति पर था अत गर्मी बहुत पड रही थी। धूप तेज हो जाती थी इसलिए लू लगने के प्रकरण अधिक देखे गये। सेन्ट जॉन एम्बुलेन्स बिग्रेड मैसूर की ओर से दो सप्ताह तक नि.शुल्क सेवा के रूप मे एक अस्पताल ही मेले मे चलाया गया। लगभग तीन सौ लोगो ने इन सेवाओ से लाभ लिया। दिन-रात उपलब्ध रहने वाली इस मानव सेवा की लगन पूरे मेले मे सराही गयी।

फायर फोर्स बगलोर के तीन अग्नि-शामक दल तीन सप्ताह तक मेले मे उपलब्ध रखे गये परन्तु उनके उपयोग की एक बार भी आवश्यकता नही पड़ी।

यातायात

मैसूर स्टेट रोड ट्रान्सपोर्ट कॉरपोरेशन ने मन्दागेरे, आरसीकेरे, हासन और बंगलोर से श्रवण-बेलगोल के लिए पर्याप्त सख्या मे स्पेशल बसे चलायी। बस स्टेण्ड नगर के बाहर लगभग एक मील दूर बनाया गया। निजी वाहन भी वही बाहर ही रोक दिये जाते थे। केवल स्पेशल पास

वाले वाहन ही नगर में आ पाते थे। नगर में वन-वे-ट्रेफिक लागू किया गया था। बस स्टेण्ड से ठहरने के स्थान तक जाने के लिए या सामान आदि ले जाने के लिए कोई साधन उपलब्ध नही था इसलिए लोगों को कष्ट उठाना पड़ा।

नागर आपूर्ति

डायरेक्टर फुड एण्ड सिविल सप्लाई बंगलोर ने मेले के लिए सभी आवश्यक सामग्री की पूर्ति के लिए अच्छा प्रयत्न किया था। 200 टन शक्कर, 150 टन गेहूं, 50 टन आटा और मैदा तथा 50 टन चावल का विशेष आवंटन कराकर इस सारी सामग्री को सहकारी समितियो के माध्यम से मेले मे यात्रियो को उपलब्ध कराया गया। उन दिनो सहकारी आन्दोलन सेवा भावना पर आधारित होकर चलता था इसलिए उपभोक्ताओ को किसी प्रकार की असुविधा नही हुई।

स्टेट बैंक ऑफ मैसूर ने अपनी शाखा मुसाफिरखाना के एक कमरे मे चलायी। एक अस्थाई पोस्ट ऑफिस भी खोला गया। टेलिफ़ोन की सुविधा मेले में सर्वत्र और विंध्यगिरि के ऊपर तक पहुँचायी गयी। कई सस्थाओं और सस्थानो ने अस्थायी टेलिफ़ोन लाइनो का लाभ उठाया।

पुलिस की उत्तम व्यवस्था रही और कोई अशोभनीय घटना मेले मे नही घटी। सुरक्षा के लिए एक हजार पुलिस सिपाही बाहर से वहाँ पहुँच गये थे। वायरलेस स्टेशन स्थापित किया गया। इसके अलावा होम गार्ड्स और महिला स्वय-सेवक भी व्यवस्था मे हाथ बटा रहे थे। भारत सेवा दल के स्वयसेवको का योगदान विशेष उल्लेखनीय रहा।

जनकार्य विभाग ने लगभग चार लाख के व्यय से चारों ओर की सड़को की मरम्मत करायी थी।

पानी की तकलीफ रही। 30 मार्च को सबेरे तक नलो मे पानी नही था। लोगों को पीने के पानी की बहुत परेशानी हुई और इसकी आलोचना होती रही। प्राय. सबने यह अनुभव किया कि ऐसे बड़े मेले मे आवास और जल जैसी व्यवस्थाएँ और अच्छी चाहिए। यद्यपि हमेशा की तरह बक्का टैंक से जलपूर्ति करने का उपाय किया गया था। दो नलकूप भी खोदे गये थे। परन्तु एनमौके पर मेले तक पानी लानेवाली मेन पाइप लाइन मे दो तीन बार टूट-फूट हुई और जल-कल विभाग के लोग, दिन-रात परिश्रम करके भी, 30 मार्च तक भी मेले मे पानी नही पहुँचा पाये। गर्मी की अधिकता के कारण जलपूर्ति की यह अव्यवस्था अधिक कष्टकर, अधिक अखरनेवाली रही।

इसी प्रकार पूछ-ताछ कार्यालय भी अपने नाम को सार्थक नही कर पाया। एक छोटे-से कमरे मे बैठने वाले दो तीन लोग, जिनके पास पूरे मेले के सदर्भ मे किसी भी बात की ताजी जानकारी नही होती थी, कैसे इतने बड़े मेले का पूछ-ताछ कार्यालय चला सकते थे? यात्रियो को प्राय: उस कार्यालय में पहुँचकर निराशा ही हाथ लगती थी।

आवास-व्यवस्था

1967 के उत्सव में सबसे ज्यादा खराब, सबसे ज्यादा तकलीफदेह और सबसे ज्यादा बदनामी

वाली व्यवस्था आवास की रही। शासन के जन कार्य विभाग की देखरेख में 10 × 10, 10 × 15 और 10 × 20 फुटवाली तीन तरह की झोपड़ियाँ तैयार करायी गयी थी। 18 मार्च से 5 अप्रेल तक पूरे सीजन के लिए इनका भाडा क्रमश: 100/-, 150/- और 200/-निर्धारित किया गया था। कुल तेरह सौ झोपडियो मे लगभग आधी खली पडी रही। यह इसलिए नही हुआ कि मेले मे भीड नही थी, बरन् इसलिए हुआ कि उन झोपडियों की हालत ही मनुष्यों के ठहरने के लायक नही थी। उनकी बनावट निहायत गन्दे किस्म की रही और उनमे बिजली, पानी और सफाई का भी प्रबन्ध नही हो पाया। मठ के आस-पास जो आवास बनाये थे वे प्राय: भर गये पर दूर नगैयनकोप्पल मे जो पाँच सौ आवास बने वे सब-के-सब खाली पडे रहे। उनकी जमीन तक बराबर नही की गयी थी और 27-28 मार्च तक वहाँ बिजली पानी का कोई प्रबन्ध नही हो सका था। आवास व्यवस्था से निराश यात्रियो को भारी किराये पर छोटे-छोटे कमरो मे, मकान के बरामदो मे और पेडो के नीचे गुजारा करना पडा।

कॉलिज होस्टल के 30 कमरे चार सौ रुपये प्रत्येक की दर से दिये गये। छह डारमेटरी बनाई गयी थो वे सभी भरी रहीं। शासकीय अधिकारियो के निवास के लिए गवर्नमेन्ट हाउस मैसूर से मँगाकर बीस तम्बू लगाये गये। निजीवाहन वाले बहुत लोग चन्नरायपाटन, मैसूर आदि स्थानो मे ठहरे ओर रोज आते-जाते रहे।

मेले मे सैंकडो छोटी-मोटी दुकानें ऊँची कीमत पर अपना सामान बेचते हुए देखी गयी। मस्तकाभिषेक जैसे महत्त्वपूर्ण धार्मिक आयोजन मे भी मनोरंजन की सुविधाएँ उपलब्ध रही। दो सफरी सिनेमा वालो ने और दो नाटक मण्डलियो ने 10-12 मार्च से ही श्रवणबेलगोल मे अपने तम्बू तान रखे थे।

मेला कमेटी के लोग प्रारम्भ मे कुछ निराश हो रहे थे। दो दिन पूर्व तक यात्रियो की सख्या नगण्य थी। ऐसा लगता था कि अपेक्षित सख्या मे लोगो का आगमन शायद नही हो पायेगा। परन्तु महोत्सव की पूर्व संध्या से चारो ओर से, हर प्रकार के वाहनो मे यात्रियो का आना प्रारम्भ हुआ। स्त्री-पुरुषो की जैसे बाढ ही श्रवणबेलगोल मे आ गयी। देखते-ही-देखते सारे स्थान भर गये। वृक्ष और चट्टाने, खेत और सडक के किनारे अथवा जहाँ जो भी स्थान था वह सब यात्रियो का अस्थायी निवास बन गया। गाँव से लगे हुए सारे तालाब खुले स्नान-गृहो का काम देते रहे। इस प्रकार इन सारी खामियो के बावजूद, मुख्य अभिषेक के दिन सब कुछ अपने आप ठीक हो गया। लोगो ने जैसे बना तैसे, अपनी व्यवस्था स्वत. कर ली और वे इस महोत्सव का एक सहयोगी अग बन गये। किसी के चेहरे पर कोई परेशानी नही और किसी जुबान पर कोई शिकायत नही। शायद ऐसा इसलिए हुआ कि गोमटस्वामी का दर्शन और अभिषेक का दुर्लभ दृश्य उन्हे आनन्दित कर रहा था और उस आनन्द के सामने वे अपने सारे कष्ट, सारी असुविधाएँ, सारी परेशानियाँ भुला बैठे थे।

आय-व्यय : कुछ आंकड़े

मेले मे कुल आय का एक सामान्य लेखा-जोखा इस प्रकार रहा—

	रु० पै०
कलशों से कुल प्राप्तियाँ	2,95,802 00
भण्डार कलेक्शन से कुल आय	35,118.80
विंध्यगिरि प्रवेश-शुल्क से प्राप्त	32,056.00
गोलक कलेक्शन	21,769.13
आवासो का किराया झोपडी से	74,810.00
टूरिस्ट होस्टल का किराया	16,240.00
डारमेटरी का किराया	3,650 00
मस्तकाभिषेक के लिए बाद मे प्राप्त	4,004.00
पचकल्याणक पूजा से आय	6,275.50
सीढियो की मरम्मत के लिए	1,403.00
फुटकर आय···	715 85
सामान बिक्री से	1,614.72
इस प्रकार कुल आय	4,93,459.00

इस आय के मुकाबले खर्च इस प्रकार रहा—

		रु० पै०
पूजा-अभिषेक की सामग्री का खर्च		93,101 32
पूजा के अतिरिक्त कार्यों मे खर्च		21,203 39
बैंक कमीशन		157.90
	कुल खर्च	1,14,462.61
व्यय पर आय का आधिक्य		3,78,996.39
	कुल योग	4,93,459.00

कमटी ने उत्सव की व्यवस्था के लिए लगभग चार लाख के प्रत्यक्ष खर्च किये। उनका विवरण इस प्रकार है—

	रु० पै०
आवासो के निर्माण का व्यय	2,19,823.00
सफाई व्यवस्था मे	51,964.94
जल व्यवस्था मे	98,934.00

मंच निर्माण का व्यय	13,596.00
टेन्ट का खर्च	4,147.00
प्रिंटिंग स्टेशनरी खर्च	1,091.89
स्वयसेवको का भोजन खर्च	2,277.50
अन्य व्यय	2,000.55
पण्डाल निर्माण का व्यय	8,192.00
वेतन व कार्यालय खर्च	11,686.45
कुल योग	4,13,713.33

बिजली का खर्च इसके अतिरिक्त हुआ।

आज का श्रवणबेलगोल

सवा दो हज़ार वर्षों के क्रमबद्ध इतिहास से समर्थित, अनेक राजवंशों के उत्कृष्ट निर्माताओं के परिश्रम से कृतार्थ और हज़ार वर्षों से विश्व विख्यात, इस तीर्थराज श्रवणबेलगोल की पावन धरा पर, गोमटस्वामी की मनोहर मूर्ति के अलावा भी, छोटे-बड़े बत्तीस जिनायतन स्थित हैं। चन्द्रगिरि पर इनकी संख्या सोलह, नगर मे आठ और विन्ध्यगिरि पर आठ है। इन सभी प्रासादो को एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य मे, एक साथ देखने पर ही आज के श्रवणबेलगोल की सागोपाग छवि दृष्टि मे आ सकती है। यहाँ उन सभी का सक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लेना उपयुक्त होगा।

चन्द्रगिरि के प्रासाद

श्रवणबेलगोल मे चन्द्रगिरि ही सबसे प्राचीन साधना-धाम है। इसका स्थानीय नाम चिक्कबेट्ट है। ईसापूर्व तीसरी शताब्दी मे अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामी की अन्तिम साधना और समाधि इसी पर्वत पर सम्पन्न हुई। उत्तर भारत मे भीषण दुर्भिक्ष के समय अपने बारह हज़ार शिष्यो के साथ वे यहाँ पधारे, इससे प्रमाणित है कि उस समय भी तीर्थधाम के रूप मे श्रवण-बेलगोल की प्रसिद्धि दूर-दूर तक व्याप्त थी। जिस गुफा मे भद्रबाहु स्वामी ने तपस्या की थी उसमे उनके चरणचिह्न आज भी पूजे जाते है। शिलालेख और पुराण बताते हैं कि उनके पश्चात् उनके प्रिय शिष्य सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य ने भी जैनेश्वरी साधना करते हुए इसी पर्वत पर समाधि-मरण प्राप्त किया। चन्द्रगुप्त की गुरु-भक्ति इतनी उत्कृष्ट थी, उनकी तपस्या ऐसी कठोर और साधना इतनी महान थी कि इस छोटे पर्वत 'चिक्कबेट्ट' का नाम ही 'चन्द्रगिरि' पड गया। समुद्रतल से 3053 फुट और धरातल से केवल 175 फुट ऊँचे इस पर्वत पर आज हमें जो सोलह प्रासाद प्राप्त होते हैं वे इस प्रकार हैं—

1. **भद्रबाहु गुफा**—एक बडी चट्टान मे उकेरी गयी इस गुफा का द्वार सुन्दर है, पर भीतर केवल ध्यान लगाने भर का स्थान है। बैठकर ही लोग अपना माथा उन शिलोत्कीर्ण चरणो से लगाकर पवित्र करते हैं। मनुष्य के हाथों सँवारी गयी यह एक प्राकृतिक गुफा है।
2. **चन्द्रगुप्त बस्ती**—कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त की स्मृति मे इस मन्दिर का निर्माण हुआ था। चन्द्रगुप्त के पौत्र सम्राट् अशोक द्वारा इसका जीर्णोद्धार कराने की बात भी कही जाती है। चन्द्रगिरि के मन्दिरों मे यह सबसे प्राचीन है। कुल 19 फुट लम्बे और 15 फुट चौडे इस मन्दिर की वास्तुकला गुप्तकाल के अनुरूप तो है, परन्तु इसमे समय-समय पर परिवर्तन भी होते रहे हैं। बारहवी शताब्दी में चतुर शिल्पी 'दासोज' द्वारा निर्मित वह प्रसिद्ध जाली इसी मन्दिर में लगी है जिसमें 90 कोष्ठको में आचार्य भद्रबाहु के निष्क्रमण और चन्द्रगुप्त की दीक्षा तथा साधना के दृश्य बडी कुशलता से अंकित किये गये हैं। कालान्तर में दूसरे मन्दिर के निर्माण ने चन्द्रगुप्त बस्ती को लगभग पूरा ढँक लिया है।
3. **पार्श्वनाथ बस्ती**—चन्द्रगुप्त बस्ती के बाद सबसे पहले निर्मित होनेवाला यह पार्श्वनाथ

मन्दिर ग्यारहवी शताब्दि मे बना ज्ञात होता है, क्योंकि इसके एक स्तम्भ पर मल्लिषेण मलधारिदेव के समाधिमरण का शक सवत् 1050 (ईस्वी 1128)—का शिलालेख अंकित है। सप्तफणी नाग की फणावलि से मण्डित भगवान् पार्श्वनाथ की पन्द्रह फुट ऊँची कायोत्सर्ग प्रतिमा इस पर्वत की सबसे बड़ी पार्श्व प्रतिमा है। मन्दिर की बाह्य भित्तियाँ छोटे-छोटे स्तम्भो और कोष्ठको से सजायी गयी हैं। मन्दिर की लम्बाई 59 और चौड़ाई 19 फुट है।

4. **कत्तले बस्ती**—चन्द्रगिरि का सबसे विशाल मन्दिर है। इस 124 फुट लम्बे और 40 फुट चौड़े मन्दिर का निर्माण गगराज की माता पोचब्बे की स्मृति मे सन् 1118 मे कराया गया। इसी मन्दिर ने अपने विशाल बराण्डे में चन्द्रगुप्त बस्ती को समाहित कर लिया है। इतने बड़े मन्दिर मे छोटे से प्रवेशद्वार के अतिरिक्त कोई झरोखा या वातायन न होने से भीतर एकदम अन्धकार रहता था, इसीलिए इसका नाम—अँधेरा मन्दिर 'कत्तले बस्ती' पड गया लगता है। बरामदे मे पद्मावतीदेवी की मूर्ति होने से इसे 'पद्मावती-मन्दिर' भी कहते है। यहाँ भीतरी प्रदक्षिणा से सयुक्त यही एकमात्र मन्दिर है। इसका शिखर और ऊपर की वेदी नष्ट हो गयी है। गर्भालय मे मूलनायक भगवान आदिनाथ की छह फुट उत्तुग मनोज्ञ पद्मासनस्थ प्रतिमा विराजमान है।

5. **शान्तिनाथ बस्ती**—सोलह फुट ऊँची शान्तिनाथ भगवान की मूर्ति को धारण करनेवाला यह मन्दिर आकार मे बहुत छोटा, केवल 24×16 फुट है। मन्दिर के निर्माण का समय ज्ञात नही है पर दीवारो और छत पर चित्रकारी के निशान तथा अन्य सकेतो के अनुसार 15वी-16वी शताब्दी इसका अनुमानित काल ठहरता है।

6. **पार्श्वनाथ बस्ती**—26×24 फुट आकार के इस मन्दिर मे दो हाथ ऊँची पार्श्व प्रभु की पद्मासनस्थ प्रतिमा विराजमान है। इसका भी विशेष इतिहास ज्ञात नही है।

7. **चन्द्रप्रभ बस्ती**—मन्दिर का आकार 43×25 फुट है। अन्तराल मे श्याम यक्ष और ज्वालामालिनी यक्षी की मूर्तियाँ हैं। दो हाथ अवगाहना की चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा गर्भगृह मे स्थापित है। सामने की चट्टान पर 'शिवमारन बसदि' अंकित है। यदि इसे श्रीपुरुष के पुत्र गंगनरेश शिवमार (द्वितीय) का उल्लेख माना जाय तो मन्दिर का निर्माण-काल आठवी शताब्दी का अन्तिम चरण ठहरेगा।

8. **चामुण्डराय बस्ती**—मन्दिर निर्माण कला के आधार पर चन्द्रगिरि का सर्वश्रेष्ठ मन्दिर कहा जा सकता है। यह दो मजिला मन्दिर 68×36 फुट आकार का है। गर्भगृह मे नेमिनाथ भगवान् की पाँच फुट अवगाहना वाली सुन्दर मूर्ति प्रतिष्ठित है। इस मन्दिर का निर्माण महामात्य चामुण्डराय के द्वारा, अथवा उनके नाम पर, गोमटस्वामी की प्रतिष्ठा के शीघ्र बाद, सन् 982 के आस-पास कराया गया। मन्दिर की ऊपरी मजिल बाद मे बनायी गयी जिसमे स्थापित पार्श्वनाथ प्रतिमा पर चामुण्डराय के पुत्र जिनदेवन का उल्लेख है। यह यहाँ का अकेला जिनालय है जिसकी बाह्य-भित्तियाँ प्रासादीय प्रतिमाओ से सज्जित और कुछ प्रतिमाओ से अलकृत हैं। मन्दिर अपने सारे अभिप्रायो के साथ पूरी तरह सुरक्षित और सागोपाग खडा हुआ आज भी अपने निर्माता की कीर्ति पताका फहरा रहा है।

9. **शासन बस्ती**—भगवान् आदिनाथ का 55 × 26 फुट लम्बा-चौड़ा जिनालय है। मण्डप में गोमुख और चक्रेश्वरी की प्रतिमाएँ हैं। बाहरी दीवारें भी कोष्ठकों तथा स्तम्भो से सज्जित दिखायी गयी हैं। शक संवत् 1032 का एक शासन इस मन्दिर के द्वार पर उत्कीर्ण है जिससे इसका भी निर्माणकाल ग्यारहवी शताब्दी ठहरता है।

10. **मज्जिगण्ण बस्ती**—अनन्तनाथ तीर्थंकर का छोटा परन्तु सज्जित मन्दिर है। सम्भवतः निर्माता श्रावक के नाम पर ही इसका नाम प्रसिद्ध हुआ है। मन्दिर की लम्बाई-चौडाई 32 × 19 फुट है। निर्माणकाल 12वी-13वी शताब्दी अनुमान किया जाता है।

11. **एरडुकट्टे बस्ती**—55 × 26 फुट का देवालय है। सेनापति गगराज की पत्नी लक्ष्मी द्वारा बारहवी शताब्दी के प्रथम चरण मे निर्मित यह मन्दिर आदिनाथ स्वामी को समर्पित है। पाँच फुट ऊँची मूलनायक मूर्ति सुन्दर है।

12. **सवतिगन्धवारण बस्ती**—जैनधर्म छोडकर वैष्णवधर्म मे दीक्षित होनेवाले होयसल नरेश विष्णुवर्द्धन की आस्थावती जैन भार्या महारानी शान्तलादेवी ने अपनी सात सौतो के हठ के बावजूद शान्तिनाथ भगवान् का यह मनोहर मन्दिर निर्माण कराया था। सौत रूपी सबल हाथियो का मद निवारण करने के कारण शान्तलादेवी को 'सवतिगन्धवारण' उपनाम प्राप्त हुआ था, उसी उपलक्ष्य मे इस मन्दिर का नामकरण हुआ है। मूलनायक शान्तिनाथ भगवान् की पीठिका पर अकित सन् 1122 ई० का मूर्तिलेख इस बस्ती के निर्माण के काल को रेखाकित करता है। इतिहास बताता है कि दिगम्बर जैन आगम की सर्वोत्कृष्ट धरोहर 'षट्खण्डागम धवल सिद्धान्त' को हमारे लिए सुरक्षित रखने का महान पुण्य कार्य भी इसी भव्यात्मा महिला द्वारा सम्पन्न हुआ। आज मूडबिद्री मे धवल सिद्धान्त की जो एकमात्र ताडपत्रीय प्रतियाँ उपलब्ध है, वे मूलतः श्रवणबेलगोल मे ही रही हैं। यहाँ 'सिद्धान्त बस्ती' मे ये ग्रन्थराज शताब्दियो तक विराजमान रहे। फिर कारणवश, सम्भवतः सत्रहवी शताब्दी में, सुरक्षा की दृष्टि से इन्हें मूडबिद्री ले जाया गया। इन प्रतियो मे से एक पर इनका लेखनकाल अकित है जो 1113 ई० बैठता है। यही वह काल था जब महारानी शान्तलादेवी पूरे प्रयत्नो के साथ जैनधर्म और संस्कृति के लिए चिन्तामग्न थी। चन्द्रगिरि पर जिनालय के निर्माण के साथ उसने ही ये प्रतियाँ तैयार करायी ऐसा अनुमान इतिहास समस्त कल्पनाओं के सर्वाधिक निकट और उपयुक्त अनुमान ज्ञात होता है।

13. **तेरिन बस्ती**—का दूसरा नाम 'बाहुबली बस्ती' भी है। कुल 70 × 26 फुट आकार के इस जिनालय मे बाहुबली स्वामी की पाँच फुट ऊँची प्रतिमा है। राजा विष्णुवर्द्धन के सभासद पोयसल सेठ और नेमि सेठ ने अपनी माताओ माचिकब्बे और शान्तिकब्बे की स्मृति में इसका निर्माण कराया था। मन्दिर के सामने एक नन्दीश्वर मेरु की सरचना के कारण इसका नामकरण हुआ लगता है। निर्माणकाल 1125 ई० के आसपास ही होना चाहिए।

14. **शान्तीश्वर बस्ती**—56 × 30 फुट आकार का, सम्भवतः कुछ काल उपरान्त बना हुआ मन्दिर है। पीछे की दीवाल मे भी एक तीर्थंकर प्रतिमा का अकन है। निर्माता का नाम और काल जानने का कोई साधन नहीं है।

15. **कूगे ब्रह्मदेव स्तम्भ**—एक हजार साल से अधिक प्राचीन है। मन्दिर समूह के प्रवेशद्वार

पर स्थित इस स्तम्भ के शीर्ष पर शासन यक्ष ब्रह्मदेव का अकन होने से यह नाम प्रसिद्ध हो गया, अन्यथा यह एक सामान्य 'ध्वज-स्तम्भ' है, जैसा हरेक बडे तीर्थ पर होता है। स्तम्भ की पीठिका पर दिशाओ और विदिशाओ मे आठ गजराज अकित थे, अब उनमे से कुछ नष्ट हो गये हैं। सन् 974 मे दिवगत गगनरेश मारसिंह (द्वितीय) का स्मृति आलेख इस स्तम्भ पर अकित है, इसीसे इसका निर्माणकाल 974 के पूर्व का निर्धारित किया गया है।

16. **महानवमी मण्डप**—मन्दिरो के पीछे की ओर ऊँचे चबूतरे पर चार खम्भो पर आधारित दो मनोहर मण्डप बने है। मण्डपो की बनावट और उन पर शिखर की सजावट सुन्दर है। दोनो के बीच एक बडे स्तम्भ पर एक शासन लेख है जिसमे नागदेव मन्त्री ने अपने गुरु नयकीर्ति आचार्य के समाधिमरण का विवरण सन् 1176 मे अंकित किया है। चन्द्रगिरि पर ऐसे और भी कुछ मण्डप तथा शासन लेख पाये जाते हैं।

इन मन्दिरो और स्तम्भो के अतिरिक्त चन्द्रगिरि पर भरतेश्वर स्वामी की लगभग हज़ार साल प्राचीन एक खण्डित प्रतिमा है। सिर से पैरो तक इसकी लम्बाई लगभग बारह फुट हो सकती थी। परकोटे के बाहर उत्तरी द्वार पर 'इरुवे ब्रह्मदेव' नामक एक और छोटा-सा मन्दिर है जिसके समीप चट्टान पर जिन प्रतिमाओ, गजो और व्यालो आदि का अकन है। यही पास मे 'कचन दोणे' और 'लक्कि दोणे' नाम के कुण्ड हैं जिन पर बारहवी शताब्दी से लेकर बाद की कई शताब्दियो के लेख अकित है। नीचे उतरते समय दाहिनी ओर यही वह 'चामुण्डराय-शिला' भी अवस्थित है, जहाँ से चामुण्डराय द्वारा विन्ध्यगिरि पर तीर चलाकर गोमटस्वामी के तक्षण के लिए शिला-फलक निर्धारित करना कहा जाता है।

विंध्यगिरि का वैभव

'विंध्यगिरि' श्रवणबेलगोल के बडे पर्वत का नाम है। स्थानीय भाषा मे इसे 'दोड्डबेट्ट' कहते हैं। समुद्र तल से 3347 फुट की ऊँचाई वाला यह पर्वत ग्राम के धरातल से 470 फुट ऊँचा है। पूरा पर्वत एक ही चट्टान का दिखाई देता है। इसी चट्टान मे उकेरी गयी लगभग पाँच सौ सीढियो के द्वारा हम ऊपर मन्दिरो के बाहरी परकोटे तक पहुँचते हैं। इस परकोटे के भीतर सात जिनमन्दिरो का समूह तथा गोमटस्वामी की भुवन-मोहिनी प्रतिमा स्थित है। परकोटे के भीतर पहुँचते ही मन्दिरो का क्रम इस प्रकार प्रारम्भ होता है—

1. **चौबीस तीर्थंकर बस्ती**—विंध्यगिरि पर प्रवेश करने पर यही पहला मन्दिर मिलता है। चारुकीर्ति पडित धर्मचन्द्र के द्वारा सन् 1648 मे निर्मित इस मन्दिर के भीतर एक छोटे से शिलाफलक पर 24 तीर्थंकरो की एकदम सामान्य मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं।

2. **ओदेगल बस्ती**—विंध्यगिरि का सबसे विशाल मन्दिर है। एक ऊँचे चबूतरे पर इसका निर्माण हुआ है। विशाल मण्डप मे अलग-अलग तीन गर्भालय हैं, इसीलिए इसे 'त्रिकूट बस्ती' भी कहा जाता है। आदिनाथ, शान्तिनाथ और नेमिनाथ की विशाल मनोज्ञ प्रतिमाएँ इन गर्भगृहो मे विराजमान हैं। मन्दिर का निर्माण तेरहवी शताब्दी के आसपास का ज्ञात होता है।

3. **त्यागद ब्रह्मदेव स्तम्भ**—इतिहास की दृष्टि से सबसे महत्त्वपूर्ण स्मारक कहा जा सकता है।

यह प्रसिद्ध है कि गोमटस्वामी की प्रतिष्ठा के उपरान्त स्वयं चामुण्डराय ने इस कलापूर्ण स्तम्भ को 'ध्वज-स्तम्भ' के रूप में यहाँ स्थापित किया था। स्तम्भ के निचले हिस्से मे चौकोर फलक पर गुरु-शिष्य की मुद्रा में दो व्यक्तियो का अंकन है। इन्हे सिद्धान्तचक्रवर्ती आचार्य नेमिचन्द्र और वीर चामुण्डराय की मूर्ति बताया जाता है। स्तम्भ का ऊपरी भाग अत्यन्त कलात्मक लता-वल्लरी अभिप्रायों से सजाया गया है। परम्परा से यह जनश्रुति चली आती है कि इसी स्थान पर बैठकर, चामुण्डराय अथवा उसके कोषाध्यक्ष गोमट-स्वामी के शिल्पियो और सहायको को उनका पारिश्रमिक प्रदान करते थे।

स्तम्भ के इसी भाग मे तीनों तरफ, मूर्ति के निर्माण का और उसकी प्रतिष्ठा का सारा विवरण उत्कीर्ण था। विश्वास किया जाता है कि उसमे गोमटेश्वर के कलाकार का नाम भी अवश्य रहा होगा। यदि शिलालेख हमारे सामने होता तो शायद श्रवणबेलोल के इतिहास की सारी प्रामाणिक जानकारी हमें उपलब्ध हो जाती, परन्तु हमारे दुर्भाग्य से इस शिलालेख के साथ एक विडम्बना हो गयी। कुछ शताब्दियो पहले कोई हेगडे कन्न नाम के महाशय इस स्तम्भ के शिल्प-सौन्दर्य पर ऐसे लुभाये कि उन्होने इसी फलक पर अपने पराक्रम का शिलालेख अंकित कराने का निर्णय कर लिया। अत्यन्त निठुरता के साथ उन्होने चामुण्डराय के उस शिलाकन को नष्ट कर दिया और उसकी जगह अपना आलेख अंकित कर दिया। इस प्रकार इतिहास का एक अनमोल और विश्वस्त शिलाकित दस्तावेज सदा के लिए नष्ट हो गया। कई बार ऐसा लगता है कि शायद आदि और अन्त रहित इस ससार चक्र मे, निरीह मानव के अपने इतिहास का सदैव यही हश्र होता रहा है। वृषभाचल पर्वत की शिला पर किसी पूर्व चक्रेश के नाम को मिटाकर सम्राट् भरत द्वारा अपना जयलेख अंकित कराने की बात हम पुराणो मे पढते आये हैं। विंध्यगिरि पर त्यागद स्तम्भ की यह घटना हमे विश्वास दिलाती है कि 'एक के विसर्जन पर दूसरे का सृजन', यही जगत की अनादि परिपाटी है।

4 **चेन्नण्ण बस्ती**—त्यागद स्तम्भ के पश्चिम में स्थित है। मन्दिर के गर्भगृह मे चन्द्रप्रभु भगवान् की ढाई फुट ऊँची प्रतिमा विराजमान है। मन्दिर के समक्ष एक मानस्तम्भ भी है। एक अभिलेख के अनुसार सन् 1673 मे चेन्नण्ण नाम के श्रेष्ठी ने इस मन्दिर का निर्माण कराया था।

5. **सिद्धर बस्ती**—अपेक्षाकृत छोटा-सा मन्दिर है। सिद्ध भगवान् की दो हाथ ऊँची प्रतिमा, चार-चार हाथ ऊँचे शिल्प-स्तम्भों के मध्य अवस्थित है। इन स्तम्भो पर भी अनेक मूर्तियाँ अंकित हैं। यह मन्दिर देखने के बाद हम गोमटस्वामी के दर्शन के लिए कुछ सीढियाँ और पार करके एक विशाल द्वार पर पहुँच जाते है।

6. **अखण्ड बागिलु**—यही वह द्वार है जिसमे से होकर हमें अपने आराध्य के दर्शनो के लिए आगे बढना है। ग्रेनाइट की एक विशाल चट्टान को कोल कर यह द्वार बनाया गया है। इसीलिए इसके नाम मे अखण्ड शब्द का प्रयोग होता है। इस द्वार के दोनो ओर स्तम्भो की रचना दिखायी गयी है और ऊपर एक अत्यन्त ऐश्वर्यशाली पेनल से द्वार को सजाया गया है। इस पेनल पर कमलासन लक्ष्मी पद्मासन विराजमान है। दोनो ओर से दो गज-राज उनका अभिषेक करते हुए दिखाये गये हैं। वैसे तो जैन शिल्प मे लक्ष्मी का अकन

ईस्वी सन् के साथ-साथ खण्डगिरि, उदयगिरि आदि स्थानों में हमे मिलने लगता है, परन्तु मध्य-काल की कला मे यह प्रस्तुति बहुत प्रभावक और मनोहर बन पडी है। इस शिल्प पर दृष्टि जाते ही क्षणभगुर राज्य-लक्ष्मी के ऊपर शाश्वत कैवल्य-लक्ष्मी की श्रेष्ठता अपने आप मन में उतर जाती है। कहा जाता है कि पुराण प्रसंगो के अभिनव चित्रकार राजा रवि-वर्मा ने इसी लक्ष्मी प्रतिमा के आधार पर देवी लक्ष्मी का वह चित्र बनाया था, जो उनके लिए बहुत ख्याति और सम्पत्ति दिलानेवाला साबित हुआ।

अखण्ड वागिलु के दाहिनी ओर द्वार के भाग के रूप मे ही बाहुबली मन्दिर और बायो ओर भरतजी का मन्दिर है। सन् 1130 मे भरतेश्वर दण्डनायक द्वारा निर्मित इन दोनो मन्दिरो मे भरत और बाहुबली की मानवकार प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं।

7. **सिद्धरगुण्डू**—अखण्ड दरवाजे के दाहिनी ओर ही चट्टान पर अनेक तीर्थकर मूर्तियाँ और बहुत-सी आचार्यों मुनियो की प्रतिमाएँ अंकित हैं। इसके साथ अनेक शिलालेख इस चट्टान पर उत्कीर्ण हैं। 'सिद्धशिला' अथवा 'सिद्धरगुण्डू' के नाम से यह चट्टान प्रसिद्ध है। द्वार के भीतर पैंसठ सीढियाँ चढ़कर हमे गुल्लिकाअज्जी वागिलु नाम का एक और द्वार पार करना पडता है। बस, तभी हम अपने आपको गोमटेश्वर के प्रागण मे पाते हैं।

8. **गोमट स्वामी मन्दिर**—सर्वप्रथम चामुण्डराय ने गोमटेश भगवान् की प्रतिमा उत्कीर्ण कराकर उसकी प्रतिष्ठा करायी। तब पर्वत शिखर पर यह मूर्ति, एक मात्र कलाकृति होने के कारण दूर-दूर से दिखाई देती थी। कालान्तर मे, सम्भवत: राजनैतिक उथल-पुथल के कारण, इस प्रतिमा के लिए सुरक्षा आवश्यक समझी गयी होगी। तभी धीरे-धीरे पीछे तरफ की सरचना, तीनों तरफ बरामदो वाला भीतरी परकोटा, बरामदों की छतें और उनके सज्जा मण्डित कगूरे, एक के बाद एक अस्तित्व मे आते गये। बाहरी द्वार पर एक मण्डप का निर्माण हुआ। द्वार के ठीक सामने ध्वज-स्तम्भ की स्थापना हुई और उसी के सहारे 'गुलिका अज्जी' की तदाकार प्रतिमा स्थापित कर दी गयी। कुछ समय बाद इस सारे प्रागण को घेरकर वह ऊँचा और मजूबत परकोटा तैयार हुआ जिसमे आज हम 'गुल्लिकाअज्जी वागिलु' मे होकर प्रवेश करते हैं।

पश्चात्कालीन सरचनाओ के इसी क्रम मे गोमटस्वामी के चरणो मे शासन यक्षो या चामरधारी इन्द्रो का निर्माण हुआ। ये इन्द्र और बाहर खडी गुल्लिकाअज्जी समकालीन भर नही, एक ही निर्माता की रचना ज्ञात होते हैं। दोनो ओर के बरामदो मे छोटी वेदिकाएँ बनाकर तीर्थंकर प्रतिमाएँ विराजमान की गयी और थोडे ही समय पश्चात् पूरी परिक्रमा को 'चौबीसी-जिनालय' के रूप मे शृगारित कर दिया गया। चार फुट से छह फुट तक अवगाहना की जिन सुन्दर और कलात्मक मूर्तियो का हमें इस परिक्रमापथ मे दर्शन होता है, यद्यपि उनका कोई क्रम नही है, पर उनमे प्राय: सभी तीर्थंकरो और बाहुबली स्वामी का भी दर्शन हमे हो जाता है। बीच मे कुछ शासन देवता प्रतिमाएँ भी वहाँ विराजी गयी हैं। इस प्रकार एक सादे परकोटे के नाम पर प्रारम्भ किया गया यह निर्माण, निर्माताओं की दस-पन्द्रह पीढियो तक, लगभग चार सौ वर्ष मे, द्वारो, मण्डपों, गर्भगृहो और वेदिकओ का एक बड़ा समूह बन गया। सब मिलाकर यह गोमटस्वामी का मन्दिर है।

गोमटस्वामी

जो गगन की तरह स्वच्छ और कल्पना की तरह विराट हैं, जिनकी आकृति में सुचिता, शक्ति, सौन्दर्य और शैशव-सुलभ सरलता एक साथ झाँकती हैं, जो विश्व के लिए विस्मयकारी हैं और लोक में जिनका कोई उपमेय नही है, ऐसे गोमटेश्वर की ओर उठनेवाली दृष्टि क्षण भर के लिए उन्हीं में खोकर रह जाती है। कैसी भी मन:स्थति लेकर हम उनके चरणो मे पहुँचें, उनका दर्शन होते ही हमारी चेतना में एक विस्फोट होता है, हमारी सवेदना सितार के झंकृत तार की तरह एक अपूर्व आनन्द से भर उठती है। महाकवि कालिदास की सौन्दर्य की परिभाषा—'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयताया:' यहाँ साकार सार्थक दिखाई देती है। जब-जब देखें, और जितनी बार देखें, वह रूप हर बार नवीनता से भरा दिखाई देता है।

ग्रेनाइट की खुरदरी चट्टान को तराशकर उत्कीर्ण की गयी यह मूर्ति, नख से शिख तक, सत्तावन फुट ऊँची है। इसके अगोपांगो को पृथक्-पृथक् नापने पर उस विराटता का अधिक अच्छा अनुमान हो जाता है। चरणो की लम्बाई नौ फुट और पंजों की चौडाई साढ़े चार फुट है, जबकि पाँव का अँगूठा पौने तीन फुट है। चरण से कर्ण तक पचास फुट और मुख भाग साढ़े छह फुट आकार का है। वक्ष भाग का विस्तार छब्बीस फुट है। आजानु लम्बित हाथों की तर्जनी अंगुली साढ़े तीन फुट, मध्यमा सवा पाँच फुट, अनामिका साढ़े चार फुट और कनिष्ठिका पौने तीन फुट लम्बी है। मूर्ति-शास्त्र के वैज्ञानिक अनुपात का अनुसरण करते हुए गोमटेश्वर के कलाकार ने कही-कही स्व-विवेक का भी प्रयोग किया है। उसे यह इसलिए आवश्यक लगा होगा कि सामने खड़े होने पर जब हम चरणों को दस फुट की दूरी से देखते हैं तब मुख पचास फुट की दूरी से हमे देखना पडता है। इस वैचित्र्य के कारण सानुपातिक आकृति तो अपने आप अनुपात विहीन लगने लगती। अनुपात के शास्त्रीय सिद्धान्तो का अतिक्रमण करके ही, गोमटस्वामी का कलाकार इस आकृति मे वह चमत्कार उत्पन्न कर सका है, कि हम जहाँ से भी देखें, यह प्रतिमा हमे न केवल सानुपातिक वरन् सौन्दर्य का भडार दिखाई देती है। इतनी विशालता के साथ, पाषाण मे मानवाकृति का इतना कोमल और इतना प्रभावरूप अन्यत्र कही नही उभर पाया। असीमित साधनो और योग्य उपादानो के बावजूद भी कोई दूसरा कलाकार, कला की उस ऊँचाई को नही छू सका। अपार है कला का यह भडार और अपरम्पार है उसकी महानता।

श्रवणबेलगोल नगर में प्राचीन मन्दिर

1. **भण्डारी बस्ती**—नगर का सबसे विशाल मन्दिर है। इसकी लम्बाई 266 फुट और चौड़ाई 78 फुट है। तीन दरवाजो वाले विशाल गर्भगृह मे काले पाषाण की खड्गासन चौबीसी प्रतिमाएँ हैं, इसी कारण इसे 'चौबीस तीर्थंकर बस्ती' भी कहते हैं। होयसल नरेश नरसिंह (प्रथम) के भण्डारी श्री हुल्ल द्वारा निर्मित होने के कारण यह भण्डारी बस्ती नाम प्रचलित हुआ है। सन् 1159 ईस्वी में इसके निर्माण के समय होयसल नरेश ने इस मन्दिर को 'भव्य-चूड़ामणि' नाम देकर इसकी व्यवस्था के लिए एक ग्राम का दान दिया था। मन्दिर के नवरंग मडण्प मे लता, वृक्ष, पशु और मनुष्यों के सुन्दर अंकन हैं।

विशाल आँगन और पूरा प्रदक्षिणा-पथ ऊँचे परकोटे से घिरा हुआ है। मन्दिर के द्वार पर सुन्दर ऊँचा मानस्तम्भ है।

2. **अक्कन बस्ती**—श्रवणबेलगोल मे होयसल मन्दिर कला का उदाहरण प्रस्तुत करनेवाला एक एकमात्र जिनालय है। होयसल नरेश बल्लाल (द्वितीय) के ब्राह्मण मन्त्री चन्द्रमौलि की जैनधर्म परायण पत्नी अचियक्कन ने 1025 ई. में इस मन्दिर का निर्माण कराया था। उसी के नाम पर इस मन्दिर का नाम 'अक्कन बस्ती' रखा गया।

   छोटे से नवरग और मुखमण्डप से सयुक्त इस मन्दिर के गर्भगृह मे पार्श्वनाथ तीर्थंकर की पाँच फुट ऊँची सप्तफणी प्रतिमा विराजमान है। सुखनासी मे पद्मावती और धरणेन्द्र की मूर्तियाँ हैं। काले पाषण के चार सुन्दर स्तम्भ और मण्डप के छत की पद्मशिलाएँ इस मन्दिर की विशेषता कही जा सकती हैं। कहा जाता है कि मन्दिर के शिखर की रचना 'महामेरू' के आधार पर की गयी है। शिखर के चार भाग भद्रशाल, नन्दन, सोमनस और पाण्डुक वनो के प्रतीक हैं। मन्दिर निर्माण का इतिहास प्रवेश द्वार के पास शिलाकित है। राज्य की ओर से इस मन्दिर के लिए 'बम्मन हल्लि' नाम का ग्राम दान मे प्राप्त होने का उल्लेख मिलता है।

3. **सिद्धान्त बस्ती**—अक्कन बस्ती के समीप, पश्चिम की ओर छोटा-सा मन्दिर है। बहुत काल तक धवल, जयधवल और महाधवल आदि सिद्धान्त ग्रन्थो की मूलप्रतियाँ इसी मदिर मे रखी रही, तभी से इसका नाम 'सिद्धान्त बस्ती' हो गया। वेदी पर एक ही शिला-फलक पर उत्कीर्ण चौबीसी प्रतिमा है जिसे उत्तर भारत के किसी यात्री ने 1542 ई० मे स्थापित कराया था। मन्दिर इससे प्राचीन है।

   यहाँ यह उल्लेखनीय है कि कुछ अभिलेखो के अनुसार सत्रहवी शताब्दी के प्रारम्भ मे मठ की आर्थिक स्थिति खराब हो गयी थी, पूरा क्षेत्र सूदखोर महाजनो के पास बन्धक हो गया था, और भट्टारक स्वामीजी मठ मे ताला डालकर कुछ समय के लिए अन्यत्र चले गये थे। सम्भव है उसी विपत्तिकाल मे 'धवलसिद्धान्त' की प्रतियाँ यहाँ से ले जाकर मूडबिद्री के मठ मे रख दी गयी होंगी जहाँ वे आज तक सुरक्षित हैं।

4. **दानशाला बस्ती**—एक छोटा सा जिनालय, अक्कनबस्ती के द्वार के समीप स्थित है। मन्दिर मे एक पाषाण-फलक पर पाँच तीर्थंकर प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं जिन्हें 'पच परमेष्ठी' कहा जाता है। सभवत. यह वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर इन पाँच बालयति तीर्थंकरो की प्रतिमाओ का फलक होना चाहिए। सोलहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे मैसूर नरेश द्वारा इस मन्दिर की वन्दना का उल्लेख मिलता है। सभवतः यहाँ से याचको को दान दिया जाता था, इस कारण इस मन्दिर का नाम 'दानशाला बस्ती' पड़ गया होगा।

5. **नगर जिनालय**—अक्कन बस्ती के निर्माण के पैंतीस वर्ष पश्चात् 1060 ई. में होयसल नरेश बल्लाल (द्वितीय) के नगराध्यक्ष तथा नयकीर्ति सिद्धान्तचक्रवर्ती के शिष्य नागदेव मन्त्री ने इस मन्दिर का निर्माण कराया। नगर के व्यापारियों द्वारा इसकी व्यवस्था होती थी इसीलिए इसे 'नगर जिनालय कहा' गया। गर्भगृह मे आदि तीर्थंकर ऋषभदेव की दो हाथ ऊँची मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान है। इस मन्दिर का एक नाम 'श्रीनिलय' भी है।

एक अभिलेख के अनुसार नागदेव मन्त्री ने ही 'कमठ-पार्श्वनाथ बस्ती' के सम्मुख 'रंग मण्डप' तथा एक पाषाण-कुटी और अपने गुरु नयकीर्तिदेव की प्रतिमा का निर्माण भी कराया था। उसने अपने नाम पर 'नागसमुद्र' नामक सरोवर बनवाया था ऐसा भी उल्लेख मिलता है। चन्द्रगिरि पर इसका एक शासन-स्तम्भ भी मिला है।

6. **मंगायी बस्ती**—चौदहवीं शताब्दी में जैनमठ के पट्टाचार्य अभिनव चारुकीर्ति पण्डिताचार्य की शिष्या, बेलगोल की मंगायी नामक श्राविका ने इस मन्दिर का निर्माण कराया। गर्भगृह में शान्तिनाथ तीर्थंकर की तीन हाथ ऊँची अत्यन्त मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान है। इस मूर्ति की भव्यता के कारण इस मन्दिर को 'त्रिभुवन-चूड़ामणि' भी कहा गया। पीठिका के अभिलेख से इस मूर्ति की प्रतिष्ठा देवराय महाराज की रानी भीमादेवी द्वारा कराई गयी। यदि ये देवराय विजयनगर के राजा देवराज (प्रथम) हैं तो उनका काल 1406-1416 ई० तक सुनिश्चित मान लिया गया है।

7. **मठ-मन्दिर**—कुछ समय पूर्व तक मठ के पट्टाचार्य भट्टारक स्वामी का निवास भी था। 'सिद्धान्त-दर्शन' के नाम से प्रख्यात रत्न-प्रतिमाओं का अनमोल और अनूठा सकलन भी इसी मन्दिर में प्रदर्शित है। बरामदे की दीवारों पर प्राचीन चित्रकारी में तीर्थंकरों के जीवन-चरित्र, भरत-बाहुबली प्रसंग, तथा अन्य अनेक धार्मिक आख्यान बहुरंगे अंकन के साथ चित्रित किये गये हैं। मन्दिर की वेदिकाओं पर धातु निर्मित अनेक प्राचीन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। इनमे बाहुबली, नवदेवता, धर्मचक्र, श्रुतस्कन्ध, और अनेक दुर्लभ यन्त्र हैं। इस प्रकार इस मन्दिर को हम श्रवणबेलगोल का 'सांस्कृतिक-कोषागार' कह सकते हैं। मन्दिर के तीन गर्भगृहों मे पाषाण और धातु की अनेक प्रतिमाओ पर 'ग्रन्थ लिपि', 'कूट लिपि' और कन्नड के महत्त्वपूर्ण मूर्तिलेख उपलब्ध हैं। आंगन मे खड़े होने पर छत के कंगूरो पर बने किन्नरो और गन्धर्वों की शोभा अनायास हमारी दृष्टि को खीच लेती है। लगभग सौ वर्ष पहिले इस मन्दिर में ऊपर भी एक वेदिका का निर्माण हुआ है। सहस्राब्दि महोत्सव के पूर्व मन्दिर से लगा हुआ 'भट्टारक-भवन' बन चुका था। वर्तमान कर्मयोगी स्वामीजी उसी मे निवास करते हैं। उनके द्वारा जिन-पूजा, वन्दना, आरती आदि दैनिक आवश्यक इसी मन्दिर मे सम्पन्न होते हैं।

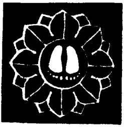
इस मन्दिर की ऐतिहासिक सम्पदा के महत्त्व का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि महोत्सव के समय श्रीमती सरयू दोशी ने 'मार्ग' के विशेषांक के रूप मे 'होमेज टु श्रवणबेलगोल' नाम से कला का जो विशाल परिचय-ग्रन्थ लिखा है, उसके लिए अधिकांश चित्रो और आलेखों का आधार उन्हें इसी एक मन्दिर मे प्राप्त हो गया।

8. **कल्याणी सरोवर**—नगर के बीचों बीच एक ऊँचे परकोटे से घिरा हुआ, चारो ओर सीढ़ियोंवाला यह मनोहर जलाशय है। चारो दिशाओं मे इसके प्रवेश द्वार 'गोपुरम शैली' के बने हैं। उत्तर दिशा मे एक मण्डप है जिसके अभिलेख से इसका निर्माण कार्य 17वीं शताब्दी ज्ञात होता है। उसके उपरान्त अनन्त कवि के 'गोमटेश्वर चरित' मे भी इसके निर्माण का उल्लेख आता है। परन्तु ये सब जीर्णोद्धार अथवा पुनर्निर्माण के शिलालेख हैं। वास्तव में कल्याणी ही वह प्राचीन धवल सरोवर है जिसके कारण इस नगर का

नाम 'बेलगुल नगर' पडा । कालांतर में श्रमण संतों के सान्निध्य के कारण वही बदलकर 'श्रवणबेलगोल' हो गया ।

सर्व-सुन्दर जिननाथपुर जिनालय

श्रवणबेलगोल के बाहर, मात्र एक किलोमीटर पर, चन्द्रगिरि के उत्तर मे जिननाथपुर ग्राम है । यही होयसल नरेश के अमात्य राचीमैया द्वारा सन् 1125 के आस-पास का निर्मित वह सुन्दर शान्तिनाथ जिनालय है, जो जिननाथपुर मन्दिर के नाम से विख्यात है । निर्विवाद रूप से यही श्रवणबेलगोल का सबसे सुन्दर मन्दिर है । मन्दिर की बाह्य भित्तियों पर, नृत्य मुद्राओ मे अप्सराएँ, वाद्य बजाते हुए गन्धर्व तथा अन्य अनेक मनोहर अभिप्राय अंकित हैं । बीच-बीच मे तीर्थंकर मूर्तियां भी सजाई गयी हैं । गर्भगृह मे सोलहवे तीर्थंकर भगवान शान्तिनाथ की विशाल और मनोहर पद्मासन प्रतिमा विराजमान है । मण्डप मे काले पाषाण के खरादे गये मोटे खम्भे और अनेक प्रकार की पद्म-शिलाओ वाली सुन्दर छते हैं । कुछ अज्ञात कारणो से मन्दिर का निर्माण कही-कही अधूरा रह गया लगता है । चन्द्रगिरि से सीधे उतर जाने पर यह मन्दिर और नजदीक पडता है । इस जिनालय का दर्शन किये बिना यात्रियों को श्रवणबेल-गोल की यात्रा पूर्ण नही मानना चाहिए ।



जैन मठ का इतिहास

दक्षिण भारत में मठों की परम्परा बहुत प्राचीन है। वास्तव में वहाँ तीर्थों पर मन्दिरो की बनावट ही बिलकुल अलग प्रकार की है। वहाँ 'मन्दिर' एक सम्पूर्ण संस्थान की तरह होता है। मन्दिर के परकोटे के भीतर, या आसपास लगी हुई, बहुत-सी भूमि होती है जिस पर प्रायः इन्द्रों, अर्चको, पुरोहितो और सेवकों के निवास होते हैं। शायद इसीलिए दक्षिण मे मन्दिर को बस्ती कहा जाता है। बडे तीर्थों पर, इन संस्थानों के अन्तर्गत, विद्यालय और दानशाला का होना अनिवार्य माना जाता है। यही मठ का सामान्य रूप है। परम्परागत गुरु-पीठ के पीठाधीश भट्टारक या महन्त स्वामी इन मठो के अधिपति होते हैं।

श्रवणबेलगोल के अतीत मे, ऐतिहासिक प्रमाणों के वातायन से, जहाँ तक हम झांक पाते हैं, हमे अति प्राचीनकाल से यहाँ जैन मठ का अस्तित्व स्पष्ट दिखाई देता है। जनश्रुतियों के अनुसार महामात्य चामुण्डराय ने गोमटस्वामी की मूर्ति की प्रतिष्ठा के उपरान्त, अपने गुरु सिद्धान्त-चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य को श्रवणबेलगोल के मठ के मठाधीश पद पर विराजमान किया था। यह भी कहा जाता है कि वहाँ इसके बहुत पहले से गुरु परम्परा चली आ रही थी। अनेक अभिलेख भी इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं। दो अभिलेखो में यह उल्लेख मिला है कि यहाँ के भट्टारक चारुकीर्ति पण्डिताचार्य ने होयसल नरेश 'बल्लाल' प्रथम को किसी भयंकर रोग से मुक्ति दिलायी थी। इस चमत्कार के उपलक्ष्य मे उन्हें 'बल्लाल जीव-रक्षक' की उपाधि प्राप्त हुई। इतिहास मे बल्लाल प्रथम का राज्यकाल 1100-1106 ई० सुनिश्चित है। उधर हम देखते हैं कि राजा विष्णुवर्द्धन की जैन रानी महादेवी शान्तला के काल मे ही। सन् 1113-1125 के बीच षट्खण्डागम धवल सिद्धान्त की वे ताडपत्रीय प्रतियाँ लिखकर तैयार की गयी जो मूडबिद्री से उपलब्ध हुई हैं। श्रवणबेलगोल की सिद्धान्त बसदि में इन प्रतियों के रखे जाने की वास्तविकता से भी प्रकट है कि 11-12वी शताब्दि मे यहाँ एक सक्षम और सक्रिय मठ चल रहा था। अतः अभिलेखों से भी श्रवणबेलगोल में मठ का अस्तित्व हजार साल पहले तक निर्विवाद रूप से प्रमाणित हो जाता है। इन्ही अभिलेखों में गोमटस्वामी के अभिषेक के लिए मठ को स्वर्ण और भूमि का दान देने के अनेक अन्य उल्लेख भी मिलते हैं। मध्य युग मे यह मठ इतना समृद्ध और ऐश्वर्यशाली था कि चौदहवी शताब्दी में श्रवणबेलगोल के मठाधिपतियों ने अपने अन्तर्गत मूडबिद्री आदि अनेक नवीन मठों की स्थापना प्रारम्भ कर दी थी। इस प्रकार इस मठ की प्राचीनता के अनेक विश्वस्त प्रमाण मठ की सीमा मे ही बिखरे पड़े हैं।

यह निराशा की बात कही जाना चाहिए कि ऐसे गौरवशाली, प्राचीन और समृद्ध मठ का भी कोई विधिवत् इतिहास अब तक लिखा नहीं गया। सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना महोत्सव के अवसर पर अपनी 'गोमटेश-गाथा' के लिए सामग्री का शोध करते समय मेरी बड़ी इच्छा रही कि मठ के इतिहास की भी कुछ कड़ियाँ मुझे प्राप्त हो सकें जिन्हें जोडकर मैं उसका कोई आकार खड़ा कर सकूँ। परन्तु उस समय मुझे इसमें सफलता नही मिली। अभी मैं पूरी तरह निराश

नहीं हूँ। मेरा मन बार-बार कहता है कि यदि नियोजित प्रयास किया जाये, तो अवश्य शिला-लेखों में, और शास्त्रों के पन्नों मे ऐसे सकेत मिलेंगे जिनके आधार पर जैन मठ का एक प्रामाणिक इतिहास तैयार किया जा सकेगा।

इस 'महोत्सव-दर्शन' के लिए जब मैं वहाँ था, तब एक दिन मैंने अपनी यह जिज्ञासा कर्मयोगी स्वामीजी के समक्ष रखकर उनसे अनुरोध किया कि अभी जो भी वयोवृद्ध जन, अपनी स्मृति के आधार पर हमे कुछ बता सकते हैं, आज उसे ही रेखांकित करने का प्रयास किया जाये। स्वामीजी को यह प्रस्ताव रुचिकर लगा और उसी दिन शाम को मठ में ही एक 'इतिहास-संशोधन गोष्ठी' हो गयी। पचहत्तर से पचासी वर्ष की आयु के चार वयोवृद्ध नागरिक, जो सभी गोमटेश्वर के पुजारी ही थे, मठ के कक्ष मे आमन्त्रित किये गये। मेरे प्रश्नो और उनके उत्तरो को हिन्दी से कन्नड मे और कन्नड से हिन्दी मे रूपान्तरित करने का काम स्वय स्वामीजी ने किया। विश्वसैनजी प्रश्नो की सरचना मे मेरी सहायता करते रहे और मेरे सहयोगी डॉ. अग्रवाल उन तथ्यो को कागज पर उतारते रहे। कमेटी के सेक्रेटरी श्री शान्तराज भी इसमे सहायक हुए। उमी वार्ता के आधार पर, जितना जोडा जा सका उतना इतिहास यहाँ प्रस्तुत है। यही मैं अपनी यह अभिलाषा भी अकित करता हूँ कि इस महत्त्वपूर्ण मठ का प्रामाणिक इतिहास तैयार कराने के प्रयास अवश्य किये जाने चाहिए।

शताब्दी के प्रारम्भ में

बयासी वर्ष के वृद्ध श्री ज्वालनैया श्रवणबेलगोल के सम्भ्रान्त नागरिक हैं। वही गोमटेश्वर के सबसे पुराने पुजारी हैं। श्री ज्वालनैया ने अपने जीवन मे जैन मठ की भट्टारक पीठ पर पाँच भट्टारक देखे हैं। श्री शान्तराज स्वामी, चेल्लुवर स्वामी, नेमिसागर स्वामी, भट्टाकलक स्वामी और वर्तमान श्री रत्नवर्मा चारुकीर्ति स्वामी। इनमे प्रथम शान्तराज स्वामी को इन्होने छुटपन से भट्टारक रूप मे देखा। सन् 1910 के महामस्तकाभिषेक के समय भट्टारक पद पर शान्तराज स्वामी के दो युग अर्थात् चौबीस वर्ष पूरे हो चुके हैं, ऐसा इन्होंने सुना था। दूसरे वृद्ध पुजारी श्री ए० के० ब्रह्मसूर्य को स्मरण है कि शान्तराज स्वामी तीन युग तक (लगभग छत्तीस वर्ष) भट्टारक रहे। इसका अर्थ यह हुआ कि 1887 का महामस्तकाभिषेक भी इन्ही भट्टारक शान्तराज स्वामी के कार्यकाल मे हुआ होगा। वे तमिलनाडु मे काची देश के निवासी थे। संभवत यह काची वही आज का जिनकाची—तिरुपरुत्तिकुनरम्—होना चाहिए। शान्तराज स्वामी के उत्तराधिकारी श्री चेल्लुवरस्वामी भी वहाँ के निवासी थे।

चैत्र सुदी पूर्णिमा को वार्षिक रथयात्रा के समय ही शान्तराज स्वामी का देहावसान हुआ। उन्होंने अपने उत्तराधिकारी का चयन नही किया था। उनके निधन के लगभग एक वर्ष उपरान्त चेल्लुवर स्वामी का पट्टाभिषेक हुआ। उस समय यहाँ विद्यालय के दो छात्रो का चयन इस पद के लिए किया गया। दूसरे अभ्यर्थी श्री प्रतापेन्द्र थे। उन दिनो छोटी वय मे बालको का विवाह हो जाता था। ये दोनो विद्यार्थी भी विवाहित थे। श्री प्रतापेन्द्र ने अपने आपको भट्टारक पद के लिए सक्षम नही पाया, अत. अपने चुनाव की चर्चा सुनते ही वे एक दिन बिना किसी से कहे अपने घर चले गये। श्री चेल्लुवर ने भी गृहस्थी के बधन के कारण अपनी असमर्थता व्यक्त की और वे भी तमिलनाडु अपने घर चले गये। दैवयोग से वहाँ थोड़े ही समय में उनकी

पत्नी का वियोग हो गया। इस घटना से श्री चेल्लुवर के मन में विरक्ति आयी। उनकी पत्नी के निधन का समाचार मिलने पर कुछ लोग उनके पास गये और भट्टारक पद स्वीकार करने का उनसे पुनः आग्रह किया। जब उन्हें यह बताया गया कि सभी लोगों ने एक मत होकर उन्हे चुना है और उनसे आग्रह किया है तब श्री चेल्लुवर ने अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी।

सन् 1925 का महामस्तकाभिषेक इन्ही चेल्लुवर स्वामी के कार्यकाल मे सम्पन्न हुआ। एक वर्ष के उपरान्त सन् 1926 ई० में अकस्मात् उनका निधन हो गया। तब वे केवल छत्तीस वर्ष के थे। उस वर्ष यहाँ कई ग्रामों में प्लेग का प्रकोप था। लोग घर छोड़कर ग्राम के बाहर रहते थे। चेल्लुवर स्वामी भी चन्द्रगिरि पर चामुण्डराय बस्ती मे कुछ समय रहे। वही एक दिन, सभवतः उसी महामारी के आक्रमण से, उनके जीवन का अन्त हो गया। शीत ऋतु मे 26 जनवरी 1926 को शाम को लगभग सात बजे उनका प्राणान्त हुआ। चन्द्रगिरि के पास ही 'समाधि पर्वत' पर, जहाँ प्राचीनकाल से भट्टारको की अन्त्येष्टि होती आयी है वही, दूसरे दिन सवेरे उनका शरीर अग्नि को समर्पित किया गया।

चेल्लुवर स्वामीजी अपने सामने अपना उत्तराधिकारी नियुक्त नही कर पाये थे। उनके निधन के बाद मठ की देखरेख करना एक समस्या थी। उत्तराधिकारी के चयन मे भी अनेक आपत्तियाँ सामने आयी। शायद इसीलिए यह परम्परा ही श्रेष्ठ मानी गयी है कि भट्टारक को अपने सामने ही अपने उत्तराधिकारी का चयन करके उसे प्रशिक्षित कर देना चाहिए, ताकि व्यवस्था का तारतम्य बना रहे।

उत्तराधिकार के लिए

चेल्लुवर स्वामीजी के आकस्मिक देहावसान के पश्चात् लगभग तीन वर्ष तक मठ का आसन रिक्त रहा। इस अन्तराल मे मैसूर राज्य के मुज़रई विभाग द्वारा मठ की व्यवस्था के लिए स्थानीय पण्डित श्री दोर्बली शास्त्री को एजेण्ट नियुक्त किया गया। श्री दोर्बली शास्त्री के पूर्वज तमिलनाडु से आकर यहाँ बसे थे। उस समय भी मठ मे विद्यालय चलता था। विद्यार्थी यहाँ रहते तो थे, परन्तु उनके भोजन की व्यवस्था मठ मे नही थी। गाँव के साधर्मी लोग बारी-बारी अपने घरो पर विद्यार्थियों को भोजन कराते थे। उन कठिन परिस्थितियों मे विद्याध्ययन करनेवाले विद्यार्थियो मे अनेक आगे चलकर बहुत गुणी और यशस्वी विद्वान हुए हैं। जिन-सेनाचार्य के महापुराण को कन्नड़ में प्रस्तुत करनेवाले मैसूर के शान्तिराज शास्त्री उन्ही विद्यार्थियो मे से एक थे।

जब श्री दोर्बली शास्त्री एजेण्ट की हैसियत से मठ की देख-रेख कर रहे थे, तभी उन्होने कुछ लोगो को अपने प्रभाव मे लेकर अपने जमाता श्री ब्रह्मसूरि शास्त्री को भट्टारक पद पर अभिषिक्त करके गद्दी पर बैठाने का प्रस्ताव कराया। ब्रह्मसूरि शास्त्री के विवाह को यद्यपि आठ वर्ष हो चुके थे, परन्तु तब तक उनके कोई सन्तान नही थी। हासन के डिप्टी कमिश्नर की अध्यक्षता में एक बैठक मठ में बुलायी गयी जिसमे बहुमत से भट्टारक पद के लिए श्री ब्रह्मसूरि शास्त्री के नाम का समर्थन कर दिया गया। उनके पट्टाभिषेक के लिए राज्य के मुज़रई कमिश्नर ने तिथि निर्धारित करके प्रकरण मन्त्रि-परिषद् की अनुमति के लिए अग्रेषित कर दिया।

मठ के अनेक हितचिंतक जनों को यह प्रस्ताव मठ की परम्परा और गरिमा के प्रतिकूल होने

के कारण स्वीकार्य नहीं हुआ। उन्होंने श्री ब्रह्मसूरि के नाम का सामूहिक विरोध किया। मुख्य रूप से उनके विरोध मे यह कहा गया कि वे गृहस्थ हैं और उनका कुटुम्ब यहीं, इसी ग्राम में निवास करता है। यह स्वाभाविक है कि सुख-दुख के अवसरो पर गृहस्थी का यह सम्बन्ध टूट नही सकेगा, इसके स्थान पर भट्टारक पीठ की पवित्र मर्यादाएँ ही टूटेंगी। श्रवणबेलगोल के श्री जी० के० पद्मराजैया और मैसूर के प्रभावशाली राजपुरुष श्री एम० एल० वर्धमानैया के नेतृत्व मे समाज का यह विरोध इतना प्रखर हो उठा कि राज्य को अपना निर्णय वापस लेना पडा। इस प्रकार एक गृहस्थ पुरुष को भट्टारक पद पर आसीन कराने का कुछ लोगो का वह प्रयास विफल हो गया।

इस बीच श्री एम० एल० वर्धमानैया का निधन हो गया। श्री जी० के० पद्मराजैया और मधुगिरि के श्री एम० सी० लक्ष्मीपतैया इन दो सज्जनों ने मैसूर महाराज के समक्ष भट्टारक पद के लिए श्री नेमिसागर वर्णी का नाम प्रस्तावित किया। उन दिनों कारकल के मठ की गद्दी भी खाली थी। गुजरात के किसी व्यक्ति को उस गद्दी पर बिठाने की तैयारियाँ चल रही थी। श्री नेमिसागर वर्णी क्षुल्लक अवस्था मे थे, और कारकल के मठ की देख-रेख कर रहे थे। मैसूर नरेश के मन मे भी वर्णीजी के लिए सम्मान की भावना थी। वास्तव मे वाडियार महाराजा के आग्रह पर ही उन्होने इस पद के लिए अपनी स्वीकृति प्रदान की थी। भट्टारक पीठ के लिए उनके नाम की घोषणा होते ही तत्कालीन मुज़रई कमिश्नर श्री डिसूजा स्वय कारकल से श्री नेमिसागर को बडे सम्मानपूर्वक श्रवणबेलगोल ले आये। इधर पहले से ही तिथि निर्धारित करके निमन्त्रण भेजे जा चुके थे और पट्टाभिषेक की सारी तैयारियाँ कर ली गयी थी। श्रवण-बेलगोल आने के दूसरे ही दिन पारम्परिक समारोह मे पट्टाभिषेक करके श्री नेमिसागर को मठ का स्वामी घोषित कर दिया गया।

श्री नेमिसागर वर्णी का यह पट्टाभिषेक कुछ विवादास्पद स्थितियो मे हुआ था। उसका फल यह हुआ कि उमे न्यायालय मे चुनौती दी गयी। वादी पक्ष का कथन यह था कि इनका चयन राज्यादेश से हुआ है, जबकि वह मठ की शिष्य मण्डली द्वारा होना चाहिए। न्यायालय मे यद्यपि इस सिद्धान्त को मान्यता दी गयी कि भट्टारक पद के लिए उपयुक्त व्यक्ति का निर्वाचन मठ की शिष्य मण्डली द्वारा होना चाहिए, और बाद मे उस पर शासन की सहमति अथवा अनापत्ति प्राप्त की जानी चाहिए, परन्तु क्योकि यह विवाद पट्टाभिषेक हो जाने के उपरान्त उठाया गया था, इसलिए न्यायालय ने उस स्थिति में उसमे कोई हस्तक्षेप करना अपनी शक्ति सीमा के बाहर निरूपित किया। इस प्रकार उनका पट्टाभिषेक विधि-सम्मत माना गया।

श्री जी० के० पद्मराजैया श्रवणबेलगोल मे उस समय के मान्यता प्राप्त नागरिक थे। ब्रह्मदेव मन्दिर के ऊपर की वेदिका का निर्माण उन्ही ने कराया था। अस्पताल का वार्ड और मिडिल स्कूल का भवन बनवाने मे भी उनका योगदान रहा है। राज्य में भी उन्हें सम्मान प्राप्त था। उन्ही श्री पद्मराजैया की पुत्री के पुत्र श्री शान्तराजजी कर्नाटक शासन में सेवारत हैं और वर्तमान मे एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी के सेक्रेटरी के पद पर गोमटेश्वर की सेवा कर रहे हैं।

एक सन्त का पट्टाभिषेक

1928 मे मई महीने की दूसरी तारीख को नेमिसागरजी वर्णी का पट्टाभिषेक हुआ। उन्होंने तीन सप्ताह के भीतर, श्रुत पंचमी के अवसर पर, 21-5-28 को मठ की विश्रृंखलित पाठशाला की पुनःस्थापना कर दी। अध्ययन-अध्यापन और विद्यादान में उनकी विशेष रुचि थी। नेमिसागरजी का पट्टाभिषेक अनेक विवादास्पद स्थितियो मे हुआ था। बाद मे भी, छोटे-मोटे विवाद उठते रहे, परन्तु उन्होंने अपने आपको सदैव उन विवादों से परे रखने का प्रयत्न किया। ज्ञान-ध्यान मे ही उनका अधिकांश समय व्यतीत होता रहा। उनके कार्यकाल मे क्षेत्र के विकास सम्बन्धी अनेक कार्य हुए। मठ-मन्दिर का जीर्णोद्धार हुआ। चारों तरफ बरामदो का फर्श कराया गया। भण्डारी बस्ती के मण्डप में अनेक छोटी-छोटी उपवेदिकाएँ लोगो ने बना ली थी। इनसे मन्दिर की विराटता बाधित होती थी। स्वामीजी ने उन सबको हटवा दिया जिससे मन्दिर का पुरातनरूप प्रकट हुआ। भण्डारी बस्ती मे ही स्वामीजी की प्रेरणा से बंगलोर की श्रीमती बोमकम्मा ने 'सहस्रकूट बिम्ब' की स्थापना करायी।

नेमिसागरजी वर्णी जैन सिद्धान्त के पारंगत विद्वान और प्रभावशाली वक्ता थे। समाज ने उनकी प्रवृत्ति के अनुरूप उन्हें 'ज्ञान-भानु' की उपाधि से अलंकृत किया। सभी धर्मों के उपयोगी उपदेशो का वे ऐसा सुन्दर व्याख्यान करते थे कि जैन और जैनेतर जनता घण्टो तक मन्त्रमुग्ध होकर उन्हें सुनती थी। गाँव-गाँव मे लोग उनकी पालकी ले जाते थे और बड़े सम्मान से उनका उपदेश सुनते थे। हासन मे तो मुसलमान भाइयों ने उन्हें आमन्त्रित किया और मान-पत्र देकर सम्मानित भी किया। वह मानपत्र उर्दू मे ही लिखा गया था। पट्टाभिषेक के बाद मैसूर, दावणगेरे, टुमकुर और हासन आदि कई जगह इसी प्रकार उनके स्वागत का सिलसिला महीनो तक चलता रहा। उत्तर भारत में भी वर्णीजी की बहुत मान्यता थी। आरा के बाबू निर्मलकुमारजी रईस के परिवार के साथ उनके निकट के सम्बन्ध थे।

अठारह वर्ष तक नेमिसागरजी इस मठ के भट्टारक पद पर रहे। वे विद्यानुरागी साधक थे इसलिए उनके काल मे श्रवणबेलगोल के विद्यालय की विशेष उन्नति हुई। उनके सामने विद्यार्थियों की सख्या सत्तर तक पहुँच गयी थी। विद्यापीठ के साथ भोजनालय की स्थायी व्यवस्था हो गयी थी। अनेक दुरूह ग्रथो का अध्यापन वे स्वय अपने विद्यार्थियो को कराते थे। उन्होंने विद्यादान का क्षेत्र इतना विस्तृत और इतना सम्पुष्ट कर लिया कि कालान्तर मे नरसिंह-राजपुरा, हुमचा, जिनकांची और कारकल आदि अनेक मठो मे उनके ही सुयोग्य शिष्य भट्टारक पद पर अभिषिक्त हुए। जिनकाची के मठ की गद्दी खाली होने के कारण नरसिंह-राजपुरा के स्वामीजी वहाँ जाकर उस मठ की भट्टारक पीठ पर अभी-अभी तक विराजमान थे। वे लक्ष्मीसेन स्वामी नेमिसागरजी के ही शिष्य हैं। कारकल के वर्तमान भट्टारक ललित-कीर्ति स्वामी भी उन्ही के शिष्य हैं। उनके शिष्यो मे अनेक बहुत प्रसिद्ध विद्वान पडित भी हैं।

वह स्वर्णिम अतीत

जैन मठ प्राचीनकाल से एक अधिकार सम्पन्न सक्षम और समृद्ध सस्थान रहा है। वृद्ध जनो की स्मृतियों के अनुसार चेल्लुवर स्वामीजी के युग मे मठ मे लगभग सौ गायें रखी जाती थी। दूध दोहने वाले थक जाते थे तब कई बार बिना दोहे ही बछड़ो को सारा दूध पिला देते थे।

उस समय सभी मन्दिरों मे पूजन के लिए प्रतिदिन पकाया हुआ चावल और दूध मठ से दिया जाता था। गोमटस्वामी की पूजन मे पाँच सेर चावल का भात और कई घड़े दूध नित्य अर्पित किया जाता था। मठ के पास उन दिनो ग्यारह ग्रामो का स्वामित्व था। फसल के मौके पर जब इन ग्रामो से मठ के लिए धान्य आता था तब लदी हुई बैलगाडियो से यह सारा प्रांगण भर जाता था। उन दिनो भट्टारको का ताम-झाम भी राजाओ की तरह् शान का होता था। चेल्लुवर स्वामीजी एक बार तमिलनाडु की यात्रा पर निकले थे। तब मठ से इरोड स्टेशन तक, जिसे अब पाण्डवपुरा कहते हैं, उनकी यात्रा के लिए मैसूर से कार मँगाई गयी थी। आगे की यात्रा उन्होने रेल से की थी। नेमिसागरजी को भी बाहर जाने के लिए ऐसी व्यवस्था की जाती थी। ग्राम मे अथवा आस-पास कही जाना होता था तब भट्टारक स्वामी मठ की बैलगाड़ी पर चलते थे। बड़े-बड़े सीगो वाले ऊँचे बैलो की यह गाड़ी मखमली सजावट से सजाई जाती थी।

नेमिसागर स्वामीजी के सामने तक मठ को न्यायालय की गरिमा और स्वामीजी को न्याया-धीश की मान्यता प्राप्त थी। दूर-दूर तक गाँवो के लोग अपने छोटे-बड़े विवाद उनके सामने ही प्रस्तुत करते थे। न्यायालय की ही तरह पक्ष-विपक्ष की सुनवाई होती थी, साक्ष्य-परीक्षण होता था, और स्वामीजी द्वारा निर्णय दिया जाता था। मठ का निर्णय दोनो पक्ष तो सम्मान-पूर्वक मानते ही थे, आवश्यकता पडने पर शासन मे तथा न्यायालयो मे भी उस निर्णय को मान्यता दी जाती थी। चेल्लुवर स्वामीजी के समय मे मठ के व्यवस्थापक को 'पारपत्यकार' कहा जाता था। नारायणप्पा नाम के सज्जन उस पद पर थे। उन्हे बारह रुपये मासिक वेतन मिलता था। चार रुपये मासिक का एक लिपिक उनका सहकारी हुआ करता था। उन दिनो आठ ग्राम सोने की गिन्नी सवा छह् रुपये की बिकती थी। कन्नड मे उस गिन्नी को 'स्वर्ण' कहते हैं।

मठ मन्दिर मे भट्टारक निवास के लिए एक छोटा कमरा था। उसे 'मुनि वासना' कहते थे। प्रायः सभी भट्टारक उसी कमरे मे रहते आये थे। नेमिसागर वर्णीजी का उपयोग ज्ञान आराधना और आध्यात्मिक साधना की ओर अधिक रहता था, इसीलिए उन्होंने मठ के ऊपर एक कमरा बनवा लिया था। एकान्त और शान्त वातावरण ही उन्हे अभीष्ट था। नेमिसागर वर्णीजी निरभिमानी, सादगी सम्पन्न और दयालु पुरुष थे। उनका भोजन-पान सादा और मर्यादित होता था। महीने मे प्राय. एक बार सिर और दाढी के बाल एक साथ मुड़ा लेते थे। सादे और मोटे वस्त्र पहिनते थे और प्रायः सादा नीरस भोजन ग्रहण करते थे। स्वाध्याय और भजन-पूजन मे उनका अधिक समय बीतता था।

श्री नेमिसागर वर्णीजी के अठारह् वर्ष के कार्यकाल मे केवल एक महामस्तकाभिषेक सन् 1940 मे सम्पन्न हुआ। वे बहुत उदासीन वृत्ति के साधक थे। धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य भी नरम रहने लगा था, अतः भट्टारक पद पर अठारह् वर्ष रहने के उपरान्त, सन् 1946 मे उन्होने स्वेच्छा से उस पद का त्याग कर दिया और आत्म-कल्याण की साधना के लिए श्रवणबेलगोल छोडकर वे धर्मस्थल मे रहने लगे। यह शायद इसलिए उन्हें करना पड़ा कि श्रवणबेलगोल में सस्थाओं और व्यक्तियो से जो रागात्मक सम्बन्ध हो गया था, वह अब उन्हे अभीष्ट नही था।

नेमिसागरजी वर्णी के द्वारा स्वेच्छा से त्यागी हुई श्रवणबेलगोल की गद्दी एक वर्ष तक खाली रही। सन् 1947 में भट्टाकलंक स्वामी का पट्टाभिषेक हुआ। भट्टाकलंक स्वामी उत्तर कनारा जिले के निवासी, बाल ब्रह्मचारी साधक थे। स्वादी मठ की भट्टारकपीठ के लिए उनके नाम की चर्चा चल रही थी। इसी बीच श्रवणबेलगोल के लिए उन्हे चुन लिया गया। पट्टाभिषेक के समय उनकी अवस्था लगभग साठ वर्ष की हो चुकी थी। सन् 1947 से 1969 तक तेइस वर्ष उन्होने मठ का सचालन किया। 1969 मे तेरासी वर्ष की आयु में 12 दिसम्बर को भट्टाकलंक स्वामी का निधन हुआ। उनके दीर्घ कार्यकाल में 1953 में और 1967 में ऐसे दो मस्तका-भिषेक सम्पन्न हुए। भट्टाकलंक स्वामी को 1956 में एक अभिनन्दन ग्रन्थ से सम्मानित किया गया था। कन्नड़ मे मुद्रित इस ग्रन्थ की प्रति मठ मे सुरक्षित है।

भट्टाकलंक स्वामी ने 1947 में जब मठ का सचालन अपने हाथ मे लिया उस समय मठ के पास ग्यारह गाँवो का स्वामित्व था। उन्हीं की आमदनी से मठ का काम चलता था। 1951 ई० में 'इनाम एवोल्यूशन एक्ट' आ जाने से ग्यारह मे से सात गाँव मठ के हाथ से निकल गये। यही कारण था कि 1953 के मस्तकाभिषेक के लिए मठ की ओर से जिम्मेवारी लेकर कोई कदम नही उठाया जा सका। वह सारा आयोजन शासन को करना पडा। सन् 1962 मे 'लेण्ड रिफार्म्स एक्ट' प्रभावशील होने पर शेष ग्रामो पर से भी मठ का स्वामित्व जाता रहा। इससे मठ की आर्थिक स्थिति चिन्तनीय दशा तक खराब हो गयी। सन् 1953 से 1965 तक के बारह वर्षों मे मठ की आय के स्थायी साधन तो छिन्न-भिन्न हुए ही, उत्तर भारत की जैन समाज के साथ उसका सम्पर्क भी क्रमशः न्यून होता चला गया। इसका एक कारण यह भी था कि भट्टारक स्वामीजी को अपनी मातृभाषा कन्नड और शास्त्र भाषा सस्कृत के अलावा हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आदि जन-सम्पर्क की कोई भाषा नही आती थी। इन सब कारणो से प्रचार विहीन और सम्पर्क विहीन होकर यह क्षेत्र धीरे-धीरे उपेक्षित होता गया। दूसरी विसगति यह रही कि भट्टाकलंक स्वामी के परिकर मे कोई अच्छा परामर्श-दाता या विवेकशील सहायक नही रहा। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के साथ भी उनके सम्बन्ध तनावपूर्ण ही रहे। यहाँ तक कि कमेटी के साथ उनके विवाद न्यायालय तक जा पहुँचे और श्रवणबेलगोल मे तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्यालय पर राज्य के ताले पड़े रहे। इन सब अवांछित और असामान्य परिस्थितियो का फल यह हुआ कि देश मे धर्म-निरपेक्ष शासन की स्थापना हो जाने के बावजूद, बीस वर्ष तक यह अनुपम तीर्थ, विकास की दिशा मे कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं कर पाया।

इतना होते हुए भी भट्टाकलंक स्वामीजी अपने उत्तरदायित्वो से एकदम विमुख भी नही रहे। भले ही उनके कार्यकाल में अधिक विकास कार्य न हो पाये हों, पर क्षेत्र के विकास की ओर उनकी दृष्टि बराबर बनी रही। मैसूर के तत्कालीन राजस्वमन्त्री श्री एम० व्ही० कृष्णप्पा पर स्वामीजी का अच्छा प्रभाव था। स्वामीजी के आग्रह पर कृष्णप्पाजी ने श्रवणबेलगोल के विकास के लिए शासकीय स्तर पर एक मास्टर-प्लान तैयार कराया। इस प्लान के अन्तर्गत यहाँ एक सौ एकड भूमि का अधिग्रहण करके उस पर एक शिक्षा-केन्द्र और एक अस्पताल बनवाने की योजना हाथ मे ली गयी। कॉलेज और छात्रावास भवन का निर्माण हो भी गया, पर समाज का वांछित सहयोग नहीं मिलने के कारण प्लान का कार्य आगे नहीं बढ़ सका। फिर

भी शासन का लगभग दस लाख रुपया उस पर व्यय हुआ। उसी समय मैंचिंग ग्राण्ट के आधार पर वहाँ छह कर्मचारी आवास भी बनवाये गये। कुल 1,11,771.06 की लागत से निर्मित इन छह आवासो के लिए श्री रत्नवर्मा हैगड़े धर्मस्थल और श्री जिनचन्द्रन वैनाड से 40,797.00, श्री टी० चन्द्रन्ना से 10,500.00 और मेसर्स बी० टी० कम्पनी दावणगेरे से 10,500.00 इस प्रकार कुल 61,797.00 की राशि दान मे प्राप्त हुई। इन आवासो पर कमेटी का स्वामित्व है और उनमे कमेटी के कर्मचारियो का निवास है। कॉलिज तथा छात्रावास भवनो को कमेटी के अन्तर्गत लाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

यात्रियो के ठहरने के लिए 'राजश्री गेस्ट हाउस' और 'कुदकुद यात्रिक आश्रम' का निर्माण भी भट्टाकलक स्वामी के कार्यकाल मे हुआ। तात्कालिक परिस्थितियों और आय के अत्यन्त सीमित साधनो को देखते हुए यह भी उपलब्धि से कम नही माना जाना चाहिए।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षता ग्रहण करते ही साहु शान्तिप्रसादजी ने श्रवणबेलगोल की ओर ध्यान दिया। भट्टारक स्वामीजी को राजी करके, सबसे पहले उन्होने आपस के विवाद समाप्त कराये। इससे तीर्थक्षेत्र कमेटी और मठ के बीच सौजन्य और समन्वय की भावना धीरे-धीरे पनपने लगी। इसी बीच उन्होने इस तीर्थ की व्यवस्था को शासकीय नियन्त्रण से निकालकर, समाज के बीच से गठित कमेटी के हाथ मे लाने का प्रयत्न किया। समय के साथ भट्टारक स्वामीजी के व्यवहारो मे भी उदारता और सहयोग का समावेश हुआ और परिस्थितियो मे सुधार होता रहा।

अतत 1967 के प्रारम्भ मे साहुजी के प्रयास सफल हुए। उस समय जब एक ओर शासकीय समितियो के तत्त्वावधान मे महामस्तकाभिषेक की तैयारियाँ चल रही थी, तभी कर्नाटक शासन ने 'एम० डी० जे० एम० आई० रूल्स 1967' लागू करके श्रवणबेलगोल सस्थानो की व्यवस्था के लिए वैधानिक कमेटी का निर्माण कर दिया। अहर्निश तीर्थहित का चिन्तन करते हुए भी, भट्टारक श्री भट्टाकलक स्वामीजी, अपनी वृद्धावस्थाजन्य शारीरिक शिथिलताओ के कारण, दैनन्दिन कार्यों में तटस्थता वर्तने लगे। ऐसी ही मनस्थितियो के मध्य, मिली-जुली व्यवस्थाओ के अन्तर्गत, 1967 का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ।

'श्रवणबेलगोल दिगम्बर जैन मुजरई इन्स्टीट्यूशन्स मैनेजिंग कमेटी' का गठन, और श्रवणबेलगोल की समस्त व्यवस्था का उस कमेटी को हस्तान्तरण ये दोनो इस तीर्थ के इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ थी। भट्टाकलक स्वामी के कार्यकाल के अन्तिम वर्षों मे जब यह हस्तान्तरण हुआ तब एक साथ, तीर्थ और मठ की सारी व्यवस्था कमेटी के अन्तर्गत आ गयी। उस समय कोई कठिनाई यद्यपि सामने नही आयी, परन्तु मठ को कमेटी के अन्तर्गत रखने से आगे कभी कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ आ सकती थी। भट्टारक पद की स्वतन्त्रता और गरिमा पर भी अंकुश लगाने की स्थिति कभी उत्पन्न हो सकती थी। दीर्घ अनुभवी भट्टारक स्वामीजी ने उन सभी सम्भावित कठिनाइयो का पूर्वानुमान करते हुए, प्रारम्भ मे ही मठ को कमेटी के नियन्त्रण से बाहर करा लिया। इस प्रकार श्रवणबेलगोल का पवित्र प्राचीन जैनमठ, शासकीय नियन्त्रण और हस्तक्षेपों की परिधि से परे, शुद्ध धार्मिक संस्थान के रूप मे अवस्थित रहा, और भट्टारक स्वामीजी द्वारा सम्पूर्ण अधिकारो के साथ, स्वविवेक से उसके सचालन का उनका पारम्परिक अधिकार सदा के लिए सुरक्षित हो गया। ये दोनों ही घटनाएँ भट्टाकलंक स्वामीजी की

दूरदर्शिता, कार्यकुशलता और बुद्धिमत्ता का पर्याप्त प्रमाण देती हैं।

वर्तमान कर्मयोगी स्वामीजी

1967 में महामस्तकाभिषेक समाप्त होते ही भट्टाकलक भट्टारक स्वामीजी ने अपने उत्तराधिकारी की तलाश प्रारम्भ कर दी। उनका पट्टाभिषेक साठ वर्ष की आयु मे हुआ था। बाईस वर्ष तक श्रवणबेलगोल के मठ का संचालन करते हुए अब उनकी आयु लगभग 82 वर्ष की हो चुकी थी। अब किसी सत्पात्र को अपना उत्तरदायित्व सौंपकर वे भार-मुक्त होना चाहते थे।

भट्टाकलंक स्वामी अपने उत्तराधिकारी रूप में किसी होनहार कन्नड-भाषी विद्यार्थी का चयन करना चाहते थे। उनका अनुभव था कि साठ वर्ष की वय मे भी पट्टासीन होकर जिस प्रकार मठ का सचालन उन्होने कर लिया, वैसा अब सम्भव नहीं होगा। अब परिस्थितियाँ एकदम बदल चुकी थी। मठ की स्थायी आय के सभी साधन प्रायः समाप्त हो गये थे। अब मठ का संचालन बडी सूझ-बूझ का, बड़े परिश्रम का काम था। उन्होंने कर्नाटक के जैन गुरुकुलो मे अध्ययन करते हुए विद्यार्थियो मे अपनी कल्पना का पात्र ढूँढना प्रारम्भ किया। इसी अभिप्राय से एक दिन स्वामीजी हुमचा पधारे।

हुमचा का गुरुकुल उन दिनो शिक्षा का अच्छा संस्थान था। धार्मिक शिक्षण के साथ स्कूली शिक्षा और अनेक भाषाओ के अध्ययन की भी वहाँ व्यवस्था थी। वारगा के श्री रत्नवर्मा उस समय गुरुकुल के एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे। सोलह-सत्रह वर्ष की आयु मे ही अनेक धर्म-ग्रन्थो के अतिरिक्त कन्नड, सस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी का भी थोडा-थोडा अभ्यास उन्होने कर लिया था। निर्दोष कुल, स्वभाव, शिक्षा, आचरण, आयु, स्वास्थ्य और शारीरिक लक्षणो आदि का विचार करते हुए अपने चार सुयोग्य विद्यार्थियो का नाम हुमचा के भट्टारकजी ने भट्टाकलक स्वामीजी के समक्ष चयन के लिए प्रस्तुत किया। रत्नवर्मा का नाम इस सूची मे सबसे ऊपर था।

साक्षात्कार के लिए सर्वप्रथम विद्यार्थी रत्नवर्मा को बुलाया गया। भट्टाकलंक स्वामीजी ने सामान्य प्रश्नोत्तरो के माध्यम से बालक की बुद्धि का परीक्षण किया और हस्त रेखाएँ देखकर उसके भूत और भविष्य के सम्बन्ध मे अपना मत स्थिर किया। रत्नवर्मा के व्यक्तित्व से, और हस्त रेखाओ तथा अन्य शारीरिक सुलक्षणों से, भट्टाकलकजी कुछ ऐसे प्रभावित हुए कि उन्होने मन-ही-मन उस बालक को अपना उत्तराधिकारी निश्चित कर लिया। उस दिन फिर किसी दूसरे विद्यार्थी का साक्षात्कार लेने की आवश्यकता उन्होंने नही समझी। उन्होंने वही हुमचा के भट्टारकजी को सूचित कर दिया कि 'इस बालक को पाकर हमारी शोध सार्थक हो गयी है, हम इसे ही संस्कारित करके अपना उत्तराधिकारी बनाने का सकल्प करते हैं।'

बालक रत्नवर्मा को जब भट्टाकलक स्वामी के इस मन्तव्य की सूचना दी गयी, तब उसने अत्यन्त संकोच पूर्वक इस अभिस्तावना के प्रति अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। रत्नवर्मा का कथन था कि सबसे पहिले वे विद्याध्ययन करना चाहते हैं। ज्ञान प्राप्त कर लेने पर ही अपने भविष्य के बारे मे स्वविवेक से वे कोई निर्णय लेंगे। तत्काल कोई निर्णय लेना उनके लिए सम्भव नही है।

अनुमान किया जाता है कि हुमचा के मठ में उस दिन दोनो भट्टारक स्वामियों ने विचार-विमर्श के दौरान कोई सम्मिलित संकल्प किया। दूसरे दिन हुमचा के भट्टारकजी ने अपने इस विद्यार्थी को श्रवणबेलगोल जाने की प्रेरणा दी, आग्रह किया और आदेशित भी किया। अपनी अनुभव-विहीन अज्ञान दशा मे, इतने बडे मठ के सचालन की सम्भावित कठिनाइयो से आतंकित बालक रत्नवर्मा, जब किसी प्रकार सहमत नही हुआ तब गुरुजी ने उन्हे अपना कठोर आदेश भी सुना दिया ·

"या तो तुम श्रवणबेलगोल जाकर दीक्षा लो, या फिर यह गुरुकुल छोड दो। गुरु आज्ञा का उल्लघन करने वाले विद्यार्थी के लिए गुरुकुल मे कोई स्थान नही होता।"

असहाय रत्नवर्मा अत्यन्त दुखी मन से उसी रात्रि गुरुकुल छोडकर अपने घर बारंगा वापिस चला गया। किसी प्रकार उस वर्ष की पढाई पूरी की, परन्तु परीक्षा देने के लिए उसे पुनः हुमचा आना पडा। गुरुजी ने एक बार फिर उसे समझाया। उधर माता-पिता की सहमति और परिजनो के समर्थन मे भी उसका साहस बढा। मैट्रिक के समकक्ष वह परीक्षा देकर रत्नवर्मा उसी अनिश्चय और असमजस की स्थिति मे घर लौटे। रत्नवर्मा और विश्वसैन बालसखा सहपाठी थे। दोनो मित्रो ने घण्टो तक विचार-विमर्श किया परन्तु गुरुजी से 'हाँ' करने का साहस रत्नवर्मा को नही हुआ। परन्तु भट्टाकलक स्वामी हताश नही हुए। लगता है कि होनी का उन्हे सन्देह रहित पूर्वानुमान था। उन्होने अब इस प्रकार अपना प्रस्ताव भेजा कि तुम दोनो विद्यार्थी श्रवणबेलगोल आ जाओ। यहाँ कॉलेज में तुम्हारे पढने की व्यवस्था हो जायेगी। दीक्षा के प्रश्न पर बाद मे विचार कर लिया जायेगा।

उच्चशिक्षा दोनो मित्रो का ध्येय था ही, अत इस प्रलोभन के बाँधे दोनो मित्र श्रवणबेलगोल पहुंच गये। स्वामीजी ने उन्हे अपने पास मठ मे ही ठहराया। भले ही उस समय श्री रत्नवर्मा उच्चशिक्षा के मनसूबे मन मे बाँध रहे थे, परन्तु उनके लिए विधि के विधान मे कुछ अन्य ही व्यवस्था अकित थी। एक दिन अचानक भट्टाकलक स्वामीजी अस्वस्थ हो गये। वे दिन पर दिन अशक्त होने लगे। इस स्थिति मे कॉलेज की पढाई तो क्या होती, दोनो मित्र उनकी सेवा-सुश्रूषा मे लग गये। उपचार के लिए स्वामीजी को हुबली और फिर वहाँ से मैसूर लाया गया। पूरे समय श्री रत्नवर्मा उनके साथ रहे। दोनो मित्र अपनी नीद और भूख भुलाकर गुरुजी की सेवा करते रहे, परन्तु स्वामीजी का रोग बढता ही गया। उनका अन्त अब निकट दिखाई देने लगा था।

वैद्यों डॉक्टरो ने निराशा व्यक्त कर दी थी अत स्वामीजी को उनकी इच्छानुसार वापस श्रवणबेलगोल लाया गया। मठ मे भक्तो की भीड़ लग गयी। स्वामीजी की स्थिति से चिन्तित दूर-दूर से एकत्र हुई समाज ने, और मठ की शिष्य-मण्डली ने, स्वामीजी की भावना के अनुसार दीक्षा लेकर मठ का सचालन सम्हालने के लिए श्री रत्नवर्मा से प्रबल आग्रह किया। परिस्थितियो के समक्ष सिर झुकाकर अपनी सहमति प्रदान करने के अलावा अब रत्नवर्माजी के समक्ष कोई विकल्प नही था। अविलम्ब सारी पारम्परिक तैयारियाँ की गयी और उन्हें भट्टारक बनाने के लिए क्षुल्लक दीक्षा प्रदान कर दी गयी। स्वयं स्वामीजी ने यह सस्कार सम्पन्न किया। इस प्रकार बारह दिसम्बर 1969 को उन्नीस वर्ष की आयु के अनुभवहीन, विद्या-व्यसनी, सकोची युवक श्री रत्नवर्मा को देश की सर्वाधिक प्रसिद्ध जैन भट्टारकपीठ का उत्तराधिकारी

नियुक्त कर दिया गया। यह दीक्षा-संस्कार ही स्वामी का अन्तिम कार्य था।

भट्टाकलंक स्वामीजी ने दीक्षा के उपरान्त परम्परानुसार श्री रत्नवर्मा की पालकी में शोभा-यात्रा निकलवाई और उसी समय अपने अनगिनते अशीषो के साथ मठ का वर्चस्व उनके हाथो में सौंप दिया। अपने दायित्वो से निश्चिन्त होकर स्वामीजी ने बाहुबली भगवान् का ध्यान करते हुए, उसी दिन मध्याह्न मे, अत्यन्त शान्त परिणामो के साथ अपना शरीर छोड दिया। गुरु की पार्थिव देह का अन्तिम-संस्कार ही मनोनीत भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी का प्रथम कार्य हुआ।

पट्टाभिषेक की समस्त औपचारिकनाएं पूरी की गयी। दिवगत स्वामीजी ने जो उत्तराधिकार पत्र लिखकर छोड़ा था, शासन पर उसकी अनुमोदना प्राप्त हुई। राज्यपाल ने उस पर शासकीय सहमति का हस्ताक्षर अकित किया और दीक्षा के चार माह पश्चात्, 19 अप्रैल 1970 को, श्री महावीर-जयन्ती के पावन दिवस पर वर्तमान चारुकीर्ति स्वामीजी का पट्टाभिषेक सम्पन्न हुआ। राजस्व एव मुज़रई विभाग के मन्त्री श्री व्ही० कौजालगी ने इस अवसर पर कर्नाटक शासन का प्रतिनिधित्व करते हुए मठ का चार्ज और रजत मुद्रा (चाँदी की सील) स्वामीजी को सौंप दी। इस महोत्सव मे नवीन भट्टारकजी के शिक्षागुरु, हुमचा के मठाधिपति श्री देवेन्द्रकीर्ति स्वामीजी ने स्वयं पधारकर अपनी शुभकामनाएं दी। अपने शिष्य को श्रवणबेलगोल की पीठ पर आसीन कराने का अपना सकल्प आज साकार होता देखकर उनके आनन्द का पार नही था। हर्षाभिभूत होकर उन्होने बार-बार चारुकीर्ति स्वामी को आशीष देते हुए उनके लिए दीर्घायु और यश की कामना की। कारकल और कोल्हापुर के स्वामियो ने भी इस उत्सव की शोभा बढाई। जैन समाज की भारी उपस्थिति के साथ पट्टाभिषेक के समय अनेक शासकीय अधि-कारियो, जनकार्य विभाग मन्त्री श्री के० लक्कप्पा और विधान सभा मे विरोधी पक्ष के नेता श्री एस० शिवप्पा की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। इस प्रकार बड़े महोत्सव के साथ इस मठ के आसन पर इस महाभाग व्यक्ति को आसीन कराया गया जिसके कार्यकाल मे श्रवणबेलगोल मे एक नही, अनेक ऐतिहासिक कार्य अनोखी गरिमा के साथ सम्पन्न हुए और यह सिद्ध हो गया कि स्वर्गीय भट्टाकलक स्वामीजी ने बहुत उपयुक्त व्यक्तित्व का अपने उत्तराधिकारी के रूप मे चयन किया था।

मठ की आर्थिक हालत शोचनीय थी। सस्थानो का प्रबन्ध भी अत्यन्त शिथिल था। नगद राशि के रूप मे शायद सौ रुपया भी भण्डार मे नही था। शासन के पास मठ की कुछ राशि अवश्य जमा थी, पर शासन उसे देने को तैयार नही था। बाद मे दस वर्ष के प्रयत्नो से वह राशि प्राप्त की जा सकी। परन्तु उस हालत मे भी श्रवणबेलगोल के मठाधीश को विपन्न नही कहा जा सकता था। उस समय भी वे बहुत बड़े ऐश्वर्य के स्वामी थे। उनका वह ऐश्वर्य था गुरु के आशीर्वाद, सहकारी के रूप में बालसखा मित्र का सत्परामर्श और सहयोग तथा मठ के भक्त समुदाय की अटूट निष्ठा। इस सब के अतिरिक्त एक और जो अतरग निधि उनके पास थी वह थी गोमटेश्वर स्वामी के चरणो में उनकी अपार भक्ति और उस भक्ति से निपजा हुआ आत्मबल। उनके विश्वास का आकाश बहुत बड़ा था और श्रवणबेलगोल के विकास के लिए उनके संकल्प उससे भी बड़े थे। बस, तब से अब तक का इस तीर्थ का इतिहास, उसी निष्ठा और संकल्पशीलता का प्रेरक इतिहास है।

चारुकीर्ति स्वामीजी के बारह वर्षों के कार्यकाल मे क्षेत्र की अभिवृद्धि का जो कार्य हुआ,

श्रवणबेलगोल का जो प्रचार-प्रसार हुआ, जनमानस में इस तीर्थ के लिए भक्ति और प्रभावना का जो उद्रेक हुआ और क्षेत्र के सम्पर्क मे आने वाले यात्रियो, पर्यटको और अधिकारियो के साथ जो स्नेह पूर्ण सम्बन्ध बने, उन सबका कारण स्वामीजी का मृदुल व्यवहार और श्री विश्वसैन की प्रबन्ध-पटुता पर आधारित मठ की सुविचारित व्यवस्था ही है। यह सब करना, या कर पाना, मैनेजिंग कमेटी के बस का कार्य नही था। क्षेत्र की विधिवत् व्यवस्था और आय-व्यय के नियन्त्रण तक ही कमेटी के कार्यकलाप सीमित होते हैं। प्रभावना और प्रसिद्धि का सारा श्रेय स्वामीजी को ही है।

वास्तव मे स्वामीजी ने मठ का पद भार ग्रहण करने के बाद दोहरा परिश्रम करके ये सफलताएँ प्राप्त की है। इधर अपनी योग्यतम सचालन क्षमता से उन्होने क्षेत्र का काया-कल्प कर दिया और दूसरी ओर अध्ययन, मनन और साधना का अभ्यास करते हुए वे अपने व्यक्तित्व का निरन्तर उत्कर्ष करते रहे। निरभिमान चिन्तन और निराडम्बर व्यवहार के साथ नम्रता और विनय उनका विशिष्ट गुण है। इसी गुण के कारण स्वामीजी को अपने प्रयोजनो की सिद्धि के लिए चारो ओर से मार्ग-दर्शन, सहयोग और शुभ कामनाओ की प्राप्ति होती रही और वे एक-एक कर सफलता की सीढ़ियाँ चढते रहे। सादगी पूर्ण जीवन, सादा खान-पान और निरन्तर ज्ञानाध्याम उनके जीवन का क्रम बन गया। एक ओर जहाँ पूरे देश मे भ्रमण करके उन्होंने लोगो को दक्षिण-यात्रा की प्रेरणा दी है, विदेशो तक भगवान् महावीर के उपदेशो का प्रचार किया है, वही दूसरी ओर एक-एक माह तक मौन-साधना के द्वारा उन्होने वस्तु-स्वरूप का अभ्यास करके आत्मबल का उत्कर्ष भी किया है। इसलिए आज उनका व्यक्तित्व एक चारित्रनिष्ठ साधक का प्रामाणिक और प्रणम्य व्यक्तित्व बन गया है।

यह महोत्सव

भगवान् बाहुबली सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना एव महामस्तकाभिषेक महोत्सव एक स्वर्णिम पृष्ठ की तरह जैनमठ के इतिहास मे सलग्न है। सम्भवतः वही इसका उज्ज्वलतम पृष्ठ है। इसमे दो मत नही हैं कि इस महोत्सव की ऐतिहासिक सफलताओ का अधिकाश श्रेय चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी को जाता है।

लगभग चार वर्ष पूर्व जब वे महोत्सव की तैयारियो मे सलग्न हुए तब उनके पास महा-मस्तकाभिषेक की व्यवस्था का कोई पूर्व अनुभव नही था। यहाँ तक कि उन्होने इसके पूर्व कोई मस्तकाभिषेक निकट से देखा भी नही था। फिर भी बडी समझदारी के साथ, बड़े धीरज के साथ और बडी कुशलता के साथ उन्होने इस महोत्सव मे अपने उत्तरदायित्वो का निर्वाह किया। उत्सव के निर्विघ्न समापन के लिए अपने आपको अनेक प्रतिज्ञाओ मे बाँधकर वे पूरी शक्ति से उस काम मे जुट गये। पूरे भारत का भ्रमण किया। हजारो लोगो से परामर्श और विचार-विमर्श किये। सैकडो को अपना सहयोगी बनाया। बाहरी व्यवस्था मे वह जितने उदार बने रहे, भीतरी मन्त्र-तन्त्र और अनुष्ठान की निर्दोषिता के लिए उतने ही सतर्क और कठोर मैंने उन्हें देखा। सबसे बडी विचित्रता मैंने यह देखी कि कभी, किसी भी हालत मे उनकी प्रसन्नता ने, उनके चेहरे की मुस्कान ने एक क्षण के लिए भी उनका साथ नही छोडा।

महोत्सव की सयोजना के व्यस्ततम क्षणो मे भी उन्होने जिस सरलता से कठिन समस्याओ

के समाधान दिये, जिस निर्भीकता से अनेक विकट परिस्थितियों का सामना किया और जिस समता पूर्वक तरह-तरह की विषमतओं मे भी अपने आपको स्थिर रखा, वह सचमुच आश्चर्यजनक था। उस समय उनकी प्रतिभा, कार्यदक्षता और लगन, हम सबको चकित कर देती थी। अशेष पुरुषार्थी की तरह सदा सन्नद्ध, और अजातशत्रु की तरह सर्वमान्य उनका प्रभावक व्यक्तित्व, पूरे मेले में हर समय, हर कहीं उपस्थित दिखाई देता था। ऐसा लगता था जैसे एक साथ कई जगह उपस्थित रहने की कोई विद्या उन्होंने सिद्ध कर ली है।

जिन्होंने बहुत निकट से स्वामीजी की कार्य-पद्धति का अवलोकन किया, उनके भीतर की अशेष क्षमता को पहिचाना, उन्ही ने उनके लिए 'कर्मयोगी' उपाधि का चयन किया। मुख्य अभिषेक के एक दिन पूर्व 21 फरवरी को लगभग डेढ़ लाख जनता की सभा में चारुकीर्ति स्वामी-को 'कर्मयोगी' कहकर नमन करते हुए श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने जब उन्हें अलंकृत किया तब मैंने लिखा था—"इस सम्बोधन में तनिक भी अतिशयोक्ति नही है, यह उपाधि सही अर्थों में स्वामीजी का 'स्व-भुजोपार्जित अलंकरण' है।

जन-सम्पर्क और प्रभावना भट्टारकों द्वारा जैन शासन की सेवा का प्रमुख कार्य रहा है। जैनेतर धर्मगुरुओं, मठाधीशों और राजपुरुषों से सम्पर्क करना, उन्हें अपने यहाँ बुलाना और आवश्यकता पड़ने पर उनके यहाँ जाना अनेक ऐसे कार्य हैं जिनका निर्वाह मुनिपद मे सम्भव नहीं होता। इस प्रकार के लौकिक कर्तव्यों के निर्वाह योग्य साधक का जो रूप उपयुक्त रह सका, वही यह भट्टारक पद है। जन सम्पर्क और लोक-संग्रह का कार्य दिगम्बर साधु कर ही नही सकते, और श्रावक इतनी प्रभावना पूर्वक उसे करने में समर्थ नहीं होते। तब कैसे यह कार्य हो? यह एक ऐतिहासिक प्रश्न है। श्रवणबेलगोल मे पिछले बारह वर्षों मे मठ की अभिवृद्धि और विकास के जो कार्य हुए, उनके लिए स्वामीजी को जगह-जगह जाना पडा। हर सम्प्रदाय के पर्वों, उत्सवो मे जाकर, तथा अपने उत्सवों में उन्हें बुलाकर, आपस के सम्पर्क बनाना पड़े। वे इस वेश में आना-जाना, मिलना-जुलना कर सकते हैं, इसीलिए यह सब सम्भव हुआ। धर्मायतन और लोकायतन के बीच एक सेतु के रूप में उन्हें काम करना पड़ता है। उत्तर और दक्षिण के बीच, जैन और जैनेतर के बीच, तथा बड़ो और छोटो के बीच, सेतु बाँधने जैसा यह काम कठिन भले ही हो पर उसकी उपयोगिता निर्विवाद है। श्रवणबेलगोल का इतिहास इसका प्रमाण है।

पुनः पट्टाभिषेक

मठ की परम्परा के अनुसार भट्टारकजी का पट्टाभिषेक प्रति बारहवे वर्ष होता है। जो भट्टारक बारह वर्ष से अधिक अवधि तक इस पद पर रहते हैं, पद-ग्रहण के उपरान्त हर बारहवें वर्ष उनका भी पुनः पट्टाभिषेक किया जाता है। उस समय इस अवसर के लिए निर्धारित सारे अनुष्ठान, वही सारी क्रियाएँ दोहराई जाती हैं। नेमिसागरजी वर्णी का और भट्टाकलंक स्वामीजी का भी पुनः पट्टाभिषेक हुआ था। अभी 1982 की महावीर जयन्ती को, वर्तमान भट्टारक कर्मयोगी चारुकीर्ति स्वामीजी के कार्यकाल के बारह वर्ष पूर्ण होने पर, उनका भी उसी प्रकार पुनः पट्टाभिषेक किया गया। इस परम्परा की विशेषता यह है कि बारह वर्ष व्यतीत होने पर आगे के लिए उस पद पर बने रहने का भट्टारक स्वामीजी को

पूरा अधिकार होता है। यदि वे ऐसा चाहें, तो आजीवन इस पद पर बने रह सकते हैं। समाज, शासन, अथवा मठ की शिष्य-मण्डली, किसी को उनके इस निर्णय में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है।

श्री महावीर जयन्ती, चार अप्रैल 1982 को कर्मयोगी चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के पट्टाभिषेक का बारह वर्ष का काल समाप्त होता था। उस दिन श्रवणबेलगोल में एक भव्य समारोह हुआ, जिसमे पुनः बडी धूम-धाम से स्वामीजी का पट्टाभिषेक किया गया। स्वामीजी के सैकडो भक्तो ने पुष्प-मालाओं से, और तरह-तरह की भेंट अर्पित करके, उनके प्रति अपनी भक्ति-भावना प्रकट की। बंगलोर के प्रसिद्ध वीणावादक कलाकार श्री सूर्यनारायण ने संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। दोपहर मे स्वामीजी को पालकी मे बिठाकर पूरे नगर मे जुलूस निकाला गया। उस समय लगभग बीस हज़ार का समुदाय नगर मे उपस्थित था। जुलूस मे लोग गाते-बजाते, नाचते और फूल बरसाते हुए चल रहे थे। इस अवसर पर दूर-दूर से सैकड़ो विशिष्ट जनो की शुभ-कामनाएँ और बधाई सन्देश स्वामीजी को प्राप्त हुए। अनेक मठाधीशो ने, जगतगुरु शकराचार्य ने, तथा अनेक शैव, लिंगायत और वैष्णव सन्तों ने उनके लिए अपनी बधाईयां और शुभ-कामनाएं भेजी। इस अवसर पर कुछ भक्तो ने स्वामीजी को अनेक प्रकार की भेंट देकर सम्मानित किया। बारह वर्ष पूरे होने के प्रतीक स्वरूप एक सज्जन ने बारह हजार बारह रुपये स्वामीजी को अर्पित किये।

इतने उज्ज्वल इतिहास की पृष्ठभूमि में यह कामना स्वाभाविक है कि 1994 की महावीर जयन्ती के दिन कर्मयोगी स्वामीजी के तृतीय पट्टाभिषेक का आनन्द हम सबको प्राप्त हो।

श्रवणबेलगोल के विकास में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का योगदान

तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना

"देशभर में दूर-दूर तक स्थित अपने दिगम्बर जैन तीर्थों की सेवा-सम्हाल करके उन्हें एक संयोजित व्यवस्था के अन्तर्गत लाने के लिए किसी संगठन की आवश्यकता है।"

यह विचार उन्नीसवी शताब्दी समाप्त होने के पूर्व सन् 1899 ई० में, बम्बई निवासी दानवीर, जैनकुलभूषण, तीर्थभक्त, सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जवेरी के मन में सबसे पहले उदित हुआ। सेठ साहब बम्बई प्रान्तिक दिगम्बर जैनसभा के सर्वेसर्वा थे। अपने संकल्प को साकार करने के लिए उन्होंने उसी सभा मे 'तीर्थरक्षा-विभाग' की स्थापना की थी तथा समीपस्थ शत्रुजय, तारंगा और पावागढ़ आदि क्षेत्रो पर जीर्णोद्धार एवं व्यवस्था सम्बन्धी कार्य प्रारम्भ कराये थे, परन्तु यह व्यवस्था सेठ माणिकचन्दजी के विराट संकल्पों की पूर्ति नही कर पायी। इतने बडे देश में फैले हुए अनगिनते तीर्थों की रक्षा के लिए एक स्वतन्त्र सस्था की आवश्यकता उनके दूरदर्शी मन में प्रखरता से उभरती रही।

सन् 1900 में व्यापारिक व्यस्तताओ से अपने आपको मुक्त करके सेठ साहब अपनी रुचि के अनुसार तीर्थक्षेत्रो का सगठन करने और उनकी अच्छी से अच्छी व्यवस्था बनाने के लिए पूरी लगन के साथ जुट गये। अनेक अवसरों पर, अनेक स्थानों पर उन्होने तीर्थों की समस्याओं से समाज को परिचित कराया और उनके समाधान के लिए एक अखिल भारतीय संगठन की स्थापना का वातावरण तैयार किया। दो वर्ष के भीतर ही सेठ साहब को अपने दीर्घ प्रयास की सफलता के लिए अनुकूल अवसर प्राप्त हो गया।

विक्रम संवत् 1959 में कार्तिक वदी पंचमी से दसवीं तक, तदनुसार 22-10-1902 से 26-10-1902 तक, भारत वर्षीय दिगम्बर जैन महासभा का सातवाँ वार्षिक अधिवेशन मथुरा में आयोजित हुआ। उस समय महासभा दिगम्बर जैन समाज में राष्ट्रीय स्तर की एकमात्र सक्रिय संस्था थी। समाज के प्राय: सभी गणमान्य विद्वान् और श्रीमान् महासभा के अधिवेशनो में एकत्रित होते थे। इस अधिवेशन में बम्बई से सेठ माणिकचन्दजी अपने साथ सेठ रामचन्द्र नाथाजी, सेठ गुरमुखराय, पण्डित धन्नालालजी और पण्डित जवाहरलालजी शास्त्री आदि अनेक सहयोगियों को लेकर उपस्थित हुए। पण्डित गोपालदासजी बरैया भी उस अधिवेशन में पहुँचे। सेठ माणिकचन्दजी ने तीर्थ क्षेत्रों की दयनीय स्थिति बखानते हुए क्षेत्रों की अव्यवस्था और उन पर घिरते हुए संकटों का चित्र प्रस्तुत किया तथा उनकी सार-सम्हाल के लिए सामाजिक संगठन की आवश्यकता पर अत्यन्त मार्मिक भाषण दिया। उसी समय पण्डित गोपालदासजी बरैया के प्रस्ताव पर, सेठ माणिकचन्दजी बम्बई, बाबू देवकुमारजी रईस आरा और मुन्शी चम्पतराय

जी के समर्थन पूर्वक, 22 अक्टूबर, 1902 को 'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' का गठन हुआ। इस कमेटी के 35 सभासद सेठ माणिकचन्दजी के प्रस्ताव पर मनोनीत किये गये। सेठ माणिकचन्द जी स्वयं कमेटी के संस्थापक महामंत्री बनाये गये। सेठ चुन्नीलाल झवेरचन्द और लाला रघुनाथदास सरनो, सहायक महामंत्री नियुक्त किये गये।

तीन वर्ष पश्चात्, महासभा के अम्बाला अधिवेशन मे समाज ने यह भी निर्देशित किया कि तीर्थक्षेत्र कमेटी अपनी स्वतन्त्र नियमावली बनाकर, समस्त दिगम्बर जैन समाज की अधिकृत प्रतिनिधि संस्था के रूप मे कार्य प्रारम्भ करे, तथा भारत के समस्त दिगम्बर जैन तीर्थों का संचालन इसी कमेटी के अनुशासन मे किया जाए। इस प्रकार दिगम्बर जैन महासभा की जन्म-भूमि मथुरा मे ही, सन् 1902 ई० मे उसी के अधिवेशन मे एक स्वतन्त्र सस्था के रूप में 'भारत वर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' का जन्म हुआ और शीघ्र ही उसने अपना नाम सार्थक कर लिया।

सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जी जवेरी इस कमेटी के स्वप्न-द्रष्टा और सस्थापक अध्यक्ष एवं मन्त्री भर नही थे, वही इस सस्था के प्राण थे। स्थापनाकाल में समाज ने, या महासभा ने, इस कमेटी को कोई फण्ड उपलब्ध नही कराया। दानवीर जवेरीजी ने अपनी उदारता और प्रबन्ध पटुता से उस अकुर को ऐसा सीचा, उसकी सुरक्षा का ऐसा पुख्ता प्रबन्ध किया, कि वह छोटी-सी सस्था आज एक विशाल छायादार वृक्ष की तरह, देशभर के सभी जाने-अनजाने तीर्थों को अपना सरक्षण देने की क्षमता लेकर खडी है।

जवेरीजी ने चार वर्ष तक एक मुनीम को सौंपकर कमेटी का सारा पत्राचार और हिसाब-किताब अपनी पेढी पर ही रखा। प्रारम्भ मे लाल रग का एक छोटा-सा बस्ता ही इस कमेटी का कार्य साधन था। चार ही वर्ष मे जवेरीजी के परिश्रम से कमेटी का कार्य इतना बढ़ गया कि एक पृथक् कार्यालय उसके लिए आवश्यक लगने लगा। तब सन् 1906 ई० मे उन्होंने अपनी धर्मशाला, हीराबाग बम्बई के दीवानखाने मे बाबू शीतलप्रसादजी की देख-रेख मे कमेटी का कार्यालय स्थापित किया। उस पुण्य-पुरुष की पवित्र भावनाओ की क्षत्र-छाया मे, पचहत्तर वर्षों से संस्था का मुख्य कार्यालय उसी स्थान पर चल रहा है। तीर्थ-रक्षा का यह कार्य और यह कार्यालय, निरन्तर चलता रहे, इस भावना से उन्होंने कमेटी के व्यय के लिए अपने ट्रस्ट की आय मे से कुछ नियमित सहायता इस कमेटी को प्रदान करने का प्रावधान कर दिया था जो आज तक अनवरत रूप से प्राप्त हो रहा है।

श्रवणबेलगोल क्षेत्र के विकास में कमेटी का योगदान

अस्तित्व मे आते ही कमेटी ने देश के अनेक महत्त्वपूर्ण तीर्थों का सर्वेक्षण कराया। सन् 1908 में श्रवणबेलगोल के सर्वेक्षण के समय क्षेत्र की स्थिति अच्छी नहीं पायी गयी। यात्रियो के ठहरने के लिए उस समय तक वहाँ 1904 मे बनी 'कलुचत्र-धर्मशाला' ही एकमात्र आश्रय थी। मन्दिरों की स्थिति खराब होती जा रही थी। गोमटेश्वर का महामस्तकाभिषेक लगभग बीस वर्ष से नही हुआ था। उस समय भट्टारक पीठ पर शीलवर्णी स्वामीजी विराजमान थे। वे अत्यन्त भोले स्वभाव के, भद्र-परिणामी आत्म-केन्द्रित महात्मा थे। लौकिक कार्यों में उनकी उदासीनता भी क्षेत्र की तात्कालिक शिथिल व्यवस्था का एक कारण कहा जाता है।

सर्वप्रथम सेठ माणिकचन्दजी के ही प्रयत्नों से सन् 1883-84 में विन्ध्यगिरि पर गोमेटेश्वर बाहुबली तक पहुँचने के लिए सीढ़ियों का निर्माण हो चुका था। सन् 1909 में कमेटी ने अपना एक कार्यकर्ता वहाँ भेजा, जिसने भट्टारकजी को तथा समाज को प्रेरणा देकर क्षेत्र की व्यवस्था में अनेक सुधार कराये। इसी बीच माणिकचन्दजी जवेरी ने प्रयत्न करके स्थानीय लोगो का सहयोग प्राप्त किया और तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्त्वावधान में 1910 ई० में बाहुबली स्वामी का महामस्तकाभिषेक आयोजित कराया। उसी अवसर पर श्रवणबेलगोल की व्यवस्था के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी के अन्तर्गत एक स्थानीय कमेटी का गठन किया गया।

सन् 1910 में गठित यह कमेटी कुछ कारणो से कार्य चलाने में असमर्थ रही, अतः सन् 1912 में क्षेत्र के जीर्णोद्धार और व्यवस्था के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी ने बम्बई से मुनीम और मिस्त्री श्रवणबेलगोल भेजकर मन्दिरो की सफाई-पुताई तथा सीढ़ियो की मरम्मत करायी। उस समय राज्य की ओर से मन्दिरो की मरम्मत कराने की अनुमति प्राप्त नही हो सकी। सेठ माणिकचन्दजी ने मैसूर के सेठ वर्धमानैयाजी को प्रेरणा देकर श्रवणबेलगोल की सेवा के लिए तत्पर किया। उन्ही का सहयोग लेकर तीर्थक्षेत्र कमेटी ने पन्द्रह वर्ष के अन्तराल से सन् 1925 मे पुनः महामस्तकाभिषेक का आयोजन किया। इस आयोजन मे कमेटी ने अपने पास से भी नौ हज़ार रुपया व्यय किया।

सन् 1925 के महामस्तकाभिषेक के समय भट्टारकपीठ पर श्रीनेमिसागरजी वर्णी विराजमान थे। ये जैन आगम के मर्मज्ञ विद्वान, कार्यकुशल और व्यवहारकुशल भट्टारक थे। इनके कार्यकाल मे श्रवणबेलगोल की व्यवस्था मे अनेक सुधार हुए और क्षेत्र की बहुत उन्नति हुई। क्षेत्र पर उस समय तक केवल वही एक छोटी-सी धर्मशाला थी। यात्रियो के ठहरने के लिए स्थान का अभाव सबको खटकता था। कमेटी की प्रेरणा से, और भट्टारकजी के उपदेश से, बाबू निर्मल कुमारजी आरा तथा उत्तर भारत के कुछ अन्य महानुभावो से द्रव्य सहयोग प्राप्त हुआ और भट्टारक स्वामीजी ने स्वतः अपनी देखरेख मे दिगम्बर जैन मठीय धर्मशाला तैयार करा दी।

सन् 1940 मे महामस्तकाभिषेक का आयोजन मैसूर राज्य के मुज़रई विभाग द्वारा हुआ। राज्य की ओर से मेले में प्रतियात्री दो रुपये मेला टेक्स लगाने का प्रस्ताव था। तीर्थक्षेत्र कमेटी ने पूरे देश मे इस प्रस्तावित मेला टेक्स का विरोध करवाया। कमेटी के महामन्त्री श्री रतनचन्द चुन्नीलाल जवेरी ने स्वयं मैसूर महाराजा से मिलकर विरोध किया फलतः मैसूर राज्य को यात्री टेक्स का वह प्रस्ताव वापस लेना पडा।

तीर्थक्षेत्र कमेटी से मस्तकाभिषेक के खर्च के लिए अनुदान राशि माँगी गयी। कमेटी ने दस हज़ार रुपया इस शर्त पर देना स्वीकार कि मेले की आमदनी से, लाभ की स्थिति मे, यह राशि कमेटी को वापस लौटा दी जाये। मैसूर शासन को यह शर्त स्वीकार नही हुई, अतः कमेटी की ओर से खर्च के लिए केवल चार हज़ार का अनुदान दिया गया। इस मेले की सारी बचत राज्य में जमा कर ली गयी। बाद में भट्टारक नेमिसागरजी कारकल जाकर रहने लगे जिससे क्षेत्र की व्यवस्था पुनः बिगड़ने लगी। नवीन भट्टारक ब्र० कुन्दकुन्द स्वामी कुछ कारणो से उस समय व्यवस्था और अनुशासन पूरी तरह नहीं सम्भाल सके।

तीर्थक्षेत्र कमेटी ने क्षेत्र की हालत सुधारने के लिए मैसूर से श्री जी० के० डी० भरमैया, श्रवणबेलगोल के श्री जी० पी० पद्मैया तथा श्री के० पी० बजनाभैया का सहयोग लेकर सन् 1950

में श्रवणबेलगोल में अपना शाखा कार्यालय स्थापित किया। इस माध्यम से धर्मशाला की मरम्मत तथा बिजली फिटिंग करायी गयी। बाहुबली की प्रदक्षिणा में कबूतर व चमगादड़ रहने से मूर्तियो के पास कचरा और अंधेरा रहता था, अतः पाँच हजार रुपयों के खर्च से वहाँ सफाई कराकर जालियाँ लगवायी गयी और प्रकाश का प्रबन्ध किया गया। सन् 1951 में कमेटी के इन्सपेक्टर श्री बाबूलाल का निधन हो जाने से कमेटी के कार्यालय पर राज्य के ताले पड़ गये। इसके बाद वहाँ कमेटी का कार्यालय कई वर्षों तक संचालित नही हो सका।

एक विपदा का निराकरण

सन् 1953 का महामस्तकाभिषेक भी मैसूर राज्य के प्रबन्ध में हुआ। उस समय मेले के प्रभारी अधिकारी, हासन के डिप्टी कमिश्नर ने अभिषेक के कलश दिगम्बर जैनो के अलावा भी कुछ लोगो को बेच दिये थे। ज्ञात होते ही तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्यो ने इसका कड़ा विरोध किया। सरसेठ भागचन्दजी सोनी और श्री राजकुमारसिंहजी ने भी जगह-जगह से इसके विरोध मे आवाज उठायी। उस समय मेले के लिए जो अनेक पूज्य दिगम्बर मुनिराज श्रवणबेलगोल पधार चुके थे उन्होने भी इस दुर्भावनापूर्ण कदम का तीव्र विरोध किया। ऐसे लोगों को बेचे हुए कलश वापस नही लौटाने की स्थिति मे सभी मुनिराजो ने अनशन करने की घोषणा कर दी, तब कही डिप्टी कमिश्नर को बुद्धि आयी। उसी समय, अभिषेक के दो दिन पूर्व, तीन मार्च 1953 को जनरल कमेटी की उसे आवश्यक बैठक बुलाना पडी।

इस बैठक मे, तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामन्त्री श्री रतनचन्द चुन्नीलाल जवेरी के साथ सरसेठ भागचन्दजी सोनी, श्री राजकुमारसिंहजी, लाला परसादीलालजी पाटनी, सेठ मोहनलालजी बडजात्या और पण्डित वर्द्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री आदि महानुभावों ने उपस्थित होकर डिप्टी कमिश्नर हासन के शरारत भरे कदम का ज़ोरदार विरोध किया और कमेटी मे यह निर्णय कराया कि "दिगम्बर जैनो के अतिरिक्त जिन अन्य लोगो को कलश बेचे गये हैं, उनकी राशि उन्हें लौटा दी जाय क्योकि गोमटस्वामी के पवित्र मन्दिर मे दिगम्बर जैनो के अलावा किसी को भी कलश प्राप्त करके अभिषेक करने का, या अन्य अनुष्ठान करने का अधिकार नही है।"

उस महोत्सव की जनरल कमेटी के कार्यवाई रजिस्टर मे यह निर्णय इन शब्दों मे लिखा गया —

"It is in inherent in the resolution of the Religious Committee passed on 8-2-53 and ratified by the General Committee on 18-2-53 that only Digamber Jains have the right of performing Abhisheka, but the point as to who could purchase Kalasas was not made equally clear. Hence, some Kalasas have been sold to persons who are not Digamber Jains. This committee feels that the money received for Kalasas from persons who are not DIGAMBER JAIN may be refunded to them AS IT IS NOT CUSTOMARY FOR PERSONS WHO ARE NOT DIGAMBER JAINS, TO PARTICIPATE IN OR PERFORM RITUAL WORSHIP IN THIS TEMPLE."

सन् 1955-56 में श्री भरमैया की देख-रेख में चौदह हजार रुपयों की लागत से एक रेस्ट हाउस का निर्माण कराया गया। पाँच हजार रुपये खर्च करके मंगायी बस्ती और जिननाथपुर की शान्तीश्वर बस्ती का जीर्णोद्धार तथा चहार-दीवारी का निर्माण कराया गया। सन् 1957 में परिस्थितियाँ कुछ सुगम बनीं। भट्टारक स्वामीजी का सहयोग प्राप्त होने लगा तब फिर से कमेटी का शाखा कार्यालय वहाँ स्थापित हुआ। तीर्थक्षेत्र कमेटी के अन्तर्गत एक क्षेत्रीय कमेटी का गठन किया गया। उसी समय साढ़े बारह हजार रुपये लगाकर भण्डार बस्ती और पुरानी धर्मशाला का जीर्णोद्धार कमेटी ने कराया।

इस प्रकार भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से श्रवणबेलगोल की व्यवस्था और रख-रखाव में समय-समय पर बहुमूल्य सहयोग प्राप्त होता रहा। कमेटी ने 1910 और 1925 मे महामस्तकाभिषेक अपने ही तत्त्वावधान मे आयोजित किये। सन् 1910 की बचत का रु. 22500.00 और सन् 1925 की बचत का रु. 33000.00 अपने पास जमा करके कमेटी मे 'गोमटस्वामी मूर्तिरक्षा फण्ड' तथा 'गोमटस्वामी महामस्तकाभिषेक फण्ड' की स्थापना की गयी। सन् 1910 में ही रु. 8000.00 की राशि से 'श्रवणबेलगोल बोर्डिंग फण्ड' भी बनाया गया। ब्याज की आय से यह राशि बढ़ती रही। पचास वर्ष में सन् 1959-60 तक इन फण्डों में से लगभग रु. 70,000.00 श्रवणबेलगोल में यह कमेटी खर्च कर चुकी थी, फिर भी लगभग इतनी ही राशि उसके पास जमा थी। इस राशि का उपयोग बाद मे वहाँ स्थायी निर्माण कार्यों में किया गया। दुर्भाग्य से कमेटी और भट्टारकजी के बीच कुछ विवाद उत्पन्न हो गये जो न्यायालय तक पहुँच गये।

12 फरवरी 1967 से क्षेत्र की व्यवस्था वहाँ नवनिर्मित 'श्रवणबेलगोल दिगम्बर जैन मुज़रई इन्स्टीट्यूशन मैनेजिंग कमेटी' (एस. डी. जे. एम. आई.) को हस्तान्तरित हो गयी। समस्त दिगम्बर जैन समाज की माँग पर भट्टारक स्वामीजी की सहमति पूर्वक, शासन ने इस सर्वाधिक-सम्पन्न कमेटी का गठन किया था। कर्नाटक के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री निजलिंगप्पा का यह निर्णय क्षेत्र के लिए उत्कर्षकारी रहा। उसी समय तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष साहु शान्तिप्रसादजी ने आपसी समझौते से विवाद का निपटारा करके रु. 16000.00 नकद तथा श्रवणबेलगोल मे मठीय धर्मशाला, कानजी स्वामी यात्रिक आश्रम, और रेस्ट हाउस आदि का स्वामित्व, एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ जाकर 5-10-69 को इस नवीन कमेटी को हस्तान्तरित कर दिया। श्रवणबेलगोल मे अब भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के शाखा कार्यालय की कोई आवश्यकता या उपयोगिता नही थी अतः उसे बन्द कर दिया गया।

इस प्रकार श्रवणबेलगोल की सम्पूर्ण व्यवस्था एक सक्षम और अधिकार सम्पन्न कमेटी के हाथ में आ गयी और तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से क्षेत्र के प्रशासनिक मामलो मे सहयोग का साठ वर्ष पुराना सिलसिला समाप्त हुआ। फिर भी इस विश्वतीर्थ के साथ तीर्थक्षेत्र कमेटी का सम्बन्ध समाप्त नही हुआ। बल्कि यह कहा जा सकता है कि उसकी जिम्मेवारियाँ कुछ और बढ़ गईं। यह इसलिए कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का अध्यक्ष, श्रवणबेलगोल दिगम्बर जैन मुज़रई इन्स्टीट्यूशन्स मैनेजिंग कमेटी में पदेन उपाध्यक्ष होता है। कमेटी की मूल नियमावली में ही यह प्रावधान है।

सन् 1981 के महामस्तकाभिषेक की योजना बनते ही तीर्थक्षेत्र कमेटी ने उसमे गहरी रुचि

ली और भरपूर सहयोग का आश्वासन दिया। सदा की तरह इस बार भी महोत्सव के पूर्व, विकास कार्यों के लिए, रु. 1,00,000.00 (एक लाख रुपये) की राशि कमेटी की ओर से क्षेत्र को प्रदान की गयी।

महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयांसप्रसादजी जैन के परामर्श से तथा श्री जयचन्दजी लोहाड़े, महामन्त्री की प्रेरणा से मेले के अवसर पर नीरज जैन द्वारा संयोजित, गोमटस्वामी के रेखाचित्र से युक्त, एक सुन्दर पोस्टर प्रकाशित करके कमेटी ने उसे दूर-दूर तक प्रचारित किया।

'यात्रियो को देश मे बिखरी हुई जैन पुरातत्त्व सामग्री का परिचय कराने के लिए इस मेले मे कमेटी ने एक अखिल भारतीय जैन कला-चित्र प्रदर्शनी लगायी। भारतीय ज्ञानपीठ ने भगवान् महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव पर लगभग चार-सौ चित्रो का बहुत अच्छा सकलन किया था, उनको प्रदर्शित करने के लिए कमेटी के अनुरोध को स्वीकार किया गया और श्री नीरज जैन के निर्देशन मे सयोजित हिन्दी, अंग्रेजी और कन्नड मे चित्रो का परिचय देने वाली इस प्रदर्शनी को कमेटी ने आयोजित किया व पूरे समय उसका संचालन किया। लाखों जनो ने इस प्रदर्शनी का अवलोकन किया।



क्षण-क्षणके आलेख
उद्‌घाटन के पूर्व तक

श्रेयांसप्रसाद अतिथि-निवास

आठ नवम्बर 1973 को कर्नाटक के मुख्यमन्त्री श्री देवराज अर्स की अध्यक्षता मे, तत्कालीन राज्यपाल श्री मोहनलाल सुखाडिया ने, श्रेयासप्रसाद अतिथि-निवास का शिलान्यास करके श्रवणबेलगोल तीर्थ के नवोन्मेष का सूत्रपात किया था। डेढ वर्ष पश्चात् 25 अप्रैल 1975 को श्री अर्स के हाथो ही इस सर्व सुविधा-सम्पन्न अतिथि-निवास का उद्‌घाटन हुआ। श्रवणबेलगोल का यही प्रथम गेस्ट हाउस है।

□

विद्यानन्द निलय

तीन अगस्त 1975 को श्री अक्षयकुमार जैन द्वारा विद्यानन्द-निलय धर्मशाला का उद्‌घाटन हुआ। उद्‌घाटन के अवसर पर श्री श्रेयांसप्रसाद जैन, सेठ लालचन्द हीराचन्द और पण्डित वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। उस समय विभिन्न दातारो के सहयोग से इस एक मजिली धर्मशाला मे चौबीस कमरे बनाये गये थे। अब अन्य दातारो के सहयोग से इसे दो मजिली कर दिया गया है। अब इस धर्मशाला मे रसोई और स्नान-गृह से सयुक्त अडतालीस कमरे और दो सभा-कक्ष हैं। अब इसमे ऊपर जिनमन्दिर और क्लॉक टावर बन रहा है।

□

धर्म-चक्र वाटिका

भगवान् महावीर के पच्चीस-सौ वें निर्वाण महोत्सव के समय भारत भ्रमण करता हुआ धर्मचक्र, बीस फरवरी 1977 को श्रवणबेलगोल पहुंचा था। कर्नाटक मे धर्मचक्र-प्रवर्तन की व्यवस्था 'श्रीविहार-समिति' द्वारा की गयी थी। स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी इस समिति के अध्यक्ष थे और चक्र की कर्नाटक यात्रा मे उनका बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान था। धर्मचक्र के आगमन के पूर्व ही श्रवणबेलगोल मे 'धर्मचक्र-वाटिका' का निर्माण हो चुका था। इसी वाटिका मे केन्द्रीय समिति द्वारा उपलब्ध कराई गयी डिजाइन के अनुरूप 'महावीर कीर्ति-स्तम्भ' का भी निर्माण कराया जा चुका था।

नगरागमन पर श्री वीरेन्द्र हेगडे ने आरती उतारकर धर्मचक्र का स्वागत किया। उन्होंने ही कीर्तिस्तम्भ का अनावरण करके उसे जनता को समर्पित किया। इस अवसर पर प्रमुख वक्ता के रूप मे कर्नाटक उच्च न्यायायलय के न्यायमूर्ति श्री टी० के० तुकोल ने अपने सारगर्भित भाषण में भगवान् महावीर के सिद्धान्तो का विवेचन किया। श्रीमती रत्नम्मा हेगडे, श्रीमती हेमावती हेगड़े और मूडबिद्री के भट्टारक चारुकीर्ति पंडिताचार्यवर्य स्वामीजी भी इस सभा मे उपस्थित रहे।

अनेक प्रकार के सुन्दर पौधो से सजी, और आकर्षक प्रकाश से सँवारी गयी यह धर्मचक्र-वाटिका, सायकाल कुछ समय के लिए आकर्षण का केन्द्र बन जाती है। चन्द्रगिरि की तलहटी में एक चट्टानी भू-भाग पर 'रॉक गार्डन' के रूप मे सवारी गयी यह वाटिका कलकत्ते के श्री हरकचन्द सरावगी द्वारा प्रदत्त पैंतीस हजार के अनुदान से निर्मित हुई इसलिए इसका नामकरण हुआ है—'ज्ञानीराम हरकचन्द सरावगी धर्मचक्र वाटिका'। अब इसी के सामने सडक पार चामुण्डराय-उद्यान बन गया है जिससे श्रवणबेलगोल की शोभा मे अभिवृद्धि हुई है।

▭

भट्टारक-भवन का शिलान्यास

चारुकीर्ति स्वामीजी के पद ग्रहण के ठीक आठ वर्ष बाद, श्री महावीर जयन्ती 21 अप्रैल 1978 को धर्मदिवाकर श्री शकरलाल जी कासलीवाल बम्बई की अध्यक्षता मे बगलोर के श्री बी० जी० जीवन्धरैया द्वारा 'भट्टारक-भवन' का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। बाद मे दो वर्ष के भीतर यह भवन तैयार हो गया।

▭

स्वामीजी की विदेश यात्राएँ

1976 में 'एशियाई विश्व-धर्म शान्ति-सम्मेलन' मे भाग लेने के लिए चारुकीर्ति स्वामीजी ने सिंगापुर का प्रवास किया। इस प्रकार भारत की सीमा के बाहर

जाकर धर्म प्रचार करने वाले प्रथम भट्टारक के रूप मे उन्होंने मठ के इतिहास मे अपनी पृथक् पहिचान बनायी। तीन वर्ष पश्चात्, अगस्त-सितम्बर 1979 मे, मूडबिद्री के भट्टारक स्वामीजी को साथ लेकर उन्होंने पुनः विदेश यात्रा की। न्यूजरसी अमेरिका मे 'द वर्ल्ड कान्फ्रेंस ऑन रिलीजन एण्ड पीस' के तृतीय सम्मेलन मे जैन धर्म का प्रतिनिधित्व करते हुए ये दोनों युवा भट्टारक लगभग एक माह में स्वदेश लौटे।

जून 1980 मे भट्टारक स्वामीजी ने महोत्सव के प्रचार के लिए इन्दौर, बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता आदि का भ्रमण किया। स्वामीजी के इस देशाटन से सहस्राब्दि समारोह के लिए पूरे देश मे सहयोग और सहायता का वातावरण निर्मित हुआ और अधिक लोगों ने श्रवणबेलगोल यात्रा के सकल्प किये।

▭

श्री शान्तिप्रसाद कला-मन्दिर

श्रावक शिरोमणि स्वर्गीय साहु शान्तिप्रसादजी की स्मृति मे उनके परिवार-जनो द्वारा श्रवणबेलगोल मे एक कला-केन्द्र स्थापित करने का संकल्प किया गया। इस कला-मन्दिर मे भित्ति-चित्रों तथा अनुकृतियो के माध्यम से जैन सस्कृति के कर्ण-धार महापुरुषो के जीवन-वृत्त प्रदर्शित करने की योजना है। इक्कीस जुलाई 1980 को मुख्यमन्त्री श्री आर० गुण्डूराव के कर कमलो से इस कला-मन्दिर का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। उस दिन प्रातः श्री गुण्डूराव और श्री एच० सी० श्रीकण्ठैया हेलीकॉप्टर से श्रवणबेलगोल पधारे। श्रेयासप्रसाद अतिथि-निवास से एक शोभायात्रा मे उन्हे मठ तक लाया गया, जहाँ उन्होंने एलाचार्य मुनि श्री विद्यानन्दजी का दर्शन प्राप्त किया।

मुख्यमन्त्री द्वारा 'श्री शान्तिप्रसाद कला-मन्दिर' का शिलान्यास कराकर श्री श्रीकण्ठैया के हाथों 'चामुण्डराय-उद्यान' का 'अंकुरारोपण' कराया गया। मठ के सामने एक सभा को सम्बोधित करते हुए श्री गुण्डूराव ने आगामी सहस्राब्दि समारोह को कर्नाटक के कुम्भ की संज्ञा दी। उन्होंने समारोह के लिए सभी के सहयोग की अपेक्षा व्यक्त की।



साहु श्रेयांसप्रसादजी ने अपने स्वर्गीय भ्राता को जैन संस्कृति का अग्रणी सरक्षक बताते हुए कहा कि उनके समस्त अधूरे कार्यों और कल्पनाओ को कार्यान्वित करने का दायित्व हमारे ऊपर है। पूरी शक्ति लगाकर हमे वे कार्य करना हैं। अन्त में साहुजी ने अतिथियो के प्रति आभार व्यक्त किया।

□

भट्टारक-भवन

भट्टारक-भवन का निर्माण समाज के सम्मिलित योगदान से कराया गया है। महामस्तकाभिषेक के दो वर्ष पूर्व, सोलह फरवरी 1980 को कर्नाटक के मुजरई मन्त्री श्री सुधीन्द्रराव कसबे द्वारा इस भवन का उद्घाटन हुआ। भट्टारक-भवन मे नीचे मठ का कार्यालय, पुस्तकालय और सभा कक्ष है। ऊपर चारुकीर्ति स्वामीजी का निवास, मन्त्रणा-कक्ष तथा छोटा-सा प्रवचन हाल है जहाँ बैठकर स्वामीजी आगन्तुक जनो से मिलते हैं, चर्चा करते है। समय-समय पर वहो वे विद्यापीठ के बालको को शिक्षण और दर्शनार्थियो को उपदेश देते है।

□

एलाचार्यजी की चातुर्मास स्थापना

बीस जुलाई को एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी का श्रवणबेलगोल मे मगल-प्रवेश हुआ। उसी सप्ताह, छब्बीस जुलाई को उन्होने यहाँ अपना चातुर्मास-योग स्थापित कर लिया। महामस्तकाभिषेक की तैयारियो के लिए अब उनका प्रत्यक्ष और लगातार मार्गदर्शन प्राप्त होता रह सकेगा, इससे महोत्सव समिति के सदस्यो का उत्साह बढा है।

एलाचार्यजी के इस चातुर्मास मे यात्रियों का आना-जाना प्रचुरता से रहा और अनेक धार्मिक कार्यक्रम श्रवणबेलगोल मे होते रहे। दिवाली के बाद अष्टाह्निका मे डिप्टीगज दिल्ली के श्री सुरेशचन्द जैन ने 'सिद्ध-चक्र विधान' का आयोजन कराया। आठ दिन तक पूजा-प्रभावना, भक्ति और सगीत का वातावरण बना रहा।

□



'पद्मावती-प्रेमचन्द पुस्तकालय' का उद्घाटन

दिल्ली के प्रसिद्ध समाजसेवी स्व० लाला राजकिशोरजी के सुपुत्र लाला प्रेमचन्द जैन भी सेवाभावी गृहस्थ हैं। जैन संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए समय-समय पर अनेक कार्य इस परिवार के द्वारा होते रहते है। लाला प्रेमचन्दजी की पत्नी सौ० पद्मावती भक्तिपरायण महिला है। इस दम्पती ने लगभग बीस हज़ार के योगदान से भट्टारक भवन में पुस्तकालय के लिए एक कक्ष का निर्माण कराया है।

▭

भक्ति अतिथि-गृह

'सेठ बालचन्द हीराचन्द इण्डस्ट्रीज चेरिटेबल ट्रस्ट' की ओर से श्रेयांसप्रसाद अतिथि-निवास के पास एक अतिथिगृह का निर्माण कराया गया। श्री वीरेन्द्र हेगड़े ने अट्ठाईस नवम्बर 1980 को इस नव-निर्मित अतिथि-निवास 'भक्ति' का उद्घाटन किया। समारोह की अध्यक्षता चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने की तथा एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी ने इस जनोपकारी कार्य के लिए सेठ लालचन्द हीरा चन्द को तथा उनके परिवार को मगल आशीष प्रदान किये।

▭

मध्यप्रदेश भवन

तीन जनवरी 1981 को जब इन्दौर से जनमंगल महाकलश की दक्षिण यात्रा का शुभारम्भ हो रहा था, तब उसी समारोह मे मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री अर्जुनसिंह ने श्रवणबेलगोल मे 'मध्यप्रदेश-भवन' के निर्माण के लिए ढाई लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की। तात्कालिक केन्द्रीय वित्त राज्यमन्त्री श्री सवाईसिंह सिसोदिया उस समारोह मे मुख्य अतिथि थे।

▭

आयुर्वेद चिकित्सालय

आसाम के श्री गणपतराय सरावगी ने पचास हज़ार का योगदान देकर अपने पिता स्व० चांदमलजी पांड्या के नाम पर यहाँ एक आयुर्वेद चिकित्सालय बन-



वाया। केन्द्रीय पर्यटन राज्यमन्त्री श्री चन्दूलाल चन्द्राकार के द्वारा उसका उद्‌घाटन सम्पन्न हुआ। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के व्यक्तिगत चिकित्सक और आजाद हिन्द फौज के सेनानी, कर्नल डॉ० आर० एम० कासलीवाल ने अपनी शुभकामनाओ के द्वारा समारोह को गौरवान्वित किया।

□

कुन्दकुन्द तपोवन

सात फरवरी 1981 को एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी द्वारा जिन दो दीक्षा-र्थियो को क्षुल्लक दीक्षाएं प्रदान की गयी थी, प्रचारित कार्यक्रम के अनुसार, उनका दीक्षा समारोह 'कुन्दकुन्द तपोवन' मे से सम्पन्न होना था। विंध्यगिरि पर ऊपर जाते समय सीढियों के बायी ओर जो प्राकृतिक प्राचीन गुफा है, नवीनीकरण कराकर तथा कुछ पौधे रोप कर उसे मनोरम रूप दिया गया है। यही 'कुन्द-कुन्द तपोवन' है। किसी कारण से वह दीक्षाएँ वहाँ नही हो सकी। मठ के सामने निर्मित मण्डप मे से दीक्षा समारोह सम्पन्न हुआ।

यह कुन्दकुन्द तपोवन एक पुरानी गुफा है। कई बार उसमे मुनि महाराजो ने तपश्चरण किया है। आचार्यरत्न श्री देशभूषणजी भी एक बार कुछ समय उसमें ठहरे हैं। एक जयकीर्ति महाराज भी कुछ दिनो तक उस गुफा मे एकान्तवास कर चुके है। इस महोत्सव के अवसर पर एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी के विश्राम के लिए गुफा का नवीनीकरण कराया गया था, परन्तु दर्शनार्थ पहुँचने वाली भारी भीड के लिए मार्ग की दुर्गमता के कारण, एलाचार्यजी का उस तपोवन में ठहरना सम्भव नही हुआ। मुनिश्री दो चार दिन ही उसमे ठहर पाये।

□

चामुण्डराय मण्डप में

आठ फरवरी से चामुण्डराय मण्डप मे प्रातः सात बजे से आचार्यों-मुनियों के नियमित उपदेश होते थे। मुनियो-आर्यिकाओ का समूह जब शान्तिसागर नगर से



मण्डप में जाने के लिए, या पर्वत की वन्दना के लिए निकलता था, अथवा वहाँ से लौटता था, तब हजारो नर-नारी मार्ग मे ही साष्टाग प्रणाम करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते थे। ऐसे अवसर पर मार्ग की व्यवस्था करना स्वयं-सेवको के लिए कठिन हो जाता था।

उस दिन चामुण्डराय मण्डप में जब दीक्षाएँ हो रही थीं तब भावुक-भक्त भैया मिश्रीलालजी गगवाल अत्यन्त भाव-विभोर होकर भजन और कीर्तन कराकर श्रोताओ को विराग की सरिता मे सराबोर कर रहे थे। साधु समुदाय के समक्ष खड़े होकर, आँखो से प्रेमाश्रु बहाते हुए, भक्ति विह्वल कण्ठ से भजन पंक्तियाँ दोहराते हुए, भैया मिश्रीलाल गगवाल की छवि आज भी ध्यान करते ही मेरी आँखों मे तैर जाती है।

□

व्यापक तैयारियाँ

आज श्रवणबेलगोल मे वह हो रहा है जो इसके पूर्व शायद कभी नही हुआ होगा। कर्नाटक शासन के मुख्यमन्त्री सहित चार मन्त्री, अनेक विधायक और शासन के सत्ताइस विभागो के प्रमुख अधिकारी श्रवणबेलगोल मे एकत्र हुए हैं। महोत्सव का उद्‌घाटन होने के लिए दो सप्ताह से भी कम समय शेष रह गया है। तैयारियाँ लगभग पूरी होने को हैं और ग्यारह उपनगरो से मिलाकर बने हुए 'गोमटनगर' की आकृति अब स्पष्ट उभरने लगी है। आज राज्यस्तरीय समिति की बैठक श्रवणबेलगोल मे बुलायी गयी है, यह इतने विशिष्ट जनो की एक साथ उपस्थिति उसी बैठक के लिए हुई है।

□□

एलाचार्यजी का मंगल-प्रवेश

उत्तरापथ से कर्नाटक

सहस्राब्दि महोत्सव के आयोजन का निर्णय होते ही, तीन वर्ष पूर्व, कर्नाटक की पूरी जैन समाज की ओर से एक प्रतिनिधि मण्डल ने दिल्ली मे, पूज्य एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी के समक्ष श्रीफल चढ़ाकर उनसे श्रवणबेलगोल पधारकर, इस महोत्सव मे समाज का मार्गदर्शन करने की प्रार्थना की थी। स्वय चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने वहाँ उपस्थित होकर मुनिश्री को सविनय आमन्त्रित किया था। वह निमन्त्रण स्वीकार करते हुए गोमटेश्वर भगवान् बाहुबली के इस दुर्लभ महोत्सव मे सम्मिलित होने का सकल्प करके, एलाचार्यजी ने 19 नवम्बर 1978 को भारत की राजनैतिक राजधानी से धर्म और संस्कृति की उस राजधानी के लिए अपना मंगल विहार प्रारम्भ किया था।

लगभग छह मास तक हरियाणा और राजस्थान मे भ्रमण करते हुए गाँव-गाँव मे उन्होने विश्वधर्म की अलख जगायी। दिल्ली से पालम, गुडगाँवाँ, रेवाडी, मनोहरपुरा और आमेर होकर 24-12-78 को मुनिश्री ने जयपुर पधारकर कुछ समय विश्राम किया। जयपुर से कोटडी, भीलवाडा, और हमीरगढ होते हुए वे चित्तौड पहुँचे जहाँ 19 मई 1979 को उस ऐतिहासिक नगरी मे, एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी के सान्निध्य मे आठ सौ वर्ष प्राचीन दिगम्बर जैन कीर्ति-स्तम्भ की समूह वन्दना, तथा कीर्ति-स्तम्भ के समीप स्थित महावीर स्वामी के प्राचीन दिगम्बर जैन मन्दिर पर कलशारोहण का कार्य, उन्हीं की प्रेरणा से सम्पन्न हुआ। मई 79 के अन्तिम सप्ताह मे मुनिश्री ने मध्य प्रदेश की सीमा मे प्रवेश किया।

मध्यप्रदेश को पार करने मे एलाचार्यजी को छह माह से अधिक समय लगा। इसी बीच इन्दौर नगर को दूसरी बार उनके चातुर्मास-योग का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस चौमासे मे मुनि विद्यानन्दजी के द्वारा महती धर्म प्रभावना हुई, साथ ही साथ श्रवणबेलगोल के उत्सव का भी खूब प्रचार हुआ। दक्षिण भारत के अनेक समाजप्रमुख तथा श्रवणबेलगोल और मूडबिद्री के भट्टारक स्वामी भी समय पर एलाचार्यजी के दर्शनार्थ इन्दौर आते रहे और महोत्सव की तैयारियो से उन्हे अवगत कराते रहे। इन्दौर के इसी चातुर्मास मे, एलाचार्यजी के द्वारा जिनवाणी की कीर्ति वृद्धि के प्रयासो को रेखांकित करने के लिए, समाज ने विद्यानन्द जी को 'सिद्धान्त-चक्रवर्ती' उपाधि से विभूषित किया। इस प्रकार अब उनका विरुद हुआ—'सिद्धान्त-चक्रवर्ती, उपाध्याय, एलाचार्य मुनि विद्यानन्द'। भक्त मण्डली कितनी भी सेवा-भक्ति करे, परन्तु बहते पानी की तरह, रमते जोगी भी किसी ठौर रुककर रहते नही हैं। निरन्तर गतिशीलता ही उन दोनो को निर्मल रखती है, शायद इसीलिए चौमासा बीतते ही सात नवम्बर 79 को इन्दौर से सिद्धान्त-चक्रवर्तीजी ने अपने मार्ग पर आगे प्रस्थान कर दिया।

इन्दौर से चलकर धामनौद, मनावर, बडवानी, बावनगजा-ऊन और भीखनगाँव होते हुए मुनिश्री खण्डवा पधारे। वहाँ से बरहानपुर होते हुए दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में उन्होंने

महाराष्ट्र में प्रवेश किया। भुसावल, जलगांव, धूलिया, नासिक और गजपन्था होकर वे महानगरी बम्बई की ओर बढ़े जहाँ लाखो लोग उनकी वाणी सुनने के लिए लालायित, मुनिश्री के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

अन्ततः सात फरवरी 80 का वह दिन आया जब इगतपुरी, कसारा, भिवण्डी और थाना होते हुए एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी ने बोरीवली में पोदनपुर क्षेत्र पर पहुँचकर बम्बई नगर में प्रवेश किया। उस दिन बोरीवली में उस चिर प्रतीक्षित अतिथि के स्वागत के लिए भारी जनसमुदाय एकत्रित था। दो सप्ताह तक महानगरी में मुनिश्री के प्रवचनों की धूम रही। बम्बई में बोरीवली, गोरेगाँव, अँधेरी, खार और शिवाजी पार्क में एक-एक दिन रुककर एलाचार्यजी ने विश्व धर्म को व्याख्यापित करने वाले प्रवचन दिये। मध्य बम्बई में चौदह से उन्नीस फरवरी तक छह दिन उनके उपदेश और प्रवचन चलते रहे। विद्यानन्द जी की सभाओं में अतिशय भीड़ होती थी। ऐसा लगता था कि उनकी लोकोपकारी वाणी का प्रसाद पाने के लिए महानगरी का जनमानस अधीर होकर उमड़ पड़ा है। यहाँ पुनः दक्षिण भारत के अनेक लोगो ने उनका दर्शन किया और यथाशीघ्र कर्नाटक पहुँचने की अपनी प्रार्थना उनके समक्ष दोहरायी। उन्नीस और चौबीस फरवरी तक परेल, माटुगा, चेम्बूर, वाशी और पनवेल में जनता को सम्बोधित करते हुए 25 फरवरी को एलाचार्यजी ने बम्बई से बेलगाम की ओर प्रस्थान किया।

पनवेल से चलकर लोनावाला, खडाला होते हुए 7 मार्च को पूना में मुनिश्री ने प्रवचन दिया। इसके उपरात सतारा, कराड और शिरोली होकर कोल्हापुर के मठ मे उनका पदार्पण हुआ। भव्य शोभायात्रा के साथ कोल्हापुर में विद्यानन्दजी का स्वागत हुआ और एक सप्ताह तक उन्होने वहाँ विश्राम किया। कोल्हापुर जिले मे दिगम्बर जैनियो की संख्या दो-तीन लाख बतायी जाती है। गाँव-गाँव से आकर भारी सख्या में स्त्री-पुरुषो ने विद्यानन्दजी का दर्शन किया और उनसे उपदेश प्राप्त किया। कोल्हापुर से चलकर 20 अप्रैल 80 को वयोवृद्ध संत श्री समन्तभद्र महाराज के चरणों में नमन करने के लिए एलाचार्यजी कुम्बोज बाहुबली पहुँचे, जहाँ थोडा समय बिताकर वे बेलगाम आये। महाराष्ट्र की सीमा से निकलकर, बेलगाम में 11-5-1980 को जब मुनिश्री का नगर प्रवेश हुआ तब कर्नाटक में, कर्नाटक के ही इस जग विख्यात महापुरुष का स्वागत करने के लिए, बहुत बडा जनसमुदाय एकत्रित हुआ था। बेलगाम की जैन समाज ने साधर्मी जनो का इतना बडा समुदाय और अपने किसी धर्म गुरु के माध्यम से ऐसी धर्म प्रभावना पहली बार देखी थी। एक सप्ताह तक बेलगाम में आम जनता को विश्व धर्म का अमृतपान कराने के बाद मुनिश्री ने अपने लक्ष्य की ओर पुनः प्रस्थान किया। धारवाड़, हुबली, बंकापुर, दावणगेरी, होसदुर्ग, बेलुरू और हिरेसावे होते हुए 20 जुलाई को प्रातःकाल श्रवणबेलगोल मे तीस-पैंतीस हजार तीर्थयात्रियो को एलाचार्यजी का स्वागत करने का स्मरणीय अवसर प्राप्त हुआ।

गोमटेश के चरणों में

दिल्ली से विहार करके, इन्दौर मे चातुर्मास व्यतीत करते हुए एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी आज श्रवणबेलगोल पहुँच रहे हैं। एक सप्ताह के भीतर उनकी-चातुर्मास स्थापना हो जायेगी और इस प्रकार सात माह बाद होने वाले विशाल महोत्सव की तैयारियों के लिए मुनिश्री

का कुशल मार्गदर्शन और हितकर परामर्श अब श्रवणबेलगोल में प्रतिक्षण उपलब्ध रहेगा।

एक सप्ताह पहले से ही श्रवणबेलगोल में लोगो का आना प्रारम्भ हो गया है। दूर-दूर से लोग उनके स्वागत मे शामिल होने के लिए आये हैं। दिगम्बर जैन समाज की राष्ट्रीय स्तर की प्रायः सभी संस्थाओ के अधिकारी और कार्यकर्ता इस समय यहाँ उपस्थित हैं। कल दोपहर को 'भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एव महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति' की बैठक हुई थी, उस निमित्त भी जगह-जगह से आकर लोग इकट्ठे हुए हैं।

एलाचार्यजी कल पास के एक गाँव से विहार करके बगलौर रोड पर, यहाँ से लगभग चार किलोमीटर पर रुके हुए हैं। आज प्रातः ठीक सात बजे उनका मगल-प्रवेश इस नगर की सीमा मे होना है। नगर के बाहर लगभग दो किलोमीटर पर 'श्रमण-महाद्वार' नाम से एक सुन्दर स्वागत-द्वार बनाया गया है। वही मुनि विद्यानन्दजी के सघ का स्वागत करके शोभायात्रा के साथ उन्हे नगर मे लाने की योजना है। कल से ही इस सबकी तैयारियाँ चल रही हैं। नगर सीमा पर उनका स्वागत करने के लिए केन्द्रीय मन्त्री श्री प्रकाशचन्द सेठी कल ही यहाँ पहुँच चुके हैं।

सुबह सूरज की किरणो के साथ ही सारा नगर सक्रिय हो उठा है। शहनाई और कुछ दूसरी तरह के मगल वादको के समूह वातावरण को मगलध्वनि से व्याप्तकर रहे हैं। स्वच्छ सफेद धोती और अग वस्त्रम मे विद्यापीठ के ब्रह्मचारियो का समूह सबसे आगे द्वार पर उपस्थित है। विद्वानो-पडितो के साथ भट्टारक स्वामीजी स्वागत के लिए चल रहे हैं। महिलाएँ कलश लेकर पंक्तिबद्ध चलती दिखाई देती हैं। अपने आप एक बहुरगी और विशाल शोभायात्रा के सारे साधन श्रमण महाद्वार पर एकत्र हो गये हैं। पूर्ण-कुम्भ की पालकी इस शोभायात्रा मे सबसे आगे है।

ठीक सात बजे एलाचार्यजी का सघ नगर की ओर आता दिखाई दिया। उनके दो क्षुल्लक शिष्य उनके साथ चल रहे हैं। लन्दन तक विख्यात दैवज्ञ श्री एम० के० गाँधी, श्रीमती शरयू दफ्तरी, सतीश जैन, बाबूलाल पाटोदी और दिल्ली, इन्दौर तथा बगलोर के अनेक भक्त उनके साथ हैं। सवा सात बजे श्रमण-महाद्वार पर जयकारो के साथ उनका स्वागत होता है। सर्व प्रथम केसरिया वस्त्रधारी श्रवणबेलगोल के भट्टारक स्वामी मुनि विद्यानन्दजी के चरणो मे नमन करते हैं। इसके बाद कोल्हापुर, नरसिंहराजपुरा, और मूडबिद्री के भट्टारक स्वामी और धर्मस्थल के श्री वीरेन्द्र हेगडे नमस्कार करते हैं। तब इस स्वागत समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय मन्त्री श्री प्रकाशचद सेठी, ससद सदस्य श्री नन्जे गौडा एव श्री जे०के० जैन, कर्नाटक के सहकारिता मंत्री श्री ए० बी० जखनूर, स्थानीय विधायक श्री एच० सी० श्री कण्ठैया आदि के द्वारा एलाचार्यजी की वन्दना की गई। महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयांसप्रसादजी, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष सेठ लालचन्द हीराचन्द और महामन्त्री श्री जयचद लोहाडे, महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार सेठी और मंत्री श्रीत्रिलोकचन्द कोठारी, महासमिति के मत्री श्री सुकुमारचन्द जैन और मध्यांचल महासमिति के अध्यक्ष सिंघई धन्यकुमारजी कटनी, जनमंगल महाकलश के सक्रिय सहायक भैया मिश्रीलाल जी गगवाल, गोमटेश्वर जनकल्याण ट्रस्ट के कार्याध्यक्ष श्री देवकुमार कासलीवाल, महावीर ट्रस्ट इन्दौर के महामंत्री श्री कैलाशचन्द चौधरी और मन्त्री श्री नीरज जैन, जैना वाच

कम्पनी दिल्ली के श्री प्रेमचन्द जैन, होटल शाकाहार के श्री प्रेमचन्द जैन आदि अनेक समाज-सेवी कार्यकर्ताओ ने, पूरे देश की जैन समाज की ओर से, एलाचार्यजी का पूर्ण-कुम्भ, मंगल आरती और पुष्पवृष्टि आदि शुभकर द्रव्यो से स्वागत किया। अन्त में महोत्सव की 'त्यागी सेवा समिति' की ओर से समिति-सयोजक श्री एम० सी० अनन्तराजैया, श्री एम० के० गांधी फलटण, श्री नीरज जैन एव उनके सहयोगियों ने मुनिश्री का स्वागत वन्दन किया और सभी ने उनसे नगर-प्रवेश का अनुरोध किया। इस प्रकार यह विशाल शोभा-यात्रा श्रमण महाद्वार से भण्डारी बस्ती जिनालय की ओर अग्रसर हुई। रास्ते भर 'गोमटस्वामी की जय' और 'विश्वधर्म की जय' का घोष हो रहा है। कर्नाटक के लोक वाद्यों की मधुर-ध्वनि के बीच आनन्द से भरे अनेक युवक नाच रहे हैं। घरों से शोभायात्रा पर फूल बरसाये जा रहे हैं। इधर कई लोग बच्चों को मिष्ठान वितरण करते चल रहे हैं।

उस सतरंगी शोभायात्रा मे सब अपने में मगन हैं। उनके मन का उत्साह कभी उनकी वाणी से फूटता है और कभी आँखों में झलकता है। उनके मध्य में चलते हुए मुनि विद्यानन्द जी रह-रह कर विन्ध्यगिरि को अपनी दृष्टि मे भरते हैं और गोमटस्वामी की पवित्र छवि की कल्पना करते हुए मस्तक झुका देते हैं। जिन बाहुबली भगवान् के महोत्सव का चिन्तन गत तीन वर्ष से उनका दैनिक अभ्यास रहा है, आज उनके चरणो में उपस्थित हो पाने का सन्तोष और आनन्द एलाचार्यजी की आकृति पर अंकित हो उठा है। उन गोमटनाथ की वन्दना के लिए अब अपनी अधीरता वे छिपा नहीं पा रहे हैं। बार-बार विन्ध्यगिरि को निहारतीं उनकी आँखें उसी भावना का परिचय दे रही हैं।

लगभग डेढ़ घण्टे मे दो किलोमीटर की दूरी तय करके वह शोभायात्रा मठ के सामने 'प्रवचन मण्डप' तक आकर सभा के रूप में परिणत हो गई है। ससद सदस्य श्री नन्जे गौड़ा की अध्यक्षता में स्वागत सभा प्रारम्भ होती है। हर कोई अपनी भावनाएँ इस सभा मे व्यक्त करना चाहता है। समय सीमित है अतः सबका प्रतिनिधित्व करते हुए कुछ प्रमुख जन माइक पर आकर स्वागत वन्दना करते हैं और आज के पावन प्रसग की सराहना करते हैं। चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी अत्यन्त नम्रता भरे शब्दों में एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी का अपने क्षेत्र पर स्वागत करते हुए सहस्राब्दि महोत्सव को अपने कार्यकाल का अहोभाग्य निरूपित करते हैं। वे इस महान कार्य की सफलता के लिए एलाचार्यजी के मार्गदर्शन और सभी जनों के सहयोग की आकांक्षा करते हैं। सभामण्डप के बाहर दूर दूर तक खड़ी हुई धर्म पिपासु भक्तों की भीड़ की ओर इंगित करते हुए शायद स्वामी जी ने ठीक ही कहा है कि आज का यह जन समुदाय महामस्तकाभिषेक के मेले में एकत्र होने वाली अपार भीड़ की पूर्व सूचना है। अपने मन के उत्साह को व्यक्त करते हुए स्वामी जी ने बड़े विश्वास भरे लहजे में घोषित किया है कि एलाचार्यजी के नगर प्रवेश के साथ इस महोत्सव का मेला श्रवणबेलगोल में प्रारम्भ हो गया है और आज यह भी स्पष्ट हो गया है कि यहाँ के सारे कार्यक्रम ऐसी सफलता प्राप्त करेंगे जिनके कारण यह महोत्सव इतिहास में दीर्घकाल तक स्मरणीय रहेगा।

आज के लिए जितनी कल्पना की गई थी उससे कई गुना अधिक जनसमूह श्रवणबेलगोल में एकत्रित है। एक अनुमान के अनुसार लगभग पैंतीस हजार स्त्री पुरुष इस छोटे से नगर में उपस्थित हैं। 'मंगल प्रवेश समिति' ने अतिथियों को भोजन कराने का जो आयोजन किया था उसमें लगभग बीस हजार व्यक्तियों ने आतिथ्य ग्रहण किया। इसके अलावा भी राष्ट्र

चलते लोगों को और स्कूल के बालकों को मिष्ठान्न वितरण किया जा रहा है। मंगल प्रवेश की इस धूम-धाम ने यहां उपस्थित हर व्यक्ति को महोत्सव की अप्रतिम सफलता के प्रति आशान्वित और आश्वस्त कर दिया है।

त्यागी निवास का उद्घाटन

मध्याह्न में एलाचार्य जी द्वारा 'त्यागी निवास' का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। इस उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने की और साहू श्रेयांसप्रसादजी को मुख्य अतिथि का सम्मान दिया गया। उद्घाटन के बाद एक सभा हुई जिसकी अध्यक्षता संसद सदस्य श्रीनंजे गौडा ने की। इन्दौर के श्री राजकुमारसिंह कासलीवाल परिवार ने अपने पिता स्व० सरसेठ हुकुमचन्द जी की स्मृति को जीवित रखने के लिए लगभग साठ हजार की लागत का यह 'हुकुमचंद त्यागी निवास' तैयार कराकर क्षेत्र को अर्पित किया है। सर सेठ हुकुमचन्द जी ने इस बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ मे लगभग पचास वर्षों तक दिगम्बर जैन समाज की रहनुमाई की। तीर्थरक्षा के लिए उन्होने बडा काम किया। जैन धर्म की प्रभावना और सस्कृति सरक्षण के लिए वे सदैव प्रयत्नशील रहे। अनेक मूर्धन्य विद्वानो का सयोग जुटाकर उन्होंने स्वाध्याय के द्वारा पर्याप्त ज्ञानार्जन किया। अपने आवासीय प्रासाद 'इन्द्र भवन' की परिधि के भीतर सुन्दर चैत्यालय का निर्माण करके, और इन्द्र भवन के सामने ही उदासीन आश्रम की स्थापना करके, उन्होंने अपनी निष्ठा और त्यागवृत्ति के चिरजीव प्रमाण अपने ही सामने प्रस्तुत कर दिये थे। जीवन के अन्त मे व्रत-नियम धारण करके त्यागी अवस्था मे उन्होंने निराकुल परिणामो के साथ अपना जीवन समाप्त किया। ऐसे निष्ठावान् श्रावकरत्न की स्मृति को सुरक्षित रखने के लिए 'त्यागी-निवास' बहुत प्रासगिक और उपयुक्त स्मारक लगता है। श्रवणबेलगोल जैसे तीर्थ पर उसकी स्थापना सोने मे सुहाग जैसा सयोग हुआ। अपने समय के लब्धख्याति मुनिराज श्री विद्यानन्द जी के द्वारा उसका उद्घाटन एक गरिमामय प्रसग की तरह उस भवन के साथ सदा के लिए जुड गया। अपने पूरे श्रवणबेलगोल प्रवास भर इसी भवन मे एलाचार्यजी का निवास रहा।





6 बाललीला उत्सव श्री नमिजिनेश की मनोहारी छवि



7 पुष्पवर्षा



8 प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी के सान्निध्य में



9 जनमंगल महाकलश





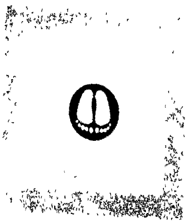
Only the holders of this Admission Card will be allowed to go to Vindyagiri Hill and will be entitled to perform the Kalasha Abhisheka on ---- ------ **Feb. 1981**

ಈ ಪ್ರವೇಶ ಪತ್ರವನ್ನು ಪಡೆದಿರುವವರಿಗೆ ಮಾತ್ರ ವಿಂಧ್ಯಗಿರಿ ಪರ್ವತಕ್ಕೆ ಹೋಗಲು ಅನುಮತಿ ಕೊಡಲಾಗಿದೆ. ಮತ್ತು ಅವರಿಗೆ ಮಾತ್ರ ತಾರೀಖು ---- ---- ಫೆಬ್ರ,1981ಕ್ಕೆ ಕಲಶ ಅಭಿಷೇಕದಲ್ಲಿ ಭಾಗವಹಿಸಲು ಅಧಿಕಾರ ಕೊಡಲಾಗುವುದು

Name ---------- Signature of Authority ---------
ಹೆಸರು ಸಹಿ ಅಧಿಕಾರಿ

Serial No -----------------
ಕ್ರಮಸಂಖ್ಯೆ

10 कलशाभिषेक हेतु विन्ध्यगिरि पर जाने के लिए प्रवेश पत्र



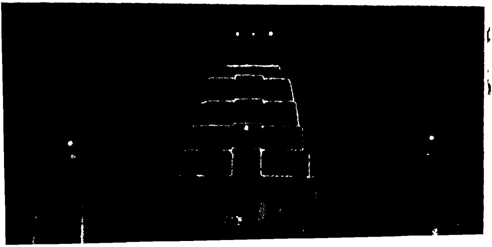


11 [illegible] विभाग द्वारा जारी किया गया प्रथम दिवस आवरण



12 चामुण्डराय मण्डप

13 चामुण्डराय मण्डप द्वार के ऊपरी भाग पर वीरमार्तण्ड चामुण्डराय की छवि

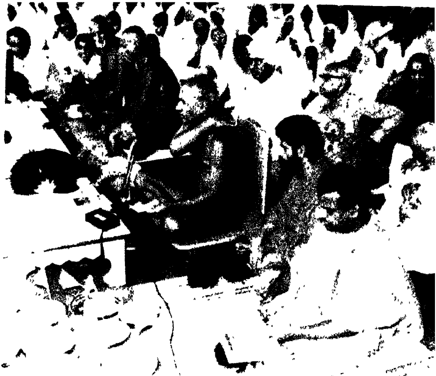




14 स्वस्तिश्री चारुकीर्ति स्वामी जी एवं साहु श्रेयांसप्रसाद जैन विचार-विमर्श करते हुए

15 सम्मान-समारोह : मुनिश्री विद्यानन्द जी के सान्निध्य में





16 आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज की जन्म-जयन्ती

17 समाज के कर्णधार





१५ [illegible]



जनमंगल महाकलश

परिकल्पना

श्रवणबेलगोल मे भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना एव महामस्तकाभिषेक महोत्सव की रूप-रेखा स्पष्ट होते ही देश भर की सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज मे हर्ष और उत्साह की लहर दौड गई थी। समाज का विचारक वर्ग अपने-अपने ढग से इस मगल अनुष्ठान मे अपनी सम्भावित भूमिका की तलाश मे जुट गया था।

इस महोत्सव को किस प्रकार सफल बनाया जाए इस पर विचार दिल्ली और उसके आस-पास की समाज के प्रमुख व्यक्तियो की एक बैठक का आयोजन दिल्ली मे, महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयासप्रसादजी की अध्यक्षता मे जनवरी 1980 मे किया गया। इस बैठक को सम्बोधित करते हुए श्रीमान् साहुजी ने इसप्रकार अपने विचार प्रस्तुत किये—

1. महोत्सव की रूपरेखा ऐसी होनी चाहिए जिसमें उन सभी लोगो को, जो श्रवणबेलगोल नही पहुँच सकते, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शामिल किया जा सके। सभी लोग इस महोत्सव मे भावात्मक रूप से सहयोगी हो सकें।
2. कर्नाटक शासक का और भारत सरकार का सहयोग प्राप्त करके राष्ट्रीय स्तर पर इस महोत्सव की संयोजना होनी चाहिए।
3. सभी वर्ग व जाति के लोगो को इस महोत्सव के साथ जोडने का प्रयास होना चाहिए ताकि महोत्सवके माध्यम से देश के जन-मानस मे राष्ट्रीय एकता एव धार्मिक सहिष्णुता की भावना का प्रसार हो सके।

दिल्ली की उस बैठक मे समाज के अनेक प्रमुख व्यक्तियो ने अपने विचार व्यक्त किये। दिगम्बर जैन महासमिति के मत्री श्री सुकुमारचन्द्र जी जैन ने सुझाव दिया कि देशव्यापी पर्यटन के रूप में एक योजना प्रारम्भ की जाए जिससे इस महोत्सव का व्यापक प्रचार हो सके। उन्होने यह भी कहा कि जिस प्रकार भगवान् महावीर के 2500 वे निर्वाण महोत्सव के अवसर पर 'धर्मचक्र' का सपूर्ण भारत वर्ष मे प्रवर्तन किया गया था उसी प्रकार का कोई देश-व्यापी प्रवर्तन कराते हुए, भगवान बाहुबली के उपदेशो को जन-जन तक पहुँचाया जाए। इस पर्यटन मे एक पात्र रखा जाए, जो समस्त देश की नदियो का जल एकत्र करता हुआ, गाँवो और शहरो मे घूमकर आभिषेक के समय श्रवणबेलगोल पहुँचाया जाय। इस पात्र के जल से भी उस अवसर पर भगवान् बाहुबली का अभिषेक किया जाये। ऐसा करने से समस्त राष्ट्र इस महोत्सव के साथ भावनात्मक रूप जुड़ सकेगा।

श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन ने यह कहते हुए कि इस पात्र-प्रवर्तन का नाम 'जनमंगल महाकुम्भ' रखा जाए, सुकुमारचन्द्र जी जैन के सुझाव का समर्थन किया।

जैना वाच कम्पनी के श्री प्रेमचन्द्र जैन ने प्रवर्तन के पात्र मे जल एकत्र करने मे आपत्ति उठाई। उनका कथन था कि पात्र के जल में जीवो की उत्पत्ति होगी अतः वह जल दूषित हो

जाँयेगा। उसका उपयोग अभिषेक में नही किया जा सकेगा।

कुछ लोगो का सुझाव था कि जहाँ-जहाँ से यह पात्र प्रवर्तन करता हुआ गुजरे, वहाँ समाज के लोगो को अपनी श्रद्धानुसार उसमें पूजन सामग्री अर्पित करने का अवसर दिया जाए। उस सामग्री का उपयोग गोमटेश्वर की पूजन मे किया जाये।

कुछ लोगो ने यह मत भी व्यक्त किया कि 'धर्मचक्र' के प्रवर्तन से मिलती जुलती प्रवर्तन योजना करने का इस अवसर पर कोई महत्त्व नही है। उसकी सफलता भी सदिग्ध है।

बैठक मे सभी महानुभावो की धारण थी कि इस सम्बन्ध मे और विचार विमर्श से उपरान्त ही कोई निर्णय लिया जाये। अध्यक्ष श्रीमान् साहूजी को यह अधिकार दिया गया कि योजना की रूपरेखा को अपनी अभिस्तावना के साथ आगामी बैठक मे विचारार्थ प्रस्तुत करे।

जब दिल्ली मे इस प्रकार 'पात्र-प्रवर्तन' की कल्पना की गई तब उसके बाद इसकी चर्चा देश के अन्य भागो मे भी हुई। इन्दौर की समाज मे इस पर अधिक विचार हुआ। भैया मिश्रीलालजी गगवाल ने एव उनके साथियो ने, दिल्ली मे चर्चित उस योजना मे काफी रुचि दिखाई। उन्होने योजना को यह रूप दिया कि महामस्तकाभिषेक के पावन कलशो का एक 'प्रतीक महाकलश' अधिक से अधिक स्थानो मे घुमाते हुए श्रवणबेलगोल तक ले जाया जाय। उनका अनुमान था कि इस आयोजन मे सर्वत्र भक्तिमय वातावरण का निर्माण होगा तथा छोटे और बडे जैन और अजैन सभी की भक्ति और आस्था को इससे प्रोत्साहन मिलेगा।

'मालवा के गाँधी' कहे जाने वाले स्व० भैया मिश्रीलालजी गगवाल सही अर्थो मे जनता के सु.ख-दुख के साथी थे। जनता द्वारा दिया हुआ यह 'भैया' सम्बोधन, जन-मानस मे उनके लिए व्याप्त स्नेह भावना का प्रतीक बनकर, उन पर चस्पा हो गया था। बेदाग हीरे की तरह उनके व्यक्तित्व की हर पहल, उनकी अपनी ही आभा से दीप्त होकर दमकती थी। देश के स्वतन्त्रता-संग्राम मे उनका विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण योगदान था। काग्रेस सगठन की राष्ट्रीय विभूतियो मे उनका नाम बहुत ऊपर अकित था।

गगवालजी ने अपने सादगी भरे स्वच्छ आचरण के द्वारा गाँधीवादी जीवन पद्धति का सही आदर्श प्रस्तुत किया। प्रादेशिक सत्ता के शिखर पर प्रतिष्ठित होकर भी जन-सेवा की धरती पर उनके पाँव अडिग ही बने रहे। मन्त्री रहकर भी सत्ता-मद उन्हे कभी स्पर्श नही कर पाया। मध्यभारत के मुख्यमत्री की आसंदी भी, भैया के स्वच्छ-सफेद धोती-कुरते मे ज़रा-सा भी दाग नहीं लगा पाई। वे कुरसी पर रहे, परन्तु कुरसी कभी उन पर हावी नही हो सकी।

भैया मिश्रीलालजी राष्ट्र और राजनीति से इतने गहरे जुडे थे, मात्र इसी कारण वे समाज मे भी हमारे नेता रहे हो, ऐसा नही है। जैन समाज के लिए निश्छल, निस्पृह और निरभिमानी मार्गदर्शक का उनका अलग ही रूप था। समाज के बच्चे-बच्चे के मन मे, भैया एक भावुक-भक्त और ममता से परिपूर्ण अभिभावक की तरह बसे थे। प्राय सबने कभी न कभी, कही न कही उनके भक्ति भीने भजन सुने थे और उनकी भाव-विभोर थिरकन देखी थी। प्रदेश की अधिकाश लोकोपकारी सस्थाओ से, वे कही न कही जुड़े हुए थे। अधिक से अधिक लोगों को साथ लेकर चलने मे, ज्यादा से ज्यादा जन-सहयोग पर आधारित कार्यक्रम चलाने में ही, उनका विश्वास था। इसी को वे नेतृत्व की सफलता का मूलाधार मानते थे।

गगवालजी ने जितना ही अपने साथी कार्यकर्ताओ से महाकलश प्रवर्तन योजना पर विचार-

विमर्श किया, उन्हें यह योजना उतनी ही उपयोगी और उतनी ही सफलता दिलानेवाली लगी। भैया-सा. राजकुमारसिंहजी, श्री देवकुमारसिंहजी, बाबूलालजी पाटोदी, कैलाशचन्द चौधरी, प० जयसेनजी, डॉ० प्रकाशचन्द जैन आदि सभी अनुभवी और सगठन-कुशल सहयोगियों ने उन्हें उस कल्पना को साकार करने में अपने सक्रिय सहयोग का आश्वासन दिया।

इन्दौर मे लगनशील कार्यकर्ताओ की यह वही टीम थी, जिसने पाँच वर्ष पूर्व, भगवान् महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव के अवसर पर, पूरे मध्यप्रदेश में ही नही, अपितु प्रदेश के बाहर भी 'धर्मचक्र' का गरिमामय प्रवर्तन कराकर, उल्लेखनीय सफलता अर्जित की थी। यह एक अच्छा सुयोग था कि धर्मचक्र के कार्यकर्ताओ का वही पूरा दल, मिश्रीलालजी गंगवाल के नेतृत्व मे इस श्रम-साध्य योजना को कार्यान्वित करने के लिए सहर्ष तैयार हो गया था।

इस कलश प्रवर्तन-योजना के प्रत्येक सम्भावित पहलू पर विचार-विमर्श करने के लिए श्री देवकुमारसिंहजी कासलीवाल एव श्री कैलाशचन्द्रजी चौधरी जुलाई 1980 मे बम्बई आये। उन्होने महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयासप्रसाद जैन के साथ प्रवर्तन-योजना की रूपरेखा पर परामर्श किया, और सबने काफी विचार-विमर्श के बाद योजना को अन्तिम रूप दिया। यात्रा के मार्ग मे सम्भावित बाधाओ तथा कठिनाईयो का पूर्वानुमान करते हुए, समय की सीमा के अनुकूल यात्रा मार्ग का निर्धारण करके, एक प्राथमिक कार्यक्रम बनाया गया। भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक श्री लक्ष्मीचन्द्रजी जैन भी सयोग से इस अवसर पर बम्बई मे थे। योजना के नामकरण के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए श्री लक्ष्मीचन्द्रजी ने इसे 'जनमगल महाकलश' नाम दिया, जो सभी को बहुत उपयुक्त लगा। उसे तत्काल स्वीकार कर लिया गया।

इस प्रकार 'जनमंगल महाकलश-प्रवर्तन योजना' की सुविचारित रूपरेखा तैयार हुई। सर्व प्रथम एक फोल्डर मे उसे प्रकाशित किया गया। समाज को इस योजना का प्रथम परिचय देने वाला वह परिपत्र इस प्रकार था—

भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव
जनमंगल महाकलश-प्रवर्तन योजना

भगवान् गोमटेश्वर बाहुवली, कर्मभूमि के उषाकाल मे प्रजा को असि, मसि, कृषि, शिल्प, सेवा, वाणिज्य आदि की शिक्षा देकर समाज सरचना करनेवाले, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के द्वितीय पुत्र थे, वे प्रथम कामदेव भी हुए।

ज्येष्ठ भ्राता चक्रवर्ती भरत ने जिनके नाम पर यह देश भारतवर्ष कहलाया, बाहुबली के पितृ-प्रदत्त पोदनपुर राज्य पर आक्रमण करके, जब उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँचानी चाही, तब दोनो ओर की सेनाओ के सम्भावित नर-संहार को बचाते हुए, दोनो भ्राताओं मे परस्पर दृष्टि-युद्ध, जल-युद्ध एव मल्ल-युद्ध का निश्चय हुआ। इन युद्धो में बाहुबली विजयी हुए तब भरत ने क्षुब्ध होकर उन पर चक्र-रत्न चला दिया जो निष्प्रभावी रहा। बाहुवली इस भौतिक विजय से आगे, अपने आध्यात्मिक शत्रु काम, क्रोधादि विकारो पर विजय प्राप्त करने हेतु संसार से विरक्त हो मुक्ति की साधना में लीन हो गये। उन्होंने कैलाश पर्वत पर एक वर्ष का प्रतिमायोग धारण करके घोर तप किया और कठोर तपस्या करते हुए मुक्ति लक्ष्मी को प्राप्त किया।

अब से ठीक एक हजार वर्ष पूर्व गंगवशीय नरेशों के परम तेजस्वी, महाप्रतापी, धर्मप्राण सेनापति चामुण्डराय ने, भारत की आध्यात्मिक राजधानी श्रवणबेलगोल में विंध्यगिरि पर आध्यात्मिक सास्कृतिक और कलात्मक चेतना को भगवान् बाहुबली की प्रतिमा के रूप मे स्थापित किया। सिद्धातचक्रवर्ती आचार्य नेमिचन्द्र द्वारा प्रतिष्ठित यह प्रतिमा अत्यन्त ही भव्य, विशाल, सातिशय, मनोहारी तथा शिल्प कला मे बेजोड है। 57 फीट ऊँची, समूचे एक पर्वत खण्ड मे उकेरी गई इस प्रतिमा की भव्यता तथा शान्तिदायिनी प्रभा ससार के कला-जगत् मे सर्वोपरि स्थान रखती है।

युगो के युग व्यतीत हो गये। न मालूम कितनी प्राचीन सभ्यताएँ तथा राज-सत्ताएँ काल के गाल मे समा गयी। हिन्दू, मुस्लिम, अग्रेज, फ्रासीसी सेनाओ के घमासान युद्ध हुए, फिर भी श्रवणबेलगोल का यह पुरातन प्रहरी, जहाँ का तहाँ खडा हुआ, मूढ मानव की हरकतो पर हँसता रहा। यदि कुछ ही क्षणो तक आप उनके मुखारविन्द पर दृष्टि लगायें तो आपको लगेगा कि करुणासिन्धु अब हँस ही पडेंगे। दिगम्बर स्वरूप, करुणा, आशीष और जन-कल्याण की वाणी को मुखरित करने वाली इस प्रतिमा के चरणो मे बैठने पर मानव को आत्म शान्ति की विशेष अनुभूति होती है।

इस ऐतिहासिक प्रतिमा का सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक दिनाक 22 फरवरी 1981 को होने जा रहा है। हमारी पीढी का यह सौभाग्य होगा कि इस अवसर पर हम श्रवणबेलगोल पहुँचे और अपने को धन्य बनाएँ। परन्तु ऐसे भी अनेक भक्तगण होगे जो वृद्धावस्था व अन्य कारणो से वहाँ पहुँचने मे असमर्थ रहे। ऐसे भाई बहिनो के लिए एक अद्वितीय योजना प्रस्तुत है, जिससे ऐसे लाखो नर-नारी अपनी श्रद्धा एवं भक्ति, प्रत्यक्ष नही तो परोक्ष रूप मे, भगवान् के चरणो में अर्पित कर सकेंगे।

भगवान् महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव काल मे हमने देखा कि परमपूज्य ऐलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी महाराज की धर्मचक्र-प्रवर्तन की दिव्य दृष्टि से, देश में जिस वातावरण का निर्माण हुआ, उसके फलस्वरूप समूचे भारत का जैन समाज सगठित हुआ। सभी एक-दूसरे के नजदीक आये। विभिन्न सफल आयोजनो से प्रत्येक जैन ने अपने आप को गौरवान्वित अनुभव किया। निश्चित ही ऐसे आयोजन धर्म प्रभावना करने, वातावरण बनाने तथा लोगो मे उत्साह का सचार करने मे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होते है। इस दृष्टि से गोमटेश्वर भगवान् बाहुबली के सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक के अवसर पर भी, समस्त मानव समाज के कल्याण के लिए पूरे भारत मे 'जनमगल महाकलश प्रवर्तन' की यह योजना है।

1 यह महाकलश करीब सात फीट डायमीटर का तथा आठ फीट ऊँचा, ताम्र का बनाया जावेगा जो एक वाहन मे स्थापित रहेगा। कलश के आगे जैन प्रतीक चिह्न और पीछे जैन ध्वज रखे जावेंगे। वाहन चारो ओर से जैन सस्कृति के कलात्मक पेनलो द्वारा सुसज्जित होगा।

2 यह महाकलश भारत की राजधानी दिल्ली से प्रारम्भ होकर, प्रमुख नगरो मे प्रवर्तन करता हुआ, महामस्तकाभिषेक के अवसर पर श्रवणबेलगोल पहुँचेगा। पूरे भारत के जन-जन मे जैन धर्म के मानव-कल्याणकारी सिद्धातों को फैलाते हुए, भक्ति-गीतो और प्रार्थना-स्वरो को गुजाते हुए, नैतिक मूल्यो की पुन:स्थापना करते हुए, निश्चित ही यह महाकलश हमारी भावनाओ का प्रतीक बनेगा। श्रद्धालु भक्त इसमे अभिषेक व अर्चना के प्रतीक रूप मे विविध

सामग्री अर्पित कर सकेंगे।

3 प्रत्येक स्थान पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होंगे। जल-यात्रा, रथ-यात्रा निकाली जावेगी। उसमे कलशो की बोलियाँ लगायी जावेंगी। इससे प्राप्त सम्पूर्ण राशि श्रवणबेलगोल क्षेत्र को अर्पित होगी। इस प्रकार इन बोली वालो को चार लाभ प्राप्त होंगे—

प्रथम, स्थानीय आयोजनो मे महाकलश रथ मे बैठने का लाभ।

द्वितीय, प्रत्येक स्थान पर रथ यात्रा के पश्चात् होनेवाले भगवान् के अभिषेक का लाभ।

तृतीय, प्रत्येक स्थान की सर्वोपरि पाँच बोली वालो को राशि अनुसार, महामस्तकाभिषेक के समय निर्धारित कलशो की श्रेणी में, यदि उस दिन तक आरक्षण शेष रहा तो दिनाक 22 फरवरी को, अन्यथा दूसरे दिन, बोलियो की प्राथमिकता के आधार पर, श्रवणबेलगोल में कलश करने का सौभाग्य प्रदान किया जावेगा।

चतुर्थ, इन स्थानीय बोलियो से एकत्रित धनराशि द्वारा गोम्मटेश्वर में निश्चित की जाने वाली, एक विशेष योजना सम्पन्न होगी। उसमें भी उनके योगदान का यश उन्हें प्राप्त होगा।

4. महाकलश के साथ एक अलग वाहन में भगवान् बाहुबली के जीवन व सिद्धान्तों से सम्बन्धित साहित्य वितरण हेतु रहेगा। साथ ही विद्वान वर्ग, भजन मडलियो एव सामाजिक कार्यकर्ताओ को भी विशेष रूप से कार्यक्रमो में रखा जावेगा। महाकलश प्रवर्तन का स्थानीय कार्यक्रम समय से बहुत पूर्व ही निश्चित कर समाचार पत्रो व अन्य विशेष माध्यमो से प्रचारित किया जावेगा।

भारत की जैन समाज का यह परम सौभाग्य है कि ऐतिहासिक सहस्राब्दि महामस्तका-भिषेक का यह धार्मिक अनुष्ठान, परम पूज्य ऐलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी महाराज के निर्देशन में सचालित हो रहा है। इसकी सफल सम्पन्नता हेतु, महोत्सव कमेटी मन-प्राण से सलग्न है। इन सभी की अत.प्रेरणा स्वरूप ही 'जन मगल महाकलश' प्रवंतन की यह योजना साकार हो रही है। अतः समाज के सभी भाई-बहिनो, विद्वद्-जनो, एव सामाजिक कार्यकर्ताओ से निवेदन है कि वे इस ऐतिहासिक महामस्तकाभिषेक महोत्सव की इस अद्वितीय योजना की सफलता हेतु तन-मन-धन से अपना सक्रिय सहयोग प्रदान कर पुण्य लाभ सचित करें।

इस मगलकामना के साथ निवेदक,

चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी, श्रवणबेलगोल,
अध्यक्ष एस. डी. जे. एम. आई. कमेटी, श्रवणबेलगोल.

लालचन्द हीराचन्द, बम्बई
उपाध्यक्ष, एस. डी. जे. एम. आई. कमेटी,
श्रवणबेलगोल.

साहु श्रेयांसप्रसाद जैन, बम्बई
अध्यक्ष, भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना
सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक महोत्सव.

मिश्रीलाल गगवाल, इन्दौर
—योजनाध्यक्ष

राजकुमारसिंह कासलीवाल, इन्दौर
—उपाध्यक्ष

देवकुमारसिंह कासलीवाल, इन्दौर
—कार्याध्यक्ष

कैलाशचन्द्र चौधरी, इन्दौर
—महामत्री

जन मगल महाकलश योजना कमेटी

समिति का गठन

जुलाई 1980 के तीसरे सप्ताह में, जब पूज्य ऐलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी महामस्तकाभिषेक के लिए उत्तर भारत से विहार करते हुए, गोमटेश के पाद-मूल मे पहुँच रहे थे, इन्दौर के कार्यकर्ताओ ने बम्बई मे स्वीकृत 'जनमंगल महाकलश' की योजना उनके समक्ष रखी। मुनिश्री ने उसके लिए अपने मगल आशीष प्रदान किये। दूसरे ही दिन भगवान् बाहुबली सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना एव महामस्तकाभिषेक महोत्सव कमेटी की बैठक मे, इस योजना की सम्पुष्टि की गयी और उसी दिन 'जनमगल महाकलश प्रवर्तन कमेटी' का गठन किया गया।

श्रवणबेलगोल के कर्मठ भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी को सरक्षक बनाकर यह कमेटी गठित हुई। सामाजिक कार्यों मे अनवरत प्रेरणा देनेवाले साहु श्रेयासप्रसादजी जैन इस कमेटी के अध्यक्ष बनाये गये। भैया मिश्रीलालजी गगवाल को जनमगल महाकलश प्रवर्तन कमेटी का योजनाध्यक्ष तथा राजकुमारसिंहजी को उपाध्यक्ष बनाया गया। कार्याध्यक्ष और महामन्त्री के जिम्मेवारी भरे पदो पर इस कमेटी को सिद्धहस्त कार्यकर्ता श्री देवकुमारसिंहजी कासलीवाल और श्री कैलाशचन्दजी चौधरी की कर्मठ जोडी प्राप्त हुई। प० जयसेनजी ने सयोजक का दायित्व ग्रहण किया, और डा० प्रकाशचन्द जैन ने वीर-वाणी प्रवक्ता के रूप मे पूरी यात्रा मे साथ रहना स्वीकार किया।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार महाकलश की शोभा-यात्रा देश के 108 प्रमुख स्थानो पर ले जायी जानी थी। प्रत्येक स्थान पर शोभा-यात्रा मे कलश वाहन पर बैठने के लिए 'महाकलश प्रवर्तक', 'महाकलश सचालक', 'महाकलश रक्षक', और 'प्रतीक-रक्षक' तथा 'ध्वज-रक्षक' के रूप मे पाँच भाग्यशाली व्यक्तियो का चुनाव किया जाना था। सबको अवसर मिल सके, किसी के साथ पक्षपात न हो, तथा जन-कल्याण की योजनाओ के लिए अच्छी राशि एकत्र हो सके, ऐसा विचार करके, बोलियो के द्वारा ही हर जगह ये पाँचो पद भरे जाने का निर्णय किया गया। इसके साथ एक 'प्रतीक-कलश' भी शोभायात्रा मे घुमाने का प्रावधान था, जिसमे कोई भी व्यक्ति, बाहुबली के चरणो मे अपनी पुष्पाजलि के रूप मे, अपनी इच्छानुसार राशि अर्पित कर सकता था। शोभा-यात्रा की समाप्ति पर उसी समय बोलियों की राशि प्राप्त करके तथा 'प्रतीक कलश' मे प्राप्त राशि की गणना करके, उसकी रसीदें काटकर, वह समस्त राशि मुख्यालय की ओर प्रेषित करने के लिए सयोजको को निर्देशित किया गया था।

जो लोग शोभा-यात्रा में बोलियाँ लेकर उपर्युक्त पद प्राप्त करते थे, उन्हे यात्रा के प्रारम्भ मे चन्दन और पुष्पमालाओ से सम्मानित किया जाना था। इसके साथ ही उन्हे श्रवणबेलगोल मे मुख्य महामस्तकाभिषेक के दूसरे दिन दिनाक 23 फरवरी 1981 को गोमटेश्वर भगवान् का अभिषेक करने की सुविधा भी प्रदान की गयी थी। इस हेतु महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति ने दिनांक 23 फरवरी का दिन, जनमगल महाकलश योजना के लिए सुरक्षित कर दिया था। महाकलश प्रवर्तक को अभिषेक के लिए पाँच अनुज्ञा-पत्र प्रदान किये जाते थे। महाकलश सचालक और रक्षक को चार-चार, तथा प्रतीक और ध्वजरक्षको को दो-दो पास दिये गये थे। इस प्रकार हर स्थान पर शोभा यात्रा के उपरान्त, श्रवणबेलगोल मे दिनाक 23 फरवरी 1981 को अभिषेक करने के ये 17 पास, महाकलश सयोजक द्वारा तत्काल प्रदान

करने का प्रावधान किया गया था। महाकलश के पूरे भ्रमण मे खर्च काटकर, लगभग पाँच लाख रुपये की राशि उपलब्ध होने का अनुमान लगाया गया था।

महाकलश प्रवर्तन की यह प्रभावनामयी सयोजना, लोकप्रिय और सफल सिद्ध हुई। पूर्व प्रस्तावित 108 स्थानो की जगह, लोगो के आग्रह और अनुरोध के कारण 180 जगह महाकलश को ले जाया गया। पाँच लाख की अनुमानित आय के स्थान पर लगभग तेईस लाख की राशि एकत्र हुई। उसमे से खर्च आदि घटाकर, बीस लाख से अधिक राशि जन-कल्याण के कार्यों के लिए उपलब्ध रही। योजना अपने आप में प्रभावशाली तो थी, परन्तु उसकी आशातीत सफलता का अधिकाश श्रेय, निश्चित ही उन कर्मठ और लगनशील कार्यकर्ताओं को है, जो लगातार पाँच माह तक अपने स्वजनो से दूर, दिन और रात परिश्रम करके, इस योजना को सफल बनाने मे एक जुट होकर लगे रहे। इस अवधि मे उन्हे लगभग तेईस हजार किलोमीटर की यात्रा करनी पडी। सर्दी और बरसात की बाधाओ से जूझना पडा। दिन में दो-दो, तीन-तीन शोभा यात्राएँ, और रात मे थका देनेवाली यात्रा का चक्र, सप्ताहो तक चलता रहा। चार मास तक उनकी जीवनचर्या, गाडी के चार पहियो पर ही चलती रही। कई दिनो तक समय पर उन्हे भोजन तथा विश्राम दुर्लभ रहा। इतनी सारी सफलता के आधार होकर भी वे कार्यकर्ता हमारी आपकी दृष्टि मे कितना श्रेय पा सके हैं, यह एक अलग बात है।

कलश की संयोजना

मध्यप्रदेश की लोक कल्याणकारी सस्था महावीर ट्रस्ट ने तांबे के 144 किलो वजनी, दो मीटर ऊँचे और लगभग इतने ही व्यास के महाकलश का अपने व्यय से निर्माण कराकर समिति को प्रदान किया।

महावीर ट्रस्ट के मन्त्री श्री नीरज जैन ने इस अवसर पर शायद बहुत ठीक कहा था कि "दिल्ली मे जन्मी यह महत्वाकाक्षी योजना, परिमार्जित होकर बम्बई मे 'जनमगल महाकलश प्रवर्तन योजना' के रूप मे स्वीकृत हुई है, इसे क्रियान्वित करने का श्रेय विशेषतः महावीर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री मिश्रीलालजी गगवाल तथा उनके साथियो को रहेगा। प्रवर्तन की सारी सफलताएँ, वे सारी सिद्धियाँ जो पाँच वर्ष पूर्व 'धर्मचक्र' को प्राप्त हुई थी, उससे सवाई होकर, इस यात्रा मे जनमगल महाकलश को प्राप्त होंगी।"

महाकलश प्रवर्तन के लिए प्रारम्भ मे बम्बई के उद्योगपति सेठ लालचन्द हीराचन्द ने एक ट्रक प्रदान किया और बाद मे कमेटी ने स्वय अपना ट्रक खरीद लिया। उस ट्रक पर उस विशाल कलश को बाहुबली के जीवन सन्दर्भोंवाले चित्र फलको से, तथा छत्र, ध्वज और जैन प्रतीको से सजाया गया। महाकलश वाहन के साथ एक मेटाडोर मे कार्यक्रम संयोजक जयसेनजी तथा वीरवाणी प्रवक्ता डा० प्रकाशचन्दजी, अपनी पूरी कार्यकर्ता मण्डली के साथ, लगभग पाँच माह की इस श्रमसाध्य यात्रा पर, दिनाक 25 सितम्बर 1980 को इन्दौर से दिल्ली की ओर चल पडे। वहाँ 29 सितम्बर को 'जनमगल महाकलश' के प्रवर्तन का शुभारम्भ समारोह आयोजित था।

जनमगल महाकलश प्रवर्तन के अवसर के लिए महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयांसप्रसादजी जैन ने दस दिन पूर्व एक सन्देश मे अपने विचार इन शब्दो में व्यक्त किये—

"जिस प्रकार हमने भगवान् महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव को राष्ट्रीय-स्तर पर मनाकर, महावीर भगवान् के जीवन, उनके सिद्धान्तो और उनके प्रभाव के विषय में सार्वजनिक चेतना उत्पन्न की और इस प्रकार उस आयोजन को आगे की पीढियो के लिए स्मरणीय बना लिया, उसी प्रकार हमारी पीढी के भाग्योदय से, भगवान् बाहुबली की मूर्ति प्रतिष्ठा के सहस्राब्दि महोत्सव का यह पुण्य पर्व हमारे सामने आया है, जब हम सगठित होकर मानव-कल्याण की साधना के लिए अनेक प्रकार के सार्थक प्रयत्न कर सकते हैं।

जन मगल महाकलश के देश व्यापी विहार का आयोजन, एक प्रकार से सहस्राब्दि महोत्सव का मगलाचरण है। भगवान् बाहुबली की मन-मोहक कल्याणकारी विशाल मूर्ति के दर्शन-अभिषेक के लिए लाखो भक्त-जनो और दर्शनार्थियो को, फरवरी 1981 के अन्तिम सप्ताह मे, श्रवणबेलगोल के तीर्थ-स्थान पर एकत्र देखना एक ऐसा अनुभव होगा जो भावी पीढी को एक हजार वर्ष तक प्राप्त नही हो सकेगा।

उत्तर और दक्षिण तथा पूर्व और पश्चिम, इतिहास के इस केन्द्र बिन्दु पर आकर उस विश्व धर्म की प्रभावना देखेंगे जो भगवान् आदिनाथ से लेकर भगवान् महावीर पर्यन्त प्रतिपादित हुआ, जिसे व्यवहार मे प्रतिष्ठित करने के लिए ईसापूर्व चौथी शताब्दी मे आचार्य भद्रबाहु, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य को निर्ग्रन्थ मुनि धर्म मे दीक्षित करके, उत्तर से दक्षिणी की ओर पहुँचे और उन्होने श्रवणबेलगोल मे तपस्या करते हुए समाधिमरण पूर्वक आत्मसिद्धि प्राप्त की।

जनमगल महाकलश जिन-जिन स्थानो से विहार करता हुआ श्रवणबेलगोल पहुँचेगा, उन स्थानो के भाई-बहनो का सौभाग्य होगा कि वे महामस्तकाभिषेक के आयोजन की पूर्व-प्रभावना मे सम्मिलित होकर जन कल्याण की कामना करेंगे और भगवान् बाहुबली की जीवन गाथा से परिचय प्राप्त करके अपने हृदय मे उन सिद्धान्तो की ज्योति जगायेंगे, जिनके द्वारा महाशक्तिशाली बाहुबली ने षट्खण्ड पृथ्वी के चक्रवर्ती स्वामी पर विजय पाकर भी, उसे करुणा और कोमल भावना से निर्बन्ध छोड दिया। वस्तुत राज्य-त्याग का वह अद्वितीय उदाहरण था।

प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि तथा महामस्तकाभिषेक महोत्सव को सफल बनाने मे सलग्न समितियो को आप अपना पूरा योगदान दें। श्रवणबेलगोल पहुँचने के लिए मार्ग, साधन, प्रबन्ध और आवश्यकताओ की पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त करके अपना कार्यक्रम निश्चित करे।"

—साहु श्रेयासप्रसाद जैन
19 सितम्बर 1980

जनमंगल महाकलश का देशाटन

29 सितम्बर 1980 को मध्याह्न मे दिल्ली के लाल किला मैदान पर कलश प्रतीको से सज्जित पण्डाल के भीतर, देश की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने लगभग पचास हजार जैन-जैनेतर जनता के बीच जनमगल महाकलश पर केसर से पवित्र स्वस्तिक का अकन किया। इसी के साथ उन्होने उस महाकलश को भारत यात्रा के पथ पर प्रवर्तित कर दिया।

इस अवसर पर श्रीमती गान्धी ने अपनी विनयाजलि इस प्रकार प्रस्तुत की—

"वास्तव मे यह मेरा सौभाग्य है कि इस शुभ अवसर पर मुझे यहाँ आप लोगो ने बुलाया, और जो एक शुभ यात्रा यहाँ से आरम्भ होने वाली है उसमे मुझे भी शामिल होने का अवसर दिया। हमारे देश का यह बहुत बडा सौभाग्य है कि यहाँ से ऐसी रोशनी निकली है जिसने इस देश को बल दिया, सदियो से, हजारो वर्षों से।"

लोक विख्यात गोमटेश्वर प्रतिमा की छवि का स्मरण करते हुए श्रीमती गान्धी ने आगे कहा—"अगले साल फरवरी महीने मे उस शानदार और सुन्दर मूर्ति गोमटेश्वर की स्थापना को एक हजार बरस पूरे होगे। मुझे भी बहुत बडा सौभाग्य हुआ था कि कई साल पहले अपने पिताजी के साथ दर्शन करने मैं वहाँ गयी थी। उस मूर्ति को देखकर ही एक रोशनी दिल मे आती है, एक शान्ति आती है। एक नयी प्रकार की भावना हृदय मे उत्पन्न होती है कि हमारे देश मे इतने हजारो वर्ष से अहिंसा का ये एक रास्ता दिखाया गया है। दुख की बात यह है कि हम उसको घडी-घडी भूल जाते है। अहिंसा, जो दुनिया को भारत की देन है, उसको बिलकुल भूल जाते है। तो ये ऐसा अवसर है जब फिर से इन बातो को याद करना है। केवल याद नही करना है लेकिन देखना है कि कैसे इनको अपने जीवन मे लाये, कैसे समाज के जीवन मे लाये और कैसे राष्ट्र के जीवन मे लाये। कोई युग नही है जिसमे इसकी उपयोगिता या भगवान् महावीर के सन्देश की उपयोगिता नहीं रही हो।"

"भगवान् महावीर के जो उपदेश हमे मिले, हमारा सबसे बडा धन तो वही है। उस धन को अगर हम मानें और उन उपदेशो को सामने रखकर चलें, तो बडे से बडे काम हम कर सकेगे, क्योकि हमे उसकी योग्यता, उसकी शक्ति और उसके लिए प्रेरणा मिलती रहेगी।"

एक बार पुनः गोमटेश का गुणगान करते हुए प्रधानमत्री ने इन शब्दो के साथ अपने सार-गर्भित वक्तव्य का समापन किया—

"तो आज के दिन मुझे बहुत खुशी है कि इस अवसर पर मैं यहाँ हूँ, और इस काम को यहाँ से प्रारम्भ कर रही हूँ। आपको तो मालूम है कि यह कलश कई और शहरो से जाकर समय पर वहाँ कर्नाटक मे पहुँचेगा। वहाँ उस मूर्ति की प्रशसा बहुत लोगो ने की है। कवियो ने की है, और लेखको ने की है। मैं उसके लिए कहाँ से शब्द ढूँढूँ? मेरी तो यही आशा है कि किसी दिन आप सब जा सकेगे उसके दर्शन करने। तब आप देखेगे कि कैसी भावना वो उत्पन्न करती है और कितनी महान् एक चीज है हमारे देश की।"

"तो अब मै फिर से आप सबका धन्यवाद करके कामना करती हूँ कि महाकलश की ये शुभ यात्रा मगलमय हो।"

श्रीमती इन्दिरा गाधी के प्रति स्वागत एवं आभार की भावना व्यक्त करते हुए, 'महाकलश प्रवर्तन कमेटी' के अध्यक्ष साहु श्रेयासप्रसाद जैन ने उन्हे विश्वास दिलाया कि विश्व शान्ति के प्रयत्नो मे, और देश की खुशहाली के लिए उठाये गये हर कदम मे, भारत का जैन समाज सदा सहायक रहा है और सदैव रहेगा। साहुजी ने यह भी घोषित किया कि महाकलश-प्रवर्तन से जो भी राशि उपलब्ध होगी, एक सार्वजनिक ट्रस्ट बनाकर श्रवणबेलगोल के आस-पास लोक कल्याण के सार्वजनिक कार्यों मे उस राशि का उपयोग किया जायेगा। भगवान् बाहुबली की सस्तुति करते हुए साहुजी ने कहा—"उन्होने आत्म-अनुशासन और विराग की साधना करने के लिए जीते हुए राज्य का त्याग कर दिया था। बाहुबली के उसी त्याग-

तपस्या के लिए संसार उनकी पूजा करता है।" ससद सदस्य श्री हरिकिशनलाल भगत ने प्रेम और शान्ति का मार्ग दिखाने वाले महापुरुष के रूप में बाहुबली को स्मरण किया।

साहु परिवार ने अपनी दानशीलता की कौटुम्बिक परम्परा के अनुरूप, इस अवसर पर जनकल्याण के लिए, ढाई लाख रुपये की राशि श्रीमती गाधी को समर्पित की। खिचड़ी पुर बस्ती मे सजय गांधी के नाम पर प्रस्तावित योजनाओ के लिए अर्पित इस राशि मे, सवा लाख रुपये साहु श्रेयासप्रसाद जी ने और इतनी ही राशि साहु अशोक कुमारजी ने प्रदान की।

सभा के आरम्भ मे विदुषी आर्यिका ज्ञानमती माता की के मगल आशीष महाकलश को प्राप्त हुए। श्रवणबेलगोल के भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी ने मन्त्रोच्चार पूर्वक अक्षत-क्षेपण करके कलश को अभिमन्त्रित किया तथा 'मुममल पूण्ण कुम्भोन्दु' वाक्य अकित एक ताडपत्र श्रीमती गाधी को भेंट किया। श्री मिश्रीलालजी गगवाल और श्री प्रकाशचन्दजी सेठी द्वारा महाकलश की एक अनुकृति भी उन्हे भेंट की गई। मूडबिद्री के भट्टारक स्वामीजी समारोह मे उपस्थित रहे। साहु श्रेयासप्रसाद जी, सरसेठ भागचन्दजी सोनी, भैया मिश्रीलालजी गगवाल और पूर्व सासद श्री निर्मलचन्द जैन आदि प्रमुख व्यक्तियो के द्वारा सारे देश की दिगम्बर जैन समाज का प्रतिनिधित्व इस महोत्सव मे हो रहा था। केन्द्रीय मत्री श्री सी० एम० स्टीफन, श्री प्रकाशचन्दजी सेठी तथा श्री वीरेन्द्र पाटिल, दिल्ली के उपराज्यपाल श्री जगमोहन तथा अनेक ससद सदस्यो, राजनेताओ और प्रतिष्ठित नागरिको ने अपनी उपस्थिति से इस सभा की गरिमा बढाई। श्री ताराचन्द प्रेमी ने एक भजन प्रस्तुत किया। सभा का संचालन संसद सदस्य श्री जे० के० जैन कर रहे थे।

भावुक कवि और सिने सगीत-निर्देशक श्री रवीन्द्र जैन ने इस अवसर के लिए विशेष रूप से अपनी एक रचना सगीतबद्ध की थी। इस भक्तिगीत मे रवीन्द्र जी ने भगवान् बाहुबली की स्तुति करके, मानवता को कल्याण का मार्ग दिखाने के लिए भगवान् महावीर को नमन किया और उनके बताये सत्य-अहिंसा का सहारा लेकर हमे पराधीनता मे मुक्त कराने के लिए, महात्मा गाँधी का यशगान किया। उनकी ये पक्तियाँ उस सभा-मण्डप मे देर तक गूँजती रही—

जन गण मगल हेतु साथियो 'मगल-कलश' उठाओ।
मगलमय श्री गोमटेश के चरणो मे ले जाओ॥

प्रथम शोभा-यात्रा राजधानी में

दिल्ली मे महाकलश की शोभा यात्रा के लिए पूर्व सध्या से ही सारी तैयारियाँ कर ली गई थी। महाकलश प्रवर्तक, सचालक आदि बोलियो मे, लगभग पचहत्तर हजार की राशि अर्पित करके दिल्ली की जैन समाज ने इस योजना की देशव्यापी सफलता का पूर्व सकेत दे दिया था। प्रधानमन्त्री द्वारा प्रवर्तन का शुभारम्भ होते ही, जन मगल महाकलश अभियान की प्रथम शोभा-यात्रा देश की राजधानी मे बडे ठाठ से निकाली गयी। जुलूस मे अनेक सुन्दर झाकियाँ थीं, जिनमें भगवान् बाहुबली के जीवन प्रसगो का जीवन्त प्रदर्शन राह चलते जनो को आकर्षित कर लेता था। गोमटस्वामी की प्रतिष्ठा का सन्दर्भ लेकर गुल्लिका अज्जी द्वारा अपनी छोटी सी गुल्लिका से, गोमदनाथ के प्रथम अभिषेक का दृश्य बहुत सुन्दर और प्रभावक बना था।

दिल्ली के अपार जन समूह के बीच गुरुद्वारों तथा मस्जिदों के सामने शोभायात्रा के स्वागत में पानी, शर्बत, इलायची और मिश्री के वितरण ने उस यात्रा की स्मृतियो को पीढ़ियो के लिए मिठास से भर दिया । इस जूलूस को देखकर लोगो को बार-बार 17 नवम्बर 1974 की वह शोभायात्रा याद आ रही थी, जो भगवान् महावीर 2500वें निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य मे अनोखी शान-बान के साथ दिल्ली मे निकली थी । उस शोभायात्रा को राजधानी के अनेक बुजुर्गों ने 'अभूतपूर्व जुलूस' कहा था ।

भारत-भ्रमण

29 सितम्बर 1980 को दिल्ली से चलकर हरयाना, पश्चिमी उत्तरप्रदेश और राजस्थान तथा गुजरात होते हुए महाकलश ने मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग मे भ्रमण किया । फिर शेष उत्तरप्रदेश, बिहार और पश्चिमी बगाल होते हुए पुनः मध्यप्रदेश की यात्रा करके इन्दौर पहुँचने मे उसे कुल तीन माह का समय लगा । चार जनवरी 1981 को इन्दौर से जन मगल महाकलश की 'दक्षिणापथ-यात्रा' प्रारम्भ हुई । इस यात्रा मे महाकलश ने महाराष्ट्र, एक बार पुन गुजरात, फिर आन्ध्र, कर्नाटक, तामिलनाडु और केरल होकर, पश्चिमी समुद्र तट से पुन कर्नाटक मे प्रवेश किया, जहाँ मगलूर, मूडबिद्री, कारकल, धर्मस्थल और हासन होते हुए, महामस्तकाभिषेक के दो दिन पूर्व, 20 फरवरी 1981 को श्रवणबेलगोल मे इस यात्रा का समापन हुआ ।

तेरह प्रदेशो की इस दीर्घ यात्रा मे जगह-जगह जनमगल महाकलश को अद्भुत आदर और भारी सम्मान प्राप्त हुआ । भगवान् के विमान की तरह महाकलश की जो अर्चना अभ्यर्थना की गयी, उसे गोमटस्वामी का अतिशय ही कहना कहना होगा । इसी प्रकार इस यात्रा मे साथ चल रहे 'महाकलश परिवार' को भी हर जगह समाज का हार्दिक स्नेह, प्रबल प्रोत्साहन और महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त हुआ । सयोजक श्री जयसेनजी मुझे ये बताते हुए भाव-विह्वल हो उठे कि प्रायः वृद्ध स्त्री-पुरुषो ने अपने बेटों की तरह और बहिनो ने अपने ही भाई बान्धवो की तरह उन्हे स्नेह और आदर दिया है । भारी थकान और तनावो की स्थिति मे भी समाज से प्राप्त इस आत्मीयता ने, उन्हें कभी क्लान्त और अशान्त नही होने दिया ।

दिल्ली से प्रस्थान करते समय पूरे भ्रमण मे कुल 108 स्थानो पर शोभायात्राओ का कार्यक्रम निर्धारित किया गया था । पत्रो मे यह यात्रा मार्ग और कार्यक्रम प्रकाशित होते ही, जगह-जगह से कार्यक्रम सशोधित करने व अन्य स्थानों पर कलश ले जाने की माँग आने लगी । ऐसे अनुरोधो पर विचार करके कार्यक्रम मे कुछ सशोधन किये भी गये, परन्तु निर्धारित कालावधि मे अधिक लोगो का अनुरोध मान लेना सम्भव ही नही था । इस पर भी यात्रा के दौरान, सयोजक जयसेनजी और डॉ० प्रकाशचन्दजी पर दबाव डालकर, महाकलश की दिशा अपने नगर की ओर मोड लेने का प्रयत्न अनेक जगह लोगो ने किया ।

समाज का यह अनुरोध ही हमारे संयोजको की सबसे पेचीदी और नाजुक समस्या थी । कई बार उन्हें अग्नि-परीक्षा की तरह इस समस्या की आँच मे से अपनी राह बनानी पडी । एक ओर श्रद्धालु जनता का आग्रह और ऐसे-ऐसे समाज प्रमुख जनो का अनुरोध होता था, जिसे आज्ञा की तरह पालन करना संयोजक अपना कर्तव्य समझते थे, दूसरी ओर निरन्तर घूमते हुए घडी के दो काटे थे, और रोज पलटते हुए कैलेण्डर के पन्ने थे । दोनो में होड़ लगी

रहती थी। लोग तो अपनी बात पर अड़कर बैठ जाते थे। कई जगह बात इससे भी अधिक बढ जाती थी। मध्यप्रदेश के युवा विधायक श्री कपूरचन्द 'घुवारा' ने कलश को अपने यहाँ लिवा जाने के लिए प्रेम पूर्वक सयोजको का घिराव ही कर डाला। ऐसा और भी एक-दो जगह हुआ। गोहाना मे एक वृद्ध सज्जन ने अपनी टोपी उतारी और सयोजक के चरणों पर रख दी। ऐसे सभी मौको पर वही, उसी समय निर्णय लेना जरुरी होता था। किसी से परामर्श पाना सम्भव नही होता था। सयोजको के लिए वह परीक्षा की घडी होती थी। स्व-विवेक से ही उन्हे निर्णय लेने पडते थे। गर्व की बात यह है कि बाद मे ऐसे निर्णयो की समीक्षा करने पर यही पाया गया कि कलश-परिवार द्वारा प्राय: उचित और विचारपूर्ण मार्ग ही अपनाया गया था। उन परिस्थितियो मे इससे अच्छा और उपयुक्त निर्णय शायद दूसरा नही हो सकता था। विशेषता यह रही कि इन परिवर्तनो का पूर्व निर्धारित कार्यक्रमो पर कोई प्रभाव नही पडा। वे सब समय पर सम्पन्न हुए।

वास्नविकता यह है कि यह औचित्य बनाये रखने के लिए, हमारे समर्पित कार्यकर्ताओ को अपनी व्यस्तताएँ चरम सीमा तक बढाना पडी। एक ही दिन मे तीन-तीन प्रान्तो मे महाकलश की शोभायात्रा निकली। पूना से हैदराबाद तक एक सप्ताह मे लगभग दो दर्जन शोभायात्राओ का मानदण्ड स्थापित हुआ। इस भाग-दौड मे कलश परिवार के अधिकाश सदस्य थकावट से अस्वस्थ भी हो गये, परन्तु उन्होंने समाज की भावनाओ को भरसक सम्मान दिया। केवल वही सुझाव उन्होंने अमान्य किये जो व्यवहार्य नही थे, या जिनका निर्वाह किसी प्रकार सम्भव ही नही था। असमंजस मे डाल देनेवाले सैकडो सुझावो, अनुरोधो को, समाज की निराशा और नाराजी बचाते हुए निभा ले जाना, सचमुच महाकलश परिवार की बहुत बडी कामयाबी थी।

मैं समझता हूँ कि जिन श्रद्धामय भावनाओ को पूरे देश के जनमानस मे जाग्रत करने के लिए जनमगल महाकलश की सयोजना की गई थी, यात्रापथ मे परिवर्तन-सवर्द्धन करने के ये आग्रह और अनुरोध, ये घिराव और अनशन के इरादे, महाकलश के प्रनि उत्पन्न उसी भावना के जीवन्त प्रतीक थे। निश्चित ही आस्था और भक्ति की उस भावना को जाग्रत और प्रेरित करने का श्रेय हमारी कलश-यात्रा को था। हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि देश के कोने कोने मे महाकलश के लिए उमडता हुआ वह उत्साह और वह प्यार, हमारी सफलता का मापदण्ड था।

यात्रा के दौरान कलश परिवार के लिए गौरव और सौभाग्य के अनेक ऐसे क्षण भी प्राप्त हुए जहाँ उनकी सारी थकावट और सारा तनाव स्वत समाप्त हो गया। अनायास अनेक तीर्थों की वन्दना का सौभाग्य मिला। पूज्य आचार्य सुमतिसागरजी के सघ के दर्शन तथा पूज्य आचार्य समतभद्रजी और ऋषभसागरजी आदि मुनिराजो का चरण सम्पर्क प्राप्त हुआ। राह मे कई बार रोगी, असहाय, गरीब और वृद्ध राहगीरो को गन्तव्य तक पहुँचाने की सेवा का अवसर भी मिला। इस प्रकार जगह-जगह समाज का सहयोग और प्रोत्साहन पाकर एक सौ पैंतालीस दिनो की इस यात्रा मे पूर्व निर्धारित 108 के स्थान पर 180 शोभायात्राएँ सम्पन्न करायी गयी। जहाँ रास्ते मे रोककर कलश का स्वागत, वन्दन और अभिनन्दन किया गया, उन स्थानो की सख्या चार सौ तक पहुँचती है। शोभायात्राएँ आय का मुख्य साधन रही। तेईस हजार किलोमीटर की यात्रा मे तेईस लाख रुपये से अधिक की राशि जनमगल

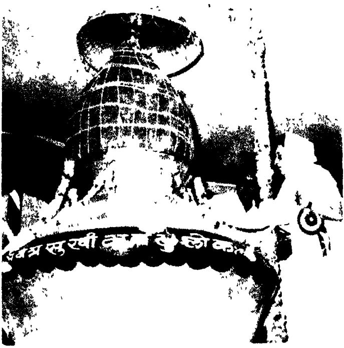


19

जन-मंगल महाकलश



20 29 सितम्बर 1980 जनमगल महाकलश सभामच



21 श्रीमती गाधी द्वारा जनमगल महाकलश का प्रवर्तन

22 स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने श्रीमती गाधी को महाकलश की ताडपत्राकित प्रशस्ति भेट की





23 श्रीमान् साहूजी द्वारा वहीं श्रीमती गांधी से महोत्सव के अवसर पर श्रवणबेलगोल आने का अनुरोध



24 महाकलश-प्रवर्तन के उद्देश्य और कार्यक्रम के विषय में वार्ता



25 18 जनवरी को बम्बई मे महाकलश का स्वागत । समारोह मे महाराष्ट्र के मन्त्री श्री जवाहरमल दरडा, मुख्यमन्त्री श्री ए आर. अन्तुले और केन्द्रीय पेट्रोलियम एव ऊर्जामन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र मेठी और उन सबका स्वागत करते हुए श्री साहु श्रेयासप्रसाद जैन

26 महाकलश के स्वागत के लिए खडे हुए राज्यमन्त्री श्री जवाहरमल दरडा, मुख्यमन्त्री श्री ए आर अन्तुले, स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, श्री प्रकाशचन्द्र मेठी, साहु श्रेयासप्रसाद जैन और श्री हसमुखलाल शाह

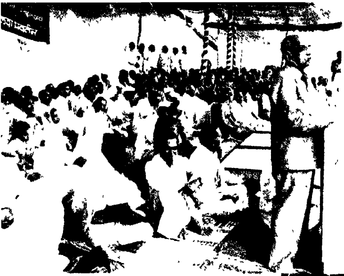




27 मठ के प्रांगण में महाकलश का आगमन

28 भारत भ्रमण के उपरान्त भण्डारी बस्ती
के समक्ष महाकलश की स्थापना





29

20 फरवरी 1981 को गोमटेश के सान्निध्य में जनमंगल महाकलश की उपलब्धियों को रेखांकित करने के लिए साहु श्रेयांसप्रसादजी की अध्यक्षता में समारोह का आयोजन

29 20 फरवरी 1981 को गोमटेश के सान्निध्य में जनमंगल महाकलश की उपलब्धियों को रेखांकित करने के लिए साहु श्रेयांसप्रसादजी की अध्यक्षता में समारोह का आयोजन



30 कल्याणी के मार्ग पर महाकलश की शोभा-यात्रा

31

स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने मुख्य अतिथि श्री वीरप्पा माइली को महाकलश की अनुकृति भेंट की

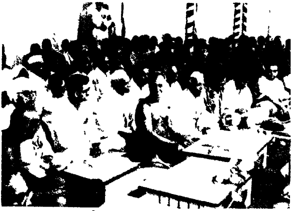




32 महाकलश यात्रा के सचालक विद्वान प. जयसेन जैन और डॉ. प्रकाशचन्द जैन का सम्मान



33 विद्यानन्द निलय का उद्घाटन करते हुए श्री अक्षय कुमार जैन



34 जनमंगल महाकलश की सफलता के लिए देश की जनता को धन्यवाद देते हुए भैया मिश्रीलाल गंगवाल

35 जिनकांची मठ से प्रवर्तन करता हुआ तमिलनाडु का महाकलश श्रवणबेलगोल में



महाकलश की निछावर के रूप में सहज ही एकत्र हो गयी। यह तथ्य विशेष उल्लेखनीय होगा कि इसमें से 98 प्रतिशत राशि तत्काल प्राप्त हो गयी। किसी भी धर्माश्रित सामाजिक चन्दे के लिए यह एक कीर्तिमान ही होगी।

महावीर निर्वाण महोत्सव के अवसर पर पूरे वर्ष भर में पाँच धर्मचक्रो ने भारत की खण्डश: परिक्रमा की थी। उन सबकी आर्थिक उपलब्धियाँ मिलाकर भी इस महाकलश की उपलब्धियों से अधिक नही थीं। सारे तथ्यों की समीक्षा करने पर यह अनुमान होता है कि यदि एक वर्ष का समय लेकर इस कलश यात्रा को श्रद्धालु भक्तो की इच्छानुसार सभी नगरो और ग्रामों तक पहुँचाया जा सकता तो श्रद्धा के अदभुत वातावरण का निर्माण इस अनुपात से चौगुने प्रमाण मे होता। तब एक करोड की राशि एकत्र कर लेना भी शायद असम्भव न होता।

महाकलश की अगवानी के लिए प्राय: हर जगह अतिमहत्त्वपूर्ण व्यक्ति उपस्थित होते थे। इनमे राज्यो के राज्यपाल, मुख्यमन्त्री, विधानसभा अध्यक्ष तथा मन्त्रीगण, विश्वविद्यालय के कुलपति, न्यायाधीश, महापौर, नगरपालिका अध्यक्ष, ससद सदस्य और विधायक होते थे। कमिश्नर, डी० आई० जी०, शिक्षण प्रमुख तथा कलेक्टर आदि अधिकारियों ने भी अनेक स्थानो पर महाकलश का अभिनदन किया। सबमे अधिक गौरवशाली तो वह क्षण रहे जब श्रद्धास्पद संतो और आचार्यों ने कलश की अगवानी की। अनेक स्थानो पर मुसलमान भाइयों ने मस्जिद के सामने से आग्रहपूर्वक शोभायात्रा का विहार कराया। सिक्ख, ईसाई और पारसी जनों ने भी यथा अवसर महाकलश के प्रति अपनी आदरभावना का परिचय दिया। नगर या ग्राम की सीमा पर पहुँचते ही मुख्य अतिथि के साथ वहाँ की जनता महाकलश का भावभीना स्वागत करती थी। प्रायः सारा नगर या कस्बा, अथवा, शेभायात्रा का पूरा मार्ग, स्वागत द्वारो, ध्वज-पक्तियो और आम्रपत्र के बदनवारो से सज उठता था। कई जगह बिजली की सुन्दर सजावट भी की गयी थी। दो तीन स्थानो पर शोभायात्रा के ऊपर हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्पवृष्टि भी हुई। स्वागत और सज्जा के इन आयोजनो में नगर की जैन और जैनेतर जनता एक जैसा उत्साह दिखाकर सलग्न हो जाती थी। इस यात्रा के वे सतरगे चित्र जैन शासन की प्रभावना के इतिहास में सादर सकलनीय हैं।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कलश प्रवर्तन का शुभारम्भ करके सर्वधर्म समभाव का जो उदाहरण प्रस्तुत किया था, केन्द्रीय पेट्रोलियम एव रसायन मन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी, वित्त राज्यमन्त्री श्री सवाईसिंह सिसोदिया और पूर्व सचारमत्री श्री शकरदयाल शर्मा ने क्रमशः बम्बई, भोपाल और इन्दौर मे कलश का स्वागत करके उस आदर्श को अलकृत किया। उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री चन्द्रेश्वर नारायण सिंह द्वारा लखनऊ मे और कर्नाटक के महामहिम राज्यपाल श्री गोविन्दनारायण द्वारा बगलोर में महाकलश अभिनन्दित हुआ। मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री अर्जुनसिंह ने भोपाल, जसपुरनगर और फिर इन्दौर मे महाकलश की अभ्यर्थना करके अपना सौजन्य प्रकट किया। कर्नाटक के मुख्यमत्री गुडूराव ने कर्नाटक प्रवेश पर बेलगाम मे, गुजरात के मुख्यमन्त्री माधवसिंह सोलकी ने अहमदाबाद मे और महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री ए० आर० अंतुले ने और उद्योगमन्त्री श्री जवाहरलाल दरडा ने बम्बई मे महाकलश के स्वागत का गौरव प्राप्त किया। इस सभा की अध्यक्षता श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने की। विधानसभा अध्यक्षो मे उत्तरप्रदेश के श्री श्रीपति मिश्र ने लखनऊ मे, पश्चिमी बगाल के सैयद मसूरअली ने कलकत्ता में, बिहार के श्री राधानन्द झा ने पटना में, तथा मध्यप्रदेश

के श्री यज्ञदत्त शर्मा ने बडनगर मे कलश की अगवानी की। राजस्थान के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष महारावल लक्ष्मणसिंह डूगरपुर मे स्वागत हेतु उपस्थित हुए। पूर्व विन्ध्य प्रदेश की विधान सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री शिवानन्द ने सतना मे कलश का स्वागत किया। उत्तरप्रदेश के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री रामनरेश यादव लखनऊ मे उपलब्ध रहे। अम्बाला शहर मे चण्डीगढ उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री गोकुलचन्द मित्तल ने विश्वधर्म की सराहना करते हुए महाकलश की आरती उतारी। धार मे मध्यप्रदेश के उपमुख्यमन्त्री श्री शिवभानुसिंह सोलकी तथा जयपुर मे राजस्थान के स्वायत्तशासन मन्त्री श्री हनुमानप्रसाद प्रभाकर ने कलश को माल्यार्पण किया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री दौलतसिंह कोठरी उदयपुर मे तथा विक्रमविश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ० शिवमगलसिंह सुमन उज्जैन मे महाकलश की अगवानी के लिए पधारे।

सन्तों के आशीष

महाकलश की प्रवर्तन यात्रा सन्तो के मगल आशीष की छाया मे प्रारम्भ हुई और अनेक साधकों तथा साधु-सन्तो की शुभ-कामनाएँ पूरी यात्रा मे सतत प्राप्त होती रहो। दिल्ली मे पूज्य आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी का वरद हस्त कलश पर रहा। श्री वीरेन्द्रजी हेगडे, चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी श्रवणबेलगोल और मूडबिद्री के भट्टारक स्वामीजी ने यात्रा के प्रारम्भ मे पुष्प क्षेपण किया।

□

81 की फरवरी का पहला दिन। कुम्बोज बाहुबली की पावन भूमि पर कलश का आगमन। नब्बे वर्ष के वृद्ध तपस्वी पूज्य आचार्य समन्तभद्रजी महाराज कलश का अवलोकन कर रहे हैं, यात्रा के सस्मरण सुन रहे है। कलश परिवार को आशीर्वाद देते समय उनका कण्ठ अनुकम्पा से विगलित है।

□

10 जनवरी 81 का प्रभात। वर्धा की शोभायात्रा के पश्चात् कलश पवनार आश्रम ले जाया गया। सन्त विनोबा का भक्तिपूर्ण कोमल हृदय आवेग मे भर उठा। ताली बजाते हुए भाव विभोर होकर बाबा कलश के सामने नाच उठे।

□

लाडनू मे विश्व-भारती के समीप, अणु-व्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने सर्व धर्म समन्वय की सुन्दर व्याख्या करते हुए महाकलश का स्वागत किया।

□

29 दिसम्बर 1980, मध्यप्रदेश मे सिहोर से कलश आष्टा पहुँचा। वहाँ जगतगुरु शकराचार्य की स्वागत सभा आयोजित थी। स्वामीजी ने डॉ० प्रकाशचन्द को सभा मे बोलने का आदेश दिया। उनका भाषण सराहा गया। जगतगुरु शंकराचार्य ने स्वय मगल-कलश की

अर्चना करते हुए कलश प्रवर्तन जैसे धर्म प्रभावक आयोजनो की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

□

भीलवाडा मे 26.10.80 का मध्याह्न। विशाल जैन-जैनेतर समुदाय की उपस्थिति मे, रामसनेही सम्प्रदाय के गुरु श्री रामानन्द महाराज मगल कलश की आरती उतारते हैं और हर्षित होकर अवसर की सराहना करते हैं।

□

महाराष्ट्र का प्रवेश-द्वार बेलगांव। तीन फरवरी 81 का शुभ दिन। कर्नाटक के मुख्यमन्त्री श्री गुंडूराव प्रदेश की सीमा पर कलश की अगवानी कर रहे हैं। कलश-परिवार को आशीष और प्रोत्साहन देने के लिए पधारे हैं श्रवणबेलगोल के कर्मठ भट्टारक श्री चारुकीर्ति स्वामीजी। कलश-परिवार के सदस्यो को अनुभव हो रहा है कि जैसे यात्रा सार्थक होकर सम्पन्न हुई। जैसे गन्तव्य मिल ही गया।

□

कर्नाटक मे बेलगाम जिले का छोटा-सा गाँव सेडवाल। ऐलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी की जन्म भूमि। तीर्थ जैसे पावन उस ग्राम मे, मुनिश्री की गौरवमयी जननी को कलश पर बिठाकर, अनोखी आनन्दानुभूति से भरा कलश-परिवार सचमुच नाच उठा।

□

18 फरवरी का स्मरणीय दिन। श्रवणबेलगोल पहुँचने मे केवल दो दिन शेष है। कलश प्रवर्तन हो रहा है धर्मस्थल मे। देश के इस महान् तीर्थ पर मजुनाथ मन्दिर के धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगडे स्वय स्वागत के लिए खड़े है। यह स्थान था जहाँ महाकलश योजना के मूर्धन्य चिन्तक मिश्रीलालजी गगवाल से लेकर कलश वाहन के चालक और खलासी तक को उस महापुरुष ने रजत निर्मित कलशप्रतीक और वस्त्रो आदि से सम्मानित किया। एक धर्माधिकारी की महानता का और कार्यकर्ताओ के सौभाग्य का ऐसा उदाहरण अन्यत्र कहाँ मिलेगा ?

□

पिता-सा प्यार और सन्त-सी अनुकम्पा

इस दीर्घ प्रवास मे महाकलश-परिवार के सभी सदस्यो को सर्वाधिक स्नेह और प्रोत्साहन प्राप्त हुआ योजनाध्यक्ष भैया मिश्रीलाल गगवाल से। बीच-बीच मे अवसर निकालकर वे अपने सहयोगियो के साथ महाकलश के कार्यक्रम मे पहुँचते थे। उन्हे अपने बीच पाकर हमारे कार्यकर्ता हर्ष और उत्साह से भर उठते थे। सबकी कुशल पूछते हुए, सबके घर की कुशल बताते हुए, भैया की निश्छल, मधुर-वाणी उन सबको नवीन प्रेरणा से भर देती थी। उन्हे नया जोश और नव-स्फूर्ति दे जाती थी। समारोहो मे उपस्थित होकर श्री देवकुमारसिंहजी और श्री कैलाशचन्द चौधरी भी महाकलश की खोज-खबर लेते रहते थे, पर भैया की बात ही और थी। उनके मन मे अपने कार्यकर्ताओ के लिए एक पिता का प्यार भरा था, उसमे एक सन्त की अनुकम्पा लहराती थी।

यात्रा के प्रारम्भिक दिनों मे जयपुर से अजमेर तक लगभग एक सप्ताह, मिश्रीलालजी

कलश परिवार के साथ रहे। उनकी उपस्थिति मात्र से शोभा यात्रा की गरिमा बढ जाती थी। महाकलश के आगे-आगे जब वे भजन बोलते हुए आत्मविभोर होकर थिरक उठते तब श्रोता और दर्शक ठगे से रह जाते थे। सबकी अपलक आँखे सजल हो उठती थी।

आठवें दिन जब वे अजमेर से इन्दौर के लिए विदा हुए तब स्टेशन पर कलश परिवार के प्रत्येक सदस्य की पीठ पर हाथ फेरकर आशीष देते समय उनका चेहरा प्रेम के आँसुओ से भीग रहा था।

कुछ स्मृति चित्र

महाकलश यात्रा के प्रथम दिन दिल्ली मे बोलियो से रु० 76,000.00 की जो राशि एकत्र हुई वह अन्त तक किसी एक स्थान से प्राप्त अधिकतम राशि ही रही। इसके साथ ही कलश वाहन पर ऐच्छिक दान के लिए जो दान पेटी रखी गयी थी वह भी दिल्ली के लिए छोटी पड़ गयी थी। पेटी भर जाने पर स्वयसेवको को चादर फैलाकर उसमे निधि सग्रह करना पडा।

□

साम्प्रदायिक दंगो के लिए बदनाम नगर अलीगढ। वर्षों से वहाँ न कोई धर्मसभा हुई थी और न किसी सम्प्रदाय का जुलूस ही निकला था। बडी मुश्किल से मौन जलूस के रूप मे कलश-यात्रा निकालने की अनुमति मिली। परन्तु लोगो मे उत्साह और धर्म का प्रभाव था, कि थोडी ही देर के बाद वहाँ बैण्ड गूंजने लगे। बैण्ड की धुन पर उत्साही पैर थिरक उठे और जैनो के अलावा, भारी सख्या में हिन्दू और मुसलमान भी, उस शोभा यात्रा मे शामिल होते गये। मन्दिरो की तरह मस्जिदो के सामने से भी जुलूस उसी उत्साह और शान के साथ निकला। कोई अनहोनी नही हुई।

□

गुजरात मे महाकलश का आशातीत सम्मान हुआ। हिम्मत नगर से कुन्द कुन्द कहान ट्रस्ट के प्रमुख श्री बाबूभाई मेहता स्वय अहमदाबाद तक कलश के साथ चले। अहमदाबाद मे मुख्यमन्त्री श्री सोलंकी ने स्वयं कलश का स्वागत किया।

□

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ मे कलश यात्रा ने एक महोत्सव का रूप ले लिया। लगभग एक किलोमीटर लम्बा जुलूस, विमान से पुष्प-वृष्टि, प्रदेश के राज्यपाल, मुख्यमन्त्री तथा विधान सभा अध्यक्ष का सभा को सम्बोधन और इस सबका टेलीवीजन पर प्रसारण, अपने आप मे महान् था, गरिमामय था।

□

पश्चिम बगाल में जंगीपुरा से चलकर नदी पार करना पड़ी, जिस पर पुल नही है। कलश वाहन और कार्यकर्ताओ की मेटाडोर को अलग-अलग नावो पर चडाकर नदी पार करायी गयी। इस प्रकार महाकलश को थल-यात्रा के साथ जल-यात्रा का भी गौरव प्राप्त हो गया। यह 29 नवम्बर 80 का वह दिन था, जब बगाल बन्द और बिहार बन्द के आवाहन पर सारे प्रदेश मे

कर्फ्यू-सा लगा हुआ था। परन्तु महाकलश की यात्रा, बिहार की उन असामान्य परिस्थितियो मे भी, आधी-आधी रात तक चलती रही। कही कोई दुर्घटना हमारे साथ नही हुई।

□

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल मे मुख्यमन्त्री श्री अर्जुनसिंह और पूर्व केन्द्रीय मन्त्री डॉ० शकरदयाल शर्मा जुलूस का नेतृत्व कर रहे हैं। झमाझम बरसात हो रही है। दिसम्बर की ठण्ड में भीगते हुए लोगो की सख्या जुलूस मे बढ़ती ही जा रही है। थिरकते हुए पाँव और जयकार करते हुए स्वर आज थकना चाहते ही नही। सारी यात्रा में मध्यप्रदेश की राजधानी की, बरसते पानी की उस शोभायात्रा का आनन्द कुछ अलग ही प्रकार का रहा।

□

प्राय: कई जगह उत्साह-प्रेरित भक्ति मगन समाज ने, आगे के कार्यक्रम की चिन्ता किये बिना कलश को घण्टो का बिलम्ब दे दिया। इसके विपरीत अम्बाला केण्ट मे युवा कार्यकर्ता श्रीपाल जैन ने अनुशासन का दूसरा ही उदाहरण सामने रखा। सुबह आठ बजे प्रारम्भ हुआ जुलूस पूरे आनन्द और उत्साह से चल रहा था, किन्तु प्रस्थान का समय होते ही सीटी बजाकर, वहाँ के अनुशासन प्रिय कार्यकर्ताओ ने, जुलूस समाप्त करके अगले गतव्य के लिए कलश का प्रस्थान करा दिया। ठीक भी है, सेना की छावनी मे अनुशासन नही होगा तो फिर कहाँ होगा?

□

खिमलासा से मालथौन होकर ललितपुर का प्रवास। डाकुओ से भरा बदनाम इलाका, कच्चा मार्ग, और अधेरी रात। बीच मे रास्ता भूलकर तीनों वाहन इधर-उधर हो गये। भटकते हुए किसी प्रकार सवेरे ठिकाना पडा। परन्तु शाम का भटका हुआ सुबह तक ठिकाने लग जाये तो भटका कहाँ कहलाता है।

□

कलश वाहन के रूप मे सेठ लालचन्द हीराचन्द की ओर से जो ट्रक प्राप्त हुआ था, कुछ तकनीकी खराबियो के कारण मार्ग मे उसे बदलने की आवश्यकता पड़ी। 17.12.80 को दमोह से चलकर बाँसा-तारखेडा मे उस ट्रक पर सौवी शोभायात्रा सम्पन्न की गयी। दूसरे दिन सागर मे महाकलश को नये ट्रक पर स्थापित किया गया। जिस समय पुराने ट्रक पर से महाकलश उतारा गया, उसका ड्राइवर सीताराम शिन्दे, कलश के वियोग मे व्यथित होकर रो पडा। सचेतन होता तो वह ट्रक भी उस दिन अपना रुदन कैसे रोक पाता?

□

सतना मे जैन क्लब द्वारा निर्मित 'धर्मचक्र' की आकर्षक अनुकृति को भी शोभायात्रा मे महाकलश के साथ निकाला गया। इस प्रकार एक दिन के लिए 'महावीर निर्वाण महोत्सव' और 'गोमटेश्वर महामस्तकाभिषेक' के आनन्द की अनुभूति एक साथ वहाँ की समाज को प्राप्त हुई।

□

बोलियाँ समाप्त हो गयी हैं। जुलूस के लिए सभा विसर्जित होने वाली है कि सभा सचालक श्री नीरज जैन एक घोषणा करते हैं। दो महानुभावो ने महाकलश पर इकतीस सौ-इकतीस सौ रुपये की चढोत्री अर्पित की है। सभा करतल ध्वनि से गूँज उठती है। यह नगर था सतना। चढोत्री अर्पित करने वाले सज्जन थे युनिवर्सल केबल्स लिमि० के अध्यक्ष श्री विजयदेव जैन और सतना सीमेन्ट वर्क्स के अध्यक्ष श्री उमरावसिंह सेठिया।

▭

अजमेर मे थके हारे कार्यकर्ताओ ने अपने मेजबान श्रीपदमकुमार एडवोकेट के यहाँ रात्रि मे पहुँचकर उनके बैठकखाने और शयन कक्षो मे विश्राम किया। सुबह पूरे घर का नक्शा देख कर डॉ० प्रकाशचन्द हैरत मे पड गये। बडे सकोच और पश्चात्ताप के स्वर में उन्होने पूछा— "घर का सारा स्थान तो हम लोगो ने ही घेर लिया था, फिर आप लोग कहाँ सोये?' पदमकुमारजी का सहज उत्तर था—"धर्म की प्रभावना करने वाले आप जैसे अतिथियो से हमारा घर पवित्र हो गया। हम बाहर बरामदे मे बडे आराम से सोये।"

▭

सूरत के सेठ मुरारीलालजी जितने उदार, उतने ही भावुक भी साबित हुए। महाकलश परिवार की अभ्यर्थना मे उनके परिवार के छोटे बडे सब लगे रहे। बिदाई के समय जब जयसेनजी ने उनसे इस कष्ट के लिए क्षमा माँगी, तब भावुकता से रुधे हुए उनके शब्द थे, "कष्ट तो आप अब दे रहे है।" ये वही महाभाग सज्जन थे जिन्होने महुवा मे रु० 27,001.00 की बोली प्राप्त की थी। पूरे यात्रा पथ की यही सबसे बडी बोली रही।

▭

मेलानगर में शोभा-यात्रा

बीस फरवरी का प्रभात। प्रतीक्षा की घडियो का समापन और श्रवणबेलगोल मे बाट जोहते लक्ष-लक्ष जनो को महाकलश का साक्षात्कार। शान्ति, अहिंसा और अपरिग्रह के सतत उपदेष्टा भगवान् बाहुबली के इस अन्तर्राष्ट्रीय समारोह को देश के चारो कोनो मे प्रचलित करते, जन-जन की श्रद्धा और भक्ति बटोरते हुए इस मगल प्रतीक की, श्रवणबेलगोल मे अनुपम शोभा-यात्रा। डेढ-सौ दिनो और पाँच हजार किलोमीटर के भारत-भ्रमण की महान् सफलता। सर्व धर्म समभाव, राष्ट्रीय एकता और श्रद्धा भरी उदारता का अनोखा उदाहरण। कोटि-कोटि कण्ठो के जय-निनाद का सवाहक 'जन-मगल महाकलश' अपने गतव्य को प्राप्त कर श्रवणबेलगोल के इतिहास में आज एक नवीन अध्याय का अंकन करने जा रहा था।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार महाकलश हासन से आज प्रात. ही यहाँ पहुँचने वाला था। उसी समय उसके स्वागत और शोभा-यात्रा की योजना बनायी गयी थी। परन्तु कुछ कारणो से, पूर्व रात्रि में ही कलश वाहन को हासन से श्रवणबेलगोल बुला लिया गया। दोपहर को चामुण्डराय मण्डप मे कलश-वाहन की झाँकी सजाकर उसके स्वागत मे सभा का अयोजन किया गया। महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयासप्रसाद जैन और कलश प्रवर्तन समिति के अध्यक्ष भैया मिश्रीलालजी गगवाल के साथ आज के मुख्य अतिथि, कर्नाटक के वित्तमन्त्री, श्री वीरप्पा

मोइली ने आरती उतारकर कलश का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण मे श्री मोइली ने व्यक्त किया कि "इस पुण्यशाली कलश ने पूरे देश मे भगवान् बाहुबली के अहिंसा, सह-अस्तित्व और अपरिग्रह के सिद्धान्तो के प्रचार के अपने लक्ष्य मे पूरी सफलता प्राप्त की है, अत. यह कलश स्वय वन्दनीय हो गया है।" श्री वीरप्पा ने आगे कहा कि "इस महोत्सव के निमित्त कर्नाटक शासन ने चार-पाँच करोड रुपया खर्च किया है, परन्तु इस उत्सव के बहाने जो महान् सन्त और योगी यहाँ पधारे है उनकी चरणधूलि का मूल्य सहस्र करोड मुद्राओ से भी नही आका जा सकता। उन सबके आशीर्वाद से यह महाकलश, कर्नाटक की जनता के लिए सुख और समृद्धि का सवाहक होगा, ऐसी मैं आशा करता हूँ।"

जनमगल महाकलश योजना की सफलता मे योगदान देने के लिए, और स्थान-स्थान पर उनका स्वागत करने के लिए, ऐलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी ने देश की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी तथा कर्नाटक के मुख्यमन्त्री श्री आर० गुण्डूराव सहित सभी प्रदेशो के मुख्य मन्त्रियो, विधान सभाध्यक्षो, अन्य महापुरुषो, पत्रकारो, अधिकारियो तथा अन्य सभी जनो के प्रति आभार व्यक्त करते हुए, उन्हे अपने मगल आशीष प्रदान किये। महाकलश यात्रा में एकत्र लगभग बीस लाख की निधि का उल्लेख करते हुए मुनिजी ने कहा कि "श्रवणबेलगोल के आस-पास रहने वाली जनता के, आर्थिक दृष्टि मे कमजोर वर्ग के हित मे इस राशि से प्राप्त आय का उपयोग किया जायेगा। इस निधि के सभी दान दातार 23 फरवरी को गोमटस्वामी का अभिषेक करने का अवसर प्राप्त करेंगे।"

मध्यप्रदेश के पूर्व अर्थमन्त्री श्री मिश्रीलालजी गगवाल द्वारा प्रवर्तित कलश की यात्रा का समापन कर्नाटक के अर्थमन्त्री द्वारा हुआ। इसे एक सार्थक सयोग बताते हुए मुनिजी ने दोनो महानुभावो को यश वृद्धि का आशीर्वाद प्रदान किया।

जैन मठ के भट्टारक श्री चारुकीर्ति स्वामीजी ने अपने वक्तव्य मे बताया कि देश केकोने-कोने तक इस महोत्सव का प्रभावपूर्ण ढंग से प्रचार करना बडा कठिन कार्य था। महाकलश के इस सफल प्रवर्तन ने कोटि-कोटि जनो के समक्ष भगवान् बाहुबली की वीरता, क्षमा और त्याग के सिद्धान्त प्रस्तुत किये, उनका नाम भारत की धरती के हर कोने में पहुँचाया और उनके पवित्र जीवन की प्रेरक झांकियाँ जन-जन को दिखलायी। देश के सामान्य नागरिक तक जैनधर्म के पावन सन्देश पहुँचाने मे महाकलश-परिवार पूर्णतः सफल रहा है और इसके लिए वह बधाई का पात्र है।

महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयांसप्रसादजी ने महाकलश योजना का इतिहास बताते हुए, श्रीमती गाँधी द्वारा 29 सितम्बर को उसके प्रवर्तन से लेकर आज तक की यात्रा का सक्षिप्त परिचय दिया। उन्होने इस यात्रा को अहिंसा और अपरिग्रह के प्रचार की एक अविस्मरणीय और ऐतिहासिक घटना निरूपित किया। इस महान् अवसर की स्मृति को सुरक्षित रखने के लिए श्रेयासप्रसादजी द्वारा कलश की रजत प्रतिकृतियां मुख्य अतिथि श्री वीरप्पा मोइली को और भट्टारक स्वामीजी को भेंट की गयी। इसके उपरान्त श्री वीरेन्द्र हेगड़े और श्री देवकुमारसिंहजी ने अपने उद्गार व्यक्त किये।

सभा की अध्यक्षता भैया मिश्रीलालजी गंगवाल कर रहे थे। उन्होंने इस अभिनव योजना की सफलता मे सहायक, छोटे-बड़े सभी जनो की सेवाओ का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया और समिति की ओर से सबका आभार प्रकट किया। पाँच माह पूर्व दिल्ली से

महाकलश का प्रवर्तन करने के लिए प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए श्री गंगवाल ने उन्हे 'विश्व की विशिष्ट राजनेता' निरूपित किया। बंगलादेश का प्रसग याद दिलाते हुए भैया ने बताया कि—"जनमगल की भावना से प्रेरित होकर, जीता हुआ राज्य त्यागने का आत्म संयम दिखाकर, इन्दिराजी ने भारतीय सस्कृति मे निहित उसी उदात्त भावना का परिचय दिया है जो अयोध्या मे बाहुबली ने और लका मे भगवान् राम ने दिखायी थी। यही औदात्य भारतीय चिन्तन का वह विशेष तत्त्व है जो हमारे महापुरुषो से हमे विरासत मे प्राप्त हुआ है।"

मुख्य अतिथि श्री वीरप्पा मोइली के द्वारा कलश-परिवार के उन कार्य-कर्ताओ को शाल उढाकर सम्मानित किया गया, जो इस प्रवर्तन की धुरी को धारण करके इसे दिल्ली से श्रवण-बेलगोल तक लाये थे। महाकलश के 'सारथी' कहे जाने वाले प० जयसेन जैन और डॉ० प्रकाशचन्द्र की सेवाओ पर जब प्रकाश डाला गया, तब जनता ने देर तक करतल-ध्वनि से उनका अभिनन्दन किया। महाकलश योजना समिति के कार्याध्यक्ष श्री देवकुमारसिंहजी कासलीवाल और महमन्त्री श्री कैलाशचन्द्र चौधरी को भी उस सभा मे सम्मानित किया गया। अनेक प्रसिद्ध समाजसेवी, विद्वान, लेखक, पत्रकार और महाकलश के अनेको क्षेत्रीय सहायक इस सभा मे उपस्थित थे। श्री बाबूलाल पाटोदी ने सभा का सचालन किया।

सभा के समापन के साथ महाकलश की शोभा-यात्रा प्रारम्भ हुई। कर्नाटक के कुशल कला-कारो द्वारा सजाया गया वह कलश वाहन, एक बडे जुलूस के रूप मे, पूरे मेलानगर मे घुमाया गया। अनेक सुन्दर, सुडौल और सुसज्जित गजराज अपनी मदमाती चाल से डोलते हुए, उस जुलूस की शोभा बढा रहे थे। ऊँट पर आसीन ध्वज-वाहक उनके साथ चल रहे थे। तरह-तरह की वेश-भूषा मे सजे, भाँति-भाँति के मुखौटे पहने धर्मस्थल के नर्तको का समूह, और कर्नाटक सगीत की पारम्परिक लय-ताल मे नाना प्रकार के वाद्य बजाने वाले वादक वृन्द आगे-आगे चल रहे थे। उनके पीछे कलश वाहन था जिस पर महाकलश के अतिरिक्त जैन ध्वज, धर्मचक्र, जैन-प्रतीक आदि मंगल द्रव्य सजाये गये थे।

महाकलश को देशाटन कराने वाला कलश-परिवार, उस वाहन पर आसीन, सार्वजनिक अभिवादन स्वीकार कर रहा था। बीच-बीच मे कुछ अन्य लोगो को भी कलश वाहन पर बिठा-कर सम्मानित किया गया। कलश के पीछे अनेक प्रमुख दिगम्बर आचार्यों, मुनियो और आर्यि-काओ का समूह, व्रतियो और श्रावक-श्राविकाओ सहित जनता के मध्य चल रहा था। जय-जय-कार के गगनभेदी नारे लगाकर, और पुष्प बरसाकर लोग कलश के प्रति अपनी आदर भावना व्यक्त कर रहे थे। श्री क्षेत्र धर्मस्थल के धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्रजी हेगडे के कुशल निर्देशन मे संचालित यह शोभा-यात्रा, श्री सुरेन्द्र हेगडे के अत्यन्त कलात्मक सयोजन के कारण, कर्नाटक के मध्ययुगीन पारम्परिक चल-समारोहो की झलक प्रस्तुत कर रही थी। मेलानगर की परिक्रमा करते हुए इस शोभा-यात्रा को चामुण्डराय मण्डप से मठ तक पहुँचने मे तीन घण्टे का समय लगा। सूर्य के प्रखर-प्रकाश मे प्रारम्भ हुआ जुलूस जब समाप्त हुआ तब पूर्ण-चन्द्र की धवल ज्योत्स्ना धरती पर फैल रही थी।

जुलूस विसर्जित होने पर भण्डारबस्ती के सामने चबूतरे पर, महाकलश को अस्थायी रूप से रख दिया गया। कालान्तर मे उपयुक्त मण्डप का निर्माण करके उसमे इसकी स्थायी-स्थापना

करने की योजना है ताकि समूचे देश मे भगवान् गोमटेश के प्रति भक्ति-भावना के स्वर उभारने वाला यह पुण्य-प्रतीक, आनेवाली पीढियो को प्रेरणा प्रदान करता हुआ, स्वय अपना इतिहास बखानता रहे।

महाकलश-मण्डप मे प्रशस्ति अंकन के लिए महाकलश-योजना समिति द्वारा अनुकल्पित प्रारूप इस प्रकार है—

卐 श्री गोमटेश बाहुबली महातपस्विने नमः 卐

इस युग के आदि तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव के पुत्र, प्रथम सिद्ध, भगवान् बाहुबली ने बारह मास पर्यन्त, अकम्प कायोत्सर्ग साधना करके, अनन्त चतुष्टय उपलब्ध किया। कालान्तर मे गगराज्य के महासेनाध्यक्ष-महामात्य चामुण्डराय, अपर नाम 'गोमट' ने, जन्मदात्री काललदेवी की दर्शनाकांक्षा की पूर्ति हेतु, श्रवणबेलगोल मे विन्ध्यगिरि पर बाहुबली स्वामी की उत्तुग प्रतिमा का निर्माण कराया। महान् दिगम्बर आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती के सान्निध्य में ईस्वी सन् 981 में प्रतिष्ठित यह विराट-विग्रह 'गोमटेश्वर-बाहुबली' के नाम से विश्व मे विख्यात हुआ।

सहस्र वर्षो तक प्रतिदिवस पाद-प्रक्षाल और लगभग बारह वर्षों के अन्तराल से अनवरत महामस्तकाभिषेक करते हुए, समरत भारत की दिगम्बर जैन समाज ने 9 फरवरी 1981 से गोमटेश्वर बाहुबली का सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना महोत्सव समायोजित किया। रविवार 22 फरवरी 1981 से प्रारम्भ करके अनेक दिनो तक भगवान् का महामस्तकाभिषेक होता रहा। आचार्यरत्न देशभूषण महाराज और आचार्य श्री विमलसागर महाराज प्रभृति, शताधिक दिगम्बर आचार्यों-मुनिराजो, आर्यिकाओ, त्यागियों और लक्ष लक्ष श्रावक-श्राविकाओं के चतुर्विध सघ सहित, भारी जैन-जैनेतर जनसमूह इस महोत्सव मे एकत्र हुआ। ऐलाचार्य विद्यानन्द मुनिराज के मार्गदर्शन मे श्रवणबेलगोल के 'कर्मयोगी' भट्टारक स्वस्तिश्री चारुकीर्ति स्वामीजी के अथक प्रयत्नो से, साहु श्रेयासप्रसादजी जैन की अध्यक्षता में यह महोत्सव सम्पन्न हुआ। कर्नाटक प्रदेश के यशस्वी मुख्यमन्त्री माननीय गुण्डूराव सहित सम्पूर्ण कर्नाटक शासन इस महोत्सव की व्यवस्था मे सहायक हुआ।

अन्तिम तीर्थंकर सन्मति महावीर के 2500 वें निर्वाण महोत्सव वर्ष मे, आसेतु-हिमालय प्रवर्तित पाँच धर्मचक्रो ने सत्य-अहिसा और सह अस्तित्व का चतुर्दिक प्रसार किया था। उस उपलब्धि से अनुप्राणित होकर, सर्व धर्म समन्वय की भावना से जन-जन को सहस्राब्दि महोत्सव मे जोडने का सकल्प लेकर, महामस्तकाभिषेक के प्रतीक रूप की लोकहित भावना से जनमगल महाकलश का प्रवर्तन हुआ और उसे समग्र भारत में पूर्ण समर्थन प्राप्त हुआ। यह योजना श्रवणबेलगोल दिगम्बर जैन मुजरई इन्स्टीट्यूशन्स मैनेजिंग कमेटी, श्रवणबेलगोल के तत्त्वावधान मे सफल हुई। जनमगल महाकलश महावीर ट्रस्ट, इन्दौर द्वारा समर्पित किया गया। बाहुबली के घटनामय जीवन के विविध चित्रो से सज्जित, विशाल स्वचालित लौह-शकट पर, यह महाकलश भारतीय गणतन्त्र की लोकप्रिय प्रधानमन्त्री, प्रियदर्शिनी श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा, दिल्ली से 29 सितम्बर 1980 को प्रवर्तित हुआ। हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्र, तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक के नगरो-ग्रामों मे

बिहार करते हुए इस मंगल कलश ने 20 फरवरी 1981 को श्रवणबेलगोल मे सद्य निर्मित श्री शान्तिसागर नगर मे महोत्सव पूर्वक प्रवेश किया।

लगभग बाईस हज़ार किलोमीटर की यात्रा मे एक सौ अस्सी से अधिक स्थानो पर जनमंगल महाकलश की शोभा-यात्रा निकाली गयी तथा इनके अतिरिक्त शताधिक स्थानों पर दान-पूजा, अर्चना आदि से जन-जन ने इसका स्वागत किया। पूरी यात्रा मे वर्तमान के विख्यात राज-पुरुषो, सन्तो, विद्वानों, श्रीमानो ने और भारी सख्या मे जैन-जैनेतर समुदाय ने, महाकलश की अगवानी की और उसे सम्मान दिया। अनेक प्रदेशो के राज्यपालो, मुख्यमन्त्रियो, विधान सभाध्यक्षो, न्यायमूर्तियो, मन्त्रि परिषद् के सदस्यो, सासदो, विधायको और नगराध्यक्षो ने पुष्पहारो से कलश का अभिनन्दन किया।

आष्टा, मध्यप्रदेश मे जगद्गुरु शकराचार्य ने, पवनार आश्रम, महाराष्ट्र मे सन्त विनोबा भावे ने; भीलवाडा, राजस्थान मे श्रीरामकिशोरजी महाराज ने और लाडनू, राजस्थान मे आचार्य तुलसी ने महाकलश को भावनात्मक श्रद्धा अर्पित की। अनेक स्थानो पर मुसलमान भाईयो ने मस्जिदो के सामने शोभा यात्रा का सत्कार किया। सिख और ईसाई जनो ने भी उत्साहपूर्वक महाकलश यात्रा की श्रीवृद्धि मे योग दिया। पण्डित जयमेन जैन और डॉ० प्रकाशचन्द्र जैन ने सयोजक के रूप मे यात्रा का सचालन करके प्रशसनीय योगदान दिया।

जनमंगल महाकलश की शोभा यात्राओ मे धनराशि देकर सहस्राधिक जनो ने महाकलश प्रवर्तक, सचालक तथा कलश-प्रतीक और ध्वज-रक्षक का स्थान ग्रहण किया। इस प्रकार प्राप्त एक विपुल धनराशि 'गोमटेश्वर जन-कल्याण ट्रस्ट' के नाम से लोकहित के लिए नियोजित की गयी। इन सभी सहयोगियो ने दिनाक 23 फरवरी 1981, फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी, विक्रम सवत् 2037 सोमवार को भक्तिपूर्वक गोमटेश्वर भगवान् का महाभिषेक सम्पन्न किया।

जनमंगल महाकलश योजना समिति

सर्वश्री मिश्रीलाल गगवाल—अध्यक्ष, श्री राजकुमारसिंह कासलीवाल—उपाध्यक्ष, श्री देवकुमारसिंह कासलीवाल—कार्याध्यक्ष, श्री कैलाशचन्द्र चौधरी—महामन्त्री।

गोमटेश्वर जन-कल्याण न्यास मण्डप

अध्यक्ष—साहु श्रेयासप्रसाद जैन, बम्बई।

मैनेजिंग ट्रस्टी—श्री देवकुमारसिंह कासलीवाल, इन्दौर।

न्यासधारी—स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, श्रवणबेलगोल। सेठ लालचन्द हीराचन्द, बम्बई। साहु अशोककुमार जैन, कलकत्ता। श्री रमेशचन्द जैन, दिल्ली। श्री मिश्रीलाल गगवाल, इन्दौर। कर्नाटक उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री महेन्द्र, बगलोर। श्री कैलाशचन्द्र चौधरी, इन्दौर।

संपूजकानां प्रतिपालकानाम्।
यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः
करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।

महाकलश यात्रा का सिंहावलोकन

जनमंगल महाकलश की उपलब्धियो का लेखा-जोखा, एक दृष्टि मे यदि हम देखना चाहें तो 29. 9.80 से 20. 2 81 तक कुल 145 दिनो मे दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, बिहार, पश्चिमी बंगाल, महाराष्ट्र, आन्ध्र, तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक, इन तेरह प्रदेशो मे महाकलश का भ्रमण हुआ। लगभग तेईस हजार किलोमीटर लम्बे इस मार्ग मे 180 स्थानो पर शोभायात्राओ का आयोजन हुआ। प्रवर्तन मार्ग मे जहाँ कलश को रोक कर उसका स्वागत, पूजा, आरती आदि की गयी उन स्थानो की संख्या 387 रही।

आर्थिक उपलब्धियो का विवरण इस प्रकार है—

आय—	रु० पै०
180 स्थानो की बोलियो से प्राप्त राशि	20,87,683.00
बोलियो के अतिरिक्त चढोत्री और गुप्त दान से प्राप्त राशि	2,85,256.49
इस प्रकार कुल प्राप्तियाँ	23,72,939.49
व्यय एवं नियोजन—	
श्रवणबेलगोल दिगम्बर जैन मुज़रई इस्टीट्यूशस मैनेजिंग कमेटी को विशेष अनुदान	3,00,001.00
श्री गोमटेश्वर जनकल्याण ट्रस्ट को हस्तातरित	16,62,513 00
महाकलश यात्रा का समग्र व्यय	3,35,369.58
जनमगल महाकलश समिति के पास शेष	34,052 87
योग—	23,31,936 45

नोट—(ये आंकड़े अकेक्षण पूर्व के हैं। अधिकृत आकड़े कमेटी द्वारा अलग से प्रकाशित हैं)

सहयोग और योगदान

इन उपलब्धियों की अन्य प्रकार से समीक्षा की जाये तो हम पायेंगे कि तेरह प्रदेशो मे सबसे अधिक राशि मध्यप्रदेश से प्राप्त हुई। नगरो की अपेक्षा रु० 88,323 00 की प्राप्ति के कारण यह सम्मान भारत की राजधानी को ही प्राप्त हुआ। यहाँ श्री जगाधरलाल पवनकुमार जैन ने 'महाकलश प्रवर्तक' की प्रथम बोली लेकर राशि संग्रह का समारम्भ किया। श्री मुरारीलाल नेमीचन्द जैन महुवा (सूरत) रु०27,001 00 की बोली लेकर राशि की अपेक्षा प्रथम रहे। श्री मिश्रीलालजी काला ने कलकत्ते मे रु० 26,111.00 प्रदान करके द्वितीय स्थान पर अपना नाम अकित कराया। रु० 25,501,00 की बोली लेकर जयपुर के श्री सरदारमल ओमप्रकाश-जी ने तृतीय स्थान लिया। महाकलश पर पद ग्रहण करने की अपेक्षा 'महाकलश प्रवर्तक' के

लिए श्री मुरारीलाल नेमीचन्द जैन की राशि ही सर्वोच्च रही। रु० 15,001 00 की सर्वोच्च राशियाँ 'कलश सचालक' पद के लिए श्री रणजीतसिहजी दिल्ली ने, 'कलश रक्षक' पद के लिए लाला राजेन्द्रकुमार जैन दिल्ली ने और 'ध्वज रक्षक' पद के लिए श्री राजेन्द्रकुमार जैन दिल्ली ने समर्पित की। 'प्रतीक रक्षक' पद के लिए सर्वोच्च राशि रु० 10,001.00 लाला धन्यकुमारजी दिल्ली से प्राप्त हुई। बोलियो के अतिरिक्त, दान पेटी, प्रतीक कलश तथा गुप्तदान से भी सर्वाधिक राशि रु० 12,618 00 दिल्ली में ही प्राप्त हुई।

यह तो आँकड़ो के आधार पर उपलब्धियो का एक चित्र हुआ परन्तु वास्तव मे किसी स्थान के, या किसी व्यक्ति के सहयोग को, राशि के आधार पर आँका ही नही जा सकता। हमारा तो अनुभव है कि महाकलश ने अपनी यात्रा के दौरान पूरे देश मे जन-जन से जो समर्थन, जो सहयोग और जो योगदान प्राप्त किया वह सकलित राशि से अधिक मूल्यवान है। किसी प्रकार का लेखा प्रकाशित करके इसके प्रति समाज की सही कृतज्ञता ज्ञापित नही की जा सकती। इस सबके साथ कलश के प्रति लोगो के मन मे जो श्रद्धा और जो सम्मान भावना दिखाई देती थी, उनकी आँखो मे जो स्नेह झलकता और झरता था वह हमारे लिए सर्वोपरि है। उस स्नेह ने कार्यकर्ताओ का जो उत्साह-वर्धन किया है वही दीर्घकाल तक स्मृति मे रखने योग्य है।

गोमटेश्वर जन-कल्याण ट्रस्ट

जनमगल महाकलश योजना समिति ने प्रारम्भ मे ही घोषित कर दिया था कि महाकलश प्रवर्तन से जो राशि उपलब्ध होगी उसे एक स्वतन्त्र ट्रस्ट के माध्यम से सार्वजनिक सेवाओ मे नियोजित किया जायेगा। इसी प्रयोजन के लिए कमेटी ने 'गोमटेश्वर जन-कल्याण ट्रस्ट' स्थापित किया। नियम 80 के अन्तर्गत आयकर की छूट का प्रमाण-पत्र भी ट्रस्ट को मिल गया है। महाकलश योजना समिति की ओर से रु० 16,62,513 00 (रु० सोलह लाख बासठ हजार पाँच सौ तेरह मात्र) की राशि ट्रस्ट को मूलत हस्तातरित की गयी है, जिसमे से रु० चौदह लाख का विनियोग राष्ट्रीयकृत बैंको के सावधि निक्षेप खातो मे किया जा चुका है। शेष राशि चालू खाते मे जमा है। इस राशि के ब्याज से ट्रस्ट की जो आय होगी उसे श्रवणबेलगोल के आस-पास जनकार्यों मे व्यय करना ट्रस्ट का उद्देश्य है। इस हेतु ट्रस्ट ने श्रवणबेलगोल के आस-पास मे दस गाँव गोद लिये हैं। इन ग्रामो मे साधनहीन परिवारो को आजीविका के मूलभूत साधन उपलब्ध कराने का हमारा सकल्प है। ग्रामो तक पहुंच मार्ग का निर्माण, पेय जल की आपूर्ति, गलियो की सफाई, और स्कूलो मे पुस्तको तथा अन्य शैक्षणिक उपकरणो का वितरण तथा स्वास्थ्य सेवाओ का विस्तार आदि कार्य, प्राथमिकता के आधार पर ट्रस्ट द्वारा वहाँ प्रारम्भ किये गये हैं। जनसेवा के इस शुभ कार्य का प्रारम्भ, महामस्तकाभिषेक के उपरान्त, एक वर्ष के भीतर दिनाक 2) 12 81 को एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी के सान्निध्य मे, तत्कालीन गृह मन्त्री एव सम्प्रति महामहिम राष्ट्रपति, ज्ञानी जैलसिहजी के द्वारा निर्धन महिलाओ को पच्चीस सिलाई मशीने वितरित कराकर किया जा चुका है। ट्रस्ट अपने सुयोग्य अध्यक्ष समाजरत्न श्री श्रेयासप्रसाद जैन के कुशल निर्देशन मे निरन्तर अपने पवित्र उद्देश्यो के लिए गतिशील है। ट्रस्ट कमेटी का गठन इस प्रकार हुआ है—

1. कर्मयोगी श्री चारुकीर्ति स्वामीजी, श्रवणबेलगोल — संरक्षक सदस्य

2. समाजरत्न साहु श्रेयांसप्रसाद जैन, बम्बई — चेयरमैन
3. श्री देवकुमारसिंह कासलीवाल, इन्दौर — मैनेजिंग ट्रस्टी
4. धर्माधिकारी श्री डी० वीरेन्द्र हेगड़े, धर्मस्थल — ट्रस्टी सदस्य
5. सेठ लालचन्द हीराचन्द, बम्बई — ,,
6. साहु अशोककुमार जैन, कलकत्ता — ,,
7. श्री बाबूभाई चुन्नीलाल मेहता, फतेपुर — ,,
8. श्री रमेशचन्द्र जैन (पी.एस.मोटर्स) दिल्ली — ,,
9. श्री कैलाशचन्द चौधरी, इन्दौर — ,,
10. जस्टिस आर० एस० महेन्द्रा, बगलोर — ,,
11. श्री जयकुमार अनगोल, बगलोर — ,,

महाकलश की अंजुरी और महामस्तकाभिषेक

गोमटेश भगवान् के महामस्तकाभिषेक का दूसरा दिन, 23 फरवरी 1981, सोमवार का मगल दिवस, महाकलश मे सहयोग देने वालो के द्वारा बाहुबली भगवान के महामस्तकाभिषेक के लिए ही सुरक्षित रखा गया था। बोलियाँ लेनेवालो को इसके लिए अधिकार-पत्र उनके नगरो मे ही प्रदान कर दिये गये थे। थोड़े बहुत जो आमन्त्रण या पास आदि देना थे, उसकी व्यवस्था महासमिति कार्यालय के एक काउण्टर पर, महाकलश परिवार ने एक दिन पूर्व पूरी कर ली थी। महाकलश योजना समिति की ओर से अभिषेक करने वालो की कुल सख्या लगभग साढे तीन हजार थी। उधर महोत्सव समिति ने भी आज के लिए कुछ कलश आवटित कर रखे थे। इस प्रकार जहाँ प्रथम दिन केवल तीन हज़ार लोगो ने अभिषेक किया था, दूसरे दिन 23 फरवरी को लगभग पाँच हज़ार लोगों को अभिषेक करने का अवसर मिला।

योजना समिति के पदाधिकारी, सदस्य और कार्यकर्ता हर्षित थे। वे अपनी योजना की सफलता पर सतोष और गर्व का अनुभव कर रहे थे। वे लोग जो 'कलश-परिवार' का अग बनकर गाँव-गाँव घूमे थे, जो एक तरह से अपने सिर पर इस पवित्र कलश को धारण करके इतनी दूर तक लाये थे, विशेष आनन्दित थे। उनकी आँखो मे प्रसन्नता की चमक अलग ही दिखाई पड रही थी। दस-बीस भावुक कार्यकर्ताओ को खुशी के आँसुओं से सराबोर भी देखा गया। क्यो न हो ? आखिर उनके ही परिश्रम से तो आज हम सबका मस्तक गर्वोन्नत था। उनके ही अनवरत श्रम से तो आज गोमटस्वामी का यह आँगन इतना आलोकित था।

सपना जो साकार हो गया

उस दिन जब विन्ध्यगिरि पर यह अभिषेक हो रहा था, हर व्यक्ति जब अपने-अपने ढंग से गोमटस्वामी की भक्ति मे तल्लीन था, महाकलश योजना से सम्बद्ध पाँच हज़ार लोग जब आनन्द का वह महोत्सव मना रहे थे, तब एक व्यक्ति आनन्द की अनुभूति मे भरा एकान्त मे चिन्तनलीन बैठा हुआ था। वह, जिसने इस संयोजन के लिए अनेक कल्पनाओ और सपनो का सृजन किया था, और कोई नही, हमारे प्रेरणा-पुरुष भैया मिश्रीलाल गगवाल थे। उस दिन उनके एकान्त को भग करने वाला एकमात्र व्यक्ति था मै, नीरज जैन।

कुछ शारीरिक और कुछ मानसिक कारणो से, गंगवालजी आज विन्ध्यगिरि पर नहीं गये थे। ऐसे ही कुछ कारणोवश मैं भी उस सामुदायिक आनन्द का प्रत्यक्षदर्शी नहीं बन पाया था। 'श्रेयांसप्रसाद अतिथि निवास' के लान मे बैठे हुए हम दोनो देर तक बतियाते रहे। गंगवालजी बहुत निश्चल और भावुक व्यक्ति थे। उनका सन्त-हृदय इतना संवेदनशील था कि थोड़े से ताप से वह पिघल जाता था। किसी के मन का छोटा सा क्लेश भी उनके मन को व्यथित और अशान्त कर जाता था। उस दिन मैंने पाया कि महाकलश योजना की राष्ट्रव्यापी आशातीत सफलता ने उन्हे सन्तोष दिया था, कलश के प्रति लोगो के व्यामोह ने उन्हे आत्म-विभोर कर दिया था, परन्तु वही दूसरी ओर कुछ बातें उनके मन को खिन्नता भी दे रहीं थी। वे कतिपय साथियो के प्रमाद या उनकी भूलो के परिताप से द्रवित और क्षुब्ध थे। यह उनकी महानता थी कि उनके मन के परिताप की जरा-सी भी आँच, उनकी जुबान से निकलकर बाहर नही आयी। उस दिन कुल मिलाकर वे सन्तुष्ट थे और बहुत प्रसन्न थे। जनमगल महाकलश जैन शासन की सेवा मे उनका अन्तिम और सम्भवत. सर्वाधिक प्रभावशाली योगदान था। निश्चित ही इसके लिए समाज बहुत समय तक उनका ऋणी रहेगा। उस दिन भैया के कुछ अन्तरग क्षणो का साक्षी बन सका यह मेरा सौभाग्य था। लगभग सौ मिनिट की हम लोगो की चर्चा का उपसहार करते हुए अन्त मे भैया ने यही कहा था कि—

"बाहुबली क्षमानिधान हैं। उनका अभिषेक-जल हमारे तुम्हारे मन को भी उस गुण से प्रक्षालित करे और यह महोत्सव हमारे जीवन मे पवित्रता के सस्कार अकुरित कर जाये, यही हमारी यात्रा की सार्थकता होगी। यहाँ अकुराये उन अकुरों को जो सीचता रहेगा वह एक दिन अवश्य भक्त से भगवान् बनेगा।"

उस दिन मैं नही जानता था कि 1981 के इस महान् मेले की तरह, 1982 मे भैया भी, इतिहास के पन्नो मे कहानी बनकर जा बैठेंगे। उनकी निष्ठा को नमन।

कलश आवंटन और दिगम्बर जैन महासमिति का योगदान

इस महोत्सव की संयोजना मे प्रारम्भ से ही महासमिति का विशेष योगदान रहा है। दिल्ली में महोत्सव के प्रचार के लिए तथा जन सम्पर्क के लिए महासमिनि की महत्वपूर्ण सेवाएं प्राप्त हुईं। अभिषेक के लिए कलशो के आवटन और आरक्षण का पूरा कार्यक्रम महासमिति ने ही तैयार किया। दूर-दूर तक फैली हुई अपनी शाखाओ के माध्यम से कलशो की बिक्री की व्यवस्था और उनकी राशि एकत्रित करके कमेटी को भिजवाने का महत्त्वपूर्ण कार्य महासमिति के माध्यम से हुआ। यद्यपि कलश वितरण के इस कार्य मे, अनेक स्तरो पर, अनेक लोगो का योगदान प्राप्त हुआ, परन्तु महासमिति का देशव्यापी सगठन इस कार्य का सबमे उपयोगी माध्यम साबित हुआ।

कलश आवंटन

महासमिति ने प्रारम्भ से ही सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक के लिए एक हज़ार आठ कलशो के अग्रिम आरक्षण का उत्तरदायित्व ले लिया था। इन एक हज़ार आठ कलशो के आवटन से इक्यावन लाख पचहत्तर हज़ार की प्राप्ति की आशा की गयी थी। निर्धारित कलशो का विवरण इस प्रकार है—

कलश श्रेणी	कुल कलश	राशि प्रति कलश	कुल प्राप्तव्य राशि	कलश के साथ व्यक्ति
शताब्दि कलश	10	1,00,000/-	10,00,000/-	7
दिव्य कलश	4	50,000/-	2,00,000/-	6
रत्न कलश	4	25,000/-	1,00,000/-	5
सुवर्ण कलश	200	11,000/-	22,00,000/-	4
रजत कलश	200	5,000/-	10,00,000/-	4
ताम्र कलश	140	2,500/-	3,50,000/-	3
कांस्य कलश	200	1,000/-	2,00,000/-	2
गुल्लिकाअज्जी कलश	250	500/-	1,25,000/-	2
	1008	योग	51,75,000/-	

इस प्रावधान के अलावा यह भी प्रावधान रखा गया था कि कलशो के लिए प्राप्त अनुरोध को देखते हुए आवटन समिति को एस डी.जे एम.आई. मैनेजिंग कमेटी के अध्यक्ष तथा भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एव महामस्तकाभिषेक महोत्सव कार्यकारिणी के अध्यक्ष की स्वीकृति पर विभिन्न श्रेणियो के कलशो की सख्या मे फेर-बदल करने का अधिकार होगा, किन्तु कलशो की कुल सख्या 1008 ही रहेगी।

ऐलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी के इन्दौर चातुर्मास के अवसर पर दिनांक 6-10-79 को इन्दौर मे महासमिति ने एक सफल बैठक करके कलश आरक्षण कराने के लिए समाज को प्रेरणा देने का और आवटन की प्रक्रिया का महत्वाकाक्षी कार्यक्रम निर्धारित किया। लक्ष्य प्राप्ति के लिए समय-समय पर और भी बैठकें की गयी, सामाजिक कार्यकर्ताओ को परिपत्र भेजकर प्रेरणा दी गयी तथा पत्रो द्वारा इसका देशव्यापी प्रचार किया गया। महासमिति के अध्यक्ष साहु श्रेयास-प्रसाद जैन और मन्त्री श्री नेमिचन्द जैन ने अनेक स्थानो पर स्वय जाकर राशि एकत्र करने का प्रयास किया। चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने भी समय-समय पर इन्दौर, बम्बई, कलकत्ता, बेलगाम, बगलौर आदि स्थानो की यात्राएँ करके इस अभियान मे सहयोग दिया।

महासमिति के ये देशव्यापी प्रयत्न, आशा के अनुरूप सफल भी हुए। अभिषेक के पूर्व ही 'कलश आवंटन समिति' ने आठ सौ इक्यावन कलशो का आरक्षण करके रु० 27,37,500 00 की राशि प्राप्त कर ली थी। अग्रिम आवटित कलशो की तालिका इस प्रकार है—

कलश श्रेणी	कुल कलश	राशि प्रति कलश	आवटित कलश	प्राप्त राशि रुपये
शताब्दि कलश	10	1,00,000/-	10	10,00,000/-
दिव्य कलश	4	50,000/-	—	—
रत्न कलश	4	25,000/-	2	50,000/-
स्वर्ण कलश	200	11,000/-	38	4,18,000/-
रजत कलश	200	5,000/-	64	3,20,000/-
ताम्र कलश	140	2,500/-	225	5,62,500/-
कास्य कलश	200	1,000/-	262	2,62,000/-
गुल्लिकाअज्जी कलश	250	500/-	250	1,25,000/-
	आवटित कलशो का योग		851	27,37,500/-

समाज के अनुरोध पर, कमेटी की स्वीकृति से ताम्रकलश की निर्धारित संख्या 140 की जगह 225 और कास्य कलश 200 की जगह 262 आवटित किये गये। एक लाख वाले शताब्दि

कलश दस के दस आवंटित हुए, जबकि दिव्य-कलश एक भी नही बेचा जा सका। स्वर्णकलश 200 की जगह केवल 38 और रजतकलश 200 की जगह केवल 64 ही बेचे जा सके। यह बात उल्लेखनीय है कि सभी शताब्दि कलशो का आवंटन बहुत शीघ्र हो गया था। बाद मे कुछ और लोग भी ये कलश प्राप्त करना चाहते थे। मुनि विद्यानन्दजी के समक्ष यह प्रस्ताव लाया गया कि शताब्दि कलशो की सख्या यदि दस से बढ़ाकर पन्द्रह कर दी जाये तो बढ़े हुए पाँच कलशों की राशि पाँच लाख रुपये तत्काल प्राप्त हो सकती है। मुनिश्री का उत्तर बहुत सुविचारित था। उन्होने कहा कि दस शताब्दियो के बाद यह सहस्राब्दि महोत्सव सम्पन्न हो रहा है इसलिए 'शताब्दि-कलश' दस ही रहेगे। अन्य कलशो की संख्या मे आप जैसा चाहे वैसा परिवर्तन करें, परन्तु शताब्दि कलशो की सख्या नही बढ़ाई जावेगी।

अन्य सहयोग

महासमिति ने कलश आवटन के अलावा इस महोत्सव मे और भी अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों मे भरपूर सहयोग दिया। महासमिति के अध्यक्ष साहु श्रेयांसप्रसादजी इस महोत्सव के शीर्षस्थ नेता थे। उन्ही की अध्यक्षता मे महोत्सव समिति इस विशाल आयोजन के बहु-आयामी उत्तरदायित्वो का निर्वाह कर रही थी। सम्भवत. इसीलिए साहुजी के कुशल निर्देशन मे महासमिति की पूरी शक्ति का उपयोग इस महोत्सव के लिए अनायास ही होता रहा।

आवासो के अग्रिम आरक्षण के लिए भी महासमिति ने प्रयास किये। अभिषेक के दिन कलशधारक महानुभावो को पास तथा विशिष्ट अतिथियो को निमन्त्रण-पत्र समय पर पहुँचाने की व्यवस्था मे भी महासमिति का कार्यालय दिन-रात अनवरत रूप से सक्रिय रहा।

श्रवणबेलगोल मे पी.एस. जैन गेस्ट हाउस अभी अधबनी स्थिति मे ही था। उसी मे बैठकर महासमिति के उत्साही कार्यकर्ता श्री रमेशचन्द जैन, प्राय दिन-रात इन व्यवस्थाओ मे लगे रहते थे। राज्य परिवहन के बस स्टेण्ड के पीछे महासमिति का बहुत बडा कार्यालय स्थापित किया गया था जिसमे धीरे-धीरे अनेक सस्थाओं के काउण्टर बने, प्रदर्शनियाँ लगी और समय-समय पर कुछ अन्य सामाजिक बैठके आदि भी होती रही। जिन लोगो ने कलशो का अग्रिम आरक्षण करा लिया था, उन्हे पास आदि प्राप्त करने के लिए, तथा अन्य सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए, 15 फरवरी से महासमिति का कार्यालय विधिवत् वहाँ स्थापित हो गया था। महासमिति के मन्त्री श्री नेमिचन्द जैन ने श्री महावीर निर्वाण महोत्सव वर्ष के कार्यकाल के अनुभवो का लाभ उठाते हुए रात-दिन परिश्रम करके इस महोत्सव मे उल्लेखनीय सेवाएँ दी।

यद्यपि 23 फरवरी को महासमिति का अधिवेशन घोषित किया गया था परन्तु अधिकांश प्रतिनिधियो एव सदस्यो की विभिन्न व्यस्तताओ को देखते हुए यह अनुभव किया गया कि अधिवेशन के अनुरूप स्थिरता और एकाग्रता उस दिन वहाँ व्यवहार्य नही है, अत. अधिवेशन स्थगित करना ठीक समझा गया। आचलिक समितियो के कार्यकर्ताओ के परस्पर परिचय और सौजन्य की दृष्टि से एक दिन श्रेयास प्रसाद जैन अतिथि-गृह पर महासमिति की अनौपचारिक बैठक हुई। इस बैठक को एलाचार्य विद्यानन्दजी ने और अध्यक्ष साहु श्रेयांसप्रसादजी ने सम्बोधित किया।

सेमिनार-संगोष्ठियाँ

जनमानस को भगवान् बाहुबली के जीवन सिद्धान्तो और श्रवणबेलगोल की कलागत ऐतिहासिक विशेषताओ का परिचय कराने के उद्देश्य से, महोत्सव के पूर्व अनेक स्थानो पर अनेक सेमिनारो-सगोष्ठियो का आयोजन कराया गया था। बगलोर मे डॉ० शिवरुद्रप्पा, मैसूर मे डॉ० बसन्तराज तथा धारवाड और श्रवणबेलगोल मे डॉ० टी जी कलघटगी के सुचारु सयोजन मे इन सगोष्ठियो का आयोजन हुआ।

ऑल इण्डिया सेमिनार ग्रान श्रवणबेलगोल

12-13 और 14 जनवरी 81 को श्रवणबेलगोल के गोमटनगर मे होस्टल बिल्डिंग के हाल मे श्रवणबेलगोल पर अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन हुआ। सेमिनार के निदेशक, मैसूर विश्वविद्यालय के जैनालॉजी और प्राकृत के निवृतमान विभागाध्यक्ष डॉ० टी जी कलघटगी थे।

12-1-81 को प्रात 10 बजे उद्घाटन-सत्र का प्रारम्भ डॉ० कलघटगी द्वारा स्वागत भाषण से हुआ। स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने अपनी शुभकामनाएँ अर्पित करते हुए विद्वानों का आवाहन किया कि वे कर्नाटक की जैन संस्कृति की शोध के उपक्रम करे। श्रवणबेलगोल का जैनमठ, गोमटेश विद्यापीठ, और एस डी जे एम आई. मैनेजिंग कमेटी उनके कार्य मे वाछित सहयोग करने मे सदा तत्पर रहेगी। उद्घाटन भाषण मे एलाचार्य विद्यानन्द मुनिराज ने श्रवणबेलगोल के अतीत की गरिमा को इगित करते हुए कन्नड साहित्य की समृद्धि का उल्लेख किया। उन्होने सेमिनार मे सम्मिलित विद्वानो को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आस्था शुद्ध हो, प्रयत्न सम्यक् हो, तो वे सदा अभिनन्दनीय होते है।

मुख्य अतिथि, कर्नाटक के पर्यटन आयुक्त श्री टी पी इस्सर आई ए एस ने सेमिनार को महामस्तकाभिषेक महोत्सव की ऐतिहासिक घटना निरूपित करते हुए डॉ० कलघटगी के प्रयत्नो की सराहना की। सत्राध्यक्ष मैसूर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० के एस. हेगड़े ने विद्वत्तापूर्ण अध्यक्षीय भाषण मे आग्रह किया कि धर्म और सम्प्रदाय के आग्रह से मुक्त होकर विद्वानो को सस्कृति और इतिहास का अध्ययन, मनन और उद्घाटन करना चाहिए। वैचारिक सकीर्णता विश्लेषण के मार्ग मे बाधक बनती है। उन्होने इस तरह के आयोजनो की उपलब्धियो को प्रकाशित कराने पर भी जोर दिया। महोत्सव के विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी श्री ए ए. शेट्टी ने आगन्तुक महानुभावो और विद्वानो के प्रति धन्यवाद पारित करते हुए सत्र का समापन किया।

इस सेमिनार मे कुल छह सत्र हुए। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ० नथमल टाटिया ने की। श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन और डॉ० विमलप्रकाश ने इसमे अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किये। बारह जनवरी को ही मध्याह्न मे दूसरा सत्र डॉ० जोहरापुरकर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। डॉ०

नथमल टाटिया, डॉ० नरसिंह मूर्ति और डॉ० कमलेशकुमार ने इस सत्र मे अपने गवेषणापूर्ण निबन्ध पढ़े।

तेरह जनवरी को प्रातःकाल तीसरा सत्र डॉ० दरबारीलाल कोठिया की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। इसमें भाग लेने के लिए डॉ० प्रेमसुमन जैन, डॉ० आर०सी० हिरेमठ, डॉ० नेमिचन्द जैन और डॉ० हरीन्द्रभूषण जैन को आमन्त्रित किया गया था। चारो ही विद्वान् जैन विद्या के अनेक अछूते प्रसगो को सामने लाये। मध्याह्न मे चौथे सत्र की अध्यक्षता डॉ० आर०सी० हिरेमठ को सौपी गयी। डॉ० बी०एस० कुलकर्णी, डॉ० आर०वी० शिरूर एव डॉ० विमलप्रकाश जैन इस सत्र के वक्ता थे।

पन्द्रह जनवरी को तीन सत्र हुए। प्रातः 9 बजे से पाँचवें सत्र मे श्री एस०पी० पाटिल ने अपना वक्तव्य डॉ० बी०एस० कुलकर्णी की अध्यक्षता मे प्रस्तुत किया। चाय के लिए अन्तराल देकर इसी सत्र मे डॉ० विलास सगवे की अध्यक्षता मे डॉ० एम०डी० वसन्तराज, डॉ० भानावत और श्रीमती शान्ता भानावत ने अपने आलेख पढे। मध्याह्न 2-30 से 4-00 तक सेमिनार का अन्तिम छठा सत्र हुआ। डॉ० नेमिचन्द जैन की अध्यक्षता मे होने वाले इस सत्र के वक्ता थे डॉ० विलास सगवे, डॉ० बी०के० खडबडी और डॉ० दरबारीलाल कोठिया।

इसी सध्या को 4 बजे से सेमिनार का समापन-सत्र सम्पन्न हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता करने के लिए चारुकीर्ति पण्डिताचार्यवर्य भट्टारक स्वामी मूडबिद्री से पधारे थे। श्रवणबेलगोल के चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी समापन सत्र में मुख्य अतिथि थे। दोनो शिक्षित और युवा भट्टारक अपने-अपने ढग से जैन सस्कृति की सेवा कर रहे हैं। उनके मन में असीम उत्साह है। धर्म प्रचार के लिए दोनो विदेश यात्राएँ भी कर चुके है। सेमिनार के समापन मे दोनो ने अपने उद्बोधन मे जैन सस्कृति की महानताओ को प्रतिपादित करते हुए इतिहास की शोध-खोज के लिए और उसके महत्त्व को रेखांकित करने के लिए अखिल भारतीय सेमिनार जैसे आयोजनो को सार्थक और सराहनीय प्रयास कहा। श्रवणबेलगोल के भट्टारक स्वामीजी ने सेमिनार के सयोजको और उसमें सम्मिलित होने वाले विद्वानो को उनके योगदान के लिए धन्यवाद दिया। डॉ० कलघटगी द्वारा आभार प्रदर्शन के उपरान्त यह सेमिनार समाप्त हुआ।

मैसूर विश्वविद्यालय में सेमिनार

मैसूर विश्वविद्यालय के जैनालॉजी और प्राकृत विभाग द्वारा 15 जनवरी से 17 जनवरी 1981 तक गोमटेश्वर पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस आयोजन के लिए भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक महोत्सव कमेटी और एस०डी०जे०एम० आई० मैनेजिंग कमेटी ने रुपये पाँच हजार का अनुदान दिया।

'सेमिनार ऑन गोमटेश्वर' के बैनर के अन्तर्गत इस सेमिनार का उद्घाटन कन्नड इन्स्टीट्यूट मानस गगोत्री मैसूर के सभागार मे 15-1-81 को प्रातः 10 बजे सम्पन्न हुआ। मैसूर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० के०एस० हेगडे की अध्यक्षता मे मुख्य अतिथि के आसन को श्रवणबेलगोल के स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी ने सुशोभित किया।

श्रवणबेलगोल पर, गोमटस्वामी पर, नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती पर और चामुण्डराय पर इस सेमिनार मे देश के प्रख्यात विद्वानो द्वारा 21 शोधपत्र पढ़े गये। इनमे अधिकांश शोधपत्र

उच्चस्तर के थे और उनमें श्रवणबेलगोल के इतिहास से सम्बन्धित अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर विचार किया गया था। जैनालॉजी और प्राकृत विभाग के अध्यक्ष श्री एम०डी० बसन्तराज ने विषय के अधिकारी विद्वानो को प्रेरित करके इस सेमिनार का आयोजन किया था। उन्होंने अपने वक्तव्य मे विद्वानो द्वारा प्रस्तुत किये गये विशिष्ट ऐतिहासिक प्रसगो को रेखांकित करते हुए सकल्प किया कि विश्वविद्यालय से शीघ्र इन शोधपत्रो का प्रकाशन किया जायेगा।

सेमिनार का समापन सत्र 17 जनवरी को उसी सभागार मे अच्छी उपस्थिति के बीच सम्पन्न हुआ। कन्नड के जाने-माने उपन्यासकार श्री टी०आर० सुब्बाराव ने इस सत्र मे मुख्य अतिथि की हैसियत से बोलते हुए कर्नाटक की शानदार जैन परम्पराओ का उल्लेख किया। उन्होने ज़ोरदार शब्दो मे आग्रहपूर्वक यह कहा कि श्रवणबेलगोल और प्राचीन जैन संस्कृति के सम्बन्ध मे शोध करने वाले विद्वानो को विषय से सम्बन्धित सारी सामग्री शोधपीठों और पुस्तकालयो मे उपलब्ध करायी जाना चाहिए। यह कार्य जितनी देर से होगा, जैन सस्कृति की उतनी ही हानि होगी। श्री सुब्बाराव का विद्वता से भरा हुआ गवेषणापूर्ण वक्तव्य इस सेमिनार की विशेष उपलब्धि कही जा सकती है।

कन्नड इन्स्टीट्यूट के निदेशक डॉ० एच०एम० नायक ने समापन सत्र की अध्यक्षता की और श्री बसन्तराज ने विद्वानो के प्रति आभार व्यक्त किया।

बंगलोर में संगोष्ठी

श्रवणबेलगोल पर सेमिनारो की इस शृखला मे एक सगोष्ठी बगलोर मे भी हुई। जैन मिशन बगलोर की ओर से आयोजित इस सगोष्ठी का उद्घाटन कन्नड के प्रसिद्ध विचारक, और अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त पत्रकार श्री खाद्रि शामण्णा द्वारा कराया गया। श्री शामण्णा ने उद्घाटन भाषण मे जोर देकर यह बात कही कि अहिंसा और अपरिग्रह जैन दर्शन के दो अनमोल सिद्धान्त है। इन्ही सिद्धान्तो के कारण बाहुबली मानव से 'भगवान' बन गये। श्री शामण्णा ने अपनी बात को आगे बढाते हुए कहा कि यह एक निर्विवाद सत्य है कि इन दोनो सिद्धान्तो की प्रासगिकता बाहुबली के समय मे जितनी थी, महावीर के काल मे उससे अधिक रही और आज के सन्दर्भ मे वह प्रासगिकता शतगुनी महत्त्वपूर्ण है। धर्म और सम्प्रदाय से अलग यही दो ऐसे सिद्धान्त हैं जो आज की त्रस्त और आतकग्रस्त मानवता को अभय प्रदान करके त्राण दे सकते है।

दो दिवसीय इस सेमिनार मे अनेक विद्वानो ने कन्नड, हिन्दी और अंग्रेजी मे अपने निबन्धो का वाचन किया।

जन-कल्याण के कार्य

बाहुबली कर्नाटक के लोक-देवता हैं। छोटे-बडे और ऊँच-नीच के भेदों से परे, जनमानस मे बसे हुए वे गोमटस्वामी, सबके आराध्य हैं। सब उनके भक्त हैं। बाहुबली की इसी लोकमान्यता के कारण प्रारम्भ से ही महोत्सव समिति का यह प्रयास रहा है कि जनकल्याण के कार्यों से ही इस सहस्राब्दि महोत्सव का कार्य प्रारम्भ किया जाये। समिति ने यह भी उपाय किया कि इस महोत्सव के निमित्त से, जन-मगल महाकलश की यात्रा मे, बाहुबली के भक्तो द्वारा जो श्रद्धा राशि एकत्र की गयी है उसका नियोजन भी, सदैव के लिए, जन-कल्याण की योजनाओ मे ही किया जाये। इस अभिप्राय की पूर्ति के लिए 'गोमटेश्वर जन-कल्याण ट्रस्ट' का गठन किया गया।

जन-मगल महाकलश की देशव्यापी यात्राओ से जो श्रद्धा राशि गोमटेश्वर के चरणो मे अर्पित करने के लिए सकलित की गयी थी, खर्च आदि निकालकर लगभग सोलह लाख की वह सम्पूर्ण राशि इस गोमटेश्वर जन-कल्याण ट्रस्ट को सौप दी गयी। ट्रस्ट के उद्देश्यो मे यह स्पष्ट प्रावधान किया गया कि श्रवणबेलगोल के आस-पास सार्वजनिक जन-कल्याण के कार्यो मे ही ट्रस्ट की समस्त आय का उपयोग किया जायेगा। वास्तव मे जन सेवा के लिए जैन समाज द्वारा किया गया यह एक महान् कार्य है।

जन-कल्याण की समग्र भावनाओ को साकार करने के लिए महोत्सव समिति ने श्री एच०एन० राजेन्द्रकुमार के सयोजकत्व मे 'जन-कल्याण समिति' का गठन किया। इस समिति को महोत्सव के अवसर पर सार्वजनिक हित के कार्यो के लिए दो लाख रुपये का बजट प्रावधान किया गया। इस कार्यक्रम के अनुसार नेत्र चिकित्सा शिविर के लिए बावन हज़ार, स्थानीय अस्पताल मे ऑपरेशन थियेटर के लिए तीस हज़ार, तथा सामूहिक चिकित्सा शिविर के लिए दस हज़ार की राशि उपलब्ध करायी गयी। साधनहीन ग्रामीणो को आजीविका के साधन उपलब्ध कराने के लिए तीस हज़ार, नारियल के पौधे बाँटने के लिए दस हज़ार और धोबीघाट के निर्माण के लिए पन्द्रह हज़ार की राशि रखी गयी। स्कूल मे फर्नीचर तथा शिक्षण सामग्री के बीस हज़ार का प्रावधान था। इसके अतिरिक्त भी अन्य जनोपयोगी कार्यों के लिए तैंतीस हज़ार की राशि समिति के विवेकानुसार खर्च करने के लिए छोड दी गयी थी। समिति ने आवश्यकतानुसार इस राशि का उपयोग करके पूरे महोत्सव के दौरान अनेक लोकोपकारी कार्य किये।

नेत्र-चिकित्सा शिविर

जन-कल्याण कार्यों मे सर्वप्रथम नेत्र-चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इसके पीछे संयोजको के मन मे यह बात थी कि यदि कुछ दृष्टिहीन जनो को इस शिविर के माध्यम से दृष्टि प्रदान की जाये और उस नव-प्राप्त दृष्टि से वे लोग गोमटस्वामी के मस्तकाभिषेक का अवलोकन कर सकें, तो महोत्सव समिति के लिए यह एक आनन्ददायक उपलब्धि होगी।

बारह नवम्बर 80 को मध्याह्न साढे तीन बजे गोमटनगर होस्टल बिल्डिंग में एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी का आशीर्वाद प्राप्त करके शिविर का उद्घाटन कराया गया। केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री श्री शंकरानन्द ने अपने उद्घाटन भाषण मे नेत्र-शिविर जैसे परोपकारी कार्य से महोत्सव का प्रारम्भ करने के लिए महोत्सव समिति की सराहना करते हुए, उत्सव के लिए सफलता की कामना व्यक्त की। कर्नाटक के स्वास्थ्य मन्त्री श्री अब्दुल समद और भूतपूर्व मन्त्री श्री एच०सी० श्री कण्ठैया, इन दोनो मुख्य अतिथियो ने शिविर सयोजन के पीछे अनुकम्पा और परहित की भावना का आदर करते हुए सभी रोगियो को निर्दोष दृष्टि प्राप्त करने के लिए शुभ कामनाएँ दी। इस उद्घाटन सभा के अध्यक्ष साहु श्रेयासप्रसादजी ने अतिथियो के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि परोपकार ही भगवान् महावीर द्वारा उपदिष्ट जीवन पद्धति का आधार है। आज परोपकार के ही एक प्रसशनीय आयोजन से सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना महोत्सव का प्रारम्भ करके, भगवान् महावीर और बाहुबली स्वामी के उसी आदर्श के प्रति हम अपनी आस्था का प्रकटीकरण कर रहे हैं।

कस्तूरबा मेडिकल कॉलेज मणीपाल के नेत्र चिकित्सा विभाग का सहयोग प्राप्त करके, मस्तकाभिषेक के तीन मास पूर्व, 10-11-1980 से 21-11-1980 तक, श्रवणबेलगोल मे मेडिकल कॉलेज के प्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ डॉ० पी०एन० श्रीनिवासराव के सहयोग से यह शिविर आयोजित किया गया। दस और ग्यारह नवम्बर को डॉक्टरो की टीम ने आस-पास के ग्यारह ग्रामो मे जाकर कुल 3970 नेत्र-रोगियों का परीक्षण किया। इनमे मे अधिकाश रोगियो को औषधियाँ तथा चश्मे वितरित किये गये। 940 रोगियों को चश्मे दिलाये गये।

शिविर मे 383 नेत्र-रोगियो का ऑपरेशन किया गया। इनमे मोतियाबिन्द के 307 ऑपरेशन हुए। शेष 76 ऑपरेशन आँखो की अन्य खराबियों के लिए किये गये। जनकल्याण समिति ने पूरे शिविर काल तक इन सब रोगियों और उनके सहायक जनों के ठहरने और भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था की। कुछ गरीब रोगियो को वापस लौटने के लिए मार्ग व्यय भी दिया गया। समिति ने शिविर पर लगभग इकतालीस हज़ार रुपये व्यय किये।

कस्तूरबा मेडिकल कॉलेज मणीपाल के, तथा कर्नाटक स्वास्थ्य विभाग के अनेक सेवाभावी डॉक्टरो ने इस शिविर को सफल बनाने मे सहयोग दिया। इनमे प्रमुखत. डॉ० पी० एन० श्रीनिवासराव, डॉ० टी० एन० मुदप्पा, डॉ प्रशान्तकुमार शेट्टी, डॉ० मेरी बर्गीज, डॉ० एस० एम० सिंह, डॉ० एस० वी० महेश, डॉ० नेल्सन जेसुदासन, डॉ० लांबे और डॉ० शस्यलता का योगदान उल्लेखनीय रहा। जन-कल्याण समिति के सयोजक श्री एच० एन० राजेन्द्रकुमार का परिश्रम और विजय क्लिनिक मेगलोर के डॉ० पी० एन० आरिगा तथा हासन के जिला स्वास्थ्य अधिकारी का बहुविध सहयोग शिविर की सफलता मे विशेष रूप से सहायक हुआ।

गरीबों के लिए वस्त्र

जन-कल्याण योजना के अन्तर्गत ही श्रवणबेलगोल ग्राम के अल्प आय समूह वाले सभी निवासियो को पहिनने के लिए वस्त्र वितरण कराने की योजना कार्यान्वित की गयी। कर्नाटक के मुज़रई विभाग के मन्त्री श्री सुधीन्द्रराव कस्बे और उनकी धर्मपत्नी के द्वारा मठ मन्दिर मे से बारह फरवरी 81 को प्रातःकाल वस्त्र वितरण का यह कार्य सम्पन्न कराया गया। उस दिन

ग्राम के सभी विपन्न स्त्री-पुरुषों तथा बालक-बालिकाओ को वहाँ बुलाकर स्त्रियों को साडी, पुरुषो को धोती तथा कमीज़ का कपडा और बालकों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप वस्त्र दिये गये। उस दिन लगभग एक हज़ार व्यक्ति इस आयोजन से लाभान्वित हुए। यह सख्या श्रवणबेलगोल की कुल जन सख्या का पंचमांश है।

वस्त्र-वितरण की योजना जन-कल्याण समिति के निर्धारित कार्यक्रमो में नही थी। इसलिए समिति के बजट मे इसका कोई प्रावधान भी नही था। श्रेयांसप्रसाद अतिथि निवास मे बैठे कुछ लोगो के मन मे एक दिन यह विचार उदित हुआ और तत्काल उसे कार्यान्वित करने की योजना बन गयी। इस योजना पर पैंतीस हज़ार रुपया व्यय हुआ। महत्त्व की बात यह रही कि यह राशि न तो मठ को खर्च करना पडी और न ही महोत्सव समिति को यह भार उठाना पडा। साहु श्रेयांसप्रसादजी की पहल पर वही उसी समय इस राशि की पूर्ति हो गयी।

बेरोजगारों के लिए

जैसे हर ग्राम मे होते हैं, श्रवणबेलगोल मे भी अनेक ऐसे सक्षम नव-जवान थे जिनके पास आजीविका का कोई साधन नही था। यदि शक्ति का सम्यक् नियोजन नही किया गया तो मेले के अवसर पर यह तरुणाई समाज विरोधी कार्य-कलापो मे भी लग सकती थी, भटक भी सकती थी। श्री एम० सी० अनन्तराजैया के प्रस्ताव के अनुसार, ग्राम के ऐसे सभी युवको को मेले मे चाय, काफी, इडली-डोसा आदि बनाकर बेचने की प्रेरणा दी गयी। जन-कल्याण समिति ने उन्हे एक-एक हजार रुपये की ब्याज रहित पूंजी उपलब्ध करायी। महोत्सव समिति ने उन्हे इस रोजगार की आवश्यक अनुमति और स्थान आदि की सुविधाएं देकर प्रोत्साहित किया। बाद मे यह पूंजी उन पुरुषार्थी युवको को पुरस्कार स्वरूप दे दी गयी। इसे वापस वसूल नही किया गया।

अन्य कार्य

जन-कल्याण समिति द्वारा प्रतिपादित कार्यों के अलावा भी इस महोत्सव मे अनेक ऐसे कार्य हुए है जिन्हे जन-कल्याण के स्थायी योगदान के रूप मे इस महोत्सव की उपलब्धि माना जा सकता है। इनमे अनेक अतिथि-गृहो का निर्माण, आयुर्वेद चिकित्सालय, बस-स्टेण्ड, चामुण्डराय उद्यान, मजुनाथेश्वर कल्याण-मण्डप और शान्तिप्रसाद कला-मन्दिर आदि स्थायी कार्यों की गणना की जा सकती है।



क्षण-क्षण के आलेख

राज्यस्तरीय समिति की बैठक

पिछले दो वर्ष मे बुलाई गयी राज्यस्तरीय समिति की सात मे से पाँच बैठके बगलोर मे 'विधान-सौध' मे ही सम्पन्न होती रही हैं। आज दूसरी बार यह समिति श्रवणबेलगोल मे मिल रही है। समिति की यह अन्तिम बैठक है। श्रवण-बेलगोल मे इस बैठक का आयोजन इस बात का सकेत है कि कर्नाटक शासन पूरे सौजन्य और पूरी उदारता के साथ इस महोत्सव की सफलता के प्रति सक्रिय है। इस समिति के सदस्य होने के नाते दिगम्बर जैन समाज के प्राय सभी राष्ट्रीय स्तर के सस्थानो-संगठनो के कर्णधार भी आज यहाँ उपस्थित हैं। जैन आचार्यों और साधुओ का भी बडी सख्या मे पदार्पण यहाँ हो चुका है। इस प्रकार मैं देखता हूँ कि साधु और श्रावक, शासन और समाज सब मिलकर उन पुण्य क्षणो को अधिक से अधिक प्रभावक, अधिक से अधिक आनन्दमय और अधिक से अधिक सफल बनाने के लिए सकल्प-बद्ध होकर सलग्न हो गए हैं। आज श्रवणबेलगोल का माहौल यह घोषित करता-सा लगता है कि आने वाले दिनो मे यह ऐतिहासिक सहस्राब्दि महोत्सव सफलता के जो मानदण्ड बनाने जा रहा है, आने वाली शताब्दी के लिए भी वे ऐतिहासिक ही सिद्ध होंगे।

□

बगलोर में यात्रियों का सरस आतिथ्य

उत्तर भारत से आनेवाले, और विशेषकर रेलमार्ग से आनेवाले, अधिकाश यात्री बगलोर होकर श्रवणबेलगोल आ रहे है। स्वाभाविक ही उन्हें बगलोर मे घूमने-फिरने अथवा विश्राम करने के लिए कुछ समय ठहरना पडता है। बगलोर निवासी उत्तर भारतीय दिगम्बर जैनो ने इन यात्रियो के ठहराने की बगलोर मे अच्छी व्यवस्था बनायी है। लगभग एक लाख रुपया व्यय करके, और अच्छे सेवाभावी स्वयसेवको का सहयोग प्राप्त करके, इस व्यवस्था को यात्रियो के लिए सुविधाजनक और अधिक से अधिक सम्मानपूर्ण बनाने का प्रयास किया गया है। हजारों यात्रियो ने इस सुविधा का लाभ लिया। आते समय, और लौटते समय भी।

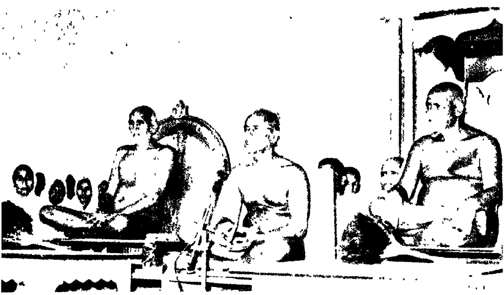
□



36 गरीबो को वस्त्र-वितरण

37 वस्त्र प्राप्त करने के लिए ग्रामीण महिलाओ की भीड





40 आचार्य विमलसागरजी और आचार्यरत्न देशभूषणजी के मध्य बोलते हुए एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी

41
ज्ञान ध्यान और जप तप में ही
मुनियों का समय व्यतीत
होता था



42
परस्पर विचार विमर्श करके
इन धर्म-गुरुओं ने श्रमण
प्रस्तावना तैयार की
परिषद' की





38

अपने गुरु आचार्यरत्न
देशभूषणजी महाराज को
सहारा देकर मंच पर जाते हुए
एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी



39 प्रवचन करते हुए पूज्य एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी, साथ में विराजमान हैं
आचार्य विमलसागरजी, आचार्य कुन्थुसागरजी और आचार्य सुमतिसागरजी



43 केन्द्रीय सचारमन्त्री श्री सी एम स्टीफन द्वारा गोमटेश्वर का गुणानुवाद

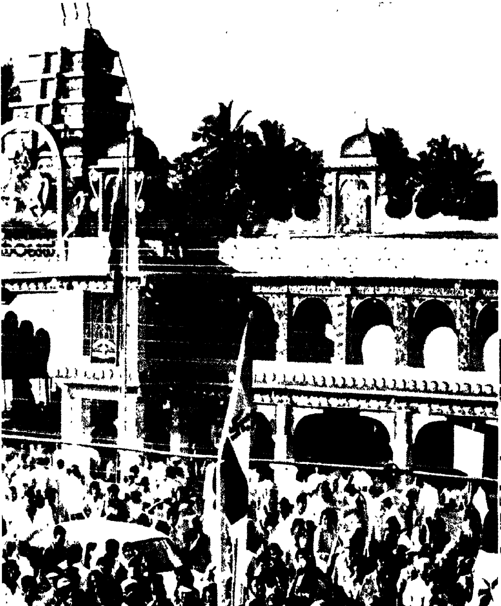
44 श्री स्टीफन के भाषण का कन्नड अनुवाद प्रस्तुत करते हुए श्री विश्वमैन





45 मुख्यमन्त्री श्री आर गुडूराव के साथ परामर्श



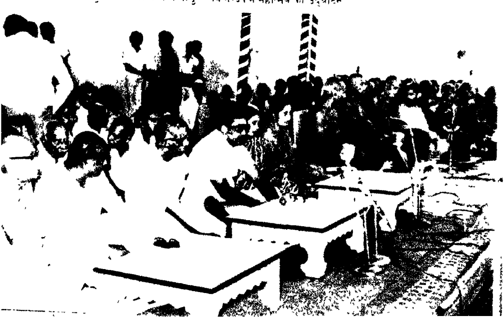




47

श्री आर गुंडूराव और
श्री सी एम स्टीफन द्वारा
दीप प्रज्वलित कर
महोत्सव का शुभारम्भ

48 आचार्यों, मुनियों के सान्निध्य में चामुण्डराय मण्डप में महोत्सव का उद्घाटन



मेले में साधु समुदाय

इस महोत्सव के निमित्त से श्रवणबेलगोल को साधुओ के दीर्घकालीन समागम का सौभाग्य मिला। समारोह के दो वर्ष पूर्व, 1979 मे आचार्यश्री धर्मसागरजी के संघस्थ मुनिश्री दयासागरजी अपने सघ के साथ यहाँ पधारे और यही उन्होने चातुर्मास व्यतीत किया। उनके साथ अभिनन्दनसागरजी, वृषभसागरजी, जी रयणसागरजी और विजयसागरजी ये चार मुनिराज और थे। यह सघ लगभग नौ माह तक क्षेत्र पर रहा, इससे प्रभावना तो हुई ही, साथ ही दिगम्बर साधुओ की आहार, वैयावृत्त आदि की भावना भी लोगो मे पुष्ट हुई। मुनि दया-सागरजी के इस क्षेत्र पर रहने से दिगम्बर साधु की चर्या और जीवन प्रक्रिया का लोगो को अभ्यास हुआ और उनके प्रति भक्ति और आदर का वातावरण बना। वह अच्छे साधनानिष्ठ साधुओ का सघ था। भट्टारक स्वामीजी ने बड़े उत्साह से उनका स्वागत किया और पूरे समय उनकी भक्ति वन्दना आदि करते रहे। बाद मे पूरे कर्नाटक मे उस सघ के भ्रमण की व्यवस्था में भी मठ का विशेष योगदान रहा।

मेले के अवसर पर श्रवणबेलगोल मे पधारने वाले मुनिसघो के स्वागत की समादर पूर्ण व्यवस्था की गयी थी। गोमटेश विद्यापीठ के प्रधानाध्यापक श्री प्रभाकर शास्त्री, विद्यापीठ और सस्कृत विद्यालय के विद्यार्थियो का जुलूस लेकर मुनियो के स्वागतार्थ जाते थे। हाथो मे जैनध्वज लिये हुए, ब्रह्मचारी वेश मे इन बालको की पक्तियाँ चलती थी, उनके आगे कर्नाटक की पारम्परिक वेशभूषा मे शहनाई वादक चलते थे। मठ की ओर से विद्यापीठ व्यवस्थापक श्री रविराज को स्वामीजी ने इसी कार्य के लिए नियुक्त कर रखा था। मठ मन्दिर से भी एक पण्डित, मन्दिर का कलश लेकर स्वागत जुलूस मे जाते थे। जहाँ तक सम्भव होता था स्वागत के लिए भट्टारक स्वामीजी स्वय भी नगर के बाहर तक पहुँचते थे। लगभग एक माह पूर्व से यह व्यवस्था प्रभावशील थी। एक विद्यार्थी को साइकिल दी गयी थी जो उनके आगमन के समाचार लाकर देता था, और ठीक समय पर साधु सघ की अगवानी के लिए यह जुलूस नगर की सीमा पर उपस्थित हो जाता था। इस प्रकार मेला-नगर मे सयमी साधुओ का स्वागत सयम और ज्ञान के शिक्षार्थी ब्रह्मचारियो द्वारा होता था।

आचार्य संघ का स्वागत

आज छब्बीस जनवरी है, भारत का गणतन्त्र दिवस। सबेरे-सबेरे शहनाइयो की गूँज और मृदगम् की थाप बहुत कर्ण-प्रिय लग रही है। विद्यापीठ के ब्रह्मचारियों और अन्य बालको की चहल-पहल मठ-मदिर के सामने प्रारम्भ हो गयी है। मठ मे पहुँचने पर पता लगता है कि यह तैयारी गणतन्त्र दिवस के उत्सव के लिए नही अपितु भारतगौरव आचार्यरत्न श्री देशभूषणजी के स्वागत के लिए हो रही है। कल सत्ताइस जनवरी को महोत्सव की राज्यस्तरीय समिति की बैठक श्रवणबेलगोल में आयोजित है, उस निमित्त भी बाहर से अनेक लोग नगर मे आ

चुके हैं। देखते ही देखते सैकडो लोगो की शोभायात्रा आचार्य सघ के स्वागत के लिए चल पड़ी है।

लगभग नब्बे वर्षीय आचार्य देशभूषणजी दिगम्बर साधु सम्प्रदाय के वरिष्ठतम आचार्य हैं। एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी के वे दीक्षा गुरु है। स्वागत के लिए स्वय एलाचार्यजी अपने सघ सहित उपस्थित हो रहे हैं। भट्टारक स्वामीजी तथा अन्य अनेक गण्यमान्य व्यक्ति इस स्वागत बेला पर नगर के बाहर आचार्यश्री को नमन करते हैं और भक्तिपूर्ण मान-प्रतिष्ठा के साथ, उस जुलूस के साथ आचार्यश्री का सघ नगर मे प्रवेश कर रहा है।

आचार्य विमलसागरजी का पदार्पण

अभी परसो हमे आचार्य देशभूषणजी के विशाल सघ का स्वागत करने का अवसर मिला था। आज अट्ठाइस जनवरी को आचार्य विमलसागरजी का सघ नगर मे पधार रहा है। उसी पारम्परिक पद्धति से, वैसी ही भक्ति और उत्साह के साथ, इस सघ का भी नगर प्रवेश हुआ है। स्वागत समारोह के लिए जो निमन्त्रण-पत्र वितरित किये गये है उनमे आचार्य विमल सागरजी को 'सन्त-शिरोमणि' 'परम तपस्वी' आदि सम्बोधनो से विभूषित किया गया है।

विद्यापीठ के बालको की टोली के साथ, मगल कलश और मगल वाद्यो से युक्त शोभायात्रा मे, नगर के बाहर पहुँचकर भट्टारक स्वामीजी, महोत्सव मे पहुँचने वाले सभी मुनि सघो का इसी पद्धति से स्वागत कर रहे हैं। कभी-कभी दूसरे सघो के ऐलक-क्षुल्लक और आर्यिका माताएँ भी आचार्य सघो के स्वागत के लिए पहुँच जाते है। आचार्य कुल की दृष्टि से और वरिष्ठतम क्रम से इस परस्पर विनय का निर्वाह देखना बहुत अच्छा लगता है।

अभी तक नगर मे कोई भी मण्डप बनकर तैयार नही हुआ, इसलिए इन मुनिसघो की स्वागत सभा भण्डार बस्ती मे आयोजित की जाती है।

गत वर्ष 19 जुलाई को एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी श्रवणबेलगोल पधारे थे। चातुर्मास मे उनके यहाँ विराजने से धर्म प्रभावना होती रही। महोत्सव के समय जो साधु समुदाय यह एकत्र हुआ उसका विवरण अलग से दिया गया है। उत्सव समाप्त होने पर अधिकाश साधु सघ यत्र-तत्र बिहार कर गये। परन्तु सन्त-समागम के सदर्भ मे श्रवणबेलगोल का भाग्य अभी शेष नही हुआ था। अपने सघ सहित आचार्य विमलसागरजी महाराज, एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी और आचार्य कुन्थुसागरजी महाराज कुछ समय तक यहाँ विराजते रहे। इनके अतिरिक्त कुछ आर्यिका माताएँ भी कुछ समय तक रही। इस प्रकार चालीस पिच्छीधारियो ने 1981 का चातुर्मास श्रवणबेलगोल मे ही व्यतीत किया। यह भट्टारक स्वामीजी की प्रबन्ध पटुता और मुनिभक्ति का चमत्कार ही कहा जाना चाहिए कि इस छोटे से ग्राम मे इतने बडे साधु समुदाय के महीनो तक ठहरने पर भी, उनकी सारी व्यवस्था अपने आप बनती चली गयी। उसमे कभी कोई कमी दिखाई नही दी। दूर दूर से आकर सैकड़ो यात्री इन साधुओ की की सेवा करते थे। प्रायः कई दिन चौके लगाने के बाद लोगो को आहार दान का सौभाग्य प्राप्त होता था।

त्यागी सेवा-समिति का योगदान

त्यागी सेवा-समिति की सेवाएँ साधुओ की व्यवस्था मे सराहनीय रही। समिति के सयो-

जक श्री एम. सी. अनन्तराजैया के मार्गदर्शन में इस समिति के प्रायः सभी सदस्यो ने अपना अपना दायित्व उत्साह और भक्ति-भावना के साथ निभाया। सर्व श्रीमती कौशिल्या अनन्त-राजैया, एम० ए० शोभा, जी० जयलक्ष्मनम्मा, जी० एल० लीला और श्रीमती सुमगलम्मा ने भोजनशाला की व्यवस्था सम्हाल रखी थी। इन महिलाओ ने त्यागी व्रतियो के भोजन का उत्तम प्रबन्ध किया और मुनिराजो के आहार के लिए चौका लगाने वाले श्रावको को अपना पूरा सहयोग और सुविधाएँ उपलब्ध करायी। सर्वश्री एम० डी० राजप्पा, एन० वी० वासन्ना, और भूपाल बेरीगली ने भण्डार तथा आवास की जिम्मेदारी सम्हाली। श्री भुजप्पा बेरीगली और शान्तिनाथ हातपेठ केशलोचन, उपदेश सभाओ, और दीक्षा समारोहो आदि की व्यवस्था देखते रहे। श्री के० एस० ब्रह्मरायप्पा और जयकुमार ने कार्यालय सचालित किया। कार्यालय मे समस्त मुनिसघों के बारे मे सारी सूचनाएँ सदा उपलब्ध रहती थी और मेले मे उन सबकी अलग-अलग सख्या, जनता की सूचनार्थ एक बोर्ड पर अकित करके रखी जाती थी। खेलां के स्कोर बोर्ड की तरह लोग बडी उत्सुकता से बोर्ड की निरन्तर बढती हुई सख्याओ को देखते और प्रसन्न होते थे।

श्री पद्मनाभैया चामुण्डराय भवन मे कमेटी कार्यालय मे उपस्थित रहकर समिति सम्बन्धी कार्य देखते थे। सर्वश्री बाबूराज केमलापुरी, सुरेन्द्र इंगले, मानिकचन्द गाँधी, सगरी नाग-राजप्पा और पी० के० जैन मुनियो के स्वागत की व्यवस्था तथा उनके स्वास्थ्य की सार सम्हार का काम देखते थे। आवश्यकता पडने पर साधुओ को तत्काल अनुभवी वैद्यों का परामर्श और आयुर्वेद की शुद्ध काष्ठिक या रसायनिक औषधियाँ उपलब्ध करायी जाती थी। श्रावक जन आहार देते समय भोजन के साथ अनुकूलता अनुसार उन औषधियो का प्रयोग करते थे।

समिति के सदस्य श्री नीरज जैन ने बहुत पहले से जैन पत्रो मे सूचनाएँ प्रकाशित करके वहाँ पधारने वाले सघो की जानकारी एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया था। पूरे महोत्सव काल मे जो भी पिच्छीधारी साधक श्रवणबेलगोल पधारे, उन सबके जीवन वृत्त उन्होने एकत्र कराये। इस विवरण मे सभी साधको के पूर्व नाम, माता-पिता, जन्म-तिथि, शिक्षा तथा दीक्षा-तिथि और दीक्षागुरु आदि सारे तथ्यो का समावेश किया गया। सभी के अलग-अलग फोटो-ग्राफ्स भी प्राप्त कराकर रखे गये है।



सभा-मण्डप

चामुण्डराय मण्डप

चामुण्डराय मण्डप इस मेले की शोभा बढाने वाली सुन्दरतम सरचना थी। दूर से ही यात्री को आकर्षित कर लेने वाले इस मण्डप का विस्तार 350 × 200 फुट था। इसमे लगभग पच्चीस हजार लोगो के बैठने की व्यवस्था थी। मण्डप बनाने के लिए मिडिल स्कूल का खुला मैदान लिया गया था। उससे लगी हुई कुछ भूमि इस उपयोग के लिए किराये पर ली गयी। कमेटी को तीन हजार चार सौ रुपये उस भूमि का किराया देना पडा। प्रवेश द्वार से मच तक चौड़ा रास्ता था तथा व्यवस्था की दृष्टि से बीच-बीच मे कुछ मार्ग छोडे गये थे। इस मण्डप मे पुरुषो और स्त्रियो के बैठने की अलग अलग व्यवस्था थी। स्वयसेवक निरन्तर मच और पण्डाल की व्यवस्था करते रहते थे। सबसे आगे, मच के नीचे एक बडा गढ्ढा जैसा बनाया गया था जिसमे ध्वनि यन्त्र, वीडियो कैमरा, आकाशवाणी तथा इस प्रकार कुछ अन्य समाचार एजेंसियो के यन्त्र लगाये गये थे। सिने फोटोग्राफर तथा अन्य फोटोग्राफर भी अपने उपकरणो और सहायको के साथ इसी स्थान पर बिठाये जाते थे। इस प्रकार इन सबकी सक्रिय उपस्थिति भी पण्डाल मे दूर तक बैठे दर्शको और स्रोताओं को बाधा नही दे पाती थी। सामान्यत उपस्थित जन समुदाय के और मच के बीच कोई व्यवधान नही होता था। पण्डाल की दाहिनी ओर कुर्सी-टेबिल देकर पत्रकारो, कैमरामेनो, विदेशी अतिथियो और अधिकारियों आदि के बैठने का प्रबन्ध किया गया था। विशिष्ट राजपुरुषो के आगमन पर उनका स्टॉफ और सुरक्षा अधिकारी भी इसी स्थान पर बिठाये गये।

चामुण्डराय मण्डप मे प्रवेश के लिए तीन मजिला सुन्दर प्रवेश द्वार बनाया गया था। ऊपर तीसरी मंजिल पर नौ कोष्ठक बनाकर उनमे बडे-बड़े चित्र स्थापित किये गये थे। बीच के सबसे बडे कोष्ठक मे वीर चामुण्डराय का चित्र था। दाहिनी ओर क्रमशः धर्मचक्र, नेमिचन्द्राचार्य को नमन करते हुए चामुण्डराय, गुल्लिका अज्जी और गोमटेश्वर भगवान् के चामरधारी यक्षो की झाकियाँ थी। इसी प्रकार बायी ओर चामरधारी यक्ष, कुष्माडिनी महादेवी तथा मूर्ति निर्माण मे सलग्न शिल्पी रूपकार के साथ चामुण्डराय को चित्रित किया गया था। अन्तिम कोष्ठ मे पुनः धर्मचक्र स्थापित था। इस सर्व-सुविधा-सम्पन्न, सुदर्शन मण्डप की डिजाइन स्वयं चारुकीर्ति स्वामीजी ने तैयार की थी। उसके निर्माण एवं सजावट में भी स्वामीजी ने प्रत्यक्ष मार्गदर्शन दिया था।

9 फरवरी को उद्घाटन महोत्सव से लगाकर पूरे मेला काल में चामुण्डराय मण्डप में प्रतिदिन प्रातःकाल, दोपहर और रात्रि को कुछ न कुछ कार्यक्रम चलते ही रहते थे। घड़ी के काटों से बँधे हुए एक दिन मे आठ-दस तक कार्यक्रम इस मंच पर हुए। मध्याह्न मे दो बजे से प्रायः सभी मुनि आर्यिकाएँ इस मण्डप के मंच पर विराजते थे। वही प्रतिदिन उपदेश, केशलुच और दीक्षा आदि समारोह होते थे। सामाजिक और धार्मिक संस्थाओ के अधिवेशन,

विद्वानों के भाषण, काव्यपाठ और अन्य अनेक कार्य-कलाप वहा प्राय: होते ही रहते थे।

भद्रबाहु मण्डप

विंध्यगिरि की तलहटी मे पीछे वाली रोड पर बना हुआ भद्रबाहु मण्डप 150 फुट चौड़ा और 200 फुट लम्बा था। इसमे विछाई बिछाकर भूमि पर ही लगभग दस-बारह हज़ार व्यक्तियो के बिठाने की क्षमता थी। इस मण्डप के मंच पर प्रकाश और ध्वनि नियन्त्रण बड़ी सूझ-बूझ के साथ नवीनतम उपकरणों द्वारा किया था। वास्तव मे रंगमचीय प्रदर्शनो के लिए ही इस मण्डप का निर्माण हुआ था। इस मण्डप में चौदह से चौबीस फरवरी तक लगातार अनेक सास्कृतिक कार्यक्रमो, नाटक-प्रहसन, यक्षगान, नृत्य-नाटिकाओ, और सगीत कार्यक्रमो की प्रस्तुति होती रही। इसी मण्डप मे प्रात: साढे सात बजे से मुनिराजो के नियमित प्रवचन होते थे। आम सडक से दूर, पर्वत की तलहटी के कारण भद्रबाहु मण्डप का वातावरण अपेक्षाकृत शान्त बना रहता था।

विन्ध्यगिरि पर जाने के लिए चामुण्डराय भवन के सामने एक सुन्दर और सज्जित प्रवेश द्वार था। इस द्वार पर ऊपर गोमटस्वामी का बहुत बडा चित्र सजाया गया था जो बहुत दूर से दिखाई देता था। द्वार के भीतर पहुँचते ही एक बडे एनक्लोजर में यात्रियो के जूते-चप्पल रखने की व्यवस्था थी। इस एनक्लोजर का काम स्वयसेवक ही देखते थे। वे यात्रियो के जूते उठाकर रखते, उन्हे नम्बर की स्लिप देते और लौटने पर उनके जूते-चप्पल वापिस करते थे। इस सेवा के लिए कोई चार्ज नही लगत ाथा।

इन मण्डपो के निर्माण में चार ठेकेदारों का योगदान था। चामुण्डराय और भद्रबाहु मण्डप दोनो का निर्माण मेरठ के ठेकेदार गिरधारीलाल केदारनाथ सिंघल ने किया। इस पर एक लाख रु० खर्च आया। प्रवेश द्वारों का निर्माण शिमोगा के कलाकार श्री नरसिंह पै ने तीस हजार के खर्च से किया। लगभग इतने ही खर्च से हासन के ठेकेदार एच० पी० जयचन्द्रा ने दोनो मण्डपो के मच बनाये। शिमोगा के श्री एच० पी० गणेश ने विद्युत-सज्जा से इन दोनो पण्डालो को अलकृत किया, जिस पर तेइस हज़ार रुपये व्यय हुए। विन्ध्यगिरि के प्रवेश द्वार के निर्माण का खर्च भी इसमे शामिल है। दोनो मण्डपो मे प्रात:काल से लगातार देर रात तक कोई-न-कोई कार्यक्रम चलते ही रहते थे।

सूचनाओं का प्रसारण

चामुण्डराय मण्डप कार्यक्रमों और सामान्य सूचनाओं के प्रसारण के लिए एक तरह का 'प्रसारण कक्ष' भी था। मण्डप की ध्वनि-व्यवस्था इतनी उत्कृष्ट थी और उसमे ऐसा प्रावधान किया गया था, कि मण्डप मे तो वह प्रसारण अत्यन्त स्पष्ट सुनाई देता ही था, परन्तु मण्डप के बाहर पूरे मेला-नगर मे, दूर कॉलेज छात्रावास तक, और ऊपर दोनों पर्वतो पर भी, उसे स्पष्ट सुना जा सकता था। अनेक जगह ऊँचे वृक्षो पर प्रसारण यन्त्र बाँधकर यह प्रयत्न किया गया था।

यह व्यवस्था मच के कार्यक्रमों को दूर-दूर तक प्रसारित करने के लिए तो थी ही, एक यह भी उद्देश्य था कि जब कभी अन्य कोई भी आवश्यक सन्देश, यात्रियों तक पहुँचाना हो तो

उन्हें इस मंच से प्रसारित कर देने पर एक साथ पूरे मेले के यात्रियो तक पहुँचाया जा सके। यात्रियो को समय-समय पर आवश्यक सूचनाएँ देते रहने के लिए एक विशेष वाहन की भी व्यवस्था की गयी थी। एक कार पर भगवान बाहुबली का चित्र और ध्वनि प्रसारण यन्त्र लगाया गया था। कार मे बैठकर स्वय-सेवक पूरे मेला-नगर मे आवश्यक सूचनाएँ प्रसारित करते रहते थे। ये प्रसारण कन्नड, हिन्दी और अग्रेजी मे होते थे। इस प्रकार यात्रियो को जो भी सूचनाएँ देना होती थी वे एक घण्टे के भीतर सभी ग्यारह उपनगरो सहित पूरे मेला-नगर मे प्रसारित हो जाती थी। प्रत्येक यात्री उनसे अवगत हो जाता था। सूचना-प्रसारण समिति की एन. ई. एक्स 1099 नम्बर की वह नीली कार सामने की ओर अकित जैन प्रतीक और कमल के कारण दूर से ही पहिचान मे आती थी।

प्लास्टिक पेपर के तिरगे तोरण बम्बई से छपकर आये थे। बीचो-बीच गोमटेश्वर के रेखाचित्र के साथ इन पर सहस्राब्दि का सूचक '1000' का अक प्रमुखता से लिखा गया था। हजारो की सख्या मे इन तोरणों के बदनवार दोनो मण्डपो मे तथा मेले मे अन्य प्रमुख स्थानो पर लगाये गये थे।



उद्घाटन-समारोह

9 फरवरी 1981 को महोत्सव का उद्घाटन तथा एक माह तक भरने वाले मेले का प्रारम्भ होने जा रहा था। उद्घाटन का समारोह तो अतिथियो के आने पर प्रात: 9 बजे प्रारम्भ होना था, परन्तु मगल अनुष्ठान के रूप मे मन्त्र-निष्ठ विधि से वह समारम्भ चामुण्डराय मण्डप के मच पर बनाई गयी भगवान् की वेदी पर उस दिन ब्राह्म मुहूर्त मे ही प्रारम्भ हो गया। उस दिन प्रतिष्ठाचार्यो और पुजारियो ने कल्याणी सरोवर का पवित्र जल लेकर पूरे नगर की परिक्रमा करते हुए चामुण्डराय मण्डप मे प्रवेश किया। वहाँ भगवान् जिनेन्द्र के समक्ष पच-कल्याणक के प्रारम्भिक विधि-विधान प्रारम्भ करते हुए महामस्तकाभिषेक का वास्तविक मगलाचरण किया गया। उन्ही कलशो को लेकर पाँच पण्डितो का समूह विन्ध्यगिरि पर्वत पर गया जहाँ उन्होंने महोत्सव के शुभारम्भ के लिए निर्धारित मगल-मुहूर्त मे गोमटेश्वर भगवान् के चरणो का अभिषेक करके इस ऐतिहासिक महोत्सव का विधिवत् समारम्भ किया।

सहस्राब्दि महोत्सव के औपचारिक उद्घाटन के लिए कर्नाटक के मुख्यमन्त्री श्री आर० गुण्डूराव, श्रीमती वरलक्ष्मी गुण्डूराव, केन्द्रीय सचार मन्त्री श्री सी० एम० स्टीफन और कर्नाटक के सहकारिता मन्त्री श्री एच० सी० श्रीकण्ठैया का प्रात. ठीक साढे आठ बजे श्रवण-बेलगोल आगमन हुआ। हेलीपेड पर अनेक लोगो के साथ साहु श्रेयासप्रसादजी ने अतिथियो का स्वागत किया। तत्काल ही आचार्यरत्न श्री देशभूषणजी, आचार्यश्री विमलसागरजी, एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी और भट्टारक स्वामीजी के दर्शनार्थ प्रमुख अतिथि मठ मे आये, जहाँ उन्होंने साधुओ की वन्दना करके आशीर्वाद प्राप्त किया। मठ के द्वार पर, मंगल वाद्यो की ध्वनि पर नृत्य करते एक प्रशिक्षित गजराज ने मालाएँ पहिनाकर तीनो अतिथियो का स्वागत किया। सभी आचार्यों-मुनियो को लेकर मान्य अतिथियो ने विशाल शोभायात्रा मे मठ से चामुण्डराय मण्डप के लिए प्रस्थान किया।

अष्ट मगल-द्रव्य, प्रातिहार्य, तथा सतरगे जैन ध्वज लेकर सैकड़ो स्वयसेवक इस जुलूस मे चल रहे थे। हज़ारो यात्रियो और सैकडो विदेशी पर्यटको के बीच इस शोभायात्रा में सुनहरी सज्जा से सजे-धजे अनेक हाथी थे। कर्नाटक की पारम्परिक वेशभूषा मे मगन-मन शहनाई और मृदगम बजाते हुए वादक वृन्द और कलश लेकर चलती हुई, रग-बिरगे परिधानो वाली महिलाओ की पक्तियाँ, मनोहर छटा बिखेरती चल रही थी। दूर-दूर से आये विशिष्ट अतिथियो, तथा विद्वान पण्डितो से घिरा हुआ साधु-समुदाय शोभायात्रा को अविस्मरणीय गरिमा प्रदान कर रहा था।

चामुण्डराय मण्डप

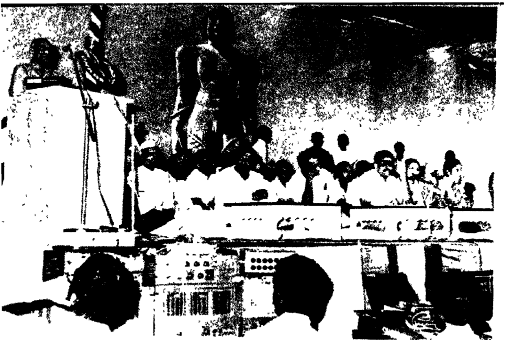
श्रेयांसप्रसाद अतिथि-निवास के थोड़ा-सा आगे चलकर, मुख्य सड़क की दाहिनी ओर मिडिल स्कूल के मैदान पर महोत्सव के बहुविध कार्यक्रमो के लिए, साढे तीन सौ फुट लम्बा

व दो सौ फुट चौडा अति विशाल पण्डाल तैयार किया गया था। कर्नाटक के कुशल कारीगरों ने बडी कलात्मकता के साथ, लगभग दो माह के परिश्रम से यह मण्डप तैयार किया था। सुपारी-वृक्षो के सीधे-सपाट और ऊँचे खम्भो पर आधारित इसका ऊँचा प्रवेश द्वार, किसी सुन्दर भवन की तरह अनेक कोष्ठ-प्रकोष्ठ रखकर बनाया गया था। लगभग डेढ लाख रुपयों की लागत से निर्मित इस मण्डप मे पच्चीस हजार से अधिक व्यक्तियो के बैठने का प्रावधान था। मण्डप के अंतिम सिरे पर चौकोर मच बनाकर तरह-तरह के आकल्पन से उसे सजाया गया था। मच का विस्तार ऐसा था कि उस पर पाँच छह सौ व्यक्ति आराम से बैठ सकते थे। इसी मच पर वेदी बनाकर वहाँ अस्थायी जिनालय की स्थापना कर ली गयी थी। मंच का नैपथ्य गोमटस्वामी के विशाल चित्र-फलक से सज्जित था। पूरा मच और मण्डप बिजली की सुरुचिपूर्ण सजावट से जगमगाता रहता था। मण्डप के कोने-कोने तक वक्ता की वाणी को निर्बाध पहुँचाने वाली, उत्तम माइक्रोफोन व्यवस्था इस मण्डप की विशेषता थी। वक्ता की वाणी मण्डप के बाहर भी दूर-दूर तक, इधर कल्याणी सरोवर से उधर कॉलेज तक, सुनायी देती थी। गोमटेश्वर बाहुबली की अद्वितीय प्रतिमा के निर्माता, वीर-मार्तण्ड चामुण्डराय के नाम पर, इस पण्डाल को 'चामुण्डराय मण्डप' नाम दिया गया था। तीन सुन्दर प्रवेश-द्वारो के कारण यह मण्डप बाहर से देखने पर, सचमुच चामुण्डराय का राजमहल सा दिखाई देता था। प्रतिष्ठापना समारोह का उद्घाटन इसी मण्डप मे से हो रहा था, और आज के उद्घाटन समारोह से ही इस मण्डप का भी उद्घाटन होने जा रहा था। कई दिनो तक दिन-रात परिश्रम करके शिल्पियो और कलाकारो ने वह मण्डप तैयार किया था। यद्यपि महा-मस्तकाभिषेक के लिए अभी बारह दिन शेष थे, परन्तु श्रवणबेलगोल मे यात्रियो और पर्यटको की संख्या बढ़ रही थी। लगभग पचास हज़ार लोग वहाँ पहुँच चुके थे। दुकाने और होटल भी जगह-जगह खुल गये थे।

शोभायात्रा के चामुण्डराय मण्डप मे पहुँचने पर सर्वप्रथम मुख्यमन्त्री ने ध्वजारोहण किया। मण्डप के ठीक सामने, काफी ऊँचाई पर फहराते हुए, पँचरगे जैन ध्वज ने क्षणभर मे ही दूर-दूर तक, महोत्सव के प्रारम्भ का सकेत प्रेषित कर दिया। ध्वज-वन्दन के उपरान्त अभ्यागत सज्जनो को सुसज्जित पथ से ले जाकर मच पर बैठाया गया।

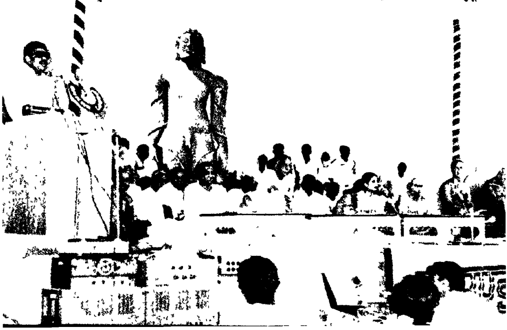
आचार्यरत्न देशभूषणजी और आचार्य विमलसागरजी आदि अनेक आचार्यों, मुनियो और आर्यिकाओ का समूह मच पर विराजमान हुआ। एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी अपने गुरु आचार्य देशभूषणजी के साथ वार्तालाप करते और महोत्सव सम्बन्धी परामर्श देते दिखाई दे रहे थे। श्रवणबेलगोल के भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी अपनी अशेष स्फूर्ति से युक्त, अत्यन्त विनय-पूर्वक, साधु समूह के समीप विराजते थे। कुमारी शोभा अनन्तरार्जैया ने 'गोमटेश-स्तुति' द्वारा मगलाचरण किया। गोमटस्वामी के स्तवन हेतु सरल प्राकृत मे सिद्धान्तचक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य द्वारा हज़ार वर्ष पूर्व रचित यह स्तुति, इस मेले मे बहुत लोकप्रिय हुई थी। कुमारी शोभा के कन्नड मिश्रित उच्चारण और सुरीले कण्ठ से उसका आकर्षण और बढ़ जाता था।

प्रारम्भ मे अतिथियों का स्वागत करते हुए, जैन जगत के अनभिषिक्त सम्राट, महोत्सव समिति के सुयोग्य अध्यक्ष, श्री श्रेयासप्रसाद जैन ने इस मगल दिवस को धार्मिक उदारता और परस्पर मैत्री के नवीन इतिहास का मगलाचरण निरूपित किया। उन्होने मेले मे आने



49 महोत्सव समिति के अध्यक्ष के नाते साहु श्रेयांसप्रसादजी जैन का स्वागत भाषण

50 उत्सव की सफलता के लिए कर्नाटक शासन का संकल्प घोषित करते हुए मुख्यमन्त्री श्री आर गुंडूराव





51 जैन सस्कृति की उदारता और श्रवणबेलगोल की महत्ता को रेखाकित करते हुए भारत सरकार के सचारमन्त्री श्री सी. एम स्टीफन

52 अध्यक्षीय भाषण करते हुए श्री एच सी. श्रीकण्ठैया





53 उद्घाटन-दिवस की सभा मे महिलाओं की उपस्थिति भी पर्याप्त रही



54 सचारमन्त्री ने गोमटेश्वर का एक रुपये मूल्य का बहुरगी डाक टिकिट जारी करके प्रथम दिवस आवरण' के साथ एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी को भेंट किया

55 सहकारिता मन्त्री, आचार्यरत्न देशभूषण जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए



वाले प्रत्येक यात्री का समस्त जैन समाज की ओर से अभिनन्दन किया तथा चन्दन की मालाएँ पहनाकर तीनो अतिथियो का सम्मान किया।

उद्‌घाटन भाषण

मुख्यमन्त्री श्री गुण्डूराव ने गोमटस्वामी के चित्र के समक्ष पुष्पाजलि समर्पित करते हुए, मगल-दीप प्रज्वलित करके, महोत्सव का उद्‌घाटन किया। श्री गुण्डूराव ने उद्‌घाटन भाषण का प्रारम्भ गोमटस्वामी की वन्दना से किया और कहा कि "भगवान् बाहुबली के द्वारा पढाया गया अहिंसा और अपरिग्रह का पाठ, पूरी मानवता के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त के रूप मे, आज भी वैसा ही उपयोगी है। जैन आचार-संहिता पर आधारित 'प्रेम और सद्‌भाव से परिपूर्ण समाज' आज के विश्व की सबसे बडी आवश्यकता है।"

गोमटस्वामी का यह महामस्तकाभिषेक उनकी प्रतिष्ठापना की एक हजारवी जयन्ती के साथ आयोजित है, इस सयोग को एक ऐतिहासिक प्रसग निरूपित करते हुए, मुख्यमन्त्री ने व्यक्त किया कि यह समारोह किसी एक धर्म, किसी एक जाति या किसी एक सम्प्रदाय का आयोजन नही है। यह तो सारे देश का महोत्सव है। इस अवसर पर हमे उदारता पूर्वक इसमे अपना सहयोग देना चाहिए और मेले मे आये हुए सभी देशी-विदेशी यात्रियो और पर्यटको को अपना अतिथि मानकर उनकी अभ्यर्थना करना चाहिए।

महोत्सव को उद्‌घाटित घोषित करते हुए श्री गुण्डूराव ने आश्वासन दिया कि कर्नाटक को श्रवणबेलगोल पर गर्व है, अत. महामस्तकाभिषेक के आयोजन को कर्नाटक शासन ने सदैव अपना पुनीत कर्त्तव्य माना है। मेरी सरकार यह प्रयत्न कर रही है कि इस मेले में कोई अव्यवस्था, कोई कमी न रहे और किसी यात्री को कोई कष्ट न होने पावे। मुख्यमन्त्री ने यह भी घोषित किया कि स्थानीय विधायक तथा जनकार्य विभाग मन्त्री, श्री एच० सी० श्रीकण्ठैया मेले का प्रबन्ध देखने के लिए 15 फरवरी से मेला नगर मे ही ठहरेंगे। कर्नाटक शासन यहाँ आने वाले सभी लोगो का स्वागत करेगा, और उनकी आरामदेह व्यवस्था करेगा।

इसी बीच मुख्यमन्त्री ने बाहुबली-स्तुति का एक कैसेट जारी किया जिसे प्रसिद्ध सगीतज्ञ मन्नाडे द्वारा सगीतबद्ध किया गया था। कर्नाटक के अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक श्री बी० एन० गरुडाचार ने, मेले के लिए तैयार की गयी, शान्ति और सुरक्षा सबधी एक पुस्तिका भी मुख्यमत्री के हाथो जारी कराई। अनेक प्रकार की सूचनाओ के साथ इस पुस्तिका मे मेला-नगर का नक्शा और उसके लिए किये गये पुलिस-प्रबन्ध की विस्तृत जानकारी प्रकाशित की गई थी।

मुख्य अतिथि का उद्‌बोधन

उद्‌घाटन समारोह के मुख्य अतिथि, केन्द्रीय सचार मन्त्री श्री सी० एम० स्टीफन ने इस अवसर के लिए डाक विभाग द्वारा निकाले गये डाक टिकिट और प्रथम दिवस आवरण जारी करते हुए, अत्यन्त प्रभावशील और मर्मस्पर्शी शब्दो मे, गोमटस्वामी के प्रति अपनी विनयाजलि प्रस्तुत की। उन्होंने श्रवणबेलगोल मे एकत्रित जन समुदाय को भारत की धर्म निरपेक्ष राष्ट्रीय एकता का प्रतीक और देश के जन-जन मे व्याप्त उत्कृष्ट आध्यात्मिक रुचि का प्रमाण निरूपित किया। उन्होने कहा कि इस मेले को धार्मिक महोत्सव कहने की अपेक्षा 'अन्तर्राष्ट्रीय मेला' कहना अधिक उपयुक्त होगा।

जैन धर्म के सिद्धान्तो को जन-जन के लिए कल्याणकारी और विश्व शान्ति का सबल आधार बताते हुए, श्री स्टीफन ने गोमटस्वामी की मूर्ति को भक्ति और सहिष्णुता का प्रतिबिम्ब निरूपित किया। तालियो की गडगडाहट के बीच उन्होने कहा कि एक ओर हजार वर्ष पूर्व अनोखे कौशल से बनायी गयी प्रतिमा की कला और इसका इतिहास बताता है कि प्राचीन काल मे भारत क्या था। दूसरी ओर वर्ण, जाति, भाषा और प्रदेश की भिन्नता के बावजूद इतनी बडी सख्या मे आपका इस महोत्सव मे उपस्थित होना बताता है कि धर्म निरपेक्षता के विचारो मे, और ईश्वरीय महिमा के प्रति मान-सम्मान के क्षेत्र मे आज भी भारत क्या है। उन्होंने हर प्रदेश, हर भाषा और हर जाति के लोगो के उस समुदाय को भारतीय लोक-मानस की उदार चेतना का प्रतीक मानते हुए इस सभा को भारत की राष्ट्रीय एकता का प्रमाण निरूपित किया।

अपने सुविचारित भाषण मे श्री स्टीफन ने भद्रबाहु स्वामी का उल्लेख करते हुए कहा कि उनके तपश्चरण से 'चिक्कबेट' धन्य हो गया। मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त ने दीक्षा ग्रहण करके अपना जीवन धन्य किया। उन्ही के नाम पर इस पवित्र पर्वत का नाम चन्द्रगिरि हुआ। यह देश धन्य है जहाँ सम्राट जैसे इतिहास पुरुष भी अन्त में सब कुछ त्याग कर आत्म-कल्याण का मार्ग ग्रहण करते हैं, तपस्या का पथ अगीकार करते हैं। इसी स्थान पर चन्द्रगुप्त ने तप किया यह इस पूरे भूमिभाग के लिए गौरव की बात है।

इस महोत्सव की तैयारी मे केन्द्रीय शासन और राज्य शासन से जो सहयोग मिल रहा था, कभी-कभी पत्रो मे उसकी आलोचना भी सुनाई देती थी। ऐसे आक्षेपो का निराकरण करते हुए श्री स्टीफन ने घोषित किया कि श्रवणबेलगोल पूरे देश की अनुपम निधि है। यह अकेले कर्नाटक की सम्पदा नही है। यह वह महान् स्थल है जहाँ उत्तरावर्त के सम्राट ने अन्तिम शरण प्राप्त की और इस स्थान को ही उन्होने अपनी साधना के लिए चुना। इस घटना से श्रवणबेलगोल, उत्तर और दक्षिण भारत के बीच भावात्मक सम्बन्धो की सिद्धि करने वाला, राष्ट्रीय महत्त्व का स्थान बन कर हमेशा के लिए महान् हो गया। सवा हजार वर्षों के पश्चात् यहाँ एक और महान् सन्त का आगमन हुआ जिन्हे हम नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती के नाम से जानते है। उनके साथ उनका शिष्य वीर चामुण्डराय आया, जिसने अपनी माता की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए इस विन्ध्यगिरि पर गोमटस्वामी का निर्माण करा दिया। इस प्रकार विश्व का यह एक आश्चर्य यहाँ स्थापित हो गया।

डाक टिकिट का विमोचन

श्री स्टीफन के भाषण के अन्तिम चरण मे कर्नाटक के पोस्टमास्टर जनरल ने नवीन डाक सामग्री का एलबम उनके समक्ष प्रस्तुत किया, जिसमे से सचार मन्त्री ने अनेक रगो मे छपा हुआ, गोमटेश्वर बाहुबली के चित्र वाला, एक रुपये मूल्य का टिकिट और 'प्रथम दिवस आवरण' बिक्री के लिए जारी किया। डाक टिकिट विमोचन के साथ पूरा मण्डप 'बाहुबली की जय' के नारो से गूँज उठा। विमोचन करते हुए श्री स्टीफन ने गौरवपूर्वक घोषित किया कि "सौभाग्य का यह अवसर मूर्ति की स्थापना के एक हजार वर्ष के बाद, भारत का सचार मन्त्री होने के नाते मुझे प्राप्त हुआ है। इस अवसर की महानता और दुर्लभता समझने के लिए इतना ही कहना पर्याप्त है कि ऐसा अवसर अब एक हजार वर्ष तक किसी को प्राप्त होनेवाला नही है।"

शायद इतिहास की इसी घटना को समुचित आदर देने के लिए श्री स्टीफन ने अपने भाषण

में कहा था कि—"गोमटस्वामी पर डाक टिकिट निकालकर हमने जैन समाज के प्रति कोई कृपा या पक्षपात नही किया है। गोमटस्वामी तो हमारे देश की ऐसी अनमोल धरोहर हैं कि उनके प्रति सम्मान व्यक्त करना हमारा कर्तव्य है, वही हमने किया। डाक व तार विभाग को इसलिए भी यह टिकिट निकालना पडा है, क्योकि गोमटस्वामी ने आज पूरे देश का ही नही, विदेशों का भी ध्यान आकर्षित किया है।"

वास्तव में भारत के संचार विभाग ने इस अवसर पर बहुत सुविचारित श्रद्धांजलि प्रस्तुत की थी। एक ओर जहाँ टिकिट पर गोमटस्वामी के बहुरगे चित्र ने इस अवसर की इस स्थान की महत्ता को स्थापित किया, वही दूसरी ओर 'प्रथम दिवस आवरण' पर भद्रबाहु स्वामी के चरण-चिह्नो के रेखाचित्र ने, चन्द्रगिरि की ऐतिहासिक महत्ता को रेखांकित किया। इसके साथ उद्‌घाटन दिवस के लिए जो विशेष मोहर डाक विभाग ने बनाई थी उसमे कलश की अनुकृति बनाकर महामस्तकाभिषेक की महत्ता और जनमंगल महाकलशके योगदान को व्यक्त किया गया। प्रथम 'दिवस आवरण' पर यह मोहर इतने सम्भालकर अंकित की जाती थी कि हमे वे तीनो प्रतीक स्पष्ट दिखाई देते थे। हज़ारो लोगो ने इस पावन प्रसंग की स्मृति के रूप मे इस सामग्री का सकलन किया।

सरल अग्रेजी मे अपनी भक्ति-भावना को अभिव्यक्ति देते हुए श्री स्टीफन ने विश्वधर्म के प्रति जिस आस्था का परिचय मच पर प्रस्तुत किया उसने हर श्रोता के मन को छुआ। पूरे पण्डाल मे भक्ति और भावुकता की एक पवित्र और मन को शीतलता देनेवाली लहर दौड़ गयी। अनेको के नेत्र सजल हो उठे। लगता तो यह था कि जो श्रोता अग्रेजी नही समझ पा रहे हैं वे भी उस भाषण की भावना से भीतर तक अभिभूत होते जा रहे हैं। अगले तीन सप्ताहों तक मेलानगर मे आस्था, भक्ति और उत्साह की जो त्रिवेणी प्रवाहित होने वाली थी, उसी की एक झलक, उसी की छोटी सी बानगी, श्री स्टीफन ने आज चामुण्डराय मण्डप मे प्रस्तुत कर दी थी। अग्रेजी नही समझने वाली जनता के लिए श्री स्टीफन के भाषण का हिन्दी सार-सक्षेप भट्टारक स्वामीजी के निजी सचिव श्री विश्वसेन के प्रस्तुत किया। सभा के अध्यक्ष श्री एच० सी० श्रीकण्ठैया ने अपने अध्यक्षीय भाषण में, उद्‌घाटन समारोह के लिए उपस्थित होने वाले हर व्यक्ति को भाग्यशाली बताया। उत्सव की सफलता के लिए शुभ-कामनाएँ व्यक्त करते हुए उन्होने अपनी ओर से गोमटस्वामी की सेवा का सकल्प दोहराया।

मंगल आशीष

समारोह के अन्त मे जैनमठ के यशस्वी भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी ने अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए कहा कि यह केवल गोमटेश का सहस्राब्दि महोत्सव नही है, इस बहाने हम सिद्धान्त-चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य का, चामुण्डराय का और उस अज्ञात शिल्पकार का भी सहस्राब्दि महोत्सव मना रहे हैं और उन्हे सहस्र विनयाजलि अर्पित कर रहे हैं।

मंगल आर्शीवाद के रूप मे एलाचार्य सिद्धान्तचक्रवर्ती विद्यानन्द मुनिराज की सारगर्भित वाणी का प्रसाद वितरित होने के उपरान्त उद्‌घाटन सभा का समापन हुआ। इस महान् कार्य को उपयुक्त गरिमा के साथ सम्पन्न होता हुआ देखने के लिए, सुदर उत्तर भारत से पद-यात्रा करके मुनिश्री ने कर्नाटक तक विहार किया था। चातुर्मास काल से ही श्रवणबेलगोल मे ठहरकर उन्होंने स्वयं बहुत उपयोगी निर्देश और परामर्श दिये थे।

एलाचार्यजी ने उद्घाटन की बेला मे महोत्सव के निर्विघ्न समापन के लिए आशीर्वाद देते हुए कहा कि 'श्रद्धा', सत्ता और समृद्धि तीनों जहाँ एक जुट होकर प्रयत्नशील हैं वहाँ सफलता की प्राप्ति में सन्देह के लिए कोई अवकाश ही नही है। हजार वर्ष पूर्व सम्पन्न हुए प्रथम मस्तकाभिषेक में गुल्लिका अज्जी की भूमिका का उदाहरण देते हुए मुनिश्री ने कहा कि यह उत्सव तो जन-जन का आयोजन है। विश्वधर्म किसी एक जाति की सम्पदा नही है। बाहुबली सबके हैं और उनके आदर्श मार्ग पर चलकर अपना कल्याण करने का सबको एक समान अधिकार है। उन्होने कहा कि महामस्तकाभिषेक जैसे भक्तिमय आयोजनों से विश्वशान्ति और सह-अस्तित्व का वातावरण निर्मित होता है तथा मनुष्य के जीवन में पवित्रता आती है।

आभार प्रदर्शन

सभा के अन्त मे महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री श्रेयासप्रसाद जैन ने अतिथियो के प्रति आभार व्यक्त किया। इस प्रसग की स्मृति स्वरूप, गोमटस्वामी की छवि से अंकित रजत मुद्रा भेंट करते हुए तीनो अतिथियो को तथा श्रीमती गुण्डूराव को भी शाल और माल्यार्पण द्वारा सम्मानित किया।

अपने वक्तव्य मे चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने घोषणा की थी कि इस महोत्सव की स्मृति स्वरूप श्रवणबेलगोल के समीपवर्ती 10 ग्रामो को जनकल्याण योजनाओ के अंतर्गत गोद लिया गया है। इन ग्रामो मे जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के कार्यक्रम शीघ्र हाथ मे लिये जायेगे। एलाचार्य विद्यानन्दजी ने भट्टारक स्वामीजी की इस प्रस्तावना का अनुमोदन किया था। इसी प्रकरण पर लोक देवता बाहुबली का यह सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना महोत्सव लोक कल्याण के कार्यो से प्रारंभ करने का सकल्प पुनः व्यक्त करते हुए श्री श्रेयासप्रसादजी ने उन ग्रामो के लिए जनकल्याण की अनेक योजनाओ की घोषणा की। फिर 'बाहुबली की जय' के घोष के साथ सभा का समापन हुआ।

एक आकस्मिक दुर्घटना

चन्द्रगिरि के रास्ते मे पानी की टंकी के पास आज एक दुर्घटना में बिजली विभाग के एक कर्मचारी की मृत्यु हो गयी। घटना की खबर फैलते ही हजारो लोगो की भीड वहाँ एकत्र हो गई। एक अधिकृत सूचना मे बताया गया कि वह अभागा कर्मचारी खम्भे पर लाइन की मरम्मत कर रहा था, तभी विद्युत केन्द्र पर एक अन्य कर्मचारी ने भूल से उस लाइन मे विद्युत प्रवाह चालू कर दिया। मृतक एक झटके साथ नीचे चट्टान पर गिरा। उस साघातिक चोट से वही उसी समय उसका जीवन समाप्त हो गया।

दुर्घटना की खबर मिलते ही भट्टारक स्वामी जी तत्काल वहाँ पहुँचते है। घटना पर खेद व्यक्त करते हुए मृतक के परिवार के लिए सवेदना और महोत्सव समिति की ओर से उन्हे पाँच हजार की अनुग्रहराशि प्रदान करने की घोषणा करते हैं। विद्युत विभाग के अधिकारी भी घटना स्थल पर उपस्थित हैं। शोकग्रस्त परिवार के लिए नियमानुसार क्षतिपूर्ति के आश्वासन के साथ मृतक के पुत्र को विद्युत मण्डल की सेवा मे लेने का आश्वासन देते हैं।

पंचकल्याणक-प्रतिष्ठा

श्रवणबेलगोल मे महामस्तकाभिषेक के पूर्व पंचकल्याणक-पूजा सदैव अनिवार्य रूप से होती रही है। इसे नियमित वार्षिक अनुष्ठान के रूप में भी आयोजित किया जाता है। प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला पचमी से पंचकल्याणक-पूजा के कार्यक्रम यहाँ प्रारम्भ हो जाते हैं, जो पूर्णिमा तक चलते हैं। भगवान् महावीर की जन्म जयन्ती और भगवान् नेमिनाथ का बाल-लीला महोत्सव, ये दोनो ही समारोह चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को बडे समारोह पूर्वक मनाये जाते हैं। उसी समय रात्रि को कल्याणी सरोवर मे दीपोत्सव होता है। एक नाव मे वेदी की रचना करके भगवान् को विराजमान करते हैं। हजारों दीपकों से सरोवर को सजाते हैं और उसमे नौका की तीन परिक्रमाएँ कराते हैं। यह दीपोत्सव देखने के लिए उस दिन बाहर से भी लोग आते हैं। हजारो दर्शक कल्याणी की सीढियों पर बैठकर या आस-पास के ऊँचे स्थानो से इसका आनन्द लेते हैं। सरोवर के परकोटे और प्रवेश द्वारो पर बिजली की सजावट की जाती है। दूसरे दिन चतुर्दशी को केवलज्ञान कल्याणक के उपरान्त सर्व-धर्म सम्मेलन आयोजित किया जाता है। वर्तमान भट्टारक स्वामीजी ने ही इस पद्धति का प्रारम्भ किया है। विविध सम्प्रदायो के विद्वान् वक्ताओ को सम्मानपूर्वक आमन्त्रित किया जाता है और विश्व-धर्म के समन्वयात्मक सिद्धान्तो पर उनके प्रवचन होते हैं। ये कार्यक्रम यहाँ के सबसे बडे जिनालय भण्डारबस्ती में आयोजित होते हैं।

1981 के महोत्सव के अवसर पर लगभग एक लाख रुपये व्यय करके कल्याणी सरोवर का जीर्णोद्धार किया किया गया। पम्प लगाकर उसका सारा पानी बाहर निकाल दिया गया। नीचे लगभग दो मीटर तक कीचड और कचरा था, वह सब भी निकाला गया। सरोवर को इस प्रकार धरातल तक साफ करके पाइप की सहायता से उसे पुन: भरा गया। बीच मे एक शक्तिशाली फव्वारा लगाया गया जो सत्तर फुट ऊपर तक शुभ्र जल की अनेक धाराएँ छोडता है। कारकल के भट्टारक स्वामीजी ने इस फव्वारे को देखकर इसे 'जल-वृक्ष' की सज्ञा दी थी। सचमुच इस फव्वारे के लिए वह एक सार्थक नाम है। इस हेतु जो पाइप बिछाया गया, उसके कारण इस वर्ष कल्याणी मे दोपोत्सव की परिक्रमा कराना सम्भव नही हुआ। इसका कारण यह था कि वाछित स्तर तक जल उसमे नही भरा जा सका। यदि वर्षा पर्याप्त हो जाये और जल स्तर सामान्य तक बना रहे तो इस पाइप के ऊपर से भी भविष्य मे दीपोत्सव की नौका अपनी परिक्रमा कर सकेगी।

सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना महोत्सव के अवसर पर उत्सव की भूमिका के रूप में, पंचकल्याणक पूजा का आयोजन इस वर्ष अधिक व्यापक स्तर पर किया गया। चामुण्डराय मण्डप के विशाल मंच का सामने की ओर का लगभग आधा हिस्सा विभिन्न कार्यक्रमों के लिए मच की तरह उपयोग में आता था। यह आधा भाग इतना बड़ा था कि उस पर मुनियों आर्यिकाओं और उनके साथ के व्रतियों सहित लगभग दो सौ व्यक्तियों का समूह विराजमान होता था

और साथ में कार्यक्रम के अध्यक्ष, संयोजक, तीनों चारों भट्टारक तथा अन्य सौ-सवा सौ तक विशिष्ट अतिथि सुविधा-पूर्वक बैठ जाते थे। चटाई के पीछे मंच के आधे भाग को अस्थाई रूप से वेदी का रूप दे दिया गया था। वेदिका पर एक ओर प्राचीन प्रतिष्ठित पूज्य प्रतिमाएँ स्थापित की गई, और वही नवीन प्रतिष्ठा के लिए मूर्तियाँ रखी गई। पंचकल्याणक के अधिकाश विधि-विधान इसी वेदी और इसी मच पर सम्पन्न होते थे।

बेलगाम के विख्यात विद्वान पण्डित बाहुबलीजी शास्त्री इस पचकल्याणक पूजा के प्रधान प्रतिष्ठाचार्य थे। पचकल्याणक समिति के संयोजक, श्रवणबेलगोल के प्रतिष्ठाचार्य श्री शान्तिराज शास्त्री एवं वैनाड के बोली-विशेषज्ञ श्री श्रीकान्त भुजबली शास्त्री, श्री एस०डी० नागेन्द्र शास्त्री उनके सहयोगी थे। इन विद्वानो ने अनेक पचकल्याणक और विधान-अनुष्ठान सम्पन्न कराने का गौरव प्राप्त किया है। प्रतिष्ठाचार्य के रूप मे इनकी अच्छी ख्याति है। श्री ताराचन्द्र प्रेमी और श्री बाबूलालजी पाटोदी ने सभी कार्यक्रमो मे मच का सुन्दर संचालन किया। प्रतिष्ठाचार्यों की सहायता के लिए बेलगाम, शेडबाल और श्रवणबेलगोल के ग्यारह शास्त्री या पुरोहित भी कार्य कर रहे थे।

हर मस्तकाभिषेक के अवसर पर पचकल्याणक पूजा के बाद रथ निकलता है, उसके पश्चात् ही महामस्तकाभिषेक किया जाता है, यही श्रवणबेलगोल की परम्परा है। सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना महोत्सव के समय भी इसी परम्परा के अनुसार सारे कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

पूर्व अनुष्ठान

9-2-81 को मृत्तिका-सग्रहण और नान्दिमंगल विधान से पचकल्याणक का प्रारभ हुआ। उस दिन इन्द्र-प्रतिष्ठा और ध्वजारोहण के पश्चात् मठ मदिर से लाकर बाहुबली स्वामी की एक प्रतिमा, तथा प्रतिष्ठा के लिए प्राप्त दो नवीन प्रतिमाएँ वेदिका पर स्थापित की गयी। प्रतिष्ठा के लिए सगमरमर की ये दोनो पद्मासन प्रतिमाएँ जयपुर से मँगवाई गई थी। एक भगवान आदिनाथ की और दूसरी तीर्थंकर नेमिनाथ की। चामुण्डराय ने चन्द्रगिरि पर नेमिजिनेश का मन्दिर बनवाकर उसमे तीर्थंकर की नीलम की प्रतिमा विराजमान की थी, सभवतः इसीलिए इस क्षेत्र पर पचकल्याणक प्रायः नेमिनाथ भगवान् के ही होते हैं। इस बार भी ऐसा ही हुआ, पर प्रतिष्ठा दोनो प्रतिमाओ की हुई।

दूसरे दिन दस फरवरी को श्रवणबेलगोल मे, और आसपास के नगरो-ग्रामो मे जितने भी जैन मन्दिर है उन सब मे, विशेष पूजा कराई गई। एक निर्धारित समय पर, प्रातः ठीक आठ बजे, सभी मन्दिरो मे यह पूजा प्रारम्भ हुई। इस नव कलशाभिषेक पूजा के साथ वातावरण और स्थल की शुद्धि के लिए शांति-हवन किया गया तथा पालकी उत्सव हुआ। वेदी पर अकुरारोपण और लघु शान्ति होम किया गया।

तीसरे दिन ग्यारह फरवरी को बडे मन्दिर मे महाशान्ति होम हुआ। उसी दिन चन्द्रगिरि पर श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी गुफा मे गणधर-वलय विधान हुआ। धवल सिद्धांत ग्रन्थराज मे जो गणधर-वलय-विधान मन्त्र आते हैं, उनके विधिवत् उच्चारण के साथ यह विधान किया जाता है। पंचकल्याणक मे इस विधान का बड़ा महत्त्व माना गाया है। इस विधान के समय प्रायः सभी आचार्य महाराज, मुनिराज और आर्यिका माताएँ उपस्थित रही। उस

दिन भद्रबाहु गुफा का दृश्य अद्भुत ही लग रहा था। दिगम्बर मुनियों का इतना बड़ा समूह, न जाने कितने काल के उपरान्त उस गुफा के द्वार पर एकत्रित हुआ होगा। उस दिन प्रायः उन सभी ने वहाँ बैठकर भद्रबाहु स्वामी और चन्द्रगुप्त मुनिराज का स्मरण किया।

चौथे दिन बारह फरवरी को 'कलिकुण्ड यन्त्राराधना' विधान किया गया। इस विधान का आयोजन चन्द्रगिरि पर ही पार्श्वनाथ मन्दिर में हुआ। विधान के पूर्व भगवान का अभिषेक हुआ।

पाँचवे दिन तेरह फरवरी को सबेरे, मठ से चन्द्रगिरि पर्वत के लिए शोभायात्रा प्रारम्भ हुई। समस्त आचार्यों मुनिराजो, आर्यिका माताओ और हजारो यात्रियो का यह जुलूस गाजे बाजे के साथ चन्द्रगिरि पर गया। चामुण्डराय बस्ती मे नेमिनाथ भगवान् के समक्ष 'ऋषि-मण्डल यन्त्राराधना' विधान और महाभिषेक पूजा की गई। इसके पश्चात् सभी मन्दिरो की वन्दना करते हुए सब लोग 'भद्रबाहु गुफा' गये जहाँ भद्रबाहु स्वामी के चरण चिह्नो की पूजा तथा आराधना की गई।

चन्द्रगिरि के सभी मन्दिरों, मानस्तम्भों, द्वारो को बिजली से सजाया गया था। दिन में लोग वन्दना करने पर्वत पर जाते थे, और रात्रि मे यह बिजली की सजावट देखने वहाँ पहुँचते थे, चन्द्रगिरि पर से मेलानगर की, और विंध्यगिरि की सजावट भी बहुत मनोहारी दिखाई देती थी। इसी प्रकार बहुत से लोग विध्यगिरि की चट्टानो पर से चन्द्रगिरि की विद्युच्छटा देखकर आनन्द लेते थे। इसी प्रकार दीपोत्सव की छटा भी दूर दूर जाकर लोगो ने देखी।

छठे दिन चौदह फरवरी को चामुण्डराय मण्डप में वेदी पर 'यागमण्डल-विधान' किया गया। उसी दिन पचकल्याणक के लिए इन्द्रो की बोलियाँ की गई। प्रथम सौधर्म इन्द्र की बोली सेठ लालचन्द हीराचन्द के लिए पचास हजार रुपये मे प्राप्त की गई। ईशान इन्द्र की की बोली बगलोर के श्री एम० सी० अनन्तराजैया ने प्राप्त की। तीसरी कुबेर की बोली इन्दौर के श्री देवकुमारसिंहजी कासलीवाल ने ली। ये सब लोग मुकुट पहनकर, इन्द्र और कुबेर का रूप धारण करके पचकल्याणक कार्यक्रमो मे सम्मिलित हुए। इन्द्रो के लिए ये मुकुट आभरण, वस्त्र आदि, दिल्ली मे तैयार कराये गये थे। यह सामग्री मठ मे सुरक्षित रखी गई है। प्रतिवर्ष पचकल्याणक मे इसका उपयोग किया जा सकेगा।

पंचकल्याणक

चौदह फरवरी ही पंचकल्याणक का प्रथम दिन था। उसी दिन, गर्भावतरण कल्याणक की सध्या को, तीर्थकर की माता द्वारा देखे गये सोलह शुभ-स्वप्नो का प्रदर्शन मंच पर हुआ। केनवास अकित स्वप्नो के ये रग-बिरगे चित्र मच पर एक-एक कर प्रदर्शित किये गये। सारे पण्डाल की बत्तियाँ बुझाकर स्पाट लाइट की सहायता से किया गया यह प्रदर्शन बड़ी दूर तक बहुत स्पष्ट देखा गया। उन स्वप्नो का वर्णन बड़ी अलंकारिक भाषा और मृदु वाणी मे केरल के विद्वान पण्डित श्रीकान्तजी शास्त्री और कवि श्री ताराचन्द प्रेमी कर रहे थे। प्रकाश का उत्कृष्ट सयोजन, और स्वप्नो का कवित्वमय विवरण, दोनो के योग से ध्वनि और दृश्य का एक ऐसा जादू वहाँ प्रस्तुत हुआ जिसमे उलझकर दर्शको को ऐसा भ्रम होता था कि वे सचमुच

किसी स्वप्न लोक में विचरण करते हुए स्वयं उन सारे स्वप्नों के द्रष्टा बन गये हैं। मंच पर इस कार्यक्रम का सचालन भी एक कवि हृदय व्यक्ति ने किया, वे थे इन्दौर के श्री बाबूलाल पाटोदी। इसी सभा में कन्नड़ के प्रख्यात वक्ता, 'व्याख्यान-केसरी' श्री ए० आर० नागराज ने श्रुतिमधुर कन्नड में पंचकल्याणक का विवेचन किया। वह सारा दृश्य अनुपम और अभूतपूर्व था। बहुत लोगो ने, बहुत प्रकार से, बहुत बार उसकी सराहना की।

तीर्थंकर के माता-पिता का स्थान ग्रहण करने की बोली इक्कीस हजार रुपये देकर, जयपुर के सद्गृहस्थ श्री नानकराम जौहरी ने प्राप्त की थी। इस पुण्य-अभिनय के साथ ही जौहरी दम्पती ने वही, जीवन पर्यन्त के लिए ब्रह्मचर्य-व्रत धारण किया। उसी रात्रि 'देवेन्द्र-वाहनोत्सव' का जुलूस निकाला गया। काष्ठ के सफेद हाथियो पर भगवान को विराजमान कराकर पूरे नगर मे यह जुलूस अनोखी शोभा बिखेरता हुआ भ्रमण करता है।

पन्द्रह फरवरी जन्मकल्याणक का दिन था। वेदी पर प्रातःकाल नित्य विधि की गई और फिर मध्याह्न मे पाण्डुक शिला पर 1008 कलशों से भगवान का जन्माभिषेक किया गया। कलशों के लिए कुछ राशि निर्धारित कर दी गई थी, वह देकर अनेक लोगो ने जन्माभिषेक का पुण्य प्राप्त किया। भगवान् के जन्म के उपलक्ष्य मे सैकडो जनो ने बधाईयाँ, नृत्य और मिष्ठान्न वितरण आदि के द्वारा अपना आनन्द प्रदर्शित किया। शाम को भगवान को पालना झुलाने का अतिशय भक्ति-पूरित कार्यक्रम हुआ।

जन्माभिषेक के लिए इन्द्र और इन्द्राणी, बालक-भगवान को ऐरावत पर बिठाकर, मठ से मण्डप तक शोभायात्रा मे लिवा गये। ऐरावत गज रथोत्सव के इस जुलूस मे मुनि और आर्यिकाएँ तथा बडी सख्या में यात्रीगण शामिल हुए। रग-बिरगे वस्त्रो मे 1008 कन्याएँ और सौभाग्यवती महिलायें अपने सिर पर कलश लेकर इस यात्रा मे सम्मिलित थी। पाण्डुकशिला पर जाकर 1008 कलशो से भगवान् नेमिनाथ का जन्माभिषेक किया गया। जन्मकल्याणक की सभा मे श्री ताराचन्द प्रेमी ने भगवान् नेमिनाथ के जन्म के सम्बन्ध मे गीत-काव्य प्रस्तुत किया।

अब तक श्रवणबेलगोल मे बहुत यात्री एकत्र हो चुके थे। आयोजन मे बड़ी भीड़ होने लगी थी। यद्यपि अनेक उपनगरो मे दूर-दूर तक ठहरे होने के कारण उनकी सख्या का सही अंदाज नही लगता था, परन्तु जन्माभिषेक के इस जुलूस को देखकर स्पष्ट हुआ कि बडी तेजी से यात्री समुदाय श्रवणबेलगोल पहुँच रहा था।

सोलह फरवरी को भगवान् का 'नामकरण सस्कार' और 'बाल-लीला महोत्सव' मनाया गया। दक्षिण के पचकल्याणको मे बाल-लीला का विशेष महत्त्व है। नेमिनाथ भगवान् की पाषाण प्रतिमा को इस महोत्सव के लिए, बालक रूप मे वस्त्रालकारो से सजाया गया। उनके दर्शन से मन मे वात्सल्य की अनुभूति होने लगती थी। लगता था कि साक्षात् ही कोई अलौकिक सुन्दर शिशु हमारे सामने बैठा हो। तरह-तरह के फूलो और बिजली की झालरो से सजी हुई पालकी मे बालक भगवान को बिठाकर समारोह पूर्वक उनका जुलूस निकाला गया, जो रात को मण्डप तक ले जाकर, वापस मठ लाया गया।

सत्रह फरवरी को 'साम्राज्य-वैभव समारोह' मनाया गया। भगवान् के राज दरबार मे छप्पन देशो के भूपति नरेश अपनी बहुमूल्य भेंट लेकर उपस्थित हुए। भारत के कोने-कोने से

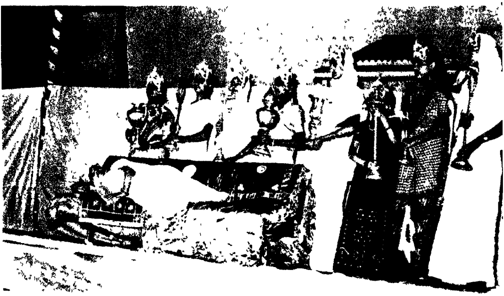


56 नान्दी मंगलविधान से पंचकल्याणक के अनुष्ठान प्रारम्भ हुए



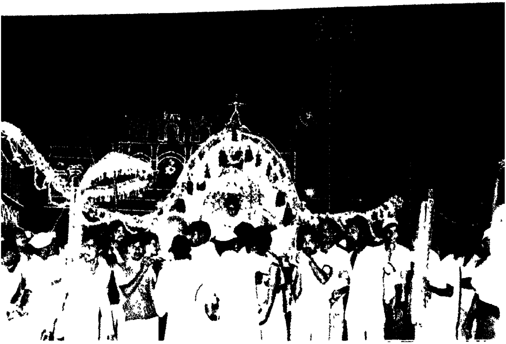
57 इन्द्र-सभा की एक छवि

58 तीर्थंकर की जननी की सेवा मे देवागनाओ का समूह

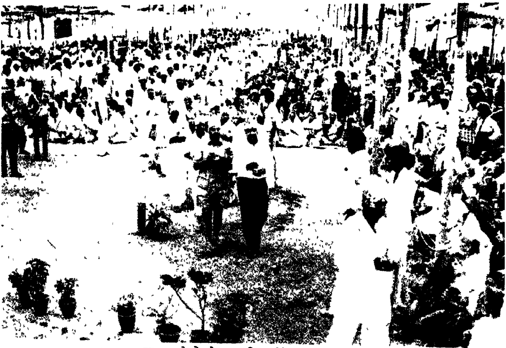




59 बाललीला उत्सव मे नेमिजिनेश की लुभावनी छवि



60 बाललीला उत्सव की शोभायात्रा मठ मन्दिर के सामने



61 राजसभा मे भेंट लेकर उपस्थित होते हुए छप्पन देशो के पृथ्वीपति



62 आहार के लिए विहार करते हुए योगी तीर्थंकर

63 विरागी नेमिनाथ को आहार कराते हुए आचार्य विमलसागर जी और मुनिश्री आर्यनन्दीजी





64 मधुर स्वर लहरी मे अनूदित उत्साह और उल्लास

65 कर्नाटक के पारम्परिक वाद्य

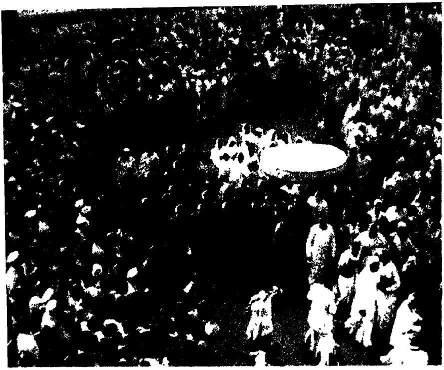




66 केरल के चण्डे वादको का समूह

67 कल्याणी बस्ती की परिक्रमा मे बहुरगी शोभायात्रा





68 शोभा-यात्रा मे सम्मिलित चतुर्विध संघ

69 महोत्सव मे उपस्थित गणमान्य अतिथियो के साथ नरसिंहराजपुरा, कोल्हापुर, कारकल, मूडबिद्री, श्रवणबेलगोल के भट्टारक स्वामीजी और धर्मस्थल के अधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगडे

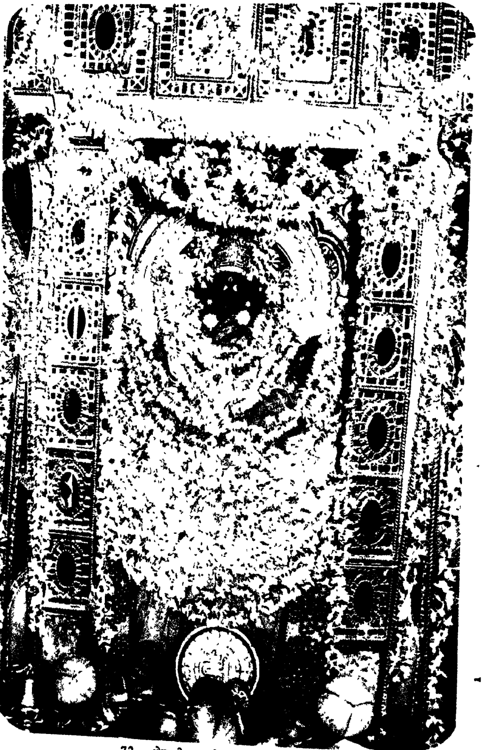




70 लातूर मठ के भट्टारक श्री विशालकीर्ति और कोल्हापुर मठ के श्री लक्ष्मीसेन स्वामीजी



71 नवप्रतिष्ठित जिनबिम्ब जिनालय में प्रवेश

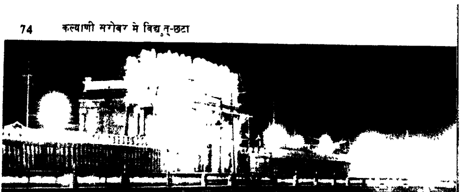


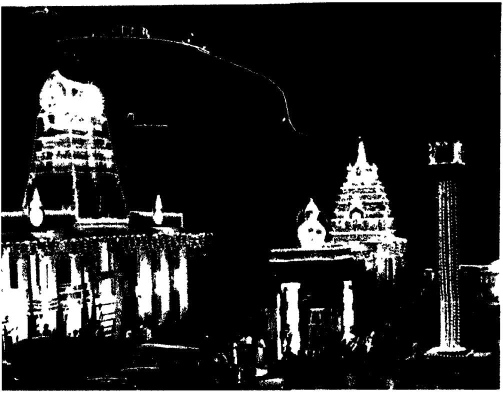
72 क्षेत्र की शासनदेवता कुष्माण्डिनी महादेवी



73 कल्याणी सरोवर मे फव्वारा 'जल-वृक्ष'

74 कल्याणी सरोवर मे विद्युत्-छटा





75 दीपालकृत भण्डारी बस्ती और विन्ध्यगिरि

76 दीपालकृत चामुण्डराय-मण्डप



आये हुए लोगों ने बोली बोलकर इन नरेशों का स्थान प्राप्त किया और राजा का वेश बनाकर वे भगवान् की सभा में उपस्थित हुए । कर्नाटक नरेश के रूप में श्री एम० सी० अनन्तराजैया ने नरेशों का नेतृत्व किया । इस प्रकार अनायास ही ये राजे अनेक देशों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे । राज-सभा का दृश्य वैभवपूर्ण और सुन्दर था । साम्राज्य-वैभव के पश्चात् ग्यारह बजे से भगवान् का 'दीक्षा-कल्याणक' मनाया गया । प्रतिमाओ पर मन्त्र अनुष्ठान आदि की विधि, मन्त्र शास्त्र के विशेषज्ञ, आचार्य विमलसागरजी महाराज के निर्देशन में कराई गई । इसी समय कई मुनिराजों ने केशलोंच किया । उधर मंच पर 'नीलांजना' नृत्य-नाटिका का प्रभावक मंचन हुआ, जो भगवान् आदिनाथ के लिए वैराग्य का साक्षात् निमित्त बना था । वेंकटेश नाट्य मन्दिर बगलोर के कलाकारों ने इस नृत्य की आकर्षक प्रस्तुति से जनता का मन मोह लिया । लौकान्तिक देवों का आविर्भाव भी दर्शनीय था ।

अठारह फरवरी 'केवलज्ञान-कल्याणक' का दिन था । प्रातःकाल समवसरण पूजा की गई और दोपहर को सर्वज्ञता के सम्बन्ध में अनेक मुनिराजों के प्रवचन हुए । वैसे विद्वान मुनियों के प्रवचन इस मेले में सदा-सर्वत्र होते रहे । सामायिक और आहार का काल छोड़कर प्रायः हर समय, कई स्थानों पर, प्रवचन, चर्चाएँ, गोष्ठियाँ या पाठ प्रायः चलते ही रहते थे । भद्रबाहु मण्डप मे, चामुण्डराय-मण्डप मे, भण्डार बस्ती मे या भट्टारक भवन में, कहीं न कहीं किसी न किसी प्रसंग पर, गुरुवाणी का प्रसाद बँटता ही रहता था । परन्तु उस दिन केवल ज्ञान की महिमा का बखान करने वाले कुछ विशेष प्रवचन सुनने का सौभाग्य लोगो को मिला । कुछ आर्यिका माताएँ भी बहुत अच्छा बोलीं ।

पचकल्याणक के अन्तिम कार्यक्रम के रूप मे दूसरे दिन प्रातः काल महारथोत्सव का प्रसिद्ध जुलूस निकाला गया । यह जुलूस भण्डारबस्ती के द्वार से प्रारम्भ होकर पूरे मन्दिर की परिक्रमा करता दिन भर में वही लौट आया । भट्टारक-भवन के सामने लोग नाचते गाते बड़ी देर तक इस अवसर पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते रहे । हाथी, घोड़े और पालकी तथा विविध प्रकार के वाद्य-वृन्द जुलूस की शोभा बढ़ा रहे थे । समस्त मुनियो-आर्यिकाओं तथा श्रावक-श्राविकाओं का समूह आज रथ-स्थल पर समा नही रहा था । घरो-मन्दिरो की छतो पर भी लोग बैठे थे ।

इस रथयात्रा की विशेषता यह है कि प्रातः काल नगर के सभी जैन बन्धु, शुद्ध वस्त्र पहनकर स्वयं भगवान् के इस रथ को खीचते हैं । मध्याह्न मे मन्दिर के पीछे की ओर से जैनेतर लोग इस रथ को खीचकर मन्दिर के सामने लाते हैं । इस प्रकार रथयात्रा के कार्यक्रम में, मन्दिर की परिक्रमा की आधी दूरी तक जैन इस रथ को ले जाते हैं, और शेष आधी यात्रा अजैन जनता पूरी कराती है । इस पावन तीर्थ पर 'सर्व जन-समन्वय' की यह एक अच्छी परिपाटी है । इतना भर नही, इस रथ यात्रा के लिए वाद्य-वृन्दो से वादकों और नृत्य-गान करने वालों का जो समूह आता है, उसमें अधिकाश जैनेतर बन्धु ही होते हैं । आदर और भक्ति की भावना से प्रेरित वे सब उसमें भाग लेते हैं । यहाँ की यह स्थापित परम्परा है । समारोह के आरंभ मे भट्टारक स्वामीजी के द्वारा उन सब लोगो के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त किया जाता है । उन्हें आशीर्वाद मिलता है और उनमे प्रसाद वितरण किया जाता है । उसी समय समाज के गण-मान्य व्यक्तियो को श्रीफल आदि देकर स्वामीजी उनका सम्मान करते हैं । पंचकल्याणक के सभी अर्चकों, कार्यकर्ताओं और सेवकों को वस्त्र आदि देकर

संतुष्ट किया जाता है ।

इक्कीस फरवरी को भण्डारबस्ती मे महाभिषेक पूजा करके चौबीस तीर्थंकरों का पंचामृत अभिषेक किया गया । इस मदिर की प्राचीन चौबीसी बहुत भव्य और कलात्मक है । श्याम पाषाण की उन प्रतिमाओ पर दुग्ध आदि की अभिषेक धाराओ का वह मनोहर दृश्य दर्शनीय था ।

पचकल्याणक के इन सभी कार्यक्रमो मे भट्टारक स्वामीजी नियम से उपस्थित होते थे। अपनी अनेक व्यस्तताओ के बावजूद समारोह समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयासप्रसादजी भी प्रायः पहुँच ही जाते थे। साधु समुदायकी उपस्थिति से तो सचमुच ही इन कार्यक्रमो को ऐसी अद्भुत गरिमा मिल जाती थी जो सहज सम्भाव्य नही होती। जिन्होने यह समारोह देखे हैं वे जीवन भर उन दृश्यो को भूल नही सकेंगे और उतने गरिमामय रूप से शायद अन्यत्र कही देख भी नही सकेंगे । अनेक मुनिराज तो, वेदी पर पचकल्याणक के रात्रिकालीन कार्यक्रम देखने के प्रलोभन मे, उसी वेदी पर सध्याकालीन प्रतिक्रमण करते थे, वही सामायिक करते थे, और कार्यक्रम देखने के बाद वही रात्रि का विश्राम कर लेते थे ।

पंचकल्याणक के ये सारे कार्यक्रम महामस्तकाभिषेक की भूमिका के रूप मे, उसी महोत्सव का अग थे । महोत्सव समिति की ओर से ही इनका आयोजन हुआ था । पचकल्याणक सम्पन्न होने पर ही महामस्तकाभिषेक प्रारभ होता है यह श्रवणबेलगोल का शाश्वत नियम है ।

इस वर्ष ये सारे आयोजन महामस्तकाभिषेक के अवसर पर फरवरी मे हुए और वार्षिक परम्परा के अनुसार अप्रैल मे चैत्र शुक्ला पंचमी से पुनः आयोजित किए गए । इस प्रकार 1981 मे दो बार यहाँ पचकल्याणक सम्पन्न हुए । चैत्र के पचकल्याणक मे प्रतिवर्ष अतिम दिन, परम्परानुसार पचामृत से गोमटस्वामी के चरणो का अभिषेक होता है । इस वर्ष अभिषेक मच का साधन उपलब्ध था, अतः उस दिन पचामृत से गोमटेश्वर भगवान् का मस्ताका-भिषेक करने का दुर्लभ योग सहज ही प्राप्त हो गया ।

13.2.81

आचार्य नेमिचन्द्र स्मृति दिवस

चामुण्डराय मण्डप मे आज तेरह फरवरी की सभा जैन-आगम के मर्मज्ञ प्रणेता सिद्धान्त-चक्रवर्ती आचार्य नेमिचन्द्र को श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए आयोजित है। गोमटेश्वर प्रतिमा के निर्माता वीर चामुण्डराय इन्ही नेमिचन्द्राचार्य के बालसखा और शिष्य थे। इस प्रतिमा के निर्माण मे, और उसकी प्रतिष्ठा के सयोजन मे, आचार्यश्री की बलवती प्रेरणा रही है। उन्होंने अपने ग्रन्थो मे कई जगह 'गोमटराजा चामुण्डराय' का तथा 'गोमटेश्वर बाहुबली' का उल्लेख किया है।

भरतक्षेत्र की छह खण्ड पृथ्वी को अपने अधीन करनेवाला जैसे 'चक्रवर्ती' कहलाता है, उसी प्रकार षट्खण्डो में प्ररूपित जैन आगम पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करके वे आचार्य 'सिद्धान्त-चक्रवर्ती' कहलाए। उनके उपरान्त हज़ार वर्षों के इतिहास मे इस महान् उपाधि को धारण करनेवाले कोई दूसरे मुनि अथवा आचार्य नही हुए। चामुण्डराय के प्रति नेमिचन्द्राचार्य की कृपा का एक और प्रमाण हमे मिलता है, जब हम देखते हैं कि 'पचसग्रह' नामक अपने ग्रथ को अपने प्रिय शिष्य के नाम पर उन्होने 'गोम्मटसार' नाम से प्रसिद्ध कर दिया। आज उन्ही महान् आचार्य का कीर्तिमान इस मण्डप मे गूँज रहा है।

'गोम्मटसार' की कन्नड टीका के आधार पर सिद्धान्ताचार्य पण्डित कैलाशचन्द्र शास्त्री ने उसका हिन्दी अनुवाद तैयार किया है। भारतीय ज्ञानपीठ मे 'मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत इस महोत्सव के उपलक्ष्य मे उस महान् ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है। 'जीवकाण्ड' की जिल्दे छपकर आ चुकी हैं और 'कर्मकाण्ड' का मुद्रण चल रहा है। अनुवादक विद्वान् पण्डित कैलाशचन्द्रजी ने 'गोम्मटसार' के सम्बन्ध में एक संक्षिप्त किन्तु विवेचनात्मक वक्तव्य दिया और ग्रन्थ की प्रथम प्रति, विमोचन हेतु एलाचार्य विद्यानन्द मुनिराज के समक्ष प्रस्तुत की। यह विचित्र संयोग कहा जाना चाहिए कि जो अपनी सारी ग्रन्थियों का विमोचन करके बैठे हैं, वही दिगम्बर साधु आज इस ग्रन्थ का 'ग्रन्थि-विमोचन' कर रहे हैं।

विमोचन के उपरान्त डॉ० दरबारीलाल कोठिया और पण्डित बलभद्र जैन, आचार्यश्री के ग्रन्थों की महानता बखानते हुए, नेमिचन्द्राचार्य महाराज के चरणो में श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। वे महान् आचार्य तो हमारे आचार्यों के भी प्रणम्य

हैं। इसीलिए आचार्य देशभूषणजी, आचार्य विमलसागरजी, और एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी उन महान् सिद्धान्तचक्रवर्ती का गुणगान करते हुए उन्हे परोक्ष नमस्कार करते हैं। एलाचार्यजी ने 'पयडी शीलसहावो' वाक्य की सुन्दर विवेचना अपने वक्तव्य मे की है। अन्त मे भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी ने अपने आपको नेमिचन्द्र आचार्य जैसी साधक विभूतियो का दासानुदास मानते हुए उनके चरणों मे अपनी सहस्र विनयाजलि अर्पित करते हुए कहा कि गुरु-दृष्टि से ही कार्य मे सफलता प्राप्त होती है। चामुण्डराय को गुरु का आशीर्वाद प्राप्त था इसीलिए उनके द्वारा इस लोकोत्तर प्रतिमा का निर्माण सम्भव हो सका।

□

विद्वत्ता का सम्मान

आचार्य नेमिचन्द्र स्वामी की स्मृति-सभा मे गोम्मटसार के अनुवाद का विमोचन हो और उसके अनुवादक का सम्मान न हो, तब तो वह आयोजन ही अधूरा रहेगा। अत. उसी मच पर जिनवाणी के उस लाडले सपूत को सार्वजनिक सम्मान देकर अभिनन्दित किया गया। यथार्थ मे पण्डित कैलाशचन्द्रजी का यह सम्मान, किसी व्यक्ति का सम्मान नही था वरन् वह उस व्यक्तित्व का सम्मान था जो जिनवाणी की सेवा करने के लिए ही निष्पन्न हुआ और निखरा है। जैन आगम और जैन सस्कृति की सेवा ही जिसका जीवन व्रत है। अनेक आचार्यो मुनिराजो ने उन्हे आशीर्वाद प्रदान किया।

□

'तीर्थंकर' का विशेषांक

आज तो सचमुच विमोचन का दिन है। इन्दौर से प्रकाशित हिन्दी मासिक 'तीर्थंकर' का गोमटेश्वर विशेषाक अपनी परम्परा के अनुरूप पूरी सजधज के साथ प्रकाशित हुआ है। पत्रिका के सुयोग्य सम्पादक डॉ० नेमिचन्द जैन, विशेषाक के सम्बन्ध मे अपना वक्तव्य प्रसारित करते हैं और तत्काल विमोचित होकर उस विशेषाक की अनेक प्रतियाँ मच पर लोगो का ध्यान आकर्षित करने लगती हैं। कहा जाता है कि डॉ० नेमिचन्द जिस विषय पर तीर्थंकर का विशेषाक निकालते हैं उस विषय की ज्ञात और अज्ञात, उपलब्ध और अनुपलब्ध सारी सामग्री, न जाने कैसे उनके कांधे पर लटकते हुए झोले में पहुँच जाती है, और उसका सम्यक् विश्लेषण उस विशेषांक मे समाहित हो जाता है। उनकी दृष्टि तो पैनी है ही, विवेच्य विषय के सभी सम्भावित पक्षों का उद्घाटन डॉ० नेमिचन्द की हॉबी है।

तीर्थंकर का गोमटेश्वर विशेषांक इस धारणा को और पुष्ट करता है। इस महती सेवा के लिए शाल, श्रीफल और माला से डॉ० नेमिचन्द का सम्मान किया गया।

विमोचन की शृंखला में अन्तिम कड़ी। एलाचार्यजी के कुछ प्रवचन सकलित करके एक संग्रह प्रकाशित हुआ है जिसका नाम रखा गया है 'गुरुवाणी'। आचार्य विमलसागरजी ने उस पुस्तक का विमोचन किया और उसकी प्रथम प्रति एलाचार्यजी को भेंट कर दी।

▭

जैन पुरातत्त्व की चित्र प्रदर्शनी

भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली ने भगवान् महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव वर्ष मे प्राचीन जैन मूर्तियों और मन्दिरो के लगभग 400 चित्रो की जो प्रदर्शनी तैयार की थी, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सहयोग से, यहाँ एक बड़े पण्डाल मे उसे प्रदर्शित किया गया है। नीरज जैन के निर्देशन में इस प्रदर्शनी का सयोजन बड़े प्रभावशाली ढंग से हुआ है। प्रायः कालक्रम से सजाये हुए चित्रो मे भारतीय कला के उत्थान-पतन को इंगित करने वाली एक लय स्पष्टता से उसमे दिखाई देती है। हिन्दी, अंग्रेजी और कन्नड़ मे चित्रों का परिचय दे देने से यह प्रदर्शनी प्रायः सभी यात्रियो को आकर्षित कर रही है। इतिहास के जानकार और कला के मर्मज्ञ यहाँ घण्टों घूम-फिरकर उसका आनन्द ले रहे हैं। वहाँ सामान्य दर्शक 10-15 मिनिट के राउण्ड मे ही उस आनन्द से अभिभूत दिखाई देते हैं। कई बार ऐसा देखने को मिला कि भोली-भाली महिलाएँ किसी बड़े चित्र के सामने चावल या कोई फल चढ़ाकर उसकी वन्दना कर रही हैं।

कल शाम को भारतीय ज्ञानपीठ के अध्यक्ष साहु श्रेयांसप्रसादजी ने दीप प्रज्वलित करके जब इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया, तब विशेष अतिथि के रूप मे श्री वीरेन्द्र हेगड़े और उनकी मातेश्वरी श्रीमती रत्नम्मा हेगड़े की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। सर सेठ भागचन्दजी सोनी भी प्रमुख अतिथि के रूप मे उपस्थित हुए। कमेटी के महामन्त्री श्री जयचन्द लोहाडे ने अतिथियो का स्वागत और धन्यवाद किया और श्री नीरज जैन ने प्रदर्शनी की विशेषताएँ बताते हुए अभ्यागतों को चित्रो का परिचय दिया।

▭

वयोवृद्ध पत्रकार का अभिनन्दन

99 वर्षीय वयोवृद्ध प्रकाशक और पत्रकार, जैन मित्र के पूर्व सम्पादक, श्री

मूलचन्द किशनदास कापडिया को उनकी सेवाओ के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर 'जैनमित्र' के विशेषाक रूप मे प्रकाशित 'मूलचन्द कापडिया अभिनन्दन ग्रन्थ' का विमोचन करते हुए श्री श्रेयासप्रसाद जैन ने श्री कापड़िया को शाल और माला से अलकृत किया।

कापडियाजी बहुत अशक्त दिखाई दे रहे है। उनकी स्मृति भी अब उनका साथ छोड चुकी है। कुर्सी पर बिठाकर उन्हे मच पर लाया गया। उनके पुत्र श्री डाह्या भाई और पौत्र श्री शैलेश कापडिया उन्हे सम्हाल रहे हैं।

□

15 2.81

जलपूर्ति का निरीक्षण

कर्नाटक के स्वायत्त शासन मन्त्री श्री धरमसिंह श्रवणबेलगोल पधारे हैं। उन्होंने जलपूर्ति के सम्बन्ध मे पूरी जानकारी ली और अनेक नल-कूपो का निरीक्षण किया। उनकी यात्रा के समय पत्रकारो को बताया गया कि साठ लाख की जल आपूर्ति योजना मे 36 नल कूपो से, और बक्का टैंक मे प्रतिदिन सत्रह लाख गैलन जल प्रदाय किया जा सकेगा। इस जल को यात्रियो तक पहुँचाने के लिए ग्यारह उपनगरो मे चार हजार नल लगाये गये है। इनके अतिरिक्त वाटर टैंकर भी जगह-जगह जाकर आवश्यकतानुसार जलपूर्ति करने के लिए उपलब्ध रहेंगे।

इस अवसर पर कर्नाटक, ग्रामीण जल-प्रदाय मण्डल के चेयरमेन श्री बालगोपालन, मैनेजिग डायरेक्टर श्री नानजुन्दा और मुख्य यान्त्रिक श्री एम चिक्कन्ना भी उपस्थित थे। श्री बालगोपालन ने बताया कि मेला नगर फोन नं. 28 पर जल आपूर्ति सम्बन्धी शिकायत करने मे तत्काल उसका निराकरण किया जायेगा।

इसी अवसर पर स्वास्थ्य मन्त्री श्री ए०के० समद ने भी मेलानगर का दौरा करके स्वास्थ्य सेवा सम्बन्धी प्रबन्धो का अवलोकन किया। हासन के जिला स्वास्थ्य अधिकारी डाक्टर ए०के० कनचप्पा ने पत्रकारो को स्वास्थ्य योजना के सम्बन्ध मे जानकारी उपलब्ध कराई।

□

16.2.81

साहित्यकारों का अभिनन्दन

श्रवणबेलगोल से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण साहित्य की रचना के लिए, चामुण्डराय

मण्डप में आज तीन प्रमुख साहित्यकारो का अभिनन्दन आयोजित है। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के महानिदेशक और पुराविद्या-विशेषज्ञ श्री बालकृष्ण थापर की अध्यक्षता मे, इस सभा का उद्‌घाटन करने के लिए मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे हैं कर्नाटक के शिक्षामन्त्री श्री शंकरराव। अभिनन्दित होने वाले विद्वान हैं डॉ० बी० बी० शिरूर, श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन और श्री नीरज जैन।

डॉ० बी० बी० शिरूर कर्नाटक विश्वविद्यालय के स्नातक है। 'श्रवणबेलगोल का ऐतिहासिक और सास्कृतिक अध्ययन' उनके शोधप्रबन्ध का विषय था। वे जन्मत: जैन नही है, परन्तु जैन संस्कृति के लिए सम्मान और श्रवणबेलगोल के प्रति श्रद्धा-भक्ति उनके मन मे है। उन्होने अपने इस कन्नड ग्रन्थ मे इतिहास के अनेक विलुप्तप्राय तथ्यो का उद्‌घाटन किया है जिससे वह श्रवणबेलगोल का एक बहुमूल्य दस्तावेज बन गया है। कर्नाटक विश्वविद्यालय ने इसी शोध-प्रबन्ध पर श्री शिरूर को पी-एच.डी. की उपाधि प्रदान की है। इस ग्रन्थ को विश्वविद्यालय ने प्रकाशित भी किया है।

भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन ने जैनपुराणो की लोक-व्यवस्था को तथा प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के पुत्रो, भरत एव बाहुबली के आख्यान को, सुगम सक्षिप्त शैली मे प्रस्तुत किया है। ज्ञानपीठ से प्रकाशित उनकी पुस्तक का नाम है 'अन्तर्द्वन्द्वो के पार : गोमटेश्वर बाहुबली'। श्रवणबेलगोल के शिला-लेखो का अध्ययन करके लक्ष्मीचन्द्रजी ने गोमटस्वामी की प्रतिमा के निर्माण का प्रसग जोडकर इस पुस्तक को महोत्सव के लिए एक प्रासगिक पुस्तक बना दिया है। हिन्दी में श्रवणबेलगोल पर ऐसा प्रयास इसके पूर्व नही हुआ था। लक्ष्मीचन्द्रजी का यह योगदान इसलिए भी महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए कि महोत्सव के तीन-चार वर्ष पूर्व से उन्होने इसकी तैयारी की, तथा दो वर्ष पूर्व 1979 मे यह प्रकाशन उपलब्ध करा दिया। बाद मे श्रवणबेलगोल पर लेखनी चलाने वाले हिन्दी अग्रेजी के अनेक लेखको ने उनकी सामग्री का भरपूर उपयोग भी किया। महोत्सव समिति ने कर्नाटक शासन के सहयोग से गोमटस्वामी पर जो वृत्त-चित्र तैयार कराया है उसमे भी इसी पुस्तक को मूलाधार बनाया गया है।

सहस्राब्दि महोत्सव पर महोत्सव समिति द्वारा प्रकाशित हिन्दी स्मारिका 'महाभिषेक स्मरणिका' का सम्पादन भी श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन ने ही किया है। इसक अतिरिक्त श्रवणबेलगोल के महत्त्व को रेखाकित करने वाले, हिन्दी-अग्रेज़ी के अनेक लेख उन्होंने तैयार किये जिन्हे 'इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इण्डिया', 'धर्मयुग' 'नव भारत टाइम्स' आदि अनेक प्रसिद्ध पत्रो ने प्रकाशित करके जन-जन तक पहुँचाया।

गोमटस्वामी का गुणानुवादन करनेवाली एक और महान रचना 'गोमटेश गाथा' श्रवणबेलगोल के लिए श्री नीरज जैन का अनुपम उपहार है। वास्तव मे इस महान तीर्थ का अधिकांश इतिहास तो हमे मिलता ही नही है। मूर्ति के निर्माण के

सार्थक सन्दर्भ, मूर्तिकार का कुल, गोत्र और नाम, तथा मूर्ति की संरचना मे लगे काल और द्रव्य का कोई अनुमान ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर हम अभी तक जान नही पाये हैं। इस सुविधा रहित पृष्ठभूमि में, इतिहास के बिखरे सूत्रों को पकडकर, पौराणिक कथाओं को अपनी भक्ति-प्रवण कल्पना की तूलिका से सत-रंगी छवियाँ प्रदान करके नीरज जैन ने 'गोमटेश गाथा' के रूप मे शब्दो का एक मनोहर चित्र-फलक तैयार किया है। श्रवणबेलगोल का एक जड़ पात्र, चन्द्रगिरि ही, इस ऐतिहासिक उपन्यास का नायक है। वही पर्वत इतिहास के पूरे सन्दर्भ और गोमटस्वामी की संरचना का आँखो देखा हाल, उपन्यास के पाठक को सुनाता है। 'गोमटेश गाथा' को ऐतिहासिक उपन्यास कहा गया है पर वास्तव मे वह 'चन्द्रगिरि की आत्म-कथा' ही है। तथ्यो से भरपूर और रोचकता से ओत-प्रोत। सजीव चित्रण, प्रवाहमयी भाषा और अनुभूति-सिक्त अभिव्यक्ति इस रचना मे नीरज जैन की दूसरी विशेषता है। यह उल्लेखनीय कृति भी भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हुई है। गोमटेश्वर पर ही नही, बाहुबली पर भी, उपन्यास के रूप मे अपने ढंग की यह प्रथम कृति है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद ने गोमटेश-गाथा को 'गुरु गोपालदास बरैया' पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया है।

साहित्यकारो के सम्मान की इस सभा का समारम्भ करते हुए साहु श्रेयांसप्रसाद जी ने अध्यक्ष और मुख्य अतिथि का स्वागत किया। अभिनन्दनीय साहित्यकारो को अपनी बधाई देते हुए साहुजी ने जैन सस्कृति के प्रति निष्ठा और लगन के लिए उनकी सराहना की। उन्होने कहा कि साहित्य तो बहुत रचा जाता है परन्तु प्रभु के गुणानुवाद मे किया गया लेखन और लोकोपकार मे नियोजित श्रम अधिक सार्थक होता है।

उद्घाटन भाषण में शिक्षामन्त्री श्री शंकरराव ने साहित्यकारो की सेवाओ की सराहना करते हुए, उनके सार्वजनिक सम्मानार्थ यह आयोजन करने के लिए महोत्सव समिति को धन्यवाद दिया और तीनो लेखकों को बधाई दी। पश्चात् पुस्तको और स्मारिकाओं के विमोचन की प्रक्रिया सम्पन्न हुई। विमोचित साहित्य के विषय मे सक्षिप्त वक्तव्य प्रस्तुत हुए और फिर जैनमठ की परम्परा के अनुसार श्रीफल, शाल और चन्दन की माला से साहित्यकारो का अभिनन्दन किया गया।

सभा के अध्यक्ष श्री बालकृष्ण थापर ने अपने संक्षिप्त किन्तु मधुर वक्तव्य मे भारत की उत्कृष्ट सांस्कृतिक परम्पराओ का संवहन करने के लिए जैन कलाकारो की भूरि-भूरि प्रशसा की। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक तथ्यों पर लेखनी चलाना बहुत कठिन काम है। इतिहास दर्शन, भाषा और परम्पराओ के गहन अध्ययन के बाद ही लेखक इस प्रकार की कृतियाँ समाज को दे पाता है। प्राचीन मन्दिरो,

मूर्तियों और शिल्पावशेषों को इतिहास का प्रत्यक्षदर्शी-साक्ष्य निरूपित करते हुए श्री थापर ने कहा कि ये हमारे अतीत के मूक गवाह हैं, परन्तु डॉ० शिकुर, लक्ष्मी चन्द्र जैन या नीरज जैन जैसे इन गवाहों की भाषा समझने वाले मनीषी शोधार्थी जब इनसे सम्पर्क करते हैं, तब ये मूक-साक्ष्य बोलने लगते हैं। अपने गौरवमय अतीत की परतें खोलने लगते हैं। तब ऐसे शोध ग्रन्थ, इतिहास या 'गोमटेश गाथा' जैसे ऐतिहासिक उपन्यास हमें प्राप्त होते हैं। ये लेखक हमारे, आपके सबके सम्मान के पात्र हैं।

महोत्सव की अंग्रेजी स्मारिका 'गोमटेश्वर कमोमोरेशन वॉल्यूम' के सम्पादन के लिए मैसूर विश्वविद्यालय मे जैनालॉजी एवं प्राकृत के निवृत्तमान विभागाध्यक्ष डॉ० टी० जी० कलघटगी और कन्नड़ स्मारिका के सम्पादक व्याख्यान केसरी श्री ए० आर० नागराज का सम्मान इस सभा का अन्तिम कार्यक्रम था। यह सारा कार्यक्रम पूज्य आचार्यों, मुनियों, भट्टारको और आर्यिका माताओं के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

□

सम्मान की पद्धति

जैन धर्म संस्कृति या साहित्य के क्षेत्र मे कार्य करने वाला जो भी व्यक्ति श्रवण-बेलगोल आता है, समारोह समिति की ओर से अथवा मठ की ओर से उसे सम्मानित करने की परिपाटी इस मेले मे चल रही है। किसी भी कार्यक्रम के बीच मंच पर ऐसे व्यक्तियो को बुलाना, उपस्थित जन समुदाय के समक्ष उनकी सेवाओ का उल्लेख करना, और बडे आत्मीय ढग से, किसी विशिष्ट पुरुष के हाथों उन्हें सम्मानित कराना, एक प्रकार से यहाँ की परम्परा बन गयी है। प्राय: चन्दन की माला पहनाकर और श्रीफल हाथ में देकर सम्मान किया जाता है, परन्तु विशिष्ट व्यक्तियो को, इस प्रयोजन के लिए विशेष रूप से तैयार कराये गये शाल उढ़ाकर भी सम्मानित किया जा रहा है।

महोत्सव के सन्दर्भ में विशिष्टि अतिथियों को सम्मानित करने के लिए महोत्सव समिति ने विशेष रूप से बहुत से शाल तैयार कराये हैं। साभिप्राय भराव और बार्डर की विशेष डिजाइन के कारण ये शाल, इस महोत्सव की स्थाई यादगार की तरह, लोगो के पास अनेक वर्षों तक सुरक्षित रहेंगे। सुनहरी और रुपहली जरी के काम से इनकी चौड़ी किनारियाँ भरते समय उनमें स्वस्तिक के बीच में 'ॐ श्री गोमटेशाय नम:' लिखा गया है। बीच-बीच में हजार की संख्या '1000' अंकित की गयी है। इस प्रकार गोमटेश्वर के सहस्राब्दि महोत्सव का सन्दर्भ इन सभी दुशालों पर अंकित है।

समाज में व्यक्ति के द्वारा किये गये कार्यों का मूल्याकन हो, और उसके लिए उसका सार्वजनिक सम्मान किया जाय, यह आज के वातावरण मे कुछ बिरल-सी प्रक्रिया है। इस मेले मे प्रायः रोज ही इस प्रकार अभिनन्दन या सम्मान के दृश्य देखना सचमुच बहुत अच्छा लगता है।

श्री बाबूलाल पाटौदी अपनी सटीक टिप्पणियों के साथ सभा का सचालन कर रहे थे। सेठ लालचन्द हीराचन्द ने सम्मानित व्यक्तियो को माल्यार्पण किया। इस प्रकार सरस्वती-पुत्रो की साधना के अभिनन्दन का यह सक्षिप्त किन्तु सुन्दर कार्यक्रम सम्पन्न होता है।

▭

18.2.81

अनोखा जन-संगम

श्रवणबेलगोल मे यात्री और पर्यटक अब काफी सख्या में एकत्र हो गये हैं। यहाँ एक 'लघु भारत' ही बस गया है। शायद ही कोई ऐसा प्रदेश हो जहाँ के स्त्री-पुरुष इस मेले मे दिखाई न पडते हो। तरह-तरह के पहनावे वाली स्त्रियाँ और बच्चे इस मेले को अजब रंगीनी दे रहे हैं। उत्तरप्रदेश और राजस्थान की स्त्रियाँ, कन्नड और तमिल महिलाओ के साथ जब चलती, बैठती दिखाई देती है, खुले सिर वाली महाराष्ट्रीय और बगाली स्त्रियाँ जब लम्बे घूँघट वाली राजस्थानी मारवाडी और गुजराती महिलाओं के साथ मिलती बोलती दिखाई देती हैं, तब इस विशाल देश की एक अनोखी तस्वीर मेरी आँखो मे उभरती है। निराली और लुभावनी। भाँति-भाँति के खान-पान और रहन-सहन वाले लोग यहाँ हैं परन्तु कर्नाटक की इस धरती पर, अपनी-अपनी जीवन पद्धतियो के साथ सबका निर्वाह हो रहा है। प्रायः सभी जुदी-जुदी बोलियो वाले, भिन्न-भिन्न भाषाओ वाले है, परन्तु अपने देश की मातृ-भाषा के सहारे सबका काम चल रहा है। विविधताओ का ऐसा सामंजस्य, अनेकताओं की यह एकता, बस अनुभव करने की वस्तु है। नन्दन वन के इस वातावरण का आनन्द इस मे जीकर लिया जा सकता है, दूर बैठकर वह सम्भव नही।

यात्री आते ही जा रहे हैं। उप-नगरों के समस्त दस हजार तम्बू प्रायः भर गये हैं। जो खाली दिख रहे हैं उनका आरक्षण हो चुका है। किसी भी क्षण वे आबाद हो जायेंगे। सवा सौ से साढ़े छह सौ तक उनका भाडा, शासन को अग्रिम प्राप्त हो चुका है। गाँव मे जितने मकान, जितने कमरे और बरामदे भाड़े पर मिल सकते थे उन सब पर यात्रियो का कब्जा है। मेला अवधि के लिए पन्द्रह सौ से लगाकर पन्द्रह हजार तक उनका भाड़ा लोगो ने अदा किया है। सुनता हूँ किसी

ने अड़तीस हजार रुपये देकर चामुण्डराय वाटिका के पास एक प्लाट किराये पर लिया है, जिस पर होटल और काफी का काउन्टर चल रहा है। मेला के बाद तो उस प्लाट की बिक्री से भी इतनी राशि नही मिलेगी।

बाहर पेड़ों तले लोग अपने वाहनों में ठहरे हुए हैं। विन्ध्यगिरि और चन्द्रगिरि की झाडियो और चट्टानो की छाँह हजारो लोगो को पनाह दे रही हैं। परन्तु इस भीड में भी एक अनुशासन है। कोई ऐसी भावना अवश्य है, जो इन सब मे एक-सी विद्यमान है। वही इतने जनो को एक सहिता से बाँधे हुए है। कही कोई किल-किल नही, कोई प्रतिस्पर्धा नही। लडाई-झगडा, छीना-झपटी, कुछ भी तो नही। यह सामंजस्य इसलिए है कि सबका एक लक्ष्य है, एक गन्तव्य है। वे सब 22 फरवरी के मगल प्रभात की प्रतीक्षा कर रहे हैं जबसहस्र कलशो की सहस्र-सहस्र धाराएँ महाकाय गोमटेश्वर का प्रक्षाल करने के लिए मचल उठेंगी। विन्ध्यगिरि की छह सौ सीढियाँ, अब सीढियाँ नही रह गईं। प्रवेश द्वार से मन्दिर द्वार तक का मार्ग एक सुगम पथ जैसा बन गया है। उस पर लोगो का तांता टूटता ही नही। सुबह मे शाम तक, और देर रात तक, बाहुबली के दर्शनो के लिए जाता हुआ जनसमुदाय, ऐसा दिखाई देता है जैसे भक्तो की पक्ति विन्ध्यगिरि के कण्ठ की माला बनकर झूल रही हो।

□

नागर आपूर्ति

दैनिक आवश्यकताओं की प्रायः सभी वस्तुएँ, निर्धारित या वाजिब दाम पर जगह-जगह बिक रही हैं। मन चाही मात्रा मे उनकी खरीद की जा सकती है। गेहूँ, चावल, आटा और दाल, लकड़ी और कोयला, शक्कर और तेल सब कुछ खुली दुकानो पर बिक रहा है। कर्नाटक दुग्ध-विकास निगम द्वारा प्लास्टिक की थैलियो मे मशीन से पैक कर के ठण्डा किया गया, खालिश दूध हरेक उप-नगर मे पहुँचा कर बेचा जा रहा है। मिट्टी का तेल हाथ-ठेलो पर फेरी लगाकर हर घर, हर दुकान, हर तम्बू तक पहुंचाया जा रहा है। नारियल-पानी और ताजा गन्ने का रस कदम-कदम पर उपलब्ध है : कॉफी और इडली, डोसा, उपमा आदि खाद्य पदार्थ भी अधिक मंहगे नही हैं। इस भारी भीड में भी तीन-चार रुपये मे भरपेट भोजन उपलब्ध है। कर्नाटक टूरिज्म ने इन पदार्थों का एक चलता-फिरता होटल भी अपनी वैन पर चला रखा है। बाहर दूर-दूर तक तैनात अधिकारियों, कर्मचारियों और स्वयंसेवकों को इस चलित भोजनालय से बडी सुविधा मिल रही है। इसी प्रकार डाक तार विभाग और स्वास्थ्य विभाग भी अनेक वाहनों पर अपनी सेवाएँ दिन रात द्वार-द्वार तक पहुँचा रहे हैं।

□

तीर्थक्षेत्र कमेटी का नैमित्तिक अधिवेशन

आज भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने मुनि आर्यनन्दिजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए चामुण्डराय मण्डप में नैमित्तिक अधिवेशन का आयोजन किया है। तीर्थक्षेत्र कमेटी के ध्रौव्य फण्ड के लिए एक करोड़ की राशि के आश्वासन प्राप्त करने के उपलक्ष्य मे मुनिश्रीजी का यह अभिनन्दन किया जा रहा है। सर्वश्री पण्डित जगन्मोहनलालजी शास्त्री, भागचन्दजी सोनी, और नीरज जैन ने जैन-सस्कृति के संरक्षण मे आर्यनन्दि महाराज के योगदान की सराहना की। महामन्त्री के नाते श्री जयचन्द लोहाड़े तीर्थक्षेत्र कमेटी का संचालन बहुत योग्यतापूर्वक कर रहे हैं। इसके लिए इनकी प्रशसा करते हुए महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार सेठी ने शाल और माला से उन्हें सम्मानित किया। चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने कमेटी के कार्यों की प्रशसा की। कमेटी के अध्यक्ष सेठ लालचन्द हीराचन्द ने अपने वक्तव्य मे सभी सहयोगी बन्धुओ के प्रति आभार प्रकट करते हुए मुनिश्री को नमन किया।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से ध्रौव्य फण्ड के लिए छुट-पुट राशियाँ एकत्र करने के लिए पाँच, दस और पचास रुपये के कूपन छपाये गये थे। अनेक स्वयंसेवक मेले में घूम-घूमकर कूपन बेचते थे, इससे बहुत बडी राशि चाहे भले एकत्र न हुई हो, परन्तु अधिक लोगो तक कमेटी का प्रचार हुआ। नीरज जैन के निर्देशन में सजाई गई पुरातत्त्व चित्र प्रदर्शनी मे भी कमेटी ने जैन पुरा सम्पदा का पर्याप्त प्रचार किया।

▭

20.2.81

आचार्यरत्न की जन्म-जयन्ती

आज सभी साधुगण मध्याह्न की सामायिक से उठकर सीधे चामुडराय-मण्डप में आ विराजे हैं। मण्डप दर्शको और श्रोताओं से आज कुछ जल्दी भर गया है। जनमंगल महाकलश की शोभा-यात्रा की तैयारियाँ चल रही हैं किन्तु मुख्य अतिथि के आने मे अभी बिलम्ब है। उसके पूर्व यहाँ आचार्य देशभूषणजी का पचासवाँ दीक्षा-दिवस मानाया जा रहा है। 'आचार्यरत्न' जैसे गरिमापूर्ण सम्बोधनों से उन्हें सम्बोधित किया जाता है। पिच्छी, कमण्डलु लेकर देशाटन करते हुए इस चौथी बार वे महामस्तकाभिषेक में पधारे हैं। इस समय उनकी आयु नब्बे वर्ष के आस-पास कही जाती है। उनके शिष्यों की संख्या भी अच्छी है। पूरा दिगम्बर जैन समाज आज सम्मानपूर्वक उनके समक्ष नत है।

रंग-बिरंगी लघु-पताकाओं से सजे हुए मंच पर श्रद्धा और उल्लास के प्रतीक जैसे अनेको थाल मेवा-मिष्ठान और फलों से भरे रखे हैं। संस्कृत में आचार्यश्री की स्तुति पढ़कर एक भक्त उनकी आरती उतारते हैं। तभी पीछे की ओर से कोई सज्जन पुष्प-वृष्टि करके अपनी भक्ति प्रकट करते हैं। एक प्रसिद्ध जैन प्रवासी के साथ लन्दन से आये हुए दो गौरांग छात्र मंच पर आते हैं और महामन्त्र का त्रुटि-विहीन उच्चारण करते हैं। फिर द्रव्य-संग्रह की पाँच गाथाओं को कण्ठस्थ दोहराकर जैनदर्शन के वे विदेशी छात्र आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती को नमन करते हैं। मुनिजन मंच पर विराजते हुए अध्ययन और मनन में सलग्न हैं। चार मुनिराज अपने केशलोंच कर रहे हैं। अपने हाथो से अत्यन्त निर्ममता पूर्वक अपने सिर के केश उखाडकर फेंकते जाना, शरीर के प्रति अपनी निर्ममत्व चिन्तन-धारा और साधना का प्रत्यक्ष प्रयोग है। पण्डाल में हजारो नेत्र इस दृश्य को विस्मित होकर देख रहे हैं। दिगम्बर साधु की निस्पृहता और स्वावलम्बी सिंह-वृत्ति के प्रति लोगों के मन मे श्रद्धा के नवांकुर फूट रहे है।

सन् 1965 में पाकिस्तानी आक्रमण के समय जब हमारा देश संकटापन्न स्थितियो से गुजर रहा था, साहस और संकल्प जब हमारे सबसे जरूरी तत्त्व थे, तब हमारे देश के प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने इन सन्त के चरणो में नमस्कार करके अभय का वरदान पाया था। आचार्यश्री ने शास्त्रीजी के मस्तक पर हाथ रखकर अशीष प्रदान करते हुए कहा था, "भारत की विजय होगी और उसकी कीर्ति बढ़ेगी।" वह प्रेरक राष्ट्रीय प्रसंग, जैन साधु संस्था के आधुनिक इतिहास में स्मरणीय घटना की तरह जुड़ा है। इस प्रसंग ने आचार्य देशभूषणजी को भी राष्ट्रव्यापी ख्याति दिलायी है। इस प्रसग से जिन-शासन की अतिशय प्रभावना हुई है।

चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी की पहल पर, अनोखी तपस्या और धर्म प्रभावना के उपलक्ष्य में, समस्त दिगम्बर जैन समाज की ओर से आचार्यश्री के लिए 'सम्यक्त्वचूडामणि' की उपाधि की घोषणा करके आज उन्हें एक श्रद्धा-पत्र समर्पित किया गया। मण्डप उनकी जयकारों से गूँज उठा है। लोगों की भावना असीम है, परन्तु समय की सीमा है। फिर भी गुरुवन्दना का द्योतक यह संक्षिप्त समारोह प्रभावक है और मन-मस्तिष्क पर अपनी स्मृतियाँ गहराई से अंकित करता है।

▭

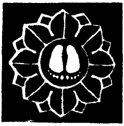
एलाचार्यजी को उपाधि

एलाचार्य विद्यानन्दजी सुदूर उत्तरांचल से चलकर इस महोत्सव का मार्ग-

दर्शन करने के लिए श्रवणबेलगोल पधारे हैं। जैन दर्शन के अनेक गूढ तत्त्वों का वैज्ञानिक विश्लेषण अपने श्रोता समुदाय के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए तथा विश्व-धर्म के उपदेशो द्वारा सत्य और अहिंसा की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए मुनिश्री का गुणानुवाद करने या उन्हे किसी उपाधि से मण्डित करने की भावना भी संयोजको के मन मे थी। उस पर कई दिन तक काफी सोच-विचार किया गया था।

इन्दौर मे पिछले चातुर्मास के समय मुनिश्री को 'सिद्धान्त चक्रवर्ती' की उपाधि वहाँ की समाज द्वारा दी गई थी। अभी तक इस उपाधि का उनके गुरुदेव आचार्य देशभूषणजी की उपस्थिति मे पुष्टीकरण नही हुआ था, अत. आज, आचार्यश्री के समक्ष उसी पदवी का पुष्टीकरण किया गया। अब मुनिश्री का नामोच्चार किया जायेगा 'सिद्धान्त-चक्रवर्ती, एलाचार्य, उपाध्याय मुनि विद्यानन्द'।

उत्सव के अन्त मे दोनो सन्तो के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए भट्टारक स्वामी जी अपनी भावना इन शब्दो मे व्यक्त करते हैं—"आचार्य महाराज के प्रति हम क्या कहे ? इस अशक्त वृद्धावस्था मे कोथली से चलकर यहाँ तक आने का उन्होने कष्ट उठाया यह गोमटस्वामी के चरणो मे उनकी भक्ति और हम पर उनके स्नेह-भाव का प्रतीक है। मेले मे उनका दर्शन प्राप्त हुआ यह लाख-लाख लोगो का सौभाग्य ही कहना चाहिए।"



सर्वधर्म सम्मेलन

उन्नीस फरवरी को चामुण्डराय मण्डप में दोपहर की सभा 'सर्व धर्म सम्मेलन' की सभा थी। धर्मस्थल के धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगड़े की अध्यक्षता में आयोजित इस सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए उडुपी से पेजावर मठ के मठाधीश विख्यात सनातन धर्मगुरु श्री विश्वेशतीर्थ श्रीपाद स्वामीजी को आमन्त्रित किया गया था। श्रीपाद स्वामी के अतिरिक्त इस सम्मेलन के अतिथि वक्ता थे गौड़ सम्प्रदाय के प्रभावक व्याख्याकार, आदि चुचुनगिरि के श्री बालगंगाधरनाथ स्वामीजी, मुनि सुशीलकुमारजी, सिख धर्म के व्याख्याता मेजर जनरल एस० एस० उबान, संसद सदस्य श्री भीखूराम जैन और सिद्धान्ताचार्य पण्डित कैलाशचन्दजी शास्त्री वाराणसी। सुत्तूर के मठाधीश श्री शिवरात्रि राजेन्द्र स्वामीजी अस्वस्थता के कारण स्वय नही पधार सके पर उन्होंने अपने उत्तराधिकारी को सम्मेलन की श्री वृद्धिहेतु भेजा था।

सर्वप्रथम समागत धर्मगुरुओ और विद्वानो का स्वागत करते हुए महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयासप्रसाद जैन ने अपने स्वागत भाषण मे जीवदया, मैत्री और सह-अस्तित्व को सभी धर्मों की धुरी निरूपित करते हुए, 'सर्वधर्म समभाव' की पृष्ठभूमि मे इस सम्मेलन के सभी सहभागी महानुभावो का अभिनन्दन किया। व्याख्यानकेसरी श्री ए० आर० नागराज ने सम्मेलन के प्रस्ताविक वक्तव्य में अनेकान्त के प्रवक्ता वीतराग सर्वज्ञदेव का स्मरण करते हुए मुख्य अतिथि को उद्घाटन भाषण के लिए आमन्त्रित किया।

पेजावर मठाधिपति श्री विश्वेशतीर्थ श्रीपाद स्वामीजी ने सम्मेलन का शुभारम्भ करते हुए अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण प्रवचन प्रदान किया। पहले कन्नड़ मे प्रारम्भ करके फिर धाराप्रवाह संस्कृत में अपने आप को अभिव्यक्त करते हुए उन्होने कहा कि समस्त बाह्याडम्बर हटाकर ही सत्य का साक्षात्कार किया जा सकता है। आज अतरग की पवित्रता दुर्लभ होती जा रही है। यही सबसे बड़ी विडम्बना है। स्वामी जी ने आगे कहा कि धार्मिक रीति-रिवाजों में भिन्नता और विचारो में विविधता के बावजूद सभी भारतीय धर्मों में कहीं न कहीं समानता अवश्य है। उन्होंने जीवदया और सदाचार को धर्म का मूलाधार मानते हुए इन दोनों को मानव अस्तित्व का अनिवार्य तत्त्व बताया।

श्री बालगगाधरनाथ स्वामीजी ने परिग्रह की वासना को सबसे बड़ा अधर्म बताते हुए अनाकाक्षा और सतोष की उपलब्धि का महत्त्व स्थापित किया। उन्होंने कहा कि तृष्णा के प्रवाह में डूबकर आज मनुष्य स्वयं अपने विनाश के बीज बो रहा है। यही इस कलिकाल का सबसे बड़ा अभिशाप है। तृतीय वक्ता मुखपट्टिकाधारी अमेरिका प्रवासी मुनि सुशील कुमारजी ने अहिंसा की सूक्ष्म व्याख्या करते हुए असग्रह को उसका साधक तत्त्व बताया। उन्होंने कहा कि सुख और सतोष के लिए जगत् की ओर निहारना छोड़कर अपने ही अन्तर में हमें उसकी शोध करना पड़ेगी। इस शोध के बिना धर्म का अभीष्ट न कभी किसी को प्राप्त हुआ है, न कभी हो सकेगा।

विश्वधर्म शान्ति सम्मेलन की भारत शाखा के महामन्त्री मेजर जनरल एस० एस० उबान, उदार विचारधारा के विद्वान हैं। सिख सम्प्रदाय के गुरु-प्रणीत उपदेशो को सरलतम शब्दों में प्रस्तुत करते हुए उन्होंने हमदर्दी और भाईचारे की भावना को इन्सान का सबसे बड़ा उसूल बताया और आपसी बैर-विरोध तथा खुदगर्जी से सबको दूर रहने की सलाह दी। दर्शन के अध्येता विद्वान, संसद सदस्य श्री भीखूराम जैन ने महावीर के पाँच उपदेशों मे से अपरिग्रह को आज के मानव के लिए सबसे उपयोगी विचार बताया। उन्होंने इच्छा को दुखों की जननी और निस्पृहता को सुख का साधन बताते हुए कहा कि आज समूचे विश्व में हिंसा और संघर्ष का जो धुआँ फैल रहा है वह तृष्णा और ईर्षा से ही उत्पन्न हुआ है। जब तक मनुष्य अपनी आवश्यकताओं पर अंकुश लगाकर स्वतः सतुष्ट होने का प्रयास नही करता तब तक सुख और शान्ति से उसका परिचय होना भी असंभव है।

जैन विचार पद्धति के मर्मज्ञ विद्वान् सिद्धान्ताचार्य पण्डित कैलाशचन्द्रजी शास्त्री ने धर्म को जीव मात्र के लिए कल्याणकारी अमृत की सज्ञा दी। आत्म-अभिज्ञान को साधना की प्रथम सीढ़ी निरूपित करते हुए उन्होंने बाह्य उपाधियो और अतरग के विकारो से पृथक् अपनी आत्मा की उपलब्धि पर जोर दिया। शास्त्रीजी ने बताया कि क्रोध, अहकार, माया-चारी और प्रलोभन की भावना व्याधि के समान हमारे मन को ग्रसती चली जाती है। इसके विपरीत शान्ति, सरलता, सौजन्य और सतोष हमारी आत्मा की अपनी नैसर्गिक विभूतियाँ हैं। इन विभूतियो को पाने के लिए बाहर की दौड़-धूप का कोई अर्थ नही है। आत्मशक्ति का अवलंबन लेकर यदि हम अपने-अपने अन्तर मे व्याप्त विकारो का शमन कर सकें तो ये विभूतियाँ स्वतः हमारे भीतर प्रकट हो जायेंगी। आत्मा की वही निर्विकार और स्वपर-कल्याणकारी परिणति ही सभी धर्मों का अन्तिम अभीष्ट है।

सर्वधर्म सम्मेलन के अध्यक्ष पद की गरिमा का निर्वाह करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री वीरेन्द्र हेगड़े ने कहा कि भारत मे वेश-भूषा और भाषा के सैंकडो अन्तर हैं, परन्तु उसके जनमानस की अंतर्वाहिनी धर्मधारा मे कोई अन्तर नही है। जन-जन के मन मे व्याप्त धर्म की वह ज्योति शाश्वत है, कभी नष्ट नही होती। जिनके मन में अधर्म है उन्हे भी धर्म उपयोगी है। अपने भाषण मे महामस्तकाभिषेक की आलोचना करने वालो की चर्चा करते हुए श्री हेगडे ने विश्वास व्यक्त किया कि यदि एक बार उन्हे बाहुबली का यह अभिषेक देखने को मिले तो ईश्वर की विराटता और मानव की लघुता उनकी समझ मे आ जायेगी और धर्म की पतित पावनी पद्धति उनके भी जीवन का अग बन जायेगी

सभी विद्वान वक्ताओ की सराहना करते हुए श्री हेगडे ने सभी सम्प्रदायों मे निहित धर्म को सर्वहितकारी और अविरोधी ईश्वरीय सन्देश के रूप मे ग्रहण करने की प्रेरणा दी। कन्नड़ कवि रत्नाकर के 'रत्नाकार-शतक' का श्री ए० आर० नागराज द्वारा सम्पादित संस्करण जैन मठ की चन्द्रगुप्त ग्रन्थमाला से प्रकाशित किया गया है। श्री हेगडे द्वारा उस कृति का विमोचन कराया गया।

श्री हेगड़े का सम्मान

सम्मेलन के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र हेगड़े का सम्मान उस दिन का सर्वाधिक प्रतीक्षित और



77 विन्ध्यगिरि की पश्चिमी सीढ़ियो पर विद्युत् व्यवस्था का प्रारम्भ
कर्नाटक के ऊर्जा मन्त्री श्री अस्वत्थ रेड्डी के द्वारा



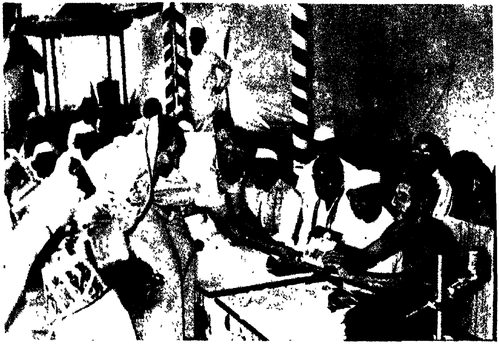
78 गंगवाल अतिथि-निवास का उद्घाटन श्री वीरेन्द्र हेगड़े द्वारा



79 भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आयोजित 'जैन कला चित्र' प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री रमेशचन्द जैन द्वारा

80 प्रदर्शनी का अवलोकन कर रहे है साहु श्रेयान्सप्रसाद जैन और सरसेठ भागचन्द सोनी





81 श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन और श्रीमती कुन्था जैन अपनी रचनाएं एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी को भेंट करते हुए

82 श्री रघुनाथ शर्मा के संस्कृत नाटक 'बाहुबलि-विजयम्' का विमोचन





८३ आचार्यरत्न देशभूषणजी महाराज की पचासवी दीक्षा जयन्ती के अवसर पर उन्हे 'विनयांजलि' अर्पित करते हुए श्री वीरेन्द्र हेगड़े

८४ सर्व-धर्म सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर पेजावर मठ के स्वामीजी का स्वागत



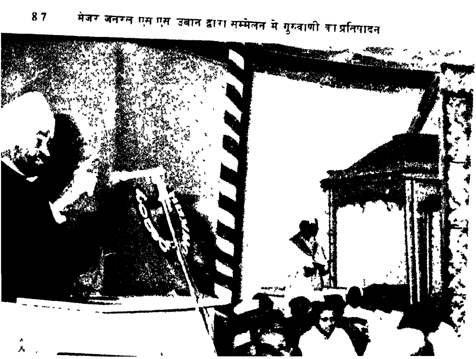


85 उडूपी के पेजावर मठाधीश श्री विश्वेशतीर्थ स्वामीजी द्वारा सम्मेलन का उद्घाटन



86 बाहुबली स्वामी के कालजयी उपदेशो की अमृत वर्षा करते हुए सिद्धान्ताचार्य पंडित कैलाशचन्द्र जी

87 मेजर जनरल एस एस उबान द्वारा सम्मेलन मे गुरुवाणी का प्रतिपादन





88 श्री ए. आर. नागराज द्वारा संपादित 'रत्नाकरशतक' का अध्यक्ष श्री हेगडे द्वारा विमोचन



89

श्री वीरेन्द्र हेगडे द्वारा
अध्यक्षीय भाषण मे
सर्व-धर्म समभाव पर जोर



90 अतिथि का सम्मान

91 आदिचुनचुनागिरि के मठाधीश
श्री बालगंगाधर स्वामीजी के साथ परिचर्चा



रोचक कार्यक्रम था। श्री मंजुनाथेश्वर तीर्थ धर्मस्थल के युवा अधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगड़े का कर्नाटक की धर्मप्राण जनता के मन में अनुपम स्थान है। सम्भवत. श्री हेगडे कर्नाटक के ही नही, देश के धार्मिक व्यक्तियों में सर्वाधिक सम्माननीय गृहस्थ है। सर्वधर्म सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए सौम्यमूर्ति श्री हेगडे निश्चित ही उपयुक्त व्यक्ति थे। धार्मिक और साम्प्रदायिक कट्टरताओ से मुक्त उनका सुदर्शन व्यक्तित्व सम्मोहक भी है। अपने संस्थान के अन्तर्गत स्कूल, कॉलेज, कल्याण-मण्डप, भोजनशाला, दानशाला और अस्पताल जैसी जन-कल्याण की अनेक जनोपयोगी सस्थाओ का वे सचालन करते हैं। अपनी जननी श्रीमती रत्नम्मा हेगडे की इच्छानुसार बाहुबली की चौदह मीटर ऊँची नवीन प्रतिमा का निर्माण कराकर उन्होने धर्मस्थल मे एक टेकरी पर उसकी स्थापना की है, जिससे हेगडे वंश की ख्याति मे अतिशय वृद्धि हुई है।

श्री हेगडे को समर्पित अभिनन्दन-पत्र का वाचन श्री एम० सी० अनन्तराजैया द्वारा किया गया। इस प्रशस्ति मे श्री हेगडे को 'अभिनव-चामुण्डराय' उपाधि से अलकृत किया गया। सेठ लालचन्द हीराचन्द द्वारा माल्यार्पण के उपरान्त साहु श्रेयासप्रसादजी ने उनके कन्धे पर शाल फैलाकर जब उन्हे स्नेह से गले लगाया तब सारा उपस्थित समुदाय देर तक हर्ष-विभोर होकर करतल-ध्वनि से आनन्द प्रकट करता रहा।

आशीर्वचन के रूप मे एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी ने अपना सक्षिप्त प्रवचन देते हुए 'विश्व-धर्म' के रूप मे ऐसे धर्म की कामना की जो मनुष्यो के लिए ही नही, वरन जीवमात्र के लिए हितकारी हो। ऐसा धर्म जो सबको सबके साथ जीना सिखाता हो। मुनिश्री ने कहा कि निश्चित ही सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और प्रेम की भावना के बिना ऐसे किसी विश्वधर्म की कल्पना भी नही की जा सकती। सम्मेलन के सभी विद्वान् वक्ताओ को महोत्सव समिति की ओर से श्रीफल, माला आदि के द्वारा सम्मानित किया गया। धर्मगुरुओ के पद, प्रतिष्ठा और परम्परा के अनुरूप उन्हे भेट और सम्मान सामग्री समर्पित की गयी। श्री विश्वेशतीर्थ स्वामीजी को साहुजी द्वारा अभिनन्दन-पत्र चन्दन मजूषा मे रखकर समर्पित किया गया।

सभा का समारोप स्वस्तिश्री चारुकीर्ति स्वामीजी के अभिभाषण से हुआ। स्वामीजी ने श्रवणबेलगोल मठ की ओर से और महोत्सव समिति की ओर से सभी आगतुक महानुभावो का आभार मानते हुए कहा कि महामस्तकाभिषेक के अवसर पर यह प्रथम बार सर्वधर्म सम्मेलन की आयोजना उन्होने की और उसमे जिस वात्सल्य और स्नेहपूर्वक सबका सहयोग मिला है उससे उनका उत्साह बढा है। उन्होने कहा कि विन्ध्यगिरि पर खडे हुए गोमटस्वामी सबके आराध्य है और हम सब उनके भक्त हैं। उनके उपदेश सदा सर्वदा सबके लिए हितकारी हैं। उनके महामस्तकाभिषेक के अवसर पर यहाँ सबका स्वागत है। आप सबके योगदान के लिए आपको बहुत बहुत साधुवाद।

सभा सचालक, भारतीय ज्ञानपीठ के मन्त्री डॉ० विमलप्रकाश ने सर्वधर्म समभाव की भावना को सम्मेलन का मुख्य हेतु निरूपित किया और सभी का धन्यवाद करते हुए सम्मेलन का समापन किया।

प्रधानमंत्री द्वारा गोमटेश की वन्दना

ससार के आश्चर्यो मे गिनी जाने वाली, एक ही पाषाण-खण्ड में तराशी गयी, विश्व की विशालतम प्रतिमा का सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना महोत्सव, अनेक दृष्टियों से अभूतपूर्व महोत्सव के रूप मे सम्पन्न हुआ। भारत की आस्थावान धार्मिक भाव-भूमि की सम्पूर्ण गरिमा से युक्त इस समारोह को राष्ट्रीय गौरव प्राप्त था। हर प्रान्त के, हर जाति और सम्प्रदाय के, हर वर्ग और वय के लाखो भारतीय और हजारो विदेशी नागरिक इस महोत्सव की झलक पाने के लिए श्रवणबेलगोल पहुँच रहे थे।

इस विशाल आयोजन के प्रारम्भिक चरण मे पहले ही 'जनमंगल महाकलश' का पूरे देश में प्रवर्तन हो चुका था। देश की राजधानी से चलकर, लगभग पाँच महीने की अवधि में भारत के अधिकांश प्रदेशो का भ्रमण करता हुआ, यह महाकलश मुख्य अभिषेक से दो दिन पूर्व ही श्रवणबेलगोल पहुँचा था। महाकलश की यह यात्रा भारत के श्रद्धालु जनमानस के द्वारा गोमटेश बाहुबली की 'प्रतीक-पूजा' ही थी। इस कलश के माध्यम से देश के कोने-कोने में बसे लाखो भक्त जनो ने अपने श्रद्धा-सुमन भगवान् बाहुबली के चरणो मे समर्पित किये थे।

29 सितम्बर 1980 को दिल्ली के लाल-किला मैदान मे पचास हजार की विशाल जन-सभा के समक्ष, जनमगल महाकलश का प्रवर्तन करते हुए, भारतीय गणराज्य की लोकप्रिय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने इस राष्ट्रव्यापी अभियान का शुभारम्भ किया था। उस समय गर्व सहित उन्होने अपने पूज्य पिता, देश के प्रथम प्रधान मन्त्री, श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा 1951 मे की गयी बाहुबली यात्रा का उल्लेख किया था। महोत्सव की सफलता की कामना करते हुए उन्होने, इस महामस्तकाभिषेक के ऐतिहासिक अवसर पर, स्वत. उपस्थित होकर बाहुबली के चरणो में अपने प्रणाम प्रस्तुत करने की भावना भी व्यक्त की थी। श्रवणबेलगोल पहुँचने पर आज श्रीमती गाँधी की वह भावना साकार हो उठी थी।

कुछ मास पूर्व महोत्सव समिति की ओर से श्री श्रेयासप्रसाद जैन ने जब श्रीमती गाँधी को श्रवणबेलगोल आने का निमन्त्रण दिया, तब उन्होने प्रसन्नता पूर्वक अपनी स्वीकृति प्रदान करते हुए, मुख्य अभिषेक से एक दिन पूर्व 21 फरवरी का दिन गोमटेश के दर्शनो के लिए चुना। महोत्सव के संयोजको ने अपनी प्रिय प्रधानमन्त्री के स्वागत के लिए बड़ी तैयारियाँ की थीं। अर्पित करने के लिए उन्हें आर्किड-पुष्पो की माला सीलोन से प्राप्त की गयी थी। आर्किड के दुर्लभ पुष्पो की ताजगी और महक महीनों तक वैसी ही बनी रहती है। कर्नाटक के एक कुशल शिल्पी ने श्वेत चन्दन में गोमट स्वामी की वह आकृति उत्कीर्ण की थी, जिसे इस यात्रा के स्मृति-उपहार के रूप में श्रीमती गाँधी को भेंट किया जाना था।

श्रवणबेलगोल के एक छोर पर, कॉलिज होस्टल के समीप बहुत पहले ही हेलीपैड का निर्माण हो चुका था। जहाँ श्रीमती गाँधी का हेलीकॉप्टर उतरने वाला था, वहीं उनकी जनसभा का आयोजन किया गया था।

शुभागमन व अगवानी

शनिवार 21 फरवरी को मध्याह्न बेला में भारतीय वायुसेना का हेलीकॉप्टर प्रधानमन्त्री को लेकर श्रवणबेलगोल की धरती पर उतरा। उनके साथ केन्द्रीय पेट्रोलियम और ऊर्जा मन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी, स्वास्थ्य मन्त्री श्री शंकरानन्द, जहाजरानी मन्त्री श्री वीरेन्द्र पाटिल, रेलवे राज्यमन्त्री श्री जाफर शरीफ और संसद सदस्य श्री जे० के० जैन दिल्ली से पधारे। उनकी निजी सहायक कुमारी निर्मला देशपाण्डे भी साथ में आयीं। कर्नाटक के राज्यपाल श्री गोविन्दनारायण और मुख्यमंत्री श्री आर० गुण्डूराव भी, बंगलोर से हेलीकॉप्टर से साथ ही आये। हेलीपैड पर उतरते ही साहु श्रेयांसप्रसादजी ने अतिथियों का स्वागत किया और स्वागतार्थ वहाँ उपस्थित अन्य जनों का प्रधानमन्त्री से परिचय कराया। थोड़ी ही दूर पर उनके दर्शन के लिए जो जन-समूह बार-बार 'इन्दिरा गाँधी की जय' बोलता खड़ा था, दोनों हाथ जोड़कर श्रीमती गाँधी ने उन सबका अभिवादन स्वीकार किया। तत्काल ही उनका अति व्यस्त कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया।

परिक्रमा और पुष्पवर्षण

सर्वप्रथम श्रीमती गाँधी ने हेलीकॉप्टर से ही भगवान् गोमटेश की गगन-परिक्रमा करते हुए विन्ध्यगिरि पर्वत पर पुष्प-वर्षण किया। उनकी पुष्पांजलि मे बंगलोर से आये ताजे सुगंधित पुष्पो के साथ चाँदी के मत्र-पूत पुष्प भी शामिल किये गये। महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयांसप्रसादजी इस परिक्रमा मे उसी हेलिकॉप्टर मे प्रधानमत्री के साथ रहे। उन्होंने उस विशाल मेले की संयोजना समझाते हुए इन्दिराजी को पूरे मेले का विहगावलोकन कराया। उसी समय दूसरे हेलीकॉप्टर मे कैमरामैनो तथा पत्रकारों ने भी प्रतिमा की परिक्रमा और मेले का अवलोकन किया। इस विहंगम दृश्य को अनेक समाचार पत्रो ने सवाद और चित्रों के रूप में यथा अवसर प्रकाशित किया।

इस बीच उस छोटे से हैलीपैड पर एक मजेदार घटना घटित हो गयी। श्रीमती गाँधी पुष्पवर्षण के लिए दूसरे हेलीकॉप्टर पर बैठने जा ही रही थी कि सहसा श्री गुण्डूराव कह उठे—"बहुत खेद है कि रोप-वे की व्यवस्था नहीं हो पायी, इसीलिए आप बाहुबली का दर्शन नहीं कर पा रही हैं।"

श्रीमती गाँधी ने मुख्यमन्त्री के इस सोच पर कटाक्ष करते हुए हँसते-हँसते उत्तर दिया—"आप भगवान् को नीचे उतार लाने की बात नही सोचते, यही क्या कम है? जब मैं वैष्णव देवी के दर्शन करने पहुँच सकती हूँ तब यहाँ ऊपर तक जाने मे मुझे क्या परेशानी थी? आप लोगों ने जाने ही नहीं दिया।"

गुरु वन्दना

जनसभा के लिए मंच पर जाने के पूर्व श्रीमती गाँधी को, मच के ही पास धवल वस्त्रों से निर्मित एक छोटी कुटी में ले जाया गया। वहाँ सिद्धान्तचक्रवर्ती एलाचार्य मुनि विद्यानन्द जी और जैनमठ के कर्मठ भट्टारक स्वस्तिश्री चारुकीर्ति स्वामीजी के साथ उनका वार्तालाप हुआ।

साहु श्रेयांसप्रसाद जैन, श्री वीरेन्द्र हेगड़े, श्रीमती शरयू दफ्तरी और श्रीमती सरयू दोशी आदि गिने-चुने लोगों के साथ प्रधानमन्त्री के लगभग पन्द्रह मिनट का समय एलाचार्य मुनिजी और भट्टारक स्वामीजी के सान्निध्य में वहाँ व्यतीत किया। एलाचार्यजी ने शान्ति के प्रयत्नों को मानवता के अस्तित्व के लिए आवश्यक निरूपित करते हुए, उस दिशा मे पूर्व प्रधानमन्त्री स्व० पण्डित जवाहरलाल नेहरू के प्रयत्नो की सराहना की। विश्वशान्ति के प्रयासो के लिए श्रीमती गांधी की प्रशसा करते हुए एलाचार्यजी ने उनकी सफलता के लिए मंगल आशीष प्रदान किये। अत्यन्त विनय पूर्वक एलाचार्यजी से विदा लेकर श्रीमती गाँधी कुटिया से बाहर आयीं। एक क्षण के उपरान्त ही जनसभा के लिए बनाये गये मुख्य मंच पर लगभग तीन लाख के विशाल जन समुदाय ने उनका दर्शन किया। सादे सफेद वस्त्रों में श्रीमती गाँधी अत्यन्त सौम्य और प्रसन्न दिखाई दे रही थीं।

प्रधानमन्त्री जब एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी की कुटिया से निकलकर मंच की ओर आयी तब उन्होंने पूछा—"आचार्य देशभूषण जी कहाँ विराजते हैं?"

यह ज्ञात होने पर कि सामने मंच पर ही आचार्यश्री विराजमान हैं, श्रीमती गाँधी ने वन्दन हेतु वहाँ जाना चाहा। सुरक्षा अधिकारियो की असहमति के कारण यह सम्भव नही हुआ, तब मच की ओर हाथ जोडकर आचार्यश्री का अभिवादन करके ही उन्हे सन्तोष करना पड़ा।

जनसभा

आज कर्नाटक में सार्वजनिक अवकाश घोषित किया गया था। यात्रियो के अतिरिक्त भी बडी दूर-दूर से अपनी प्रिय नेता की एक झलक देखने और उनका भाषण सुनने के लिए बहुत लोग वहाँ एकत्र हुए थे। आज वहाँ एक छोटा हिन्दुस्तान ही उपस्थित हो गया था। मंच से बहुत दूर-दूर तक बैठा हुआ वह विशाल समुदाय 'जनसमुद्र' सा दिखाई देता था। सामने की ओर अर्धवर्तुलाकार परिधि मे तीन ऊँचे मच बड़ी सुरुचि से सजाये गये थे। बीच का मच प्रधानमन्त्री और विशिष्ट अतिथियो के लिए था। बायीं ओर के मंच पर आर्यिका माताएँ और दाहिनी ओर के मच पर अनेक दिगम्बर जैनाचार्यों के साथ उनका निष्परिग्रह शिष्य समुदाय विराजमान था।

मच पर आते ही दोनो हाथ जोडकर श्रीमती गाँधी ने दोनों ओर के मंचो पर आसीन साधु और साध्वियो को नमन करते हुए जन समुदाय का अभिवादन किया। जनता ने तालियों के साथ उनकी जयकार के द्वारा, बडे प्रफुल्ल मन से श्रीमती गाँधी का स्वागत किया।

मच पर प्रधानमन्त्री के साथ मध्यप्रदेश के वयोवृद्ध राजनेता, जनमगल महाकलश योजना के प्रमुख भैया मिश्रीलाल गगवाल, श्री वीरेन्द्र हेगडे, केन्द्रीय मन्त्री सर्वश्री प्रकाशचन्द सेठी, शकरानन्द और जाफर शरीफ, स्थानीय मन्त्री श्री श्रीकण्ठैया, सेठ लालचन्द हीराचन्द, सर सेठ भागचन्द सोनी, टाइम्स आफ इण्डिया के प्रबंधक श्री रमेशचन्द जैन और संसद सदस्य श्री जे० के० जैन उपस्थित थे। मुख्यमन्त्री श्री गुण्डूराव मंच की सीढ़ियों पर अपने अतिथि की अभ्यर्थना के लिए खड़े थे। भट्टारक स्वामीजी और श्री श्रेयांसप्रसाद जैन के साथ श्रीमती गाँधी ने मंच पर आसन ग्रहण किया।



92 विमुग्ध राष्ट्रनायक

I came, I saw
and left enchanted.

Shravanabelagola
7 9 1951

—Jawaharlal Nehru

मैं यहाँ आया, मैंने दर्शन किये,
और विस्मय-विमुग्ध रह गया।

श्रवणबेलगोल
7.9.1951

—जवाहरलाल नेहरू



93

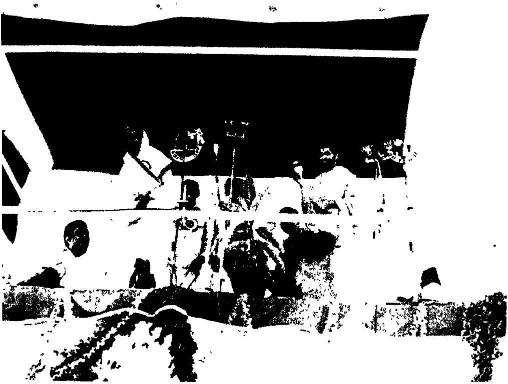
21 फरवरी, 1981 को मध्याह्न में हेलीपेड पर श्रीमती इन्दिरा गांधी का आगमन

94 सभा मंच पर
महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्रीमान् साहूजी ने माला और शाल से प्रधानमन्त्री को सम्मानित किया



95 महोत्सव समिति की ओर से श्रीमती इन्दिरा गांधी को चंदन में उकेरी गई गोमटेश्वर की अनुकृति भेंट की गई

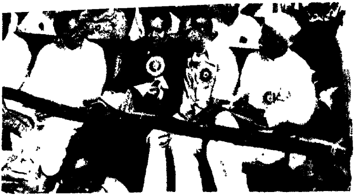




96 श्रीमती गाधी ने गोमटेश्वर के चरणो मे चढाने के लिए चांदी-जडा हुआ नारियल स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी को भेट किया

97 जैन सस्कृति के महत्त्व को रेखाकित करता हुआ श्रीमती गाधी का भाषण उत्सुकता और प्रसन्नता से सुना गया





98

प्रधानमन्त्री की सभा मे
विशिष्ट अतिथि

99 श्रीमती गाधी को सुनने के लिए दूर विध्यगिरि तक उमड़ता जन-समुद्र



100 सभा मच के दायी ओर छात्रावास भवन तक प्रधानमन्त्री की सभा मे महिलाओ की अपार भीड़



स्वागत-सम्मान

स्वागत की मधुर प्रक्रिया का प्रारम्भ हरियाणा के प्रमुख जनसेवी, संगीत विशारद श्री ताराचन्द प्रेमी द्वारा प्रस्तुत 'स्वागत गान' से हुआ। बगलोर की कुमारी शोभा अनन्तराजैया ने अपने ललित कण्ठ से 'गोमटेश स्तुति' के गान द्वारा मंगलाचरण किया। श्री ए० आर० नागराज ने गोमटेश्वर की स्तुति में बोप्पण कवि के कन्नड़ छंदों का पाठ किया। साहु श्रेयांस-प्रसादजी ने समस्त दिगम्बर जैन समाज की ओर से अत्यन्त भावभीनी शब्दावली मे श्रीमती गांधी का स्वागत करते हुए उन्हें माल्यार्पण किया। समाज के स्नेह के प्रतीक स्वरूप, उन्हें मैसूर के सिद्धहस्त कलाकारो द्वारा चन्दन काष्ठ मे निर्मित, बाहुबली की अनुकृति भेंट की गई।

महोत्सव समिति के अध्यक्ष के नाते साहु श्रेयांसप्रसादजी ने समस्त दिगम्बर जैन समाज की ओर से श्रीमती गांधी के श्रवणबेलगोल पधारने पर उनका स्वागत किया। अपने सक्षिप्त स्वागत भाषण मे उन्होने कहा कि दिगम्बर जैन समाज एक सदाचारी, देशभक्त और शान्ति-प्रिय लोगो का समाज है। इस समाज के आयोजनों में सदैव श्रीमती गांधी का सहयोग और उनकी शुभ कामनाएँ प्राप्त होती हैं, यह पूरे जैन समाज का सौभाग्य है।

श्री मिश्रीलालजी गंगवाल के पूर्व कथन को दोहराते हुए साहुजी ने उस सभा मे कहा कि जीते हुए राज्य को वापिस लौटा देना बहुत बडे आत्म-सयम का काम है। भारत वर्ष के इतिहास मे इसके केवल तीन उदाहरण मिलते हैं। भगवान् बाहुबली ने चक्रवर्ती भरत को पराजित करके भी उनका सिंहासन उन्ही के लिए छोड़ दिया। भगवान् राम ने लका विजय के पश्चात् वहाँ का राज्य रावण के भाई-बान्धवों को दे दिया था और वर्तमान में बंगलादेश पर पूर्ण विजय प्राप्त करके श्रीमती गाँधी ने वह जीता हुआ देश वहाँ की जनता को लौटा दिया। यह भारतीय संस्कृति की ही विशेषता है और ऐसे उदाहरण केवल इसी देश मे, महापुरुषो की इसी धरती पर पाये जा सकते हैं। इस वक्तव्य के साथ एक कोमल कश्मीरी शाल भेंट करके साहुजी ने श्रीमती गाँधी को सम्मानित किया।

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा इस अवसर पर जो हिन्दी-अंग्रेजी साहित्य ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित किया गया था उसका एक सैट श्रीमती गाँधी को भेंट किया गया। मार्ग प्रकाशन ने 'होमेज टू श्रवणबेलगोल' शीर्षक से एक सुन्दर, सचित्र-विशेषांक प्रकाशित किया था। विशेषांक की सम्पादक श्रीमती सरयू दोशी ने उसकी प्रथम प्रति प्रस्तुत करके श्रीमती गाँधी से उसका विमोचन सम्पन्न कराया।

टाइम्स आफ इण्डिया प्रकाशन के विश्व-प्रसिद्ध प्रकाशनों, इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इण्डिया (अंग्रेजी) तथा धर्मयुग (हिन्दी) ने इस महोत्सव पर सुन्दर सचित्र विशेषांक प्रकाशित किये थे। इन विशेषाको की हजारों प्रतियाँ प्रधानमन्त्री की सभा में वितरित की गयी। मध्याह्न की कड़ी धूप में सैकड़ो लोग उन अंकों की छाया से धूप का बचाव करने में वहाँ उनका उपयोग कर रहे थे।

मंच पर जब तक प्रधानमन्त्री के स्वागत की औपचारिकताएँ होती रही तब तक हाथों में दूरबीन लिये हुए वे बार-बार गोमटस्वामी की मूर्ति को निहारती रहीं, जिसका पिछला शिरोभाग ही वहाँ से दिखाई देता था।

बातचीत के दौरान श्रीमती गांधी ने पिछली श्रवणबेलगोल यात्रा का स्मरण करते हुए कहा—"मेरे पिताजी बाहुबली के दर्शन करने ऊपर तक गये थे। मैं भी उनके साथ थी, मुझे अच्छी तरह याद है।"

आशीर्वचन

अभ्यागतों के स्वागत की औपचारिकता पूरी होते ही, दाहिने मंच पर विराजमान वयोवृद्ध दिगम्बर जैनाचार्य, देशभूषणजी, आचार्य विमलसागरजी एव एलाचार्य विद्यानन्द मुनिजी ने विश्व शान्ति के लिए, देश की सुख-समृद्धि के लिए और इन्दिराजी के यश और दीर्घायु के लिए, धर्मवृद्धि की भावना के साथ मंगल आशीर्वाद प्रदान किये।

कर्मयोगी का अभिनन्दन

श्रवणबेलगोल के कर्मठ भट्टारक स्वस्तिश्री चारुकीर्ति स्वामीजी द्वारा इस क्षेत्र की उन्नति और विकास के लिए अनवरत लगन से भरे बारह वर्षों की बहुमूल्य सेवाओ का सक्षिप्त उल्लेख करते हुए, साहु श्रेयासप्रसादजी ने उपस्थित जनसमुदाय की ओर से स्वामीजी को 'कर्मयोगी' उपाधि से विभूषित करने की प्रस्तावना करते हुए श्रीमती गाधी से भट्टारक स्वामीजी को अलकृत करने का अनुरोध किया। प्रधानमन्त्री ने स्वामीजी को शाल और माला भेंट करके उनकी उपाधियो मे 'कर्मयोगी' सम्बोधन की अभिवृद्धि करते हुए उनका अभिवादन किया।

श्रद्धा के पत्र-पुष्प

महामस्तकाभिषेक मे उपस्थित होने की भावना पहले से श्रीमती गाँधी के मन मे थी। गोमटेश्वर के चरणो मे चढाने के लिए अपनी श्रद्धा के प्रतीक रूप चढ़ावा आज वे अपने साथ लायी थी। श्री गुण्डूराव से लेकर यह चन्दन की माला, चादी जडा श्रीफल और पूजन की सामग्री, भट्टारक स्वामीजी के हाथो मे आदर पूर्वक भेंट करते हुए उन्होने कहा, "इसे देश की ओर से और मेरी ओर से, अभिषेक के समय बाहुबली के चरणो मे चढा दीजिए।"

इन्दिराजी द्वारा उद्बोधन

जैसे ही श्रीमती गांधी को अपने उद्बोधन के लिए आमन्त्रित किया गया, वैसे ही एक बार पुनः 'इन्दिरा अम्मा की जय' के समूह-नाद से वातावरण गूँज उठा। माइक्रोफोन पर आकर पुनः जनता का करबद्ध अभिवादन करते हुए इन्दिराजी ने कन्नड के छोटे छोटे तीन वाक्यों से अपना भाषण प्रारम्भ किया।

> नमस्कारा, ननगे कन्नड बरबु दिल्ला,
> अवरिन्दा हिन्दी यल्ली मातनाडुतेन।
> क्षमिसबेकु।

नमस्कार। मुझे कन्नड़ नहीं आती, इसलिए मैं हिन्दी मे
बोलूंगी। क्षमा कीजियेगा।

कन्नड़ के इन तीन वाक्यों से श्रीमती गाँधी ने उस भाषा के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया और 'मुझे कन्नड़ नहीं आती' यह सूचना कन्नड़ में ही देकर सचमुच उन्होंने वहाँ उपस्थित कन्नड़ भाषी जनो का मन जीत लिया। तालियों की गड़गड़ाहट से उनके इन तीन अटपटे वाक्यों का जो स्वागत हुआ, उनका हिन्दी उद्‌बोधन आदर पूर्वक सुने जाने की वह सादर स्वीकृति थी। श्रीमती गाँधी ने अब राष्ट्र भाषा हिन्दी में अपना भाषण प्रारम्भ किया—

मुनिदेव देशभूषणजी महाराज! मुनि विद्यानन्दजी महाराज!
भट्टारकजी! सुशील मुनि जी!
मुनिगण, साधुगण, साध्वीगण!
बाहर से आये हुए विशिष्ट मेहमानो! बहनों और भाईयो!

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता और गौरव भी है कि इस पवित्र स्थान, इस ऐतिहासिक स्थान पर मैं आ सकी हूँ, ऐसे शुभ अवसर पर। ये मूर्ति जो शक्ति और सौन्दर्य का, बल का प्रतीक है उसके चरणों मे हम और आप आये हैं—पास से भी और दूर-दूर से भी।

ये मौका एक उदाहरण है भारत की प्राचीन परम्परा का। किस प्रकार से हमेशा ही भारत के लोगों ने धर्म का आदर किया है। चाहे अपना धर्म हो, चाहे किसी और का। जहाँ भी ऊँचे विचार हैं, ऊँचे उद्‌देश्य हैं, ऊँचे आदर्श हैं, उसका भारतवर्ष की जनता ने आदर किया है, और अपनी श्रद्धा उसमे रखी है। ये भारत की महानता का भी प्रतीक है कि एक हजार वर्ष पहले ऐसी मूर्ति यहाँ बनी। फिर कितने भी इतिहास के ऊँच-नीच हुए। कितने राजे आये और गये, लेकिन उसका जो बल था वो दूसरो को हमेशा शान्ति और सन्तोष देता रहा। उसमे ऊँच-नीच कुछ नही हुआ। आज हम भगवान बाहुबली के चरणो मे आये हैं, और ये उचित है कि इन सब बातो पर हम विचार करें। उनसे कुछ सबक सीखें।

महात्मा गाँधीजी पर भी जैन धर्म का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और जो कुछ धार्मिक उद्‌देश्य हैं उनको उन्होंने राजनीति मे लाने का प्रयत्न किया। मनुष्य जाति ऐसे ऊँचे आदर्शों मे विश्वास तो करती है, लेकिन हमेशा उनका पालन नही करती। लेकिन कम से कम वो आदर्श हमने अपने सामने रखा, और ये प्रयत्न किया कि उस अहिंसा के रास्ते पर चलने की हम कोशिश करें, अपने जीवन मे भी गाँधीजी के जो दूसरे उपदेश हैं कि हम अपनी आवश्यकताएँ कम से कम करें, सब के प्रति प्रेम रखें, सबका आदर करें, यह अपने जीवन मे उन्होने रखा। वह आप सबको मालूम है। जो भी दुर्बल थे, चाहे दरिद्रता के कारण' चाहे जाति के कारण, या किसी दूसरे कारण, उनकी सहायता करना, उनको ऊपर उठाना, ये उन्होने हमारे सामने एक उद्‌देश्य रखा था। और तब से हमारी कोशिश है कि उस रास्ते पर हम चले। हम समझते हैं कि आज विज्ञान के द्वारा हम तेजी से बढ़ सकते हैं। साथ ही साथ हम ये भी जानते हैं कि केवल विज्ञान को लेंगे, और ये जो हमारी परम्परा रही हैं प्राचीन भारत की, उसको खो देंगे, तो हमारी जड़ कट जायेगी। फिर हम प्रगति भी करें, तो प्रगति के फल उस प्रकार से

हमें मिलेगें नहीं । प्रगति अनेक प्रकार की हो, लेकिन मन में शान्ति न हो, मन में संतोष न हो, तो प्रगति का लाभ कैसे हम उठा सकेंगे ? इसलिए एक मिश्रण हमें करना है उनका जो अच्छी चीजें थीं ।

ये एक आश्चर्यजनक बात है कि इतने देश दुनिया मे हैं, लेकिन एक भारतवर्ष की ही परम्परा लगातार हजारो-हजारों वर्षों से चली आ रही है । दूसरे देशों मे भी बहुत बड़ी सभ्यताएँ उठी, चमकीं, लेकिन फिर खत्म हो गयी । अब उस इतिहास को लोग याद करने की कोशिश कर रहे हैं । फिर से बता रहे हैं । लेकिन हमारे यहाँ लगातार ये सूक्ष्म-बूक्ष्म का तार, ये धागा, चलता ही रहा । इसलिए हमारे ऊपर और भी बडा उत्तरदायित्व आता है, कि अपने पुराने धार्मिक रास्ते को, आदर्श के रास्ते को, हम छोड़ें नही । हमसे गलतियाँ होगी लेकिन प्रयास होना चाहिए कि वे कम से कम हो, और अगर हो तो उनको जल्दी से जल्दी हम ठीक करने की कोशिश करें ।

इस समय आवश्यकता है कि हम अपने देश की एकता को मजबूत बनायें । आज हमारे बीच जाति के नाम से, भाषा के नाम से, प्रान्त के नाम से, ये अलग-अलग, गाँधीजी कहते थे, ये नकली दीवरें खडी हो गयी हैं । ऐसी नकली दीवारो को हमे तोड देना चाहिए । हमको मिल के इस देश को ताकत देनी है । किसी को धमकी देने के लिए नही, किसी को डराने के लिए नही, वोट लेने के लिए नही, केवल हमारे देश की जो समस्याएँ है, उनका समाधान करने के लिए । केवल ये भारत की जो ऊँची विचारधारा है, जिसको यहाँ के ऋषि-मुनियो ने हमारे सामने रखा, और जिसकी रोशनी से ये देश जीवित रहा, और शक्ति रही इसमे, सहन-शक्ति भी और हिम्मत की शक्ति भी, उस रोशनी को हम कैसे और फैलाये ? तो ये तभी हम कर सकेगें जब अपने प्रश्नो का हम स्वय समाधान कर सकें । नहीं तो लोग कहेगे कि अपने आपको सम्भाल नही सकते, दूसरों को क्या सिखाने आये हैं ? पहले काबू तो अपने ऊपर व्यक्ति को करना होता है । फिर कोशिश करनी है कि अपने समाज पर काबू आये । स्वय मे भर नहीं, लेकिन समाज मे भी वो परिवर्तन आये । एक-एक व्यक्ति मे आयेगा, तो समाज मे भी आयेगा । इस प्रकार से देश मे परिवर्तन आयेगा । फिर हम देख सकते है कि ये जो सुन्दर विचार हैं, आदर्श विचार हैं इनको कैसे हम फैलायें ?

जैन धर्म ने भारत को ऊँचा उठाया और ये बहुत ऊँचे आदर्श हमारे सामने रखे । विशेष करके केवल धार्मिक क्षेत्र मे नहीं, लेकिन साहित्य के क्षेत्र मे भी, भाषा को आगे बढ़ाने का । कन्नड़भाषा मे, तमिल भाषा मे, सस्कृत मे, और भी कई भाषाओं में बहुत कुछ साहित्य और कवितायें लिखी गयी । ये दिन है जब हम ये सब याद करते हैं, और ये हमारी प्रार्थना है कि ये रोशनी हमारे देश को उज्जवल रखे । इसके भविष्य को सुन्दर बनाये । हमारे लोगो को चाहे वे गरीब हो, उनकी गरीबी आर्थिक है, लेकिन आत्मा की गरीबी नही है । तो उनकी शक्ति और बढानी है जिसमे देश केवल नक्शे में महान् न हो, लेकिन आदर्श में, विचारो मे, एक दूसरे की भलाई करने मे, इन सब चीजो मे भी एक महान् देश इसको हम बनाये ।

मेरी आशा है कि यहाँ अब हम भगवान बाहुबली के चरणो मे हैं तो हम प्रार्थना करे कि हमारा देश ऊँचा उठे और दुनिया में चमके । और यहाँ जो मुनिगण आये हैं उनसे हम अपने

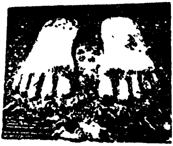
देश के लिए, अपने गरीबों के लिए, अपने दुर्बल लोगों के लिए, आशीर्वाद माँगते हैं। यहाँ जो कुछ भी हमसे, सरकार से, ऐसे समय में मदद होगी, वो हम खुशी से करेंगे। वो हमने सभी को हमेशा दिया, सब धर्म के लोगो को दिया, क्योंकि हम समझते हैं कि ये धर्म हमारे देश के रत्न हैं, उन्हे हमे सम्भाल कर रखना है।

आप सबकी मैं आभारी हूँ कि ऐसे शुभ मौके पर मुझे यहाँ आने का आपने अवसर दिया, और मैं अपने भगवान् बाहुबली के चरणो मे आ सकी।

:: जय-हिन्द ::

कन्नड भाषी जनता के लिए इन्दिराजी के भाषण का कन्नड़ अनुवाद, राज्य-स्तरीय महा-मस्तकाभिषेक समिति के अध्यक्ष और कर्नाटक के मुख्यमन्त्री श्री आर० गुण्डूराव ने साथ ही साथ प्रस्तुत करके उस भाषण को जन-जन के लिए सुगम बनाया। राज्य-स्तरीय समिति के उपाध्यक्ष, श्रवणबेलगोल के क्षेत्रीय विधायक, श्री एच० सी० श्रीकण्ठैया ने प्रधानमन्त्री का, अभ्यागत अतिथियो का और आगत जन समुदाय का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए सभा का विसर्जन किया।

सभा-मच से उतरकर प्रधानमन्त्री तत्काल हेलीकॉप्टर से बंगलोर के लिए प्रस्थान कर गयी जहाँ वायुसेना का विशेष विमान दिल्ली की उडान के लिए उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।



गोमटेस थुदि

(मूल—आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती)

विसट्ट-कंदोट्ट दलाणुयारं,
सुलोयणं चंद-समाण-तुण्डं ।
घोणाजियं चम्पय-पुप्फसोहं,
तं गोमटेसं पणमामि णिच्चं ॥1॥

अच्छाय-सच्छं जलकंत-गंड,
आबाहु-दोलंत सुकण्ण-पासं ।
गइंद-सुण्डुज्जल बाहुदण्डं,
तं गोमटेसं पणमामि णिच्चं ॥2॥

सुकण्ठ-सोहा जिय-दिव्व-संखं,
हिमालयुद्दाम - विसाल - कंधं ।
सुपेक्खणिज्जायल - सुट्ठुमज्झं,
तं गोमटेसं पणमामि णिच्चं ॥3॥

विज्झायलग्गे पविभासमाणं,
सिहामणिं सव्व-सुचेदियाणं
तिलोय-संतोसय पुण्णचंदं,
तं गोमटेसं पणमामि णिच्चं ॥4॥

लयासमक्कंत महासरीरं,
भव्वावलीलद्ध सुकप्परुक्खं ।
देविंदविंदच्चिय पायपोम्मं,
तं गोमटेसं पणमामि णिच्चं ॥5॥

दियंबरो जो ण च भीइ-जुत्तो,
ण चांबरे सत्तमणो विसुद्धो ।
सप्पादि जंतुप्फुसदो ण कंपो,
तं गोमटेसं पणमामि णिच्चं ॥6॥

आसां ण जे पेक्खदि सच्छदिट्ठि,
सोक्खे ण वंछा हयदोसमूलं
विराय-भावं भरहे विसल्लं,
तं गोमटेसं पणमामि णिच्चं ॥7॥

उपाहिमुत्तं धण-धामवज्जियं,
सुसम्मजुत्तं मय-मोहहारयं ।
वस्सेय-पज्जंतमुववास जुत्तं,
तं गोमटेसं पणमामि णिच्चं ॥8॥

गोमटेश-स्तुति

(अनुवाद—नीरज जैन)

नीलकमल की पाँखुरियों-सी नयनो की परिभाषा।
पूर्ण चन्द्र-सी मुख की छवि, चम्पक कालिका-सी नासा ॥
उन नयनों को, इन नयनो मे, अपलक बांध बिठाऊँ।
गोमटेश के श्रीचरणो मे बार-बार सिर नाऊँ ॥1॥

स्वच्छ गगन-सी देह, विमल जल-से कपोल अनियारे।
कर्ण युगल काधो तक दोलित मन को लगते प्यारे ॥
सुर कुंजर की सुण्ड समुज्ज्वल, बाहो की छवि ध्याऊँ।
गोमटेश के श्रीचरणो मे बार-बार सिर नाऊँ ॥2॥

जिसकी ग्रीवा दिव्य शंख की शोभा से भी सुन्दर।
हिमगिरि-सा जिसका विशाल उर, अनुकम्पा का आगर ॥
उस अनिमेष विलोकनीय छवि को जी भर कर पाऊँ।
गोमटेश के श्रीचरणो मे बार-बार सिर नाऊँ ॥3॥

विन्ध्य शिखर पर दुर्द्धर तप की आभा से जो दमके।
भव्यो के वैराग्य महल पर कनक-कलश-सा चमके ॥
तीन लोक के ताप-निवारण चन्द्र चरण उर लाऊँ।
गोमटेश के श्रीचरणो मे बार-बार सिर नाऊँ ॥4॥

मृदु माधवी लता बाहो तक जिसके तन पर छायी।
भव्यों को जिसका सुमरण सुर तरु समान फलदायी ॥
देव वृन्द चर्चित उन चरणो की रज माथ लगाऊँ।
गोमटेश के श्रीचरणो में बार-बार सिर नाऊँ ॥5॥

परम दिगम्बर, ईति भीति से रहित, विशुद्ध-बिहारी।
नाग समूहो से आवृत, फिर भी थिर मुद्रा धारी ॥
निर्भय, निर्विकल्प, प्रतिमा-योगी की छवि मन लाऊँ।
गोमटेश के श्रीचरणो मे बार-बार सिर नाऊँ ॥6॥

समकित वंत, स्वच्छ मति, आशा, काक्षा, शोक विहीना।
भरत भ्रात मे शल्य मिटाकर तुमने मुनि पद लीना ॥
वीतराग निष्कांक्षित प्रभु के शरण चरण की जाऊँ।
गोमटेश के श्रीचरणो मे बार-बार सिर नाऊँ ॥7॥

आधि, व्याधि, सोपाधि, परिग्रह वर्जित धन्य जिनेशा!
भावी का भय, धरा-धाम का मोह नहो लवलेशा ॥
बारह-मासी उपवासी की कीर्ति निरन्तर गाऊँ।
गोमटेश के श्रीचरणों मे बार-बार सिर नाऊँ ॥8॥

सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक

रविवार 22 फरवरी को सूर्य की प्रथम किरणों ने देखा, श्रवणबेलगोल का पूरा परिवेश जनसंकुल हो उठा है। चन्द्रगिरि पर्वत पर जहाँ तक दृष्टि जाती है, मनुष्य ही मनुष्य दिखाई देते हैं। नीचे नगर के बाहर खुले मैदान मे, जहाँ से भी गोमटेश्वर की छवि का दर्शन सभव था, वहाँ जन समूह उनका मस्तकाभिषेक देखने के लिए दृष्टि लगाये बैठा है। यद्यपि विन्ध्यगिरि पर लोगो का प्रवेश निषिद्ध है, फिर भी उत्तरी कोने से दुर्गम चट्टानो को लाँघते हुए हजारों लोग रात से ही ऊपर पहुँचकर पर्वत पर आसन जमा कर बैठ गये हैं। ऊँची चट्टानो पर और वृक्षो की डालियो पर, जिसे जहाँ जगह मिली, वह वही घण्टो पूर्व से बैठा है। विन्ध्यगिरि के नीचे प्रवेश द्वार पर ऊपर जाने के निमत्रण पत्र, प्रवेश पत्र और अनुज्ञा पत्र लिये हुए प्रवेशार्थियो की दीर्घ पंक्ति खडी दिखाई दे रही है। बाल, युवा और वृद्ध, छोटे और बडे, स्त्री और पुरुष सब अनुशासन पूर्वक उस कतार मे खडे हैं।

तीस मार्च 1967 के उपरान्त, कुछ कम चौदह वर्षों के दीर्घ अन्तराल से आज गोमटेश्वर भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक होने जा रहा है। दूसरा गणित लगायें तो सन् 981 में जब एक अनगढ पाषाण मे से गोमट स्वामी का यह अनुपमेय बिम्ब प्रगट हुआ था, तब उसकी प्रतिष्ठा के अवसर पर उसका प्रथम मस्तकाभिषेक हुआ। अब सहस्र वर्षों के उपरान्त आज 'प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि-महोत्सव' की बेला मे हजार वर्ष बाद वह महाभिषेक करने का सौभाग्य हमारी पीढ़ी को प्राप्त हो रहा है। लोगो के मुख पर प्रसन्नता की झलक है। उनकी 'प्रतीक्षा की घडियाँ आज समाप्त प्राय हैं और उनके आराध्य के ऐतिहासिक महाभिषेक का वह नयनोत्सव अब क्षण-क्षण निकट आता जा रहा है।

प्रवेशपत्रो का निरीक्षण करके शनैः शनैः लोगो को ऊपर जाने की अमनुति दी गई और देखते ही देखते वह लम्बी कतार पर्वत की सीढ़ियो पर मदिर के द्वार तक दिखाई देने लगी। अनेक समाज-सेवी सस्थाओ के स्वयंसेवक और कही-कही नगर सेना और पुलिस के लोग, अनुशासन और व्यवस्था बनाने में लगे थे। बूढे अशक्त और अपग लोगो को बेंत की कुर्सियो से बनी डोली मे ऊपर ले जाया जा रहा था।

बाहुबली प्रतिमा के पीछे मदिर की छत की आधार भूमि पर लोहे के पाइप जोडकर, एक्रो इण्डिया लिमिटेड द्वारा अभिषेक के लिए एक ऊँचा मनोहर मच बनाया गया था। ऊपर तक जाने और उतरने के लिए दोनो ओर अत्यन्त सुगम सीढ़ियाँ बनी थीं। प्रतिमा के सामने की ओर, छत से लगे हुए पूर्वी आंगन को पाटकर एक मंच बना था। वैसा ही विशाल दूसरा मंच पश्चिम की ओर बनाया गया था। पूर्वी मच अभिषेक करने वालो को बैठने के लिए था, और पश्चिमी मंच अभ्यागतो, अतिथियो तथा पत्रकारो के लिए सुरक्षित था। आठ बजते-बजते दोनो ही मंच भर गये। भीड़ के कारण केमरामैनो और आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के लोगों को इधर-उधर चलना भी मुश्किल हो गया।

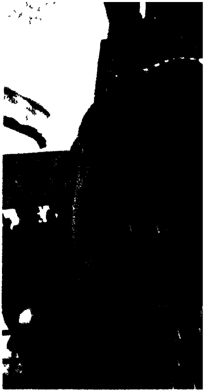


20 महामस्तकाभिषेक

पचामृत अभिषेक की मनभावन छवियाँ



21



22

23



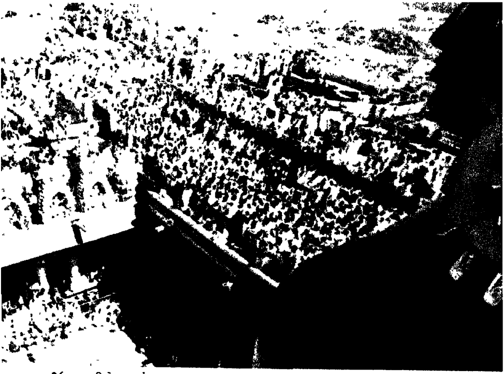




24

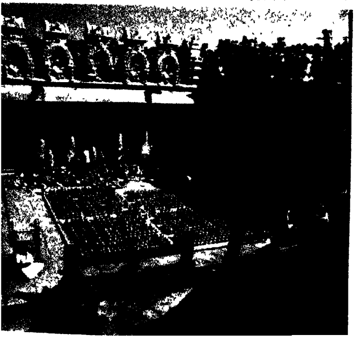
25





26 अभिषेक : दर्शक मंच

27 गोमटेश प्रांगण में 1008 कलशों की शोभा



वैसे तो पूर्व, पश्चिम और उत्तर दिशाओं में जहाँ तक दृष्टि जाती थी, मनुष्य का अपार पारावार ही दिखाई देता था, परन्तु सामने चन्द्रगिरि पर्वत सर्वाधिक जनाकीर्ण था। समतल और ढलान, वृक्ष और चट्टान सबके सब आज वहाँ मनुष्यों से ढँक गये थे। वहाँ कुछ टेलिविजन सेट भी लगाये गए थे। कुछ लोग टेलिविजन पर, या दूरबीन की सहायता से, तथा अधिकांश लोग सीधे ही दृष्टि बल से वहाँ से मस्तकाभिषेक देख रहे थे। उस समय श्रवणबेलगोल में उपस्थित जन समुदाय की संख्या के सम्बन्ध में पत्रकारों का कोई स्थिर अनुमान नहीं था। ढाई-तीन लाख से लेकर सात-आठ लाख तक की भीड़ के अनुमान भिन्न-भिन्न प्रत्यक्षदर्शी पत्रकार कर रहे थे, परन्तु अनुभवी जनो का बहुमत यह मानता था कि उपस्थित जनों की संख्या चार से पाँच लाख तक हो सकती थी। रविवार होने से उस दिन प्रदेश के सभी शासकीय-अशासकीय कार्यालय तथा प्रमुख प्रतिष्ठान बन्द थे। सम्पूर्ण कर्नाटक में मांसाहार का विक्रय, कसाई खाने और शराब की दुकानें भी बन्द रखी गई थीं। श्रवणबेलगोल की शराब दुकान पूरे मेला-काल के लिए बन्द करा दी गई थी। चारों ओर से जन-मेदिनी इस छोटे से नगर की ओर उमडती आ रही थी। 5-7 हजार की आबादी का गाँव आज 5-7 लाख लोगो को स्थान दे रहा था।

नीचे बाहुबली के प्रांगण मे दोनों ओर की दालानों में सभी दिगम्बर जैन आचार्य, मुनि, ऐलक, क्षुल्लक आदि साधु तथा आर्यिका संघ विराज रहे थे। मूडबिद्री, कोल्हापुर, लातूर, स्वादे, नरसिंहराजपुरा, तथा जिनकांची के पीठाधीश भट्टारक भी वहाँ उपस्थित थे। प्रतिमा के ठीक सामने एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी और भट्टारक स्वामी जी का आसन था।

मंदिर के प्रागण मे तन्दुल, कल्कचूर्ण और हरिद्रा से सुन्दर रेखांकन करके एक हजार आठ कलशो की स्थापना की गई थी। पूर्ण कुम्भ और चतुष्कोण कलश विशिष्ट विधि-विधान के साथ स्थापित किए गए थे। सभी एक हजार आठ कलश पीतल के थे और नारियलो से ढके हुए थे। उन पर चन्दन से स्वस्तिक का अंकन किया गया था। एक बडी सख्या में भगवान् के पुजारी शुद्ध वस्त्र धारण किए हुए अनुष्ठान सम्पन्न करने के लिए तैयार खड़े थे। पूरा दृश्य बड़ा मनोरम और भव्य लग रहा था। वातावरण आस्था और भक्ति के अतिरेक से भरा था। सतरगे जैनध्वज और पीत-पताकाओं से सजा अभिषेक मच, दूर से दर्शकों की दृष्टि को आकर्षित करता था। एक ओर से माइक पर आवश्यक सूचनाएँ प्रसारित की जा रही थीं। ठीक नौ बजे महामस्तकाभिषेक प्रारम्भ होने की घोषणा सुनाई दी और हर्षातिरेक के साथ 'बाहुबली भगवान की जय' के नाद से पूरा पर्वत गूँज उठा।

सर्वप्रथम गोमटेश्वर बाहुबली के प्रमुख पुजारी, श्रवणबेलगोल जैनमठ के यशस्वी भट्टारक स्वस्तिश्री चारुकीर्ति स्वामी जी को अर्घ्य चढ़ाकर पुजारी जनों द्वारा उनसे बाहुबली भगवान् के सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक की अनुमति के लिए निवेदन किया गया, और पूजा सम्पन्न कराने का अनुरोध किया गया। अनुष्ठान की अनुमति प्राप्त होते ही पुजारी-समूह ने, समवेत स्वरों में मंगलाष्टक का पाठ करके, भट्टारक स्वामीजी की विरुदावली से युक्त, भट्टारक पीठ की महिमा को अंकित करने वाला, और सम्यक्त्व-रत्नाकर चामुण्डराय द्वारा हुए अभिषेक का उल्लेख करने वाला पारम्परिक प्रशस्ति-वाचन किया—

प्रशस्ति-पाठ

ॐ जय जयामयान्तक जय-जय निष्कलंक लोकविभो।
जय जय तीर्थंकर जय जय देवमे सुख दद्याः।
जय दुरति विनाश नमस्ते, वरभव्याम्भोजसूर्य नमस्ते।
स्मरदर्पहर नमस्ते परगुण चिन्तामणि धीर नमस्ते ॥1॥
ॐ पूर्णस्वर्ण गिरीन्द्र मस्तक लसन्माणिक्य भाभासिते
पीठे पाण्डुक नामधेय शुभगे जन्माभिषेकोत्सवे।
देवेन्द्रैः शुभमानसैर्विनिहित ससार-सन्ताप-हृत्,
देवः पातु जिनेश्वरः शुभमति. सुश्रावकीया सभाम् ॥2॥
आहार्य प्रतिहार्य प्रकटित महिमा नव्यदिव्यादि भाषा,
भूषः श्री शान्तिनाथ प्रथितगुणगणारम्यलीलामुगम्य।
पातु श्रेयः कलाप कलितवमुचय सचिता गण्यपुण्यः,
भव्य श्रद्धान् पूजा गणमणि निवहस्थानक जैनमघम् ॥3॥
श्री नाभेयोजित शम्भव नमिविमलाः मुव्रताऽनन्तधर्मा,
चन्द्रांकं शान्तिकुन्थू मुमुमति सुविधी शीतलो वासुपूज्यः।
मल्लिश्रेयान् सुपार्श्वो जलजरुचिहरो नन्दन पार्श्वनेमी,
श्री वीरश्चेति देवाः प्रविदधतु चतुर्विंशतिमंङ्गलानि ॥4॥

स्वस्ति श्रीमद्राय राजगुरु भूमण्डलाचार्यवर्य महावादवादीश्वरराय
वादिपितामह सकल विद्वज्जन चक्रवर्तिगलु। पुस्तकगच्छ कुन्दकुन्दान्वय
देशीगणाग्रगण्यररु। कूष्माण्डिनीदेवि लब्धवरप्रसन्नररु। चाउण्डराय
पादार्चितायनेक विरुदावलि विराजमानररु। बल्लालराय जीवरक्षा पालकरू।
श्रीमन्निजघटिकस्थान, देहलि, कनकाद्रि, श्वेतपुर, सुधापुर, सगीतपुर,
क्षेमवेणुपुर श्रीमत् श्रवणबेलगुल सिद्ध सिंहासनाधीश्वर भट्टारक पट्टाचार्यवर्य,
कर्मयोगी श्रीमद् अभिनव चारुकीर्ति पण्डिताचार्य स्वामीनाम्,
आहाराभयभैषज्यशास्त्रदानावधानानाम्, खण्डस्फुटित-जीर्णजिन
चैत्यालयोद्धारणैक धीराणाम्, श्रीजिन-गन्धोदकबिन्दुसन्दोह-पवित्री,
कृतोत्तमाङ्गानाम्, सम्यक्त्वाद्यनेक-गुणगणालकृत-समस्त-श्रावक श्राविका भव्यजनाना
पुण्यवृद्धि यशोवृद्धि निमित्त विधीयमाने श्री बाहुबली स्वामिन महामस्तकाभिषेक-
महोत्सवे सावधाना भवन्तु।

सर्वप्रथम भट्टारक स्वामीजी अपने आसन से उठकर कलशो के पास आये। मत्रपूत अक्षत और पुष्प क्षेपण के उपरान्त अपने हाथो उठाकर प्रथम कलश उन्होंने अभिषेक के लिए प्रदान किया। उसी समय सामूहिक घण्टाध्वनि दूर-दूर तक गूँज उठी। इसके उपरान्त, एक के बाद एक, लगातार एक हजार आठ कलश प्रागण से हाथो हाथ ऊपर मच पर पहुँचते रहे। इन एक हजार आठ कलशो मे शताब्दि कलश, दिव्य कलश, रत्न कलश, स्वर्ण, रजत, ताम्र, कांस्य और गुल्लिका अज्जी, आदि अनेक प्रकार के कलश सम्मिलित थे, परन्तु उनके आकार

में अधिक अन्तर नही था। प्रत्येक कलश में लगभग दो लीटर प्रासुक निर्मल-नीर भरा था। इन सब प्रकार के कलशों को मिलाकर मूलत: इस अभिषेक के लिए कुल एक हजार आठ कलश ही निर्धारित थे, परन्तु भगवान पर ढरने वाले कलशों की वास्तविक संख्या लगभग तीन हजार हो गई थी, क्योंकि इन सभी कलशों के साथ प्रतिकलश दो से लेकर सात तक व्यक्तियों को अभिषेक का अवसर दिया गया था। ऊपर मंच पर जल से भरे बडे-बडे भाजन रखे थे, वहीं इन अधिसंख्य कलशों की व्यवस्था तत्काल होती जाती थी।

पिछली संध्या को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी इस अभिषेक के लिए अपनी श्रद्धा के प्रतीक स्वरूप माला, नारियल और पूजन की सामग्री स्वामी जी को अर्पित कर गई थीं, उसमे से स्वामीजी द्वारा नारियल पूर्णकुम्भ पर स्थापित कर दिया गया। सामग्री का उपयोग पूजन में किया गया और माला साहु श्रेयांसप्रसादजी ने मुख्यमंत्री श्री गुण्डूराव तथा अन्य मन्त्रियों के साथ जाकर भगवान के चरणों में अर्पित कर दी।

अभिषेक के लिए यद्यपि पहला कलश साहु श्रेयासप्रसाद जैन एव परिवार ने लिया था, परन्तु श्री रतनलाल जी गंगवाल ने यह इच्छा व्यक्त की कि भगवान बाहुबली का अभिषेक वे अपने परिवार सहित प्रथम कलश द्वारा करना चाहेगे। उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए और सद्-भावना एव पारस्परिक सम्बन्धो को दृष्टिगत रखते हुए साहुजी ने उन्हें अपनी सहर्ष स्वीकृति दे दी। सभी ने इसकी सराहना की।

यद्यपि प्रात साढ़े आठ बजे से मस्तकाभिषेक प्रारम्भ करने का संकल्प किया गया था, परन्तु कुछ अपरिहार्य कारणोंवश अनुष्ठान प्रारम्भ करने मे थोडा विलम्ब हुआ। प्रथम शताब्दि कलश की जलधार ने प्रातः नौ बजकर दस मिनट पर गोमटेश्वर के मस्तक का स्पर्श किया।

अभिषेक प्रारम्भ होते ही पूरे जनसमुदाय मे पुलक भरी हर्ष की लहर दौड गई। कैमरे सक्रिय होकर खटकने लगे। उनके फ्लैश और अन्य प्रकाश उपकरण बिजली की तरह कौंधने लगे। दूरदर्शन पर अभिषेक का पूरा दृश्य वहीं से सीधा 'क्लोज सर्किट टेलीविजन' माध्यम से प्रसारित किया जा रहा था जिसे नीचे नगर में तीस-चालीस स्थानों पर टेलीविजन सैट लगाकर लोगो को दिखाने की व्यवस्था की गई थी। सैकड़ो की सख्या मे देश और विदेश के पत्रकार और कैमरामैन इस दुर्लभ अनुष्ठान के एक-एक क्षण को अपने उपकरणो मे अंकित कर लेना चाहते थे। उधर विशेष रूप से लगाये गए टेलीप्रिंटर, टेलेक्स, टेलीग्राम और टेलीफोन आदि उपकरण उनकी अनुभूतियों को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाने के लिए तैयार थे। दो-तीन वीडियो कैमरे भी अनवरत सक्रिय थे।

रेडियो प्रसारण

तत्काल आकाशवाणी पर मस्तकाभिषेक का आँखों देखा हाल प्रसारित होना प्रारम्भ हो गया। प्रसारण संयंत्र सामने की छत पर ही लगे थे। हिन्दी, कन्नड और अग्रेजी मे बारी-बारी से होने वाला यह प्रसारण आकाशवाणी के अधिकाश केन्द्रो पर, पूरे देश में उसी समय सुना जा रहा था। हिन्दी में यह प्रसारण भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन कर रहे थे। कन्नड़ साहित्य परिषद् के अध्यक्ष श्री हम्पा नागराजैया तथा जिला कन्नड़ परिषद् के अध्यक्ष श्री एच० पी० ज्वालनैया ने कन्नड़ में प्रसारित किया। अंग्रेजी का प्रसारण दिल्ली के

श्री एम०के०धर्मराज ने किया। बीच में कर्मयोगी भट्टारक स्वामी जी ने भी कन्नड तथा हिन्दी, दोनों भाषाओं में प्रसारण किया।

तीन घण्टे से अधिक समय तक वह जलाभिषेक अनवरत रूप से चलता रहा। एक हजार आठ के समुदाय का अन्तिम कलश साढ़े बारह बजे ढाला गया और गोमटेश्वर भगवान् के जय-कार के साथ अभिषेक का प्रथम चरण सम्पन्न हुआ।

कहने को लगभग तीन हज़ार जल-कलश भगवान के मस्तक पर ढल चुके थे, पर उनसे केवल उनका मस्तकाभिषेक ही सभव हो पाया था। यथार्थ मे तो अभी भगवान का मुख भाग भी पूरी तरह अभिषिक्त नही हुआ था। एक तो उन लघुकाय कलशों मे जल ही कितना-सा था, फिर वह भी बहुत ऊंचाई मे छोडा जाता था। बीच मे पर्वत की इठलाती हुई पवन उस धारा को मनचाहे मोड देती हुई प्रतिमा के अंगो तक लाती थी। कभी-कभी कलश का अधिकांश जल ऊपर ही ऊपर उडता हुआ प्रतिमा के वायें पार्श्व मे बाहर ही जा गिरता था। पवन की गति पूर्व से पश्चिम की ओर थी, गोमटेश्वर स्वय उत्तर मुख खड़े है, इसलिए अभिषेक के जल से उनके शरीर का बाया अग ही कुछ प्रक्षालित हुआ था। दाहिना भाग पूर्ववत् सूखा का सूखा था। ऐसा लगता था जैसे जल और पवन के मध्य कोई स्पर्धात्मक विनोद-लीला ही वहाँ चल रही हो।

विशिष्ट अतिथियो के लिए बनाये गये मच ने अपनी क्षमता से अधिक अतिथियो को स्थान दिया। कर्नाटक के मुख्यमत्री, उनके मत्रिमण्डल के अनेक सहयोगी, सभाध्यक्ष, संसद सदस्य, विधायक और अनेक जन नेता अतिथियों मे थे। अनेक शैव, लिंगायत तथा वैष्णव विद्वान तथा महन्त भी उपस्थित थे। अनेक केन्द्रीय तथा प्रादेशिक उच्चाधिकारी अपने-अपने दायित्व निर्वाह के प्रसगवश इस दुर्लभ दृश्य का दर्शन कर रहे थे। उनमे से अधिकांश सकुटुम्ब यहाँ आये थे, इस प्रकार अनेक स्त्रियो तथा बालकों को भी अनायास यह सौभाग्य मिल रहा था।

साढे तीन घटो तक अनवरत एक जैसा चलने वाला अभिषेक का यह कार्यक्रम दर्शकों के लिए उबाने वाला हो सकता था, परन्तु वायु-प्रेरित जलधाराओ से गोमटनाथ की छवि मे प्रति-पल जो परिवर्तन हो रहे थे उनके कारण उस एकरसता में भी सरस विविधता बराबर बनी रही। दोनो मचो पर बैठे हुए लगभग पाँच हज़ार लोगो मे से अधिकाश, पूरी तन्मयता के साथ पूरे समय वहाँ बैठे रहे। इतना भर नही दूर-दूर तक दोनो पहाडों पर और नीचे मैदान पर पिछली रात्रि से जमा हुआ अपार जनसमूह भी दत्तचित्त होकर ही बैठा हुआ था। पंचामृत अभिषेक की बहुरगी कल्पना, और उसे देखने की उत्सुकता, किसी को भी अपने स्थान से हिलने तक नही दे रही थी।

पंचामृत अभिषेक

एक हज़ार आठ कलशो द्वारा जलाभिषेक पूर्ण होते ही पचामृत अभिषेक के दूसरे क्रम प्रारम्भ हुए। कार्यक्रम के अनुसार इक्षुरस, नारियल जल, क्षीर (दुग्ध), कल्कचूर्ण (चावल का आटा), हरिद्रा, पाँच प्रकार की वनस्पतियो के क्वाथ से बनाया हुआ 'कषाय' और उसके बाद



101 . टी.वी. पर महामस्तकाभिषेक की छवियां

102 विचार-विमर्श श्री रमेशचन्द जैन, साहु श्रेयान्सप्रसाद जैन एव श्री विश्वसेन

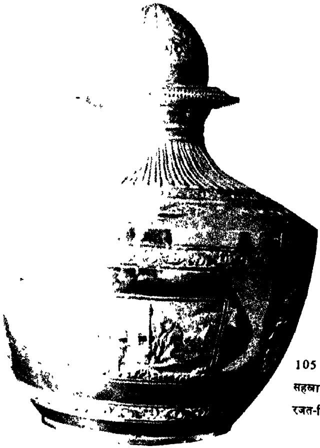




103 आकाशवाणी पर महोत्सव का आँखों देखा-हाल

104 महोत्सव की छवि अंकित करने के लिए देशी-विदेशी छायाकारों की भीड़

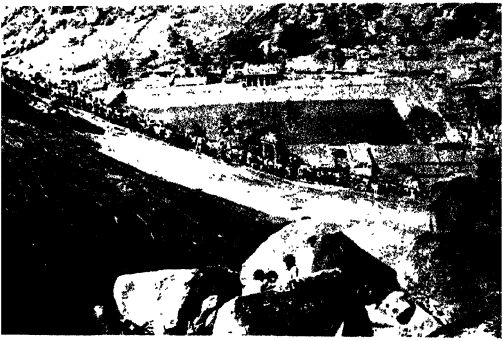




105
सहस्राब्दि अभिषेक का
रजत-निर्मित कुम्भ

106 समाचार-पत्रों में मस्तकाभिषेक





107 विंध्यगिरि पर जाता हुआ जन-समुदाय

108 वर्षों की साध पूरी हुई गोमटेश के द्वार पर पहुंच कर





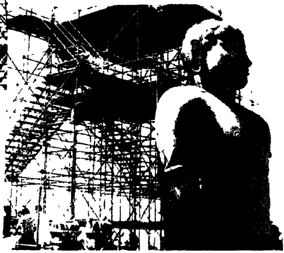
109 कोइ पैदल, कोई डोली के सहारे

110 मन्दिर के बाहर ही हमारे फील्ड मार्शल डॉ धनजय गुडे स्वय कलशा-धारियो के अनुज्ञापत्रो की जाच कर रहे है





111 अभिषेक का मंच तैयार हो गया



112 लोह पाइप का ढांचा

113 महोत्सव समिति के अध्यक्ष और स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी अभिषेक मंच पर जाते हुए





114 अभिषेक : पूर्व निरीक्षण और व्यवस्था

115 अभिषेक के लिए जलसग्रह करते हुए केरल के श्री शान्ति वर्मा





116 अभिषेक सामग्री तैयार करते हुए
पूजा समिति के सदस्य



117 कलश भरकर देते हुए पूजा समिति के सदस्य
श्री सुरेशचन्दजी

118 तैयारियो का निरीक्षण करते हुए पूजा समिति के सयोजक
श्री डी. निर्मलकुमार और डॉ धनजय गुडे



चतुष्कोण कलशों से अभिषेक होना था। इसके उपरान्त श्रीगंध, और लालचंदन तथा आठ प्रकार के चदन को मिलाकर तैयार किए गये अष्टगंध घोल से चन्दन का अभिषेक, और तब रत्नवृष्टि, कनकवृष्टि तथा पुष्पवृष्टि करते हुए पूर्णकुम्भ के द्वारा शान्तिधारा करके सबसे अन्त में बाहुबली भगवान् की महामगल आरती का आयोजन था। बीच मे प्रत्येक अभिषेक के उपरान्त आरती और अर्घ्य भी अनुष्ठान का अनिवार्य अग था।

इन पवित्र द्रव्यो के साथ पिछले मस्तकाभिषेको मे घी, गुड, शक्कर, दही, फल तथा पानी मे भिगोई हुई तुअर, उड़द और चने की दाल आदि सामान्य खाद्य पदार्थों से भी अभिषेक करने की परम्परा कुछ समय से प्रारम्भ हो गई थी। परन्तु उन आयोजनो मे यह भी अनुभव किया गया था कि इन पदार्थों के अभिषेक के बाद प्रांगण भली भाँति स्वच्छ नही हो पाता था। आस-पास दूर-दूर तक चीटे-चीटियाँ और अन्य सूक्ष्म जन्तु इतनी बड़ी मात्रा मे उत्पन्न हो जाते थे कि अनेक दिनो तक भगवान् के दर्शन-पूजन मे उनकी हिंसा से बचना असंभव सा हो जाता था।

मन्दिर की स्वच्छता के लिए और जीव समूह की हिंसा से बचने के लिए, भट्टारक स्वामीजी ने गहन विचार-विमर्श के उपरान्त ऐसे सभी खाद्य पदार्थों को इस महोत्सव मे अभिषेक सामग्री की सूची से पृथक् कर दिया था। परम्पराओ से जकड़ी हुई समाज में यह एक साहस भरा कदम था, किन्तु प्रारम्भ से ही एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी की सहमति होने के कारण यह प्रयास सफल हुआ। यद्यपि अनेक लोगों ने इस परिवर्तन का विरोध किया। मुनि विद्यानन्दजी के गुरु आचार्य देशभूषणजी के समक्ष भी यह प्रकरण उपस्थित किया गया, परन्तु भट्टारक स्वामीजी ने बडी दृढता पूर्वक, अकाट्य तर्कों के साथ, विनम्र शब्दो में अपना पक्ष प्रस्तुत किया और प्रस्तावित परिष्कार पर आचार्यश्री की भी अनुमोदना प्राप्त करने में उन्हें सफलता मिली।

इक्षुरस

सर्वप्रथम इक्षुरस से भगवान् का अभिषेक हुआ। अब छोटे-छोटे कलशो का स्थान बडे-बडे घटो ने ले लिया था। अभिषेक के लिए जो मच बना था उसमे तीन दीर्घाएँ निकाली गई थी। बालकनी की तरह बाहर निकली हुई दो दीर्घाएँ मूर्ति के दोनो कन्धो की सीध मे थी और तीसरी अपेक्षाकृत बडी दीर्घा मस्तक के ऊपर थी। अब तीनो दीर्घाओ के साथ बड़े-बड़े कुभो के द्वारा भगवान् का अभिषेक प्रारम्भ हुआ। दोनो कन्धो पर तीन-तीन घटो से, और मस्तक के ऊपर पाँच घटो से, इस प्रकार ग्यारह बड़े-बड़ घटो से गिरती हुई ग्यारह समवेत धाराएँ एक साथ अब भगवान का अभिषेक कर रही थीं। ऊँचाई से गिरने के कारण वे धाराएँ शरीर पर मचलसी जाती थी। लगता था कि अभिषेक आनन्द मे गधवारि की लहरे वहाँ नाच उठी हैं। पवन का वेग उन धाराओ को शरीर पर चतुर्दिक फैलने मे सहायक हो रहा था। इस प्रकार अब पहली बार मूर्ति का अधिकाश भाग अभिषिक्त हुआ था। फिर भी अभी कुछ शेष था। नासिका के नीचे का भाग, चिबुक के नीचे ग्रीवा का थोड़ा सा हिस्सा, तथा कक्ष मूल और जघाओ का संधिभाग अभी भी सूखा ही दिखाई दे रहा था। अनेक कलशो की धारा के उपरान्त मन्त्रोच्चार के साथ भगवान् के चरणो मे अर्घ्य चढ़ाया गया, उनकी आरती की

गई, इस प्रकार इक्षुरस का अभिषेक सम्पन्न हुआ । इसी तारतम्य मे नारियल के जल से भी अभिषेक किया गया ।

दुग्धाभिषेक

गोमटेश्वर के अभिषेक अनुष्ठान मे दुग्ध अभिषेक सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है । एक हजार वर्ष पूर्व प्रतिमा का प्रथम अभिषेक दुग्ध से ही सम्पन्न किया गया था । वह अभिषेक जब अधूरा रहा तब उसे पूर्णता प्रदान करने वाली एक विपिन्न वृद्धा की गुल्लिका से निकली हुई दिव्य धारा भी, दुग्ध की ही धारा थी । श्रवणबेलगोल मे उपलब्ध सैकडो शिलालेखो से प्रमाणित है कि समय-समय पर भगवान् के चरणो का दुग्धाभिषेक कराने के लिए अनेक जनो द्वारा मठ को स्वर्ण, वास्तु, भूमि और उपकरण प्रदान किये गये थे । मठ के पास इस प्रकार बहुत सी मूल्यवान भूमि एकत्र हो गई थी । उसकी आमदनी से मठ का खर्च आराम से चल जाता था । परन्तु इधर जमीदारी उन्मूलन के अतर्गत ऐसी सारी भूमि का स्वामित्व मठ के हाथ से निकल गया । इसके फलस्वरूप मठ की आर्थिक स्थिति डवाडोल हो गई और सामान्य खर्चों के लिए भी परेशानी होने लगी ।

इस महोत्सव मे भी दुग्धाभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त करने के लिए भक्तो मे खासी स्पर्धा रही थी । वह दुर्लभ दुग्ध अभिषेक अब प्रारम्भ हो रहा था । अभिषेक के लिए दुग्ध की विशेष व्यवस्था की गई थी । एक हजार लीटर ताजा दूध हिमाक पर शीतल करके विशेष वाहनो मे रखा गया । अभिषेक पूर्व उन दुग्धपात्रो को पर्वत पर लाकर भी बर्फ मे सुरक्षित रख कर विकृत होने से बचाया गया । वही शीतल क्षीर अब छानकर अभिषेक के कलशो मे भरा जा रहा था ।

दूध की धाराएँ शरीर पर पडते ही प्रतिमा की छवि मे आश्चर्य जनक परिवर्तन परिलक्षित होने लगा । उस समय गोमटेश्वर का वक्ष भाग हिलोरे लेते हुए क्षीरसागर की तरह दिखाई देता था । ऐसा लगता था कि एक साथ हजारो लहरे उस स्वेत-सिंधु मे उठती है और तत्काल विलीन हो जाती हैं । गोमटनाथ का स्वरूप श्वेत सगमरमर का सा भासने लगा । अनवरत प्रवहमान धारा के कारण उस धवलता मे प्रतिक्षण अद्भुत आकृतियाँ बनती थी और बनती चली जाती थी। लगता था कि अभिषेक की अधिष्ठात्री शक्तियो को आज भी दुग्ध धाराओं की ही प्रतीक्षा थी । देखते ही देखते दुग्ध की धवलता ने चारो ओर से प्रतिमा को सर्वांग परिवेष्ठित कर लिया । अब पहली बार बाहुबली नख से शिख तक अभिषिक्त हुए ।

कल्क-चूर्ण, हरिद्रा, कषाय और चतुष्कोण कलश

दुग्ध धाराओ का समापन होने पर कल्क-चूर्ण प्रतिमा पर बिखेरा गया । सुवासित तन्दुलो का महीन चूर्ण भगवान् के शरीर पर ऐसा लगता था जैसे शुभ्र बादलो का कोई टुकड़ा बार बार उडता हुआ आता है और भगवान् की परिक्रमा करके लौट जाता है । इस अभिषेक ने प्रतिमा को एकबार फिर धवलता प्रदान कर दी और आस-पास के वातावरण को भी थोड़ी देर के लिए एक झीने आवरण से ढँक दिया ।

इसी क्रम में हरिद्रा से अभिषेक प्रारम्भ हुआ। महीन पिसी हुई हल्दी को जल में मिलाकर यह घोल तैयार किया गया था। हरिद्रा के अभिषेक ने प्रतिमा को पीतवर्णी कान्ति प्रदान कर दी। एक क्षण को वह मूर्ति स्वर्ण-निर्मित सी दिखाई देने लगी। बाहुबली के प्रतिक्षण बदलते इन विविध रूपो का दर्शन बडा आश्चर्यजनक, बडा सुन्दर लग रहा था।

कषाय अभिषेक के लिए पाँच प्रकार की विशिष्ट वनस्पतियो का क्वाथ (काढ़ा) तैयार किया गया था। इसे सर्वोषधि अभिषेक भी कहा जाता है। कषाय अभिषेक से एक दूसरे ही रूप मे सबने मूर्ति का दर्शन किया। इन सभी पदार्थों के अभिषेक की यह विशेषता थी कि तीनो दीर्घाओ मे से एक साथ अनेक कलशो की धार प्रतिमा पर गिरती थी और एक ही क्षण मे लगभग पूरी मूर्ति को अपने रग में रग लेती थी।

पाँचवाँ अभिषेक चतुष्कोण कलशों के द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रत्येक अभिषेक के बाद अर्घ्य और आरती का क्रम दोहराया जाता रहा।

अष्टगन्ध

चन्दन का अभिषेक अपनी शीतलता और और सुरभि के अनुरूप मनोहारी भी था। मलयागिरि, श्रीगन्ध, लाल चन्दन, कृष्णागुरु आदि अनेक प्रकार के चन्दन को घिस कर और पीसकर वह घोल तैयार किया था जिसके द्वारा अभिषिक्त होते ही बाहुबली की छवि गहरी लालिमा से युक्त हो उठी। प्रतिमा का यह नयनाभिराम रूप आँखो को बरबस बाँध रहा था। इस अभिषेक माला को देखना सचमुच एक दुर्लभ उपलब्धि थी। पीछे विशाल सज्जित मच, उस मच की सज्जा मे से उभरकर सौम्यता के साथ दृष्टि की परिधि मे समाती हुई गोमटेश्वर की विराटता, उस परिप्रेक्ष्य मे ऊपर से नीचे तक अपनी-अपनी व्यस्तता मे आते-जाते मनुज की लघुता, और प्रतिपल परिवर्तित प्रतिमा का स्वरूप, सब मिलाकर एक ऐसे अलौकिक दृश्य की सरचना वहाँ कर रहे थे, जिसका आनन्द केवल दृष्टव्य ही था। वक्तव्य वह नही।

ऐसा लगता था कि इन्द्र-धनुष के सारे ही रंग एक-एक कर भगवान् पर बरस रहे हो। कभी ऐसा भ्रम होता था जैसे एक ही दृश्य बार-बार विभिन्न रगो की प्रकाश किरणो से प्रकाशित हो रहा हो। तेज वायु के झोको में अभिषेक के ये रंग-बिरगे घोल दूर-दूर तक उडकर दर्शको को भी सराबोर कर रहे थे। मूर्ति के बायें पार्श्व मे जहाँ तक छीटे पहुँच रहे थे वहाँ खडे होकर उस गन्धोदक का स्पर्श करने के लिए लोगो में होड सी लग गई थी। हर कोई अपने शरीर को और वस्त्रो को अधिक से अधिक उस पवित्र गंध-वारि मे सराबोर कर लेना चाहता था। छज्जे से बहती हुई अभिषेक की धाराओ को लोग विभिन्न पात्रो मे एकत्र कर रहे थे। पात्र जिनके पास वहाँ नही थे, वे अपने निमन्त्रण पत्रो के प्लास्टिक के आवरण का सदुपयोग कर रहे थे, रूमाल और टोपियाँ भिगो कर सहेज रहे थे। आँगन में, और पूरी छत पर, सामूहिक होली का सा दृश्य वहाँ उपस्थित हो गया था। गन्धोदक की यह होली भी गोमटेश्वर के महामस्तकाभिषेक का पारम्परिक और अनिवार्य अंग थी।

वह अविस्मरणीय अनुभूति

बहुरंगी आभा वाला वह अमृत अभिषेक गोमटेश्वर की छवि को आज अद्भुत आकर्षण से मण्डित कर रहा था। उन्नत ललाट, घुंघराले केश, अर्द्धोन्मीलित नयन, मद-स्मिति से आलोकित करुणामय मुख-मण्डल, स्कन्धो का स्पर्श करते विशाल कर्ण, सबल भुजाएँ, समुन्नत वक्षस्थल, क्षीण कटि और सुथिर जघाओ के सानुपातिक समन्वय से परिपर्ण उनकी अपरूप मुद्रा आज पहले से अधिक मनहर लग रही थी। उनके आनन पर खेलने वाली वह भुवन-मोहिनी मुस्कान, जिसने सहस्र वर्षों मे कोटि-कोटि नेत्रो को अपने सम्मोहन से वशीभूत करके आह्लादित किया था, आज कुछ और अधिक चुम्बकीय लगने लगी थी। निश्चित ही आज उन कर्मावरण निवारण, तरण-तारण प्रभु का सहज आकर्षण कुछ अधिक ही सबल हो उठा था।

जब भी नवीन द्रव्य की धारा भगवान् पर बरसना प्रारम्भ होती, बालक, वृद्ध, स्त्री और पुरुष सब मिलकर समवेत स्वरो मे 'बाहुबली भगवान् की जय' बोल उठते थे। गोमटस्वामी के अति कलात्मक ढग से उत्कीर्ण उस विशाल बिम्ब को, शिख से नख तक आप्लावित करने के लिए, सशक्त धाराओ की आवश्यकता होती थी। कोई बिरली हिलोर ही उन्हे पूरी तरह सराबोर कर पाती थी, पर ऐसा लगता था कि हमारी भावना की तरह अभिषेक सामग्री का भण्डार भी आज अक्षय हो उठा है। कलश पर कलश रीतते जाते थे, परन्तु न तो हमारा मन सन्तुष्ट होना चाहता था, न वह सामग्री ही समाप्त होने पर आती थी। स्वामीजी का सकेत ही उन धाराओ की अजस्रता को तोड पाता था। तब दृश्य-पिपासु हमारा मन यही मानकर सतोष करता था कि धारा का यह व्यवधान समापन का सूचक नही, वरन् किसी नवीन धारा के समारम्भ का प्रतीक होगा। तब किसी और ही रग मे अपने आराध्य की छवि देखने की आशा से भरी हमारी दृष्टि, पुन उस मुख-मण्डल पर, दूनी उत्सुकता के साथ एकाग्र होती जाती थी।

एक बार कनक चूर्ण की वर्षा ने बाहुबली के आस पास प्रभामण्डल सा रच दिया। इसी बीच इठलाते हुए पवन के झकोरे, दूर-दूर तक बैठे दर्शको मे, अभिषेक का वह सतरंगा प्रसाद, उदारता पूर्वक वितरित कर गए। थोडी देर मे वहाँ सैकडो भक्त उस गधोदक से ओत प्रोत दिखाई देने लगे।

एक सुनहरे स्वप्न की तरह वह दिव्य दृश्य, एक एक कर हमारी दृष्टि मे आए और ओझल होते चले गए। कभी मथरगति मे तरगाचित दुग्ध की हिम-धवल धाराओ ने श्वेताभ छवि मे गोमटेश के दर्शन कराये, तो कभी हरिद्रा के घोल का स्नान उन्हे स्वर्णिम विभा से विभूषित कर गया। इक्षु रस के सैकडो कलश आधी घडी तक उनका क्वचित् हरिताभ, शस्य-श्यामल रूप हमे दिखाते रहे, फिर सर्वोषधि की सहस धाराएँ उनकी देह को चन्दन वर्णी बनाकर, जीवन भर के लिए हमारे स्मृति-कोश मे प्रतिष्ठित कर गईं। अगरु के गध वारि की फुहारो ने अभी वातावरण को अपनी भीनी सुरभि से भरा ही था कि अष्टगध के रूप मे जैसे स्वय ऊषा और सध्या, अपनी सारी लालिमा लेकर, एक साथ उन कामदेव के चरणो में नमित हो गई। उस विलक्षण दृश्य ने तो जीवन भर के लिए हमे अपने सम्मोहन में बाँध लिया।

उन क्षणो मे हमने वहाँ जो देखा, वह केवल देखकर ही समझा जाने वाला दृश्य था।

आज लेखनी से उसे शब्दायित करने का प्रयास करते समय, महाकवि तुलसीदास की भोगी हुई असमर्थता ही हमें याद आती है, जहाँ वे यह कहकर अपनी हार स्वीकार कर लेते हैं कि "गिरा अनयन, नयन बिनु बानी।" "वाणी क्या देखे ? उसके पास दृष्टि ही नहीं है, और जिन्होंने देखा है वे नयन कहें कैसे ? उनमे तो वचन-सामर्थ्य का अभाव है।" हमने वहीं यह अनुभव किया कि जब यहाँ अपने छोटे से भक्ति-पात्र मे भगवान की सौदर्य-सुधा समेट कर, बारम्बार उसका पान करके भी, हमारी अतृप्ति बनी हुई है, तब त्रैलोक्य का सर्वोत्कृष्ट भक्त वह सौधर्म इन्द्र, प्रभु के सर्वांग सुन्दर शरीर की रूप-रश्मियो के प्रकर-जाल मे उलझकर, तृप्ति का आकांक्षी यदि सहस्राक्ष होकर नाच उठता है, तो इसमे आश्चर्य क्या ?

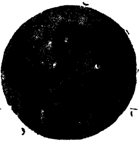
उस प्रागण में बैठे बैठे हमने, और हमारे जैसे अनेकों ने, उन दुर्लभ क्षणो का साक्षात् अनुभव किया, उन लमहों को जागते हुए जीकर देखा, जिनमें वह कल्पनातीत अभिषेक निहारते निहारते, हम सहसा अभिषेक को भूलकर, अभिषिक्त की रूप-माधुरी में लीन हो गए। उसकी अलौकिक महिमा मे खो गए। सचमुच ऐसा ही सम्मोहक था वह वातावरण, और ऐसे विभूतिमान थे हमारे पुण्य के वे चार क्षण, जिनके सयोग में हमारा मन महक गया, इन्द्रियाँ सार्थक हो गईं, और पर्याय धन्य हो गई।

पुष्पवृष्टि और शान्तिधारा

चन्दन का अभिषेक समाप्त होने पर निर्मल जल के कुछ कलश ढारे गए, तब भगवान् के मस्तक पर रत्न-वृष्टि, कनक-वृष्टि और पुष्प-वृष्टि की गई। नीचे गिरते हुए प्राकृतिक और कृत्रिम पुष्पो को भी लोगो ने हाथो हाथ समेट लिया। वे उन्हे इस मगल अवसर की स्मृति के रूप मे अपने पास सहेज कर रखना चाहते थे।

अभिषेक की अन्तिम धारा श्री हेगडे ने प्रवाहित की। यह शान्ति धारा, शान्ति मन्त्रो के पाठ के साथ रजत निर्मित 'पूर्ण-कुम्भ' कलश से की गई। शान्तिधारा के इन मन्त्रो मे विश्व शान्ति की भावना से समूची मानवता के लिए सुभिक्ष, स्वास्थ्य, अभय और मंगल की कामना की गई थी।

बाहुबली स्वामी की महामंगल आरती के साथ मस्तकाभिषेक का आज का अनुष्ठान परिपूर्ण हुआ। पंचामृत के गधोदक से सराबोर रंगे बिरगे कपड़े पहिने लोग विंध्यगिरि से उतरना प्रारम्भ हुए। नीचे आने पर रास्ते मे लोग उन्हें घेर लेते, उनके गीले कपड़े, मस्तक से लगाकर भगवान के गंधोदक की पवित्रता का अनुभव करते और अभिषेक करने वालो के भाग्य की सराहना करते थे।

क्षण-क्षण के  आलेख

22.2.81

अभिषेक की झलकियाँ

पत्रकार दीर्घा मे एक भारतीय पत्रकार ने अपने पास बैठे हुए एक विदेशी पत्रकार से आलोचना के स्वर मे कहा—"देखो, कितना दूध बरबाद किया जा रहा है। यह तो हजारो बच्चो को पीने के काम आ सकता था।"

—"क्या आप नही जानते, कभी-कभी परम स्वादिष्ट पेय आँखो से भी पिया जाता है। आज तो लाखो जोडी आँखे इस दुग्धपान का आनन्द उठा रही हैं।" विदेशी पत्रकार का शालीनता भरा उत्तर था।

▭

अभिषेक करने वालो मे युवक, वृद्ध और बालक, स्त्री और पुरुष सब सम्मिलित थे। अनेक अतिवृद्ध या शक्तिहीन स्त्री-पुरुष दूसरो का सहारा लेकर मच तक पहुँचते थे परन्तु अभिषेक किसी का सहारा लिये बिना, अपने कम्पित करो से स्वतः ही सम्पन्न करने का प्रयत्न करते थे।

▭

कुछ लोग अभिषेक करने के उपरान्त भी मच की दीर्घा मे खडे रहना चाहते थे ताकि छत पर से उनके मित्र या सम्बन्धी उनका फोटो ले सके। कई बार स्वय-सेवको को प्रार्थना करके ऐसे लोगो को गतिमान करना पडा।

▭

जब तक अभिषेक होता रहा, लोग छोटे-छोटे समूहो मे बैठकर भजन, कीर्तन या भगवान् का गुणगान करते रहे।

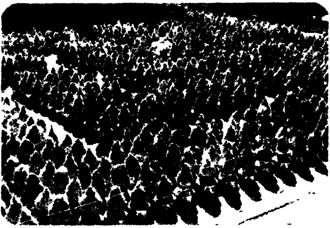
▭

दोपहर को बगलोर से खबर मिली कि श्रीमती गाधी ने भगवान् के अभिषेक

का जल प्राप्त करने की अभिलाषा व्यक्त की है। छोटे-छोटे चार सुन्दर पात्रों में गन्धोदक भरकर तत्काल बगलोर भेजा गया, जहाँ से उसी सन्ध्या को उसे दिल्ली पहुँचने की व्यवस्था की गयी।

▭

बेलगाँव के पचास वर्षीय श्री छोटे भाउ ने भी अभिषेक के लिए कलश प्राप्त किया था। छोटे भाउ शरीर से बौने और दोनो पैरो से लाचार हैं। लोगो ने सहयोग देकर उन्हें मच पर पहुंचाया। उनके हाथ मे कलश भी दिया, परन्तु अपनी



अक्षमता के कारण वे कलश ढारने मे असमर्थ रहे। महोत्सव समिति के एक सदस्य के हाथ से अपना कलश भगवान् पर अर्पण करके ही उन्हे सन्तोष करना पडा।

▭

मुख्यमन्त्री श्री गुण्डूराव ने बाहुबली स्वामी के चरणो मे पुष्प अर्पित किये और माइक पर आकर अपने उल्लास की अभिव्यक्ति मे कुछ कह रहे थे कि तभी अभिषेक के जल का एक झोका आया और उन्हे सराबोर कर गया।

▭

अभिषेक समाप्त होने पर सभी मुनि महाराज और आर्यिका माताएँ मन्दिर से निकल कर नीचे चले आये। उनके जाते ही सैंकडो स्त्री-पुरुष नीचे आँगन मे पहुँच गये। वहाँ अभिषेक के चन्दन और रग-बिरगे जल से एक दूसरे को भिगोकर वे होली खेलते रहे। रग मे सराबोर होकर लोग बाहर निकल जाते और उनकी

जगह दूसरे लोग आँगन मे पहुँच जाते। यह क्रम बडी देर तक चलता रहा।

▭

अनेक माताएँ अपने छोटे बालक-बालिकाओ को भगवान् के चरणो मे एकत्र उस रग-बिरंगे गन्धोदक मे लिथराते देखी गयी। बडी श्रद्धा के साथ वे उन शिशुओ को आपाद-मस्तक उस जल में सराबोर करके उनका मस्तक भगवान् के चरणो से छुआती और उन्हे अक लेकर लौट आती थी।

▭

एक सज्जन ने कलश ढारते समय अपनी जेब से चाँदी के कुछ सिक्के निकाले और जल की धारा के साथ भगवान् के मस्तक पर छोड दिये। एक झकार के साथ वे सिक्के नीचे आगन मे दूर-दूर तक फैल गये। लोगो ने स्मृति चिह्न की तरह उन्हे सहेज कर रख लिया।

▭

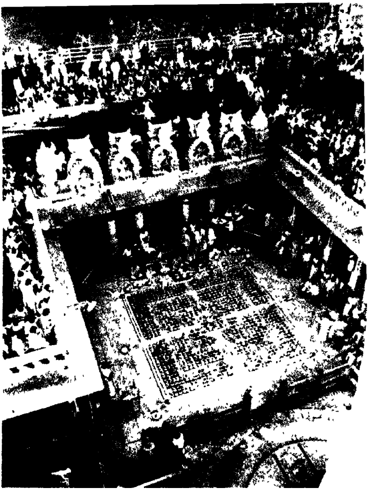
आदि कवि ने ससार के सभी मानवो को एक ही कुल से उद्भूत कहा है। आज श्रवणबेलगोल मे देश-देशान्तर के जनसमुद्र का जो ज्वार उमड रहा है उसे देखकर कवि की यह उक्ति सार्थक सिद्ध हो रही है। अनेक देशो और नाना प्रदेशो से नदियो-सा प्रवाहित होकर आने वाला जन समूह इस छोटे से नगर मे 'जन-समुद्र' बनता जा रहा है। पाँच हजार की आबादी का यह छोटा-सा नगर आज पाँच सात लाख लोगो का सगम स्थल बना हुआ है। उन सबके आकर्षण का केन्द्र, सबके मन का अभिप्राय केवल एक है गोमटेश्वर बाहुबली।

▭

आने वाले कल की तैयारियाँ

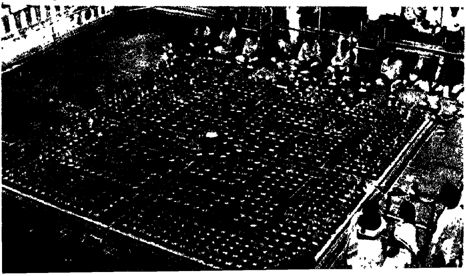
कुछ ही घण्टो मे पचामृत अभिषेक की दृष्टि को बाँध लेने वाली सुन्दरता पूरे मेले मे विख्यात हो गयी। 'कल यह अभिषेक अवश्य देखना है' ऐसा सकल्प हजारो लोग करने लगे। जिन्होने अभी वह दुर्लभ दृश्य देखा नही, केवल सुना भर है, वे जल्दी-से-जल्दी जैसे भी हो, उसे देखने की आकाक्षा करते हैं। जो देखकर लौटे हैं, वे पुन: देखने का अवसर किसी प्रकार मिले तो उसे छोडना नही चाहते।

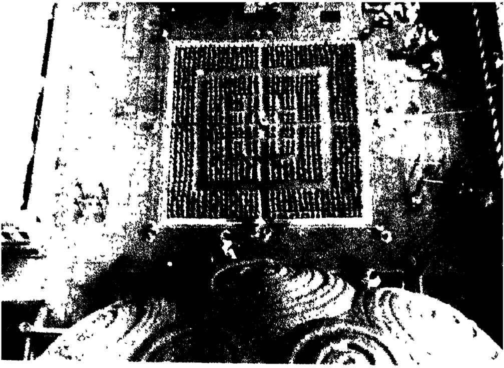
कल तेरह फरवरी अभिषेक के लिए 'जनमगल महाकलश' का दिन है। देश-भर मे जिन्होने महाकलश की शोभायात्रा मे बोलियाँ ली थी, वे सब कल अभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त करेगे। महासमिति के पण्डाल मे आज कई घण्टो तक,



119 आगन मे सजाये हुए एक हजार आठ कलश

120 पुरोहितों और प्रतिष्ठाचार्यों द्वारा कलश स्थापना





121 ऊपर से कलशों की छवि

122 संकल्प का शुभारम्भ





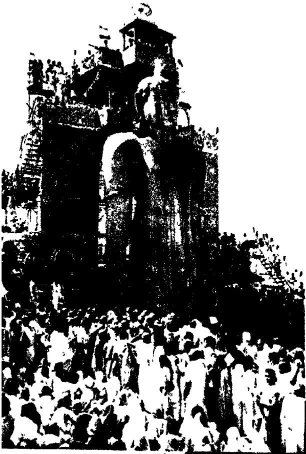
123 हाथोंहाथ मंच तक आते हुए कलश

124 कलश ऊपर पहुंचाने की व्यवस्था





125 'प्रथम शताब्दी कलश' लेकर अभिषेक मंच पर जाते हुए
कलकत्ता के गंगवाल बन्धु



126
इस प्रकार प्रारम्भ हुआ
महामस्तकाभिषेक

127
अभिषेक देखते हुए मुनियों का समूह





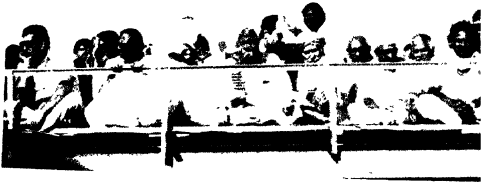
128 महोत्सव के दर्शनार्थ आतुर जनमेदिनी

129 अभिषेक करने के लिए प्रतीक्षा करता समुदाय





130
मच पर चारो तरफ भक्तो की भीड



131 विशिष्ट अतिथियो का मच : प्रतीक्षा की घडिया

132
अभिषेक की छटा से परितृप्त साहु-परिवार



133
समापन धारा के चतुष्कोण-कलश और पूर्ण-कुम्भ





134

आराध्य का अनोखा रूप

135

नयी पीढ़ी के हाथ में
अभिषेक का उत्तराधिकार



महाकलश योजना के कार्यकर्त्ता उन बोली लेने वालो की समस्याएँ और विवाद सुलझाने मे सलग्न रहे हैं, जिनकी सख्या तीन हजार से ऊपर है। इसके अलावा भी कलश सयोजको ने कुछ लोगो को पर्वत पर जाने के पास उपलब्ध कराये हैं। इसी बीच महोत्सव समिति ने निर्णय लेकर सवा सौ रुपये न्यौछावर लेकर कल के लिए कलश आवटन प्रारम्भ किया है। कमेटी कार्यालय मे, और मठ के कार्यालय मे राशि प्राप्त कर यह आवटन रात्रि को प्रारम्भ किया गया। देखते-देखते कलशार्थियो की सख्या हजारो मे पहुँच गयी। उन्हे बताया गया था कि वाछित सख्या पूरी हो जाने पर किसी भी क्षण आवटन बन्द किया जा सकता है, इसलिए उनमे सबसे पहले कलश प्राप्त कर लेने की आतुरता थी। देखते-देखते वहाँ कुछ अव्यवस्था फैल गयी और वातावरण का रुख अशान्ति की ओर झुकने लगा। तत्काल आवटन की वह प्रक्रिया बन्द कर देनी पडी। हजारो लोग निराश लौटते देखे गये।



मै सोचता हूँ कि यदि कलश आवटन का कार्य कुछ अधिक वैज्ञानिक ढँग से किया जाता, तत्काल कलश पाने की प्रक्रिया पूर्व निश्चित, पूर्व-प्रचारित और कुछ अधिक सरल होती, तथा जनमगल महाकलश के सयोजक यदि मनचाहे पास बाँटने मे अपने कार्यकर्ताओ को रोक पाते, तो आज कुछ अधिक लोग अपनी कामना पूरी करने मे सफल होते। हजारो यात्री अनिश्चय और निराशा के अभिशाप मे भी बच जाते।

▭

आतुर दर्शनार्थी

आज सायकाल चार बजे मे दर्शनार्थियो को विन्ध्यगिरि पर जाने की अनुमति थी। बडी सख्या मे लोग इस अवसर का लाभ उठाना चाहते थे। दोपहर दो बजे, अभिषेक करके जब हम लौटे तब तक सैकडो दर्शनार्थी ऊपर जाने के लिए प्रवेश-द्वार पर पक्तिबद्ध खडे होना प्रारम्भ हो गये थे। चार बजे तक यह पक्ति बहुत लम्बी दिखाई देने लगी थी। जितने यात्री पर्वत पर जाते थे उससे भी अधिक उस पक्ति मे जुड जाते थे। रात को आठ बजे तक तलहटी मे वह भीड वैसी ही बनी रही।

गोमटस्वामी के प्रागण मे पुलिस और स्वयसेवको का कडा प्रबन्ध है। द्वार मे प्रवेश करके, आँगन मे उतरकर, बायी ओर से दाहिनी ओर घूमते हुए, वापस उसी द्वार से लोग बाहर निकलते थे। इसी दौरान, आँगन मे चलते-चलते उन सबको अपने आराध्य का दर्शन कर लेना पडता था। पाँच मिनट रुक कर, भगवान् के चरणो मे झुककर, या आँगन मे बैठकर, अपनी आँखे तृप्त करने का अवसर आज

वहाँ किसी को मिल सके, इसकी कोई सम्भावना ही नही थी। अन्तहीन भीड़ का रेला स्वयं ऐसे चल रहा था कि वहाँ चलते-चलते का ही दर्शन हो पाता था। 'इस दर्शन से तो दर्शन की प्यास और बढ गयी' ऐसे अतृप्ति के भाव प्राय: हर यात्री के मुख पर दिखाई देते थे। कुछ लोग अपनी यह भावना शब्दो में भी व्यक्त कर रहे थे।

दर्शनार्थी विन्ध्यगिरि से दक्षिण की ओर के रास्ते से होकर नीचे उतर रहे थे। इस रास्ते पर पर्याप्त प्रकाश न होने से यात्रियो को असुविधा हो रही थी। अर्ध-रात्रि तक यात्री पर्वत से उतरते देखे गये। रात्रि बारह बजे मन्दिर पर उन व्यवस्थापको ने अधिकार कर लिया जिन्हे वहाँ अगले प्रभात होने वाले अभिषेक की तैयारियाँ करनी थी। सामान्य यात्रियो का प्रवेश अब कल शाम चार बजे तक के लिए वहाँ पुन. निषिद्ध हो गया।

▭

23.2.1981

पत्रकारों को अभिव्यक्ति

कल का महामस्तकाभिषेक लोगो की कल्पना मे कही अधिक सफल और सस्मरणीय था। यहाँ मे दूर बैठे जिन लोगो ने केवल कल्पना के नेत्रो से उस अपूर्व दृश्य का अवलोकन किया है, उन सब तक उत्सव का विवरण और उसकी छवियाँ पहुँचाने के लिए अनगिनते सवाददाता और छायाकार दिन-रात लगे रहे हैं। आज जो भी समाचार पत्र सामने आता है, उसका मुख-पृष्ठ उसी महान् अनुष्ठान की चर्चा और चित्रो से भरा दिखाई देता है। हिन्दी, अग्रेजी, कन्नड और तमिल के सभी दैनिक गोमटेश्वर के गुण-गान से ओत प्रोत है, पर कन्नड के कुछ पत्रो का अन्दाज़ कुछ अधिक ही लुभावना लग रहा है।

▭

चित्र ही चित्र

'उदयवाणी' कर्नाटक के दैनिक पत्रों मे जाना-पहचाना नाम है। कन्नड का यह प्रसिद्ध दैनिक, दक्षिण कन्नड़ जिले मे मणिपाल से प्रकाशित होता है। सुरुचिपूर्ण प्रकाशन और उत्तम छपाई के लिए, कई वर्षों से इस पत्र को श्रेष्ठता का पुरस्कार प्राप्त हो रहा है।

सम्भवत: आज 'उदयवाणी' के विद्वान् सम्पादक ने यह स्वीकार कर लिया कि महामस्तकाभिषेक की अनिर्वचनीय शोभा को, और उसकी अपार गरिमा को, शब्दो मे पूरी तरह व्यक्त करना सम्भव नही है। आज उन्होंने अपने पत्र का मुख-पृष्ठ केवल महोत्सव के चित्रो से भरकर ही अपने पाठको के पास पहुँचाया है। बिना शीर्षक, बिना टिप्पणी और बिना किसी विवरण के, वे श्वेत-श्याम चित्र,

वास्तव में बड़े सशक्त ढंग से महोत्सव की छवियों को अपने पाठकों तक सम्प्रेषित करने में कामयाब हैं। दूर-दूर तक पढ़े जाने वाले किसी प्रतिष्ठित दैनिक के प्रथम पृष्ठ पर, एक दिन केवल चित्र ही चित्र हों, उस दिन वही बैनर हो, वही समाचार हों और वे इतना कुछ कहने मे समर्थ हों कि वह सब तरफ से भरा पूरा एक सार्थक समाचार-सा लगे, यह आज पहली बार देखा जा रहा है।

□

अपरिग्रह का प्रशस्ति-पत्र

'कन्नड-प्रभा' का कल का अंक मेरे सामने है। एक मित्र उसका विलक्षण सम्पादकीय पढकर मुझे समझा रहे हैं और कन्नड़ न जानने के अपने अज्ञान पर आज मैं सबसे अधिक खिन्न हूँ। 'कन्नड-प्रभा' के सम्पादक श्री खाद्रि शामण्णा कर्नाटक के विख्यात पत्रकार हैं। वे एक अच्छे अध्येता, विचारक, और सज्जन व्यक्ति हैं। जैन-जीवन-पद्धति के दो सिद्धान्तो, अहिंसा और अपरिग्रह ने उन्हें बहुत प्रभावित किया है। अपनी मननशील विचार सरणी के कारण श्री शामण्णा भारत के बाहर तक जाने जाते हैं। उन्हें सुनने के लिए विदेशों मे भी गोष्ठियो का आयोजन हुआ है।

बंगलोर मे महावीर मिशन द्वारा 'श्रवणबेलगोल और गोमटेश्वर' विषय पर आयोजित दो दिवसीय सगोष्ठी का उद्‌घाटन करते हुए एक माह पूर्व श्री शामण्णा ने कहा था—"हिंसा और स्वार्थ की भावनाओं ने विश्व को विनाश के कगार पर पहुँचा दिया है। अहिंसा और अपरिग्रह, वे दोनो तत्त्व जिनके लिए भगवान् बाहुबली विख्यात हैं, आज की विषम परिस्थितियों में भी उतने ही प्रासगिक हैं।"

कल के अंक में 'कन्नड-प्रभा' का सम्पादकीय मुख पृष्ठ पर प्रकाशित किया गया है। गद्य-काव्य सी मनोहर शब्द-संयोजना से निबद्ध वह आलेख अर्थ-गाम्भीर्य मे भी वैसी ही गहराई से परिपूर्ण है। मुझे तो वह अहिंसा और अपरिग्रह का प्रशस्ति-पत्र-सा लगता है। श्री शामण्णा के इस ऐतिहासिक आलेख का भावानुवाद यहाँ प्रस्तुत करके आपको अपनी अनुभूति का साझीदार बनाना मैं आवश्यक समझता हूँ। सम्पादकीय का शीर्षक है—

महानिरीक्षक

आज महा-मस्तकाभिषेक।
लोकोत्तर बाहुबली स्वामी का महा-मज्जन।
इस बार इस पर्व का विशेष महत्त्व।
संसार के इस अद्वितीय शिल्प की स्थापना का हजारवाँ वर्ष।
भगवान् बाहुबली की कथा लोक-विश्रुत।
विजय से मण्डित, पर विराग के सरोवर में अभिषिक्त महा-मानव।

वीरता और क्षमा का साक्षात् प्रतिबिम्ब।
असंख्य अनुयायियों का पावन क्षेत्र श्रवणबेलगोल।
भारत के कोने-कोने से आये जैन धर्मानुयायियों का यह महा-संगम।
विश्व भर से आने वाली कुतूहली जनो का अगम-पारावार।
कर्नाटक का ही नही, समस्त भारत का अनोखा 'दिव्य-धाम'।

महा-मज्जन ठीक है या गलत ? यह विवाद अप्रासगिक।
एक बात सच है सूरज के उजाले की तरह, कि—
जैनधर्म के विश्व-हितैषी उपदेश अजर, अमर, अविनश्वर।
सार्वभौम-हितकारी, सर्वकाल-उपादेय।
मानव आज स्वयं सर्वनाश की धारा मे प्रवहमान।
भयकर शस्त्रास्त्रो का विस्फोटक ढेर।
छोटी-सी चिनगारी पडने की देर।
फिर प्रलय ही प्रलय।
जहाँ देखें वहाँ दुश्मनी का धुआँ,
इस सर्वनाशी उत्तेजना की रोक, कब ? कैसे ? कहाँ ?

इस प्रश्न का उत्तर है 'व्यापक अहिंसा'
केवल व्यक्ति के जीवन मे ही नही—
समाज समुदाय मे, देश-देशो के बीच मे,
सक्रिय अहिंसा ही मानव-अस्तित्व की एक मात्र आशा-किरण।
हर प्रकार की हिंसा का बरकाव ही बचने का मार्ग।
सत्याग्रह एकमात्र समीचीन उपाय।

बोलना सुगम, पालन करना दुरूह।'
क्रिया को एक सूत्र चाहिए न, वह है 'असग्रह'।
सर्वग्राही बकासुरों की तृष्णा से विश्व-शान्ति भयभीत।
तब शक्तिशाली असग्रह ही नव-जीवन की नीव।
ऋषियो-मुनियो की असग्रह-आराधना अपर्याप्त,
असग्रह आधार हो मानव के जीवन का।
अपना सर्वस्व 'सब' को बाँटकर भोगने की उदारता।
सम-सुख सम-दुःख का दर्शन ही असंग्रह का अभिप्राय।
कब पढेंगे हम अस्तित्व का यह पाठ ?

भगवान् बाहुबली केवल पाषाण-प्रतिमा भर नही,
एक महान् शिल्पी का तराशा हुआ विग्रह मात्र भी वह नही।
विश्व की समस्याओ का समाधान बाँटता हुआ 'प्रज्ञा-पुरुष',
हम सबकी ऊहा-पोह को परखने वाला

'महा-निरीक्षक'।
उत्तर दे सकते हैं क्या ?
देंगे तो बचेंगे,
नही दे सकेंगे तो निश्चित विनाश।

आज 23 फरवरी को भी बड़े प्रभावशाली शीर्षकों में महोत्सव का विवरण इस पत्र ने प्रकाशित किया है। 'कन्नड-प्रभा' के आज के कुछ शीर्षक हैं—

'विराट बैरागी को वैभव का महाभिषेक'
'सहस्र वर्ष—महान् हर्ष'
'लाखो लोगो के द्वारा नमन किया गया'

एक और गद्य-काव्य

कन्नड़ के एक और सशक्त लेखक श्री एच० वी० नागराजराव का एक छोटा-सा आलेख एक मित्र पढ़कर मुझे सुनाते हैं। लेख की भक्ति भरी भाषा, शक्ति भरी शब्दावलि और निश्छल भावाभिव्यक्ति मुझे प्रभावित करती है। आपके लिए उसका भावानुवाद करने बैठा तो जैसे अपने आप ही यह गद्य काव्य लगने लगा—

हे गोमटेश्वर जिनेश

हे गोमटेश्वर जिनेश,
इन्द्रगिरि शिखर पर ऐसे ही खड़े-खड़े
सहस्र वर्ष बीत गये।
सद्य:प्रसूत गोवत्स जैसी निश्छलता,
और बाल सुलभ स्मिति-सी मधुर मुस्कान लिये।

मुकुलित मन्द हास्य से एक बार संसृति को मुड़कर देखा,
फिर अन्त:करण मे उसकी वास्तविकता आंककर,
व्यंग-विहित मुद्रा से उसका उपहास किया
और फिर एक बार अभय कटाक्ष डालकर,
धरा और धाम की ममता ही त्याग दी।
श्रीरूप स्वामी तुम आत्मलीन हो गये।

देश-देशान्तर के शासक और सम्राट
चरणों में मस्तक झुकाकर गौरवान्वित हैं।
आकृति की भव्यता से जगती का वर्तमान

आगत-अनागत का पतन-उत्थान सभी
अन्तर में लखते हुए, अविचल ध्यानस्थ, मौन।
आपका सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक
देखने का वह अवसर भाग्य से प्राप्त हुआ।
परम शान्त निर्विकार,
प्रभु की यह छवि पाकर कर्नाटक धरा धन्य,
देश की प्रजा धन्य।
मौन अस्तित्व मय, आत्मलीन ध्यानस्थ
अनवरत समता की हिम-शीतल धारा-सा,
आपका पुनः दर्शन, अनुपम सौभाग्य है।

कृतज्ञता ज्ञापन समारोह

मुख्य मस्तकाभिषेक के दूसरे दिन, 23 फरवरी को मध्याह्न में, महोत्सव की सफल संयोजना के उपलक्ष्य मे, समाज ने चामुण्डराय-मण्डप मे एक धन्यवाद सभा का आयोजन किया। सेठ लालचन्द हीराचन्द की अध्यक्षता मे सम्पन्न इस महती सभा में, महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयांसप्रसादजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उन्हें 'श्रावक-शिरोमणि' उपाधि से अलंकृत किया गया। स्वर्गीय साहु शान्तिप्रसादजी की अविस्मरणीय सेवाओं के लिए मरणोपरान्त सम्मान का प्रतीक, एक प्रशस्ति-पत्र उनके ज्येष्ठ पुत्र साहु अशोककुमारजी को सौंपा गया। महोत्सव के कर्मठ और सबल आधार, श्रवणबेलगोल मठ के युवा पट्टाचार्य, स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी को, दो दिन पूर्व प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा, भारी जन-सभा मे प्रदान की गयी 'कर्मयोगी' उपाधि का, सम्मान-पत्र द्वारा पुष्टिकरण किया गया। अनेक मुनिराजो के साथ भारतगौरव आचार्य-रत्न देशभूषणजी, आचार्य विमलसागरजी तथा एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी ने अपनी उपस्थिति से सभा को धन्य किया। उन्होंने अपने मगल उद्बोधन के द्वारा सम्मानित जनो को अपने आशीर्वाद भी प्रदान किये। अनेक मठो के पीठासीन भट्टारक स्वामी भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

लगन और निष्ठा का गौरव

सन् 1974-75 मे भगवान् महावीर के 2500 वें निर्वाण महोत्सव की देशव्यापी महान् उपलब्धियो का लेखा-जोखा करके, भारत का दिगम्बर जैन समाज अपने समृद्ध भविष्य के सपने सजो रहा था, तभी अकस्मात् उन सारी सफलताओ के भागीरथ वाहक, साहु दम्पती हमारे बीच से उठ गये थे। सुयोग्य जीवन-संगिनी रमारानी का वियोग होते ही साहु शान्तिप्रसादजी भीतर से कुछ ऐसे टूटे कि फिर अधिक समय वे जीवित न रह सके। सन् 1977 मे सर्वाधिक सम्मान्य नेता, श्रावक-शिरोमणि के जाते ही पूरी समाज में उदासी और निराशा व्याप्त हो गयी। भविष्य अनिश्चित और अधकार भरा लगने लगा। ऐसे विपदाकाल में हमारे मार्गदर्शन के लिए आशा की एक मशाल, श्रावक-शिरोमणि के उसी परिवार से सहज ही हमें प्राप्त हो गयी। उस ज्योतिपुज का स्वत धन्य नाम है 'श्रेयांसप्रसाद'।

साहु श्रेयांसप्रसादजी को स्व. साहु शान्तिप्रसादजी के ज्येष्ठ भ्राता होने का गौरव प्राप्त है। समाज को नेतृत्व देने की क्षमता, छोटे-बड़े सबको साथ लेकर चलने का सौजन्य और अवसर के अनुकूल त्याग करने की उदारता, यद्यपि श्रेयांसप्रसादजी मे प्रारम्भ से रही है, जैन समाज को अनेक रूपों में उनका योगदान मिलता रहा है, परन्तु दिगम्बर जैन समाज को उनका नेतृत्व पाने का सौभाग्य पहले प्राप्त नही हुआ था। अपने दिवंगत भ्राता की भावनाओं को सम्मान देने के लिए, या उनके संजोये हुए सपनों को आकार देने के लिए, अथवा विषम परिस्थितियों में समाज की शक्ति को संयोजित करके दिशा देने के लिए या पता नही किस भावना से प्रेरित होकर, 'बाबूजी ने स्वत: आगे आकर समाज की बागडोर संभाली। यह जिम्मेदारी वे ऐसे मनोयोग से

निभा रहे हैं, कि थोड़े ही समय में, चारों कोने से सारा दिगम्बर जैन समाज उनकी छत्र-छाया में अपने आपको आश्वस्त और अपने भविष्य के प्रति निश्चिन्त महसूस करने लगा है।

भगवान् बाहुबली सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक आयोजित करने के लिए, जब सबसे पहले विचार-विमर्श हुआ, रूपरेखा निर्धारित की गयी, तब उस महोत्सव समिति की अध्यक्षता के लिए साहु शान्तिप्रसाद का नाम विचार में आया। उस समय उन्होंने अपनी असमर्थता जताकर श्रीमान् श्रेयांसप्रसादजी को वह जिम्मेदारी ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया।

साहु श्रेयांसप्रसादजी ने जब से यह कार्य अपने हाथ में लिया, तबसे तन, मन और धन से वे इस महोत्सव की सफलता के लिए दिन-रात लगे रहे। देश के प्रमुख उद्योगपतियों मे उनकी गणना होती है। राजनैतिक क्षेत्र मे भी उन्हें भारी सम्मान प्राप्त है। उनकी चतुर्दिक्-प्रभावशीलता सर्व विदित है। दिगम्बर जैन समाज के वे सर्वमान्य और वरिष्ठतम कर्णधार हैं। लोग कहते हैं कि काम को अंजाम देने के लिए बाबूजी के पास असीम साधन है। किन्तु मेरा अनुभव है कि उन सारे साधनों से भी बड़ा, सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व, जो श्रेयासप्रसादजी के पास है, वह है उनका संकल्प। वह तत्त्व है लक्ष्य तक पहुँचने का दृढ़ निश्चय और सारी विघ्न-बाधाओ तथा गैरजरूरी बातों की उपेक्षा करते हुए अपने गन्तव्य की ओर लगन और निष्ठा से भरी उनकी गति। भौतिक साधन और पद अनेक लोगों के पास, अनेक प्रकार से एकत्र हो जाते हैं, परन्तु बाबूजी जैसा दृढ संकल्पी, अथक परिश्रमी और अडिग व्रती हर कोई नही होता। उनकी इन्ही विशेषताओ ने उन्हे इस महोत्सव का सबसे अधिक सम्मानास्पद व्यक्ति बना दिया था।

साहु श्रेयांसप्रसादजी का सम्मान

कृतज्ञता ज्ञापन के इस अवसर पर समाज की ओर से सम्मान की प्रथम पुष्पाजलि साहु श्रेयांसप्रसादजी को अर्पित की गयी। एक अभिनन्दन-पत्र द्वारा उन्हे 'श्रावक शिरोमणि' की उपाधि से अलंकृत किया गया। ललित शब्दावली मे रचित इस अभिनन्दन पत्र का वाचन, मध्यप्रदेश के ख्यातिप्राप्त समाज नेता श्री बाबूलाल पाटौदी ने किया। राष्ट्रीय ख्याति के राजपुरुष तथा जैन समाज के अत्यन्त सौम्य मार्गदर्शक, भैया मिश्रीलाल गंगवाल ने जब वह अभिनन्दन-पत्र साहु श्रेयांसप्रसादजी को समर्पित किया, तब क्षण भर को ऐसा लगा जैसे 'कर्मठता ने प्रेरणा को अभिनन्दित किया हो।' 'इस अविस्मरणीय प्रसंग पर लोगो के मन की प्रसन्नता करतल-ध्वनि बनकर फूट पडी। सारा पण्डाल देर तक तालियों की गडगड़ाहट से गूँजता रहा। दिल्ली के श्री प्रेमचन्द जैन ने शाल और माला भेंट करके साहुजी को सम्मानित किया। कलकत्ते के समाज प्रमुख श्री रतनलाल गंगवाल ने उन्हे चन्दन की माला पहिनायी। साहुजी को दिये गये अभिनन्दन-पत्र की शब्दावलि यहाँ प्रस्तुत है—

भगवान् बाहुबली
सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव के अवसर पर
श्री साहु श्रेयांसप्रसाद जैन का
अ भि न न्द न एवं अ लं क र ण

सौजन्य और शालीनता के साकार रूप !

व्यक्ति के अंतरंग गुण सबसे पहले उसके आचार-व्यवहार मे प्रतिबिम्बित होकर जन-मानस मे एक छवि का निर्माण करते हैं। समाज और राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रो के असख्य व्यक्ति आपके सम्पर्क मे आये हैं, आते रहते हैं। राजधानी मे संसद सदस्यों का पारस्परिक वार्तालाप हो, या कलकत्ता-बम्बई के औद्योगिक सामाजिक क्षेत्रो से सम्बन्धित व्यक्तियो का सम्मेलन, साहित्य-कारों की गोष्ठी हो या धार्मिक-सास्कृतिक क्षेत्रो मे सम्बन्धित व्यक्तियो के विचार-विनिमय का प्रसंग, आपका नाम आते ही सब एक स्वर से आपके व्यक्तित्व की शालीनता, व्यवहार की मधुरता, अपनत्व की भावना और सहयोग-सहायता के लिए आपकी उदार तत्परता की प्रशसा किये बिना नही रहते। ये गुण आपके वश की विरासत हैं। भारतीय संस्कृति आधुनिक युग मे जिन संस्कारो का संश्लिष्ट रूप है, उसके श्रेष्ठतम तत्त्वो से आपके व्यक्तित्व का निर्माण हुआ है।

राष्ट्र-संवर्धना के यशस्वी कृती !

महात्मा गाँधी के नेतृत्व मे चलने वाले स्वतन्त्रता सग्राम के दिनो मे आपने जो उत्सर्ग किया और ब्रिटिश शासन के दमनचक्र के अन्तर्गत लाहौर जेल मे यातना के जो दिन बिताये, वह आपकी राष्ट्रीय सेवा का ऐसा अध्याय है, जिसकी कल्पना रोमाच उत्पन्न करती है। स्वतन्त्र देश के शासन ने स्वाधीनता सग्राम मे आपके योगदान की सराहना स्वरूप आपको ससद की सदस्यता समर्पित की। उन दिनो के ससद सदस्य और मन्त्री आपकी मित्रता को आज तक अपनी वैयक्तिक उपलब्धि मानते हैं। आप भी राजनीति के परिवर्तनो से निरपेक्ष, इन मित्रो के सुख-दुख के सहभागी बने रहते हैं। देश के उद्योगपतियों और व्यवसाय प्रमुखो की सस्था 'फैडरेशन आफ इण्डियन चेम्बर्स आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज़' के आप अध्यक्ष रहे हैं। भारतीय विद्या-भवन के आप कोषाध्यक्ष हैं और बाम्बे हॉस्पिटल जैसी विख्यात जन-सेवी सस्था के अध्यक्ष हैं।

जैन समाज के तेजस्वी कर्णधार !

आप स्वभाव से विनम्र है, और आत्म-प्रचार से विमुख रहे हैं। अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के आप अनेक वर्षों तक मार्गदर्शक रहे हैं। अनेक सभा-समितियाँ आपकी अध्यक्षता में फूली-फली हैं। समाज सेवा के कार्यों मे दीर्घकाल से अग्रिम पक्ति मे रहते हुए भी आपने कभी शीर्षस्थ स्थान की आकाक्षा नही की। वह स्थान आपके यशस्वी अग्रज श्री साहु शान्तिप्रसादजी का रहे, आपने सदा इसे अपना गौरव माना। 27 अक्टूबर 1977 को जब अचानक समाज पर साहुजी के निधन का वज्रपात हुआ, तो समस्त दिगम्बर जैन समाज गहरे शोक और निराशा में डूब गयी। आपत्ति के इस क्षण में आपने परिवार को धीरज बँधाया

और समाज को आश्वस्त किया कि आपसे जितना सम्भव होगा, अपने अनुज के नाम और काम की परम्परा को अक्षुण्ण रखेंगे। यद्यपि साहु शान्तिप्रसादजी के असामयिक अवसान की क्षति समाज को सदा सालती रहेगी, किन्तु उसे आपके समर्थ व्यक्तित्व का जो सम्बल मिला है, उसने उसे हताशा से उबार लिया है।

सांस्कृतिक चेतना के प्रबुद्ध प्रवर्तक !

यह आपकी सामर्थ्य, कर्मठता, अनुभव, लगन और व्यवस्था के सचेत निर्वाह का सुफल है कि भगवान् बाहुबली की मूर्ति प्रतिष्ठापना और महा-मस्तकाभिषेक के सहस्राब्दि महोत्सव के जिस आयोजन की विशाल परिकल्पना, परम पूज्य एलाचार्य विद्यानन्दजी महाराज ने की, उसे आपने 'कर्मयोगी' भट्टारक स्वस्तिश्री चारुकीर्ति स्वामीजी के सहयोग से, सफलता के साथ अपने नेतृत्व मे क्रियान्वित किया। यह आपके चमत्कारी व्यक्तित्व और दूरदर्शी क्रियाशीलता का परिणाम है कि एक ओर तो समाज आपके साथ कन्धे मे कन्धा मिलाकर खड़ी हो गयी, और दूसरी ओर देश की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी तथा कर्नाटक के मुख्यमन्त्री श्री गुडूराव अपने सहयोगी मन्त्रियो तथा अधिकारीगण सहित महामस्तकाभिषेक के बहुपक्षीय कार्यक्रमो के सफल बनाने के लिए कटिबद्ध हो गये।

भगवान् महावीर के 2500 वें निर्वाण महोत्सव के अवसर पर धर्मचक्र की यात्रा ने जिस प्रकार शान्ति, सहयोग, सयम और सामजस्य के सन्देश को देश के कोने-कोने मे प्रतिध्वनित किया, उसी प्रकार महामस्तकाभिषेक के अवसर पर आपके सहयोगियो द्वारा आयोजित जनमगल महाकलश की यात्रा ने राष्ट्रव्यापी साम्कृतिक चेतना की ज्योति जगायी। महामस्तकाभिषेक के पुण्य अवसर पर जैन सम्कृति के ऐसे आयामो को सप्रेषित करने मे आपने नेतृत्व किया और व्यक्तिगत दायित्व लिया जो जैन धर्म की परम्परा को, बाहुबली स्वामी के सन्दर्भ मे, प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ से जोडते हैं, और श्रुतकेवली भद्रबाहु तथा चन्द्रगुप्त मौर्य के ऐतिहासिक सन्दर्भो को जीवन्त बनाकर उत्तर तथा दक्षिण की भावात्मक एकता को रेखाकित करते हैं। कन्नड़, हिन्दी तथा अग्रेजी मे निर्मित वृत्तचित्र, (डॉक्यूमेन्टरी फिल्म) का निर्माण, भगवान् बाहुबली की कथा पर आधारित काव्यरूपक का मचन, आपकी अध्यक्षता मे भारतीय ज्ञानपीठ के माध्यम से इस अवसर के अनुरूप उत्कृष्ट साहित्य का प्रकाशन आदि ऐसे अवदान हैं, जिनके लिए जैन समाज और भारतीय सस्कृति के सपोषक सदा गर्व करेंगे।

श्रावक शिरोमणि !

आपकी इन साम्कृतिक सेवाओ और अभूतपूर्व उपलब्धियो के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन हेतु, देश के कोने-कोने से आये समाज के लाखो व्यक्ति, अपने प्रतिनिधियो के माध्यम से इस विशाल जन-सभा मे आपका अभिनन्दन करके पुलकित हो रहे हैं। भगवान बाहुबली प्रतिष्ठापना एव सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक महोत्सव, जिनके आशीर्वाद से सफल हुआ है, उस चतुर्विध संघ के अभूतपूर्व विशाल सम्मेलन के सान्निध्य मे जैन-जनसभा आपको अपने सर्वोच्च अलकरण 'श्रावक शिरोमणि' से समलकृत करती है।

हमारी कामना है कि आप दीर्घायु हों, सदा स्वस्थ रहें, सस्कृति का संरक्षण और समाज की

सेवा निरन्तर इसी प्रकार आपके नेतृत्व में संवर्धित होती रहे, और आपका यश अधिकाधिक विस्तार पाता रहे।

दिनांक: 23 फरवरी 1981 — हम हैं, आपके गुणानुरागी,
श्रवणबेलगोल, कर्नाटक — समस्त भारत की दिगम्बर जैन समाज के सदस्य

स्व० साहु शान्तिप्रसादजी की स्मृतियाँ

इस पूरे महोत्सव में, पग-पग पर जिस व्यक्ति का स्मरण आता था, सर्वत्र जिसकी कमी खटकती थी, अपने उस अद्वितीय नेता श्रावक-शिरोमणि स्व० साहु शान्तिप्रसादजी को, और उनकी जीवन सहचरी श्रीमती रमारानी को, समाज ने कृतज्ञता ज्ञापन के इस अवसर पर सम्मान सहित याद किया। याद भर नहीं किया, उन्हें मरणोपरान्त सम्मान देकर उनकी सेवाओ के प्रति अपनी श्रद्धा भावना पुनः दोहरायी। साहु शान्तिप्रसादजी को सम्बोधित उस श्रद्धा-प्रशस्ति का वाचन उन्ही के सहकारी, भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक, श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन द्वारा किया गया। दिवंगत साहु दम्पती की स्मृतियो ने मण्डप के माहौल को भावुकता से भर दिया। वाचन के पश्चात् वह प्रशस्ति-पत्र सरसेठ भागचन्दजी सोनी ने साहु अशोककुमारजी को भेंट किया। श्री वीरेन्द्र हेगडे के अनुज श्री सुरेन्द्र हेगडे ने माल्यार्पण द्वारा अशोकजी का स्वागत और सम्मान किया। प्रशस्ति-पत्र मे स्व० साहुजी के प्रति समाज की कृतज्ञता इन शब्दो मे अंकित की गयी थी—

भगवान् बाहुबली
सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना एव महामस्तकाभिषेक महोत्सव के अवसर पर
जैन समाज के हृदय-सम्राट, श्रावक शिरोमणि स्व० साहु शान्तिप्रसादजी जैन की
पावन स्मृति मे

श्र द्धा प्र श स्ति

सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक महोत्सव के अवसर पर श्रवणबेलगोल मे समस्त भारत से एकत्र जैन समाज का प्रतिनिधित्व करने वाला लाखो व्यक्तियो का यह समुदाय अपने पूज्य आचार्यों और मुनि-आर्यिकाओ के अभूतपूर्व विशाल सघ के सान्निध्य मे स्वर्गीय श्री साहु शान्तिप्रसादजी के गुणो का, उनकी उपलब्धियो का, और जैन-सस्कृति के प्रति उनकी सेवाओं का कृतज्ञ भाव से स्मरण करते हुए यह श्रद्धाजलि अर्पित करता है।

साहु शान्तिप्रसादजी अपने समय के ऐसे विलक्षण युग-पुरुष थे, जिनकी प्रतिभा और कर्मठता ने देश तथा समाज के अनेक क्षेत्रो को उपकृत किया। भारतीय ज्ञानपीठ जैसी यशस्वी सस्था की स्थापना करके इसके माध्यम से उन्होने प्राचीन आचार्यों के अनेकानेक अज्ञात अथवा अनुपलब्ध ग्रन्थो को, शास्त्र-भण्डारो की खोजबीन द्वारा प्राप्त करके, उनका आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से सपादन करवाकर प्रकाशित कराया। इस प्रकार समग्र भारतीय वाङ्मय की एकागता और अपूर्णता का परिहार हुआ। देश-विदेश के विद्वान उनके इस अवदान के प्रति चिर-कृतज्ञ रहेंगे। प्राचीन जैन तीर्थों के जीर्णोद्धार के व्यापक कार्यक्रमों को उन्होने सफलता पूर्वक

क्रियान्वित किया। साहु जैन ट्रस्ट द्वारा लाखो रुपये की राशि छात्र-वृत्तियों के रूप मे देकर प्रतिभावान छात्रो को देश-विदेश मे उच्च शिक्षा के साधन प्राप्त करने का अवसर दिया।

श्री साहु शान्तिप्रसादजी अत्यन्त श्रद्धावान, उर्ध्वचेता महापुरुष थे। अपने यौवन काल से लेकर जीवन की अन्तिम सांस तक वह जैन सस्कृति की बहुमुखी प्रगति के लिए समर्पित रहे। वह उस जीवनचर्या के समर्थ साधक थे, जिसमे प्राणीमात्र के लिए मैत्री, विद्वानों के प्रति प्रहर्षित श्रद्धा, विपन्न जनो के प्रति करुणा और विपरीतवृत्ति वालो के लिए माध्यस्थ भाव का प्रतिपादन है। वह समस्त जैन समाज की एकता साधने के लिए सदा प्रयत्नशील रहे।

श्री साहुजी ने भारतीय उद्योग व्यापार को अपने नेतृत्व द्वारा नये क्षितिजो पर प्रकाशमान बनाया, और सफलता के नये कीर्तिमान स्थापित किये।

खण्ड दृष्टि का परिहार, और अनेकान्त-मूलक समग्र दृष्टि का स्वीकार उनके स्वभाव के अग थे। भाषा और क्षेत्र की सीमाओ को अतिक्रान्त करके सस्कृति के मूल स्वर किस प्रकार भारतीय वाङ्मय की वीणा मे झकृत है, इस आस्था को मूर्त रूप देने के लिए श्री साहुजी ने भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार की स्थापना की।

कर्नाटक के श्रवणबेलगोल तीर्थ पर एकत्र होने वाले हम सब इस अनुभूति से गौरवान्वित है कि भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा अब तक प्रदत्त एक-एक लाख रुपये के पन्द्रह पुरस्कारो मे तीन पुरस्कार कन्नड भाषा के मूर्धन्य साहित्यकारो श्री पुट्टप्पा, श्री बेन्द्रे तथा श्री शिवराम कारन्त को प्राप्त हुए हैं।

महामस्तकाभिषेक महोत्सव के अवसर पर साहुजी की स्मृति मे श्रद्धाजलि समर्पित करने का एक विशेष कारण यह भी है कि आज यह देशव्यापी सांस्कृतिक एव सामाजिक आयोजन जिस रूप मे सम्पन्न हो रहा है, उसका प्रथम प्रारूप श्री साहु शान्तिप्रसादजी के एकछत्र नेतृत्व में क्रियान्वित हुआ था—भगवान् महावीर के 2500 वें निर्वाण महोत्सव के रूप मे। एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी महाराज की प्रेरणा का यह फल था कि साहुजी अपने शरीर की अस्वस्थता को भूलकर प्रति क्षण उस अविस्मरणीय महोत्सव की देशव्यापी सफलता के साधने मे दत्तचित्त रहे। साहुजी द्वारा नियोजित धर्मचक्र की सास्कृतिक सफलता के कारण ही आज जनमगल महाकलश के सफल आयोजन के लिए समाज प्रोत्साहित हुआ।

स्वर्गीय श्री साहुजी की स्मृति मे समर्पित यह श्रद्धाजलि प्रशस्ति-पत्र, समाज उनके प्रतिभावान ज्येष्ठ पुत्र श्री साहु अशोककुमार जैन के हाथो मे, इस आशा से संभलवा रही है कि वे अपने पूज्य पिताजी के मार्ग का अनुसरण करेंगे और समाज तथा सस्कृति को अपनी सेवाओ का लाभ देकर यशस्वी होंगे।

एवमस्तु।

दिनाक : 23 फरवरी 1981 — श्रद्धावनत
श्रवणबेलगोल, कर्नाटक — समस्त भारत की दिगम्बर जैन समाज के सदस्य

कर्मयोगी का अभिनन्दन

श्रवणबेलगोल जैनमठ के पट्टाचार्य, स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी को, यदि एक शब्द में कहना पड़े तो, महोत्सव के रथ की धुरी कहा जा सकता है। जिस चिन्ता के साथ वे छोटे-बड़े हर काम की सुधि लेते रहे, जिस विवेक से वे आकस्मिक समस्याओं का तात्कालिक समाधान प्रस्तुत करते रहे, वह बिरले व्यक्तियों में ही सम्भाव्य है। जिस लगन और अनुशासन के साथ वे ठीक समय पर प्रत्येक कार्य के लिए एकाग्र होकर संलग्न हो जाते थे, उनकी वह एकाग्रता शतावधानी योगियों की याद दिलाती थी। कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का सफल निर्वाह करते हुए भी स्वामीजी जितने निरुद्विग्न, जैसे शान्त बने रहते थे, वह उनकी योगि-सुलभ निस्पृहता का प्रबल प्रमाण था। दो दिन पूर्व उन कर्मठ मठाधीश के लिए 'कर्मयोगी' सम्बोधन का प्रयोग करके, देश की प्रधानमन्त्री ने सचमुच लाखों लोगों के कण्ठ की बात छीनकर अपने भाषण मे व्यक्त कर दी थी।

आज की विशाल सभा मे उस कर्मठ महापुरुष का भी अभिनन्दन किया गया। जैन जगत् के मूर्धन्य विद्वान सिद्धान्ताचार्य पण्डित कैलाशचन्द्रजी शास्त्री ने, भट्टारक स्वामीजी के लिए 'कर्मयोगी' उपाधि की पुष्टि करने वाले अभिनन्दन-पत्र का वाचन किया और उसे स्वामीजी के यशस्वी करो मे समर्पित किया। अभिनन्दन के इसी तारतम्य मे सेठ भागचन्दजी सोनी ने भट्टारकजी को माल्यार्पण किया और सेठ लालचन्द हीराचन्द ने शाल तथा श्रीफल भेंट करके उनके प्रति जन-जन मे व्याप्त सम्मान भावनाओ का सम्प्रेषण किया। सहसा किसी ने खड़े होकर 'कर्मयोगी स्वामीजी की जय' का नारा बुलन्द किया जिसकी अनेक आवृत्तियाँ देर तक उस सभा मे गूँजती रहीं। कर्मयोगी का उपाधि-पत्र इन वाक्यो से निष्पन्न हुआ था—

परम श्रद्धास्पद स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी
पीठाधिपति, श्रवणबेलगोल की सेवा में

अ भि न न्द ना र्प ण

तेजस्वी युवामूर्ति साधक !

भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि तथा महामस्तकाभिषेक के पुण्य अवसर पर धर्म-तीर्थ श्रवणबेलगोल मे एकत्र जैन समाज तथा जैनेतर समाज के लाखो श्रद्धालुओ की श्रद्धा भावना को व्यक्त करने के हेतु यह अभिनन्दन-पत्र अत्यन्त आदर सहित आपकी सेवा में अर्पण करते हुए हमे हार्दिक उल्लास हो रहा है। श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु और ईसा के तीसरी शताब्दी पूर्व में भारतीय इतिहास के एकमात्र एकछत्र साम्राज्य सस्थापक, परमवीर सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य की प्रभाचन्द्र मुनि के नाम से जीवन के अन्तिम बारह वर्षों की साधना-स्थली, और फिर आज से एक हजार वर्ष पूर्व के महिमामय, तपस्वी और श्रुतज्ञान के साकार स्वरूप 'सिद्धान्त-चक्रवर्ती' आचार्य नेमिचन्द्र, माता कालल देवी, मुख्य अमात्य एव वीर शिरोमणि चामुण्डराय की भक्ति की विश्वविख्यात जीवन्त छवि की पूजास्थली के गौरव की सुरक्षा और संवर्धन के दायित्व धारक के रूप में आपका स्थान अप्रतिम एव गौरवमय है। विगत एक दशक में परमपूज्य एलाचार्य मुनि श्री विद्यानन्दजी महाराज के आध्यात्मिक अनुशासन और मार्गदर्शन

में आपने तीर्थ की जो बहुमुखी प्रगति सम्पन्न की है, वह श्रवणबेलगोल के आधुनिक इतिहास का अविस्मरणीय अध्याय बन गया है।

आध्यात्मिक-सांस्कृतिक प्रवृत्तियों के सफल प्रवर्तक !

आपने अपनी निष्ठा, कर्तव्यपरायणता और क्षमता से कर्नाटक सरकार द्वारा गठित एस.डी. जे.एम.आई. मैनेजिंग कमेटी के अध्यक्ष के रूप मे तीर्थ की महत्ता को प्रतिष्ठित किया है, इसके जीर्णोद्धार और नव-निर्माण को प्रोत्साहित किया है, तथा देश-विदेश के यात्रियो की सुख-सुविधा को आधुनिक रूप देने का प्रयत्न किया है। गोम्मटेश्वर-विद्यापीठ की स्थापना, दिगम्बर जैन साधु सेवा समिति की अध्यक्षता, चन्द्रगुप्त ग्रन्थमाला और श्री-विहार विशेषाक-माला का सम्पादन, धर्म-सम्मेलनो का आयोजन, सिंगापुर में एशिया कान्फ्रेंस में जैनधर्म के अहिंसा-सिद्धान्त का प्रतिपादन, विश्वधर्म सम्मेलन की शान्ति-परिषद् के सदस्य के रूप मे न्यूयार्क मे विश्वकल्याण विधायिनी प्रचार-पताका का उत्तोलन आदि आपकी ऐसी उपलब्धियां हैं, जिन्हे जैन-जैनेतर समाज गौरव-पूर्वक स्मरण करता है।

कर्मयोगी स्वस्तिश्री स्वामीजी !

आपके प्रभावक नेतृत्व मे श्रवणबेलगोल श्रावको और दर्शनार्थियो का ही नही, चतुर्विध-संघ का जो विशाल आध्यात्मिक और सास्कृतिक केन्द्र बनने की ओर उन्मुख है, उसकी मूल विधायिका शक्ति आपकी कर्मठता ही है। निश्चय ही एक दिन यह क्षेत्र जैन धर्म के उस रूप को प्रत्यक्ष करेगा जो विश्व-संस्कृति का प्राण है।

भारतीय जन-मानस का प्रतिनिधित्व करने वाली यह विशाल जन-सभा पूज्य आचार्यों, मुनिराजो, और आर्यिकाओ के अभूतपूर्व सान्निध्य मे आपको 'कर्मयोगी' के अलकरण से सम्मानित कर अपने को धन्य मानती है।

श्रवणबेलगोल,
23 फरवरी 1981

हम हैं
आपकी सास्कृतिक उपलब्धियो के
अनुरागी
आपके सर्वजन प्रतिनिधि

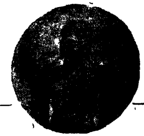
महोत्सव के कार्यों मे उल्लेखनीय सहयोग देने के लिए पी.एस.मोटर्स दिल्ली के श्री रमेशचन्दजी को भी इस अवसर पर साहु श्रेयासप्रसादजी के हाथो सम्मानित किया गया।

समाज द्वारा प्रदर्शित इस आत्मीयता के लिए आभार व्यक्त करते हुए साहु श्रेयांसप्रसादजी ने अवरुद्ध कण्ठ से अपने स्व० भ्राता साहु शान्तिप्रसाद का स्मरण किया, अपने-आपको समाज का एक साधारण सेवक मानते हुए आजीवन समाज के प्रति अपने कर्तव्यों की पालना का संकल्प दोहराया। कर्मयोगी चारुकीर्ति स्वामीजी ने गोमटस्वामी की अद्भुत महिमा का बखान करके उनके चरणो मे माथा झुकाते हुए कहा कि "यह इन्ही गोमटस्वामी का अतिशय है कि इस क्षेत्र पर बड़े-से-बडे काम सरलता से पूर्ण ही जाते हैं। निर्मल मन से किया हुआ कोई सकल्प अधूरा नही रहता। क्षेत्र के अतिशय से, और आपके सहयोग से, सब कुछ अपने-आप हो रहा है, इसमें

हमारा कुछ भी नहीं है, फिर भी आप हमें उसका श्रेय देते हैं, यह आपकी उदारता है।

अन्त में आशीर्वाद स्वरूप दिये गये अपने संक्षिप्त वक्तव्य में एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी ने कहा कि यह सहस्राब्दि महोत्सव और महामस्तकाभिषेक सचमुच एक बहुत बड़ा कार्य था। ऐसे कार्यों के लिए जन-जन का सहयोग मिलता है, तभी वे सफल होते हैं। सयोजक पदाधिकारी हों या सामान्य यात्री, विद्वान हों या व्यापारी, शासकीय अधिकारी हों या प्रजाजन, स्वयंसेवक हों या पत्रकार, वे सब जो यहां उपस्थित हैं, और वे भी जो यहां उपस्थित नहीं हो सके हैं, जिन्होंने भी इस महान् कार्य मे तन से, मन से या धन से, रंचमात्र भी सहयोग दिया है, वे सब पुण्य के भागी है। वे सब आज सम्मान के अधिकारी हैं। आज इस मण्डप मे कुछ प्रमुख जनो को प्रतीक रूप से सम्मानित करके, वास्तव मे उन सब सहयोगियो का ही सम्मान किया गया है।



क्षण-क्षण के  आलेख

21.2.81

रेडियो-प्रसारण

रात्रि साढे आठ बजे आकाशवाणी पर प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी की आज की श्रवणबेलगोल यात्रा की रिपोर्ट प्रसारित हो रही है। उनके भाषण के प्रमुख अंश बीच-बीच मे सुनाई दे रहे हैं। समाचार बुलेटिन मे भी वही प्रसग छाया हुआ है। कल सुबह सम्पन्न होने वाले इस ऐतिहासिक महामस्तकाभिषेक की तैयारियाँ और उसके समाचार जानने के लिए पूरा देश आतुर है। श्रीमती गाँधी के कार्य-क्रम के इस प्रसारण से करोडो लोग इस महोत्सव की महत्ता का अन्दाजा लगा रहे हैं। भगवान् बाहुबली का पवित्र नाम कोटि-कोटि जनो तक आज अनायास ही पहुँच रहा है।

कल कर्नाटक के इस छोटे से नगर मे सम्पन्न होने जा रहा यह महोत्सव आज ही पूरे राष्ट्र का उत्सव बनकर जन मानस में उभर रहा है। देश बहुत बडा है, परन्तु उसका शील और सौजन्य, सचमुच और भी बडा है। उसकी भूमि से भी बडा। उसके आकाश से अधिक विस्तार वाला और सागर से अधिक गहराई वाला यही शील-सौजन्य इस भारतीय संस्कृति का सपोषक तत्त्व है।

□

23.2.81

अभिषेक में खर्च

कल के अभिषेक की स्मृतियाँ सबके लिए सुखद हैं। जो मिलता है, उसी की चर्चा करता है। अपनी-अपनी भावभूमि के अनुसार लोग उसी के विषय मे तर्क-वितर्क और कही-कही कुतर्क भी करते हैं। अभिषेक के सरजाम मे किया गया खर्च ऐसे लोगो को कुछ अधिक परेशान करता है। अपने-अपने अनुमान लगाकर तीन-चार लाख से दस-बारह लाख तक का खर्च लोग अभिषेक के साथ जोड़ते हैं। मैं अपनी जिज्ञासा रोक नही पाता हूँ और केवल अभिषेक से सम्बन्धित व्यय का अनुमान कमेटी के सूत्रो से करना चाहता हूँ।

एक लाख रुपया व्यय करके, किराये की सामग्री से अभिषेक का मंच तैयार हुआ था। उसकी साज सज्जा पर सात हज़ार रुपया खर्च हुआ है। 'पूर्णकुम्भ' जो अभिषेक का मूल कलश है, लगभग बारह हज़ार की लागत से तैयार हुआ। साढ़े तीन किलो चाँदी के इस कलश की बनवायी ही ढाई हज़ार रुपये देना पड़ी है। महोत्सव के निमित्त से अभिषेक के लिए इस बार एक हज़ार आठ धातु निर्मित नये छोटे कलश खरीदे गये हैं। पीतल के सफेद पालिश वाले इन कलशों पर अठारह हज़ार की राशि कमेटी ने खर्च की है। ये कलश भविष्य में काम आते रहेंगे। यह तो हुई मंच और कलशों की बात। अब सामग्री की बात करें।

कर्नाटक दुग्ध विकास निगम को एक हज़ार लीटर दूध के लिए तीन हज़ार रुपये का भुगतान किया गया। चन्दन और चन्दन का बुरादा शासकीय फैक्ट्री से खरीदा गया, लगभग बारह हज़ार का। अष्टगन्ध की सामग्री दो हज़ार चार सौ रुपये की आयी और एक हज़ार किलो हल्दी खरीदने पर साढ़े तीन हज़ार रुपया खर्च हुआ। गन्ने का रस कुल एक सौ तीस लीटर मँगाया गया जिसके लिए तीन सौ बारह रुपये देने पडे। इसमे से कुछ सामग्री बची भी रही जिसका उपयोग बाद के अभिषेको मे होगा।

□

कलश के स्मृति चिह्न

प्रथम दिन, 22 फरवरी को मस्तकाभिषेक करने वाले सभी जनो को, स्मृति चिह्न के रूप में समिति की ओर से गोमटस्वामी की छाप वाले पदक प्राप्त हुए। शताब्दि कलश लेने वालो को स्वर्णिम तथा शेष सभी कलश पाने वालों को रजत पदक, तिरंगे फीते में डालकर अभिषेक का कलश देते समय उनके गले मे पहिनाये गये। इन पदको पर एक ओर गोमटस्वामी की छबि अंकित है और दूसरी ओर 'सहस्राब्दि महोत्सव' शब्द लिखे हुए हैं।

आज अभिषेक करने वालो को जो निमन्त्रण-पत्र, अथवा पास दिये गये थे, वे भी बहुत सुन्दर छपे थे। उनमें गोमटस्वामी का आवक्ष-चित्र अनेक रगों में छपा था। यह पास प्लास्टिक की पारदर्शी थैली मे रखकर ही लोगों को दिया गया था। गोमटस्वामी के चित्र वाला यह सुन्दर पास और उनकी छाप वाला पदक, ये दोनों सचमुच इस महोत्सव में सहभागी होने के संग्रहणीय स्मृति-चिह्न हैं।

□

निमन्त्रण इक्षु-रस का

मस्तकाभिषेक करने वाले या उस महोत्सव को देखने वाले अधिकांश यात्री विन्ध्यगिरि की दक्षिणी ढलान से नीचे उतरते हैं। पी.एस.जैन मोटर्स के श्री

रमेशचन्दजी की धर्मपत्नी ने विन्ध्यगिरि की तलहटी में उन सबके लिए इक्षु-रस की व्यवस्था कर रखी है। कल दोपहर से लेकर आज शाम तक जो भी इस मार्ग पर विन्ध्यगिरि से उतरा है, उसे रमेशजी के परिवारजन और मित्र सम्मानपूर्वक गन्ने के रस का गिलास प्रस्तुत कर रहे हैं। कुछ महिलाएँ फिर से छानकर उस रस का आनन्द ले रही हैं। कुछ ने अपने हाथ के थर्मस मे रस ले जाना पसन्द किया।

□

यह उच्छृंखल आतुरता

आज सायंकाल गोमटस्वामी के दर्शनो के लिए बहुत बडी सख्या मे लोग पर्वत पर जाना चाहते हैं। प्रवेशद्वार के सामने से प्रारम्भ होती उनकी पक्ति लगभग दो किलोमीटर लम्बी है। बगलोर मार्ग पर दूर तक लोग अपनी बारी की प्रतीक्षा मे पक्तिबद्ध खडे है। बीच मे कुछ अतिशय उत्साही लोग, अनुशासन तोडकर ऊपर जाने का प्रयास करते है। स्वयसेवको और पुलिस के जवानो का नियन्त्रण थोडी देर के लिए शिथिल हो जाता है। सहायता के लिए पुलिस की दूसरी टुकड़ी आयी है। उसे अनुशासन स्थापित करने के लिए हल्का लाठी चार्ज करना पडा है। वरिष्ठ अधिकारियों और सामाजिक कार्यकर्ताओ के प्रयत्न भी सहायक हुए हैं। लोग धीरे-धीरे पुन पक्तिबद्ध खडे हो गये हैं और ऊपर से प्राप्त सकेतो के अनुसार उन्हे अब फिर ऊपर जाने दिया जा रहा है।

लोग प्रसन्न हैं कि लाठी चार्ज होने पर भी कोई यात्री घायल नही हुआ। किसी को गहरी चोट नही आयी। मैं सोचता हूँ कि हमारे आचरण मे कब इतना अनुशासन झलकेगा, इतना आत्म-नियन्त्रण और आत्म-सम्मान आयेगा जब व्यवस्था को लगी हुई चोट हमे टीसने लगे, समूह पर पडी हुई लाठी से जब हमारा सम्मान हमें घायल होता लगने लगे। महान् आत्मानुशासी भगवान् बाहुबली के आँगन मे अनावश्यक आतुरता और आपा-धापी का परिचय देकर आखिर हम अपनी किस भावना को उजागर कर रहे हैं?

पुलिस ने कल से आज तक एक सौ से अधिक जेबकतरों और आवारा लोगों को गिरफ्तार किया है। लूट-पाट, अग्नि आदि की कोई घटना मेला-नगरो मे सुनाई नही दी।

□

उछलता हुआ जल-वृक्ष

कल्याणी सरोवर मे बीचो-बीच लगाये गये आकर्षक फुहारे की धार बीस-बाइस मीटर ऊपर तक जाती है। रात्रि में रंगीन प्रकाश उसे और अधिक दृष्टि-

प्रिय बना देता है। पर्वतो की पृष्ठभूमि मे मस्ती से उछलती हुई यह जल-धार नयनाभिराम लगती है। कारकल के भट्टारक स्वामीजी ने इसे देखकर कर्मयोगी चारुकीर्ति स्वामीजी से ठीक ही कहा था, "आपने तो यह 'जल-वृक्ष' बना दिया है।"

—"स्वामीजी यह आपका सातिशय पुण्य ही उछल-उछलकर चतुर्दिक् बिखर रहा है।" यह टिप्पणी वहीं किसी सज्जन के मुख से अनायास निकल पड़ी।

□

देशी मन्त्र : विदेशी वाणी

ज्योतिष विशेषज्ञ सर एम.के. गांधी के साथ लन्दन से उनके दो विदेशी शिष्य आये हुए हैं। ये दोनों स्नातक णमोकार मन्त्र और द्रव्य-संग्रह की गाथाओं का पाठ, शुद्ध उच्चारण और लय के साथ करते हैं। सर्वधर्म सम्मेलन मे पधारे हुए मुनि सुशीलकुमारजी के साथ उनकी कुछ विदेशी शिष्याएँ आयी हैं। इन गौराग बालाओ ने भी उसी प्रकार लय बद्ध उच्चारण मे मंच पर महामन्त्र का पाठ किया है। हजारो श्रोताओ के लिए यह अनोखा और मीठा अनुभव है।

□

विन्ध्यगिरि पर अस्थायी सीढ़ियाँ

श्री शिखरचन्द जैन रानीमिल मेरठ वालो ने विन्ध्यगिरि पर पुरानी सीढियो के पास ही ईटो की अस्थाई सीढ़ियो का निर्माण करा दिया है। अधिक भीड़ के अवसर पर यात्रियो के लिए इन सीढियो का अच्छा उपयोग हुआ। पर्वत मे ही खोदी गयी पुरानी सीढियाँ सामान्य दिनो के लिए पर्याप्त हैं इसलिए कमेटी ने महोत्सव के बाद हटा देने की शर्त पर ही इन अस्थायी सीढ़ियो के निर्माण की स्वीकृति दी है।

□

मस्तकाभिषेक की झाँकी

गुल्लिकाअज्जी के हाथ में छोटा-सा कलश है। उससे गिरती हुई धारा बाहुबली स्वामी का अनवरत अभिषेक करती जा रही है। सुबह से देर रात तक वह धारा कभी टूटती नही है। उस छोटे से कलश मे इतना जल कहाँ से आ रहा है, प्रयास करने पर भी यह समझ में नही आता। कुतूहल और विस्मय उत्पन्न करने वाली यह कलात्मक झाँकी बम्बई के श्री शाह ने सड़क के किनारे एक किराये के मकान

में लगायी है। पचास पैसे का टिकिट लेकर बार-बार लोग इसे देखना पसन्द करते हैं। प्रदर्शनी का उद्घाटन करते समय चारुकीर्ति स्वामीजी ने कहा—"इस प्रकार का कोई बड़ा मॉडल बन सके तो उसे श्रवणबेलगोल मे स्थायी बनाना चाहिए।"

□

गुल्लिकाअज्जी साड़ी प्रसार

हरी, पीली और लाल, तिरंगी किनारी वाली सफेद साडी मेले मे कई दुकानों पर बिक रही है। सबकी पहुँच के भीतर, पैंतीस रुपये मूल्य की यह साडी 'गुल्लिका-अज्जी साडी' के नाम से मशहूर हो गयी है। अभिषेक के लिए महिलाएँ प्रायः इसी साड़ी का उपयोग कर रही हैं। इस साडी के कारण अभिषेक करने वाली महिलाओ में जो सादगी और एकरूपता दिखायी देती है वह दर्शको पर अच्छा प्रभाव डालती है।

□

गोमटस्वामी की अनुकृति सिक्के पर

अनेक दुकानदार चाँदी के, सफेद धातु के और ताँबे के अनेक प्रकार के सिक्के बनाकर लाये हैं जिनपर गोमटस्वामी की अनुकृति और महोत्सव का सन्दर्भ अकित है। पाँच रुपये से लेकर पैंतीस रुपये तक के ये सिक्के कई जगह बिक रहे हैं। कर्नाटक पर्यटन-विभाग ऐसे ही ताँबे के सिक्के के साथ चाबी का छल्ला बनाकर बेच रहा है।

□

26.2.81

श्रवणबेलगोल भारतीय संसद में

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की श्रवणबेलगोल यात्रा आज पुन. देश के पत्रो मे प्रमुखता से चर्चित है। उस दिन 21 फरवरी को भगवान् बाहुबली की वन्दना करके दिल्ली लौटने पर लोकसभा मे श्रीमती गाधी को कुछ विपक्षी सदस्यो की ओर से, उस यात्रा को लेकर कटाक्षो और आलोचनाओ का सामना करना पड़ा। आलोचना मे कहा गया था कि मस्तकाभिषेक एक धर्म विशेष के लोगो का आयोजन है, अतः प्रधानमन्त्री को उसमे सम्मिलित नहो होना चाहिए था।

आलोचना के उत्तर मे श्रीमती गाधी ने अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा, "मैं वहाँ एक महान् भारतीय विचारधारा को विनयांजलि देने गयी थी। जैन

विचारकों द्वारा प्रवाहित इस विचारधारा ने हमारे इतिहास पर, और हमारी संस्कृति पर, सदाचार की गहरी छाप छोडी है। इतना ही नही, इस चिन्तन ने देश के स्वतन्त्रता संग्राम को भी प्रभावित किया है और हमें नीति के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी है। महात्मा गाँधी ने भी जैन तीर्थंकरो द्वारा बताये गये अहिंसा और अपरिग्रह के मार्ग को अपनी साधना का आधार बनाया था।"

गोमटस्वामी की विश्व-विख्यात मूर्ति का स्मरण दिलाते हुए प्रधानमन्त्री ने कहा —"भारतीय संस्कृति और प्राचीन कला की ऐसी अनमोल धरोहर को देश की जनता की ओर से श्रद्धा के पुष्प चढ़ाना प्रधानमन्त्री के नाते मेरा कर्तव्य था। उसे किसी एक धर्म या सम्प्रदाय का कार्य नहीं कहा जा सकता।"

▭

27.2.81

जयपुर का यात्री संघ

आज 'श्री बाहुबली यात्रा संघ जयपुर' की ओर से पंचामृत-अभिषेक किया गया। इस यात्री सघ का सयोजन इस कलिकाल मे धार्मिक वत्सलता का एक प्रेरक उदाहरण है।

जयपुर के श्री उम्मेदमलजी पाड्या और श्री शान्तिकुमारजी ने इस यात्रा सघ का आयोजन किया है। बडी भक्ति और उदारतापूर्वक बीस रिजर्व बसो के काफिले मे एक हज़ार यात्रियो को वे मार्ग के सभी तीर्थों की वन्दना कराते हुए श्रवणबेलगोल लाये है। यहाँ पूरे यात्री सघ को ठहराने और भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था उन्ही सज्जनो की ओर से की गयी है। जिनवाणी के प्रभावशाली प्रवक्ता क्षुल्लक सिद्धसागरजी जयपुर से ही उस यात्रा संघ मे आये हैं। इस प्रकार मार्ग मे यात्रियो को निरन्तर प्रवचन का लाभ भी मिलता रहा। श्री पाड्या और श्री शान्तिकुमार को उनकी इस उदारता और धर्म-वत्सलता के लिए महासभा के अधिवेशन के समय श्रीफल और माला के द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।



सांस्कृतिक कार्यक्रम

भद्रबाहु मण्डप मे प्रतिदिन विभिन्न सास्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा। मेले में पहुँचने वाली जनता इन कार्यक्रमो का भरपूर आनन्द उठाती थी। आठ फरवरी को मैसूर की एक संगीत मण्डली के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इन्दौर के 'निकलंक नवयुवक मण्डल' द्वारा प्रस्तुत नृत्य नाटिका 'जय गोमटेश्वर' का प्रदर्शन पन्द्रह फरवरी की रात्रि मे हुआ। भद्रबाहु-मण्डप मे प्रदर्शित होने वाला यह प्रथम महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम था। सेठ भागचन्द-जी सोनी ने दीप जलाकर इस प्रस्तुति का प्रारम्भ किया।

सत्रह फरवरी को 'वेंकटेश नाट्य मन्दिर' बंगलोर के द्वारा एक सुन्दर नृत्य-नाटिका 'नीलाजना-नृत्य' प्रदर्शित की गयी। भगवान् आदिनाथ के जन्म-दिवस पर इन्द्र द्वारा प्रस्तुत देवागना का नृत्य, जो उसी समय उनके वैराग्य का निमित्त बना, इस नाटिका मे भाव प्रवणता के साथ मचित हुआ।

कवि-दरबार

सत्रह फरवरी को ही उधर चामुण्डराय मण्डप मे 'कवि दरबार' आयोजित था। श्री तारा-चन्दजी प्रेमी और नीरज जैन ने मिलकर इसका सचालन किया। हिन्दी, सस्कृत और कन्नड के अनेक प्राचीन कवियो का वेश धारण करके, कवियो-विद्वानो ने उनकी प्रसिद्ध रचनाओ का का सस्वर पाठ मच पर किया। हिन्दी कवि बनारसी दास, बुधजन, दौलतराम, ध्यानतराय, भागचन्द आदि के रूप में निकलक नवयुवक मण्डल इन्दौर के सदस्य मच पर आये। उन्होने इन विद्वान कवियो की रचनाओ से भक्ति की अवतारणा कर दी। कन्नड कवियो के रूपक सर्वश्री ए० आर० नागराज और सी० बी० महावीरप्रसाद ने बहुत प्रभावी ढग से प्रस्तुत किए।

कन्नड के माने हुए विद्वान् पण्डित ए० आर० नागराज कर्नाटक विद्युत मण्डल मे उच्च पदस्थ अधिकारी हैं। कन्नड जैन साहित्य का उन्होंने तलस्पर्शी अध्ययन किया है। धार्मिक और साहित्यिक विषयो पर श्री नागराज धाराप्रवाह बोलते हैं। 'व्याख्यान-केसरी' की उपाधि देकर उनको सम्मानित किया गया है। इस महोत्सव मे श्रीमती गांधी की सभा से लेकर समापन समारोह तक उन्होने कन्नड मे अनेक सभाओ का बहुत अच्छा सचालन किया। गोमटस्वामी की बोप्पण कवि द्वारा लिखित कन्नड़ स्तुति के छन्द श्री नागराजजी ने अनेक सभाओ में भाव विभोर होकर सुनाये। कवि दरबार के समय उन्होने रत्नाकर कवि का अभिनय करके उनकी रचनाओ को तन्मय होकर प्रस्तुत किया। रत्नाकर की प्राचीन वेशभूषा में, रत्नाकर की ही मस्ती के साथ उनकी प्रस्तुति बहुत सराही गयी। मैसूर के उद्योगपति श्री सी० बी० महावीर प्रसाद ने भी प्राचीन कवि के रूप मे मंच पर आकर कवि दरबार को प्रभावित किया।

महाप्राण बाहुबली

'श्रीराम कलाकेन्द्र' नई दिल्ली ने बाहुबली के जीवन पर तथा गोमटस्वामी की मूर्ति के निर्माण की घटनाओ पर आधारित नृत्य नाटक (बैले) हिन्दी मे तैयार किया था। इस नाटक की शब्द संयोजना और आलेख हिन्दी की जानीमानी कवयित्री और कथाकार श्रीमती कुथा जैन ने तैयार किया था। 'महाप्राण-बाहुबली' नाम से श्रीमती कुथा जैन का यह नाटक भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित भी हुआ। श्रीराम कला केन्द्र भारत की जानी-मानी नाट्य-संस्थाओ मे से एक है। उनकी तैयारी विलक्षण थी। थोड़े से समय में इतनी सुन्दर मच सज्जा, अस्थाई मण्डप के मच पर ध्वनि और प्रकाश की इतनी सुन्दर संयोजना और उनके सिद्धहस्त कलाकारो द्वारा इतनी सटीक भावव्यजना इस नृत्य-नाटिका में देखने को मिली कि कई दिनो तक लोग उसकी सराहना करते रहे।

अठारह फरवरी को सेठ लालचन्द हीराचन्द की अध्यक्षता मे चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने इस बैले का उद्घाटन किया। सास्कृतिक-कार्यक्रम समिति के सयोजक श्री ओमप्रकाश जैन ने पुष्प मालाओ से नाटक की लेखिका श्रीमती कुथा जैन का और मुख्य अतिथियो का स्वागत करते हुए उनके योगदान के लिए आभार व्यक्त किया। इस नृत्य नाटिका के चार प्रदर्शन हुए। इस पर एक लाख से अधिक का व्यय हुआ।

यक्षगान

'यक्षगान' शब्द वर्तमान में अनेक अर्थों को इंगित करता है। कुछ प्राचीन कवियो ने गीत की एक विशिष्ट पद्धति को यक्षगान कहा है। वर्तमान मे गीत संगीत से कुछ अधिक, पूरे प्रहसन को यक्षगान माना जाता है। कर्नाटक मे प्रचलित यक्षगान कथा, सवाद, वेशभूषा, नृत्य और गान से सयुक्त अभिनय का नाम है। आन्ध्रप्रदेश मे 'कुचिपुडी' नृत्य को भी यक्षगान ने प्रभावित किया। फलत वहाँ भी नृत्य-नाटिकाओं को 'यक्षगानमु' कहा जाता है। फिर भी यक्षगान का नाम आते ही नृत्य-नाटिकाओं की कन्नड़ पद्धति ही ध्यान में आती है। इसका कारण यही होना चाहिए कि आज भी इस प्रदेश मे जीवन्त नाट्य-पद्धति के रूप मे यक्षगान का प्रचार है। शताब्दियो पुरानी कई यक्षगान मण्डलियाँ अपनी पारम्परिक विशेषताओ के बल पर आज तक, न केवल जीवित हैं अपितु अच्छी लोकप्रियता अर्जित करती हुई कर्नाटक के गाँव-गाँव में सगीत संस्कृति, धर्म और इतिहास का प्रदर्शन कर रही हैं। यक्षगान जैसी प्राचीन नाट्य शैली को समयानुकूल विकसित करके जनप्रसिद्धि दिलाने में इन व्यावसायिक मण्डलियो का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

यक्षगान मे कथा का अन्त सदैव अधर्म या अनीति पर, धर्म या नीति की विजय से होता है। इन परस्पर विरोधी तत्त्वो का द्वन्द्व जिस कथा के आधार पर प्रदर्शित किया जाता है वह कथा प्राय: विवाह, राज्यप्राप्ति या अन्य किसी सुखद प्रसंग के साथ समाप्त होती है। महाभारत, रामायण और भागवत आदि धर्मशास्त्र इन कथाओं के मूल स्रोत रहे हैं। प्रसंग की रचना करने वाले लेखक को इन पुराण कथाओं के साथ धर्म-सिद्धान्त, नाट्य-सिद्धान्त, इतिहास और व्याकरण का भी पर्याप्त ज्ञान होता था। इसी कारण उसकी रचना अनेक पीढ़ियो तक जनमानस की सराहना पाती थी।

यक्षगान में समग्र प्रदर्शन केवल पुरुष अभिनेताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। स्त्री-पात्रो का अभिनय उपयुक्त वेशभूषा मे सजे हुए पुरुषो द्वारा ही कराया जाता है। आठवें दशक से यक्षगान ने विदेशों मे भी ख्याति अर्जित की है। चमक-दमक वाली वेशभूषा, भावुकता भरा संगीत और कुशल पद-विन्यास पर आधारित सन्तुलित अभिनय उसकी लोकप्रियता के प्रमुख आधार हैं। जापान में सुन्दरतम नृत्य-नाटिका का पुरस्कार यक्षगान को प्राप्त हो चुका है।

श्रवणबेलगोल मे महामस्तकाभिषेक के अवसर पर, धर्मस्थल की 'श्री मजुनाथेश्वर-मण्डली' ने, भरत-बाहुबली के प्रसग को लेकर यक्षगान नाटिका तैयार की थी। यह प्रदर्शन मेले मे एकाधिक बार मचित हुआ और बहुत सराहा गया। अपनी गहन व्यस्तताओ के बीच समय निकालकर स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने, साहु श्रेयासप्रसादजी ने, और श्री वीरेन्द्र हेगड़े ने इस प्रदर्शन का अवलोकन करके कलाकारो को प्रोत्साहित किया।

धर्मभूमि भारत

कर्नाटक शासन के सास्कृतिक विभाग द्वारा तैयार की गयी संगीत नाटिका 'धर्मभूमि भारत' का भद्रबाहु मण्डप मे तीन बार मचन हुआ। इस नाटिका मे सम्राट सिकन्दर को उसके गुरु अरस्तू के द्वारा धर्मभूमि भारत के इतिहास का दिग्दर्शन कराया गया। इस प्रकार भारतीय इतिहास के अनेक प्राचीन दृश्यो का अवलोकन कराकर सिकन्दर को भारत की महानता का परिचय दिया गया है। रामराज्य से लेकर श्रीकृष्ण द्वारा राक्षसो का उन्मूलन, बुद्ध और महावीर का धर्म प्रवर्तन, सम्राट अशोक का धर्म प्रचार, और चन्द्रगुप्त मौर्य आदि अनेक इतिहास पुरुषों की जीवन झाँकियो के प्रभावक और शिक्षाप्रद दृश्य इस नृत्य-नाटिका मे बडी सुन्दरता के साथ समाहित किये गये थे।

रवीन्द्र जैन का संगीत

20 फरवरी की शाम को चामुण्डराय मण्डप में सिने-सगीत निर्देशक श्री रवीन्द्र जैन का संगीत कार्यक्रम हुआ। उन्होंने बाहुबली पर अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। उसी दिन वहाँ उन्हे सम्मानित भी किया गया।

आधुनिक फिल्म-संगीतकारों में रवीन्द्र जैन का अलग स्थान है। वे जितने सवेदन-शील संगीतज्ञ हैं उतने ही भावुक कवि भी हैं। महामस्तकाभिषेक पर उनका एक प्रसिद्ध गीत कैसेट बहुत लोकप्रिय हुआ है। महोत्सव की भूमिका बनते ही दिल्ली मे 29-9-80 को श्रीमती गाँधी ने जन-मंगल महाकलश का प्रवर्तन प्रारम्भ किया था, उस अवसर पर भी रवीन्द्रजी ने अपनी सामयिक रचनाओ से जनता का मन मोह लिया था। चामुण्डराय मण्डप में उपस्थित विशाल जन-समुदाय भी, इस प्रज्ञा-चक्षु गीतकार की स्वर-साधना से अभिभूत घण्टों तक मन्त्रमुग्ध सा बैठा रहा।

तेईस फरवरी को पुनः चामुण्डराय मण्डप में भजन और संगीत का कार्यक्रम हुआ। इस सम्मेलन में अन्य अनेक कवियों-गायकों के अलावा साहु श्रेयांसप्रसादजी ने भी अपनी पसन्द की कुछ शेरो-शायरी सुनवाई। उनसे प्रेरणा पाकर सेठ भागचन्दजी सोनी और भैया मिश्री-लालजी गंगवाल ने अनेक भक्तिभरे भजनों से श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।



136 स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी का 'कर्मयोगी' अलंकरण से सम्मान : मान-पत्र-समर्पण



137

स्वामीजी का अभिनन्दन करते हुए

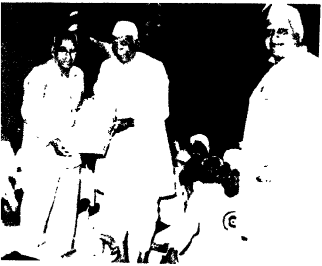
सेठ लालचन्द हीराचन्द जी

138 स्वामीजी का अभिनन्दन करते हुए सरसेठ भागचन्द सोनी





139 माहु श्रेयामप्रमाद जी को ममाज का अभिनन्दन



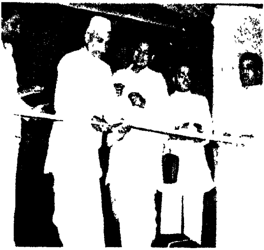
140

माहु श्रेयामप्रमाद जी
श्रावक शिरोमणि का
मर्वोच्च उपाधि से मम्मानित



141

स्वर्गीय माहु शान्तिप्रसाद जैन
की समाज-सेवाओं को
रेखांकित करने वाला प्रशस्ति-पत्र
उनके पुत्र साहु अशोककुमार जैन
को प्रदान करते हुए
सरसेठ भागचन्दजी सोनी



142
भद्रबाहु मण्डप का उद्घाटन
श्री प्रेमचन्द जैन द्वारा

143 श्रीराम कला-केन्द्र दिल्ली द्वारा मंचित
'महापुराण-बाहुबली' नृत्य-नाटिका का समारम्भ



144
नृत्य-नाटिका का एक दृश्य





145 सास्कृतिक कार्यक्रम की झाकी

146 भद्रबाहु मण्डप मे दर्शक समुदाय



147 संस्कृत नाटक
'बाहुबली-विजयम्' का एक दृश्य



148
नृत्य-नाटिका का एक दृश्य



149
धर्मस्थल की मण्डली द्वारा प्रस्तुत
भरत-बाहुबली यक्षगान।
यशस्वती और सुनन्दा के साथ
आदिनाथ ऋषभदेव





150 विख्यात संगीतकार श्री रवीन्द्र जैन द्वारा प्रस्तुत धार्मिक संगीत

151 चामुण्डराय मण्डप में, सांस्कृतिक कार्यक्रम में मन्त्र-मुग्ध दर्शक





152 कवि-दरबार का एक दृश्य

153 सम्मेलन मे कन्नड भजन प्रस्तुत करते हुए दावणगिरि का बी टी. परिवार





154 कवि-दरबार के शुभारम्भ का दीप प्रज्वलित किया सरसेठ भागचन्दजी सोनी ने

अन्य कार्यक्रम

इन पूर्व प्रचारित कार्यक्रमो के अतिरिक्त अनेक छुट-पुट सांस्कृतिक कार्यक्रम भी बीच-बीच में होते रहे। श्री एन० रंगनाथ शर्मा का संस्कृत नाटक 'श्रीबाहुबलिविजयम्' भद्रबाहु मण्डप में खेला गया। कर्नाटक के सूचना एवं प्रचार विभाग ने बाहुबली के जीवन पर एक संगीत नाटक तैयार किया था। भद्रबाहु-मण्डप में उसका भी मंचन हुआ। कन्नड़ के और भी कुछ प्रदर्शन हुए।

राजस्थान से आयी 'जिनेन्द्र कला-भारती' झालावाड़ की टीम ने श्री निहाल अजमेरा के निदेशन में अनेक छोटे-छोटे कार्यक्रम दिये। एक मण्डली ने भरत-बाहुबली का प्रसंग कठ-पुतलियों के माध्यम से मंचित किया। ये प्रदर्शन बहुत लोकप्रिय हुए और बार-बार देखे और सराहे गये।

कठपुतली नाटिका

इधर कुछ वर्षों मे कठपुतली नाटकों की ओर कलाविज्ञों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हुआ है। इस विधा में अनेक नये-नये प्रयोग हुए हैं। 'कला के माध्यम से जिनवाणी प्रचार' का ध्येय बनाकर भीलवाडा की 'जिनेन्द्र कला-भारती' सस्था ने पिछले दशक मे अनेक प्रयोग किये हैं। इसी शृखला मे कठपुतली नाटको के द्वारा जैन गाथाओं को रग-मच पर लाने का ललित प्रयास सर्वाधिक प्रभावक और सफल हुआ है।

जैन साहित्य मे अनेक उच्च कोटि के नाटक हैं, पर प्रायः उन सब मे, कही-न-कहीं दिगम्बर मुनियों का प्रसंग आने से उन्हे मंचित करने मे कठिनाई होती है। मानव पात्रो के माध्यम मे इस समस्या का हल होना असभव मानकर कला-भारती ने कठपुतली नाटको को जैन कथानको के प्रदर्शन का माध्यम बनाया। प्रथम प्रयास मे भगवान् महावीर के जीवन पर आधारित कठ-पुतली नाटक 'अस्थिग्राम का तपस्वी' प्रदर्शित किया गया। एलाचार्य मुनि विद्यानन्द जी के चित्तौड़ प्रवास के अवसर पर भीलवाडा मे उनके समक्ष इसका प्रथम प्रदर्शन भारी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ था। उन्ही की प्रेरणा से महामस्तकाभिषेक के अवसर पर भगवान बाहुबली के जीवन पर नाटक प्रस्तुत करने का सकल्प किया गया।

मान-मर्दन नाटिका

भगवान् गोमटेश की प्रतिष्ठापना एव प्रथम अभिषेक की अन्तःकथा को रूपायित करने वाला यह नाटक श्री लक्ष्मीचन्द्रजी की पुस्तक 'अन्तर्द्वन्द्वों के पार : गोमटेश्वर बाहुबली' के कथानक के आधार पर तैयार किया गया। अति आधुनिक विद्युत उपकरणो एवं अल्ट्रा वायलेट रेंज मे तकनीकी कुशलता के साथ श्रवणबेलगोल मे 21, 22, और 23 फरवरी को क्रमशः चामुण्डराय मण्डप मे, भद्रबाहु मण्डप मे और भट्टारक भवन मे इस नाटिका के तीन सराहनीय प्रदर्शन हुए। अनेक विशिष्ट अतिथियों के साथ लगभग पचास हजार दर्शकों ने इन प्रदर्शनों को देखा और उनकी सराहना की।

'गोमटेश-थुदि' के सस्वर समूहगान के साथ प्रथम दृश्य में आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धातचक्रवर्ती, चामुण्डराय एवं उनकी माता काललदेवी की परस्पर वार्ता के साथ यह नाटिका प्रारम्भ होती

है। गोमटस्वामी के निर्माण की प्रमुख घटनाओं का चित्रण करते हुए गुल्लिका-अज्जी द्वारा सम्पन्न दुग्ध-अभिषेक के साथ नाटक का पटाक्षेप होता है। इस कथानक को जन-जन के लिए दृश्यमान करने में यह प्रदर्शन एक सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ।

गोमटेश-गाथा पड़-चित्र

संगीतरत्न श्री निहाल अजमेरा ने अपनी जिनेन्द्र कला-भारती से ही 'मान-मर्दन' नाटिका की तरह प्रथम अभिषेक की कथा को राजस्थान की लोकप्रिय लोक-चित्र शैली मे इस पड पर चित्रित किया था। गायन, वादन, चित्रकला और नाटक, इन चारों शैलियो का पड-वाचन में प्रयोग होता है, अत. बिना किसी आडम्बर के प्रदर्शित होने वाली यह विधा सहज ही जन मानस को आकर्षित करती रही। राजस्थानी गीत शैली मे जहाँ भी यह पड-वाचन हुआ, वही यह प्रदर्शन लोगो की सराहना पाता रहा।

आठ फरवरी से ग्यारह मार्च तक शायद ही कोई ऐसा दिन रहा हो जब शाम को कोई न कोई कार्यक्रम मेलानगर मे मंचित न हुआ हो। कभी नाटक, कभी प्रहसन, कभी आरती कीर्तन और कभी नृत्य-गान या भजन-आरती वहाँ चलते ही रहते थे।



क्षण-क्षण के आलेख

19-2-1981

विद्वानों का सम्मान

महोत्सव के निमित्त से लगभग पूरे देश के जैन विद्वानो का अच्छा प्रतिनिधित्व इस मेले मे उपस्थित हो गया है। आज चामुण्डराय मण्डप में उन सभी सरस्वती-पुत्रों को सम्मानित किया जा रहा है। आचार्यों, मुनियों, आर्यिकाओं के समक्ष भारी सख्या में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओ के बीच इन विद्वानों के सम्मान का कार्यक्रम वास्तव में 'ज्ञानाराधना' के सम्मान का प्रतीक है। साहु श्रेयासप्रसाद जी, श्री वीरेन्द्र हेगडे और सर सेठ भागचन्दजी सोनी आदि अनेक गणमान्य जन मंच पर उपस्थित हैं। भट्टारक स्वामीजी आज अपने सामान्य आसन से थोड़ा हटकर इन्ही विद्वानों के मध्य बैठे दिखाई दे रहे हैं। अभिनन्दन के समय श्री बाबूलालजी पाटोदी विद्वानो का सरस-सक्षिप्त परिचय कराते जाते हैं। सर सेठ भागचन्दजी सोनी विद्वानो को माल्यार्पण करते जा रहे हैं और महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयासप्रसादजी उन्हे शाल भेट कर रहे हैं। इस मच पर विद्वानों के सम्मान का यह सिलसिला कई दिन से चल रहा है और आगे चलेगा। आज के इस विशिष्ट समारोह मे अभिनन्दित होने वाले विद्वानो की तालिका इस प्रकार है—

1. बडे पण्डितजी, सिद्धान्ताचार्य श्री जगन्मोहनलालजी, कटनी
2. सिद्धान्ताचार्य पण्डित कैलाशचन्द्र शास्त्री, वाराणसी
3. न्यायाचार्य डॉ० दरबारीलाल कोठिया, वाराणसी
4. पण्डित बाहुबली शास्त्री, अनगोल
5. पण्डित श्रीकान्त भुजबली शास्त्री, वैनाड (केरल)
6. पण्डित अनन्तराज शास्त्री, बगलोर
7. पण्डित प्रभाकर आचार्य, गोमटेश विद्यापीठ, श्रवणबेलगोल
8. श्री नागेन्द्र शास्त्री, श्रवणबेलगोल
9. श्री शान्तिराज शास्त्री, श्रवणबेलगोल
10. पण्डित ज्ञानचन्द 'स्वतन्त्र' विदिशा

11. पण्डित जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल, आगरा
12. पण्डित सत्यन्धरकुमार सेठी, उज्जैन
13. पण्डित जिनराज शास्त्री, धर्मस्थल
14. पण्डित भरत चक्रवर्ती शास्त्री, मद्रास
15. श्री सिंहचन्द्र शास्त्री, मद्रास
16. श्री नीरज जैन, सतना
17. पण्डित महेश जैन, मेरठ
18. ब्र० धर्मचन्द (आचार्य धर्मसागरजी संघस्थ)
19. ब्र० मोतीचन्द जैन, त्रिलोक शोध सस्थान, हस्तिनापुर
20. ब्र० रवीन्द्र जैन, त्रिलोक शोध सस्थान, हस्तिनापुर

जब चामुण्डराय मण्डप मे यह सम्मान समारोह आयोजित करके समागत विद्वानो का सम्मान किया गया, तब कुछ विद्वान वहाँ उपस्थित नही थे। उन्हे वैसी ही गरिमा के साथ बाद मे सम्मानित किया गया। अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद् के सस्थापक मन्त्री, और जैन वाङ्मय के स्वनामधन्य टीकाकार, पण्डित पन्नालालजी 'साहित्याचार्य' का अभिनन्दन सेठ भागचन्दजी सोनी द्वारा कराया गया। आकाशवाणी दिल्ली के श्री सतीशचन्द जैन ने सगीतज्ञ कवि श्री ताराचन्द प्रेमी को सम्मानित किया। स्व० आचार्य शान्तिसागर महाराज के प्रमुख व्याख्याकार पण्डित सुमेरचन्द दिवाकर सिवनी, और पण्डित सुमतिप्रसाद मोरैना का सम्मान भण्डार बस्ती मे से सम्पन्न हुआ।

चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी की प्रेरणा से विद्वान् श्री एन. रगनाथ शर्मा ने भरत-बाहुबली प्रसग पर 'श्रीबाहुबलिविजयम्' नामक सस्कृत नाटक की रचना की। एक वर्ष पूर्व जैनमठ की 'चन्द्रगुप्त ग्रन्थमाला' से ही इस नाटक का सफल मंचन हुआ। श्री रगनाथ शर्मा को स्वर्णपदक सहित ढाई हज़ार रुपये का 'गोमटेश विद्यापीठ पुरस्कार' प्राप्त हो चुका है। मच पर पुनः उन्हे सम्मान दिया गया।

नाटक के कलाकारो को भी स्वामीजी ने पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया। बाद मे यह नाटक बगलोर और धर्मस्थल मे भी खेला गया।

इसी प्रकार कन्नड उपन्यासकार प्रोफे. जी. ब्रह्मप्पा को सम्मान हेतु आमन्त्रित किया गया। श्री ब्रह्मप्पा ने जो साहित्य रचना की है उसमें उनके दो उपन्यास, 'दान-चिन्तामणि अत्तिमब्बे' और 'रत्नाकर' प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। ऐतिहासिक प्रसगो पर आधारित इन दोनो उपन्यासो के हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हो चुके हैं। श्री ब्रह्मप्पा को उनकी साहित्य साधना के उपलक्ष्य मे स्वर्ण-पदक के साथ ढाई हज़ार रुपये का 'गोमटेश विद्यापीठ पुरस्कार' पहले प्राप्त हो चुका है। समापन समारोह मे पुनः उन्हे अभिनन्दित किया गया।

श्री पुत्तुस्वामी ने भी 'शान्तिदूत' शीर्षक से बाहुबली के जीवन को आधार



155 चामुण्डराय मण्डप मे विद्वत् समाज का अभिनन्दन

156 सम्मानित होने वाले प्रथम विद्वान थे बड़े पण्डितजी श्री जगन्मोहनलालजी शास्त्री, कटनी





157 सिद्धान्ताचार्य प कैलाशचन्द्रजी शास्त्री

158 डॉ. दरबारीलाल कोठिया





159 हिन्दी तीर्थंकर के सुधी सम्पादक डॉ. नेमीचन्द जैन

160 केरल के प्रतिष्ठाचार्य प. श्रीकान्त भुजबली शास्त्री





161 श्रवणबेलगोल के प. शान्तिराज शास्त्री



162

समाज के वरिष्ठ पत्रकार

99 वर्षीय श्री मूलचन्द कापडिया

का अभिनन्दन

163 प. सुमेरचन्द दिवाकर का अभिनन्दन



बनाकर एक नाटक लिखा। इस रचना के लिए उन्हें सम्मानित किया गया।

श्री टी. आर. सुब्बाराव कन्नड़ के अच्छे साहित्य साधक हैं। उनके उपन्यास 'शिल्प-श्री' के लिए भी 'गोमटेश विद्यापीठ' की ओर से उन्हें स्वर्णपदक तथा ढाई हज़ार रुपये की पुरस्कार राशि प्रदान करके सम्मानित किया गया।

श्रीमती कुन्था जैन ने अपनी पुस्तक 'महाप्राण बाहुबली' की प्रथम प्रति एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी को समर्पित की। उनके साथ उनके पति, भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक श्री लक्ष्मीचन्द्रजी भी मंच पर हैं। यह इसलिए उचित है कि इस रचना को आकार-प्रकार देने मे, प्रकाशक के नाते भी उनका योगदान है। श्रीमती कुन्था जैन की इसी कृति के आधार पर 'श्रीराम कला-केन्द्र' दिल्ली ने वह नृत्य नाटिका तैयार की है जिसे इस मेले में बडी संख्या मे लोगो ने देखा और सराहा है। कुन्थाजी के सम्मान के अवसर पर मण्डप में बडी देर तक तालियाँ गूँजती रही।

□

महिलाओं का सम्मान

दिल्ली के श्री ओमप्रकाशजी कागजी के ट्रस्ट की ओर से शालीनता भरे एक छोटे संक्षिप्त समारोह मे कुछ महिला कार्यकर्त्रियों को भट्टारक स्वामीजी के हाथ से पदक और पुरस्कार दिलाकर सम्मानित किया गया। श्री श्रेयासप्रसाद जैन, सर सेठ भागचन्द सोनी, श्री वीरेन्द्र हेगड़े, श्री ओमप्रकाश जैन और दिल्ली के श्री रत्नत्रयधारी जैन की उपस्थिति में यह पुरस्कार वितरण हुआ।

इस महोत्सव मे अनेक अवसरो पर अपने ललित कण्ठ से 'गोमटेश स्तुति' की रम्य प्रस्तुति के लिए श्री एम.सी. अनन्तराजैया की पुत्री कुमारी शोभा अनन्त-राजैया को पुरस्कृत करने के उपरान्त भरतनाट्यम् प्रवीणा कुमारी संध्या नागराज को पदक प्रदान किया गया। कन्नड़ के विद्वान् श्री ए.आर. नागराज की पुत्री कु० सध्या ने दीक्षा कल्याणक के अवसर पर नीलाजना का भावपूर्ण एवं सराहनीय अभिनय किया था।

ललित रचनाकार के नाते कुमारी मधु जैन को तथा 'गुरुवाणी' हिन्दी पत्रिका के कुशल सम्पादन के लिए श्रीमती प्रीति जैन को भी सम्मानित किया गया। कन्नड़ पत्रिका 'गोमटेशवाणी' के प्रतिनिधि श्री अशोक जैन भी इस उत्सव मे उपस्थित रहे।

महिला सम्मेलन

18 फरवरी को मध्याह्न मे चामुण्डराय मण्डप में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन की संयोजिका सौ० विजया देवेन्द्रप्पा ने इस सम्मेलन के लिए परिश्रम पूर्वक तैयारी की थी। उन्होने इस अवसर पर कन्नड, हिन्दी और अंग्रेजी में 'माधवी' नाम से एक सुन्दर स्मारिका प्रकाशित की। श्रीमती विमला सन्मतिकुमार के सम्पादन मे लगभग डेढ सौ पृष्ठवाली इस सुन्दर स्मारिका मे, श्रवणबेलगोल के इतिहास तथा महोत्सव से सम्बन्धित सामग्री का सानुपातिक समन्वय किया गया था। अनेक सुन्दर चित्रों से माधवी को सजाया गया था। मुखपृष्ठ पर गोमटेश्वर बाहुबली का बहुरंगा चित्र सचमुच आकर्षक बन पडा था। स्मारिका के प्रकाशन पर अपने सन्देश में नारी समाज का श्रेय प्ररूपित करते हुए श्री श्रेयासप्रसादजी ने लिखा था—"मूर्ति सरचना के क्षणो में शिल्पी की छेनी की नोक पर, उसकी माँ का अपार वात्सल्य ही अवतीर्ण होकर, उन काम-कुमार अजितवीर्य बाहुबली के वीतराग-वैभव का सृजन कर रहा था। शिल्पकार भी जब लोभ की लिप्सा मे कला की उत्कृष्टताओ को भूलने लगा, तब एक अन्य नारी ने, शिल्पकार की माता ने ही, उसे समुचित मार्ग दर्शन दिया, जिससे पाषाण मे भी नये प्राण, नया सन्देश और अमरत्व मुखरित हो उठा।"

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के बहुरगे बैनर से सजे हुए मच पर अनेक गण्यमान्य श्रावक-श्राविकाएँ, आर्यिका माताएँ और मुनिजन उपस्थित थे। मच पर सर्वश्री श्रेयासप्रसाद जैन, सेठ लालचन्द हीराचन्द, सरसेठ भागचन्द सोनी, बाबू भाई मेहता, निर्मलकुमार सेठी, और सौ० हेमावती हेगडे की उपस्थिति उल्लेखनीय थी। पूरा पण्डाल स्त्री-पुरुषो से भर गया था। पत्रकारों और विशिष्ट अतिथियो के लिए निर्धारित दीर्घाओ मे थोडा भी स्थान रिक्त नहीं बचा था।

सर्वप्रथम सुश्री सुमित्रा टुमकर द्वारा मगलाचरण किया गया। सौ० विजया देवेन्द्रप्पा ने अपने स्वागत भाषण मे सम्मेलन के प्रयोजन पर प्रकाश डालते हुए अभ्यागतो का अभिनन्दन किया। सौ० विमला सुमतिकुमार ने अतिथियो का परिचय दिया, सौ० शान्ता सन्मतिकुमार ने वन्दना की। बगलोर की कोकिलकण्ठी-किशोरी शोभा अनन्तराजैया द्वारा मंगल वाचन होने पर सचालिका ने सम्मेलन का विधिवत् प्रारम्भ किया।

महिला सम्मेलन का यह अधिवेशन विख्यात उद्योगपति सौ० शरयू दफ्तरी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। श्रीमती दफ्तरी को प्रसिद्ध धर्मानुरागी दोशी परिवार मे, सेठ लालचन्द हीराचन्द की सुपुत्री होने के नाते, प्रबन्ध पटुता, सौजन्य और धार्मिक-रुचि विरासत मे मिली है। एलाचार्य विद्यानन्द मुनिजी के सान्निध्य मे उन्होंने जैन सिद्धान्त का अध्ययन-मनन भी किया है। धर्मस्थल के धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगड़े की पूज्य माता श्रीमती रत्नम्मा हेगड़े ने दीप प्रज्जवलित करके सम्मेलन का उद्घाटन किया। श्रीमती रत्नम्मा हेगड़े अत्यन्त सौम्य मूर्ति, प्रभावशाली व्यक्तित्ववाली महिला हैं। उनका औपचारिकता-विहीन सक्षिप्त उद्बोधन उनके व्यक्तित्व की तरह ही प्रशम और प्रभावक था।

स्वर्गीय श्रावकशिरोमणि साहु शान्तिप्रसादजी की पुत्रवधू श्रीमती इन्दुजी अपने परिवार की परम्पराओ के अनुरूप, धर्म और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अनवरत रूप से संलग्न हैं। इन्दुजी को इस सम्मेलन का मुख्य अतिथि बनने का गौरव प्रदान किया गया।

श्री श्रेयांसप्रसादजी की पुत्रवधू, भारतीय ज्ञानपीठ की पुरस्कार प्रवर समिति की सदस्य श्रीमती दुर्गा जैन ने सम्मेलन की सफलता की कामना करते हुए इस अवसर पर प्रकाशित सचित्र स्मारिका 'माधवी' का विमोचन किया। इसके उपरान्त मच पर उपस्थित कुछ विशिष्ट महिलाओ के सार्वजनिक सम्मान का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

सर्वप्रथम सम्मानसूचक शाल उढ़ाया गया ब्र० पण्डिता सुमतिबाई शाह को। षट्खण्डागम के सूत्रों की संक्षिप्त हिन्दी टीका करके ब्र० सुमतिबाई ने जैन आगम के प्रसार में उल्लेखनीय योगदान दिया है। वह कार्य उनकी ज्ञान-साधना का ज्वलन्त प्रमाण है। शोलापुर मे अनेक शिक्षण सस्थाओ की सस्थापिका और सचालिका के रूप मे शैक्षणिक जगत मे उनकी सेवाओ के लिए राष्ट्रपति द्वारा उन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि से अलकृत किया जा चुका है। स्वच्छ-श्वेत परिधानो मे सरलता की प्रतिमूर्ति-सी दिखाई देने वाली ब्र० सुमतिबाई शाह, दृढ निश्चय, कर्मठता और अथक परिश्रम के संकल्प से युक्त 'सादा जीवन उच्च विचार' का जीवन्त उदाहरण हैं। जन समूह द्वारा करतल ध्वनि से उनके सम्मान की सराहना की गयी।

सम्मानित होने वाली महिलारत्नो मे अब बारी थी 'अक्का' की। नाम तो है श्रीमती बाई कलन्त्रे, परन्तु जन-जन के सम्मान और प्रेम ने उन्हे 'अक्का' के ही नाम से पहचाना है। 'अक्का' यानी दीदी या बडी बहिन। युवावस्था मे कामनाओ और तृप्तियो से भरे हुए समृद्ध जीवन के बीच, वैधव्य के दारुण प्रहार को, अक्का ने जनसेवा के ईश्वरीय संकेत की तरह स्वीकार किया। सुख और सम्पन्नता का वातावरण छोडकर श्रीमती बाई कलन्त्रे सेवा के क्षेत्र मे उतर पड़ी। कितनी सस्थाओ से सम्बद्ध रही, किन-किन क्षेत्रो मे क्या-क्या योगदान दिया, इसका लेखा-जोखा उनके पास नहीं है। दस वर्ष तक बम्बई प्रदेश विधानसभा की सदस्या रहकर महिलाओ और दलितों की पीडा को स्वर प्रदान किये। फिर राजनीति से विराम लेकर धार्मिक शिक्षा के प्रसार को अपना जीवन व्रत बना लिया। पच्चीस वर्षों से दिगम्बर जैन श्राविकाश्रम तारदेव (बम्बई) की अधिष्ठात्री के रूप मे उनकी मूक साधना चल रही है। सेवा और त्याग की इस एक दीपशिखा से सहस्रों समर्पित दीपक प्रज्वलित हो चुके हैं।

सम्मान की शृंखला में अगला नाम था 'समाज भूषण' श्रीमती कुसुम बहन मोतीचन्द शाह। स्व० सेठ बालचन्द हीराचन्द की सुपुत्री कुसुम बहन भी, दीन-दुखियों की सहायता और समाज की सेवा के लिए प्राण-पन से समर्पित हैं। दक्षिण भारत जैन महिला सभा की अध्यक्षा और श्रद्धानन्द महिलाश्रम बम्बई की कार्याध्यक्षा रहकर कुसुम बहन ने सेवा के क्षेत्र मे बड़ी ख्याति अर्जित की है। अत्यन्त शान्त-स्वभावी कुसुम बहिन अनेक कल्याण केन्द्रो, ट्रस्टो और सभाओ से सम्बद्ध हैं।

कुसुमबाई शाह के बाद अभिनन्दन के शाल से अलंकृत किया गया डॉ० सौ० सरयू दोशी को। सेठ लालचन्द हीराचन्द की पुत्रवधू श्रीमती सरयू दोशी ने व्यवसाय-व्यस्त पति की अति व्यस्तता से उत्पन्न, अपने एकाकीपन को भरने के लिए 'हॉबी' के रूप में ही एक दिन, प्राचीन इतिहास और कलाकृतियों से रिश्ता जोड़ा था। अपने अथक पुरुषार्थ से इस महिला ने प्राच्य

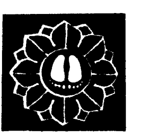
विद्या का न केवल तलस्पर्शी अध्ययन किया, वरन् बहुत शीघ्र उसमें दक्षता भी प्राप्त कर ली। कलाकृतियो के इस अभिनव प्रेम ने श्रीमती दोशी को एक कुशल छायाकार भी बना दिया। इस महोत्सव के तारतम्य मे श्रवणबेलगोल मे प्राचीन कला की प्राय: सभी विधाओ पर शोध-खोज करके उन्होंने उन पर लिखा। मूर्तिकला और स्थापत्य तो संसार प्रसिद्ध थे ही, श्रवण-बेलगोल के भित्तिचित्र, वहाँ की धातु प्रतिमाएँ, वहाँ की पाण्डुलिपियाँ और वहाँ के पारम्परिक पूजा उपकरण आदि जो कुछ भी महत्त्वपूर्ण था, उसे संजोकर डॉ० सरयू दोशी ने 'मार्ग' के विशेषांक के माध्यम से प्रसिद्धि प्रदान कर दी। 'होमेज टू श्रवणबेलगोल' के कुशल सम्पादन के उपलक्ष्य में उन्हें सम्मानित करना बहुत सामयिक सूझ थी। जैन-कला के प्रति उनकी लगन और निष्ठा का ही यह सम्मान था। ननद की अध्यक्षता मे भाभी के उस अभिनन्दन को पारिवारिक स्नेह की आभा अनायास ही दीप्त कर रही थी।

सम्मान-सूची मे बंगलोर की श्रीमती कमला हम्पना का नाम अन्तिम था। दिल्ली की श्रीमती सुशीला जैन ने बालिकाओ को पुरस्कार वितरण किया और तब आर्यिकाश्री विजयमती माताजी का सारगर्भित उपदेश हुआ।

कर्मयोगी भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी ने जैन शासन की परम्परा को जीवित रखने मे महिलाओ के योगदान की प्रशसा करते हुए बताया कि गोमटेश्वर की लोकोत्तर प्रतिमा एक महिला के सकल्प से ही बन सकी। चामुण्डराय की माता काललदेवी की प्रेरणा और सकल्प के बिना यह कार्य कभी सम्भव ही नहीं था।

एलाचार्य श्री विद्यानन्द मुनिजी ने अपने मगल प्रवचन मे 'न धर्मो धार्मिकैर्बिना' की व्याख्या करते हुए बताया कि भगवान् आदिनाथ के युग से लेकर आज तक सर्वत्र, धर्म सभाओ मे, समवसरण में, और धर्म प्रभावना के सभी कार्यों मे, पुरुषो की अपेक्षा महिलाओ की उपस्थिति कई गुनी अधिक रहती आई है। धर्म की परम्परा और धार्मिक सस्कारो को सुरक्षित रखना, तथा उन्हें नवीन पीढी तक पहुँचाना, माताओ का ही उत्तरदायित्व है। वह उन्ही के वश की बात है। मुनिश्री ने यह प्रेरणा दी कि धर्म के प्रति अपना कर्तव्य पालन करने मे महिलाओ को उत्साह-पूर्वक संलग्न रहना चाहिए, उन्हे उसमे जरा भी प्रमाद नही करना चाहिए।

सम्मेलन के अन्त में अभ्यागतों के प्रति कृतज्ञता और उपस्थित जनों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए संयोजिका ने सम्मेलनों का समापन किया।





164 महिला-सम्मेलन : दीप प्रज्ज्वलित करती हुई श्रीमती रत्नम्मा हेगडे

165 महिला सम्मेलन की एक झाँकी। खडी दिखाई दे रही हैं : सौ राजलक्ष्मी, सौ सरयू दफतरी, डॉ. सरयू दोशी, श्रीमती रतनम्मा हेगडे, सौ. हेमावती वीरेन्द्र हेगडे और प्रो प्रेमकुमारी।





166 आचार्यों के सान्निध्य मे महिला सम्मेलन



167 महिला सम्मेलन में उद्‌घाटन भाषण करती हुई
मुख्य-अतिथि श्रीमती रत्नम्मा हेगड़े



168 दत्तचित होकर सम्मेलन की कार्यवाही हृदयंगम करती हुई

169 महिला सम्मेलन मे पद्मश्री पडिता सुमतिबाई शाह का अभिनन्दन





170 महिला सम्मेलन की स्मरणिका 'माधवी' का विमोचन श्रीमती दुर्गा जैन द्वारा

171 श्रीमती दुर्गा जैन द्वारा आचार्यश्री देशभूषणजी महाराज को पत्रिका समर्पित



संस्थाओं के अधिवेशन

त्रिलोक शोध संस्थान

चौबीस फरवरी को 'त्रिलोक शोध संस्थान' का अधिवेशन हुआ। हस्तिनापुर मे सचालित इस सस्था को परम विदुषी आर्यिका ज्ञानमतीजी का सरक्षण प्राप्त है। अनेक धार्मिक ग्रथो का प्रकाशन इस सस्था से हुआ है। महोत्सव के उपलक्ष्य मे माताजी की एक पुस्तिका 'योग-चक्रेश्वर बाहुबली' मेले मे बिक्री के लिए उपलब्ध रही। सस्था का मासिक पत्र 'सम्यग्ज्ञान' अनेक वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। सम्यग्ज्ञान का 'गो टेश्वर विशेषाक' अधिवेशन मे विमोचिन कराकर वितरित किया गया।

दिगम्बर जैन महासभा

पच्चीस फरवरी को चामुण्डराय मण्डप मे 'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' का अधिवेशन हुआ। महासभा दिगम्बर जैनो का राष्ट्रीय स्तर का प्राचीनतम सगठन है। यह उल्लेखनीय तथ्य है कि 1910 से आज तक सभी 6 महामस्तकाभिषेको के अवसर पर महासभा के अधिवेशन श्रवणबेलगोल मे आयोजित होते रहे हैं। समाज सेवा के नब्बे वर्ष पूरे करके यह सस्था अपनी स्थापना की शताब्दी मनाने की ओर अग्रसर है। श्री निर्मलकुमार सेठी की अध्यक्षता मे उसका यह अधिवेशन अनेक दिगम्बर आचार्यों-मुनिराजो और आर्यिका माताओ की उपस्थिति से सार्थक है। इधर दो-तीन वर्ष मे कुछ नवीन स्फूर्ति, नवीन प्रेरणा लेकर महासभा सचेत हुई है। उत्तर भारत मे नये सिरे से उसे सगठित किया गया है। दक्षिण भारत को संस्था की गतिविधियो के अन्तर्गत लाने की योजना उसके कार्य-कर्ताओ के मन मे है।

सस्था के विगत कार्य-कलापो की थोडी-सी चर्चा करने के बाद कार्यकर्ताओ का सम्मान करते हुए, अधिवेशन समापन की ओर बढ़ जाता है। महामन्त्री श्री त्रिलोकचन्द कोठारी सस्था के भविष्य की योजनाओ और सकल्पो को दोहराते हुए अतिथियो और अभ्यागतो का स्वागत व धन्यवाद करते हैं।

मान-सम्मान

इसी अधिवेशन के मच पर साहु श्रेयासप्रसादजी के द्वारा धर्मस्थल के युवा धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्रजी हेगड़े को शाल और माल्यार्पण द्वारा सम्मानित किया गया है। कर्नाटक मे सर्वत्र हरेक धार्मिक आयोजन मे श्री वीरेन्द्र हेगड़े का योगदान और उपस्थिति अनिवार्य-सी मानी जाती है। श्रवणबेलगोल मे तो वे व्यवस्था की महत्त्वपूर्ण कड़ी की तरह जुड़े हुए दिखाई देते हैं। देर तक तालियों की अनुगूंज उनके स्वागत की अनुमोदना करती है।

जयपुर के आयुर्वेदाचार्य वैद्य सुशीलकुमारजी को, मुनिसंघों की सेवा और उपचार करने के उपलक्ष्य में, पच्चीस हज़ार की राशि प्रदान करके सम्मानित किया गया। मच पर

श्री अमरचन्दजी पहाड़िया, सरसेठ भागचन्दजी सोनी, श्रीदेवकुमारसिंहजी कासलीवाल आदि महासभा के कार्यकर्ता और शुभ-चिन्तक बडी संख्या में उपस्थित हैं।

'शान्तिवीर सिद्धान्त संरक्षणी सभा' का भी यहाँ अधिवेशन हुआ। दशम प्रतिमाधारी वयोवृद्ध ब्रह्मचारी लाडमलजी इस सस्था के अधिष्ठाता हैं। चारित्रचक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागरजी और उनके पट्टाचार्य आचार्य वीरसागरजी की स्मृति मे गठित यह सस्था अनेक धार्मिक ग्रथो का प्रकाशन कर चुकी है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का यद्यपि कोई अधिवेशन मेले में नही हुआ, परन्तु संस्था के मुखपत्र 'वीर' के बाहुवली विशेषाक का वितरण एक दिन मच पर किया गया। उसी दिन 'मोक्षमार्ग प्रकाशक' के कन्नड अनुवाद का विमोचन कराया गया। पण्डित बाबूराव पाटिल द्वारा किया गया यह अनुवाद स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, सोनगढ़ से प्रकाशित किया गया है। अनुवादक विद्वान् को यहाँ सम्मानित भी किया गया।

कुछ अन्य सस्थाओ ने भी अपनी बैठकें या अधिवेशन मेले मे आयोजित किये, परन्तु उनमे कोई उल्लेखनीय कार्यक्रम दिखाई नही दिये।

क्षण-क्षण के  आलेख

विशिष्ट अतिथियों को विशेष परामर्श

महोत्सव समिति द्वारा पंचामृत मस्तकाभिषेक के अवसर पर उपस्थित होने के लिए सैकडो विशिष्ट अतिथियो को आमन्त्रण भेजे गये थे। उनमें से प्राय: सभी अपने परिवार के साथ इस दुर्लभ अनुष्ठान का अवलोकन करना चाहते थे। ये सभी लोग यदि मुख्य अभिषेक के समय, 22-2-81 को आते हैं तो एक साथ इतने लोगो की, उनके सम्मान के अनुरूप व्यवस्था करना निश्चित ही असम्भव होता। महोत्सव समिति उन सभी की यथायोग्य अभ्यर्थना और व्यवस्था करना चाहती थी। साहुजी और स्वामीजी इसके लिए विशेष चिन्तित थे परन्तु यह कैसे सम्भव बनाया जाये इसके लिए कोई विकल्प सूझ नही रहा था।

अन्ततः महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री श्रेयासप्रसादजी ने कर्नाटक के सभी मन्त्रियो, ससद सदस्यो और अनेक विशिष्ट अतिथियो को इस सम्बन्ध मे अपनी ओर से एक परिपत्र भेजा। इस पत्र मे मस्तकाभिषेक के समय उनसे सकुटुम्ब पधारने का आग्रह दोहराया गया था किन्तु साथ मे वह भी निवेदन किया गया था कि— "महोत्सव समिति श्रवणबेलगोल मे आपका सम्मानपूर्ण ढंग से स्वागत करना चाहती है, आपकी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखना चाहती है, परन्तु 21 फरवरी को प्रधानमन्त्री के आगमन के कारण, और 22 फरवरी को मुख्य अभिषेक की अतिशय भीड के कारण, इन दो दिनो मे आपके अनुकूल व्यवस्था करने मे समिति को कठिनाई हो सकती है। मुख्य अभिषेक के बाद पाँच दिन तक, प्रति दिन वैसे ही समारोह और विधि-विधान के साथ, मस्तकाभिषेक का आयोजन किया गया है। यदि आप इन पाँच दिनो मे से किसी दिन श्रवणबेलगोल आने का कार्यक्रम रखते हैं तो अनुष्ठान का अवलोकन आप अधिक अच्छी तरह कर सकेंगे और महोत्सव समिति भी अपनी भावना के अनुरूप आपका स्वागत-सत्कार कर सकेगी। अत: अधिक अच्छा हो कि आप 23 से 27 के बीच किसी दिन अपना कार्यक्रम बनायें और मुझे सूचित करने की कृपा करें।"

अध्यक्ष का यह परिपत्र बहुत कारगर हुआ। अनेक विशिष्ट अतिथियों ने 21 और 22 फरवरी के अपने कार्यक्रमों मे परिवर्तन किया और बाद की तारीखों में

श्रवणबेलगोल आये। निश्चित ही यह सन्तुलन दोनों के लिए सुविधाजनक रहा।

▭

8 मार्च 1981

एक दिन में दो पंचामृत अभिषेक

'कर्नाटक-पूजा' का आयोजन होने से आज श्रवणबेलगोल मे भारी भीड है। लगभग पचास हजार व्यक्ति यहाँ उपस्थित हैं। भीड को नियन्त्रित करना कठिन हो रहा है। विन्ध्यगिरि पर सारा उपलब्ध स्थान सुबह से ही भर गया है। पंचामृत अभिषेक देखने के लिए बगलोर तथा हासन से पत्रकारो को आज के लिए आमन्त्रित किया गया था। प्रात: नौ बजे प्रारम्भ होने वाला अभिषेक ठीक समय पर प्रारम्भ हुआ, परन्तु किसी कारणवश पत्रकारो का आगमन दो घण्टे बाद, ग्यारह बजे हो सका। तब तक मन्दिर के प्रागण मे इतनी भीड हो चुकी थी कि दो बसो और दो मेटाडोर वाहनो से आने वाले पत्रकारो और उनके परिवारजनो का अन्दर पहुँचना ही सम्भव नही था। उन्हे निराश करना भी अन्याय होता, पर भट्टारक स्वामीजी ने वही इस समस्या का समाधान ढूँढ लिया। उन्होने बाहर आकर प्रेमपूर्वक पत्रकारो का स्वागत किया और अपनी योजना समझा कर उन्हे सहमत कर लिया। इधर श्री एम०सी० अनन्तराजैया अभिषेक कराते रहे और उधर भट्टारक स्वामीजी पत्रकार अतिथियो के साथ बाहर सिद्धर बस्ती के समीप बैठे उनसे चर्चा करते रहे। इसी बीच उनके निर्देश से दूसरे अभिषेक के लिए सामग्री तैयार कराई गयी और अपने प्रिय अतिथियो के लिए पूरे विधि-विधान के साथ आज उन्होंने एक बार पुन: गोमटेश भगवान् का अभिषेक सम्पन्न कराया। सन्तुष्ट अतिथियो ने अपने आपको भाग्यशाली और स्वामीजी का कृतज्ञ कहा।



किसी भी महामस्तकाभिषेक के अवसर पर एक ही दिन मे दो बार पंचामृत अभिषेक सम्पन्न हुआ हो, ऐसा शायद यह पहला ही सयोग था।

▭

श्री देवराज अर्स का सम्मान

आज ही कर्नाटक के पूर्व मुख्यमन्त्री, बाहुबली के आस्थावान भक्त, श्री देवराज अर्स गोमटेश्वर के दरबार मे पधारे। श्री अर्स ने अपनी पुत्री श्रीमती चन्द्रप्रभा के साथ भगवान् का अभिषेक किया।

समाज की ओर से श्री देवराज अर्स को सम्मानित किया गया। श्री अर्स की सेवाओं का उल्लेख करते हुए उनके सम्मान में कहा गया कि "सर्व प्रथम अपने शासनकाल में आपने ही इस क्षेत्र को हर प्रकार का सहयोग देकर उसकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया। इस मेले की सफलता का बहुत-सा श्रेय आपको है।"

सम्मान का उत्तर देते हुए श्री अर्स ने कहा—"कर्मयोगी भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी ने जबसे इस मठ का नियन्त्रण अपने हाथ मे लिया है, तभी से इस क्षेत्र का उल्लेखनीय उत्कर्ष प्रारम्भ हुआ है। महोत्सव की उपलब्धियो का अधिकाश श्रेय भट्टारक स्वामीजी को ही है। राष्ट्रीय महत्त्व के इस आयोजन मे सहायक होना और अपने प्रदेश मे यात्रियों की व्यवस्था करना कर्नाटक शासन का पुनीत कर्तव्य था। मैंने उसी दायित्व को निभाने का सकल्प किया था। शासन ने अपने कर्तव्यो का ठीक-ठीक निर्वाह किया, और यह समारोह ऐतिहासिक गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ, यह मेरे लिए अत्यन्त प्रसन्नता की बात है।"

□

व्यक्तित्व का चमत्कारी प्रभाव

उस दिन पचामृत अभिषेक चल रहा था। मन्दिर का आँगन पूरी तरह भर गया था। कुछ लोग स्वयंसेवको की वर्जना को टालते हुए, व्यवस्था की अवज्ञा करके, द्वार के भीतर आना चाहते थे। तंग आकर किसी स्वयसेवक ने प्रवेश द्वार भीतर से बन्द कर दिया। बाहर दर्शन के अभिलाषी अपना धीरज खो बैठे। लोगो ने देवालय के द्वार के अवरोध को अपनी भावनाओं के मार्ग का अवरोध मान लिया। वे शक्ति लगाकर उसे हटाने पर तुल गये। भीड़ का रेला उमडा और किवाडो को जोडकर रखने वाला लकड़ी का कुन्दा चरमराकर टूट गया। क्षण भर को ऐसा लगा कि भगदड मच जायेगी और अवश्य कोई दुर्घटना घटकर रहेगी। भीतर कई लोगो ने टेलीफ़ोन करके पुलिस बुलाने का सुझाव दिया। लोगो मे घबराहट फैल गयी। परन्तु इस घटना से भट्टारक स्वामीजी के चेहरे पर कोई तनाव परिलक्षित नही हुआ। आक्रोश की कोई रेखा उनकी आकृति पर खेलने वाली सहज मुस्कान को खण्डित नही कर पायी। यह कर्मयोगी की व्यवहार-कुशलता की परीक्षा के क्षण थे। वह साधक ही क्या जो आवेश मे होश खो बैठे? उन्होने उठकर द्वार खुलवाया और भीड़ को चीरते हुए तत्काल द्वार के बाहर निकल आये। आतुर दर्शनार्थियों के सामने खड़े होकर उन्हे स्वामीजी ने शान्ति से समझाया—"द्वार टूट गया इसमें आपका कोइ दोष नही। बन्द करने वालो की भूल का ही यह परिणाम हुआ। गुल्लिकाअज्जी सामने खडी भगवान् का अभिषेक देख रही हैं। उनकी दृष्टि में बाधा बनकर जो किवाड़ बन्द होगा, वह अवश्य टूटेगा। भीतर स्थान खाली होने वाला है, आप मार्ग छोड़ दीजिए।

शान्त होकर थोड़ी देर प्रतीक्षा कीजिए, बहुत शीघ्र आपको दर्शन का सौभाग्य मिलेगा।"

स्वामीजी की शान्त और निरुद्विग्न मुद्रा और यह प्रेम भरी वाणी, जैसे किसी मन्त्र का काम कर गयी। क्षण भर मे सारी भीड स्वतः नियन्त्रित थी और सबको क्रम-क्रम से अभिषेक देखने का अवसर मिल रहा था।

□

कल्याण-मण्डप का उद्घाटन

15 मार्च 81 को, जिस दिन सहस्राब्दि महोत्सव का समापन हुआ उसी दिन, मुख्यमन्त्री श्री गुण्डूराव ने फीता काटकर एक नवीन भवन का उद्घाटन भी किया। 'मजुनाथेश्वर कल्याण-मण्डप' नाम से निर्मित यह भवन धर्मस्थल के धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगडे ने लगभग पाँच लाख रुपये व्यय करके यहाँ बनवाया है। इस भवन मे विवाह समारोह के लिए सारी व्यवस्थाओ से युक्त अनेक कक्ष बनाये गये है। मुख्य कक्ष मे विवाह की वेदिका बनी है। उसके दोनो ओर कन्या पक्ष और वर पक्ष के लिए कमरे हैं। भोजन बनाने के लिए दो रसोईघर, एक भण्डारघर और पक्ति-भोज के लिए एक और विशाल कक्ष बना हुआ है। इसके अलावा कार्यालय तथा गेस्ट-हाउस का हिस्सा भी है। इस प्रकार यह एक उपयोगी निर्माण श्री हेगडे के द्वारा श्रवणबेलगोल मे हुआ है। उद्घाटन के अवसर पर श्री हेगडे ने एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी और कर्मयोगी भट्टारक स्वामीजी के सान्निध्य मे श्री एव श्रीमती गुण्डूराव का स्वागत किया। भवन का उद्घाटन करते समय मुख्य अतिथि श्री गुण्डूराव ने आश्वासन दिया कि श्रवणबेलगोल को एक सुविधा-सम्पन्न पर्यटन स्थल के रूप मे विकसित करने के लिए कर्नाटक शासन हर प्रकार की सहायता देकर प्रयास करता रहेगा। अतिथियो को धन्यवाद देते हुए, साहु श्रेयासप्रसादजी ने श्री हेगडे के इस सहयोग की सराहना की और आशा व्यक्त की कि श्रवणबेलगोल के विकास मे श्री हेगडे का सहयोग सदा इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा।



निर्ग्रन्थ मुनि-सम्मेलन और श्रमण-परिषद्

अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर के समवसरण में सहस्रों दिगम्बर मुनि विराजते थे। उस समय देश में यत्र-तत्र विचरण करनेवाले उनके समकालीन मुनि निश्चित ही उनसे कई गुने रहे होगे। महावीर स्वामी के निर्वाण के पश्चात् लगभग डेढ हजार वर्ष तक बडी सख्या मे आचार्य सघों और मुनियों का इस देश मे अस्तित्व रहा। श्रुतकेवली भद्रबाहु की बारह हजार मुनियो के साथ दक्षिणापथ यात्रा के पश्चात्, उत्तरापथ मे मुनियो की संख्या अपेक्षाकृत कम होती गयी। फिर दक्षिण भारत मे ही उनका सचरण अधिक हुआ। दसवी-ग्यारहवी शताब्दी ईसवी के उपरान्त मुनियों की संख्या तेजी से घटने लगी। बारहवी शताब्दी के बाद राजनैतिक अस्थिरता के काल मे, उत्तरभारत मे दिगम्बर साधुओ का दर्शन ही दुर्लभ हो गया।

आज से दो सौ वर्ष पूर्व तक उत्तर भारत मे दिगम्बर मुनियो का दर्शन कितना दुरूह था, इसका अनुमान हम इसी से लगा सकते हैं कि अध्यात्म-रसिक और सिद्धान्त-पारगामी, आचार्य-कल्प पण्डित टोडरमलजी, जयपुर जैसी महानगरी मे रहते हुए, और उत्कट अभिलाषा रखते हुए भी, अपने जीवन मे दिगम्बर साधु के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नही कर पाये। कहा जाता है कि षट्खण्डागम का अवलोकन और वीतराग गुरु का दर्शन पण्डितजी की ये दो इच्छाएँ शेष ही रह गयी।

वर्तमान शताब्दी मे सर्वप्रथम जिन मुनिराज ने अपनी यात्रा से उत्तर भारत को पवित्र किया, वे थे पूज्यश्री अनन्तकीर्ति निल्लीकार महाराज। कर्मयोगी चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी की जन्म-भूमि वारंगा के पास ही निल्लीकार एक छोटा-सा ग्राम है। ग्राम के नाम पर ही ये महाराज 'अनन्त कीर्ति निल्लीकार' कहलाते थे। कहा जाता है कि ग्राम का सूखा कुआँ इनके तप के प्रभाव से असमय मे भर गया था। घटना 1915-16 ई० की है, सम्भवतः अनन्तकीर्ति महाराज ने दक्षिण प्रान्त से विहार करके, बम्बई होते हुए, सम्मेदशिखर की वन्दना करने का सकल्प किया था। उस जमाने मे प्रायः सभी देशी रियासतो मे, और कही-कहीं अंग्रेजी राज्य मे भी, दिगम्बर मुनियो के विहार पर यदा-कदा रोक-टोक होती रहती थी। धार्मिक विद्वेष के कारण लोग ऐसा प्रचार करते थे कि जहाँ से भी नग्न साधुओ का विहार हो जाता है, वहाँ सारी सम्पत्ति सिमट कर उनके भक्तो के पास ही एकत्र हो जाती है। सम्भवतः इन्ही कारणो से अनन्तकीर्ति निल्लीकार महाराज ने अपने व्रतो में दूषण लगाते हुए, अपवाद मार्ग का सहारा लेकर, रेलपथ से भ्रमण किया। श्रावकों द्वारा रेलगाडी में एक पूरा डिब्बा रिजर्व कराकर निल्लीकार महाराज का शिखरजी तक, और शिखरजी से आगरा रुकते हुए मोरैना तक, विहार कराया गया। मोरैना में एक आकस्मिक अग्नि दुर्घटना के कारण उनके शरीर का अधोभाग दग्ध हो गया। चारित्र पालन मे वे इतने दृढ़ थे कि भयानक पीड़ा के प्रतिकार मे भी उन्होंने घावो पर कपड़े की पट्टी बँधाना स्वीकार नहीं किया। खड़े होकर आहार लेना सम्भव नही रह गया था इसलिए अन्न-

जल का त्याग करके उन्होंने सल्लेखना ले ली। मोरैना के विद्यालय में ही समाधिपूर्वक अनन्त-कीर्ति महाराज ने अपनी पर्याय का विसर्जन किया।

मोरैना में अनन्तकीर्ति महाराज के उपसर्ग और समाधिमरण काल मे ऐलक पन्नालालजी, बाबा गोकुलदासजी और पं० बंशीधरजी न्यायालंकार आदि ने उनकी सेवा-सम्हार की थी। बाबा गोकुलदासजी के आत्मज, आज के विख्यात विद्वान् श्री प० जगन्मोहनलालजी उन दिनों मोरैना विद्यालय के ही विद्यार्थी थे। अपनी स्मृति के आधार पर मुझे यह घटना सुनाते हुए उन्होंने बताया कि अनन्तकीर्ति महाराज ने बड़ी दृढ़ता से सल्लेखना की साधना की। अग्नि-दग्ध पाँव पर पट्टी बँधवाना उन्होने स्वीकार नही किया। दाह की भयकर वेदना को समता पूर्वक सहन करते हुए, उन मुनिराज ने पद्मासन बैठे-बैठे प्राण विसर्जन कर दिया। वृद्धजनो की स्मृति में कई पीढ़ियो के बाद उत्तर भारत मे जैन मुनि का वह प्रथम दर्शन था।

अनन्तकीर्ति महाराज की समाधि के लगभग बारह वर्ष पश्चात् पूज्य आचार्य, चारित्रचक्रवर्ती श्री शान्तिसागर महाराज अपने विशाल सघ के साथ, उत्तर भारत को पवित्र करने लिए दक्षिण से अग्रसर हुए। सन् 1928 मे कटनी मे इस सघ का चातुर्मास हुआ। इसके उपरान्त श्री सम्मेद-गिरि की यात्रा को वे पुन: बुन्देलखण्ड की ओर पधारे। उनका अगला चातुर्मास ललितपुर मे हुआ। आचार्य शान्तिसागरजी, मुनिश्री वीरसागरजी तथा तीन ऐलक, तीन आर्यिकाएँ और एक क्षुल्लक, इस प्रकार नौ पिच्छीधारी साधको का उनका सघ ही उस समय का विशालतम मुनि-सघ था।

आचार्य शान्तिसागर महाराज बहुत निर्भीक और दिगम्बर मार्ग की प्रभावना के प्रति निरन्तर जागरूक, दृढ़ सकल्पी महात्मा थे। पूर्वाग्रह से युक्त सकीर्ण जनमानस की चिन्ता न करते हुए, निषेधात्मक राजकीय आदेशों को अमान्य करते हुए, उन्होने उत्तर भारत के एक बडे भू-भाग पर, ग्रामो और नगरो मे, सार्वजनिक स्थलो पर भ्रमण करके दिगम्बर मुनियो के निर्बाध विहार का मार्ग प्रशस्त किया। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी, कि दिगम्बर मुनियों के विहार की छिन्नप्राय: परम्परा को, अनन्तकीर्ति महाराज ने स्पन्दित किया और आचार्य शान्तिसागरजी ने उसे पुनर्जीवन प्रदान किया। इसके उपरान्त उत्तर भारत मे दिगम्बर साधुओ का विचरण उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। बड़े सौभाग्य की बात है कि यह परम्परा आज भी निरन्तर वृद्धिगत है।

चारित्र-चक्रवर्ती आचार्यश्री शान्तिसागर महाराज की शिष्य-परम्परा बहुत लम्बी है। आज देश में विचरण करनेवाले जितने भी दिगम्बर मुनि या आचार्य हैं, वे सब किसी-न-किसी प्रकार, उसी महान् परम्परा से जुड़े हैं। आचार्य शान्तिसागर महाराज के उपरान्त, आचार्य पद पर वीरसागरजी विराजमान हुए। उनके बाद आचार्य शिवसागरजी ने सघ का नायकत्व ग्रहण किया। शिवसागरजी की समाधि के उपरान्त, धर्मसागरजी महाराज को आचार्य पद पर स्थापित किया गया, जो आज भी उस महान् संघ का संचालन कर रहे हैं। आचार्यकल्प श्रुतसागरजी और मुनि अजितसागरजी भी उसी परम्परा से उद्भूत साधु हैं। इसी सघ मे मुनि सुपार्श्वसागर जी थे जो अत्यन्त सौम्य, मासोपवासी साधु थे। पूरे भाद्रपद मास के लिए वे हमेशा आहार का त्याग कर देते थे। मुजफ्फरनगर मे बडी शान्ति पूर्वक उनकी सल्लेखना सम्पन्न हुई थी। संघ-पति घासीलाल पूनमचन्द फर्म के श्री मोतीलालजी भी इसी सघ की शरण मे, मुनि



172 भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा का अधिवेशन (25 फरवरी 1981)



173 सहस्र यात्रियों के संघ के संघपति श्री उम्मेदमलजी पांड्या का सम्मान



174

सरसेठ भागचन्द सोनी
श्रमण परिषद के
सूत्रधार नियुक्त किये गये

175

मुनिराजों के मध्य बोलते हुए
मूडबिद्री के स्वस्तिश्री चारुकीर्ति
भट्टारक स्वामीजी



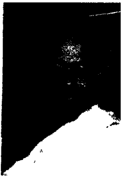
176

स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी को परामर्श देते हुए मुनिश्री आर्यनन्दीजी



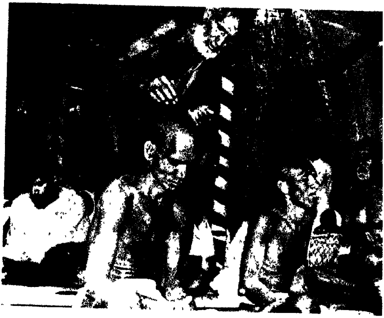


177 महोत्सव में मच पर केशलोच और नवीन दीक्षाओ के कार्यक्रम प्राय: सम्पन्न होते रहे



178 श्रमण परिषद की प्रस्तावना के लिए प्रयत्न किया क्षुल्लक सन्मति सागरजी ने

179
पचमुष्टि केशलोच दीक्षा



180 कभी-कभी अनेक दीक्षाएं एक साथ सम्पन्न हुई





181 आर्यिका दीक्षाएं भी अनेक होती रही



182 इधर केशलोच हो रहा है और उधर विजयमती माताजी ससार की अमारता पर उपदेश देकर वैराग्य की बेल को सींच रही हैं

183 दीक्षा के अवसर पर भैया मिश्रीलाल गगवाल के भक्ति भीने भजन अपनी अलग छाप छोड़ते थे



सुबुद्धि सागरजी के नाम से साधना कर रहे हैं।

इस कलिकाल मे उत्तर भारत में दिगम्बर जैन मुनियों की जो परम्परा प्रकट हुई है उसके सम्बन्ध में एक बात विशेष है। यह पूरी परम्परा बाल-ब्रह्मचारी साधकों के द्वारा ही प्रवर्तित हुई व हो रही है। चारित्र-चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागरजी तथा उनके पट्टासीन आचार्य सौम्य-मूर्ति वीरसागरजी और तपोधन शिवसागरजी महाराज भी बाल-ब्रह्मचारी थे। वर्तमान में धर्म दिवाकर आचार्य धर्मसागरजी भी बाल-ब्रह्मचारी तपस्वी हैं। इसी परम्परा की उप-शाखा के रूप में, संस्कृत और सिद्धान्त के मूर्धन्य विद्वान्, आचार्यप्रवर ज्ञानसागरजी महाराज का स्मरण किया जाना चाहिए। वे स्वय तो बाल-ब्रह्मचारी थे ही, उनके गौरवशाली शिष्य, कठोर तपस्वी और अभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोगी, बालयति आचार्य विद्यासागरजी महाराज, वर्तमान मे शास्त्र-सम्मत दिगम्बर मुनि के अप्रतिम प्रतीक माने जाते हैं। सन् 1983 मे सम्मेदशिखर की यात्रा के समय आचार्य विद्यासागरजी के सघ में ग्यारह दिगम्बर मुनिराज हैं। विशेषता यह है कि वे सभी अपनी गुरु परम्परा की तरह बालयति ही हैं।

आचार्यरत्न देशभूषण महाराज के शिष्यों की एक जुदी परम्परा है। उनके महान् शिष्य, सिद्धान्त-चक्रवर्ती, एलाचार्य, उपाध्याय मुनिश्री विद्यानन्दजी के द्वारा जैनशासन की अपूर्व प्रभावना हुई है। पच्चीस सौवाँ भगवान् महावीर निर्वाण महोत्सव और गोमटेश बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि महोत्सव एव महामस्तकाभिषेक इन दोनो महान् आयोजनो में एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी का अविस्मरणीय योगदान रहा है। जिनवाणी के प्रसार के लिए भी एलाचार्यजी ने महत्त्वपूर्ण प्रेरणाएँ प्रदान की हैं।

आचार्यश्री विमलसागरजी, आचार्यश्री समन्तभद्रजी, मुनि आर्यनन्दिजी और ऐसे अनेक मुनि और आचार्य अपनी साधना मे सलग्न रहते हुए भी, धर्मवृद्धि और लोक-कल्याण के अनेक कार्यों को प्रेरित और प्रोत्साहित करते रहे हैं। आचार्य समन्तभद्र महाराज ने शिक्षा के क्षेत्र में अद्भुत पुरुषार्थ किया है। भली प्रकार नियोजित और सगठित अनेक गुरुकुलो की स्थापना करके, उनके त्रुटि-विहीन सचालन का सत्परामर्श देकर, उन्होने समाज के हजारो बालको की जीवन दिशा ही बदल दी है। इन गुरुकुलों से निकले हुए अनेक जीवनदानी कार्यकर्ता जैन शासन की उल्लेखनीय सेवा कर रहे हैं। इनमे आर्यनन्दि मुनिराज का नाम विशेष उल्लेखनीय है, जिन्होंने तीर्थरक्षा के लिए बारह वर्षों तक समाज को प्रेरित किया और एक मुनि के रूप में तीर्थ सेवा का सर्वथा नवीन आदर्श उपस्थित किया है।

स्वामी समन्तभद्र स्वय अपने जीवन के प्रारम्भकाल मे एक क्रान्तिकारी देश भक्त रहे हैं। बाद मे हिंसा भरे उस मार्ग से विरक्त होकर उन्होने शिक्षा के क्षेत्र को अपना जीवन व्रत बनाया और धीरे-धीरे गुरुकुलो की एक लम्बी शृखला महाराष्ट्र मे और उसके बाहर तक फैला दी। वे स्वय बाल-ब्रह्मचारी हैं और उनके अनेक सहयोगी भी उन्ही का अनुसरण करते हुए, गृहस्थी के जंजाल से अपने आपको बचाकर धर्म-प्रसार के कार्यों मे लगे हुए हैं।

विद्या-दान और शिक्षा-प्रसार के क्षेत्र मे गुरुवर न्यायाचार्य क्षुल्लक गणेशप्रसादजी वर्णी का नाम, माला मे सुमेरु के दाने की तरह सर्वोपरि है। समाज के वर्तमान विद्वानो का एक बड़ा भाग उनका ऋणी है। आगम को सामान्य पाठक के लिए सहज-सुलभ बनाने मे स्व० जिनेन्द्र वर्णीजी का अनुपम योगदान है। उनके 'जैनेन्द्र-सिद्धान्त-कोश' को पाकर जैन दर्शन का पाठक,

अपने समक्ष ज्ञान का अतुल भण्डार खुला हुआ पाता है। गणेश वर्णीजी की समाधिस्थली पर ही जिनेन्द्र वर्णीजी की समाधि-साधना सम्पन्न हुई है। समाधि के पूर्व उन्हे पुनर्दीक्षित करके आचार्य विद्यासागरजी ने उनका नाम 'सिद्धान्तसागर' रख दिया था।

श्रमण संघ की यह चर्चा आर्यिका माताओ के उल्लेख के बिना अधूरी ही रहेगी। आचार्य वीरसागरजी से दीक्षित सुपार्श्वमती माताजी अपने अगाध आगम ज्ञान के लिए विख्यात हैं। ज्ञानमती माताजी ने जिनवाणी प्रसार के क्षेत्र मे बड़ी ख्याति अर्जित की है। अष्टसहस्री और मूलाचार जैसे महान् ग्रन्थों की भाषाटीका करने का उन्होंने पुरुषार्थ किया है। आचार्य शिवसागर जी द्वारा दीक्षा प्राप्त चन्द्रमती माताजी अपनी सौम्य-साधना के लिए विख्यात रही हैं। उनकी पुत्री ब्र० विद्युल्लता बहिन ने भी साधना की डगर पर अपने पग बढ़ाने का संकल्प किया है। उन्ही आचार्य शिवसागरजी की पवित्र पिच्छी से सस्कारित एक नाम है आर्यिका विशुद्धमति माताजी। माताजी का क्षयोपशम अद्भुत और करणानुयोग का अभ्यास अनुपम है। 'समाधि-दीपक' और 'श्रमण-चर्या' जैसी अनेक स्फुट रचनाओ के बाद आपके द्वारा सिद्धान्त-चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य विरचित 'त्रिलोकसार' की सचित्र हिन्दी टीका प्रस्तुत हुई है। सकलकीर्ति आचार्य के ग्रन्थ 'त्रैलोक्यसार-दीपक' अथवा 'सिद्धान्तसार-दीपक' की हिन्दी टीका माताजी की दूसरी महत्त्वपूर्ण रचना है। सम्प्रति विशुद्धमति माताजी यतिवृषभाचार्य की 'तिलोय-पण्णति' की हिन्दी टीका के श्रम-साध्य कार्य में सलग्न हैं।

श्रवणबेलगोल, मूडबिद्री, हुमचा और कोल्हापुर आदि प्राचीन जैन मठो के भट्टारक स्वामी जी भी जैनधर्म, साहित्य और संस्कृति की रक्षा करने में, और उनका प्रसार करने मे समाज को अपना बहुमूल्य योगदान देते आये हैं। दिगम्बर जैन त्यागी परम्परा मे इन भट्टारको का भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

वास्तविकता तो यह है कि बारहवी शताब्दी ईस्वी के उपरान्त, देश मे राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण बनता चला गया और मुनि मार्ग की साधना के प्रतिकूल परिस्थितियो का निर्माण होता रहा। श्रावको का जीवन ही जब अस्थिरताओं और दुश्चिन्ताओ से भर उठा, तब साधु की सम्हाल कौन करता ? उन विषम परिस्थितयों मे यह स्वाभाविक ही था कि मुनियो ने वन का त्याग करके मन्दिरों और बसतिकाओं मे आश्रय लिया। देशाटन के मार्ग मे आने वाले उपद्रवों की आशंका से उन्हे अधिक समय तक एक स्थान पर रहना भी स्वीकार करना पड़ा। श्रावकों की उदासीनता के कारण, धर्मायतनो की सुरक्षा और व्यवस्था मे भी उन्हे अपना उपयोग लगाना पड़ा।

कुछ साधुओं ने अपनी साधना को दाव पर लगाकर भी जिनालय, जिनवाणी और जिनधर्म की रक्षा के लिए परिस्थितियों के अनुरूप जीवनपद्धति को अगीकार किया। यहाँ तक कि अनेक चमत्कारों का सहारा लेकर, तथा कहीं-कहीं प्रपचों की रचना करके भी जहां एक ओर राज दरबारों को उन्होने प्रभावित किया, वहीं जन-मानस का समर्थन प्राप्त करके समाज मे भी अपनी स्थिति सुदृढ़ बनायी। बस, यही भट्टारक परम्परा के जन्म का इतिहास है। देश का इतिहास साक्षी है कि इन विशाल मन्दिरों और बड़े-बड़े सरस्वती भण्डारो को, राजनीति के विप्लव काल में विनाश की विभीषिका से बचाकर, हमारे लिए सुरक्षित रखने का जोखिम भरा काम, न तो विरोधी हिंसा के त्यागी वीतरागी साधुओ ने किया है, न श्रावको ने ही इस दिशा में कोई

उल्लेखनीय योगदान किया है। सात-आठ सौ साल की इस काल-यात्रा में हमारी इस अनमोल धरोहर की सुरक्षा का अधिकांश श्रेय उन भट्टारकों को ही है जिन्होंने उस संकटकाल के सारे उपद्रवों का बड़े धैर्य और बड़ी युक्ति के साथ सामना किया, व्यक्तिगत लाभ-अलाभ के बड़े-बड़े प्रलोभन और भय जीतकर, वे भगवान् महावीर के शासन की उस पवित्र धरोहर को बचाने में, पीढियो तक लगे रहे, जो महान् शास्त्रो के रूप में हमारे अनेक आचार्यों ने और जिनायतनो के रूप मे हमारे पूर्वज महापुरुषो ने हमारे लिए रची थी। आज अपनी उस धरोहर पर गर्व करते समय यदि हम अतीत के इस परिच्छेद को अनदेखा करेंगे तो यह हमारे ही इतिहास के साथ हमारा अन्याय होगा।

इस प्रकार सैकडो वर्षों के अन्तराल के बाद हमारी वर्तमान पीढी को वीतरागी दिगम्बर गुरु के दर्शनो का और उनकी सेवा करने का सहज सौभाग्य सुलभ हुआ है। अनेक मुनिसघ बहते पानी की तरह यत्र-तत्र विचरण करते रहते हैं। कभी-कभी तो हमे दस-बारह तक दिगम्बर मुनियो के एक साथ दर्शन प्राप्त हो जाते हैं। हमे स्मरण है कि सन् 1968 मे आचार्य शिवसागरजी के सघ मे उनचास पिच्छीधारी व्रती थे। यद्यपि यह संख्या आचार्य, मुनि, ऐलक, क्षुल्लक और आर्यिका माताओ को मिलाकर थी, परन्तु फिर भी इतने सयमधारियो का एक साथ विचरण, हमारे निकट अतीत को देखते हुए एक अतिशय से कम नही था। पर श्रवणबेलगोल मे हमे जिस श्रमण संघ का दर्शन मिला वह इन सबसे विशाल था।

श्रवणबेलगोल में सन्त-समागम

श्रवणबेलगोल के महोत्सव के समय हमारे निकट इतिहास मे प्राप्त साधु-समागम की प्राय: सभी सख्याए छोटी पड गयी। प्राप्त सूचना के आधार पर सन् 1981 के अन्त मे देशभर में मूलसघ के पिच्छीधारियो की कुल सख्या 323 थी। इनमें 123 मुनि, 89 आर्यिका माताएँ, 64 ऐलक क्षुल्लक और 47 क्षुल्लिकाएँ बतायी जाती हैं। इसमे सन्देह नही है कि इसके अतिरिक्त भी कुछ ऐसे एकान्तसेवी मौनसाधक अवश्य होंगे जिनकी सूचना हमे प्राप्त नही हो सकी है। इस प्रकार लगभग 350 की सख्या वाले श्रमणसघ मे से 149 सयमधारी, श्रवणबेलगोल के महोत्सव के समय वहाँ विराजते थे। इसका अर्थ हुआ कि देश के समस्त साधु-व्रतियों का लगभग आधा समुदाय वहाँ विराजमान था। इनमे ग्यारह गण्यमान आचार्यों सहित मुनियो की सख्या छप्पन थी। इकतीस आर्यिका माताएँ थी। ऐलक, क्षुल्लक पैंतीस तथा क्षुल्लिकाओ की सख्या सत्ताइस थी। इनमे से नौ मुनियो, एक ऐलक, तीन आर्यिकाओ, आठ क्षुल्लको और दो क्षुल्लिकाओ को इस महोत्सव मे ही दीक्षा उपलब्ध हुई।

श्रवणबेलगोल मे मुनियों त्यागियो की व्यवस्था के लिए जिस 'त्यागी सेवा समिति' का गठन किया गया था उसके कार्यकर्ताओं ने बहुत पहले से वहाँ आवश्यक सेवा-व्यवस्था का प्रारम्भ कर दिया था। मगाई बस्ती के आस-पास बांस की चटाई की झोपडियाँ बनाकर उनमे मुनियों के ठहरने की व्यवस्था की गयी। अक्कन बस्ती व दानशाला बसदि की परिक्रमा में भी इसी प्रकार के अस्थायी निवास निर्मित किये गये। कुछ मुनि संघ भण्डारी बस्ती में भी ठहराये गये। आर्यिका माताओ के ठहरने की पृथक् व्यवस्था नगर-जिनालय मे की गयी। इस सारे स्थान को 'शान्ति सागर स्मारक-नगर' कहा गया।

सहस्राब्दि महोत्सव जैसे जन-संकुल वातावरण में और अत्यन्त व्यस्त कार्यक्रमों के बीच, इतने संयमधारियों के लिए आहार आदि की निर्दोष और शास्त्रानुकूल व्यवस्था, सचमुच एक कठिन कार्य था। परन्तु त्यागी सेवा समिति के सेवाभावी सयोजक बगलोर निवासी श्री एम०सी० अनन्तराजैया की सतर्क दृष्टि, और उनके सहयोगियो के अथक परिश्रम से, ठीक समय पर उत्तम व्यवस्था बनती चली गयी। हज़ारो मुनि भक्त, व्रती-अव्रती श्रावकों ने इस व्यवस्था मे महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया। नगर मे विद्यानन्द निलय, जयश्री गेस्ट हाउस, छात्रावास, पुरानी धर्मशाला आदि स्थायी निवासो मे ठहरे हुए, तथा अनेक मकानो मे किराये से रहते हुए यात्रीगण तो चौका लगाते ही थे, बहुत-से अस्थायी निवास भी आहार देने वालो के लिए तैयार कराये गये थे। इन सभी चौको मे मर्यादा के भीतर का शुद्ध आटा, घी, दूध आदि आवश्यकतानुसार पहुँचता रहे, ऐसी व्यवस्था की गयी थी। इस प्रकार पूरे साधु समुदाय के व्रतो-प्रत्याख्यानों का निर्दोष निर्वाह हो सके ऐसा वातावरण वहाँ स्वत. तैयार हो गया था।

मुनिराजो के दर्शन पाने के लिए प्रात काल सूर्य की किरणें फूटते ही दर्शनार्थी स्त्री-पुरुषो का तांता लग जाता था। साधुओ के पठन-पाठन मे, प्रवचनकाल मे और कभी-कभी तो सामायिक काल मे भी, उत्सुक दर्शनार्थियो की भीड को रोक पाना सम्भव नही हो पाता था। आहार के समय हज़ारो की संख्या मे यात्री समुदाय एकत्रित होकर दिगम्बर साधु की भोजन प्रक्रिया का अवलोकन करते थे। इनमे अनेक लोग ऐसे होते थे जिन्हे ऐसा अवसर पहली बार प्राप्त हो रहा था। सन्तोष की बात थी कि बालको और स्त्री-पुरुषो का वह समुदाय, स्वत. अनुशासित होकर, अपने आप व्यवस्था का अग बन जाता था। यही कारण था कि इतने दिनो मे, इतने साधको मे से किसी को, एक बार भी कोई व्यवधान, कोई बाधा, कैसा भी उपसर्ग, यात्रियो की ओर से नही हुआ। दैहिक और प्राकृतिक उपद्रव भी प्राय किसी साधु-साध्वी को नही देखा गया। पूरा समय इन सयमधारियो ने निराकुलता सहित, समता और शान्तिपूर्वक व्यतीत किया। उनकी ज्ञानाराधना और तप-साधना, इतने बडे मेले मे भी निर्बाध चलती रही, यह अपने आप मे एक अतिशय से कम नही था।

प्रातः आठ बजे से सभी आचार्य और मुनिराज सामूहिक स्वाध्याय के लिए मठ मे पधार जाते थे। सिद्धान्तचक्रवर्ती आचार्य नेमिचन्द्र की साधना-भूमि मे उन्ही का ग्रन्थ 'द्रव्य-सग्रह' स्वाध्याय के लिए चुना गया था। ब्रह्मदेव भट्ट की सस्कृत टीका के आधार पर इस ग्रन्थ की वाचना करते थे वाराणसी से पधारे लब्धप्रतिष्ठ विद्वान, न्यायाचार्य, डॉक्टर, पण्डित दरबारी लाल कोठिया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की जैनपीठ के पीठाध्यक्ष पद से सेवा निवृत्त डॉ० कोठिया जैन दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान हैं। उनकी पठन शैली भी अत्यन्त सुबोध और सरस होती थी। मध्याह्न मे 'परीक्षा-मुख' की वाचना भी चलती थी। बीच-बीच मे एलाचार्य विद्यानन्द मुनिजी और विद्वान भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी, प्रश्नोत्तर और चर्चा के द्वारा प्रकरण को विस्तार से समझाते-समझाते चलते थे। इसी वाचना से मुनिराजो की वन्दना करने वाले दर्शनार्थियो का क्रम प्रारम्भ हो जाता था, जो देर तक चलता रहता था।

मध्याह्न मे प्रायः हरेक संघ मे आगत विद्वान् और जिज्ञासु श्रावक एकत्र होकर उन मननशील मुनियों से तत्त्व-चर्चा और शंका-समाधान करते रहते थे। वही छोटे मोटे प्रवचन भी हो जाते थे। तत्त्व-गोष्ठियाँ भी हो जाती थी। इस प्रकार अनवरत उन साधुओं के पास, और विदुषी

आर्यिका माताओं के पास, ज्ञान की आराधना चलती रहती थी। इतना बड़ा दिगम्बर साधु-समुदाय एक क्षेत्र में कुछ समय तक निवास करे, एक साथ विचरण करे, एक साथ किसी मच पर विराजमान हो, यह एक ऐतिहासिक घटना थी। अनेक वयोवृद्ध भक्त और त्यागी वहाँ थे। 90-95 वर्ष की आयु तक के सैकड़ो यात्री उस मेले में आये थे। इनमे अनेक तो अपनी मुनि-भक्ति के लिए विख्यात थे। यथा अवसर बहुतों से जानने का प्रयत्न किया गया, पर उत्तर यही मिला कि वर्तमान पीढ़ी की स्मृति मे, इतना बडा साधु-समुदाय एक साथ न कही देखा गया, न कभी सुना गया। जिन भाग्यशालियों ने बड़े-बड़े साधु सघो के दर्शन किये हैं उनका भी यही कथन था कि इस महोत्सव मे जो साधु-समुदाय एकत्रित है, इसका एक तिहाई भी इसके पूर्व कभी, एक साथ कही नही देखा गया।

चामुण्डराय मण्डप के विशाल मंच पर जब ये सभी मुनि-महाराज और आर्यिका माताएँ एक साथ विराजते थे, तब एक दर्शनीय दृश्य वहाँ उपस्थित हो जाता था। कई बार दो-दो घण्टो तक लगातार ये साधु मंच को सुशोभित करते थे, परन्तु उनमे से प्रत्येक, पूरे समय सावधानी पूर्वक, या तो वक्ता की वाणी को हृदयगम करते थे, या फिर स्वाध्याय मे लीन रहते थे। लगभग 90 वर्ष के वयोवृद्ध तपस्वी पूज्य देवभूषण महराज से लेकर 25-30 वर्ष की वय वाले नवदीक्षित साधुओं तक का पूरा समुदाय जब मच पर सावधानी पूर्वक पदार्पण करता, परस्पर विनय के साथ अपने वरिष्ठ साधुओं को नमन करके वहाँ विराजता, तब वातावरण मे स्वयमेव एक पवित्रता व्याप्त हो जाती थी। दर्शको की आँखो मे अलौकिक आनन्द की चमक दिखाई देने लगती थी, उसका मन चौथे काल के तपोवनो मे विराजते हुए बड़े बड़े साधु समुदायो की कल्पना मे खो जाता था।

श्रवणबेलगोल में नवीन दीक्षाएँ

महोत्सव के निमित्त से श्रवणबेलगोल में एकत्र हुए समस्त दिगम्बर जैग मुनि सघो मे ज्ञाना-भ्यास और तप की भिन्न-भिन्न साधनाएँ तो चलती ही रही, समय-समय पर अनेक आचार्यों-मुनियो द्वारा, अनेक नवीन दीक्षाएँ भी वहाँ दी गयी।

सर्वप्रथम 5.2.81 को आचार्य विमलसागरजी ने चार दीक्षाएँ प्रदान की। उनके सघस्थ चन्द्रसागर ने मुनिपद लेकर वर्धमानसागर नाम ग्रहण किया। क्षुल्लिका पद्मश्री को आर्यिका गोमटमती बनाया गया। क्षुल्लक नेमसागर ऐलक बनकर नगसागर कहलाये तथा ब्रह्मचारी श्रुत-कीर्ति को क्षुल्लकदीक्षा देकर श्रमणसागर नाम प्रदान किया गया।

उसी दिन आचार्य कुन्थुसागरजी ने अपने संघ मे दो क्षुल्लकों और दो ब्रह्मचारियो की पद-वृद्धि की। उन्होंने क्षुल्लक आदिसागर को मुनि वीरनन्दी बनाया। क्षुल्लक कनकनन्दी को भी मुनिदीक्षा प्रदान की गयी, परन्तु उनका नाम अपरिवर्तित रहा।

सात फरवरी को एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी ने दिल्ली के श्री कामताप्रसाद को क्षुल्लक पद देकर धर्मानन्द नाम प्रदान किया तथा अण्णासाहब पायगोंड़ा पाटिल को क्षुल्लक ज्ञानानन्द के नाम से सम्बोधित किया।

प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि महोत्सव का उद्घाटन 9.2.81 को हुआ। उसी दिन सर्वाधिक दीक्षाएँ हुई। आचार्य देशभूषण महाराज ने महाव्रत देकर एक क्षुल्लक को मुनि वरांगदत्त के नाम

से तथा दूसरे क्षुल्लक आदिभूषण को मुनि आदिसागर नाम से सम्बोधित किया। बाल ब्रह्मचारी मुनि दयासागरजी द्वारा भी उस दिन दो मुनि दीक्षाएँ सम्पन्न हुई। इन नवदीक्षित मुनियो के नाम मुनि रयणसागर और मुनि निजानन्दसागर रखे गये। दयासागरजी ने एक आर्यिका दीक्षा भी प्रदान की जिनका नाम निर्मलमती माताजी हुआ। इन्हीं महाराज के द्वारा एक सप्ताह बाद सोलह फरवरी को, श्रीधन्यकुमार ने क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण करके निरजनसागर नाम प्राप्त किया।

आचार्य सुमतिसागर के सघ मे 1.3.81 को दो मुनि दीक्षाएँ सम्पन्न हुई। ऐलक बाहुबली-सागर मुनि बाहुबलीसागर बने जबकि क्षुल्लक सिद्धिसागर को मुनि बनने पर भरतसागर नाम दिया गया। दिनांक 5.3.81 को इसी सघ मे ब्रह्मचारी सज्जनकुमार ने क्षुल्लक पद लेकर सूर्य-सागर नाम प्राप्त किया।

आचार्य विमलसागर महाराज के द्वारा 8.3 81 को क्षुल्लिका नियममती और 12.3.81 को क्षुल्लक गोमटसागर ने दीक्षा प्राप्त की। 22.3.81 को इसी सघ मे क्षुल्लिका अनंगमती ने आर्यिका पद प्राप्त करके स्याद्वादमती नाम प्राप्त किया।

महोत्सव की अन्तिम दीक्षा 1 7.81 को आर्यिका विजयमती माताजी द्वारा क्षुल्लिका कुलभूषणमती को प्रदान की गयी। इस प्रकार मेले में कुल तेईस दीक्षाएं सम्पन्न हुई जिनमे नौ दिगम्बरी दीक्षाएँ हुई। तीन आर्यिकाओं, एक ऐलक, आठ क्षुल्लक और दो क्षुल्किाओ ने स्व-पर कल्याण के लिए अनेक यम-नियम धारण किये।

श्रवणबेलगोल महोत्सव में उपस्थित साधु-समुदाय

भगवान बाहुबली सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना महोत्सव के अवसर पर आचार्य, मुनिराज, ऐलक, आर्यिकाएँ, क्षुल्लक और क्षुल्लिकाएँ सब मिलाकर 149 पिच्छीधारी साधक श्रवणबेलगोल मे विराजमान थे। इनमें वे नवीन दीक्षित भी शामिल हैं जिनकी दीक्षा, श्रवणबेलगोल मे ही उसी महोत्सव के अवसर पर सम्पन्न हुई।

यहाँ उन समस्त संयमी साधु-साध्वियो की तालिका प्रस्तुत की जा रही है। इस तालिका मे उनके दीक्षा-गुरु का नाम और उनके जन्म तथा दीक्षा की तिथि अथवा वर्ष देने का प्रयत्न किया गया है। यह जानकारी एकत्र करने में पर्याप्त परिश्रम हुआ। अनेक साधुओ ने अपने संबंध की जानकारी देने में भी रुचि नही दिखाई। बहुतेरो ने अन्दाज से अपनी दीक्षा आदि का काल बताया। उसे ईस्वी सन् मे लिखा गया है। इसी कारण किसी तिथि या वर्ष मे कुछ अतर भी हो सकता है।

क्रम	नाम	दीक्षागुरु	जन्म-तिथि	दीक्षा-तिथि
		आचार्य देशभूषणजी संघ		
1.	आचार्य देशभूषणजी	मुनि जयकीर्तिजी	संवत् 1960	
2.	उपाध्याय मुनि कुलभूषण	आ० जयकीर्तिजी	5.8.1914	20.2.78
3.	मुनि चन्द्रसागर जी	आ० देशभूषणजी	ई० 1890	1967
4.	बालाचार्य मुनि बाहुबली	,,	16.12.1932	26.2.75
5.	मुनि वरांगदत्त जी	,,	11.4.1916	9.2.81

क्रम	नाम	दीक्षागुरु	जन्म-तिथि	दीक्षा-तिथि
6.	मुनि आदिसागर जी	आ० देशभूषणजी	10.6.1917	9.2.81
7.	आर्यिका चरित्रमतीजी	,,	1901 ई०	1973
8.	आर्यिका विमलमतीजी	नन्दनकीर्तिजी	1916 ई०	1962
9.	,, नेमिवतीजी	आ० देशभूषणजी	1926	1975
10.	,, अजितमतीजी	,,	1922	1975
11.	,, वीरमतीजी	,,	1891	—
12.	क्षुल्लक गुणभद्रजी	मुनि महाबलजी	1940	2.12.68
13.	,, इन्दुभूषणजी	आ० देशभूषणजी	24.6.1910	25.5.70
14.	,, जयकीर्तिजी	—	6.5.1935	14.12.61
15.	क्षुल्लिका अनन्तमतीजी	आ० देशभूषणजी	7.5.1951	22.1.72
16	,, ऋषभमतीजी	आ० सुबलसागरजी	1943	4.11.75
17.	,, शान्तिमतीजी	आ० देशभूषणजी	10.10.56	29.3.78
18.	,, चन्द्रमतीजी	,,	3.9.54	1979
19.	,, रत्नमतीजी	,,	1917	5.6.79
20.	,, जयश्री माताजी	,,	1920	—

एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी संघ

21.	एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी	आ० देशभूषणजी	22.4.1925	25.5.63
22.	मुनि वरदत्तजी	,,	20.5.41	26.2.75
23.	क्षुल्लक चन्द्रभूषणजी	,,	2.2.1939	1970
24.	,, धर्मानन्दजी	मुनि विद्यानन्दजी	19.11.25	7.2.81
25.	,, ज्ञानान्दजी	,,	1905	7.2.81

आचार्य विमलसागरजी संघ

26.	आचार्यरत्न विमलसागरजी	आ० महावीरकीर्तिजी	1916	1952
27.	उपाध्याय भरतसागरजी	आ० विमलसागरजी	1949	6.11.72
28.	मुनि अरहसागरजी	,,	—	1961
29.	मुनि सम्भवसागरजी	,,	1909	1962
30.	मुनि बाहुबली सागरजी	,,	1933	3.11.72
31.	मुनि मतिसागरजी	,,	1906	1975
32.	मुनि उदयसागरजी	मुनि सन्मतिसागरजी	1921	1977
33.	मुनि वर्धमानसागरजी	आ० विमलसागरजी	1933	5.2.81
34.	आर्यिका आदिमतीजी	,,	—	1964

क्रम	नाम	दीक्षागुरु	जन्म-तिथि	दीक्षा-तिथि
35.	आर्यिका नन्दामतीजी	आ० विमलसागरजी	1929	1973
36.	,, नगमतीजी	,,	1951	1979
37.	,, गोमटमतीजी	,,	—	5.2.81
38.	ऐलक चन्द्रसागरजी	,,	—	1962
39.	ऐलक नंगसागरजी	,,	—	5.2.81
40.	क्षुल्लक तीर्थसागरजी	,,	1951	2.8.79
41.	,, चन्द्रसागरजी	आ० महावीरकीर्तिजी	1912	1950
42.	,, श्रमणसागरजी	आ० विमलसागरजी	1.10.48	5.2.81
43.	क्षुल्लिका श्रीमतीजी	,,	—	18.3.72
44.	,, कीर्तिमतीजी	,,	—	1976
45.	,, अनगमतीजी	,,	14.5.53	5.8.79
46.	,, नियमवती	,,	1940	8.3.81

आचार्य सुमतिसागरजी संघ

47.	आचार्य सुमतिसागरजी	आ० विमलसागरजी	स० 1974	सं० 2025
48.	मुनि विनयसागरजी	,,	सं० 1963	स० 2029
49.	मुनि आदिसागरजी	आ० सुमतिसागरजी	1919	1973
50.	मुनि बाहुबलीसागरजी	,,	सं० 1922	1.3.81
51.	मुनि भरतसागरजी	,,	16.12.50	1.3.81
52.	आर्यिका राजमतीजी	,,	7.6.41	5.5.73
53.	,, पार्श्वमतीजी	,,	1919	1973
54.	,, ज्ञानमतीजी	,,	स० 2003	3.2.76
55.	,, विद्यामतीजी	,,	सं० 1983	23.6.77
56.	क्षुल्लिका आदिमतीजी	,,	1911	स० 2031
57.	,, सिद्धिमतीजी	आ० निर्मलसागरजी	1921	स० 2025
58.	,, दयामतीजी	आ० सुमतिसागरजी	स० 1982	स० 2036
59.	क्षुल्लक वर्धमानसागरजी	आ० कुन्थुसागरजी	स० 1969	स० 2031
60.	,, अनंगसागरजी	आ० सुमतिसागरजी	स० 1986	स० 2035
61.	,, सन्मतिसागरजी	,,	10.11.49	1.2.72

आचार्य कुन्थुसागरजी संघ

62.	आचार्य कुन्थुसागरजी	आ० महाकीर्तिजी	—	9.7.67
63.	मुनि भद्रसागरजी	आ० धर्मसागरजी	1921	1974

क्रम	नाम	दीक्षागुरु	जन्म-तिथि	दीक्षा-तिथि
64.	मुनि वीरनन्दीजी	आ० कुन्थुसागरजी	1936	5.2.81
65.	मुनि कनकनन्दीजी	,,	1951	5.2.81
66.	आर्यिका विजयमतीजी	आ० विमलसागरजी	1937	1962
67.	,, ब्राह्मीमतीजी	,,	1931	स० 2028
68.	क्षुल्लक पदमसागरजी	आ० पार्श्वसागरजी	स० 1985	स० 2035
69.	क्षुल्लिका कुलभूषणमाताजी	आर्यिका विजयमतीजी	1959	1.7.81
70.	,, आदिमतीजी	आ० महावीरकीर्तिजी	1901	—
71.	क्षुल्लक पद्मनन्दीजी	आ० कुन्थुसागरजी	20.6.54	2.2.81
72.	,, देवनन्दीजी	,,	20.6.63	5.2.81

मुनि दयासागरजी संघ

73.	मुनि दयासागरजी	आ० धर्मसागरजी	स० 1988	स० 2024
74	मुनि अभिनन्दनसागरजी	आ० धर्मसागरजी	15.5.44	स० 2024
75.	मुनि विजयसागरजी	आ० सुपार्श्वसागरजी	स० 1968	स 2029
76.	मुनि आगमसागरजी	आ० सन्मतिसागरजी	स० 1983	स 2023
77.	मुनि निजानन्दसागरजी	मुनि दयासागरजी	4.9.33	9.2.1981
78.	मुनि रयणसागरजी	,,	—	9.2.1981

आर्यिका गुणमतीजी संघ

79.	आर्यिका गुणमतीजी	आ० धर्मसागरजी	7.6.21	स० 2025
80.	,, निर्मलमतीजी	मुनि दयासागरजी	स० 1987	9-2.81
81.	,, प्रभामतीजी	,,	1955	स० 1935
82.	,, सरलमतीजी	आ० धर्मसागरजी	स 2009	स० 2032
83.	क्षुल्लक सुरत्नसागरजी	मुनि सुपार्श्वसागरजी	18.2.1954	स० 2030
84.	,, सुज्ञानसागरजी	श्री सम्भवसागरजी	17.8.41	12.12.75
85.	,, निरंजनसागरजी	मुनि दयासागरजी	स० 1928	16.2.81
86.	क्षुल्लिका शान्तिमतीजी	आ० सुमतिसागरजी	1906	1974

आचार्य सुबाहुसागरजी संघ

87.	आ० सुबाहुसागरजी	आ० सुपार्श्वसागरजी	18.8.27	26.12.58
88.	मुनि सुधर्मसागरजी	आ० सुबाहुसागरजी	8.8.19	20.1.81
89.	मुनि सुमेरुसागरजी	,,	7.7.30	28.11.80
90.	क्षुल्लक सुकौशलसागरजी	,,	15.8.49	9.1.81
91.	,, सुदर्शनसागरजी	,,	17.7.46	9.1.81

क्रम	नाम	दीक्षागुरु	जन्म-तिथि	दीक्षा-तिथि
92.	क्षुल्लिका श्रुतिमतीजी	आ० सुबाहुसागरजी	1903	4.10.76
93.	,, सम्यकमतीजी	,,	1930	28.11.80

आचार्य श्रेयांससागरजी संघ

94.	आ० श्रेयाससागरजी	आ० सुमतिसागरजी	31.12.20	8.4.74
95.	मुनि आर्यनन्दीजी	आ० समन्तभद्रजी	22.2.1907	11.11.59
96.	मुनि सीमन्धर स्वामीजी	आ० सुपार्श्वसागरजी	1926	1958
97.	आचार्यकल्प ज्ञानभूषणजी	आ० देशभूषणजी	स० 1987	स० 2020
98.	मुनि नमिसागरजी	आ० महावीरकीर्तिजी	13.2.41	10.10.70
99.	मुनि भूतबलीजी	आ० विमलसागरजी	25.3.42	26.1.79
100.	आ०कल्प सन्मतिसागरजी	आ० निर्मलसागरजी	1911	1974
101.	क्षुल्लक सूर्यसागरजी	आ० सुमतिसागरजी	स० 1968	5.3.81
102.	आ० सभवसागरजी	आ० महावीरकीर्तिजी	—	—
103.	मुनि सुवर्णसागरजी	आ० सम्भवसागरजी	1940	1974
104.	मुनि दर्शनसागरजी	आ० निर्मलसागरजी	1947	12.3 73
105.	क्षुल्लक अजितसागरजी	,,	1945	2.10.76

आचार्य मुनिव्रतसागरजी संघ

106.	आ० मुनिसुव्रतसागरजी	आ० विमलसागरजी	स० 1973	1971
107.	मुनि वीरभूषणजी	आ० मुनिसुव्रतसागरजी	1923	1980
108.	आर्यिका शान्तिमतीजी	,,	1936	स० 2027
109.	क्षुल्लक गुणसागरजी	,,	5.8.52	18.1.81
110.	,, वर्धमानसागरजी	,,	स० 1981	स० 2035

मुनि श्रुतसागरजी संघ

111.	मुनि श्रुतसागरजी	आ० विमलसागरजी	10.4.45	31.2.70
112.	क्षुल्लक गुणसागरजी	मुनि श्रुतसागरजी	1941	1970
113.	,, सिद्धिसागरजी	,,	24.4.33	6.5.80
114.	,, बुद्धिसागरजी	,,	1936	स० 2032

मुनि पुष्पदन्तसागरजी संघ

115.	मुनि पुष्पदन्तसागरजी	आ० धर्मसागरजी	सं० 1969	सं० 2021

क्रम	नाम	दीक्षागुरु	जन्म-तिथि	दीक्षा-तिथि
116.	आर्यिका पार्श्वमतीजी	मुनि पुष्पदन्तसागरजी	सं० 2008	सं० 2031
117.	क्षुल्लक पद्मसागरजी	,,	सं० 1908	सं० 2038

मुनि शीतलसागरजी संघ

118.	मुनि शीतलसागरजी	आ० सन्मतिसागरजी	सं० 1996	सं० 2029
119.	मुनि पद्मसागरजी	मुनि पुष्पदन्तसागरजी	1909	1970
120.	मुनि मुनिसुव्रतसागरजी	आ० महावीरकीर्तिजी	1934	1970
121.	क्षुल्लक नमिसागरजी	आ० शान्तिसागरजी	1872	1921
122.	,, अर्ककीर्तिजी	क्षुल्लक अनन्तकीर्तिजी	1916	1951
123.	,, चारित्रसागरजी	आ० निर्मलसागरजी	15.2.41	1976
124	आ० अजितमतीजी	मुनि ऋषभसागरजी	28.2.21	सं० 2025
125	क्षुल्लिका चन्द्रमतीजी	आ० महावीरकीर्तिजी	1888	1941
126.	,, ज्ञानमतीजी	आ० विमलसागरजी	1912	1971

अन्य संघों के साधु तथा आर्यिका माताएँ

127	मुनि सुबलसागरजी	आ० देशभूषणजी	1919	—
128.	आर्यिका श्रुतमतीजी	आ० सुबलसागरजी	1946	1971
129	,, निर्वाणमतीजी	आ० ज्ञानसागरजी	1943	1970
130.	,, अजितमतीजी	आ० सुबलसागरजी	1954	1978
131.	,, सुमतिमतीजी	,,	1958	1978
132.	क्षुल्लिका ब्राह्मीमतीजी	—	1957	1978
133	आ० राजमतीजी विदुषी	आ० जयकीर्तिजी	1910	1938
134.	क्षुल्लक शीतलसागरजी	आ० महावीरकीर्तिजी	स० 1889	—
135.	आर्यिका शान्तिमतीजी	आ० विमलसागरजी	1944	1969
136.	आचार्य शान्तिसागरजी	—	—	—
137	क्षुल्लक कुन्दकुन्दजी	—	—	—
138.	,, जयभूषणजी	—	—	—
139.	,, वीरसागरजी	क्षु० ज्ञानभूषणजी के साथ हैं।	—	—
140.	क्षुल्लिका सुलोचना माताजी	—	—	—
141.	,, सुपार्श्वमतीजी	—	—	—
142.	,, धर्ममतीजी	—	—	—
143.	आर्यिका कल्याणमतीजी	—	—	—
144.	,, माताजी	सुबाहु सागर संघ की बतायी गयी हैं।		

क्रम	नाम	दीक्षागुरु	जन्म-तिथि	दीक्षा-तिथि
145.	आर्यिका माताजी	सुबाहु सागर संघ की बतायी गयी हैं।		—
146.	क्षुल्लक महावीरकीर्तिजी	आ० अनन्तकीर्तिजी	1905	1962
147.	क्षुल्लिका सिद्धिमतीजी	—	—	—
148.	क्षुल्लक गोमटसागरजी	आ० विमलसागरजी	—	12.3.81
149.	क्षुल्लिका शीतलमतीजी	आ० देशभूषणजी	1931	1971

उपरोक्त सभी साधु-साध्वियो के जीवन परिचय तथा उनके कृतित्व का सक्षिप्त विवरण 'त्यागी-सेवा-समिति' द्वारा उस समय तैयार कराया गया था। श्रवणबेलगोल के जैनमठ मे उसे सुरक्षित रखा गया है। कभी सचित्र प्रकाशित किया जा सका तो इस ऐतिहासिक प्रसंग का वह अनोखा दस्तावेज होगा। मैंने पाया है कि प्राय: हर साधक की अपनी विशेषताएँ हैं। किसी ने उग्र तपश्चरण करके अपने शरीर को कृश किया है। किसी ने सघन विद्याभ्यास के द्वारा प्रचुर साहित्य प्रस्तुत किया है। कोई बालब्रह्मचारी बालपन से साधना मे रत है, और किसी ने अनेक उदासीन व्यक्तियो को चरित्र के पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी है। विस्तार भय से यहाँ वह सब नही लिखा जा रहा, पर उनमे से कुछ साधको की कतिपय विशेषताओ का उल्लेख यहाँ अप्रासगिक न होगा।

आचार्य देशभूषणजी महाराज, महोत्सव मे उपस्थित साधु-समुदाय मे वरिष्ठतम आचार्य थे। पिछले महा-मस्तकाभिषेकों के अवसर पर भी उनका संघ श्रवणबेलगोल पधारता रहा है। आचार्यश्री के द्वारा दीक्षित साधुओ की सख्या विपुल है। आपके द्वारा जैन शासन की महती सेवा-प्रभावना हुई है। भारत-पाकिस्तान युद्ध के राष्ट्रीय सकटकाल मे, तत्कालीन प्रधानमन्त्री स्व. लालबहादुरजी शास्त्री ने आचार्यश्री के चरणो मे नमन करके, राष्ट्र के लिए विजय और अभय का आशीर्वाद प्राप्त किया था। इस प्रेरक प्रसग से अनेक वर्षों तक देश-देशान्तर मे भगवान महावीर की स्वतन्त्रता-मूलक निर्भीक साधना पद्धति की बडी प्रभावना होती रही है।

आचार्यरत्न विमलसागरजी द्वितीय वरिष्ठ आचार्य थे जो अपने विशाल शिष्य समुदाय के साथ लोगो की भक्ति और प्रणति का केन्द्र बन रहे थे। हिन्दी, सस्कृत, गुजराती, मराठी और प्राकृत के अभ्यासी आचार्यश्री, दीर्घकाल तक अपने निमित्त-ज्ञान और सामुद्रिक विद्या के लिए भी प्रसिद्ध रहे है। स्वर्गीय आचार्य महावीरकीर्तिजी के पट्ट पर विराजमान आचार्य विमलसागर-जी से समय-समय पर समाज को उपयोगी उपदेश और प्रेरणाएं प्राप्त होती रही हैं।

जैन शासन की प्रभावना के क्षेत्र मे एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी का पुनीत नाम सदैव प्रमुखता पूर्वक स्मरण किया जाता रहेगा। देश की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी मुनिश्री के प्रति भक्ति भावना रखती हैं और कई बार उनका साक्षात् आशीर्वाद प्राप्त कर चुकी हैं। देश के कोने-कोने मे अन्य भी अनेको राजपुरुष एलाचार्यजी के भक्त हैं और समय समय पर उनके मंगल आशीषो की कामना करते रहते हैं। सन् 1974-75 मे 'भगवान महावीर 2500वाँ निर्वाण महोत्सव वर्ष' मनाने के लिए समाज को मुनिश्री मे अपूर्व और अति उपयोगी मार्ग दर्शन तथा प्रेरणा मिलती रही है। श्रवणबेलगोल के महोत्सव की रूपरेखा निर्धारित करने मे भी, प्रारम्भ से ही उनका कुशल मार्ग दर्शन प्राप्त रहा है। इस महोत्सव के लिए ही एलाचार्य दिल्ली से विहार

करके 1980 मे चातुर्मास के पूर्व ही श्रवणबेलगोल पधारे। उत्तरापथ से दक्षिणापथ की उनकी इस दीर्घ यात्रा मे भी जगह-जगह धर्म की प्रभावना के प्रसंग अनायास बनते रहे। श्रवणबेलगोल पधारने पर 'सिद्धान्त-चक्रवर्ती' उपाधि से अलंकृत करके समाज ने एलाचार्यजी का स्वागत किया।

आचार्य देशभूषणजी के संघ में स्याद्वाद केसरी, उपाध्याय, मुनि कुलभूषणजी भी जैन विद्या के महान् साधक हैं। हिन्दी, मराठी, गुजराती, कन्नड़ और अंग्रेजी के अभ्यासी मुनिश्री के द्वारा 'चौबीस तीर्थंकर पूजा', 'गणधरादि पूजा', 'सार-समुच्चय', 'आचार्य पदार्पण-पत्रिका' आदि अनेक पुस्तिकाओ का लेखन हुआ है। समाज उत्थान की दिशा मे भी मुनि कुलभूषणजी एक अच्छे परामर्शदाता रहे हैं।

आचार्यरत्न विमलसागरजी से ही दीक्षित आचार्य सुमतिसागरजी (47) एक और महान् साधक वहाँ विराज रहे थे। सुमतिसागरजी के हाथ से 1981 तक कुल त्रेपन दीक्षाएँ सम्पन्न हो चुकी थी, जिनमे 21 दिगम्बर मुनि, 7 आर्यिका माताएँ, 2 ऐलक, 14 क्षुल्लक और 9 क्षुल्लिकाएँ शामिल हैं। कालदोष से साधुओ के सामूहिक विहार का अनुशासन यदि न टूटा होता तो इन आचार्य महाराज को शायद अपने समय के विशालतम साधु संघ का नायकत्व करने का श्रेय प्राप्त होता।

आचार्य कुन्थुसागरजी (62) भी सात भाषाओ के जानकार, अच्छे विचारक और ज्ञान-ध्यान के अभ्यासी साधु हैं।

आचार्य समन्तभद्र स्वामी के शिष्य मुनिश्री आर्यनन्दिजी (95) भारत की अधिकांश जैन जनता के परिचित साधु हैं। सन् 1969 मे जब सम्मेदाचल सहित अनेक दिगम्बर तीर्थों पर विपत्ति के बादल घुमड रहे थे, तब सौम्यमूर्ति आचार्य समन्तभद्रजी ने कुम्बोज मे तीर्थक्षेत्र कमेटी की एक बैठक को सम्बोधित करते हुए, तीर्थों की रक्षा के निमित्त कम-से-कम एक करोड रुपये की राशि एकत्र करने का परामर्श दिया था और प्रेरणा दी थी। उन्होने अपनी शिष्य मण्डली से भी सामज के इस संकल्प में सहायक होने को कहा था। समन्तभद्र महाराज के शिष्य मुनि आर्यनन्दिजी ने गुरु के इस परामर्श को 'गुरु आज्ञा' की तरह स्वीकार किया और वे अपने पूरे पुरुषार्थ से उस कार्य मे जुट गये। बारह वर्ष तक सारे देश का भ्रमण करके उन्होने समाज को कर्तव्य बोध कराया। अनेक नियम और प्रत्याख्यान धारण करके आर्यनन्दि महाराज ने उस पुनीत लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमे प्रेरित किया। सन् 1980 के बेलगाम चातुर्मास मे, एक करोड़ की राशि के आश्वासन प्राप्त होने तक, वे उसी दिशा मे अनवरत प्रयत्न करते रहे। आर्यनन्दिजी ने यह सिद्ध कर दिया कि जैन सस्कृति, धर्म और धार्मिको की रक्षा के जो उदाहरण मुनि विष्णुकुमार, आचार्य समन्तभद्र और अकलक देव ने प्रस्तुत किये थे, उस प्रेरक परम्परा का अभी अन्त नही हुआ। श्रावक इस दिशा में अपने कर्तव्य के प्रति यदि उदासीन हो जावें तो आज भी हमारे पूज्य आचार्यों और मुनियो में जैन शासन के प्रति वह निष्ठा विद्यमान है जिसके बल पर वे अपनी शक्ति भर उस कार्य को गति देने के लिए अपनी साधना को समयोचित मोड़ देकर इतिहास के उन अनूठे उदाहरणों को पुन: प्रस्तुत करने के लिए आगे आ सकते हैं।

मुनिश्री दयासागरजी (73) के वैराग्य का कारण अनोखा है। उदयपुर के श्री कस्तूरचन्द की दादी को जातिस्मरण हुआ कि उनका पौत्र पूर्व-भव मे उनका ही पति था। सुनते ही कस्तूरचन्द

को संसार से वैराग्य हो गया और दयासिंधु आचार्य धर्मसागरजी की चरण सेवा करते करते एक दिन वे मुनि दयासागर हो गये ।

मुनिश्री अभिनन्दनसागरजी (74) को साधुओं की वैयावृत्य तथा समाधि मे उनकी सेवा-सम्हाल करने का विशेष अनुभव है। वे जैन दर्शन के कुशल वक्ता भी हैं। इसी सघ के मुनि विजयसागरजी (75) 'अनशन तप' की विशेष साधना करते है। वे अब तक ग्यारह सौ उपवास कर चुके हैं। मुनि आगमसागरजी (76) ऐसे निराडम्बर विहार करने वाले साधु हैं कि एक बार उन्होने श्रावको के घर न मिलने पर सौ मील की यात्रा निराहार ही सम्पन्न कर ली। मुनि निजानन्दसागरजी (77) दर्शन शास्त्र मे एम ए की उपाधि से अलकृत है। मुनि रयणसागरजी (78) को अग्रेजी का अच्छा अभ्यास है। इनके द्वारा 'मुनि-चर्या' का अग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत हो चुका है।

मुनि श्री भूतबलिजी (99) उसी सदलगा ग्राम के वासी है जो पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी का जन्म ग्राम है। अपने पूर्व परिवेशी श्री गुण्डप्पा को क्षुल्लक दीक्षा प्रदान करके उन्हे मुनि भूतबली बनने का मार्ग आचार्य विद्यासागरजी ने ही प्रस्तुत किया।

क्षुल्लक सन्मतिसागरजी (61)बालब्रह्मचारी साधक हैं। सागर जैन विद्यालय के इस स्नातक ने 22 वर्ष की अवस्था मे सातवी प्रतिमा के व्रत धारण किये। विद्या प्रसार की ओर इनकी अधिक लगन है। सन्मतिसागरजी 'स्याद्वाद शिक्षण परिषद' के सस्थापक है और 'स्याद्वाद ज्ञान गगा' मासिक पत्रिका के प्रणेता है। इनके प्रयत्नो से अब तक समाज मे लगभग 65 जैन पाठ-शालाओ की स्थापना हो चुकी है।

क्षुल्लिका दयामतीजी (58) के गृहस्थावस्था के पति श्री भागचन्द मुनि होकर चन्द्रसागर के नाम से विख्यात हुए। क्षुल्लिका आदिमतीजी (56) गृहस्थावस्था मे गुरुवर गोपालदासजी बरैया के पौत्र श्री बालमुकुन्द बरैया की पत्नी थी।

आर्यिका निर्वाणमती माताजी (129) को पूज्य आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज की शिष्या होने का गौरव प्राप्त है। माताजी ने जैन दर्शन मे अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया है। हिन्दी, अंग्रेजी और कन्नड मे अनेक पुस्तकें उन्होंने लिखी हैं। वे अब तक लगभग पच्चीस बालिकाओं को सयम के पथ पर अग्रसर कर चुकी हैं।

आर्यिका राजमती माताजी (133)परम विदुषी साधिका है। हिन्दी, मराठी, सस्कृत, प्राकृत कन्नड, मागधी, अर्द्ध-मागधी तथा शौरसैनी और अग्रेजी का उन्हे अभ्यास है। माताजी को ज्ञान का अच्छा क्षयोपशम प्राप्त है।

यह कुछेक साधुओं की कतिपय विशेषताएं हैं। वास्तव मे तो साधना की दुनिया ही निराली है। वहाँ बडी-बडी उपलब्धियाँ निरभिमानी व्यक्तित्व मे विलीन होकर रह जाती हैं। सिद्धि और सफलता प्राप्त करने वाला ही यदि उनकी प्रसिद्धि के प्रति रुचिवान न हो तब समाज मे उन्हे कौन प्रचारित करे ? कैसे प्रचारित करे?

अनेक मुनिराज और आर्यिका वहाँ ऐसे थे जिन्होने पिछले दो अथवा तीन महामस्तकाभिषेक अपनी आँखो देखे थे। इस सहस्राब्दि समारोह के अवसर पर इतने बहुसख्य साधु-समुदाय की उपस्थिति को वे श्रमण संघ की विनय वैयावृत्य का एक दुर्लभ अवसर मानते थे और इस शताब्दी का यह सबसे बड़ा साधु-सम्मेलन उन सबको प्रमुदित कर रहा था।

दिगम्बर जैन मुनि-परिषद् की स्थापना

दिगम्बर जैन मुनिसंघों मे आचार्यों के अनुशासन मे निबद्ध साधको की दो श्रेणियां होती हैं—साधु और श्रावक। दिगम्बर मुनि और एक वस्त्र धारिणी आर्यिका की गणना महाव्रती साधुओ में होती है। इससे नीचे सभी पद ऐलक, क्षुल्लक, क्षुल्लिका आदि उत्कृष्ट श्रावक कहलाते हैं। उनकी साधना का सूचक संख्यायुक्त 'श्री' शब्द उनके नाम से आगे लिखा जाता है। वैसे तो लौकिक साधकों मे 'लक्षश्री' 'कोटिश्री' और 'अनन्तश्री' विभूषित नाम भी देखने को मिलते हैं, परन्तु दिगम्बर आम्नाय मे इसकी एक निर्धारित परम्परा है। यहां सर्वज्ञ पद को प्राप्त अर्हन्त भगवान को '1008 श्री' लिखा जाता है। आचार्यों और मुनिराजो के नामो के आगे '108 श्री' तथा आर्यिका, ऐलक और क्षुल्लक के नाम के साथ '105 श्री' लिखने कीपरम्परा है। इससे छोटे पद के साधक व्रती-ब्रह्मचारी आदि अपनी साधना बढ़ाने के लिए मुनियो के साथ भी रहे, तब भी उनकी गणना त्यागियो मे ही होती है, साधुओ मे नही।

वर्तमान मे सम्पूर्ण दिगम्बर जैन मुनि सघ, मूलत. चारित्र-चक्रवर्ती आचार्य शातिसागरजी की शिष्य परम्परा मे ही अपने आपको मानते हैं, परन्तु दीक्षागुरु के भेद से, अथवा पृथक् विहार करने के कारण, सघो और उनकी शाखाओ के रूप मे, पूरा दिगम्बर साधु-समुदाय अनेक सघो मे विभक्त हो गया है। कुछ ऐसे मुनि भी विद्यमान हैं जो स्वय दीक्षित होने के कारण, या सघ से पृथक् हो जाने के कारण, किसी भी मुनि या आचार्य का अनुशासन स्वीकार नही करते। ऐसे साधु प्राय एकल विहारी होकर भ्रमण करते हैं।

मुनिसघो मे इस प्रकार के बिखराव का जो प्रतिफल होना चाहिए, वह भी यदा-कदा दृष्टिगत होने लगा है। अनुशासन विहीन स्वतन्त्रता ने कही-कही स्वच्छन्दता का रूप ले लिया है। कई बार कतिपय साधको में मूलगुणो मे दूषण अथवा आचार की शिथिलता भी सुनने मे आती है। दिगम्बर जैन मुनि वर्ग मे इस प्रकार के दोष पनपने न पावे और मूलसघ की कुन्दकुन्दान्वयी उत्कृष्ट छवि, वैसी ही निष्कलंक बनी रहे, ऐसी सावधानी बरतने के विचार से, साधको के लिए कुछ सामान्य अनुशासन आवश्यक समझे जा रहे थे। ऐसे विवेकवान श्रावकों और विचारशील मुनियो की सख्या प्रचुर है जो मुनिसमुदाय के लिए अनुशासनात्मक निर्देशों की आवश्यकता का अनुभव बहुत समय से कर रहे थे। श्रवणबेलगोल मे उपस्थित साधु समुदाय के बीच इस प्रसग पर गहन विचार विमर्श किया गया। समस्त आचार्य सघो और पिच्छीधारी साधको की सम्मिलित बैठक मे इस प्रकरण पर पर्याप्त चर्चा हुई। इस श्रमण संघ की अनेक बैठकें हुई जिनमे इन समस्याओं पर काफी ऊहापोह होती रही। इन बैठको मे गृहस्थ श्रावकों का प्रवेश एकदम निषिद्ध रहा।

कई दिन के विचार-विमर्श के उपरान्त, श्रमण संघ ने एकमत होकर 'दिगम्बर जैन मुनि परिषद' की स्थापना की और अपने मंतव्य की पूर्ति के लिए कुछ प्रस्ताव पारित किये। इन प्रस्तावो को दिनाक 17-2-81 को, श्रमण सम्मेलन के अवसर पर चामुण्डराय मण्डप मे उपस्थित जैन जनता के समक्ष प्रस्तुत करके, साधु और श्रावक दोनो से इन निर्देशो के पालन करने की अपेक्षा की गई। एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी ने श्रमण सघ की अभिस्तावनाएँ समाज के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए बड़ी मार्मिक वाणी मे, वर्तमान स्थितियो में श्रमणसंख्या

की मर्यादा रक्षा के लिए, श्रमण संघ की चिन्ता से समाज को अवगत कराया ।

महोत्सव में उपस्थित साधुओं का समुदाय यद्यपि विशाल था, परन्तु वह देश के पूरे साधु समुदाय का लगभग आधा ही भाग था । अनेक विशाल और मान्य आचार्य-संघ उत्तर भारत में ही विराज रहे थे । श्रवणबेलगोल में भी अनेक ऐसे मुनि तथा त्यागीजन विराजते थे जिनके आचार्य इस अवसर पर वहाँ नही थे । अपने गुरु की सहमति के बिना ये साधक ऐसी किसी नवीन अभिस्तावना पर अपनी स्वीकृति व्यक्त करने मे असमजस अनुभव कर रहे थे । अभिस्तावना के प्रति ऐसे सभी सघों की स्वीकृति प्राप्त कराने का भार, श्रमण परिषद द्वारा श्री नीरज जैन को सौंपा गया । सर सेठ भागचन्दजी सोनी और नीरज जैन के हस्ताक्षरो से वह सर्वसम्मत अभिस्तावना-पत्र प्रकाशित किया गया जो यहाँ अंकित किया जा रहा है ।

श्रवणबेलगोल में दिगम्बर जैन मुनि-परिषद् द्वारा पारित प्रस्ताव

भगवान् गोमटेश्वर बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव के पुण्य अवसर पर समागत श्रमणो, दिगम्बर जैन आचार्यों, मुनियो, आर्यिकाओ एव अन्य त्यागीजनो का सम्मेलन, आचार्यरत्न श्री देशभूषणजी महाराज की अध्यक्षता और आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज तथा एलाचार्य श्री विद्यानन्दजी महाराज के सान्निध्य मे सम्पन्न हुआ । इस सम्मेलन मे 50 आचार्यों एव मुनियो, 25 आर्यिकाओ, 2 ऐलको, 33 क्षुल्लको और 24 क्षुल्लिकाओ ने सक्रिय भाग लिया । इस श्रमण सघ की कई बैठकें हुई । अनेक मुनियो एव त्यागीजनो ने उस विचार-विमर्श मे भाग लेकर अनेक उपयोगी सुझाव दिये । विचार विमर्श के पश्चात् निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किए गये—

प्रस्ताव क्र. 1

यह दिगम्बर जैन मुनि-सम्मेलन निश्चय करता है कि समस्त दिगम्बर जैन त्यागी जनो की एक परिषद् 'दिगम्बर जैन मुनि-परिषद्' के नाम से गठित की जाये, जिसकी एक नियामक समिति होगी । इस समिति के निम्न सदस्य होगे—

1. आचार्यरत्नश्री देशभूषणजी महाराज
2. आचार्यश्री धर्मसागरजी
3. आचार्यश्री विमलसागरजी
4. आचार्यश्री सन्मति सागरजी
5. एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी
6 आचार्यश्री विद्यासागरजी
7. आचार्यश्री सुमतिसागरजी
8. गणिनी ज्ञानमतीजी
9. गणिनी विजयमतीजी
10. गणिनी विशुद्धमतीजी
11. आर्यिका सुपार्श्वमतीजी

12. आर्यिका राजमती जी
13. आर्यिका विमलमतीजी

प्रस्ताव क्र. 2

यह दिगम्बर जैन मुनि-सम्मेलन निश्चय करता है कि कम से कम दो मुनि, दो आर्यिकाएँ, दो क्षुल्लिकाएँ अथवा दो क्षुल्लक या दो समलिंगी पिच्छीधारी, अपने दीक्षागुरु आचार्य से आज्ञा लेकर ही विहार कर सकते हैं। अकेले मुनि, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक या क्षुल्लिका विहार नही कर सकते।

प्रस्ताव क्र. 3

यह दिगम्बर जैन मुनि-सम्मेलन निश्चय करता है कि दीक्षा लेने से पूर्व दीक्षार्थी को निम्नलिखित प्रतिज्ञा-पत्र पढना और बाद मे उसका पालन करना आवश्यक है। दीक्षागुरु आचार्य भी दीक्षा देते समय इस प्रतिज्ञा-पत्र को नव-दीक्षित से पढ़वा कर उसे प्रतिज्ञा-बद्ध करें।

दीक्षा से पूर्व प्रतिज्ञा-पत्र का प्रारूप

मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि—

1. मैं प्रातः स्मरणीय महान आचार्य कुन्दकुन्द एव चारित्र-चक्रवर्ती आचार्य शातिसागरजी महाराज की परम्परा के गौरव को सदा मन, वचन, काय से सुरक्षित रखूंगा। मैं ऐसा कार्य नहीं करूंगा, जिससे इस महान परम्परा का गौरव कम होता हो।
2. मैं आचार्य महाराज के अनुशासन का हृदय से पालन करूंगा।
3. मैं अपने गुरु के आदेश के बिना सघ का त्याग नही करूंगा।
4. धर्म-प्रचार के महान प्रयोजन के लिए गुरु महाराज की अनुमति से सघ से पृथक् विहार करने की स्थिति मे भी, मैं एकल विहार नही करूंगा। मैं कम से कम दो क्षुल्लको या इससे ऊपर के पदाधिकारी त्यागियो के साथ ही विहार करूंगा।
5. मैं सतत स्वाध्याय द्वारा अपने शास्त्र ज्ञान को बढाने का प्रयत्न करता रहूँगा। अत में, मैं श्रमण, श्रावक और श्राविका, चतुर्सघ से निवेदन करता हूँ कि वह मुझे दीक्षा ग्रहण करने की अनुमति प्रदान करे।

प्रस्ताव क्र. 4

यह दिगम्बर जैन मुनि-सम्मेलन निश्चय करता है कि—

(क) जिन्होंने मुनि-दीक्षा लेने के बाद कम से कम बारह वर्ष तक शास्त्रो का अध्ययन किया हो, जिन्हें प्रायश्चितादि शास्त्रों का पर्याप्त ज्ञान हो, तथा जिन्हें शिक्षा-देने की योग्यता हो, ऐसे मुनि ही गुरु की आज्ञा से आचार्य पद ले सकते हैं।

अथवा

(ख) आचार्य स्वेच्छा से अपने किसी सुयोग्य शिष्य को अपना आचार्य पद प्रदान कर सकते हैं।

प्रस्ताव क्र. 5

यह दिगम्बर जैन मुनि-सम्मेलन निश्चय करता है कि वर्षायोग मे मुनियो एवं त्यागी जनों के अध्यापन एवं स्वाध्याय हेतु सुयोग्य विद्वानों की व्यवस्था की जाये।

प्रस्ताव क्र. 6

यह दिगम्बर जैन मुनि-सम्मेलन निश्चय करता है कि वृद्ध (स्थविर) साधुओं तथा अध्ययन करने वाले मुनियो की साधना एव अध्ययन के लिए निम्नलिखित स्थानो पर समुचित व्यवस्था रहेगी—

1. श्रवणबेलगोल
2. सोनागिरि
3. कोथली
4. जिनसेन मठ, कोल्हापुर

प्रस्ताव क्र. 7

यह दिगम्बर जैन मुनि-सम्मेलन निश्चय करता है कि पिण्डशुद्धि वाले दिगम्बर जैनधर्मानुयायी, मुनिजनो एव त्यागियो को आहार दे सकते और दीक्षा ले सकते हैं।

श्रवणबेलगोल
17-2-81

श्रमणसेवक—
भागचन्द सोनी
नीरज जैन

भट्टारक परम्परा

हमारे पूर्वज आचार्य और मुनि जैन शासन की रक्षा और जिनवाणी प्रसार के लिए सदैव चिन्ताशील रहे हैं। समन्तभद्राचार्य और अकलकदेव का जीवन तथा निकलक का बलिदान इस भावना के ज्वलन्त उदाहरण हैं। धीरे-धीरे धर्म प्रचार मे राजनीति का प्रवेश होने के फलस्वरूप धर्म राज्याश्रित होने लगे। सैकड़ो वर्षों तक राजनीतिक अस्थिरता का भी वातावरण रहा। जनसामान्य के मन में धर्म के माध्यम से लौकिक लाभ की आकांक्षा का उदय होता गया। अनेक ऐसे कारण सामने आये कि मुनिपद का निर्वाह, और संस्कृति का संरक्षण एक साथ कर पाना कठिन हो गया। इन परिस्थितियो के कारण दिगम्बर जैन संस्कृति के इतिहास में वीतरागी आचार्यों, मुनिराजो के बाद भट्टारकों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान दिखाई देता है।

संक्रान्तिकाल में, जिन साधको के मन मे सस्कृति संरक्षण का उत्कट राग था, ऐसे कुछ पिच्छीधारियों ने अपने व्रतो में दूषण स्वीकार करते हुए भी, उस संरक्षण का भार अपने कन्धों

पर उठाया। मूलत: दिगम्बर दीक्षाग्रहण करके ये साधक मन्दिरों, तीर्थों और शास्त्र-भण्डारों की रक्षा के लिए नाना प्रकार के उपाय और उद्यम करने को मजबूर हुए। जिन-शासन की रक्षा के पवित्र अभिप्राय की सिद्धि के लिए यन्त्र-मन्त्र, प्रभाव और चमत्कार, शक्ति और नीति सबका उपयोग उन्हें करना पड़ा। उनके साथ परिग्रह की देखभाल और समुदाय का सम्पर्क जुटता चला गया। एक स्थान पर लम्बे समय तक रहना, और वस्त्र धारण करके विचरण करना, उनकी बाध्यता हो गई। इस प्रकार धीरे-धीरे गृहस्थ और साधु के बीच में इस भट्टारक संस्था का अस्तित्व प्रकट हुआ।

यदि हम इतिहास के पन्ने पलटकर देखें तो हम पायेंगे कि भट्टारको ने अपने कर्तव्यपालन की दिशा मे जैन शासन की महत्त्वपूर्ण सेवाएँ की हैं। आज तो परिस्थितियाँ बहुत सहज हैं और हम एक सुविचारित सविधान की छत्रछाया मे जी रहे हैं। परन्तु सैकड़ो वर्षों तक हमारे देश मे सविधान के नाम पर 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' का बोलबाला रहा है। धार्मिक विद्वेषो से प्रेरित परस्पर कटुता और शत्रुता अपनो चरम सीमा पर रही है। अन्य धर्मानुयायियों को अपमानित करके और पीड़ित करके अपने धर्म की शरण मे लाने, साधुओ की तपस्या मे बाधा पहुँचाने, उन पर तरह-तरह के उपसर्ग करने, यहाँ तक कि उन्हें घानी में पेरने, या खौलते तेल की कडाही में झोकने आदि की घटनाएँ सदा सर्वदा घटने लगी थीं। मन्दिरो से आराध्य प्रतिमाओ को निकालकर मिट्टी की पुतलियो की तरह तोड़-फोड़कर नष्ट करना, मन्दिरो में अन्य देवी-देवताओ को स्थापित कर देना और ज्ञान-विज्ञान के अक्षय-कोष, बडे-बडे शास्त्रभण्डारों को आग लगाकर भस्म कर देना, सैकड़ो वर्ष तक गाँव-गाँव मे घटने वाली सामान्य सी घटनाएँ हो गई थीं।

अस्थिरता के उस युग में गृहस्थ अपने परिकर और परिग्रह की रक्षा के लिए चिन्तित था। मन्दिरों-मूर्तियो की रक्षा की बात तो दूर, अपने आपको श्रमण या जैन कहना भी अनेक विपत्तियो को न्योतने जसा था। विरोधी-हिंसा का त्यागी साधु समुदाय निरीह और असहाय था। छल-बल वह कर नही सकता था और ईंट का जवाब फूल की पाँखुरी से देना भी उसकी आचार-सहिता को खण्डित करता था। 'शासन व्यवस्था' उन दिनो केवल शब्दकोश मे प्राप्त होती थी। ऐसे विषमकाल में भट्टारको ने जैन संस्कृति के सरक्षण के लिए और धर्मावलम्बियो को कर्तव्य बोध कराकर मार्गदर्शन देने के लिए, वे सारे प्रयत्न किये जो उन परिस्थितियो मे करना आवश्यक थे। अकेले दक्षिण मे नही, धीरे धीरे पूरे भारतवर्ष मे भट्टारक पीठ स्थापित हो गये। भट्टारकों ने समाज को सगठित किया। उन्हें अनुशासन मे रखने के लिए स्वय उनका नायकत्व ग्रहण किया। जिनेन्द्र और जिनवाणी की रक्षा के लिए बहुत सतर्कता पूर्वक वे संलग्न रहे। हमे आज यह स्वीकार करने मे तनिक भी सकोच नही होना चाहिए कि धार्मिक कटुता का अराजकता से भरा हुआ सैकडों वर्षों का कष्टकाल पार करके, जिनालयो, जिनेन्द्र प्रतिमाओं और जैन ग्रथो की जो धरोहर सुरक्षित रूप से हमारी पीढ़ी तक पहुँच पाई है, उसे इस प्रकार बचाकर ले आने मे भट्टारक परम्परा का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

उत्तर मध्यकाल में लगभग पूरे देश में भट्टारक पीठ स्थापित हो चुके थे। शिष्य परम्परा से उन पर भट्टारक विराजमान होते जाते थे परन्तु उनका नाम अपने गुरु के नाम पर ही

होता था। प्रान्तवार मुख्य भट्टारकपीठों की तालिका इस प्रकार है—

प्रान्त	भट्टारक पीठ
उत्तर भारत	देहली, हिसार और मथुरा।
राजस्थान	जयपुर, नागौर, अजमेर, चित्तौड़, परतावगढ़ डूंगरपुर, नरसिंहपुरा, केसरियाजी और महावीरजी।
मध्य प्रदेश	ग्वालियर, सोनागिरि और अटेर (मालवा)।
गुजरात	ईडर, सागवाडा, सूरत, भानपुरा, सिजोतरा, तलोल और जेरहट।
महाराष्ट्र	कारजा, नागपुर, लातूर, नादेड़, कोल्हापुर और नांदनी।
कर्नाटक	श्रवणबेलगोल, कनकगिरि, श्वेतपुर (बिलीगि), सुधापुर (स्वादी), संगीतपुर (हाडोल्ली), वेणुपुर (बेलगाम), मूडबिद्री, कारकल, हुमचा, मलखेड़, विजयनगर, नरसिंहराजपुरा, सिंहनगद्दे।
तामिलनाडु	जिनकांची।
आन्ध्र	पेनुगोण्डे।

इनमे से अनेक भट्टारकपीठ धीरे धीरे समाप्त हो गये। गद्दी भले ही बनी हो परन्तु उन पर अब कोई भट्टारक नहीं हैं। वर्तमान मे केवल ग्यारह पीठ ऐसे हैं जिन पर दीर्घ अविच्छिन्न शिष्य परम्परा से भट्टारको का क्रम अद्यावधि विद्यमान है। वे ग्यारह पीठ इस प्रकार हैं—

भट्टारकपीठ	पारम्परिक नाम
1. परतावगढ (राजस्थान)	यशःकीर्ति
2. लातूर (महाराष्ट्र)	विशालकीर्ति
3. कोल्हापुर ,,	लक्ष्मीसेन
4. नान्दनी ,,	जिनसेन
5. श्रवणबेलगोल (कर्नाटक)	चारुकीर्ति
6. मूडबिद्री ,,	चारुकीर्ति
7. कारकल ,,	ललितकीर्ति
8. हुम्मच ,,	देवेन्द्रकीर्ति
9. स्वादी ,,	भट्टाकलंक
10. नरसिंहराजपुरा ,,	लक्ष्मीसेन
11. जिनकाची (तमिलनाडु)	लक्ष्मीसेन

इन ग्यारह पीठो मे से परतावगढ पीठ पर वर्तमान में कोई भट्टारक नही है। शेष दस में से नौ भट्टारको ने महामस्तकाभिषेक के अवसर पर श्रवणबेलगोल पधारकर गोमटस्वामी की वंदना का अवसर प्राप्त किया। इस प्रकार मेले मे देश के प्रायः सभी भट्टारकों का सम्मिलन भी एक दुर्लभ संयोग कहा जा सकता है। इतिहास में शायद ही कभी इतने भट्टारको ने एक साथ किसी मठ का आतिथ्य ग्रहण किया हो।

सिद्धान्त-दर्शन

श्रवणबेलगोल के मठ मे अनमोल रत्न प्रतिमाओं का जो संग्रह है वह प्रायः सभी दिगम्बर जैन यात्रियो को, अनुरोध करने पर, दर्शनार्थ सुलभ कराया जाता है। इसी दर्शन को वहाँ 'सिद्धान्त-दर्शन' कहा जाता है। यह नाम अवश्य हमें यह बताता है कि जैन आगम की महान निधि 'षट्खण्डागम-धवल-सिद्धान्त' की मूल ताड़पत्रीय प्रतियाँ कभी इस मठ में सुरक्षित थीं। उन प्रतियो को रत्नों के भण्डार की तरह बहुमूल्य मानकर उनका सरक्षण किया जाता था और नियंत्रित विधि-विधान के साथ यात्रियों को इन सिद्धान्त ग्रन्थों का दर्शन कराया जाता था। यही वास्तविक 'सिद्धान्त-दर्शन' था। संभवतः धीरे धीरे कुछ दुर्लभ रत्न-प्रतिमाएँ भी, सुरक्षा की दृष्टि से उसी सरक्षण में रखी जाने लगी। यह 'सिद्धान्त-दर्शन' इस तीर्थ की वन्दना का अनिवार्य अंग माना जाता था। यह भी कहा जाता है कि अनेक तीर्थंकर प्रतिमाओ का दर्शन कराते हुए अन्त मे सिद्ध परमेष्ठी का दर्शन इन रत्न प्रतिमाओ में होता था इसलिए भी इसे सिद्धान्त-दर्शन कहने की प्रथा पड गई।

ऐसा लगता है कि कालान्तर मे, जब धवल-सिद्धान्त की प्रतियाँ यहाँ से मूडबिद्री के मठ मे स्थानातरित कर दी गईं, तब भी रत्न-प्रतिमाओ के दर्शनो के लिए वह सरक्षण-मूलक व्यवस्था चलती रही और उसका वही 'सिद्धान्त-दर्शन' नाम, रूढ़ होकर उसके साथ जुडा रहा। आज इस सग्रह में किसी दुर्लभ ग्रन्थ की प्रतियाँ नही हैं परन्तु भाँति-भाँति के दुर्लभ रत्नो से निर्मित तीर्थंकर मूर्तियों के लिए श्रवणबेलगोल का सिद्धान्त-दर्शन देश भर मे अद्वितीय माना जाता है।

मठ-मन्दिर मे एक सुरक्षित प्रकोष्ठ बनाकर उसमे सिद्धान्त दर्शन की स्थायी व्यवस्था की गई है। अनेक खानो वाली जिस श्वेत मजूषा मे ये प्रतिमाएँ विराजमान की गई है उसमे हर मूर्ति को उचित कोण से प्रकाशित करने वाली बहुत वैज्ञानिक प्रकाश व्यवस्था की गई है। दर्शनार्थियो को प्रकोष्ठ मे बिठाकर, सारी बत्तियाँ बुझा दी जाती हैं फिर दर्शन कराने वाला मंजूषा के एक एक खाने की बत्ती जलाता हुआ क्रमश. मूर्तियो का दर्शन कराता जाता है और उनकी विशेषताएँ समझाता चलता है। एक सुखद आश्चर्य से भरा हुआ दर्शक मन्त्र-मुग्ध सा बैठा हुआ उन अलौकिक छवियो के साक्षात्कार से अपने ही मन मे उठती भक्ति और भावुकता की हिलोरो मे डूबने लगता है। स्वामीजी के सहायक श्री विश्वसैनजी मन को छू लेने वाले शब्दों में इन मूर्तियों का वर्णन करते हैं, और जिन्हें स्वामीजी स्वतः समझाकर सिद्धान्त-दर्शन करा दें, उनके लिए तो वह प्रसग अविस्मरणीय ही हो जाता है।

इस 'नौ-रतन प्रतिमा संग्रह' मे प्रायः सभी रत्नो से निर्मित कलाकृतियाँ हैं। स्फटिक, मूँगा और मोती की बनी मूर्तियाँ हैं। हीरा, पन्ना और पुखराज मे गढ़े गए तीर्थंकर हैं। गोमेध और नीलम के जिनबिम्ब हैं। माणिक के महावीर हैं और चन्द्रकान्त मणि के बाहुबली हैं। पद्मरागमणि के पद्मप्रभु हैं जिन पर दुग्ध का अभिषेक करने से तत्काल दही बन जाता है। गरुड़मणि के पार्श्वनाथ हैं जिनके न्हवन जल से विषधर का विष उसी समय उतर जाता है।

जैड और कच्चे पन्ना की प्रभावक प्रतिमाएँ हैं। सोने, चाँदी और चन्दन के बाहुबली और मुद्रिका में मढ़े हुए आराध्य, क्या नहीं है सिद्धान्त-दर्शन में ? वैडूर्य की मणिमाला है, गज मुक्ताओं की जोडी है, जिन-मुद्रांकित अनेक मुद्रिकाएँ हैं और सोने की मूठ वाली मयूर पिच्छी तथा स्वर्ण-मण्डित खड़ाऊँ जैसे अनेक बहुमूल्य उपकरण भी उसमें संकलित है। इस प्रकार दुर्लभ कृतियों का यह एक समृद्ध संग्रहालय ही है।

सिद्धान्त-दर्शन में भाँति भाँति के मणियों, रत्न-पाषाणों आदि से निर्मित ये जो दुर्लभ, अनमोल और ऐतिहासिक प्रतिमाएँ संकलित हैं, वे सब पूर्व पीठाधीश स्वामियो को समय समय पर भेंट में प्राप्त होती रही हैं। कहा जाता है कि इस सग्रह मे अनेक ऐसी प्रतिमाएँ हैं जिन्हे बड़े-बड़े सार्थवाह व्यापारी देशातर की यात्राओ मे अपने साथ रखते थे और समुद्री यात्राओ की निर्विघ्न समाप्ति पर उन मूर्तियो को मठ मे भेंट कर जाते थे। यह उन भट्टारको की निष्ठा और उदारता थी कि उन्होने इस बहुमूल्य सामग्री को समाज की धरोहर माना। समय समय पर अनेक भय, अनेक प्रलोभन और विपत्ति की अनेक आशकाएँ उनके सामने आई होगी, परन्तु उन सबका सामना करते हुए भी, सस्कृति के उन सरक्षकी ने इस धरोहर पर आँच नही आने दी और इन्हे गोमटेश्वर के भक्तो के दर्शनार्थ उपलब्ध रखा। उन्होने इनकी सुरक्षा के सभी आवश्यक उपाय किए और जब क्षेत्र या मठ गहरे आर्थिक सकटो से जूझता रहा तब भी उन्होंने इन मूल्यवान निधियो को हाथ नही लगाया। हर हालत मे उसकी रक्षा की। यही ऐसे कुछ जाज्ज्वल्यमान तथ्य है जिन पर दृष्टि जाते ही भट्टारक स्वामियो के निष्ठापूर्ण ऐतिहासिक अवदान के प्रति हमारा मन कृतज्ञता से भर उठता है।

मेले में सिद्धान्त-दर्शन

महोत्सव के अवसर पर श्रवणबेलगोल मे अपेक्षित लाखो यात्रियो के लिए 'सिद्धान्त-दर्शन' की व्यस्था करनी व्यवहारतः एक कठिन काम था। उनकी सुरक्षा की समस्या सबसे कठिन थी। उसे देखते हुए यह प्रस्ताव भी सामने आया कि अधिक भीड़ के काल मे सिद्धान्त-दर्शन बन्द रखा जाय, परन्तु इस ऐतिहासिक अवसर पर एक भी यात्री या पर्यटक इन दुर्लभ नव-रत्न-प्रतिमाओं के दर्शनो से वंचित रहे, यह बात स्वामीजी को या महोत्सव समिति को, किसी को भी स्वीकार्य नहीं थी। तब मठ-मन्दिर के आँगन मे, प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनो प्रकार की, कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत, सिद्धान्त दर्शन की व्यवस्था की गई।

दर्शनीय निधियो की वह दर्शन-मंजूषा, प्रकोष्ठ से बाहर लाकर मठ-मदिर के आँगन के दाहिने कोने पर बरामदे मे रखी गई। सामने लोहे की जाली का एक फाटक लगाया गया। जब पर्याप्त संख्या मे दर्शक आँगन मे एकत्र हो जाते थे तब वही खड़े होकर लगभग हर पन्द्रह मिनट मे पूरे विवरण के साथ यह सिद्धान्त-दर्शन कराया जाता था। स्वेच्छा से लोग गोलक में अपना योगदान अर्पित करते जाते थे। कोई शुल्क या अनिवार्य निछावर उनसे नही ली गई। मूर्तियों का विवरण सुनाते हुए दर्शन कराने के लिए स्वामीजी ने कई लोगो को प्रशिक्षण दिया था अतः सुबह से लगाकर दर्शनार्थियो की भीड़ के अनुसार देर रात तक सिद्धान्त-दर्शन का क्रम चलता रहता था।

सिद्धान्त-दर्शन की सुरक्षा के लिए दोहरी व्यवस्था की गई थी। मजूषा के पास तक

किसी को भी आने नहीं दिया जाता था। श्री महा वीरजी क्षेत्र से सेवार्थ आये हुए दो सतर्क दरबान चौबीसों घण्टे चौकसी करते थे। स्वामीजी ने बम्बई के श्री एस० वी० शाह और उनके पुत्रों को सुरक्षा की व्यवस्था सौंप दी थी। उन्हीं के नियंत्रण मे दर्शनार्थियो का आवागमन और सिद्धान्त-दर्शन कराया जाता था। व्यवस्था के लिए डॉ० धनंजय गुडे के दक्ष और प्रशिक्षित स्वयसेवक सदैव ड्यूटी पर रहते थे। उधर पुलिस ने सुरक्षा के लिए अपना अलग चक्रव्यूह बना रखा था। इसमें सशस्त्र जवानो के अतिरिक्त खुफिया पुलिस की भी सहायता ली गई थी। इस प्रकार बडी सुनियोजित व्यवस्था के अंतर्गत, प्राय: सभी दर्शनार्थियो को सिद्धान्त-दर्शन का अवसर उपलब्ध कराया गया। वास्तव में मेले के अवसर पर रत्न-प्रतिमाओं का दर्शन करना, सामान्य दिनों की अपेक्षा अधिक आसान रहा।

सिद्धान्त-दर्शन में नवीन सामग्री

महोत्सव के पुनीत अवसर की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए कुछ श्रद्धालु भक्तों ने स्वामीजी को अनेक बहुमूल्य और कलात्मक उपहार भेंट किये थे। स्वामीजी ने उन सबको सिद्धान्त-दर्शन में सम्मिलित करके इतिहास की निधि बना दिया।

बम्बई के श्री शंकरलालजी कासलीवाल इस मस्तकाभिषेक मे सोने के कलश से भगवान् का अभिषेक करना चाहते थे। इसके लिए उन्होने दो सौ पैंतीस ग्राम भार वाला, सुन्दर स्वर्ण-कलश बनवाकर रखा था। दुर्भाग्य से महोत्सव के कुछ दिन पूर्व कासलीवालजी का देहावसान हो गया। उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए उनके पुत्र श्री अभयकुमार एवं श्री शम्भूकुमार कासलीवाल ने 15 मार्च को अपने परिवार के साथ गोमटेश्वर का पचामृत अभिषेक किया। उस आयोजन मे उन्होने दुग्धाभिषेक उसी स्वर्ण कलश से किया और स्वर्गीय कासलीवालजी की स्मृति मे वह कलश भट्टारक स्वामीजी को भेंट कर दिया।

कोल्हापुर के भट्टारक लक्ष्मीसेन स्वामीजी अभिषेक करने के लिए चाँदी का कलश लाये थे। अभिषेक उपरान्त उन्होने भी वह कलश मठ को भेंट कर दिया।

21 फरवरी को प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी गोमटस्वामी के चरणो में चढ़ाने के लिए जो चाँदी जडा हुआ नारियल स्वामीजी को दे गई थी, पूजन के उपरान्त उसे भी मठ में सुरक्षित रखा गया।

दिल्ली के लाला प्रकाशचन्द शीलचन्द जौहरी ने 10 ग्राम सोने की एक कलात्मक मुद्रिका का दर्शनीय उपहार स्वामीजी को भेंट किया। इस अंगूठी मे मीना के रंगों से गोमटस्वामी की आकृति उकेरी गई है और उसके चारो ओर हीरो का जड़ाव है। हासन की एक श्राविका श्रीमती शारदम्बा से बाहुबली स्वामी की छोटी-सी स्वर्ण निर्मित प्रतिमा पाकर स्वामीजी को सर्वाधिक प्रसन्नता हुई। अपने पूर्व भट्टारकों की परम्परा का निर्वाह करते हुए, भट्टारक स्वामीजी ने यह सारी बहुमूल्य सामग्री यात्रियो के अवलोकन के लिए सिद्धान्त-दर्शन में रत्न-प्रतिमाओ के साथ रखवा दी है। इस प्रकार यह ऐतिहासिक भेंट इतिहास का ही प्रमाण बनकर इस मठ में दीर्घकाल तक रहेगी।

दिल्ली के श्री विशालचन्द जैन मखमल का एक सुन्दर चन्दोवा लाये थे। इस पर सुनहरी जरी का अच्छा काम था। यह चन्दोवा मठ मन्दिर में रखा गया।

भरतेश प्रदर्शनी

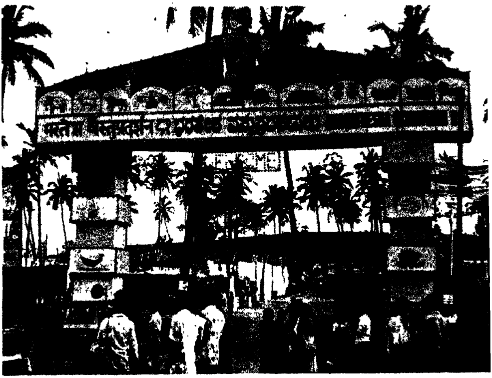
मुख्य मण्डप से लगभग एक किलोमीटर, चन्नराय पाटन रोड पर एक बड़े मैदान में 'भरतेश-प्रदर्शनी' लगाई गई थी। प्रदर्शनी के नाम पर एक सम्पूर्ण बाजार वहाँ बस गया था, जिसमें दर्शनीय मण्डप तो थे ही, भाँति-भाँति की वस्तुएँ बेचने वाली सैकड़ों दुकानें भी दूर-दूर से आई थी। दिनांक 9 फरवरी को प्रातः जब मुख्यमन्त्री श्री गुण्डूराव ने चामुण्डराय मण्डप में महोत्सव का उद्घाटन किया, उसके उपरान्त उसी दिन श्रीमती वरलक्ष्मी गुण्डूराव द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन करा लिया गया था, परन्तु मण्डपो की सज्जा और बिक्री की चहल-पहल के साथ यह प्रदर्शनी पन्द्रह फरवरी के बाद ही चालू हो पाई।

उद्घाटन के लिए जब श्रीमती गुण्डूराव को वहाँ लाया गया, तब श्री गुण्डूराव और केन्द्रीय संचार मन्त्री श्री सी०एम० स्टीफन उनके साथ आये। प्रदर्शनी के द्वार पर तीनो अतिथियों का स्वागत किया गया। श्रीमती गुण्डूराव ने प्रवेश द्वार का फीता काटकर प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। श्रीमती नवरत्ना इन्दुकुमार ने अनेक सुन्दर झाँकियो में, भगवान् बाहुबली की जीवन घटनाओ को गुडियों के माध्यम से प्रदर्शित किया था। उन्होने अपने मण्डप के द्वार पर श्रीमती लक्ष्मी का अभिवादन करते हुए उन्हें अपनी कलाकृतियो का परिचय कराया। श्रीमती नव-रत्ना की कला को अतिथियो और दर्शकों की भारी सराहना मिली।

प्रदर्शनी में कर्नाटक शासन के सोलह विभागो ने अपने-अपने मडप सजाये थे। इनके माध्यम से शासन के उद्योगो की प्रगति का दिग्दर्शन तो होता ही था, अनेक वस्तुओ का अच्छी मात्रा में विक्रय भी हुआ।

विश्वेश्वरैया आयरन एण्ड स्टील मण्डप मे खान से उपभोक्ता के हाथ तक लौह-अयस्क की यात्रा दिखाई गई थी। इडियन टेलीफोन इण्डस्ट्रीज़ के स्टाल मे आधुनिकतम संचार साधनो की प्रक्रिया प्रत्यक्ष देखने को मिलती थी। खादी ग्रामोद्योग, होजियरी तथा रेशम के विशेष उत्पादनो के प्रदर्शन और प्रचार के लिए तीन अलग-अलग मण्डप थे। इसी प्रकार वन विभाग, उपवन विभाग (हार्टीकल्चर), और कृषि विभाग ने अपने मण्डपों मे अपने-अपने विभाग के विकास और विस्तार की छवि प्रस्तुत की थी। जेल विभाग के मण्डप मे हस्त उद्योग की अनेक वस्तुएँ बेची जा रही थी। मशीन से ठण्डा किया गया स्वादिष्ट दूध, कर्नाटक दुग्ध विकास निगम के मण्डप को, यात्रियों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र बना रहा था। इन विभागो के अतिरिक्त शिक्षा, सस्कृति, स्वास्थ्य, पर्यटन और सूचना तथा प्रचार आदि विभागो ने प्रदर्शनी में मण्डप लगाकर, भिन्न-भिन्न क्षेत्रो में कर्नाटक की प्रगति को रेखांकित किया था।

साहित्य, विशेषकर जैन साहित्य से सम्बन्धित बहुत जानकारी इस प्रदर्शनी में मिलती थी। भारतीय ज्ञानपीठ के मण्डप में प्रायः सभी विषयों का जैन साहित्य, प्रदर्शन और बिक्री के लिए उपलब्ध था। एक साथ प्रदर्शित जैन शास्त्रों को देखकर 'मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला' की



184 भरतेश प्रदर्शनी-प्रवेश द्वार

185
दीप प्रज्जवलित कर भरतेश प्रदर्शनी का उद्घाटन श्रीमती वरलक्ष्मी गुण्डुराव द्वारा





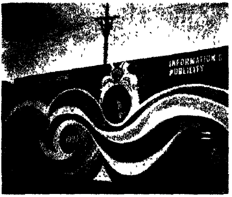
186 धार्मिक प्रदर्शनी मे बाहुबली की जीवन-झांकी

187 समवसरण की रचना



188 भारत के सर्वोच्च साहित्य-संस्थान भारतीय ज्ञानपीठ का स्टाल





189 कर्नाटक सूचना एवं प्रचार विभाग



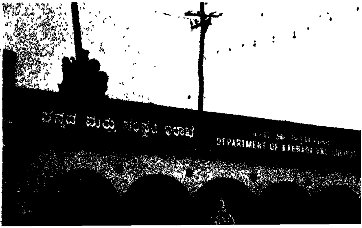
190 'गोम्मट वाणी' जैन मठ का मुख-पत्र

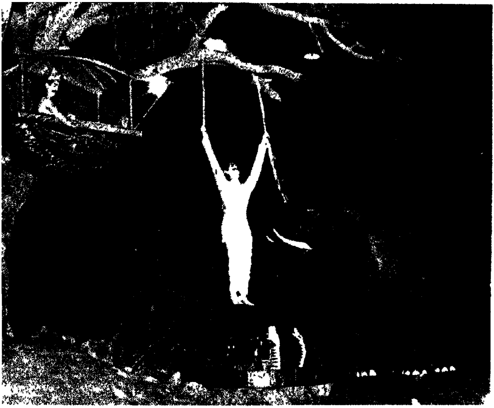


191 इण्डियन टेलीफोन इन्डस्ट्रीज का मण्डप

192

कन्नड़ और संस्कृति विभाग की मनोरम झांकी





193 खुले मैदान मे सवारा गया एक प्राकृतिक प्रदर्शन 'ससार वृक्ष'

194 गोमटेश्वर के दर्शनार्थ जाते हुए कर्नाटक के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री देवराज अर्स



उपलब्धि का बोध होता था। इस महोत्सव को लेकर प्रासंगिक प्रकाशन भी ज्ञानपीठ ने अनेक किये थे। समग्र जैन साहित्य का एक दर्शनीय संकलन 'जैन विद्या-81' के नाम से स्थापित जैन साहित्य प्रदर्शनी मे देखने को मिलता था। टाडगढ़, जिला अजमेर, राजस्थान की संस्था 'साहित्य सस्थान' ने यह मण्डप लगाया था। संस्थान ने अपने मण्डप को पुस्तकों का ही आकार दे रखा था। बाहुबली के विशाल चित्र से सजा हुआ उनका प्रवेश द्वार प्रायः सभी जैन और जैनेतर यात्रियों और पर्यटको को आकर्षित करता था।

सहस्राब्दि मस्तकाभिषेक का उल्लेख करने वाले, अथवा गोमटस्वामी की छवि को अंकित करने वाले चित्र, कैलेण्डर प्लेट, मृण्मूर्तियाँ, धातु के सिक्के और पदक, चाबी के छल्ले, कैमरा-चित्र, पोस्टकार्ड्स, स्टिकर्स, बैग और पर्स, डायरी, कलम और तरह-तरह के 'शो-पीस' इस प्रदर्शनी में सर्वत्र बिक रहे थे। वे छोटे-बडे उपहार कई सौ प्रकार के रहे होंगे। उनमें से अनेक सचमुच कलात्मक और संकलन करने लायक थे। कई उपहार बड़ी सूझ-बूझ के साथ तैयार किये गये थे। लोगों ने उन्हे ले जाकर अनेक वर्षों के लिए इस महोत्सव की स्मृतियाँ अपने घरो में समेट ली।

अनेक प्रकार के जल-पान के उपाहारगृह, वस्त्र, अलंकार और दैनन्दिन उपयोग की वस्तुएं, फल, मेवा और मिष्ठान्न की दुकानें, तरह-तरह के खेल और मनोरंजन के स्टाल्स, जैसे सभी बडी प्रदर्शनियो में होते हैं, भरतेश प्रदर्शनी मे भी उपलब्ध रहे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों और मनोरंजन के लिए एक पृथक् मण्डप बनाया गया था। वैसे तो प्रदर्शनी दिन भर खुली रहती थी, परन्तु शाम को चार बजे से देर रात तक उसमे विशेष भीड रहती थी।

'भरतेश-प्रदर्शनी' की रिपोर्ट के अनुसार कमेटी ने प्रदर्शनी पर कुछ अधिक ही रुपया खर्च किया। भूमि को समतल कराने में तेरह हजार, स्टाफ के वेतन में बारह हजार, तथा स्टाल तैयार करवाने में एक लाख सत्तर हजार का व्यय हुआ। धार्मिक प्रदर्शनियो के लिए पैंतीस हजार की राशि अनुदान मे दी गई। चालीस हजार रुपये विद्युत सज्जा मे लगे। प्रदर्शनी में आयोजित सास्कृतिक कार्यक्रमो के लिए दस हजार, तथा भीड़ को नियन्त्रित करने के लिए अडतालीस हजार रुपये का पृथक् व्यय हुआ। विज्ञापन में ग्यारह हजार, बिजली खर्च में साठ हजार आदि सारे खर्च मिलाकर इस मद मे कुल चार लाख, चालीस हजार का व्यय हुआ। खर्च को देखते हुए प्रदर्शनी से आय बहुत कम हुई। प्रवेश शुल्क से केवल छियालीस हजार रुपया प्राप्त हो सका। स्टाल भाडे से तीन लाख अठारह हजार की प्राप्तियाँ हुई। इस प्रकार कुल मिलाकर यह प्रदर्शनी एक घाटे का सौदा साबित हुई। प्रवेश शुल्क से यह भी प्रमाणित है कि इतने बड़े मेले मे केवल एक लाख व्यक्तियों को ही यह प्रदर्शनी अपनी ओर खीच पाई, जबकि अनुमानित संभावना के अनुसार दस लाख व्यक्तियों को प्रदर्शनी देखना चाहिए थी। इसका कारण शायद यह रहा कि अधिकांश यात्रियों को प्रदर्शनी कुछ दूर पडती थी। वाहन कोई उपलब्ध ही थे और यात्रा-श्रम से थके हुए लोग, विशेषकर महिलाओ और बच्चों के साथ पैदल चलकर, केवल तफरीह के लिए उतनी दूर जाने की स्फूर्ति अपने में अनुभव नहीं करते थे, या जाने के लिए तैयार नहीं होते थे।

अभिषेकों की शृखला और अन्तिम अभिषेक

बाईस फरवरी से अट्ठाइस फरवरी तक, सात दिन लगातार वैसी ही धूमधाम से गोमटस्वामी का पचामृत अभिषेक होता रहा। इन दिनो चार-पाँच हजार लोगो की उपस्थिति प्रतिदिन विध्यगिरि पर होती रही। न्यूनतम दस रुपये की राशि देकर भी लोग अभिषेक कलश प्राप्त कर लेते थे। प्रतिदिन जल के कलशो से अभिषेक हो जाने पर निर्धारित योजना के अनुसार पचामृत अभिषेक किया जाता था। इन सात दिनो के बाद साढे तीन माह तक, एक मार्च से पन्द्रह जून तक, प्रति रविवार को पंचामृत अभिषेको की सयोजना होती रही। किसी विशेष अवसर के निमित्त से बीच-बीच मे कुछ अन्य भी अभिषेक हुए। इस प्रकार इस महोत्सव में कुल 27 पचामृत अभिषेक हुए। कमेटी ने अभिषेक कराने वालों से प्रति अभिषेक पच्चीस हजार के योगदान की अपेक्षा की थी। चूंकि हर रविवार को अभिषेक घोषित कर दिया गया था, और इसी कारण रविवार को बहुत यात्री आते थे, अतः जिन रविवारों के लिए कोई माग प्राप्त नही हुई उन दिनो में कमेटी ने अपनी ओर से आयोजन किया। उस दिन वहीं, तत्काल बोली लगाकर, कलशो का वितरण कर दिया जाता था। कभी-कभी इस विधि से थोडी ही राशि प्राप्त हुई, पर कभी-कभी पच्चीस हजार से अधिक राशि भी आ गयी। इस प्रकार एक रविवार की आर्थिक हानि दूसरे रविवार को पूरी होती गयी और कमेटी को इन आयोजनो मे कुछ लाभ ही रहा, हानि नही हुई।

प्रथम दिवस 22-2-81 से अंतिम दिवस 16-6-81 तक किस दिन, किसकी ओर से पंचामृत अभिषेक कराया गया, उसकी तालिका इस प्रकार है—

क्रमांक	दिनांक	जिनकी ओर से अभिषेक कराया गया
1.	22-2-81	महोत्सव समिति द्वारा आयोजित सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक।
2.	23-2-81	जनमंगल महाकलश अभिषेक।
3.	24-2-81	एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी द्वारा।
4.	25-2-81	आचार्य देशभूषणजी महाराज के उपदेश से।
5.	26-2-81	स्वस्तिश्री लक्ष्मीसेन भट्टारक स्वामी, कोल्हापुर।
6.	27-2-81	बाहुबली यात्रा सघ, जयपुर।
7.	28-2-81	श्री रमेशचन्द्र जैन, पी० एस० मोटर्स, दिल्ली।
8.	8-3-81	कर्नाटक पूजा। (आज दो बार अभिषेक हुआ)
9.	9-3-81	मेसर्स एन० पी० धरनप्पा एव परिवार, मैसूर।
10.	15-3-81	श्री अभयकुमारजी शम्भूकुमारजी कासलीवाल, बम्बई।
11.	22-3-81	एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी।
12.	29-3-81	जैन समाज, हासन।

13. 5-4-81 स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक स्वामीजी, नान्दनी ।
14. 12-4-81 एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी ।
15. 16-4-81 श्री जयन्ना एवं परिवार, चल्लकेरे ।
16. 19-4-81 कर्नाटक पूजा ।
17. 20-4-81 एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी (वार्षिक रथोत्सव),
18. 26-4-81 एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी ।
19. 3-5-81 एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी ।
20. 0-5-81 जैन समाज, केरल ।
21. 17-5-81 जैन समाज, बगलोर ।
22. 24-5-81 एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी ।
23. 31-5-81 एस० डी० जे० एम० आइ० मैनेजिंग कमेटी ।
24. 7-6-81 स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, मूडबिद्री ।
25. 14-6-81 एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी ।
26. 15-6-81 अर्चकों-पुजारियों की ओर से ।
27. 16-6-81 अन्तिम हरिद्रा का अभिषेक ।

बाईस फरवरी को सहस्राब्दि मस्तकाभिषेक के लिए कलशो के अग्रिम आरक्षण से 851 कलशो का आबटन करके रु० 27,37,500.00 प्राप्त किया जा चुका था । उसी दिन पचामृत अभिषेक की बोलियो से रु० 1,56,811 00 की राशि एकत्र हुई थी । दूसरे दिन 23 फरवरी को 'जनमगल महाकलश' का दिन था । महाकलश के देशव्यापी प्रवर्तन से इस दिन के अभिषेक के लिए रु० 23,72, 939.00 की राशि का सकलन भी अग्रिम हो चुका था । महाकलश से एकत्र राशि मे से तीन लाख रुपये महोत्सव समिति को प्राप्त हुए, लगभग चार लाख कलश यात्रा का खर्च रहा और शेष सोलह लाख की राशि से गोमटेश्वर जन-कल्याण ट्रस्ट का स्थायी कोष निर्मित हुआ । इस कोष की आय जन-कल्याण कार्यों मे ही व्यय होगी ।

बाद के अभिषेको के लिए 23-2-81 से 14-3-81 तक कुल राशि रु० 11,17, 491.00 प्राप्त हुई । उसके बाद 15-3-81 से 16-6-81 तक कलशो से रु० 3,55,7,17 00 और पचामृत की बोलियो से रु० 2,67,109.00 की राशि एकत्र हुई । इस प्रकार पूरे मेला काल के सभी अभिषेको से कुल आय रु० 68,50,756.00 (रुपया अड़सठ लाख, पचास हजार, सात सौ छप्पन) की रही ।

आठ मार्च और उन्नीस अप्रेल को कर्नाटक पूजा अभिषेक हुआ । इससे जो आय होगी उसका उपयोग श्रवणबेलगोल मे 'कर्नाटक-भवन विश्रामगृह' के निर्माण मे किया जाएगा, ऐसा निर्णय कर्नाटक की जैन समाज ने किया था । आठ मार्च को 101/- प्रति कलश के हिसाब से 1954 कलश आबंटित करके 1,97,354/- की राशि एकत्र की गयी । उन्नीस अप्रैल को कलश का मूल्य 51/- रखा गया और 445 कलशों से कुल 22,695/- की राशि प्राप्त हुई । दोनो दिनो मे पचामृत अभिषेक की बोलियों से रु० 26,423/- प्राप्त किया गया। इस प्रकार कर्नाटक-पूजा की कुल आय रुपया 2,46,472 00 रही । इसमे से दो लाख दस हजार रुपया कर्नाटक-भवन के लिए बैंक के सावधि निक्षेप खाते में सुरक्षित कर दिया गया ।

7 जून से जल अभिषेक निःशुल्क कर दिया गया। एक सप्ताह तक पूजन के समय में कोई भी व्यक्ति जल से भगवान् का अभिषेक कर सकता था।

सोमवार 15-6-81 को अंतिम अभिषेक श्रवणबेलगोल के सभी इन्द्रों, अर्चकों तथा पण्डितों ने सकुटुम्ब, इष्टमित्रों सहित, अपनी ओर से किया। यह यहाँ की परम्परा है और इस आयोजन को अपना पारम्परिक अधिकार मानते हुए सभी अर्चक बड़े भारी उत्सव के रूप में यह दिन मनाते हैं।

सबसे अंत में, सोलह जून को हरिद्रा का घोल भगवान् के ऊपर बरसाया गया। यह समापन अभिषेक बिलकुल होली की तरह मनाया जा रहा है। अभिषेक मंच से उतरते ही कर्मयोगी स्वामीजी को घेरकर लोगो ने अभिषेक की उसी हल्दी से उन्हें सराबोर कर दिया। विश्वसेनजी भी उस पीत परिवेश से एकाकार हो गये हैं। लोग आपस मे भी एक दूसरे पर वह पवित्र रग डाल रहे हैं, गले मिल रहे हैं। वे प्रमुदित हैं प्रफुल्ल हैं। उन्हें भासता है जैसे उनका जनम जनम का पुण्य ही उदय मे आकर उन्हे इस उत्सव का भागीदार बना गया है। प्रत्येक मस्तकाभिषेक का समापन ऐसे ही स्वर्णिम अभिषेक से यहाँ होता है। कभी ऐसा लगता है कि हर आराधक, पीत धाराओ के रूप मे अपनी भक्ति की धारा ही भगवान् के चरणो तक पहुँचाने को व्यग्र हो उठा है। कभी ऐसा लगता है कि इतने बडे संकल्प की पूर्ति पर इन हज़ार-हज़ार जनो के मन का उल्लास ही पीतिमा के रूप मे विंध्यगिरि पर बिखर उठा है। आज यहाँ हर व्यक्ति के आनन पर तृप्ति है परन्तु हर मन मे एक आकांक्षा भी है कि यह महोत्सव देखने का अवसर जीवन मे पुनः मिले, बारम्बार मिलता रहे।

समारोह का समापन और समापन का समारोह

उदय के साथ अस्त और समारम्भ के साथ समापन, अनिवार्यतः लगा हुआ है। पाँच वर्ष से सारे समाज में जिसकी चर्चा थी, तीन वर्ष तक सारे भारत में जिसके लिए तैयारियाँ चलती रहीं और जिसे अवकाश देने के लिए श्रवणबेलगोल को चतुर्दिक् अपनी सीमाओं के बाहर तक अपना विस्तार करना पड़ा, वह सहस्राब्दि महोत्सव और महामस्तकाभिषेक अपने निर्धारित समय पर सारी भव्यताओ के साथ, भारी सफलता के कीर्तिमान अंकित करता हुआ सम्पन्न हो गया। उसके उपरान्त तीन सप्ताह तक अनेक पूजा-अनुष्ठान और मस्तकाभिषेक यहाँ सम्पन्न हुए। मस्तकाभिषेकों का सिलसिला तो अभी तीन माह तक यहाँ चलने वाला है, परन्तु महोत्सव का आज समापन होगा। आज, पन्द्रह मार्च को उपनगरो के सारे अनुबन्ध समाप्त होते हैं। ठेकेदार ने अपने तम्बू समेटना कभी का प्रारम्भ कर दिया है। बिजली वालों ने अपनी सामग्री निकालकर इकट्ठी कर ली है। जल प्रदाय भी अब पूर्ववत् ही शेष रह गया है। महोत्सव के लिए इस छोटे से नगर में जितनी विशेष व्यवस्थाएँ हुई थी, धीरे-धीरे उनका विलीनीकरण होता रहा और अब यह तीर्थ, एक-दो विशेषताओ को छोड़कर, एकदम सामान्य हो गया है।

आज समापन समारोह के मुख्य अतिथि हैं श्री वीरेन्द्र हेगडे और अध्यक्षता के लिए पधारे हैं मुख्यमन्त्री श्री आर० गुण्डूराव। उनके साथ मन्त्रिमण्डल मे उनके सहयोगी, सहकारिता मन्त्री श्री एच० सी० श्रीकण्ठैया, वित्तमन्त्री श्री वीरप्पा मोइली, श्रममन्त्री श्री ए० बी० जकनूर, और मुजरई मन्त्री श्री सुधीन्द्र राव कस्बे भी आज यहाँ उपस्थित हैं। प्रातः ठीक दस बजे विन्ध्यगिरि पर गोमटस्वामी का मस्तकाभिषेक हुआ। अपने परिवार जनों के साथ प्रायः सभी अतिथियो ने आज बड़े मन से भगवान् का अभिषेक किया है। जलाभिषेक के उपरान्त एक बार फिर पचामृत अभिषेक की बहुरगी धाराएँ हमारे सामने वह नयनोत्सव प्रस्तुत कर गयीं। वैसा ही आह्लादपूर्ण, उतना ही सम्मोहक किन्तु नवीनता से भरा हुआ।

समापन समारोह के लिए सद्य-निर्मित 'जनमगल-मण्डप' में दोपहर दो बजे से समारोह की सभा प्रारम्भ होती है। अतिथि वक्ता महाराष्ट्र के समाज-कल्याण मन्त्री श्री जयवन्तराव तिलक जैन इतिहास और संस्कृति की सराहना से ओत-प्रोत अपना ओजस्वी भाषण प्रस्तुत करते हैं। श्री जयवन्तराव तिलक स्वाधीनता संग्राम के प्रकाश-पुरुष लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के पौत्र हैं। यह गौरव की बात है कि लोकमान्य द्वारा संस्थापित मराठी दैनिक 'स्वराज्य' उनके सम्पादन मे नियमित रूप से अभी भी प्रकाशित हो रहा है। श्री जयवन्तराव तिलक अच्छे विचारक विद्वान् और ओजस्वी वक्ता हैं। उनके भाषण मे एक प्रस्तावना है कि श्रवणबेलगोल में भाषा-विज्ञान के उच्च-अध्ययन के लिए एक शोध-संस्थान स्थापित किया जाना चाहिए।

एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी सहस्राब्दि महोत्सव की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए, महोत्सव समिति के सदस्यो को, और शासन के प्रतिनिधियों को, उनके योगदान की सराहना

करते हुए, धर्मवृद्धि का आशीर्वाद देते हैं। अपने संक्षिप्त उद्बोधन में मुनि विद्यानन्दजी ने भगवान् बाहुबली के उपदेशों को विश्व धर्म की अनमोल धरोहर बताते हुए कहा कि 'उन उपदेशों को अपने जीवन में उतारकर प्राणी मात्र बाहुबली जैसी उत्कृष्टता प्राप्त कर सकता है।' कर्मयोगी भट्टारक स्वामीजी ने आयोजन की विशालता और विस्तार का स्मरण करते हुए उसकी सफलता को गोमटस्वामी के चरणों की कृपा का चमत्कार निरूपित किया।

अभिनन्दन और कृतज्ञता-ज्ञापन

इस महान् महोत्सव की संयोजना के साथ जो व्यक्ति कही भी जुडा हुआ है, महोत्सव समिति ने उसे अभिनन्दनीय माना है और उसके योगदान के लिए पग-पग पर अपनी कृतज्ञता दर्शाई है। आज अवसर है जब एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी के सदस्यों का और इस समारोह में उपस्थित, व्यवस्था के सभी कर्णधारो का, मंच पर बुलाकर अभिनन्दन किया जा रहा है। श्रवणबेलगोल की उसी विशिष्ट शैली में, शाल, माला और श्रीफल अर्पित करके यह अभिनन्दन हो रहा है, परन्तु उसमे एक विशेषता भी है। सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक के स्मृति-चिह्न के रूप मे उन सबको एक-एक रजत कलश भी भेंट किया जा रहा है।

सम्मान की यह शृंखला मुख्यमन्त्री श्री गुण्डूराव से प्रारम्भ होती है। साहु श्रेयासप्रसादजी ने मुख्यमन्त्री के माध्यम से समूचे कर्नाटक शासन का अभिनन्दन किया। श्री गुण्डूराव के व्यक्तिगत सौजन्य को रेखांकित करते हुए उन्हें एक मानपत्र भेंट किया और महोत्सव मे उपलब्ध शासकीय सहयोग के लिए बार-बार उनके प्रति आभार व्यक्त किया। मुख्य अतिथि श्री वीरेन्द्र हेगड़े और अतिथिवक्ता श्री जयवन्तराव तिलक के साथ श्रीयुत् श्रीकण्ठैया, श्री वीरप्पा मोइली, श्री ए० बी० जकनूर और श्री सुधीन्द्र राव कस्बे का अभिनन्दन किया गया और अब ये सभी सम्मानित व्यक्ति मिलकर अभिनन्दन कर रहे हैं साहु श्रेयासप्रसादजी का। एक ऐसे व्यक्ति का जिसने सदा सबको प्रोत्साहित किया और जिसकी सक्रियता, जिसका उत्साह, पूरे समय सबके लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहा।

सम्मान की अधिकारिणी दो विदुषी महिलाएँ भी मंच पर उपस्थित हैं। श्रीमती सरयू दोशी ने 'मार्ग' के विशेषांक के रूप मे श्रवणबेलगोल की कला का सागोपांग परिचय प्रस्तुत करके इस तीर्थ की उल्लेखनीय सेवा की है। उसी प्रकार श्रीमती सरयू दफ्तरी ने एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी के मगल-विहार की व्यवस्था का सम्पूर्ण भार लेकर और जन-कल्याण के कार्यों मे हाथ बँटाकर संयोजना मे सराहनीय योगदान दिया है। प्रसगवश कर्नाटक के मुख्य-सचिव श्री एन० नरसिंहराव तथा कुछ अन्य अधिकारी श्री जी० पी० राव आई० पी० एस०, श्री एम० के० वेंकटेशन, श्री बी० आर० प्रभाकर और इनडाउमेण्ट कमिश्नर श्री एम० कृष्णा-मूर्ति आदि भी यहाँ उपस्थित हैं। महोत्सव समिति को इन निष्ठावान अधिकारियो का जो सहयोग प्राप्त हुआ है उसके बिना इतनी भारी सफलता कभी संभव न थी। उन सभी अधि-कारियो को भी वैसी ही गरिमा के साथ सम्मानित किया गया।

'अभिनव-श्रेयांस'

अभी पिछले रविवार को 'त्यागी सेवा समिति' के संयोजक, बंगलौर के श्री एम० सी० अनन्तराजैया को सम्मानित किया गया था। श्रवणबेलगोल मे जिसने भी त्यागी-व्रती और

मुनियों की व्यवस्था को निकट से देखा है, वह श्री अनन्तराजैया की सराहना किये बिना नहीं रह सकता। वैसे तो संयमी साधुओं की सेवा-सुश्रूषा करना एम० सी० की पैतृक प्रवृत्ति है, परन्तु दस-पाँच दिन तक, दस-पाँच साधुओं की व्यवस्था करना अलग बात है, और कई सप्ताहों तक एक साथ अनेक विशाल मुनि संघों की त्रुटि विहीन व्यवस्था करना सचमुच एक बड़ी बात है।

श्री अनन्तराजैया धार्मिक वृत्ति के सद्गृहस्थ हैं। बगलौर मे उनके निवास पर सुन्दर चैत्यालय स्थापित है। मुनि संघों में वे प्रायः सपरिवार जाते रहते हैं। उनकी बेटी, कुमारी शोभा अनन्तराजैया ने अनेक अवसरों पर मधुर स्वरो मे 'गोमटेश-स्तुति' का पाठ करके श्रोताओं को भक्ति-विभोर किया है। यह धर्मपरायण परिवार श्रवणबेलगोल मे बहुत सक्रिय रहा। सुबह से शाम तक अपने सहयोगियो के साथ साधुओं की सेवा और व्यवस्था में संलग्न श्री अनन्तराजैया ने अपने उत्तरदायित्व का उत्तम निर्वाह किया है। सम्मान के समय उन्हे समर्पित अभिनन्दन-पत्र में उनके लिए 'अभिनव-श्रेयांस' की उपाधि बहुत सोच समझकर अंकित की गयी है।

सम्मान और अभिनन्दन का यह सिलसिला लगातार चलता रहा। अंतिम अभिषेक के बाद 15-6-81 को पुनः एक समारोह हुआ जिसमे अनेक लोगो का सम्मान किया गया।

'धर्मवीर'

मैसूर के श्री डी० निर्मलकुमार ने पूजा कमेटी के संयोजक का पद भार सम्हाला था। पंच कल्याणक से लेकर पंचामृत अभिषेक तक, पूजन-अनुष्ठान की सारी व्यवस्थाएँ इसी समिति के तत्वावधान में संयोजित थी। मेले में आने वाला हर यात्री इस समिति की सफलताओ का साक्षी रहा। श्री निर्मलकुमार को समापन में जो अभिनन्दन-पत्र दिया गया उसमें उन्हें 'धर्मवीर' कहकर सम्बोधित किया गया।

'व्याख्यान-वाचस्पति'

केरल के प्रसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य पंडित श्रीकान्त भुजबली शास्त्री महोत्सव के पुरोहित मण्डल के प्रधान थे। वे बोली समिति के संयोजक भी थे। अनुष्ठान विधान और मंत्र-शास्त्र के अनुभवी विद्वान् के रूप में शास्त्रीजी दूर-दूर तक जाने जाते हैं। श्रवणबेलगोल में शुभारम्भ से समापन तक सारे विधि-विधान या तो उन्होंने कराये, या उनके परामर्श पूर्वक किये गये। कन्नड में, और संस्कृत-निष्ठ हिन्दी मे, प्रभावपूर्ण व्याख्याता होने के कारण मंच पर भी श्रीकान्त भुजबली शास्त्री का नाम बार-बार सुनाई देता रहा। उनके लिए 'व्याख्यान-वाचस्पति' पदवी की घोषणा करने वाला अभिनन्दन पत्र समर्पित करके सभा मे उन्हे सम्मानित किया गया।

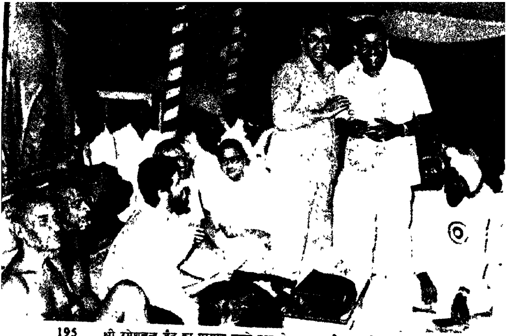
'समाजरत्न'

श्रवणबेलगोल के निष्ठावान समाजसेवक श्री एस० डी० नागराज को सम्मानित करते समय 'समाज रत्न' उपाधि से विभूषित किया गया।

बाबू सुकमारचन्द जैन को भी इस सभा में सम्मानित किया गया। मेरठ निवासी बाबू सुकमारचन्दजी पुराने सामाजिक कार्यकर्ता हैं। भगवान् महावीर व 2500वें निर्वाण महोत्सव की राष्ट्रीय समिति के मन्त्री पद पर बाबूजी ने स्व० साहु शान्तिप्रसादजी का दाहिना हाथ बनकर काम किया था। आज वे दिगम्बर जैन महासमिति के महामन्त्री का पद सम्हाल रहे हैं। इस मेले मे 'आवास व्यवस्था समिति' के संयोजक के रूप में बड़े परिश्रम-पूर्वक उन्होंने सहयोग दिया।

समापन समारोह के अवसर पर कार्यकर्ताओ की इस सम्मान शृंखला में एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी के सदस्यों, उप समितियो के संयोजको, और शासकीय अधिकारियो को, उनकी सेवाओ के उपलक्ष्य मे रजत कलश, पदक, शाल आदि प्रदान करके सम्मानित किया गया। सम्मानित जनो की तालिका परिशिष्ट मे दी गयी है। अन्त मे एक दिन कर्मयोगी भट्टारक स्वामीजी ने सभी अर्चकों, पुरोहितों और उनके परिवार जनो को मठ मे बुलाकर वस्त्र तथा अन्य उपहार देकर उन्हे यथोचित आदर दिया।





195 श्री रमेशचन्द जैन का सम्मान करके साहु श्रेयांसप्रसादजी आह्लादित

196 आयुर्वेदज्ञ श्री सुशीलकुमारजी का सम्मान





197 'साहित्य सम्कृति पुरस्कार' कर्मयोगी चारूकीर्ति स्वामीजी द्वारा वितरित



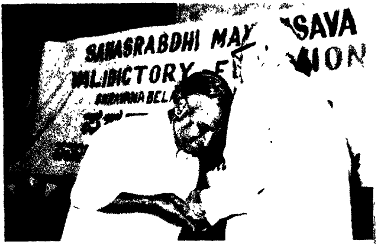
198 भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामन्त्री श्री जयचन्द



199
सक्रिय सहयोग के लिए
श्री सुरेन्द्र हेगड़े का सम्मान



200 स्वामीजी के सान्निध्य में साहूजी द्वारा मुख्यमंत्री श्री गुंडूराव का अभिनन्दन



201 पूजा समिति के संयोजक श्री डॉ. निर्मलकुमार का सम्मान

202 श्री गुंडूराव को कलश का प्रतीक उपहार भी भेंट किया गया





203 मेरठ के बाबू सुकुमारचन्द्रजी जैन की सेवाओं का समापन समारोह में विशेष उल्लेख

204

व्याख्यानकेसरी श्री ए. आर. नागराज का सम्मान



205

महिला सम्मेलन की संयोजिका श्री. विजया देवेन्द्रप्पा का सम्मान



206 स्वामी सेवा समिति के संयोजक
श्री एस. सी. अनन्तराजैया का सम्मान



207 'विशिष्ट अतिथि-समिति' के सयोजक
डॉ. आर. एस. सुरेन्द्र के साथ 'प्रदर्शनी-समिति' के
संयोजक श्री एच. बी. आदिराजैया का सम्मान



208 पंडाल समिति के संयोजक
श्री एच. एन. नागरत्नराय का सम्मान



209 ठेकेदार श्री देवराज का सम्मान



210 एस. डी. जे. एम आई.
मैनेजिंग कमेटी के सचिव
श्री जी बी शान्तिराजु का सम्मान

211 श्री एच एन. राजेन्द्रकुमार का सम्मान



212 श्री जी. नान्जप्पा, कार्यपालक अभियन्ता जलप्रदाय, का सम्मान





213 शासकीय अधिकारियो के सम्मान के प्रतीक स्वरूप रजत कलश प्राप्त करते हुए
राजस्व आयुक्त श्री एम. के वेंकटेशन

214 पुलिस महानिरीक्षक श्री जी. वी. राव ने भट्टारक स्वामीजी से कलश प्रतीक प्राप्त किया





215 स्वास्थ्य उपनिदेशक श्री इकबाल अहमद को गोमटेश्वर की अनुकृति

216 कर्मयोगी स्वामीजी से रजत कलश प्राप्त करते हुए हासन के पुलिस अधीक्षक



क्षण-क्षण के आलेख



9-4-1981

सहस्राब्दि-दिवस

शिलांकित प्रमाणों के अनुसार गोमटस्वामी की प्रतिष्ठा चैत्र शुक्ला पचमी को हुई थी। आज वही पावन तिथि है। अंग्रेजी केलेण्डर के अनुसार रविवार, तेरह मार्च सन् 981 ईस्वी को प्रभु का प्रथम मस्तकाभिषेक हुआ था। चैत्र या मार्च के दिन किसी बडे उत्सव के लिए प्राय. अनुकूल नही होते। दक्षिण भारत मे तो एकदम नही। तब तक ग्रीष्म की तपन तीव्र हो जाती है। ससद और विधान-सभाओ के बजट अधिवेशन चलते हैं। स्कूल-कॉलेजो की परीक्षाएँ प्रारम्भ हो जाती हैं। इन कारणो से हर बार मस्तकाभिषेको से यह मूल तिथि हमेशा छूट जाती है। मस्तकाभिषेक प्रायः माघ या फाल्गुन मे आयोजित किये जाते हैं।

इस बार भी इन्ही सब कारणो मे मस्तकाभिषेक के लिए 22 फरवरी निर्धारित की गयी थी। परन्तु यह सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना महोत्सव था, इसलिए प्रथम प्रतिष्ठा की पुण्य तिथि 'चैत्र शुक्ल पचमी' को महामस्तकाभिषेक करना, इस महोत्सव का एक आवश्यक अग माना गया। पूरे अनुष्ठान पूर्वक आज वह सम्पन्न किया गया। अनुभवी विद्वानो के द्वारा विन्ध्यगिरि पर शुद्धि और विधि पूर्वक बीजाक्षरो के उच्चारण के साथ, सक्षिप्त प्रतिष्ठापना विधि सम्पन्न कराई गयी। 'नेमिचन्द्र-प्रतिष्ठा पाठ' मे प्रतिष्ठा के जो सक्षिप्त विधि-विधान बताये गये हैं उनके अनुसार आज वहाँ समस्त अनुष्ठान किये गये।

▭

19-4-1981

एलाचार्य का पुनरागमन

मुनिश्री विद्यानन्दजी कुछ समय के लिए श्रवणबेलगोल से अन्यत्र विहार कर गये थे। नरसिंहराजपुरा मे कुछ दिनो ठहर कर वे लौटे हैं। दिनांक 19-4-81 को नगर मे एलाचार्यजी का द्वितीय मगल-प्रवेश हुआ है।

▭

गुरुकुल भवन

सेठ लालचन्द हीराचन्द परिवार की ओर से यहाँ गुरुकुल भवन का निर्माण कराने का संकल्प किया गया है। इस हेतु उन्होंने दो लाख रुपये की राशि प्रदान की है। इस 'लालचन्द हीराचन्द गुरुकुल भवन' का शिलान्यास श्रीमती सरयू दोसी के तत्त्वावधान मे आज छह मई को प्रातःकाल सम्पन्न हुआ।

▭

मुनि कुन्दकुन्द भवन

कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम श्री गोविन्दनारायण के द्वारा 'मुनि कुन्दकुन्द भवन' का उद्घाटन सम्पन्न कराया गया। इस उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता के लिए सहकारिता मन्त्री श्री एच. सी. श्रीकण्ठैया को आमिन्त्रत किया गया था।

▭

एक दिन कर्नाटक के भूतपूर्व राज्यपाल श्री मोहनलाल सुखाडिया भी गोमटस्वामी का दर्शन करने पधारे। उन्होंने मस्तकाभिषेक का अवलोकन भी किया।

▭

अभिषेक के लिए विन्ध्यगिरि पर डोली से जाने के लिए डोली का भाडा चालीस रुपया देना पडता था। वापस उतरने के लिए बीस रुपया लगता था।

▭

प्रवेश-शुल्क जो वसूल नहीं किया गया

विन्ध्यगिरि पर जाने के लिए कमेटी द्वारा 'क्षेत्र अभिवृद्धि फण्ड' के रूप मे हर यात्री से एक रुपया प्रवेश-शुल्क लिया जाता है। मेला काल मे कमेटी को इस मद से दस लाख से अधिक राशि प्राप्त होने की सभावना थी परन्तु उसमे अनेक व्यावहारिक कठिनाइयाँ थीं अतः कमेटी ने अपना प्रस्ताव पारित करके तदनुसार दिनांक 9-2-81 से 15-3-81 तक यह प्रवेश शुल्क स्थगित रखा। इस प्रकार मेले के मुख्य दिनो में यात्रियो को श्रवणबेलगोल की सीमा मे आने के लिए कोई प्रवेश कर नही देना पड़ा।

▭

10-5-1981

सहस्राब्दि महोत्सव : मेरा सौभाग्य

केरल की जैन समाज की ओर से सम्पन्न हुआ अभिषेक देखकर लोग नीचे उतर रहे हैं। बंगलोर के एक पत्रकार मित्र बहुत प्रसन्न होकर एक घटना सुनाते हैं।

कुछ समय पूर्व चिकमंगलूर में 'कन्नड साहित्य परिषद्' का उद्घाटन करते हुए श्री गुण्डूराव ने बड़ी सुखद स्मृतियों के रूप में इस महोत्सव का उल्लेख किया। वहाँ उस दिन लगभग दस मिनट तक महोत्सव के बारे मे ही वे बोलते रहे। उन्होंने कहा कि मुझे हँसी आती है जब लोग मुझसे यह पूछते हैं कि मैंने इस महोत्सव के लिए इतना सहयोग क्यो दिया? मैं ऐसे लोगो से कहता हूँ कि न तो मैंने चामुण्डराजा से प्रार्थना की थी कि आप ऐसे मुहूर्त मे गोमटस्वामी की प्रतिष्ठा करावें, जिसका सहस्राब्दि मुहूर्त मेरे कार्यकाल मे पड़े। न ही मैंने श्रीमती गाँधी से निवेदन किया कि आप मुझे इस महोत्सव के अवसर पर कर्नाटक का मुख्यमन्त्री रहने का अवसर प्रदान करें, और न मैं यह सोचकर राजनीति मे आया था कि यह अवसर मुझे मिलेगा। महोत्सव को तो पूरे देश का सहयोग मिलना ही था, वह स्वत मिलता रहा। यह एक सुखद सयोग था कि मैं इस समय प्रदेश का मुख्यमन्त्री हूँ इसलिए मुझे गोमटस्वामी के महामस्तकाभिषेक मे कुछ अधिक सहयोगी बनने का अवसर मिल गया। इस बहाने देश की जनता की सेवा के लिए मैं कुछ विशेष कर सका इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ।

□

गोमटेश का गगन-अभिषेक

ग्रीष्म के तपते हुए आकाश पर कही बादल का कोई टुकड़ा दिखाई नही दे रहा। भक्तगण मगन-मन अपने प्रभु का मस्तकाभिषेक कर रहे हैं। इस बीच व्योम के किसी कोने से एक बदली उठती है और घडी भर के लिए वेग से बरस कर सबको सराबोर कर जाती है। तपन के बीच ठण्डी बौछारो से भीगना तो सबको अच्छा लगता ही है, अपने बाहुबली का आज यह 'गगन-अभिषेक' देख पाना और भी मनभावन लग रहा है। सोचता हूँ असम्भव तो नही कि इन्द्र के मन में भी अभिषेक की ललक उठी हो और इसलिए अकस्मात् दृश्य की सृष्टि हो गयी हो।

□

19-12-1981

पी. एस. जैन गेस्ट हाउस का उद्घाटन

विद्यानन्द निलय के दक्षिण में श्री पी. एस. जैन ट्रस्ट दिल्ली की ओर से

गेस्ट हाउस का निर्माण अब पूरा हो गया। आज साहु श्रेयांसप्रसादजी ने फीता काटकर उद्घाटन किया। कर्मयोगी स्वामीजी ने उद्घाटन के अभिलेख का अनावरण करके उसे अतिथियो के लिए सुलभ कराया। श्री रमेशजी और उनके अनुज श्री सुदेशजी ने अतिथियो का स्वागत किया और आभार व्यक्त किया। इस निर्माण के लिए निर्माताओ को मानपत्र द्वारा सम्मानित किया गया।

▭

20-12-1981

जनमंगल महाकलश भवन का शिलान्यास

महोत्सव की पूर्व पीठिका के रूप मे जनमंगल महाकलश का प्रवर्तन हर दृष्टि से सफल रहा है। इसका पूरा यात्रा-विवरण एक पृथक् अध्याय मे आ चुका है। इस योजना से प्राप्त की गयी राशि 'श्री गोमटेश्वर जनकल्याण ट्रस्ट' के माध्यम से सार्वजनिक हितो के लिए नियोजित करने का सकल्प किया गया था। आज इस योजना के अन्तर्गत श्रवणबेलगोल मे प्रस्तावित 'जनमगल महाकलश भवन' का शिलान्यास करने के लिए केन्द्रीय गृहमन्त्री माननीय ज्ञानी जैलसिंह श्रवणबेलगोल पधारे हैं। हेलीपैड पर श्री वीरेन्द्र हेगडे, ए. आर. नागराज और डॉ० सुरेन्द्र के साथ ट्रस्ट के अध्यक्ष साहु श्रेयासप्रसाद जैन ने श्री जैलसिंह का स्वागत किया। श्री एल एल आच्छा दिल्ली से ज्ञानीजी के साथ आये। शिलान्यास करने के बाद श्री जैलसिंह के हाथों से साधनहीन महिलाओं को सिलाई मशीनें दिलाकर ट्रस्ट की लोकोपकारी प्रवृत्तियों का प्रारम्भ कराया गया। इस प्रकार एक वर्ष के भीतर ही यह ट्रस्ट अपने उद्देश्यो की पूर्ति की दिशा मे अग्रसर होने लगा है।

जनमगल महाकलश योजना की आशातीत सफलता का उल्लेख करते हुए और ट्रस्ट के द्वारा हाथ मे लिये जनकल्याण के कार्यों की सराहना करते हुए, मुख्य अतिथि ने कलश-प्रतीक और माला के द्वारा पण्डित नाथूलालजी शास्त्री, श्री देवकुमारसिंह कासलीवाल और श्री कैलाशचन्द चौधरी को सम्मानित किया।

समारोह मे सेठ लालचन्द हीराचन्द बम्बई, श्री माणिकचन्द भिसीकर कुम्भोज, श्री प्रेमचन्द जैन दिल्ली, श्री बाबूलाल पाटौदी इन्दौर, श्रीमती सरयू दफ्तरी और बाबू सुकुमारचन्द जैन के अतिरिक्त कर्मयोगी भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी के साथ, धर्मस्थल के श्री वीरेन्द्र हेगड़े और मूडबिद्री के भट्टारक चारुकीर्ति पी. स्वामीजी की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

▭



217 श्रवणबेलगोल में जनमंगल महाकलश स्मारक भवन का शिलान्यास करते हुए तत्कालीन गृहमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह



218 प्रतिष्ठाचार्य विद्वान पं. नाथूलालजी शास्त्री का ज्ञानी जैलसिंह द्वारा सम्मान



219 गोमटेश्वर जनकल्याण ट्रस्ट की ओर से सिलाई मशीनों का वितरण



220 गोमटेश्वर जनकल्याण ट्रस्ट की ओर से ज्ञानीजी का अभिनन्दन करते हुए स्वामीजी और साहु श्रेयासप्रसाद जैन

221 श्री ज्ञानीजी ने महोत्सव समिति की ओर से मुनिश्री विद्यानन्दजी को चन्दनमजूषा मे 'विनयाजलि' अर्पित की





222 महोत्सव की व्यवस्था मे स्वयंसेवक दलों का सराहनीय योगदान रहा

223 अतिशय भीड मे मुनियो के विहार मे स्वयमेवको की व्यवस्था





224 यात्रियो को अव्यवस्था मे बचाने और भीड मे व्यवस्था बनाये रखने के लिए स्वयसेवको की सूझ-बूझ

225 आवश्यकता पडने पर स्वयसेवको को होम गार्ड्स और पुलिस दोनो की सहायता प्राप्त होती रही



श्री बड़जात्या का सम्मान

राजश्री पिक्चर्स ने महामस्तकाभिषेक महोत्सव पर एक वृत्त-चित्र का निर्माण किया था। इस माध्यम से देशभर मे लाखों लोगों को उस महोत्सव की झांकी देखने का अवसर मिला है। इस उपलक्ष्य में राजश्री पिक्चर्स के श्री कमलकुमार बड़जात्या को आज मानपत्र देकर सम्मानित किया गया। मानपत्र का वाचन कर्मयोगी स्वामीजी के निजी सहायक श्री विश्वसैन ने किया और श्री बाबूलालजी पाटौदी ने बड़जात्याजी को वह समर्पित किया।

▭

एलाचार्यजी का विहार

आज एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी का श्रवणबेलगोल से धर्मस्थल के लिए विहार हो रहा है। पिछले वर्ष 20 जुलाई को उन्होने यहाँ पदार्पण किया था। महोत्सव के सयोजन मे अपना बहुमूल्य योगदान देने के लिए आठ माह तक उन्होने इसी नगर मे निवास किया। उसके उपरान्त थोड़े दिनो के लिए उनका विहार हुआ और पुन: श्रवणबेलगोल को उनका सान्निध्य प्राप्त हो गया। अब लगभग डेढ़ वर्ष के उपरान्त उनका वास्तविक विहार श्रवणबेलगोल से हो रहा है। इस अवसर पर प्राय सबके मन पिछले दिनो की बहुरगी स्मृतियो से ओत:प्रोत हैं। मुनिजी के चरणो का सान्निध्य अब वर्षों के लिए छूट रहा है। इसलिए लोगो के मन मे खिन्नता भी दिखाई देती है। परन्तु 'रमता जोगी और बहता पानी' कब, कहाँ टिक कर रहते हैं? चलना, चलना और चलते ही जाना उनका धर्म है। संस्तुतियो और अनुरोधो को समान भाव से सुनते हुए, सबके प्रति क्षमाभाव, सबके लिए मगल कामना व्यक्त करके एलाचार्यजी ने चन्नरायपाटन जाने वाले मार्ग पर विहार कर दिया।



स्वयंसेवक व्यवस्था

स्वयंसेवक व्यवस्था के लिए कोल्हापुर के डॉक्टर धनजय गुण्डे के संयोजकत्व मे 'स्वयं-सेवक समिति' का गठन किया गया था। सर्वश्री अजितकुमार बंगलोर, अनन्तराज इंगले मैसूर, आर० ए० रोडके हुबली, और श्री चन्द्रकान्त कागवाड बेलगाम उपनायको या समिति सदस्यों के रूप में उनके सहयोगी थे।

स्वयसेवक व्यवस्था सचमुच एक चुनौती भरा कार्य था। यह हर जगह, हर समय वांछित एक आवश्यक सेवा थी। यह गौरव की बात रही कि समिति की सुविचारित सयोजना, ज़िम्मेदार लोगो के बीच काम का संतुलित बँटवारा और अनदेखी सभावित समस्याओ के सामयिक आकलन के बल पर इस समिति ने सफलतापूर्वक अपने दायित्वों का निर्वाह किया। यद्यपि इस कार्य को सम्हालने योग्य कर्तव्य-परायण स्वयसेवको का इतनी बडी सख्या में जुटाना एक कठिन-सा कार्य था, परन्तु एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी के मगल विहार से यह समस्या अपने आप सुलझती चली गयी। जगह-जगह उनके उत्प्रेरक भाषणों से समाज के युवको मे इस अवसर पर अपनी सेवाएँ प्रदान करने की भावना पनपती रही। इसी का फल था कि जब गोमटवाणी, सन्मति, रत्नत्रय, प्रगति और जिनविजय आदि जैन पत्र-पत्रिकाओ मे मेले के लिए स्वयसेवकों की आवश्यकता की सूचना प्रकाशित की गयी, तब हजारो लोगों की सेवाएँ उपलब्ध करने के लिए सैकड़ो आवेदन समिति को प्राप्त हुए।

स्वयंसेवकों का चुनाव

भारत के सभी प्रान्तो भर से नही, किन्तु देश के बाहर से भी यात्री और पर्यटक मेले में आयेंगे, इस बात को ध्यान मे रखकर, बीस से पच्चीस वर्ष के आयु-समूह के ऐसे युवा और युवती स्वयसेवको की आवश्यकता महसूस की गयी जिन्हें हिन्दी, कन्नड, अंग्रेज़ी और मराठी में से, कम से कम तीन भाषाओ का काम चलाऊ अभ्यास हो। चयन के समय यह भी ध्यान रखा गया कि जहाँ तक हो सके ऐसे विशाल आयोजनो मे सेवा करने का अनुभव रखने वाले स्वयसेवको को प्राथमिकता दी जाये। इसीलिए स्वयंसेवी संस्थाओ के माध्यम से आये आवेदन-पत्रो पर ही विचार किया गया और उनमे से इस प्रकार सवा हज़ार स्वयंसेवकों की सेवाएँ अवाप्त की गयी—

संस्था	स्वयंसेवक
1. वीर सेवादल, कोल्हापुर	228
2. भारत सेवादल, मैसूर	225
3. विश्व हिन्दू परिषद,	200
4. वीर सेवक मण्डल, जयपुर	150
5. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ	132

6.	महावीर जैन युवक मण्डल, बेलगाम	40
7.	धर्मस्थल मंजुनाथ कॉलेज सेवादल, उजरे	20
8.	श्री महावीर संघ, मूडबिद्री	20
9.	अकलंक नवयुवक मण्डल, इन्दौर	30
10.	दिगम्बर जैन युवा परिषद, बम्बई	20
11.	हनुमान सेवासमिति, देहली	20
12.	जैन बोर्डिंग सेवादल, हुबली	90
13.	महिला स्वयसेवक सघ, मैसूर	50
14.	जैन महिला स्वयंसेवक संघ, बेलगाम	40
	कुल	1265

इस प्रकार जैन और जैनेतर, पुरुष और महिला, धार्मिक और सामाजिक तथा व्यवसायी और विद्यार्थी आदि समाज के सभी वर्गों में से स्वयसेवकों का चुनाव किया गया। इनमे से कई नौकरी-पेशा तथा कुछ शासकीय सेवा मे रत पुरुष एवं महिला स्वयंसेवक थे, जिन्होंने छुट्टी लेकर अपनी सेवाएँ अर्पित की।

कार्य का वितरण

सर्वप्रथम समिति ने सावधानीपूर्वक सभी वांछित सेवा कार्यों का अध्ययन किया और उन स्थानो की सूची तैयार की जहाँ स्वयसेवकों को नियुक्त करने की आवश्यकता समझी गयी। इस सयोजना मे स्वस्तिश्री चारुकीर्ति स्वामीजी, साहु श्री श्रेयांसप्रसादजी और श्री वीरेन्द्रजी हेगडे तथा रमेशजी से उपयोगी मार्गदर्शन और सुझाव प्राप्त होते रहे। स्वयसेवको की नियुक्ति मुख्यत. इन स्थानो पर की गयी—

1. दर्शनार्थियो की व्यवस्था के लिए—
   अ—विन्ध्यगिरि पर
   ब—चन्द्रगिरि पर
   स—नगर के अन्य मन्दिरों और मुनि-आवासों में
   द—पंच-कल्याणक पूजा के कार्यक्रमो में
   इ—जैन मठ और सिद्धान्त-दर्शन में
2. चामुण्डराय मण्डप, भद्रबाहु मण्डप और भरतेश वैभव प्रदर्शनी में
3. सूचना एवं पूछताछ के लिए—
   अ—अलग अलग सूचना-कक्षों में
   ब—कार्यालय के समीप विन्ध्यगिरि की तलहटी में
   स—चन्नरायपट्टन, हासन, आरसीकेरी तथा बंगलोर के बस स्टॉप और रेलवे स्टेशनों पर, स्थानीय बस स्टॉप पर
4. सामान रखने के लिए क्लॉक-रूम में

5. जूते-चप्पल रखाने के लिए काउण्टर पर
6. छोटे बच्चों की देख-भाल के लिए शिशु-केन्द्र में
7. अस्पताल और स्वास्थ्य केन्द्रो पर
8. पानी पिलाने की व्यवस्था में

स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण

फरवरी के प्रथम सप्ताह मे सप्त दिवसीय 'स्वयसेवक प्रशिक्षण शिविर' श्रवणबेलगोल में आयोजित किया गया। उपस्थित गणनायको को मेले की पूरी योजना का परिचय देते हुए सभी प्रमुख स्थानों से और प्रस्तावित कार्यक्रमो से परिचित कराया गया। उन स्थानों पर अपेक्षित सेवाकार्यों की उन्हे पूर्ण जानकारी दी गयी। फिर इन प्रशिक्षित जनो ने अपने दलो या समूहों को यह जानकारी प्रदान करके प्रशिक्षण दिया।

महोत्सव के उद्घाटन के साथ 9 से 16 फरवरी तक प्रथम बैंच में तीन सौ स्वयंसेवको की नियुक्ति की गयी। क्रमशः यह सख्या आवश्यकतानुरूप बढ़ाई गयी। बीस से चौबीस फरवरी तक के पाँच दिन मेले मे सर्वाधिक भीड के दिन थे। उस बीच पूरे सवा हज़ार स्वय-सेवक अपने अपने काम पर तैनात रहे। बाद के दिनों मे सेवा का भार चार सौ स्वयसेवको ने सम्हाला। समिति के अनुशासन मे निबद्ध इन सेवाभावी स्वयसेवको को पुलिस और होम-गार्ड के जवानों का भी पूरा सहयोग मिलता रहा। तीनो मे अद्भुत समन्वय रहा और संभवतः इसी कारण मेले मे उच्च कोटि की सुरक्षा और व्यवस्था बनी रही।

स्वयंसेवकों की आवास-व्यवस्था

सेवाकार्य मे नियोजित सभी पुरुष और महिला स्वयसेवको के लिए समिति ने भरसक अच्छी व्यवस्था उपलब्ध कराई। उन्हें चार समूहो मे अलग-अलग नगरो मे ठहराया गया। वहीं उनके भोजन का प्रबन्ध किया गया। प्रत्येक स्वयसेवक को प्रतिदिन दो रुपये जेबखर्च दिया जाता था। सामग्री के उचित मूल्यों को देखते हुए यह राशि नाश्ते और चाय के लिए पर्याप्त समझी गयी थी। जिन सगठनो ने चाहा उन्हें मार्ग-व्यय भी दिया गया।

सामान्यतः स्वयसेवको को प्रतिदिन बारह घण्टे ड्यूटी करनी पड़ती थी। कई बार उन्हें पन्द्रह-सोलह घण्टों तक भी काम करना पडा। मेले की आपा-धापी और काम के बोझ के बाव-जूद उनकी व्यवस्था इतनी सतर्क और पर्याप्त रही कि किसी भी स्वयंसेवक को बीमारियो और दुर्घटनाओं का सामना प्रायः नहीं करना पड़ा।

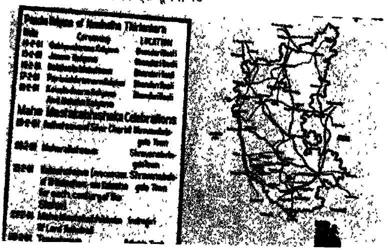
अन्य स्वयंसेवक

मेले में बहुत से ऐसे स्वयंसेवक भी थे जो अधिक पहले नही आ पाने के कारण, इस व्यवस्था का अंग नही बन पाये थे, पर वे जितने दिन वहाँ रहे उतने दिन उन्होने स्वय अपने लिए सेवा कार्य तलाश लिया और निस्वार्थ भाव से इस दिशा में नित्य कुछ न कुछ करते रहे। उनमें अनेक अनुभवी और वरिष्ठ स्वयंसेवक भी देखे गये। कई जगह उन्होंने अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान कीं। श्री महावीरजी क्षेत्र की ओर से आठ विश्वस्त दरबानों का दल भेजा गया



226 विन्ध्यगिरि की तलहटी मे तम्बुओ का नगर

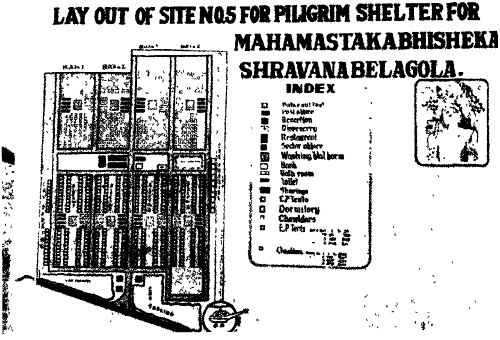
227 पर्यटन विभाग का एक सूचना-पट





228 स्वास्थ्य विभाग का बोर्ड

229 उपनगर का सूचना-पट





230 इण्डियन आयल कार्पोरेशन के अस्थायी पेट्रोल पंप का स्वामीजी द्वारा उद्घाटन

231 अस्थायी डाकघर, लेटर बाक्स और मोबाइल पोस्ट ऑफिस





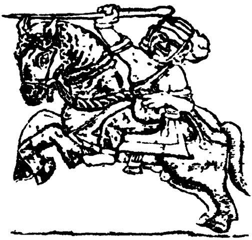
232 उपनगरो की बसावट एक दृष्टि मे

233 प्रत्येक उपनगर मे व्यवस्था, चिकित्सा सुरक्षा मे नियोजित कर्मचारियों क लिए बनाई गई झोपड़िया



था। ऐलाचार्य मुनिजी और स्वामीजी की सेवा में तथा विशेषकर सिद्धान्त-दर्शन की सुरक्षा व्यवस्था में उनकी सराहनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। कलकत्ते के जैन युवा संगठन के अनेक स्वयं-सेवक सेवा कार्यों में जुटे रहे। इस संगठन ने मुख्य पण्डाल के पास एक निःशुल्क आयुर्वेदिक औषधालय भी चलाया।

सभी स्वयंसेवकों के लिए विशाल जन समूह में उत्पन्न समस्याओं से जूझने का अनुभव पाने के लिए यह मेला एक स्वर्णिम अवसर सिद्ध हुआ। उनके द्वारा दी गयी सेवाओं की सर्वत्र प्रशंसा की गयी। उद्घाटन की सभा से लेकर समापन समारोह तक शायद ही कोई ऐसी सभा रही हो जिसमे किसी न किसी वक्ता ने इन सेवाभावी समर्पित जनों की प्रशंसा न की हो। यह अनुभव किया गया कि यदि सभी स्वयसेवकों को एक साथ ठहरने का अवसर मिलता, और विन्ध्यगिरि के निकट ही कही वह व्यवस्था हो पाती, तब शायद उनसे और भी अच्छी सेवाएँ प्राप्त की जा सकती थी। मेले में कई बार, कई जगह अधिक विस्तृत और अधिक अच्छी सेवाएँ देने के अवसर और आवश्यकता अनुभव मे आती रही। इस सबके बावजूद स्वयसेवक समिति के द्वारा इस विशाल उत्तरदायित्व का जिस कुशलता और सफलता के साथ निर्वाह किया गया वह महोत्सव समिति की आशाओं के सर्वथा अनुरूप था और सराहनीय था। हर स्वयसेवक-वहाँ बिताई हुई दुर्लभ घड़ियों की चिरस्मरणीय स्मृतियाँ मन में सँजोए हुए, आगामी महा-मस्तकाभिषेको मे पुन: पुनः अपनी सेवाएँ गोमटस्वामी को समर्पित करने की साध लेकर ही वहाँ से लौटा।



जन-सहयोग

बैंकिंग सुविधाएँ

यात्रियों की सुविधा के लिए छह व्यापारिक बैंको ने मेलानगर में शाखाएँ खोलकर सभी प्रकार की बैंकिंग सुविधाएँ लोगो को उपलब्ध कराईं। ये बैंक थे—स्टेट बैंक ऑफ़ मैसूर, इण्डियन ओवरसीज बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, कारपोरेशन बैंक, कनारा बैंक और रत्नाकर बैंक।

ये सभी बैंक यहाँ यात्रियो को ड्राफ्ट देने और भुनाने का कार्य करते थे। ट्रैवलर्स चेक लेते और देते थे। खाते खोलकर उनमे अपने पास की राशि जमा करके यात्री निश्चिन्त हो जाते थे। मूल्यवान वस्तुएँ रखने के लिए कुछ बैंको मे लॉकर भी उपलब्ध कराये गये थे। शाखाएँ खोलने के पीछे इन बैंकों का उद्देश्य व्यापार के साथ-साथ यात्रियो की सेवा और उनके लिए उपलब्ध सुविधाओ का प्रचार करना भी था, इसलिए वहाँ काम बहुत जल्दी होता था। आवश्यकतानुसार रात्रि में भी कुछ बैंक कार्यरत रहे। अपनी व्यापारिक कार्यविधि से थोड़ा हटकर बैंकों ने दूर-दूर से आये यात्रियों के लिए 'द्वार सेवा' भी उपलब्ध कराई थी। उनके कर्मचारी मेलानगर में लोगों के पास जाते और वहाँ माइक पर घोषणा करके ट्रैवलर्स चैक भुनाने, ट्रेवलर्स चैक देने, और ड्राफ्ट जमा करने आदि छोटे-मोटे काम वही कर देते थे। शाखा कार्यालयो मे यात्रियो की सुविधानुसार सुबह से देर रात तक कार्य होता रहता था।

टैण्ट बुक कराते समय यात्रियो के समक्ष एक कठिनाई आती थी। टैण्ट की किराये की राशि डिप्टी कमिश्नर हासन के नाम पर बैंक ड्राफ्ट द्वारा आवेदन के साथ प्राप्त होने पर ही टैण्ट का आबंटन किया जा सकता था। कमेटी का कार्यालय चौबीसो घण्टे खुला रहता था पर बैंक ड्राफ्ट लाने मे समय लगता था। नगद राशि स्वीकार नही की जा सकती थी। यात्रियो की यह परेशानी देखकर कारपोरेशन बैंक ने कमेटी के कार्यालय मे ही अपना एक काउण्टर खोल दिया, जिसने कई दिन तक दिन-रात काम किया। श्रवणबेलगोल पहुँचकर जब भी यात्री आवास के लिए कार्यालय मे पहुँचता, दिन हो या रात, उसी समय आवेदन, बैंक ड्राफ्ट और आबंटन की सारी खानापूरी, कुछ ही मिनटो में पूरी करके उन्हे टैण्ट दे दिया जाता था।

प्रायः इन सभी बैंको ने अनेक नगरो में बड़े-बड़े बोर्ड लगाकर, कैलेण्डर-डायरी निकालकर, स्टिकर और चाबी के छल्ले बाँटकर पूरे देश में महोत्सव का प्रचार किया था।

सु-स्वागतम्

बंगलोर से मैसूर तक पूरे रास्ते पर बड़े-बड़े बोर्ड लगे थे। ये बोर्ड प्रायः भिन्न-भिन्न उत्पादकों ने विज्ञापन के रूप में लगाये थे। इनमें गोमटस्वामी के चित्र, महोत्सव के प्रति शुभकामनायें और यात्रियो के लिए स्वागत वाक्य लिखे गये थे। एक गाँव में बड़ा भारी बोर्ड था—'हार्टी वेलकम टू 1000 ईयर सेलेब्रेशन्स बाई मेकर्स आफ सुफला'। मेला-नगर में

प्रवेश करते ही एक बोर्ड मिलता था जिसमें एक पुलिसमैन सैल्यूट करता हुआ दिखाया गया था। नीचे अंकित था—'महामस्तकाभिषेक, कर्नाटक स्टेट पुलिस एट योर सर्विस राउण्ड दी क्लाक'। डायल 99 आर 100 फॉर एनी असिस्टेंस।'

पत्रकार

गोमटस्वामी की लोकप्रियता और भक्ति के अनुरूप ही, इस महोत्सव के संदर्भ में पत्रकारों का बहुमूल्य सहयोग मिलता रहा। जागरूक पत्रों ने तो बहुत पहले से समारोह सम्बन्धी समाचार और संदर्भ प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिये थे। अधिकांश पत्रों ने विशेषांक निकालकर या महोत्सव के समाचारों को विशेष सज्जा के साथ प्रकाशित करके इस उत्सव को इतिहास में रेखांकित करने मे योगदान दिया। हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, कन्नड़, तमिल और गुजराती, मलयालम और तेलुगु, जिस किसी भाषा के भी पत्र-पत्रिकाएँ उठा लीजिए, उनमे कहीं-न-कहीं गोमटस्वामी अंकित मिलेंगे। दो माह तक सारे देश में यही माहौल रहा। यह पत्रकार बन्धुओं के सहयोग के कारण ही संभव हुआ कि जहाँ कहीं इक्का-दुक्का स्वार्थ-प्रेरित पत्रो ने उत्सव के विषय में अपवाद-जनक या भ्रान्तिपूर्ण सामग्री प्रकाशित भी की तो देश की जनता पर उसका ज़रा-सा भी असर नहीं हुआ।

दिल्ली में महोत्सव समिति की सूचना एवं प्रचार कार्यालय बहुत पहले स्थापित हो चुका था। अनुभवी पत्रकार श्री अक्षयकुमार जैन के कुशल निर्देशन में, उस केन्द्र से महोत्सव की तैयारियों की जानकारी, प्रायः सभी देशी-विदेशी संवाद समितियों को और पत्र-पत्रिकाओं को पहुँचाई जाती थी। जनता के लिए वहाँ एक नियमित सूचना केन्द्र भी चलता रहा। केन्द्र से पत्र-व्यवहार करके भी लोग वांछित जानकारी प्राप्त कर लेते थे। चारो ओर से श्रवणबेलगोल का मार्ग तथा आस-पास के तीर्थों की सारी जानकारी उपलब्ध कराने वाले पत्रक बड़ी संख्या में वितरित किये गए थे। दिल्ली केन्द्र से देशी विदेशी रेडियो, दूरदर्शन, और समाचार एजेंसियों को हर प्रकार की जानकारी ठीक समय पर प्राप्त होती रही।

बंगलोर में सूचना एवं प्रचार का दायित्व श्री नेमिनाथ को सौंपा गया था। श्री नेमिनाथ ने कर्नाटक के पत्रकारों को समय समय पर महोत्सव की प्रगति से अवगत कराने का कार्य तो किया ही, उन्होने प्रायः सभी वरिष्ठ और ख्याति प्राप्त पत्रकारो को महोत्सव समिति और मठ के सम्पर्क मे रखने का महत्त्वपूर्ण कार्य भी बड़ी कुशलता से पूरा किया। जब कभी निहित स्वार्थी या धर्म विरोधी तत्त्वों ने गलत बयानी का सहारा लिया, श्री नेमिनाथ ने तत्काल सही तथ्यो की जानकारी देकर, प्रबुद्ध पत्रकारों को स्वविवेक से स्वतन्त्रता पूर्वक लिखने की प्रेरणा दी।

सैकड़ों देशी और अनेक विदेशी पत्रकारो तथा छायाकारों ने विभिन्न कार्यक्रमो में उपस्थित होकर उन करोड़ों जनों तक महोत्सव की छवि और उसके समाचार पहुँचाये जो इस अवसर पर श्रवणबेलगोल नहीं पहुँच सके थे। समापन समारोह के अवसर पर वहाँ पत्रकारों और संवाददाताओं को सम्मानित करके कमेटी ने पूरे पत्रकार जगत् के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की है। सम्मानित पत्रकारों-संवाददाताओं की तालिका परिशिष्ट मे दी जा रही है।

साहित्य-प्रकाशन

सहस्राब्दि महोत्सव के अवसर पर भगवान् बाहुबली के जीवन और दर्शन पर जो विविध प्रकार का साहित्य प्रायः सभी भाषाओ में प्रकाशित हुआ, उससे भी इस मस्तकाभिषेक को ऐतिहासिक गरिमा प्राप्त हुई है। शायद ही देश के किसी आयोजन को लेकर कभी एक साथ इतना बहुरंगी और बहु-आयामी साहित्य तैयार किया गया हो। लेखो, कविताओ और संक्षिप्त नोटो की तो कोई गिनती ही नहीं थी, पर पुस्तिकाओं का भी यह हाल रहा कि वे जहाँ छपीं, लगभग वही प्रकाशको ने उन्हे अपने पाठको तक पहुँचा दिया और इस प्रकार कई सस्करण हाथो-हाथ छपते और समाप्त होते रहे। देश के प्रसिद्ध और सिद्धहस्त लेखको ने इतिहास का आलोडन करके प्राचीन साहित्य और कला मे से बाहुबली के संदर्भ निकाले, पुराणो में से उनके आख्यान चुने और फिर अधुनातन विधाओ मे गूँथकर उन्हे पाठको के समक्ष प्रस्तुत किया। और इस प्रकार भारत की अनेक भाषाओं मे भरत-बाहुबली को लेकर, या चामुण्डराय को लेकर, नेमिचन्द्राचार्य को लेकर या समग्र मे श्रवणबेलगोल को लेकर अनगिनत आख्यानो, व्याख्या-ग्रन्थो, उपन्यासो, नाटक-नाटिकाओ और काव्य-संग्रहो की रचना इस अवसर पर अनायास ही सामने आती चली गयी।

इस बहुमुखी साहित्य संरचना के द्वारा भारती का भण्डार तो समृद्ध हुआ ही, साथ ही जैन सस्कृति और कला को, उसके गौरवमय इतिहास को, जन-मन का अभिनन्दन भी प्राप्त हुआ है। इस साहित्य की तात्कालिक महत्ता के साथ उसका स्थायी मूल्य भी कुछ कम नही है। आने वाले कल को वह नया भले ही न रहे पर कभी सदर्भहीन नही होगा। उसे अस्तित्व मे लाने वाले सारे प्रयत्न अभिनन्दनीय हैं। उसका अध्ययन कराकर समग्र सस्कृति के परि-प्रेक्ष्य में उसका सम्यक् मूल्याकन कराना उपयोगी होगा।

इस महोत्सव-दर्शन की तैयारी के दौरान उसमे से जितना भी साहित्य मुझे उपलब्ध हुआ, या सूचना प्राप्त होती गयी, उसकी एक तालिका मैंने तैयार की है। भाषावार देखने पर हिन्दी साहित्य की 48 पुस्तके, तथा 18 पत्र-पत्रिकाएँ, मराठी की 9, कन्नड की 29 और अंग्रेजी की 18 पुस्तकें या पत्र-पत्रिकाएं ऐसे कुल 119 प्रकाशनो की सूचना इस तालिका मे सकलित हैं। यह तालिका आगे परिशिष्ट मे दी जा रही है। लेखको और कवियो के प्रति महोत्सव समिति का आभार शब्दों द्वारा व्यक्त हो, यह तो संभव ही नहीं लगता।



शासकीय सहयोग

नागरिक आपूर्ति

मेले की आवश्यकताओ को दृष्टि मे रखकर केन्द्र शासन ने कर्नाटक राज्य को तीस हजार टन गेहूँ, पन्द्रह हजार टन चावल और एक हजार टन शक्कर का अतिरिक्त कोटा प्रदान किया था। चन्नरायपाटन मे इस सामग्री का पर्याप्त भण्डारण किया गया। भारतीय तेल निगम द्वारा उपलब्ध कराई गयी केरोसिन और कुकिंग गैस के अलावा पाँच सौ ट्रक जलाऊ लकड़ी तथा भारी मात्रा में कोयले का भी भण्डारण किया गया। इन सभी वस्तुओं का विक्रय उचित मूल्य की दुकानो द्वारा कराया गया। बाजार मे निजी दुकानों पर भी प्रायः यह सारी सामग्री उन्हीं दामो पर मिल जाती थी।

कर्नाटक दुग्ध विकास निगम ने सभी उपनगरो मे, और मेले के अधिक भीड़ वाले प्रायः सभी स्थानो पर, बड़ी सख्या मे अपने विक्रय-केन्द्र स्थापित किये थे। निगम के निरन्तर दौड़ते वाहनो के द्वारा इन केन्द्रो को आवश्यक माल की पूर्ति की जाती थी। इन सभी केन्द्रों पर प्लास्टिक की थैलियो मे मशीनो से पैक किया गया दूध, बोतलो मे पैक मसाले वाला ठण्डा दूध, मक्खन और घी हमेशा उपलब्ध रहता था।

मेले मे बहुत सी दुकाने बाहर से आयी थी। इन दुकानो पर भी दैनन्दिन आवश्यकताओं की प्रायः सभी वस्तुएँ उचित मूल्य पर मिल जाती थी। कॉफी, इडली-बड़ा, और डोसा उपलब्ध कराने वाले छोटे-छोटे होटल सैकड़ो की सख्या मे चल रहे थे। अच्छे स्तर का उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय भोजन देने वाले भी कई होटल थे, जहाँ सुबह से लेकर देर रात तक भीड़ बनी रहती थी। कॉफी और चाय पचास पैसे से लेकर एक रुपये प्रति कप, इडली या डोसा एक-डेढ़ रुपया प्रति प्लेट और उत्तर भारतीय भोजन की थाली सामान्यतया चार-पाँच रुपये में मिल जाती थी। हर सौ कदम पर नारियल पानी पिलाने वाले, साइकिल पर नारियल लादे या सड़क के किनारे बैंठे मिल जाते थे। पचहत्तर पैसे से लेकर सवा रुपये तक में हमेशा हर जगह यह प्रकृति प्रदत्त स्वादिष्ट पेय प्राप्त होता रहा। गन्ने का रस भी प्रायः हर जगह आसानी से मिल रहा था।

पर्यटन विभाग ने एक चलित वाहन भोजनालय (मोबाइल होटल) भी चलाया था। मेले में कहीं भी चलते हुए इस वाहन को रोककर उचित दाम मे ताजा भोजन प्राप्त किया जा सकता था। दूर-दूर व्यवस्था के कामों में लगे हुए लोगो के लिए यह मोबाइल होटल विशेष उपयोगी रहा। जो लोग अपने स्टाल आदि छोड़कर होटल तक जाने का समय नहीं निकाल पाते थे उनके लिए भी इस व्यवस्था से पर्याप्त सुविधा हुई।

इसी प्रकार कॉफी बोर्ड की एक 'मोबाइल कॉफी शॉप' भी मेले मे जगह-जगह घूमती हुई लोगों को गरम काफी उपलब्ध कराती रहती थी।

बिजली व्यवस्था

कर्नाटक विद्युत मंडल की सुचारु सेवाएँ सराहनीय रहीं। पर्वत के दर्शनार्थी हों या मण्डप के श्रोता, उपनगरों में निवास करने वाले यात्री हो या भरतेश प्रदर्शनी के स्टालों और दुकानो के प्रबंधक, सबका यह अनुभव था कि बिजली की व्यवस्था सर्वाधिक प्रशंसनीय व्यवस्था रही है। दोनों पर्वतों पर, कल्याणी सरोवर पर, जैनमठ में और भण्डार बस्ती में, चामुण्डराय और भद्रबाहु मण्डपों में तथा विशाल क्षेत्र में फैले हुए उपनगरों में एक माह तक लगातार निर्बाध रूप से विद्युत आपूर्ति का बना रहना सभी के लिए एक स्मरणीय सुखद अनुभव था।

निकट से और बीच से गोमटस्वामी का दर्शन करने वालों के लिए उस विशाल विग्रह को प्रकाशित करने की, विंध्यगिरि और चन्द्रगिरि को हजारों ज्योति-मालाओं से सजाने की और श्रवणबेलगोल नगर तथा उसके आस-पास बसे हुए ग्यारह उपनगरों को अनवरत प्रकाशित रखने की ज़िम्मेदारी तो कर्नाटक विद्युत मण्डल पर थी ही, जल-प्रदाय के लिए पम्पों को बिजली देने और किसी अवरोध की दशा मे वैकल्पिक व्यवस्था लेकर तैयार रहने का उत्तरदायित्व भी उस पर था। मण्डल ने अपनी इन जिम्मेवारियो का बहुत शानदार ढग से निर्वाह किया। अपने निर्धारित कर्त्तव्यो की पूर्ति के लिए मण्डल को जो व्यवस्थायें करनी पड़ीं और उन पर जो व्यय हुआ उसका एक सामान्य लेखा-जोखा जान लेने पर ही उन प्रयत्नों का सही अनुमान हो सकेगा।

ग्यारह उपनगरो सहित पूरे मेला क्षेत्र में 1994 स्ट्रीट लाइट लगाई गयी थी। इस कार्य के लिए 248 किलोमीटर तार उपयोग मे लाये गये, 63 के० व्ही० ए० के 8 और 200 के० व्ही० ए० के दो ट्रान्सफर्मर लगाये गये। इन पर 25 लाख रुपया व्यय हुआ। 32 हज़ार के व्यय से श्रवणबेलगोल पहुँचने वाले प्रमुख मार्गों पर रोशनी की गयी। विंध्यगिरि की तलहटी में 100 के० व्ही० ए० के दो तथा मस्जिद के पास एक, इस प्रकार तीन अतिरिक्त ट्रान्स-फार्मर्स लगाये गये, ताकि आवश्यकता से अधिक दबाव पडने पर भी बिजली की पूर्ति बनी रहे। श्रवणबेलगोल नगरपालिका ने सडको की सजावट के लिए जो अतिरिक्त बिजली चाही उसकी पूर्ति के लिए 200 के० व्ही० ए० का एक और ट्रान्सफार्मर अलग से लगाया गया। बक्का टैंक में लगे हुए पम्प सैट, डिवीज़न ऑफिस के पास स्थापित किया गया बूस्टर पम्प, पर्वतों पर पानी पहुँचाने वाले अनेक पम्प दिन रात चलते रह सकें इसके लिए 63 के० व्ही० ए० के दो ट्रान्सफार्मर लगाये गये। 123 खम्भो के ऊपर से इस लाइन को ले जाने के लिए पैंतीस किलोमीटर तारों का उपयोग हुआ। इस सब में लगभग पौने दो लाख का व्यय हुआ।

इसके अतिरिक्त महोत्सव समिति के अनुरोध पर विंध्यगिरि और चन्द्रगिरि पर्वतो को 3900 फेस्टून बल्व और फ्लड लाइट लगाकर सजाया गया। 500 वाट के पाँच और 250 वॉट के नौ फ्लड लाइट लगाकर भगवान् बाहुबली पर वांछित दिशाओं से प्रकाश डाला गया ताकि रात्रि में भी अधिक से अधिक लोग उनके दर्शन का लाभ ले सकें। अतिरिक्त प्रकाश व्यवस्था के लिए अनेक स्थानो पर कुल 228 स्पेशल बल्ब लगाये गये। प्रदर्शनी को 140 किलोवॉट बिजली देने के लिए अलग से 200 के० व्ही० ए० का ट्रान्सफार्मर स्थापित किया गया। लगभग 10 किलोमीटर वायर को 143 खम्भों पर खींचकर यह व्यवस्था की गयी।

विद्युत मण्डल ने अपनी ओर से पूरे मेलानगर में स्ट्रीट लाइट लगाई थी, विंध्यगिरि की दक्षिणी सीढ़ियों पर प्रकाश व्यवस्था की थी, और मार्ग के दोनों ओर रंग-बिरंगी झालर से सजावट की थी। मण्डल के द्वारा कल्याणी-सरोवर के सामने हजारों हरे बल्बो से जगमगाता एक विशाल कलात्मक स्वागत द्वार बनाया था। रात्रि में दूर-दूर से इस 'ग्रीन-पण्डाल' की मनोहर छटा अलग ही दिखाई देती थी। मुझे बताया गया कि मैसूर के प्रसिद्ध दशहरे की सज्जा में यह द्वार प्रतिवर्ष सजाया जाता है। अन्यत्र कहीं भी, कभी इसका उपयोग नहीं किया गया। पहली बार मैसूर के बाहर श्रवणबेलगोल में यह ग्रीन पण्डाल सजाया गया था।

विन्ध्यगिरि पर पीछे के रास्ते से उतरने के लिए सीढ़ियाँ नही थी। 1967 के मस्तकाभिषेक के अवसर पर वहाँ सीढ़ियो का निर्माण हुआ परन्तु मार्ग पर इतना अंधेरा रहता था कि रात को उस रास्ते से आना सभव नहीं था। इस मेले के अवसर पर कर्नाटक शासन ने इस पथ को भी प्रकाशित किया। कर्नाटक विद्युत मण्डल द्वारा लगाई गयी इस बिजली का उद्‌घाटन कर्नाटक के ऊर्जा मन्त्री श्री अस्वत्थ रेड्डी के हाथो से 16 फरवरी की रात्रि को हुआ। महोत्सव समिति की ओर से इस योगदान के लिए कर्नाटक शासन का आभार मानते हुए उसी अवसर पर श्री रेड्डी का सम्मान किया गया।

विद्युत मंडल के सक्षम अधिकारियो ने बडे सुविचारित और संयोजित ढंग से लगभग छः महीने के प्रयत्नो से सारे कार्य पूरे किये। अगस्त 1980 मे उन्होने अपनी तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी थीं। मेला प्रारम्भ होने के लगभग चार सप्ताह पूर्व, जनवरी 1980 तक मण्डल ने सारी व्यवस्था पूरी कर ली। यहाँ यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि मण्डल के पास सामग्री का अभाव होते हुए भी प्रदेश के कोने-कोने से मेले की व्यवस्था के लिए साधन जुटाये गये। बड़ी संख्या में अस्थाई नियुक्तियाँ की गयी।

पूरे मेला कार्य मे विद्युत आपूर्ति बनाये रखने के लिए सतत जागरूकता बनाये रखना भी एक बडा काम था। आवश्यकता पडने पर अनेक स्रोतो से मेला-नगर तक बिजली पहुँचाने की वैकल्पिक व्यवस्था की गयी थी। 10 के० व्ही० ए० के चार जेनरेटर भी तैयार रखे गए थे तथा ऐसी फिटिंग की गयी थी कि आवश्यकता पड़ने पर उनसे पूरे मेले मे आवश्यक स्थानों तक प्रकाश पहुँचाया जा सके और अनिवार्य सेवाएँ जारी रखी जा सकें। परन्तु अधिकारियो की दूरदर्शिता और सेवाभावी कर्मचारियो की मुस्तैदी के कारण, एक माह के भीतर एक बार भी इन साधनों का सहारा लेने की आवश्यकता नही पडी। महोत्सव के लिए यह सारी व्यवस्था करने में मण्डल के शीर्षस्थ अधिकारियो के अलावा 13 सहायक कार्यपालन यन्त्री, 20 सहायक यन्त्री और 570 कुशल कर्मचारियो की सेवाओ का उपयोग किया गया।

चामुण्डराय मण्डप तथा भद्रबाहु मण्डप को छोड़कर सारे श्रवणबेलगोल में जहाँ कहीं जितनी भी बिजली दिखाई देती थी वह सब उडुपी के 'श्री मंजुनाथ इलेक्ट्रिक स्टोर्स' ने प्रस्तुत की थी। दोनों पर्वतो पर सभी मन्दिरो में, कल्याणी सरोवर पर, मठ मंदिर में, और सभी उपनगरों में, जहाँ भी जो भी सजावट दिखाई देती थी वह इसी एक ठेकेदार ने पूरी की थी। इस फर्म के संचालक श्री देवराज स्वयं बहुत सेवा भावी और व्यवहार कुशल व्यक्ति हैं। लगभग पौने दो लाख रुपये का यह काम करते हुए भी वे स्वयं दिन और रात अच्छी से अच्छी सेवायें देने में लगे रहते थे। दूर-दूर तक लगाई गयी सामग्री की रक्षा के लिए और

आवश्यक सेवाओं के लिए पूरे मेले में उनके लगभग सौ सहयोगी निरन्तर ड्यूटी पर रहते थे। जहाँ कहीं भी आवश्यकता होती, सूचना देते ही अस्त-व्यस्त, धूल-धूसरित बड़े-बड़े बाल बिखेरे श्री देवराज स्वयं मिनटों मे उपस्थित हो जाते और अपनी टीम को तत्काल वहाँ काम पर लगा देते थे।

जल-व्यवस्था

मेले के लिए तीन किलोमीटर दूर 'बक्का टैंक' से जल आपूर्ति की व्यवस्था की गयी थी। संक्रामक रोगों और दुर्घटनाओ की आशंका से कल्याणी सरोवर को बन्द ही रखा गया। कमेटी द्वारा लगभग दो लाख रुपया खर्च करके कल्याणी की सफाई और उसके परकोटे तथा गोपुरम् की मरम्मत कराकर बीच में फुहारे लगाए गये थे जो दूर से आकर्षक जल-वृक्ष की तरह दिखाई देते थे। सरोवर मे भीतर और बाहर चारो ओर बिजली की आकर्षक सजावट की गयी थी, परन्तु अन्दर सीढियो तक जाने के मार्ग बन्द कर दिये गये थे।

उपनगरों में पेयजल की आपूर्ति के लिए नलकूपो का सहारा लिया गया। कुल मिलाकर चालीस नलकूप खोदे गये जिनमे आठ असफल रहे। बत्तीस नलकूपो से पानी की अबाधित आपूर्ति होती रही। उपनगरो मे स्नानागारो तथा जलसग्रह केन्द्रो पर नल टोटियों के द्वारा पानी पहुँचता था। जहाँ जरा भी कमी की सूचना मिलती वहाँ तत्काल पानी पहुँचाने के लिए मोटर टैंकर तैयार रखे गये थे। समय-समय पर उनकी सेवाएँ ली जाती थी।

भारतीय तेल निगम

भारतीय तेल निगम ने मेले की आवश्यकता की पूर्ति के लिए चन्नरायपाटन रोड पर, बंगलोर रोड पर और बस स्टेण्ड पर, इस प्रकार कुल तीन अस्थायी डीज़ल व पेट्रोल पम्प लगाये थे। मेले के दोनों छोरो पर निगम के सभी उत्पादन बिक्री के लिए उपलब्ध थे। सभी उपनगरो मे तथा मेले में कई जगह मिट्टी के तेल की बिक्री के लिए सोलह विक्रय-केन्द्र खुले थे। रिक्शा टैंकों में रखकर मिट्टी का तेल उपभोक्ताओं तक घर-घर भी पहुँचाया जाता था। निगम ने भोजन पकाने की गैस के सिलेण्डर और चूल्हे भी मेले मे वितरित किये थे। इस प्रकार कैरोसिन, डीज़ल, पेट्रोल और गैस मनचाही मात्रा में, निर्धारित दामों पर पूरे समय उपलब्ध रहा। निगम ने इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की।

सामान्य सुविधाएँ

सफाई और रोग निरोधक व्यवस्थाओं के लिए शासन द्वारा चन्नरायपाटन और श्रवणबेलगोल नगरपालिकाओं को पन्द्रह लाख के विशिष्ट अनुदान दिये गये। दोनो नगरपालिकाओं ने यात्रियो की सुख-सुविधा के लिए अपनी क्षमता से अधिक प्रबन्ध किये। गन्दगी या दुर्गन्ध आदि की कोई शिकायत मेले में नहीं हुई। चन्नरायपाटन श्रवणबेलगोल के बीच नगर बस सेवा (लोकल बस सर्विस) दिन-रात चलती थी। श्रवणबेलगोल नगरपालिका ने मेले के अवसर पर यात्री कर लगाने का प्रस्ताव पारित किया। समाज की ओर से इस टैक्स का विरोध किया गया। अतः नगरपालिका यह टैक्स वसूल नहीं कर पाई। नगरपालिका को सफाई आदि के बजट के लिए स्टेट लेविल कमेटी ने भी पर्याप्त आर्थिक अनुदान उपलब्ध कराये।

यातायात

मेले में चारों ओर से पहुँचने वाली भीड़ का अनुमान करके यातायात की व्यवस्था अनुभवी अधिकारियो की देखरेख में की गई थी। बंगलोर में स्टेशन पर तथा बस स्टैण्ड पर हिन्दी, अंग्रेजी और कन्नड में पूछ-ताछ काउण्टर की व्यवस्था के साथ यात्रियो के ठहराने का भी प्रबन्ध किया गया था। स्वयंसेवी संस्थाएँ उनके आराम की देखभाल करती थीं। हासन, चन्नरायपाटन और आरसीकेरे मे भी ऐसे 'ट्रान्जिट कैम्प' तैयार किये गये थे। नियमित बस सेवा के अलावा भी इन सभी स्थानो से, श्रवणबेलगोल के लिए तीस से अधिक सवारियाँ होते ही यात्रियों को विशेष बस उपलब्ध करा दी जाती थी। 'कर्नाटक राज्य सड़क परिवहन निगम' और कर्नाटक पर्यटन विकास निगम द्वारा अनेक केन्द्रो से श्रवणबेलगोल के लिए भारी सख्या में नियमित बसें चलाई जा रही थी।

इस अवसर पर यात्रियो की भारी सख्या का विचार करते हुए तमिलनाडु और केरल से बसो और विशेष वाहनो का प्रबन्ध किया गया था। महाराष्ट्र से भी कुछ लगजरी बसें मेले मे बुलाई गई थी।

कर्नाटक रोड अथारिटी ने प्रान्त के बाहर से आने वाले वाहनो पर नियमानुसार रोड टैक्स वसूल करना प्रारभ किया। इसमे यात्रियों मे बहुत असतोष परिलक्षित हुआ। एक बस पर कम-से-कम यह टैक्स 3000/- रुपये होता था। अधिकतम राशि आठ-दस हजार तक पहुँच जाती थी। महोत्सव समिति ने अपने अध्यक्ष के माध्यम से इस वसूली के विरुद्ध आवाज उठाई। कर्नाटक के सवेदनशील मुख्यमन्त्री ने यात्रियो के इस असतोष को गम्भीरता पूर्वक समझा और मेले मे लगने वाला रोड टैक्स माफ कर दिया। इतना ही नही, जो राशि रोड टैक्स के रूप में बाहर के वाहनो से वसूल की जा चुकी थी वह यात्रियो को वापिस लोटाई गयी।

इधर बगलोर मे और उधर हासन से श्रवणबेलगोल तक पूरी सड़क पर मुख्य-मुख्य स्थानो मे संकेत सूचक बोर्ड लगाये गये थे। इन बोर्डों पर गोमट स्वामी के रेखाचित्र बने थे और दिशा-सकेत के साथ-साथ स्वागत वाक्य भी लिखे थे। हासन और आरसीकेरे मे स्टेशनो पर जो यात्री स्पेशल ट्रेनें आकर रुकी थी उनके यात्रियो के लिए आवश्यक सुविधाओ की व्यवस्था, पूरे आतिथ्य के साथ उन स्थानो की समाज ने की थी। पुलिस का भी वहाँ पर्याप्त प्रबन्ध रहा।

चारो ओर सड़को की मरम्मत कराकर उन्हे चौड़ा किया गया था। अनुमान किया जाता है कि सड़क परिवहन निगम की चार सौ से अधिक बसें इन सड़को पर लगातार दौड़ रही थी। प्राइवेट बसें और टूरिस्ट एजेंसियो के द्वारा चलाये जाने वाले कोच, मैटाडोर आदि वाहन इसके अतिरिक्त थे।

हासन, आरसीकेरे और बगलोर के बस स्टेण्ड सारी सामान्य सुविधाओ से लैस, दूर से आने वाले यात्रियो का स्वागत करने और यथाशीघ्र उन्हे गोमटस्वामी के चरणो तक पहुँचाने के लिए सक्षम बनाये गये थे। यहाँ से थोड़ी-थोड़ी देर पर श्रवणबेलगोल के लिए बसें उपलब्ध होती थीं।

बंगलोर का बस स्टेण्ड रेलवे स्टेशन के सामने ही है अतः यात्री प्रायः रेल से उतरकर

सीधे बस की तलाश में पहुँच जाते थे। वहाँ बस स्टैण्ड पर शौचालय, स्नानगृह, क्लाक रूम और पीने के पानी की उत्तम व्यवस्था उन्हें मिली। हर जगह कन्नड़ के साथ अंग्रेजी-हिन्दी के सूचना-पट विशेष रूप से लगाये गये थे। पूछ-ताछ काउण्टर पर हिन्दी जानने वाले कर्मचारी भी तैनात रहते थे।

जो यात्री बंगलोर घूमकर जाना चाहते थे वे श्रवणबेलगोल के लिए अग्रिम आरक्षण करा सकते थे। निर्धारित समय पर चलने वाली बसो के अतिरिक्त, तीस तक सवारियाँ हो जाने पर, किसी भी समय विशेष बस उपलब्ध करा दी जाती थी। अधिक भीड के दिनो मे रेलवे स्टेशन पर भी बसें उपलब्ध कराई गई।

रेल यातायात में बगलोर, मैसूर और हासन से आरसीकेरे के लिए पर्याप्त सेवाएँ उपलब्ध कराई गयी थीं। यात्रियो को गतव्य स्थान के टिकिट और आरक्षण सुविधापूर्वक प्राप्त कराने के लिए उच्च अधिकारियो की देखरेख मे अस्थायी रिज़र्वेशन काउण्टर बनाये गये थे।

इस अवसर पर रेलवे ने जैन तीर्थों को जोड़ने वाले 'सर्किट-टूर टिकिट' भी निकाले थे। बड़ी लाइन पर 8058 किलोमीटर का पहला टूर टिकिट रु० 201/- का तथा बडी-छोटी दोनों लाइनो से 6606 किलोमीटर का दूसरा टिकिट 167/- का था। दोनो की यात्रा-अवधि तीन मास थी।

हवाई यात्रा के लिए इण्डियन एअर लाइन्स ने दिल्ली-बगलोर के बीच चलने वाली नियमित उड़ानों मे एक सप्ताह के लिए 'बोइग 737' यान के स्थान पर तीन सौ से अधिक यात्री क्षमता वाली 'एअर बस' चलाकर हवाई यात्रा को सहज उपलब्ध और सुगम बना दिया था।

आकाशवाणी

महोत्सव को प्रचार-प्रसार देकर और देश के कोने-कोने मे करोड़ो लोगो तक मस्तकाभिषेक का आँखों देखा हाल पहुँचाकर आकाशवाणी ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। 21 फरवरी को श्रीमती इंदिरा गाँधी ने गोमटस्वामी पर पुष्पवृष्टि की और विशाल जनसभा को सबोधित करते हुए जैन सस्कृति का जो गुणगान किया, उसकी विस्तृत रेडियो रिपोर्ट का उसी रात्रि साढ़े नौ बजे से आकाशवाणी के सभी प्रमुख केन्द्रो से प्रसारण हुआ।

22 फरवरी को प्रातः 8-20 से 9-20 तक और 11-30 से 12-30 तक हिन्दी में महोत्सव का आँखों देखा हाल देश के प्रायः सभी केन्द्रो से प्रसारित किया गया। उसी दिन 9-20 से 10-30 तक और 11-30 से 14-30 तक कन्नड़ में भी यह प्रसारण कर्नाटक के केन्द्रों से हुआ। आँखों देखा हाल का यह प्रसारण सर्वश्री एस० आर० राव, हम्पा नागराजैया, एच० बी० ज्वालनैया, लक्ष्मीचद्र जैन और एम० के० धर्मराज ने किया। हिन्दी, कन्नड़ और अंग्रेजी के समाचार बुलेटिन भी समय-समय पर महोत्सव के कार्यक्रमो का उल्लेख करते रहे। वास्तव में इस अवसर पर देश के अनेक केन्द्रों ने श्रवणबेलगोल पर विभिन्न कार्यक्रम दिये। दिल्ली केन्द्र से 'पाषाण बोलते हैं' शीर्षक से एक वार्तामाला का प्रसारण हुआ जिसमें श्रवणबेलगोल तथा भरत और बाहुबली के संबंध में ऐतिहासिक घटनाएँ और आख्यान प्रसारित किये गये। रीवा केन्द्र से 30-1-81 को श्री नीरज जैन की वार्ता प्रसारित की गयी 'हमारा सांस्कृतिक केन्द्र श्रवणबेलगोल'। इस वार्ता में श्रवणबेलगोल की ऐतिहासिकता पर प्रकाश

डालते हुए महोत्सव की योजना स्पष्ट की गयी। कुछ अन्य स्टेशनों ने किसानों की चौपाल में, मजदूरों के कार्यक्रम में और महिलाओं तथा बच्चों के कार्यक्रमों में भी श्रवणबेलगोल की चर्चा को स्थान दिया।

आकाशवाणी के कर्नाटक स्थित केन्द्रो ने महामस्तकाभिषेक के बारे मे सर्वाधिक कार्यक्रम दिये। दिनांक 20-2-81 को प्रातः महामस्तकाभिषेक के सम्बन्ध में मुख्यमन्त्री गुण्डूराव का संदेश 'जनसेवा जनार्दन सेवा है' कन्नड़ और अंग्रेजी में प्रसारित हुआ। बीच में श्रीनिवास कुलकर्णी द्वारा इसी विषय पर एक प्रहसन प्रसारित हुआ। उसी सभा में 'चिन्तन' में जैन धर्म के सिद्धान्तो को दुहराया गया। शनिवार 21-2-81 को प्रातः चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी की वार्ता और सायंकाल नवीन बाहुबली-मूर्तियो के शिल्पी श्री रंजनगोपाल शिनाय से भेंट वार्ता प्रसारित की गयी। इसी रात्रि को श्रवणबेलगोल मे जनमंगल महाकलश की स्वागत सभा और श्रीमती गाँधी के कार्यक्रमो की रेडियो रिपोर्ट प्रसारित हुई।

मुख्य अभिषेक के दिन, रविवार 22-2-81 को प्रातः का प्रसारण एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी की वार्ता 'चिन्तन' से प्रारम्भ हुआ। अभिषेक का आँखों देखा हाल 8-20 से 14-30 तक प्रसारित होता रहा। शाम को एक रेडियो नाटक प्रस्तुत किया गया।

दूरदर्शन पर मस्तकाभिषेक की सतरंगी छवियाँ क्लोज सर्किट टी० व्ही० के द्वारा मेला नगर में, चन्द्रगिरि पर्वत पर और सभी उपनगरो मे दिखाई गयीं। दिल्ली केन्द्र से दूरदर्शन के नेशनल प्रोग्राम मे भी महोत्सव की झाँकियाँ सम्मिलित की गयीं।

सुरक्षा और शान्ति-व्यवस्था

पूरे मेला क्षेत्र को शान्ति और सुरक्षा के लिए एक पुलिस उप महानिरीक्षक के अतर्गत, पाँच पुलिस अधीक्षक क्षेत्रो मे विभाजित किया गया था। केन्द्रीय पुलिस थानो के अतिरिक्त प्रत्येक उपनगर मे एक-एक पुलिस चौकी, तथा निरन्तर गतिमान पुलिस वाहन, शान्ति और सुरक्षा की व्यवस्था देखते थे। लगभग साढे तीन हजार पुलिस कर्मचारी इस व्यवस्था मे सलग्न थे। नगरसेना (होम गार्ड) के जवानो और गुप्तचर शाखा के लोगो को मिलाकर पुलिस बल की पूरी संख्या पाँच हजार के आस-पास थी। इन सबके रहने-ठहरने और भोजनादि के लिए पुलिस विभाग का स्वतत्र प्रबध था। पूरा क्षेत्र वायरलैस से सम्बद्ध था। प्रधानमन्त्री के कार्यक्रम, मुख्य अभिषेक तथा कुछ अन्य कार्यक्रमो पर देख-रेख के लिए क्लोज सर्किट टी० व्ही० का भी उपयोग किया गया। ऐसी सघन और सतर्क व्यवस्था का परिणाम था कि इतने बड़े मेले में कोई संगीन घटना, हत्या, अपहरण, चोरी, बदमाशी या भगदड़ और किसी प्रकार की जन-हानि नही हुई। यात्रियो ने मेले मे और मार्ग मे हर जगह, दिन और रात हर समय, अपने आपको सुरक्षित और निश्चित महसूस किया।

आवासीय व्यवस्था

यात्रियो को ठहराने की रूपरेखा बनाने के लिए पहिले से एक प्लानिंग कमेटी बनाई गयी थी। धर्मस्थल के धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगड़े इस कमेटी के अध्यक्ष थे। उनके साथ भट्टारक स्वामीजी और कर्नाटक शासन के डिप्टी चीफ आर्किटेक्ट श्री के० एस० दास भी कमेटी में थे।

1. 'ए' श्रेणी के 'स्विच काटेज' में 12 × 12 फुट का एक कमरा और 12 × 6 फुट के दो कमरे, इस प्रकार कुल तीन कमरे थे। रसोई घर, स्नानघर और शौचालय हर काटेज के साथ संलग्न था। काटेज मे एक बड़ी दरी भी दी जाती थी। 10 फरवरी से 9 मार्च 81 तक पूरे सीजन के लिए इसका किराया छह सौ पचास रुपया रखा गया था। इसमें सात यात्री सुविधापूर्वक रह सकते थे।

2. 'बी' श्रेणी के आवास को 'आई० पी० टेन्ट' कहा गया। 18 × 18 फुट के एक बडे कमरे वाले इस तम्बू के साथ रसोई और स्नानघर तो था परन्तु शौचालय सामूहिक था। दरी इसके साथ भी दी गयी। पूरे सीजन के लिए इसका किराया चार सौ पचास रुपये था। इसमे भी सात व्यक्तियो के आवास की सुविधा थी।

3. 'सी' श्रेणी के आवास मे सिर्फ एक 'छोलदारी' लगाकर उसमे एक चटाई दी गयी। इनमें ठहरने वालों के लिए रसोईघर, स्नानघर और शौचालय की सामूहिक व्यवस्था थी। पूरे सीजन का छोलदारी का किराया एक सौ पच्चीस रुपये था। इसमे भी पाँच-सात लोग निर्वाह कर सकते थे।

4 प्राय. हर एक उपनगर मे कुछ बड़े शामियाने खडे करके उन्हे कनातो से घेर कर कुछ 'डारमेटरी' तैयार की गयी थी। इसमें पचास-साठ लोग आराम से ठहर जाते थे। किराया दो रुपया प्रति व्यक्ति, प्रतिदिन, लिया जाता था। डारमेटरी मे ठहरने वालो को रसोई, स्नान आदि की समूहगत व्यवस्था थी।

यात्रियों को ठहरने के लिए ये सारे उपनगर कर्नाटक शासन की योजना के अनुसार बसाये गये थे। किराये की राशि आवेदनपत्रो के साथ बैंक ड्राफ्ट द्वारा, हासन के डिप्टी कमिश्नर के नाम पर जमा कराना पड़ती थी। बहुत से आवासो का अग्रिम आरक्षण हो चुका था। परन्तु मेले के समय तत्काल भी आवास उपलब्ध होते रहे।

श्रवणबेलगोल पहुँचकर जो लोग आवास प्राप्त करना चाहते थे उनकी सुविधा के लिए कारपोरेशन बैंक ने कमेटी के कार्यालय मे ही एक छोटा काउन्टर खोल दिया था। इस काउन्टर पर चौबीसो घण्टे किराये की राशि जमा करके हाथो-हाथ बैंक ड्राफ्ट दे दिये जाते थे, जिनके आधार पर उसी समय आवासो का आबटन हो जाता था। आबटन के लिए शासन की ओर से कमेटी के सेक्रेटरी को अधिकृत कर दिया गया था।

'ए' श्रेणी के सभी आवास मेले के पूर्व ही आरक्षित हो चुके थे। एक पूरा नगर शासन ने अपने अधिकारियो के लिए भाडा देकर अधिगृहीत कर लिया था। दो नगरो मे केवल 'ए' श्रेणी के ही निवास बनाये गये थे। शेष नगरो मे प्राय चारो प्रकार के आवास थे जो मेला प्रारम्भ होने पर भी उपलब्ध रहे। कुछ आमन्त्रित व्यक्तियों को ठहराने के लिए कमेटी की ओर से राशि जमा कराकर 'ए' और 'बी' श्रेणी के कुछ निवास आरक्षित करा लिये गये थे।

प्रत्येक उपनगर मे भोजनालय, मिल्क बूथ, तेल, शक्कर, अनाज आदि की दुकानें, पुलिस चौकी, सूचना कार्यालय, डाकघर, अस्पताल, बिजली, पानी, टेलीफोन और शार्ट-सर्किट टेलीविजन की व्यवस्था की गयी थी। प्रत्येक उपनगर के प्रवेश द्वार पर पूरे मेला-नगर का नक्शा लगा था। सूचना कार्यालय, प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र और पुलिस चौकी रात-दिन खुली रहती थी।

इन उपनगरों के लिए कर्नाटक शासन ने बिजली, पानी, सफाई और सुरक्षा की उत्तम व्यवस्था की थी। फूस के झोंपडे बनाकर उपनगरों की जो योजना शासकीय प्रस्ताव के अनुसार 120 लाख रुपये में साकार होने जा रही थी, उसे कमेटी के नवीन प्रस्ताव के अनुसार टेन्टों के नगर बनाकर 45 लाख रुपये में कार्यान्वित कर दिया गया। इस प्रकार बजट में 75 लाख रुपये की बचत करने में सफलता मिली। यह बात और महत्त्वपूर्ण है कि टेन्टों, छोलदारियो और शामियानो की यह व्यवस्था यात्रियों के लिए फूस की झोपड़ियो की अपेक्षा बहुत सुरक्षित और आरामदायक रही। इस व्यवस्था मे सफाई आदि का प्रबन्ध भी आसानी से हो जाता था।

कर्नाटक शासन ने आवास-व्यवस्था में घाटा होने की स्थिति में उसकी पूर्ति के लिए अधिकतम रुपये 20 लाख की पूर्ति करने का प्रावधान किया था। यह घाटा 28 लाख का रहा। शासन ने अपने आश्वासन के अनुसार 20 लाख की पूर्ति तत्काल कर दी। शेष 8 लाख रुपया भी शासन से प्राप्त करने के लिए कमेटी का आवेदन-पत्र शासन के समक्ष विचाराधीन है।

खुली हवा, निरोग वातावरण और सफाई की सुविधाओ को देखते हुए यद्यपि उपनगरो की यह व्यवस्था अपने-आप मे बहुत अच्छी थी, परन्तु उपनगरो की परस्पर दूरी और आवागमन के साधनो के अभाव से यात्रियो को कष्ट का अनुभव हुआ। उपनगरो को जोडने वाली कोई वाहन सेवा मेले मे उपलब्ध नही थी। टैक्सियो और प्राइवेट कारों का भी मेला नगर में प्रवेश वर्जित था। एक स्थान से दूसरे स्थान तक आने-जाने के लिए पैदल ही चलना पडता था जो अनभ्यस्त लोगो के लिए, तथा वृद्धों, बालकों और महिलाओं के लिए कष्टकर हो जाता था। जिन्हे सामान लेकर चलना पडता था उनके लिए तो यह यात्रा खासी समस्या हो जाती थी।

केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग का योगदान

श्रवणबेलगोल के प्राचीन स्थापत्य के सरक्षण के लिए केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग सदैव सक्रिय रहा है। विंध्यगिरि पर गोमटस्वामी की मूर्ति और चन्द्रगिरि पर चन्द्रगुप्त बस्ती, पार्श्वनाथ बस्ती और चामुण्डराय बस्ती केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा सरक्षित हैं। मन्दिरो के नित्यप्रति के रख-रखाव मे विभाग का मार्गदर्शन कमेटी को और मठ को सदा प्राप्त होता रहता है। महामस्तकाभिषेक के अवसर पर विभाग ने अधिक सक्रिय होकर कार्य किया। सरक्षण शाखा के योग्य अधिकारी और अनेक कर्मचारी कई सप्ताहो तक श्रवणबेलगोल मे रहे। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के निदेशक श्री बालकृष्ण थापर ने विशेष रुचि लेकर उत्सव के सदर्भ मे कमेटी का मार्गदर्शन किया और वहाँ अनेक कार्य पूरे कराये।

गोमटेश्वर मूर्ति के दाहिने, बाँये और पीछे की तरफ छत पर लाल रग के टाइल्स लगाकर तीनो छतों को सजाया और सुरक्षित किया गया। इसी प्रकार के टाइल्स चन्द्रगिरि पर चामुण्डराय बस्ती की छत पर भी लगाये गये। चन्द्रगुप्त बस्ती की सफाई करके ऊपर से वाटर प्रूफिंग का कार्य भी कराया गया। चामुण्डराय बस्ती मे भी यह काम करने की योजना बनाई गयी परन्तु समयाभाव के कारण चन्द्रगिरि पर यह कार्य अधूरा छोड़ना पड़ा। बाद में

उनकी पूर्ति का प्रावधान किया गया। चन्द्रगिरि पर विभाग की ओर से जगह-जगह फूल पौधे आदि लगाकर छोटे बगीचे की योजना की गयी। निश्चित ही इस प्रयास से मन्दिरों का प्रांगण अधिक सुन्दर लगने लगा है।

चन्द्रगिरि पर पार्श्वनाथ मन्दिर केन्द्रीय पुरातत्व विभाग के सरंक्षण में है। महोत्सव के पूर्व उसका जीर्णोद्धार कराया गया। पार्श्वनाथ भगवान की विशाल प्रतिमा के सामने, गर्भ-गृह का प्रवेशद्वार इतना संकरा था कि मण्डप में से पूरी प्रतिमा का दर्शन अधिक लोग नही कर सकते थे। यह द्वार पहले पर्याप्त चौडा था परन्तु ऊपर पत्थर की बीम चटक जाने के कारण, नीचे से ईंट-चूने की मोटी दीवार उठाकर उसे सम्भल दिया गया था, इससे द्वार की चौडाई बहुत कम हो गई थी। जीर्णोद्धार के समय ऊपर बीम की जगह लोहे का गार्डर डाल-कर दीवार हटा दी गई। मूर्ति के नीचे कमल पुष्प भी ढका हुआ था। उसे ढकने वाली चिनाई को भी तोड़ दिया गया। इस जीर्णोद्धार से पूरी प्रतिमा का निर्विघ्न दर्शन होने लगा।

सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य, जो केन्द्रीय पुरातत्व विभाग ने किया, वह गोमटेश्वर बाहुबली की मूर्ति के सरक्षण की दिशा में है। 30-1-81 को पुरातत्त्व अधिकारी श्री एल० के० श्रीनिवासन ने स्वामीजी को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि मूर्ति के अभिषेक मे घी का उपयोग न किया जाये तो अधिक अच्छा हो। इसी प्रकार भारत वर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने हेलीकॉप्टर बुलाकर सात दिन तक मूर्ति पर पुष्प वर्षा कराने का कार्यक्रम बनाया था। दिनाक 22-2-81 से प्रति व्यक्ति ढाई हजार रुपये लेकर पुष्प वर्षा कराना निर्धारित किया गया। कमेटी को इसमे अच्छी आय होने की सभावना थी, परन्तु पुरातत्त्व विभाग ने इस पर आपत्ति करते हुए कमेटी को परामर्श दिया कि एक निश्चित दूरी से सिर्फ प्रधानमन्त्री के हेलीकॉप्टर को निकालकर सावधानीपूर्वक पुष्प वर्षा करा दी जाये, परन्तु अन्य कोई उडान विंध्यगिरि के ऊपर नही की जाये। इस परामर्श के अनुसार पुष्प-वर्षा का कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया।

मस्तकाभिषेक के कुछ दिन पूर्व विभाग ने पूरी मूर्ति पर तेल की तरह पारदर्शी रसायनो का अनुलेपन किया जो मूर्ति पर अलग से लक्षित नही होता और मूर्ति की भीतरी तह में आर्द्रता को पहुँचने से रोकता है। अभिषेक के बाद पुरातत्व विभाग ने ही प्रतिमा को अपने साधनो से स्वच्छ भी किया। उनका विश्वास है कि अभिषेक के पूर्व और पश्चात् इतनी सावधानी बरतना प्रतिमा के क्षरण को रोकने के लिए बहुत आवश्यक है।

कर्नाटक पुरातत्त्व विभाग की सेवाएँ

श्रवणबेलगोल नगर से लगभग एक किलोमीटर उत्तर मे जिननाथपुरम ग्राम अवस्थित है। यहाँ शान्तीश्वर बस्ती नाम से प्रसिद्ध एक प्राचीन सुन्दर मन्दिर है। वास्तव मे बाह्य भित्तियो पर उकेरी गयी मूर्तियो और भीतरी मण्डप में खरादे गये मोटे खम्भो की विशेषता लिये हुए होयसल स्थापत्य कला का यह एक ही उदाहरण श्रवणबेलगोल मे पाया जाता है। जिननाथ-पुरम का यह मन्दिर कर्नाटक राज्य पुरातत्त्व विभाग द्वारा संरक्षित था परन्तु इसकी स्थिति अच्छी नहीं थी। चारों ओर से ग्रामवासियो ने मन्दिर के आस-पास की भूमि पर अतिक्रमण कर लिया था। मन्दिर की छत गिर गयी थी और शिखर नष्ट हो चुका था। गाँव के उपद्रवी बालकों ने परिक्रमा की प्रतिमाओं को कई प्रकार से विद्रूपित भी कर दिया था।

महोत्सव के अवसर पर राज्य स्तरीय समिति की बैठकों में नीरज जैन द्वारा मन्दिर की

हालत सुधारने और इसकी देख-रेख एस०डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी को सौंपने का प्रस्ताव किया गया। उन्होने इस महत्त्वपूर्ण मन्दिर की दुरवस्था पर गहरी चिन्ता प्रकट की। श्री जैन के प्रस्ताव को समिति मे काफी समर्थन मिला और तब विभाग इस दिशा में सक्रिय हुआ। चारों ओर के अतिक्रमण हटाये गये। कुछ भूमि का अधिग्रहण किया गया और मन्दिर के चारो और परकोटे का निर्माण कराया गया। सीमेट की छत डालकर भित्तियो को विनाश से बचाने की कोशिश और मन्दिर पर रात दिन रखवाली की व्यवस्था की गयी। यह भी ज्ञात हुआ कि बाद मे रख रखाव और व्यवस्था के लिए यह मन्दिर कर्नाटक शासन ने कमेटी को सौंप दिया है। चन्द्रगिरि से इस मन्दिर तक मार्ग बना देने पर इसे चन्द्रगिरि की वंदना का अंग बनाया जा सकता है। इम प्रकार श्रवणबेलगोल के हर यात्री को कला की इस एक और धरोहर का दर्शन अनायास मिलने लगेगा।

स्कूल भवन मे विभाग ने जैन मूर्तियो की एक पुरातत्त्व-प्रदर्शनी लगाई थी। प्रदर्शनी के लिए कम्बद हल्ली, हलेबीड, लखुण्डी आदि स्थानो की सामग्री जुटाई गयी थी। मेले मे लाखो यात्रियो ने इस प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

संचार-सेवाएँ डाक विभाग

डाक तार विभाग ने नगर के स्थायी डाकघर के अतिरिक्त उपनगर क्रमाक 3,5,7,8, और 10 मे, तथा प्रदर्शनी मैदान मे, ऐसे कुल छह पूर्ण-कालिक उप-डाकघर खोले थे। इनमें डाकखाने की सभी सामान्य सेवाएँ उपलब्ध कराई गयी थी तथा तार भी लिए जाते थे। सार्व-जनिक टेलीफोन बूथ भी इन डाक घरो मे बनाये गये थे।

शेष छह उपनगरो क्रमाक 1,2,4,6,9 और 11 को सचारी डाकघर की सेवाओ से जोड़ा गया था। यह पोस्ट ऑफिस वैन प्रतिदिन निर्धारित समय पर पौन घण्टे के लिए हरेक उपनगर मे ठहरती थी। इस सचारी डाक घर मे भी रजिस्ट्री, पार्सल, मनीआर्डर, बचत खाता, बीमा आदि की सारी सुविधाएँ उपलब्ध थी।

डाक वितरण के लिए डाकिये सभी उपनगरो मे जाकर प्रतिदिन डाक पहुँचाते थे।

तार-टेलेक्स

हेमावती प्रोजेक्ट के एक क्वार्टर मे 'कैम्प तार घर' खोला गया था। यह चौबीसों घंटे कार्यरत रहता था। हिन्दी टेलिप्रिंटर द्वारा बम्बई से और अंग्रेजी टेलिप्रिंटर द्वारा बगलोर से इस तार घर का सीधा सम्पर्क था। इसलिए तारों का आना-जाना बिना किसी रुकावट के होता रहता था। उसी क्वार्टर मे टैलेक्स पब्लिक-काल-आफिस भी काम कर रहा था जिससे देश मे सर्वत्र टैलेक्स मैसेज भेजने की सुविधा उपलब्ध थी।

ट्रंक टेलीफोन

महोत्सव की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए श्रवणबेलगोल में 200 लाइनों का अस्थायी टेलीफोन एक्सचेंज स्थापित किया गया। शासकीय अधिकारियो के उपयोग के लिए उनके कार्यालयो-तम्बुओ मे 45 टेलीफोन लगाये गये। महोत्सव समिति ने अपने उपयोग के लिए अलग-अलग स्थानों पर 43 टेलीफोन लिये थे। इसके अतिरिक्त अनेक उपभोक्ताओं को भी अस्थायी कनेक्शन प्रदान किये गये।

बाहर ट्रंक काल करने के लिए इन सभी लाइनों के अलावा छहों उप-डाकघरों में ट्रंक पब्लिक काल आफिस संयुक्त थे। वहां से देश-विदेश में कहीं भी ट्रंक काल किये जा सकते थे। स्थानीय फोन पर सम्पर्क करने के लिए मेलानगर में अनेक लोकल काल बूथ भी बने थे। तहसील मुख्यालय चन्नरायपाटन, जिला मुख्यालय हासन और राजधानी बंगलौर को डायरेक्ट ट्रंक सर्किट द्वारा श्रवणबेलगोल से जोड़ दिया गया था। इन नगरों के लिए ट्रंक काल, स्थानीय फोन की तरह तत्काल मिल जाते थे। श्रवणबेलगोल का एक्सचेंज बंगलोर के ट्रंक आटोमेटिक एक्सचेंज से जुड़ा था, जिसके माध्यम से श्रवणबेलगोल का ट्रंक आपरेटर सीधे डायल करके देश के लगभग 200 नगरो मे सम्पर्क कर सकता था। ये सारी व्यवस्थाएँ इतनी सक्षम थी कि बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता कहीं भी मांगने पर पाँच-दस मिनट के भीतर बात हो जाती थी। दूर की आवाज़ भी स्पष्ट और एकदम साफ सुनाई देती थी।

आकाशवाणी को आँखो देखा हाल प्रसारित करने के लिए पृथक् ट्रंक-सर्किट दिया गया था। इसी प्रकार समाचार एजेंसियो के उपयोग के लिए पाइंट-टु-पाइंट टेलिप्रिंटर सर्किट उपलब्ध थे। ऊपर विंध्यगिरि तक इन सेवाओ का विस्तार था। इन सारी सुविधाओ को मेलानगर के नक्शे मे रेखांकित करते हुए इन विभागो, ने दो सूचना-पत्रक भी प्रकाशित किये थे।

श्रवणबेलगोल पर वृत्त-चित्र

महोत्सव के अवसर पर श्रवणबेलगोल के ऐतिहासिक महत्त्व को रेखांकित करने के लिए और भगवान बाहुबली से सम्बद्ध कलात्मक सामग्री को लोगो की दृष्टि मे लाने के उद्देश्य से महोत्सव समिति ने श्रवणबेलगोल पर एक वृत्त-चित्र तैयार कराने का सकल्प किया। राज्य स्तरीय समिति की एक बैठक में इस योजना की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कर्नाटक शासन से भी इसमे योगदान करने की अपेक्षा की गयी। शासन की ओर से पचास प्रतिशत अनुदान की स्वीकृति मिलते ही वृत्त-चित्र की तैयारी का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया। प्रसिद्ध हिन्दी लेखक श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन की पुस्तक 'अन्तर्द्वन्द्वो के पार . गोमटेश्वर बाहुबली' का आधार लेकर बम्बई के एक सस्थान 'हुन्नूर फिल्म्स' ने इस वृत्त-चित्र का निर्माण किया।

बाहुबली के जीवन को चित्रित करने के लिए जयपुर के पचायती जैन मन्दिर के भित्ति-चित्रो का छायाकन किया गया। श्रवणबेलगोल के अनेक दृश्य फिल्माये गये और चौदहवे कुलकर अयोध्या नरेश नाभिराय के पौराणिक युग से लेकर, आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का उल्लेख करते हुए, भरत और बाहुबली का जीवन-वृत्त इस चित्र में अंकित किया गया। हजार वर्ष पहले गोमटस्वामी की मूर्ति के निर्माण की ऐतिहासिक कथा भी काल्पनिक चित्रों के माध्यम से दिखाई गई। इस प्रकार यह वृत्त-चित्र भगवान् बाहुबली और उनकी इस अद्वितीय मूर्ति की सक्षिप्त कहानी तीस मिनट में दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत कर देता है। प्राय: सभी जैन तीर्थों, मेलो और सम्मेलनो में इस चित्र का प्रदर्शन किया गया जिसे लोगों की सराहना प्राप्त हुई। हिन्दी, कन्नड़ और अंग्रेजी तीनो भाषाओ में होने के कारण प्राय: सारे देश की जैन जनता ने इसका आनन्द लिया।

तीस मिनट के इस चित्र के निर्माण पर दो लाख बीस हजार का खर्च हुआ। अनुदान के रूप में पचास प्रतिशत राशि कर्नाटक शासन ने महोत्सव समिति को उपलब्ध कराई, यह शासन का सराहनीय योगदान रहा।

परिशिष्ट

श्रवणबेलगोल दिगम्बर जैन मुज़रई इस्टीट्यूशंस मैनेजिंग कमेटी

(एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी)

श्रवणबेलगोल मे स्थित सभी 34 संस्थानो की व्यवस्था के लिए, कर्नाटक शासन ने 'मैसूर रिलीजस एण्ड चैरिटेबल इस्टीट्यूशस एक्ट—1927' की धारा 7 एवं 41 के द्वारा प्राप्त अधिकारो का प्रयोग करते हुए शासकीय आदेश क्रमाक आर० डी० 30/एम० ई० टी० 66/ दिनांक 9-12-67 के द्वारा 'श्रवणबेलगोल दिगम्बर जैन मुज़रई इस्टीट्यूशस मैनेजिंग कमेटी रूल्स 1967' को प्रभावशील घोषित करते हुए चौबीस सदस्यो की प्रथम मैनेजिंग कमेटी का गठन किया।

नियम के अनुसार जैन मठ श्रवणबेलगोल के पीठासीन भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी पदेन इस कमेटी के स्थायी अध्यक्ष हैं। इसी प्रकार भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष को इस कमेटी का पदेन उपाध्यक्ष स्वीकार किया गया है। इन दो पदाधिकारियो के अतिरिक्त कमेटी मे 24 सदस्य हैं, जिनमे 12 कर्नाटक प्रदेश के और 9 कर्नाटक के बाहर के दिगम्बर जैन सदस्य मनोनीत होते हैं। कर्नाटक शासन द्वारा इस हेतु मनोनीत तीन शासकीय सदस्यो को मिलाकर चौबीस सदस्यो से कमेटी का गठन पूर्ण होता है। ये सदस्य अपने मे से एक उपाध्यक्ष का निर्वाचन करते है। प्रति तीसरे वर्ष कमेटी के एक तिहाई, यानी आठ सदस्य कमेटी की सदस्यता से निवृत्त हो जाते हैं, तब उनके स्थान पर शासन द्वारा, भट्टारक स्वामीजी के परामर्श से, नवीन सदस्यों का मनोनयन कर दिया जाता है। निवृत्तमान सदस्यों को पुन: मनोनयन की पात्रता होती है। किसी भी हालत मे दिगम्बर जैनो के अतिरिक्त कोई व्यक्ति इस कमेटी का सदस्य नही बनाया जा सकता।

1981 मे महोत्सव के समय एस० डी० जे० एम० आई० मैनेजिंग कमेटी की सदस्य-सूची यहाँ प्रस्तुत की जा रही—

महोत्सव के समय प्रवर्तमान
एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी

1. स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, जैनमठ, श्रवणबेलगोल — पदेन अध्यक्ष
2. श्री सेठ लालचन्द हीराचन्द, अध्यक्ष भारतीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, बम्बई — पदेन उपाध्यक्ष
3. श्री डी. वीरेन्द्र हेगडे, धर्माधिकारी श्री क्षेत्र धर्मस्थल — निर्वाचित उपाध्यक्ष

सदस्य

4. श्री साहू श्रेयासप्रसाद जैन, 'निर्मल' तीसरामाला, नरीमन पाइंट, बम्बई
5. श्री निर्मलचन्द जैन, सासद, 674 सराफा, जबलपुर
6. श्री के. ए. चौगुले, बी. ए., एल-एल. बी., 27 शिवाजीनगर, सागली (महा०)
7. श्री रमेशचन्द जैन, पी. एस. मोटर्स, 7-ए, राजपुर रोड, नई दिल्ली

8. पण्डित वर्द्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, वर्द्धमान भवन, शोलापुर-3 (स्वर्गस्थ)
9. श्री पी. एम. वर्द्धमानन, बी. ए , एल-एल. बी., कलपेटा, दक्षिण वीनाड (केरल)
10. श्री के. टी. धरणेन्द्रैया, डाइरेक्टर, कर्नाटक स्टेट वेयर हाउसिंग कारपोरेशन
11. श्री धन्यकुमार जवेरी, सी. पी. टेक, हीराबाग, बम्बई 4
12. श्री सुकुमार चन्द जैन, मन्त्री—दिगम्बर जैन महासमिति, स्टेशन रोड, मेरठ
13. श्री जी. एच. आदिराजैया, आई. ए. एस , जयनगर, बंगलोर
14. श्री जयकुमार अनगोल, आई. ए. एस., निजी सचिव, मुख्यमन्त्री कर्नाटक
15. श्री टी. के. तुकोल, पूर्व न्यायाधीश, कर्नाटक उच्च न्यायालय, बंगलोर
16. श्री जे. एस. अम्मण्णवार, पूर्व विधायक, चिक्कोडी, जिला बेलगांव
17. डॉ. आर. एस. सुरेन्द्र, जयनगर, बंगलोर
18. श्री ए. आर. नागराज, बी. ई , 42, बासप्पा ले आउट, बंगलोर
19. श्री एम सी. अनन्तराजैया, 262/43, अशोक पिलर मार्ग, जयनगर, बंगलोर
20. श्री के. एन. पद्मनाभैया, माधवन पार्क, जयनगर, बंगलोर
21. श्री एच. एन. राजेन्द्रकुमार, होटल राजभवन, श्रवणबेलगोल
22. श्री सी. बी महावीरप्रसाद, 64, न्यू सैयाजीराव रोड, मैसूर
23. श्री एच. एम नागरत्नराज, इण्डियन आइल डीलर, हासन
24 साहु अशोककुमार जैन, 6, सरदार पटेल मार्ग, नई दिल्ली
25. श्री एस डी. साम्राज्य, सीरतदी (कारकल)
26. श्री डी. एस. कान्तराज, सीरा रोड, टुमकुर

सचिव

27. श्री जी. बी. शांतराज, सहायक आयुक्त, श्रवणबेलगोल

भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति

1. स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, अध्यक्ष एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी, जैनमठ, श्रवणबेलगोल	संरक्षक
2. श्री साहु श्रेयासप्रसाद जैन, निर्मल, तीसरा माला, नरीमन पाइंट, बम्बई-21	अध्यक्ष
3. श्री सेठ लालचन्द हीराचन्द, अध्यक्ष भारत वर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, बम्बई	पदेन उपाध्यक्ष
4. श्री निर्मलचन्द जैन, सांसद, 674, सराफा, जबलपुर (म. प्र)	सदस्य
5. श्री रमेशचन्द जैन, पी. एस. मोटर्स, 7 राजपुर रोड, नयी दिल्ली	"
6. श्री अक्षयकुमार जैन, सी-47, गुलमोहर पार्क, नयी दिल्ली	"
7. श्री साहू अशोककुमार जैन, 6, सरदार पटेल मार्ग, नयी दिल्ली	"
8. डां. आर. एस. सुरेन्द्र, पांचवा ब्लाक, जयनगर, बंगलोर	"
9. श्री राजकुमारसिंह कासलीवाल, इन्द्रभवन, तुकोगंज, इन्दौर (म. प्र.)	"

10.	श्री मोहनलाल काला, बी-45, बापूनगर, जयपुर राजस्थान	सदस्य
11.	डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन, चार बाग, लखनऊ	"
12.	श्री प्रेमचन्द जैन, जैना वॉच कम्पनी, दिल्ली	"
13.	श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, बी 45, 47, कनाट प्लेस, नयी दिल्ली	"
14.	श्री नागरत्नराज, एच. एम. 833, के आर. पुरम, हासन	"
15.	श्री एम. सी अनन्तराजैया, अशोक स्तम्भ मार्ग, जयनगर, बगलोर	"
16.	श्री नेमिचन्द जैन, बी-410, न्यू फ्रेंड्स, कालोनी, नयी दिल्ली-14	"
17.	श्री सुकुमारचन्द जैन, किसान फ्लोर मिल, स्टेशन रोड, मेरठ (उ प्र)	"
18	सेठ भागचन्द सोनी, सेठ मूलचन्द सोनी मार्ग, अजमेर (राजस्थान)	"
19	श्री डी वीरेन्द्र हेगडे, धर्माधिकारी, श्रीक्षेत्र धर्मस्थल	"
20.	श्री एस डी. नागराज, क्लाथ मर्चेण्ट, श्रवणबेलगोल	"
21.	श्री एच. एन. राजेन्द्रकुमार, राजभवन, श्रवणबेलगोल (हासन)	"
22.	श्री लक्ष्मीचन्द चावरा, मे भवनलाल धर्मचन्द, फैन्सी बाजार, गोहाटी	"
23	श्री बाबूभाई चुन्नीलाल मेहता, पोस्ट-फतेहपुर, साबर काटा, गुजरात	"
24	श्री जयचन्द डी लोहाडे. पूनम, 3-5-839, हैदरगुडा, हैदराबाद (आन्ध्र)	"
25.	श्री भगनराम जैन, 3023, बहादुरगढ मार्ग, देहली-6	"
26	श्री ललितकुमार जैन, जौहरी, 36, गोल्फ लिंक, देहली-6	"
27	श्री साहू रमेशचन्द जैन, टाइम्स ऑफ इण्डिया, नयी दिल्ली	"
28.	श्री रायबहादुर हरखचन्द जैन, पो. बाक्स 65, राची (बिहार)	"
29	श्री सुरेशचन्द जैन. 25, डिप्टीगज, दिल्ली	"
30.	श्री बी. टी. सुब्बाराव, बी. टी. कम्पनी, दावणगेरे, चित्रदुर्ग	"
31.	श्री के ए. चौगुले, शिवाजीनगर, सागली (महाराष्ट्र)	"
32	श्री जे के जैन, ससद सदस्य, 16, पार्क व्यू, नयी दिल्ली	"
33	श्री धन्यकुमार जवेरी, हीराबाग, सी पी टेक, वम्बई	"
34.	श्री के. टी. धरणेन्द्रैया, निदेशक—कर्नाटक राज्य वेयर हाउसिग कारपोरेशन, चल्लकेरे, जिला चित्रदुर्ग	"
35.	श्री प. वर्द्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, वर्द्धमान-भवन, होतगी रोड, शोलापुर	"
36.	श्री एस. डी. साम्राज्य, शीमुजे हाउस, सीरथडी (कारकल)	"
37.	श्री जी. एच आदिराजैया, आई ए एस, जयनगर, बगलोर	"
38.	श्री जे एस अम्मनवार, पूर्व विधायक, चिक्कोडी, जिला-वेलगाम	"
39.	श्री ए. बी. जकनूर, सहकारिता मन्त्री, विधान सौध, बगलोर	"
40.	श्री के. एन. पद्मनाभैया, जयनगर, बगलोर	"
41.	श्री सी. बी. महावीरप्रसाद, 64, न्यु सयाजीराव मार्ग, मैसूर	"
42.	श्री वासप्पा गोगी, संचालक-कर्नाटक रोडवेज, शिमोगा	"
43.	श्री नीरज जैन, शान्ति-सदन, सतना (म प्र.)	"
44.	श्री स्वरूपचन्द सोगानी, सोगानी-सदन, महावीर मार्ग, हजारीबाग (बिहार)	"
45.	अध्यक्ष, दक्षिण भारत जैन सभा, महावीर नगर, सांगली	"

46. मन्त्री, दक्षिण भारत जैन सभा, महावीर नगर, सांगली	सदस्य
47. श्री सुरेश जैन, नवीन शाहदरा, दिल्ली	"
48. श्री धर्मचन्द जैन, 27, केमेक स्ट्रीट, कलकत्ता	"
49. श्री जी पी. पार्श्वनाथ, डिप्टी कमिश्नर कार्यालय, हासन	"
50. श्री बाबूलाल जमादार, 1398, हाथीखाना, बडौत (उ. प्र.)	"
51 श्री पी एम वर्द्धमानन, क्लपेट्ट वैनाड (केरल)	"
52 श्री शान्तिवर्मा, कल्याणमदिरम एस्टेट, वैनाड (केरल)	"
53 श्री व्ही सी श्रीपालन, इण्डियन ओवरसीज, बैंक अन्नानगर, मद्रास-40	"
54. श्री कन्हैयालाल जैन, 236, टी. एच. रोड, तोंदीयारपेट, मद्रास-81	"
55. श्री ए आर नागराज, बी ई. 42, बासप्पा ले आउट, बगलोर-19	"
56. श्री अज्जप्पा, गनेश मन्दिर मार्ग, बेल्लारी	"
57. श्री प्रकाशचन्द जैन, एन-35, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली	"
58 श्री हरकचन्द सरावगी, पी-8, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता	"
59. श्री गनपतराय सरावगी, महावीर मार्केट, फैन्सी बाज़ार, गोहाटी	"
60. श्री राजेन्द्रकुमार, सपादक—वीर, 69 तीरगिरान स्ट्रीट, मेरठ	"
61. श्री ज्वालनैया, पूर्व नगराध्यक्ष, अनन्तपुर (आन्ध्र)	"
62. श्री नरेन्द्र जैन, 24 असारी रोड, दरियागज, दिल्ली	"
63 श्री सतीश जैन, 2992, काज़ीवाडा, दरियागज, दिल्ली	"
64 श्री डी एस. कान्तराज, शीरा रोड, टुमकुर	"
65. श्री टी के तुकोल, 115, एलीफेंट रॉक, जयनगर, बगलोर	"
66. श्री जयकुमार अनगोल, आई. ए. एस., विधानसौध, बगलोर	"
67 श्री बाबूलाल पाटोदी, 70/3, मल्हारगज, इन्दौर (म प्र)	"
68 श्री शकरलाल कासलीवाल, पद्म, 99, मेरिन ड्राइव, बम्बई	"
69. श्री सुरेन्द्रकुमार जैन, 2943, किनारी बाज़ार, दिल्ली	"
70. डा. नाभिराज आरिग, विजय क्लीनिक, मेगलोर	"
71. श्री जयराज बल्लाल, नन्तूर क्राम, मेगलोर	"
72 श्री एस. ब्रह्मरायप्पा, जयनगर, बगलोर	"
73. श्री एच. पी. ब्रह्मप्पा, के. आर. पुरम, हासन	"
74. श्री ए शातराज शास्त्री, हसराज लेन, मैसूर	"
75. श्री एस डी वसंतकुमार, श्रवणबेलगोल	"
76. श्री. ए. बी. बेडगे, विधायक, बेडकिहाल, बेलगाम	"
77. श्री कातिलाल हिरासा जैन, 166, अम्बेडकर रोड, दादर, बम्बई	"
78. श्री चन्द्रकान्त डी. अरताल, 640, कामत रोड, बेलगाम	"
79. डॉ. एस. पी. जैन, 143, न्यू-केम्पस, नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली	"
80. डॉ. धनंजय गुण्डे, श्री जैनमठ, शुक्रवार पेठ, कोल्हापुर	"
81. श्री एस. पी. शातराज, पद्मकृपा 50, रामविलास रोड, मैसूर	"

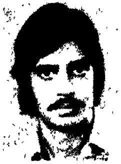
शताब्दी कलशधारक महानुभाव



श्री रतनलाल गंगवाल



सेठ लालचन्द हीराचन्द जी दोशी



श्री अजित कुमार जैन



साहु श्रेयांस प्रसाद जैन



साहु अशोक कुमार जैन



श्री रमेशचन्द जैन



श्री एम. जे. कृष्णमोहन



श्रीमती शकुन्तला देवी जैन



श्री गणपतराय जैन



श्री अभयकुमार कासलीवाल



श्री शंभुकुमार कासलीवाल

विभिन्न उपसमितियों के संयोजक एवं प्रमुख कार्यकर्ता



श्री जयचन्द डी. लोहाडे
(सूचना एवं पूछताछ समिति)



श्री डी निर्मलकुमार
(अभिषेक-पूजा समिति)



श्री नेमीचन्द्र जैन
(कलश आवटन समिति)



श्री ए शान्तिराज शास्त्री
(पंच कल्याणक समिति)



श्री देवकुमार सिंह
(जनमंगल महाकलश समिति)



श्री एच.बी. आदिराजैया
(स्टाल एवं प्रदर्शनी)



श्री एच.एन राजेन्द्रकुमार
(जन-कल्याण समिति)



श्री ए. बी. जकनूर
(अध्यक्ष, जन-कल्याण समिति)



श्री एम. सी. अनन्तराजैया
(स्वागत सेवा समिति)



श्री बाबूराव आर. केमलापुर
(स्मारिका एवं विशेषांक)



श्री एच. एम. नागरत्नराज
(पंडाल समिति)



श्री बाबूलाल पाटोदी
(दान-चंदा समिति)



श्री श्रीकान्त भुजबली शास्त्री
(बोली समिति)



डॉ धनजय जी. गुण्डे
(सुरक्षा एवं स्वयंसेवक समिति)



श्री सुकुमारचन्द्र जैन
(आवास व्यवस्था समिति)



श्री एस. एस. हमले
(स्टिल फोटोग्राफी समिति)



श्री अजय कुमार जैन
(सूचना एवं प्रसारण समिति)



श्री आर. एस. सुरेन्द्र
(विशिष्ट अतिथि समिति)



श्रीमती विजया देवेन्द्रप्पा
(महिला सम्मेलन समिति)



श्री ओमप्रकाश जैन
(सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति)



श्री विमल प्रकाश जैन
(धार्मिक सभा-सम्मेलन समिति)



सरदार चन्दूलाल हीराचन्द शाह
(सुरक्षा समिति)



श्री एस. एन. पारखी
(यातायात समिति)



श्री बी टी सुब्बाराव
(जनमंगल महाकलश कर्नाटक स्वागत समिति



श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन
(संपादक हिन्दी स्मारिका)



श्री टी. जी. कलघटगी
(सपादक-अंग्रेजी स्मारिका)



श्री ए. आर. नागराज
(सपादक . कन्नड स्मारिका)

श्री जे. के. जैन
(सदस्य, महोत्सव समिति)





श्री शंकरलाल कासलीवाल
(सदस्य, महोत्सव समिति)

एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी के अन्य सदस्य



श्री जयकुमार अनगोल
(सदस्य)



श्री एस. डी. साम्राज्य
(सदस्य)



श्री डी. वीरेन्द्र हेगडे
(सदस्य)



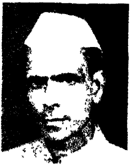
श्री पी. एम. वर्धमानन्
(सदस्य)



प. वर्धमान पी शास्त्री
(सदस्य)



श्री के. एन. पद्मनाभैया
(सदस्य)



श्री जे. एस. अम्मण्णवार
(सदस्य)



श्री के. टी धरणेन्द्रैया
(सदस्य)



श्री डी. एस. कान्तराज
(सदस्य)



श्री के. ए. चौगुले
(सदस्य)



श्री निर्मलचन्द जैन
(सदस्य)



श्री सी बी. महावीर प्रसाद
(सदस्य)



श्री विश्वमैनजी
स्वामीजी के निजी सचिव और सक्रिय कार्यकर्ता



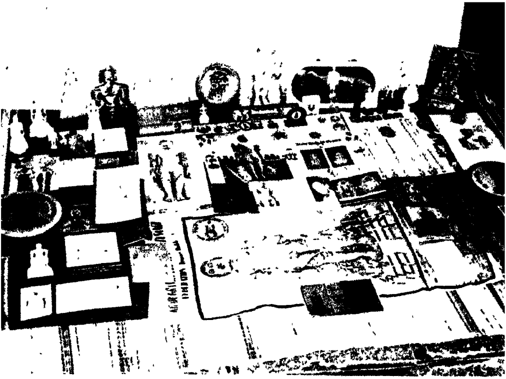
श्री जी० बी० शान्तिराज
सेक्रेटरी, एस डी जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी



श्री नीरज जैन
'महोत्सव दर्शन' के लेखक
और
सजग-सक्रिय समाजसेवी



289 स्वामीजी के साथ एस.डी जे.एम.आई. मैनेजिंग कमेटी का कर्मचारी-मंडल



290 महोत्सव मे सम्बन्धित उपहार सामग्री

291 चित्रावलोकन



शासकीय समितियाँ

'महामस्तकाभिषेक महोत्सव 1981' के लिए शासकीय समितियो के गठन की माँग एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी के ज्ञापन दिनांक 1-7-78 के द्वारा कर्नाटक शासन के समक्ष प्रस्तुत की गयी थी। इसी ज्ञापन के सदर्भ मे शासन ने दो समितियो का गठन किया। शासन के आदेश क्रमाक आर. डी. 89/ एम. एल डी. 78/दिनाक 4 जनवरी 1979 के द्वारा उन दोनो समितियो का गठन अधिसूचित किया गया।

इस आदेश की भूमिका मे कहा गया—'हासन जिले मे 'श्रवणबेलगोल' धार्मिक तीर्थ और पर्यटन केन्द्र, दोनो दृष्टियो से महत्त्वपूर्ण है। श्रवणबेलगोल दस वर्षो के अन्तर से होने वाला महामस्तकाभिषेक सन् 1981 मे प्रस्तावित है। इस अवसर पर वहाँ एकत्र होने वाले यात्रियो की सुविधाओ के लिए योजना बनाना आवश्यक है। इस सम्बन्ध मे यात्रियो के लिए आवास, पीने का पानी, सफाई, यातायात, स्वास्थ्य और सचार साधनो की व्यवस्था करना परमावश्यक है। यात्रियो को कोई असुविधा न हो ऐसी सक्षम व्यवस्था की योजना बनाने के लिए, तथा अन्य प्रबन्ध व्यवस्थाएँ देखने के लिए, एक 'राज्य-स्तरीय समिति' (स्टेट लेवल कमेटी) और एक 'स्थानीय समिति' (लोकल कमेटी) के गठन की आवश्यकता है।'

आदेश

इसलिए शासन, श्रवणबेलगोल मे उपलब्ध जन-सुविधाओ का परीक्षण करके वहाँ आवश्यक व्यवस्थाएँ सुझाने के लिए, तथा उन योजनाओ हेतु आर्थिक स्रोत और प्रस्तावित कार्यों की प्राथमिकताएँ निर्धारित करने के लिए, निम्नाकित सदस्यो की एक 'राज्य-स्तरीय समिति' और एक 'स्थानीय समिति' का गठन करना है।

राज्य-स्तरीय समिति (स्टेट लैवल कमेटी)
सदस्य-सूची

1. मुख्य मन्त्री, कर्नाटक शासन	अध्यक्ष
2. श्रम मन्त्री, कर्नाटक शासन	उपाध्यक्ष
3. मुज़रई राज्य मन्त्री	उपाध्यक्ष
4 श्री एच. सी श्रीकठैया, महकारिता मन्त्री	उपाध्यक्ष
5 कर्नाटक शासन के मुख्य सचिव	सदस्य
6 आयुक्त एव सचिव, राजस्व विभाग	"
7. आयुक्त एव सचिव, गृह विभाग	"
8. आयुक्त एव सचिव, वित्त विभाग	"
9. आयुक्त एव सचिव, गृह और नगर विकास विभाग	"
10. आयुक्त एव सचिव, लोक-निर्माण विभाग	"
11. आयुक्त एव सचिव, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग	"
12. पुलिस महानिरीक्षक, बगलोर,	"
13. सम्भागीय आयुक्त, मैसूर सम्भाग, मैसूर	"

14. मुख्यमन्त्री, संचार और भवन, बंगलोर	सदस्य
15. उपाध्यक्ष, कर्नाटक राज्य सड़क परिवहन निगम,	"
16. मुख्यमन्त्री लोक-स्वास्थ्य एव अभियान्त्रिकी, दक्षिण	"
17. निदेशक, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण	"
18. आयुक्त, मुजरई विभाग, बंगलोर	"
19. श्री श्रेयांसप्रसाद जैन, अध्यक्ष सहस्राब्दि-प्रतिष्ठापना एव महामस्तकाभिषेक समिति, 'निर्मल' तीसरामाला, नरीमन पाइंट, बम्बई-400021	"
20. श्री सेठ लालचन्द हीराचन्द, अध्यक्ष, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, कान्सट्रक्शन हाउस, बेलाई एस्टेट, बम्बई,	"
21. श्री टी. के. तुकोल, पूर्व न्यायाधीश कर्नाटक उच्च न्यायालय, बंगलोर	"
22. श्री डॉ. आर. एस. सुरेन्द्र, सदस्य एस. डी. जे. एम. आई कमेटी, जयनगर, बंगलोर	"
23. श्री जे. पी. जवाली, सचालक मैसूर स्टोर, हुबली	"
24. श्री एस. पी. शान्तराजैया, रमाविलास रोड मैसूर	"
25. श्री सेठ भभूनमलजी भण्डारी, 13 कृष्णराजेन्द्र रोड, बगलोर	"
26. श्री एस. पी. अनन्तराजैया, राजगृह, 262/53 अशोक पिलर रोड, जयनगर, बंगलोर	"
27. श्री एल. सोहनराज कोठारी, विनोबा रोड मैसूर	"
28 श्री जयन्ना विधायक, चेल्लकेरे, चित्रदुर्ग ज़िला	"
29. श्री एच. एन. नागरत्नराज, डीलर - इण्डियन आइल कारपोरेशन, हासन	"
30. श्री बी. टी सुब्बाराव, दावनगेरे	"
31. श्री एस. आर. उर्फ कोमलराव, टिम्बर मर्चेन्ट, बेलगांव	"
32. श्री निर्मलचन्द जैन सांसद, 674 सराफा, जबलपुर	"
33. श्री ए. बी. बेड़गे विधायक, चिकोड़ी, ज़िला-बेलगांव	"
34. श्री जी. एच. आदिराजैया, आई. ए. एस., बगलोर	"
35. श्री जयकुमार अनगोल आई. ए. एस , मुख्यमन्त्री के सचिव	"
36. श्री जयचन्द डी. लोहाड़े, महामन्त्री—भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, 'पूनम' 3-5-839, हैदरगुडा, हैदराबाद	"
37. श्री नीरज जैन, शान्ति सदन, सतना (म. प्र.)	"
38. श्री राजेन्द्रकुमार, भूतपूर्व नगर पालिका-अध्यक्ष, श्रवणबेलगोल	"
39 श्री सी. बी. महावीर प्रसाद, न्यू सयाजीराव रोड, मैसूर	"
40. श्री एच. ए. पार्श्वनाथ, पुलिस अधीक्षक, रायचूर	"
41. महानिदेशक पुरातत्त्व, भारत सरकार, नयी दिल्ली	"
42. निदेशक पुरातत्व और सग्रहालय, कर्नाटक शासन, मैसूर	"
43. श्री के. पी. सुरेन्द्रनाथ, संयुक्त सचिव, डी. पी. ए. आर. बंगलोर	"
44. श्री. एम. बी. वीरेन्द्रकुमार, 11/15, नन्दीदुर्ग मार्ग, बंगलोर	"
45. श्री एच. एन. नन्जेगौड़ा, सांसद, 38 सवेले रोड, बंगलोर	"

46. पुरातत्व अधीक्षक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, बंगलोर, ''
47. मैनेजिंग डाइरेक्टर, कर्नाटक वाटर सप्लाई एवं ड्रेनेज बोर्ड, बंगलोर ''
48. मुख्यमन्त्री, कर्नाटक नगर जल-प्रदाय एवं ड्रेनेज बोर्ड, बंगलोर ''
49. श्री पी. एम. जोसफ, डिवीजनल मैनेजर, दक्षिण रेलवे मैसूर ''
50. श्री एस. शिवप्पा, भूतपूर्व अध्यक्ष, विधान परिषद, बंगलोर ''
51. श्री वीरेन्द्रकुमार, स्टेशन बाजार, गुलबरगा ''
52. श्री फूलचन्दप्पा, मालिपटीज, कलहंगर ''
53. श्री देवकुमारसिंहजी, कासलीवाल, अनूप भवन, तुकोगज, इन्दौर। ''
54. श्री महाराजाबहादुरसिंहजी कासलीवाला, इन्द्रभवन, तुकोगज, इन्दौर। ''
55. श्री जम्बूकुमारसिंहजी, कोटा (राजस्थान) ''
56. श्री सुकुमारचन्दजी, किसान फ्लोर मिल, स्टेशन मार्ग मेरठ ''
57. श्री मोहनलालजी काला, बी. 45, बापूनगर, जयपुर ''
58. श्री रमेशचन्द जैन, पी. एम. मोटर्स, 7-ए राजपुर रोड, नयी दिल्ली ''

विशेष आमन्त्रित

1. श्री चारुकीर्ति स्वामीजी, अध्यक्ष एस डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी, श्रवणबेलगोल
2. श्री वीरेन्द्रजी हेगडे, धर्माधिकारी, धर्मस्थल
3. सचिव, उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, कर्नाटक शासन, बंगलोर
4. उपायुक्त हासन, जिला हासन
5. निदेशक खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, बंगलोर
6. अधीक्षण यन्त्री, हासन मण्डल लोक निर्माण विभाग, हासन
7. पुलिस अधीक्षक हासन
8. कार्यपालन यन्त्री, लोक निर्माण विभाग, चन्नरायपाटन, हासन जिला

(**नोट**—मूलतः चौंतीस सदस्यों से इस समिति का गठन किया गया था। बाद मे अनेक सदस्य समय-समय पर सहयोजित किये गये। उत्सव के समय समिति की सदस्य संख्या 58 थी।)

स्थानीय समिति

1.	डिवीजनल कमिश्नर, मैसूर डिवीजन, मैसूर	अध्यक्ष
2.	डिप्टी कमिश्नर हासन, जिला हासन	उपाध्यक्ष
3.	कार्यपालक यन्त्री, लोक स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी, चन्नरायपाटन	सदस्य
4.	जनकार्यपालन यन्त्री, सड़क और भवन, हासन	''
5.	जिला स्वास्थ्य अधिकारी, जिला हासन	''
6.	जिला पुलिस अधीक्षक, जिला हासन	''
7.	कर्नाटक सड़क परिवहन निगम का प्रतिनिधि	''
8.	असिस्टेण्ट कमिश्नर, हासन डिवीजन, हासन	सदस्य एवं सचिव
9.	तहसीलदार, चन्नरायपाटन	सदस्य एवं सहायक सचिव

10.	श्री एच. एन. राजेन्द्रकुमार, पूर्व नगरपालिकाध्यक्ष, श्रवणबेलगोल	सदस्य
11.	श्री एच. बी. ज्वालनैया, पूर्व विधायक एव नगरपालिकाध्यक्ष, हासन	"
12.	श्री एस. डी नागराज, वस्त्र व्यवसायी, श्रवणबेलगोल	"
13.	श्री गुण्डण्णा, भूतपूर्व नगरपालिकाध्यक्ष, श्रवणबेलगोल	"
14.	प्रशासक प्रेसीडेण्ट, नगरपालिका परिषद्, श्रवणबेलगोल	"
15.	श्री धरनप्पा, भूतपूर्व नगरपालिकाध्यक्ष, हासन	"
16.	प्रेसीडेंट, तालुका डेवलपमेण्ट बोर्ड, चन्नरायपाटन	"
17.	श्री एच टी. कृष्णप्पा, विधायक, नागमगला	"
18.	श्री एच. बी. अनन्तराजैया, पूर्व नगरपालिका सदस्य, हासन	"

इस आदेश के अन्त मे यह प्रावधान किया गया था कि दोनो समितियो के अशासकीय सदस्य समिति की बैठको मे आने के लिए यात्रा-व्यय तथा दैनिक भत्ता प्राप्त करने के अधिकारी होंगे। यह आदेश कर्नाटक के राज्यपाल के नाम पर राजस्व विभाग के अवर सचिव द्वारा प्रसारित किया गया।

राज्य-स्तरीय समिति की बैठकें

इस समिति की कुल सात बैठकें हुई, पाँच बगलोर मे और दो श्रवणबेलगोल मे।

1. 16-3-79	4.30 शाम	विधानसौध बंगलोर मे
2. 4-8-79	11.00 बजे से	श्रवणबेलगोल मे
3 26-11-79	11.30 से	विधानसौध बगलोर मे
4. 10-6-80	10 30 से	विधानसौध बगलोर मे
5. 22-10-80	11.00 बजे से	विधानसौध बगलोर मे
6. 6-1-81	11.00 बजे से	विधानसौध बगलोर मे
7. 27-1-81	11.00 बजे से	श्रेयासप्रसाद अतिथि-निवास श्रवणबेलगोल मे

महोत्सव समिति की बैठकें

तदर्थ समिति की कुल तीन बैठके हुई—

1. 2-7-77	9.30 सुबह से	गोयनका गेस्ट हाउस, बगलोर मे
2. 18-12-77	3.00 बजे से	6, सरदार पटेल मार्ग, नयी दिल्ली मे
3. 27-2-78	9.00 बजे से	6, सरदार पटेल मार्ग, नयी दिल्ली में

भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एव महा-मस्तकाभिषेक समिति की कुल दस बैठकें आयोजित की गयी—

1. 13-10-78	3.00 बजे से	कम्मोजी जैन धर्मशाला, दिल्ली मे
2. 6-1-79	3.00 बजे से	विद्यानन्द-निलय श्रवणबेलगोल मे
3. 17-3-79	3.00 बजे से	महावीर कुन्दकुन्द भवन, श्रवणबेलगोल में
4. 3-8-79	10.00 बजे से	गोयनका गेस्ट हाउस, बगलोर में

5.	5-10-79	2.00 बजे से	एलाचार्य विद्यानन्दनजी के समक्ष, इन्दौर में
6.	25-11-79	2.00 बजे से	गोयनका गेस्ट हाउस, बंगलोर में
7.	10-6-80	3.00 बजे से	गोयनका गेस्ट हाउस, बगलोर मे
8.	19-7-80	3.00 बजे से	श्रवणबेलगोल में
9.	22-10-80	3.00 बजे से	गोयनका गेस्ट हाउस, बंगलोर मे
10.	23-5-81	4.00 बजे से	चामुण्डराय भवन, श्रवणबेलगोल मे

महोत्सव के लिए गठित उप-समितियाँ, उनके संयोजक और सदस्य

1. अभिषेक पूजा समिति

1. श्री डी. निर्मलकुमार, मैसूर — सयोजक
2. श्री प. नाथूलालजी शास्त्री, इन्दौर
3. श्री नेमिनाथ, दावणगेरे
4. श्री एन. बी. वासन्ना, होसदुर्ग
5. श्री वासुदेव जैन, वेल्लूर
6. श्री एस. बी. पद्मावली, बंगलोर
7. श्री नागकुमार जैन, बगलोर
8. श्री शान्तिवर्मा, कलपेट
9. श्री एच. पी. नागरत्नराज, हासन
10. श्री डी. श्रेयांसप्पा, माण्ड्या
11. श्री बी. सतीश, सारगपुर
12. श्री नागराज एच. ए , हासन
13. श्री अजितकुमार जी. पी., श्रवणबेलगोल

2. पचकल्याणक समिति

1. श्री ए. शान्तिराज शास्त्री, मैसूर — सयोजक
2. श्री प. नाथूलालजी शास्त्री, इन्दौर
3. श्री एस. डी. नागेन्द्र शास्त्री, श्रवणबेलगोल
4. श्री श्रीकान्त भुजबली शास्त्री, कलपेट
5. श्री एम. सी. अनन्तराजैया, बगलोर
6. श्री एस. ए. नागेन्द्रैया, श्रवणबेलगोल
7. श्री एन. पी. पार्श्वनाथ श्रवणबेलगोल
8. श्री जी. पी. अजितकुमार, श्रवणबेलगोल
9. श्री जी. पी. शान्तिराज, श्रवणबेलगोल
10. श्री एस. डी. नागराज, श्रवणबेलगोल
11. श्री जी. ए. रत्नराज, श्रवणबेलगोल
12. श्री जी. पी. अनन्तराजैया, श्रवणबेलगोल

13. श्री ए एस. वी. कुमार, श्रवणबेलगोल
14. श्री जी. बी. पार्श्वनाथ, श्रवणबेलगोल
15. श्री एच. एन. राजेन्द्रकुमार, श्रवणबेलगोल
16. श्री एस. एन. अशोककुमार, श्रवणबेलगोल
17. श्री एस. डी. वसन्तकुमार, श्रवणबेलगोल
18 श्री पार्श्वनाथ जी पी., श्रवणबेलगोल
19. श्री जी. एस. श्रीपाल, श्रवणबेलगोल
20. श्री आर. एस. अनन्तराजैया, माण्ड्या

3. सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति

1. श्री ओमप्रकाश जैन कागजी, दिल्ली सयोजक
2. श्री नरेन्द्र पाटोदी, इन्दौर
3. श्री नीरज जैन, सतना
4. श्री एच बी. ज्वालनैया, हासन
5. श्री श्रीमती कुन्था जैन, दिल्ली
6. श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन, दिल्ली
7. श्री देवकुमार जैन, दिल्ली
8. श्री सतीश जैन, दिल्ली
9. श्री रमेशचन्द्र जैन, दिल्ली
10. श्री देवेन्द्रकुमार जैन, दिल्ली
11. श्री नेमीचन्द्र जैन, दिल्ली
12. श्री सी. बी. महावीरप्रसाद जैन, मैसूर
13. श्री डी. के जैन, दिल्ली

4. स्टिल फोटोग्राफ़ी समिति

1. श्री सुरेन्द्र इंगले, हुबली सयोजक
2. श्री एम. जे. सुरेन्द्रकुमार, बगलोर

5. आवास-व्यवस्था समिति

1. श्री सुकुमारचन्द्र जैन, मेरठ सयोजक
2. श्री एच. एम. नागरत्नराज, हासन
3. श्री एच. बी. आदिराजैया, हासन
4. श्री जयपाल अप्पण्णवार, बेलगाम
5. श्री चन्द्रकान्त डी. अरताल, बेलगाम
6. श्री पी. एम. वर्द्धमानन, कलपेट्टु
7. श्री ज्वालनैया, हान्तापुर
8. श्री वी. सी. श्रीपालन, मद्रास

9. श्री महाराजा बहादुरसिंह कासलीवाल, इन्दौर
10. श्री सत्यंधरकुमार सेठी, उज्जैन
11. श्री जी. एस. श्रीपाल, श्रवणबेलगोल
12. श्री गनेशीलाल रानीवाला, कोटा
13. श्री त्रिलोकचन्द कोठारी, कोटा
14. श्री मोतीचन्द्र जैन, हस्तिनापुर
15. श्री मानिकचन्द पालीवाल, कोटा
16. श्री डॉ. जगदीशप्रसाद, मेरठ
17. श्री प्रभाशचन्द्र जैन, मेरठ
18. श्री धनप्रकाश जैन, कथौली
19. श्री पद्म प्रसाद जैन, मेरठ
20. श्री अरुणकुमार जैन, मेरठ
21. श्री आर. एस. सुरेन्द्र, बंगलोर
22. श्री एच. एन. राजेन्द्रकुमार, श्रवणबेलगोल

6. सूचना एवं पूछताछ समिति

1. श्री जयचन्द्र डी. लोहाडे, हैदराबाद संयोजक
2. श्री एच. एन. मानिकराज, हासन
3. श्री व्रजकुमार, धारवाड
4. श्री एस. डी. जिनराज, हासन
5. श्री एच. बी. धरनप्पा, हासन
6. श्री के. अज्जप्पा, बेल्लारी

7. सुरक्षा एव स्वयंसेवक समिति

1. श्री डॉ. धनंजय जी. गुण्डे, कोल्हापुर संयोजक
2. श्री अजितकुमार, बगलोर
3. श्री बी. ए. रोकड़े, हुबली
4. श्री श्रीमंधर नेमिनाथ, हासन
5. श्री मोहनलाल काला, जयपुर
6. श्री आर. रवीन्द्र, बंगलोर
7. मंत्री, एस. एस. वाई. पी., श्रवणबेलगोल
8. श्री देवकुमारसिंह कासलीवाल, इन्दौर
9. श्री आदिराजैया, हासन
10. श्री एच. ए. पार्श्वनाथ, टुमकूर
11. श्री सरदार चन्नूलाल हीराचन्द शाह, बम्बई
12. श्री राजमल सोनी, जयपुर
13. श्री अनन्तराज इंगले, मैसूर

14. श्री सदानन्द काकड़े, बंगलोर
15. श्री वाई. के. राघवेन्द्रराव. बंगलोर
16. श्री सी. एस. कागवाड, बेलगाम
17. श्री सी. बी. नावल्ली, बगलोर
18. श्री ए. एन. चन्द्रकीर्ति, मैसूर
19. श्री व्रजकुमार, धारवाड़
20. श्री एच. एन. सुन्दरराज, हासन
21. श्री एस. एन. अशोककुमार, श्रवणबेलगोल

8. स्टाल एव प्रदर्शिनी समिति

1. श्री एच. बी. आदिराजैया, हासन — सयोजक
2. श्री एच एन. राजेन्द्रकुमार, श्रवणबेलगोल
3. श्री एच. पी. नागरत्नराज, हासन
4. श्री एच. ए. श्रीमन्धर, हासन
5. श्री कमलकिशोर जैन, जयपुर
6. श्री बालचन्द्र बी पाटिल, पीरनवाडी
7. श्री मोतीचन्द्र जैन, हस्तिनापुर
8. श्रीमती विजया देवेन्द्रप्पा, दावनगेरे
9. श्रीमती शान्ता सन्मतिकुमार, टुमकूर
10. श्रीमती नवरत्ना इन्दुकुमार, मगलोर
11. श्री के. टी. धरणेन्द्रैया, चेल्लकेरे
12. श्री एच. बी. पार्श्वनाथ, हासन

9. दान एव चदा समिति

1. श्री बाबूलाल पाटोदी, इन्दौर — सयोजक
2. श्री शिखरचन्द्र जैन, मेरठ
3. श्री एम. सी. अनन्तराजैया, बगलोर
4. श्री एस. एम शाह, बेलगाम
5. श्री ए. शान्तिराज शास्त्री, मैसूर
6. श्री एस डी. नागेन्द्र शास्त्री, श्रवणबेलगोल
7. श्री श्रीकान्त भुजबली शास्त्री, कलपेट्ट

10. जन-कल्याण समिति

1. श्री एच. एन. राजेन्द्रकुमार, श्रवणबेलगोल — संयोजक
2. श्री ए. बी. जकनूर, मन्त्री कर्नाटक शासन, बंगलोर — अध्यक्ष
3. श्रीसिद्धगौड़ा एस. पाटिल, पूर्व विधायक, बेडकिहाल

4. श्री ए. बी. बेडगे, विधायक, बेलगाम, बेडकिहाल
5. श्री डॉ. नामिराज अरिगा, मंगलोर
6. श्रीमती शरयू दफ्तरी, बम्बई
7. श्री जयन्ना, विधायक, चेल्लकेरे
8. श्री सुरेश जैन, दिल्ली
9. श्री एच. एन. मानिकयराज, हासन
10. डॉ. एम. डी. मन्मथराज, श्रवणबेलगोल

11. त्यागी सेवा-समिति

1. श्री एम. सी. अनन्तराजैया, बंगलोर — संयोजक
2. श्री एस. एस. इंगले, हुबली
3. श्री नागराजप्पा गुण्डप्पा सगारी, हरपनचेल्ली
4. श्री एस. डी. नागराज, श्रवणबेलगोल
5. श्री मानिकचन्द वीरचन्द गांधी, फलटण
6. श्री हंसकुमार जैन, हस्तिनापुर
7. श्री मोतीचन्द्र जैन, हस्तिनापुर
8. श्री एस. डी नागेन्द्रैया, हासन
9. श्री बाबूराज आर. केमलापूर, बेल्लद-बागवाडी
10. श्री नीरज जैन, सतना
11. श्री राय देवेन्द्रप्रसाद जैन, गोरखपुर
12. श्री चन्द्रकुमार बाकलीवाल, कोटा
13. श्री त्रिलोकचन्द कोठारी, कोटा
14. श्री मानिकचन्द पालीवाल, कोटा
15. श्री रवीन्द्र जैन, हस्तिनापुर

12. जनमंगल महाकलश समिति

1. श्री देवकुमारसिंह कासलीवाल, इन्दौर

13. पण्डाल समिति

1. श्री एच. एम. नागरत्नराज, हासन — संयोजक
2. श्री ओमप्रकाश जैन, दिल्ली
3. श्री एम. बी. पत्रावली, धारवाड
4. श्री बी ए. रोकड़े, हुबली
5. श्री के. टी. धरणेन्द्रैया, चिल्लकेरे

14. बंगलोर सूचना कार्यालय समिति

1. श्री के. जे. पार्श्वनाथैया, बंगलोर — संयोजक
2. श्री ए. आर. नागराज, बंगलोर

3. श्री आर. एस. सुरेन्द्र, बंगलोर
4. श्री एम. सी. अनन्तराजैया, बंगलोर
5. श्री जी. एच आदिराजैया, बंगलोर

15. विशिष्ट अतिथि—वी. आई. पी.—समिति

1. श्री आर एस. सुरेन्द्र, बंगलोर — संयोजक
2. श्री एस. आर. दोड्डन्नवार, बेलगाम
3. श्री सी बी. महावीरप्रसाद, मैसूर
4. श्री वीरचन्द्र, श्रवणबेलगोल
5. श्री एस. डी. महावीर, श्रवणबेलगोल
6. श्री एच. जे सुन्दरकुमार, बंगलोर
7. श्री एम. वी. वीरेन्द्रकुमार, बंगलोर
8. डॉ. नाभिराज अरिगा, मंगलोर

16. धार्मिक सभा-सम्मेलन समिति

1. स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, श्रवणबेलगोल — अध्यक्ष
2. श्री विमल प्रकाश जैन, दिल्ली
3. श्री जे. के. होतपेट्टी, भद्रावती
4. डॉ नेमिचन्द्र जैन, इन्दौर
5. श्री नेमीचन्द्र जैन, दिल्ली
6. श्री शान्तिराज शास्त्री, मैसूर
7. मन्त्री विश्वधर्म शान्ति सम्मेलन (भारत), दिल्ली
8. मन्त्री, विश्वधर्म शान्ति सम्मेलन (भारत), श्रवणबेलगोल

17. दिल्ली कार्यालय सूचना एवं प्रचार समिति

1. श्री अक्षयकुमार जैन, दिल्ली — अध्यक्ष
2. श्री रमेशचन्द्र जैन, पी एस. मोटर्स, दिल्ली
3. श्री एम. के धर्मराज, नयी दिल्ली
4. श्री देवकुमार जैन, दिल्ली
5. श्री रमेशचन्द्र जैन टाइम्स ऑफ इण्डिया, दिल्ली
6. श्री नेमीचन्द जैन, दिल्ली
7. श्री नरेन्द्रकुमार जैन, दिल्ली
8. श्री देवेन्द्रकुमार जैन, दिल्ली
9. श्री सतीशचन्द्र जैन, आकाशवाणी दिल्ली
10. श्री रमेशचन्द जैन, कागजी, दिल्ली
11. श्री विनोदकुमार सेठी, दिल्ली

12. श्री राकेश जैन, दिल्ली
13. श्री राजेन्द्रकुमार जैन, मेरठ
14. श्री सतीश जैन, ज्वालापुर
65. श्री एच. एन. सुन्दरराज, हासन
16. श्री लक्ष्मीचन्द जैन, दिल्ली
17. श्री जे. के. जैन, संसद सदस्य, दिल्ली
18. डॉ. डी. एन. जैन, दिल्ली

18. कलश आबंटन समिति

1. श्री नेमीचन्द्र जैन, नयी दिल्ली

19. बोली समिति

1. श्री श्रीकान्त भुजबली शास्त्री, कलपेट्ट संयोजक
2. श्री बाबूलाल पाटोदी, इन्दौर

20. यातायात समिति

1. श्री एस. एन. पारखी, मैसूर
2. श्री गजा पाटिल, बेलगाम

21. सुरक्षा समिति

1. सरदार चन्दूलाल हीराचन्द शाह, बम्बई

22. विशिष्ट-अतिथि (विन्ध्यगिरि) समिति

1. श्री कान्तिलाल हीराचंद जैन, बम्बई

23. कार्यक्रम समिति

1. स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, श्रवणबेलगोल

24. समाचार प्रकाशन समिति

1. श्री नेमिनाथ के., बंगलोर

25. जनमंगल महाकलश कर्नाटक स्वागत समिति

1. श्री बी. टी. सुब्बाराव, दावणगेरे

26. महिला सम्मेलन समिति

1. श्रीमती विजया देवेन्द्रप्पा, दावणगेरे संयोजिका

2. श्रीमती शान्ता सन्मतिकुमार, टुमकूर
3 श्रीमती राजलक्ष्मी राजेन्द्रकुमार, श्रवणबेलगोल

27. अंग्रेज़ी स्मारिका समिति

1. श्री टी. जी. कलघटगी, धारवाड, सम्पादक

28. हिन्दी स्मारिका समिति

1. श्री लक्ष्मीचन्द जैन, नयी दिल्ली सम्पादक

29. कन्नड़ स्मारिका समिति

1. श्री ए. आर. नागराज, बंगलोर सम्पादक

30. समन्वय समिति

1. साहु श्रेयांसप्रसाद जैन, बम्बई अध्यक्ष एवं
उपरोक्त सभी समिति-संयोजकगण सदस्य

महोत्सव का अधिकृत और प्रसारित कार्यक्रम

भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव

कार्यक्रम 9-2-1981 से 25-2-1981

सोमवार 9-2-81

6.00 प्रातः	नान्दिमंगल पूजा—मृत्तिका संग्रहण	चामुण्डराय मण्डप
10.00 प्रातः	महोत्सव का उद्घाटन और डाक टिकिट जारी करना	चामुण्डराय मण्डप
11.30 दिन	भरतेश-वैभव प्रदर्शनी का उद्घाटन	प्रदर्शनी स्थल पर
3.30 दिन	दीक्षा समारोह	चामुण्डराय मण्डप

मंगलवार 10-2-81

8.00 प्रातः	नव-कलशाभिषेक	सभी 32 मन्दिरों में
10.00 प्रातः	सामूहिक पूजन	सभी 32 मन्दिरों में
3.30 दिन	केश लोच	चामुण्डराय मण्डप
7.30 सायं	भक्ति संगीत	चामुण्डराय मण्डप

बुधवार 11-2-81

7.30 प्रातः	मंगल प्रवचन	चामुण्डराय मण्डप
8.30 प्रातः	गणधरवलय विधान—चन्द्रगिरि पर	भद्रबाहु गुफा में
3.00 दिन	शास्त्र प्रवचन	
7.30 सायं	प्रवचन पं. दरबारीलालजी कोठिया, एवं भक्ति संगीत	चामुण्डराय मण्डप

गुरुवार 12-2-81

7.30 प्रातः	मंगल प्रवचन	चामुण्डराय मण्डप
8.30 प्रातः	कलिकुण्ड यंत्राराधना महाभिषेक पूजन	चन्द्रगिरि पर
3.00 दिन	शास्त्र प्रवचन	पार्श्वनाथ मन्दिर
7.30 सायं	भाषण एवं भक्ति संगीत	चामुण्डराय मण्डप

शुक्रवार 13-2-81

7.00 प्रातः	चन्द्रगिरि के लिए शोभा-यात्रा	मठ से प्रारम्भ
8.00 प्रातः	नेमिनाथ भगवान् का महाभिषेक और पूजन	चामुण्डराय मण्डप
3.00 दिन	पूज्य आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती को श्रद्धांजलि सभा	चामुण्डराय मण्डप
7.00 सायं	कर्नाटक शासन के सांस्कृतिक विभाग द्वारा नृत्य-नाटिका	भद्रबाहु मण्डप

शनिवार 14-2-81

7.30 प्रातः	मंगल प्रवचन एवं यज्ञमण्डल आराधना	चामुण्डराय मण्डप
10.30 प्रातः	'देवेन्द्र वाहनोत्सव' शोभायात्रा मठ के लिए	चामुण्डराय मण्डप से
3.00 दिन	प्रवचन	चामुण्डराय मण्डप
6 30 सायं	गर्भ कल्याणक	चामुण्डराय मण्डप
8.30 रात्रि	कर्नाटक के सूचना-प्रचार विभाग द्वारा नृत्य-नाटिका	भद्रबाहु मण्डप

रविवार 15-2-81

7.30 प्रातः	मंगल प्रवचन	चामुण्डराय मण्डप
8.30 प्रातः	जन्म कल्याणक की बोली	चामुण्डराय मण्डप
11.00 प्रातः	जन्म कल्याणक	चामुण्डराय मण्डप
2.00 दोपहर	जन्म कल्याणक की शोभायात्रा	जैन मठ से चामुण्डराय मण्डप
3.00 दोपहर	1008 कलशाभिषेक ऐरावत गजरथोत्सव जन्माभिषेक	चामुण्डराय मण्डप
6.30 सायं	पालना	चामुण्डराय मण्डप
8.00 रात्रि	संगीत एवं नाटक विभाग द्वारा बैले (कर्नाटक सरकार द्वारा)	भद्रबाहु मण्डप

सोमवार 16-2-81

7.30 प्रातः	मंगल प्रवचन	चामुण्डराय मण्डप
8.30 प्रातः	बोली और महामस्तकाभिषेक	चामुण्डराय मण्डप
3.00 दिन	स्मारिका का विमोचन श्री लक्ष्मीचन्द जैन, श्री नीरज जैन और डॉ. बी. बी. शरूर का सम्मान	चामुण्डराय मण्डप
6.00 सायं	बाल-लीला उत्सव, शोभा-यात्रा, विविध वाद्य संगीत	जैन मठ से चामुण्डराय मण्डप
8.00 रात्रि	नृत्य नाटिका 'जय गोम्मटेश्वर' निकलंक नवयुवक मण्डल इन्दौर द्वारा	भद्रबाहु मण्डप

मंगलवार 17-2-81

7.30 प्रातः	श्रमण परिषद्	चामुण्डराय मण्डप
2.00 दिन	साम्राज्य वैभव	चामुण्डराय मण्डप
3.30 साय	दीक्षा कल्याणक (तप कल्याणक)	चामुण्डराय मण्डप
7.00 साय	कवि दरबार	चामुण्डराय मण्डप
8.00 रात्रि	'नीलांजना' नृत्य-नाटिका वेंकटेश नाट्य मन्दिर, बंगलोर	भद्रबाहु मण्डप

बुधवार 18-2-81

7.30 प्रातः	मंगल प्रवचन	चामुण्डराय मण्डप
8.30 प्रातः	केवलज्ञान कल्याणक, समवसरण पूजा बोली	चामुण्डराय मण्डप
1.30 दिन	तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा पूज्य आर्यनन्दी महाराज के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति	चामुण्डराय मण्डप
3.30 सायं	महिला-सम्मेलन	चामुण्डराय मण्डप
6.00 सायं	श्रीमती विलास कुमारी (मैसूर) द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम	चामुण्डराय मण्डप
7.30 साय	'महाप्राण-बाहुबली' बैले श्रीराम भारतीय कला केन्द्र, नयी दिल्ली	भद्रबाहु मण्डप

बृहस्पतिवार 19-2-81

7.30 प्रातः	विद्वत् सत्कार, मंगल प्रवचन	चामुण्डराय मण्डप
8.30 प्रातः	रथ यात्रा	चामुण्डराय मण्डप से मठ
2.00 दिन	सर्वधर्म सम्मेलन	चामुण्डराय मण्डप
7.30 सायं	'महाप्राण बाहुबली' बैले श्रीराम भारतीय कला केन्द्र, नयी दिल्ली	भद्रबाहु मण्डप

शुक्रवार 20-2-81

8.00 प्रातः	महारथ यात्रा	भंडारी बस्ती
1.30 दोपहर	जनमंगल महाकलश स्वागत	चामुण्डराय मण्डप
2.30 दोपहर	जनमंगल महाकलश स्वागत-सभा	चामुण्डराय मंडप
4.30 सायं	जनमंगल महाकलश शोभायात्रा	चामुण्डराय मडप से रिंग रोडका चक्कर
7.30 सायं	'महाप्राण बाहुबली' बैले श्रीराम भारतीय कला केन्द्र, नई दिल्ली	भद्रबाहु मंडप

शनिवार 21-2-81

6.30 प्रातः	मोक्ष कल्याणक	भंडारी बस्ती
7.30 प्रातः	मंगल प्रवचन	चामुण्डराय मंडप
8.30 प्रातः	महामस्तकाभिषेक बोली	चामुण्डराय मंडप
11.30 प्रातः	प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी का आगमन	हैलीपेड
7.30 सायं	भक्ति नृत्य, भजन	चामुण्डराय मडप
7.30 साय	'महाप्राण बाहुबली' बैले श्रीराम भारतीय कला केन्द्र, नई दिल्ली	भद्रबाहु मडप

रविवार 22-2-81

6.00 प्रात·	कलश स्थापना	विन्ध्यगिरि
8.30 प्रातः	अभिषेक प्रारम्भ	विन्ध्यगिरि
4.00 सायं	बाहुबली दर्शन	विन्ध्यगिरि
7.30 साय	यक्षगान, मन्जुनाथ मंडली धर्मस्थल द्वारा	चामुण्डराय मंडप

सोमवार 23-2-81

6.00 प्रातः	कलश स्थापना	विन्ध्यगिरि
8.30 प्रातः	अभिषेक भगवान् बाहुबली (जनमंगल महाकलश)	विन्ध्यगिरि
1.00 दोपहर	समारोह (श्री वीरेन्द्र हेगड़े की अध्यक्षता मे)	चामुण्डराय मंडप
2.00 दोपहर	दिगम्बर जैन महासमिति का अधिवेशन	चामुण्डराय मंडप
4.00 सायं	बाहुबली दर्शन	विन्ध्यगिरि
7.30 सायं	जैन भजन सम्मेलन, श्री रवीन्द्र जैन द्वारा	चामुण्डराय मंडप

मंगलवार 24-2-81

6.00 प्रातः	कलश स्थापना	विन्ध्यगिरि
8.30 प्रातः	अभिषेक	विन्ध्यगिरि

2.30 दोपहर	दिगम्बर जैन परिषद का अधिवेशन	भद्रबाहु मंडप
7.30 साय	नाट्य मचन	भद्रबाहु मंडप

बुधवार 25-2-81

6.00 प्रात.	मुकुट कलशाभिषेक	विन्ध्यगिरि

महोत्सव का लेखा-जोखा : एक नज़र में

आय

आय की मद	बजट प्रावधान	वास्तविक प्राप्तियाँ
अभिषेक कलशों के अग्रिम आवंटन से आय	27,25,000	26,97,022.00
बाद के अभिषेको से प्राप्त	1,00,000	14,56,873.96
स्टाल एवं प्रदर्शनी	5,98,5000	3,78,888.87
गोलक एव दान	5,00,000	3,66,972.69
जनमंगल महाकलश कमेटी से प्राप्त	—	3,00,000.00
कर्नाटक पूजा कलेक्शन	—	2,12,031.00
कामेमोरेटिव प्रोजेक्ट्स के लिए दान प्राप्त	2,00,000	2,01,000.00
वृत्त-चित्र हेतु शासकीय अनुदान	1,30,000	1,30,000.00
पंचकल्याणक	3,40,400	98,513.00
अग्रिम धनों की वसूली	—	90,283.90
प्रकाशन की बिक्री	3,88,000	18,534.70
अन्य सामान्य प्राप्तियाँ	50,000	34,449.05
महिला सम्मेलन	—	26,951.00
त्यागी-सेवा समिति मे आय	—	12,066.00
सोविनियर कलेक्शन	—	3,000.00
अन्य वस्तुओं की बिक्री	5,00 000	1,276.00
गुरुकुल	—	45,001.00
	योग	60,72,863.17

महोत्सव का आर्थिक लेखा-जोखा : एक नज़र में

व्यय

खर्च की मद	बजट प्रावधान	वास्तविक खर्च
अभिषेक पूजा	2,00,000	3,24,146.70
पंचकल्याणक पूजा	2,00,000	94,096.90
मार्ग पब्लिकेशन (होमेज टु श्रवणबेलगोल)	2,37,500	2,37,000.00

खर्च की मद	बजट प्रावधान	वास्तविक खर्च
पण्डाल-सभा मण्डप	2,90,000	2,79,863.19
स्मारिका प्रकाशन हिन्दी-कन्नड़-अंग्रेजी	60,000	1,04,468.18
वृत्त चित्र निर्माण	2,60,000	2,49,430.00
सोवनियर	15,000	8,500.00
कालेबोरेटिव प्रोजेक्ट्स		
(अ) चामुण्डराय स्टेच्यू	1,50,000	4,000.00
(ब) आयुर्वेदिक अस्पताल	3,50,000	1,76,497.77
(स) शान्तिप्रसाद कला-मन्दिर	3,00,000	1,00,853.21
(द) जन कल्याण	2,00,000	65,709.65
अभिषेक का मंच	60,000	99,306.32
दर्शकों के लिए प्लेटफार्म	8,00,000	8,16,448.68
सूचना एवं प्रसार	1,50,000	1 29,013.44
सूचना एवं पूछताछ	30,000	12,500.00
सांस्कृतिक कार्यक्रम	2,00,000	2,17,931.60
सेमिनार सगोष्ठियां और सर्वधर्म-सम्मेलन	1,00,000	72,173.15
स्वयंसेवक व्यवस्था	2,00,000	2, 71,484.10
त्यागी सेवा समिति	1,90,000	2,68,066.53
स्थापना	1,00,000	1,37,615.06
स्टाल एव प्रदर्शिनी	4,80,000	4,39,575.57
विद्युत सज्जा	1,50,000	2,41,037.37
छपाई एव लेखन सामग्री	50,000	60,195.20
अतिथि सत्कार	1,00,000	36,961.15
टेलीफोन ट्रंक	50,000	44,920.25
अन्य सामान्य व्यय	1,00,000	1,19,482.00
टाइप राइटर खरीद	5,200	5,180.50
अग्रिम	—	6,400.00
जनमंगल महाकलश	—	81,386.00
महिला सम्मेलन	25,000	17,951.00
पोस्टल फ्रेंकिंग मशीन	—	2,811.18
आवास व्यवस्था आमन्त्रितों के लिए	50,000	56,485.23
डाक खर्च	11,800	10,477.18
वाहन क्रय एवं रख-रखाव	1,00,000	93,157.22
फर्नीचर	20,000	20,535.40
फीचर पब्लिकेशन	50,000	75,560.90
स्टिल फोटोग्राफी	25,000	39,171.50

खर्च की मद	बजट प्रावधान	वास्तविक खर्च
कलश आवंटन	—	2,607.73
समन्वय समिति	—	33,680.00
भेंट उपहार	—	56,627.40
प्रधान मन्त्री के लिए मंच व्यवस्था	—	83,000.00
बैरिकेडिंग	—	13,296.64
कर्नाटक पूजा कलेक्शन (बैंक मे जमा कराया)	—	2,10,000.00
गुरुकुल	—	20,001.00
विज्ञापन एव अन्य प्रकाशन	—	8,555.25
	कुल योग	54,48,160.15

आडिट रिपोर्ट कमेटी के कार्यालय मे है।

सहस्राब्दी महामस्तकाभिषेक 22-2-1981 के लिए कलश प्राप्त करने वाले महानुभावों की सूची

शताब्दी-कलश :

1. श्री रतनलालजी गगवाल
2. श्री लालचन्द हीराचन्दजी दोशी
3. श्री अजितकुमारजी जैन
4. श्री साहू श्रेयांसप्रसादजी जैन
5. श्री साहू अशोककुमारजी जैन
6. श्री रमेशचन्द जी जैन
7. श्री बी. टी. पाटिल
8. श्री निर्मलकुमारजी जैन
9. श्री एम. जे. कृष्ण मोहन
10. श्रीमती शकुन्तलादेवी जैन

रत्न-कलश :

1. श्रीमती वज्रावती अप्पैया
2. श्री मनपतरायजी जैन

स्वर्ण-कलश :

1. श्रीमती यशवती प्रकाशचन्द
2. श्री प्रेमचन्दजी जैन
3. श्री डी. सी. जैन

4. श्री सेठ राजकुमारसिंह जी कासलीवाल
5. श्री कश्मीरचन्दजी गोधा
6. श्री के. के. बड़जात्या
7. श्री विमलचन्दजी जैन
8. श्री बी. ए. रोकड़े
9. श्री एम. जी. चैरिटेबिल ट्रस्ट
10. श्री एस. एस. इंगले
11. श्री अमरचन्द पहाड़िया
12. श्री सुहागमल एवं परिवार
13. श्री नानकराम एवं परिवार
14. श्री चौधरी हुकमचन्दजी
15. श्री सुरेशचन्द जैन
16. श्रीमती मैनादेवी जैन
17. श्री बनवारीलाल चैनरूप बाकलीवाल
18. श्रीमती भौरीदेवी सरावगी
19. श्रीमती नवरत्नदेवी सरावगी
20. श्री मन्नालाल बाकलीवाल
21. श्री के. एल. काला
22. मेसर्स लादूलाल जैन एण्ड सन्स
23. श्री प्रसन्नकुमार बाकलीवाल
24. मेसर्स खूबचन्द नेमिचन्द बाकलीवाल
25. श्री चिमनलाल शाह
26. श्री प्रभामचन्द जैन
27. श्रीमती सावित्रीबाई अप्पाराय चित्ते
28. श्री सुभाष चन्द जैन
29. श्री उमेश चन्द जैन
30. श्री सुदेशचन्द जैन
31. श्री हरप्रसाद जैन
32. श्री रिखबलाल गुलाबचन्द जैन
33. श्री एम. आर. बागी
34. श्री एम. पी. सनतकुमार जैन
35. श्री चन्दूलाल एच. शाह
36. श्री ओ. पी. जैन
37. श्री गिरधारीलाल केदारनाथ
38. श्री विजयमनोहर मीरजी

22-2-81 को महामस्तकाभिषेक के लिए
पंचामृत अभिषेक करनेवाले महानुभाव

1. दुग्धाभिषेक—श्री अमरचन्द पहाड़िया
2. इक्षुरस अभिषेक—श्री चन्दूलाल सराफ
3. नारियल के दुग्ध का अभिषेक—श्री गौरीलालजी धनरूपचन्द बगरेचा
4. चन्दन अभिषेक—श्रीमती कल्पना
5. पुष्प-वृष्टि—श्रीमती राखीदेवी सेठी
6. कोणकलश, प्रथम—श्री फिरोजीलाल जैन
7. कोणकलश, द्वितीय—श्रीमती जदावाई नानकराम जैन कासलीवाल
8 कोणकलश, तृतीय—श्री केवलचन्दजी पाटनी
9 कोणकलश, चतुर्थ—श्री मधुराम नानगरामजी
10. महामंगल आरती—श्रीमती लाडदेवी, पत्नी स्व. फूलचन्द जी सेठी
11. पूर्णकुम्भ—श्रीमती रत्नम्मा हेगडे, मातेश्वरी श्री वीरेन्द्र हेगड़े

पंच-कल्याणक : प्रमुख महानुभाव

1 भगवान के माता-पिता—श्री एव श्रीमती नानकराम जौहरी
2. सौधर्म इन्द्र—सेठ लालचन्द हीराचन्द जी
3. ईशान इन्द्र—श्री एम. सी. अनन्तराजैया
4. कुबेर—श्री देवकुमारसिंह जी कासलीवाल
5. जन्माभिषेक पूर्णकुम्भ—श्री ताराचन्द बागडे
6. पालना (झूला)—श्री शान्तिलालजी पाटनी

पंच-कल्याणक पूजा के पुरोहित

1. श्री ए. शान्तिराज शास्त्री, श्रवणबेलगोल
2. श्री बाहुबली पडित, बेलगाँव
3. श्री श्रीकान्त भुजबली शास्त्री, बैनाड
4. श्री सुकुमार पडित, बेलगाँव
5. श्री एस. डी. नागेन्द्र शास्त्री, श्रवणबेलगोल
6. श्री देवेन्द्रकुमार पंडित, शेडवाल
7. श्री अण्णा साहब पडित, शेडवाल
8. श्री पार्श्वनाथ शास्त्री, श्रवणबेलगोल

9. श्री एस. ए. नागेन्द्रैया, श्रवणबेलगोल
10. श्री एस. बी. पद्मराजैया, श्रवणबेलगोल
11. श्री नन्दकुमार, श्रवणबेलगोल
12. श्री धन्यकुमारैया, श्रवणबेलगोल
13. श्री एस. पी. रत्नराज, श्रवणबेलगोल

समापन समारोह में रजत-कलश से सम्मानित पदाधिकारी एवं अधिकारी

1. श्री आर. गुण्डूराव, मुख्यमन्त्री कर्नाटक
2. श्री एच. सी. श्रीकण्ठैया, सहकारिता मन्त्री
3. श्री एम. वीरप्पा मोइली, वित्त मन्त्री
4. श्री ए. बी. जकनूर, श्रम मन्त्री
5. श्री सुधीन्द्रराव कस्बे, मुज़रई मन्त्री
6. श्री जयवन्तराव तिलक, समाजकल्याण मन्त्री, महाराष्ट्र
7. श्री श्रीकान्तदत्ता वाडयार, मैसूर
8. श्री साहु श्रेयांसप्रसाद जैन, अध्यक्ष महोत्सव समिति
9. श्रीमती सरयू दफ्तरी, अध्यक्ष—दक्षिण भारत जैन सभा, बम्बई
10. श्रीमती डॉ. सरयू दोसी, सम्पादक—'मार्ग' श्रवणबेलगोल विशेषांक
11. श्री के. पी. पद्मनाभ, प्लेटफार्म सुपरवाइजर, बंगलोर
12. श्री गिरधारीलाल केदारनाथ सिंघल, टेन्ट कान्ट्रेक्टर, आगरा
13. श्री डी. वीरेन्द्र हेगड़े, धर्मस्थल
14. श्री एन. नरसिंहराव, आई. ए. एस., मुख्य सचिव, कर्नाटक
15. श्री एम. के. वेंकटेशन, आई. ए. एस., प्रशासक सिटी कारपोरेशन, बंगलोर
16. श्री आर. आनन्दकृष्णा, आई. ए. एस., अतिरिक्त मुख्य सचिव, कर्नाटक
17. श्री एम. कृष्णामूर्ति, आई. ए. एस., एण्डोमेन्ट कमिश्नर, बंगलोर
18. श्री जी. व्ही. राव, आई. पी. एस., आई. जी. पी., कर्नाटक
19. श्री बी. आर. प्रभाकर, आई. ए. एस., सभागीय आयुक्त, मैसूर
20. श्री जी. एच. आदिराजैया, आई. ए. एस., राजस्व आयुक्त
21. श्री एस. वेंकटेश, आई. ए. एस., सचिव लोक निर्माण विभाग
22. श्री दिलीप राव, आई. ए. एस., उपायुक्त, हासन
23. श्री सीताराम, सहायक आयुक्त, हासन
24. श्री बी. के. विश्वनाथ, विशेष उपायुक्त, हासन
25. श्री नन्जप्पा, बी. ई. कार्यपालन यन्त्री, कर्नाटक अर्बन वाटर सप्लाई, हासन
26. श्री कृष्णामूर्ति, कार्यपालन यन्त्री, के. आर. डिवी., श्रवणबेलगोल
27. श्री वीरप्पा, एस. ई., लोक निर्माण विभाग, हासन

28. श्री बी. हनुमन्तरायप्पा, कार्यपालन यन्त्री, कर्नाटक विद्युत मण्डल, हासन
29. श्री सोमशेखर, उप सचिव, राजस्व विभाग, बंगलोर
30. श्री ए. ए. सेट्टी, विशेष अधिकारी, प्रतिष्ठापना महोत्सव, श्रवणबेलगोल
31. श्री जयकुमार अनगोल, आई. ए. एस., निजी सचिव, मुख्य मन्त्री
32. श्री केनचप्पा, ज़िला स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण अधिकारी, हासन
33. डॉ. सक्सेना, स्वास्थ्य सचालक, बगलोर
34. श्री शंकर शास्त्री, मुख्य अभियन्ता, कर्नाटक विद्युत मण्डल, बंगलोर
35. श्री पी. एस. नागराजन, मुख्य विपणन अधिकारी, बंगलोर
36. श्री बी. एन. गरुडाचार, आई. पी. एस., पुलिस उपमहानिरीक्षक, बंगलोर
37. श्री एस. एन एस. मूर्ति, आई. पी. एस., पुलिस उपमहानिरीक्षक, मैसूर
38. श्री पी. व्ही. रामैया, अध्यक्ष कर्नाटक विद्युत मण्डल, बंगलोर
39. श्री टी. पी. ईसर, पर्यटन आयुक्त, बगलोर
40. श्री भोसले, आई. पी. एस., पुलिस अधीक्षक, हासन
41. श्री सत्यनारायण, कार्यपालनयन्त्री, लोकनिर्माण विभाग, चन्नरायपाटन
42. श्री रियाज़ अहमद, सयुक्त सचालक स्वास्थ्य, बंगलोर

इनके अतिरिक्त एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी के सभी सदस्यो को और समस्त समिति-सयोजको को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

समापन समारोह में रजत-कलश से सम्मानित पत्रकार एवं संवाददाता

1. श्री एन. एस. रामप्रसाद, सीनियर रिपोर्टर, कन्नड-प्रभा
2. श्री बी. के. विट्ठल, सीनियर रिपोर्टर, इण्डियन एक्सप्रेस
3. श्री एस. जी. मैसूरमठ, चीफ़ रिपोर्टर, डेकन हैराल्ड
4. श्री व्ही. रघुराम सेट्टी, चीफ़ रिपोर्टर, प्रजावाणी
5. श्री श्रीधर आचार्य, सीनियर रिपोर्टर, प्रजावाणी
6. श्री एस. व्ही. जयशीलाराव, सह-सम्पादक, सयुक्त कर्नाटक
7. श्री पी. रामैया, सीनियर रिपोर्टर, दि हिन्दू
8. श्री पी. एस. ईश्वर भट्ट, बगलोर संवाददाता, उदयवाणी
9. श्री जी. बसवराज, न्यूज़ एडीटर, आकाशवाणी बगलोर
10. श्री के. व्ही. गुरुप्रसाद, प्रोड्यूसर, सूचना-विभाग
11. श्री एन. के. दासप्पा, प्रोड्यूसर, सूचना-विभाग
12. श्री पुट्टास्वामी, सहायक प्रोड्यूसर, सूचना-विभाग
13. श्री रंगनाथन, चीफ आफ़ ब्यूरो, यू. एन. आई.
14. श्री रघुराम, चीफ़ आफ ब्यूरो, प्रेस ट्रस्ट आफ़ इण्डिया
15. श्री मदनराव, चीफ़ आफ़ ब्यूरो, हिन्दुस्तान समाचार
16. श्री यगाती कृष्णामूर्ति, विशेष संवाददाता, इण्डिया टू-डे

17. श्री सेमुअल राजप्पा, चीफ़ आफ़ ब्यूरो, समाचार भारती
18. श्री सुइस फर्नांडीस, संडे
19. श्री एम. बी. सिंह, सम्पादक, सुधा

महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित बाहुबली साहित्य

हिन्दी प्रकाशन

1. अन्तर्द्वन्द्वों के पार : गोमटेश्वर बाहुबली	लक्ष्मीचन्द्र जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, बी/45-47, कनाट प्लेस, नयी दिल्ली, 1979, मूल्य 25.00
2. गोमटेश-गाथा ऐतिहासिक (उपन्यास)	नीरज जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, 1981. पृष्ठ 212 : मूल्य 25.00
3. महाभिषेक-स्मरणिका : ई० 981-1981 (महोत्सव की हिन्दी स्मारिका)	सम्पादक : लक्ष्मीचन्द्र जैन, प्रकाशक—श्री वीर निर्वाण ग्रन्थ प्रकाशन समिति, इन्दौर 2, 1981, पृष्ठ 16+280, चित्र 28, मूल्य 50.00
4. बाहुबली-आख्यान (अपभ्रंश से अनूदित)	मूल : महाकवि पुष्पदन्त, अनुवाद : डा. देवेन्द्रकुमार जैन, प्रकाशक—सहस्राब्दी महोत्सव समिति, श्रवण-बेलगोल, 1980, पृष्ठ 124, मूल्य 10 00
5. तन से लिपटी बेल : (पौराणिक उपन्यास)	आनन्द प्रकाश जैन, अहिंसा मन्दिर प्रकाशन, दरियागंज दिल्ली, अनेकान्त मे पुन:प्रकाशित · 1977, पृष्ठ 210 : मूल्य 5.00
6. सत्ता के आर-पार (नाटक)	विष्णु प्रभाकर, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, 1981, पृष्ठ 60, मूल्य 7.50
7. जय गोमटेश्वर (सामान्य विवरण)	अक्षयकुमार जैन, स्टार पब्लिकेशन्स, आसफअली रोड नयी दिल्ली, पाकेट बुक सस्करण, पृष्ठ 212, मू. 3/-
8. जैन साहित्य और शिल्प में बाहुबली : (इतिहास परक नोट)	डा. सागरमल जैन एव डा. मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी, श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम, वाराणसी, 1981, पृष्ठ 20, मूल्य 2.00
9. योग चक्रेश्वर बाहुबली (पौराणिक कथानक)	आर्यिका ज्ञानमती माताजी . त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर (मेरठ), पृष्ठ 112, मूल्य 2.00
10. भगवान् बाहुबली	आर्यिका ज्ञानमती माताजी, प्रकाशक : त्रिलोक शोध सस्थान, हस्तिनापुर, 1980, पृष्ठ 55, मूल्य2.00
11. गोमटेश्वर बाहुबली : एक चिन्तन (दार्शनिक ऊहापोह)	डा. हुकमचन्द भारिल्ल, जैन युवा फेडरेशन, ए-4, बापूनगर, जयपुर, 1981, पृष्ठ 17

12. गोमटेश बाहुबली (अपभ्रंश से अनूदित)	मूल · महाकवि पुष्पदन्त, अनुवाद : वीरेन्द्र प्रसाद जैन, अलीगज एटा, उ. प्र. 1981.
13. तपोमूर्ति बाहुबली	कमलादेवी जैन . प्रकाशक—डा. राजेन्द्र जैन, 1981
14. गोमटेश्वर (खण्ड-काव्य)	मिश्रीलाल जैन एडवोकेट: राहुल प्रकाशन, गुना, *1980, पृष्ठ 118 : मूल्य 15.00*
15. बाहुबली (खण्ड काव्य)	अनूपचन्द न्यायतीर्थ : दिगम्बर जैन आतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, महावीर भवन, जयपुर 1981, पृष्ठ 82, मूल्य 10.00
16. भरतबाहुबली काव्यम् (संस्कृत महाकाव्य)	मुनि पुण्यकुशलगणि, सम्पादक—मुनि दुलहराज, जैन विश्व-भारती, लाडनू (राजस्थान)
17. भरत-बाहुबलि (सगीत नाटक)	हल्केलाल जैन, बुन्देलखण्ड स्याद्वाद परिषद, मडावरा, (ललितपुर उ. प्र.) पृष्ठ 34 . मूल्य 0.25.
18. महाप्राण बाहुबली (काव्य नाटक)	श्रीमती कुन्था जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, 1981, पृष्ठ 68 · मूल्य 7.50
19. परे जय-पराजय के (खण्ड-काव्य)	डा. रमेशकुमार बुधौलिया, प्रकाशक प्रस्तोता : डा. सुरेशचन्द जैन, सेवा-सदन, लखनादौन म. प्र., 1981 पृष्ठ 176, मूल्य 7.00
20. प्राण-प्रिय काव्य	कुन्थुसागर स्वाध्याय सदन, खुरई. (म. प्र.)
21. श्रवणबेल और दक्षिण के अन्य तीर्थ	राजकृष्ण जैन, वीर सेवा मन्दिर, दरियागज, दिल्ली, पृष्ठ 90, मूल्य 7.00
22. श्रवणबेलगोल (वर्णन एव पूजा)	सम्पादक : चक्रेश्वरकुमार मित्तल, प्रकाशक—श्री वीर पुस्तकालय, श्रीमहावीरजी (राजस्थान), 1967. पृष्ठ 36, मूल्य 0.80
23. श्री बाहुबलि विजयम् (सस्कृत नाटक)	एन . रगनाथ शर्मा, चन्द्रगुप्त ग्रन्थमाला, श्री जैन मठ श्रवणबेलगोल. पृष्ठ 46 : मूल्य 2.50
24. स्वाभिमानी बाहुबली तथा उनके अनुयायी	क्षुल्लक तीर्थसागर, मुद्रक—शान्तिलाल शहा, स्वस्तिक प्रिंटिंग प्रेस, पुणे (महाराष्ट्र)
25. श्रवणबेलगोल—मेरी यात्रा . (यात्रा सस्मरण)	सग्रहकर्ता—महेन्द्रकुमार जैन, प्रकाशक—जनकल्याण परिषद्, एफ—94, जवाहरपार्क वेस्ट, लक्ष्मीनगर, दिल्ली.
26. गोमटेस थुदि (मूल कन्नड़ मे स्तवन) अन्तरभारती सारस्वत पीठ, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर द्वारा प्रस्तुत	बोप्पण पण्डित (12वी शताब्दी) श्रवणबेलगोल में उत्कीर्ण शिलालेख का नागरी लिप्यन्तर और हिन्दी रूपान्तर, जैन मठ, श्रवणबेलगोल, 1981, पृष्ठ 20, मूल्य 1.00

27. गोमटेश अष्टक (गोमटेस थुदि)	मूल—आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती, हिन्दी पद्यानुवाद—आचार्य विद्यासागरजी. श्री मुनिसंघ स्वागत समिति, सागर. (म.प्र.) 1980 पृष्ठ 16 : मूल्य 0.50
28. गोमटेस थुदि	हिन्दी पद्यानुवाद— आचार्य विद्यासागरजी : भागचन्द इटोरया सार्वजनिक न्यास, दमोह. (म. प्र.) 1981. पृष्ठ 24 : मूल्य 1 00
29. गोमटेस थुदि (हिन्दी अर्थ)	एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी श्री जैन मठ, श्रवणबेलगोल · पृष्ठ 16 . मूल्य 1.50
30. गोमटेस थुदि (गेयानुवाद संग्रह)	संग्रह-सम्पादन—पं० कमलकुमार जैन शास्त्री 'कुमुद' एवं पं० फूलचन्द शास्त्री, 'पुष्पेन्दु' श्री कुन्थुसागर स्वाध्याय सदन, खुरई (म प्र.) 1981 पृष्ठ 60 : मूल्य 2.00
31. श्री गोमटेश बाहुबली जिन-पूजा	नीरज जैन, शान्ति-सदन, सतना (म प्र)
32 बाहुबली अष्टक	क्षुल्लिका अनगमती, प्रकाशक—स्याद्वाद शिक्षण परिषद्, शाखा नीरा. (पुणे) पृष्ठ 19 · मूल्य 2.00
33 गोमटेस थुदि	श्री नेमिचन्द्राचार्य पद्माभ प्रिंटर्स हासन
34. भगवान श्रीगोमटेश स्तुति	गो. वा. बोडकर . बाहुबली मुद्रणालय, बाहुबली कुम्बोज (कोल्हापुर. महा)
35. गोमटेश स्तुति	चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, श्रवणबेलगोल
36. गोमटेस थुदि	बाबू रतनलाल जैन, दिल्ली
37. भगवान बाहुबली	त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर
38. भगवान बाहुबली (स्तवन और पूजन)	सुबोधकुमार जैन बिहार प्रादेशिक दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, राजगिर. (नालन्दा), पृष्ठ 20
39. बाहुबली . चित्र कथा	राजमल जैन, टाइम्स ऑफ इण्डिया प्रकाशन, बम्बई
40. बाहुबली : चित्र कथा	आनन्द पाई इण्डिया बुक हाउस एज्युकेशन ट्रस्ट, बम्बई 1981. पृष्ठ 30 . मूल्य 3.00
41. ज्ञानगंगा	श्री गुलाबचन्द जैन
42 भगवान श्री गोमटेश	श्री जैनमठ श्रवणबेलगोल
43. श्री जिनेन्द्र-पूजन	श्री सुभाष जैन, दिल्ली
44. बाहुबलीय	श्री वृषभप्रसाद जैन, अलीगज, एटा. (उ. प्र.)
45. स्याद्वाद ज्ञान गंगा	प० सुमतिचन्द्र जैन शास्त्री, मोरैना (म. प्र.)
46. महामस्तकाभिषेक श्रवणबेलगोल 1981 : (फोल्डर-अंग्रेजी, हिन्दी कन्नड़ में)	पर्यटन विभाग कर्नाटक, बगलोर, पृष्ठ 24

47. महाप्राण बाहुबली	श्रीमती कुनथा जैन के आलेख पर आधारित, श्रवणबेलगोल में मंचित नृत्य-नाटिका का परिचय
48. त्यागवीर बाहुबली यक्षगान	श्री मजुनाथ यक्षगान मण्डली धर्मस्थल द्वारा मंचित यक्षगान नाटिका का परिचय

हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ

1. तीर्थंकर	गोमटेश्वर विशेषांक · खण्ड 10, अक 10 : फरवरी 81
2. अनेकान्त	गोमटेश्वर बाहुबली विशेषाक, वर्ष 33, किरण 4. वीरसेवा मन्दिर, 21 दरियागज, दिल्ली
3. धर्मयुग	मुखपृष्ठ तथा श्री लक्ष्मीचन्द जैन और सरयू दोशी के लेख, 21 फरवरी 1981
4. सन्मति	बाहुबली विद्यापीठ, बाहुबली कुम्बोज (कोल्हापुर) श्री गोमटेश्वर विशेषाक
5. नवनीत : हिन्दी	भारती विद्या-भवन, तारदेव, बम्बई, फरवरी 81. श्री मिश्रीलाल जैन की कविता और सर्वश्री जैनेन्द्र-कुमार, लक्ष्मीचन्द्र जैन, अशोककुमार सक्सेना, पिणाकपाणि शकर के लेख तथा श्रीदर्शन लिखित बाहुबली चरित्र
6. साप्ताहिक हिन्दुस्तान	श्री शिवकुमार गोयल का लेख
7. सम्यग्ज्ञान	श्री त्रिलोक शोध सस्थान, हस्तिनापुर, प० मोतीचन्द्र जैन—रवीन्द्रकुमार जैन, बाहुबली अक
8. जैनमित्र	भगवान् बाहुबली सहस्राब्दि विशेषाक, अंक 13-16 81. सम्पादक—डाह्याभाई कापड़िया
9. वीर वाणी	प० भँवरलाल न्यायतीर्थ, जयपुर, विशेषांक—मार्च 81
10. वीर	अखिल भारतीय दिगम्बर जैन परिषद्, मेरठ. गोमटेश अक : 22 फरवरी 1981
11. जैन तीर्थ-दर्शन	प्रकाशक वही : सम्पादक श्री अक्षयकुमार जैन, दिल्ली
12. वल्लभ-सन्देश	दिसम्बर 80 एव फरवरी 81 अजमेर प्रिंटिंग वर्क्स, जयपुर
13. माधवी	महिला सम्मेलन की स्मारिका : श्रवणबेलगोल 1981 हिन्दी, अंग्रेजी और कन्नड़ का सम्मिलित प्रकाशन
15. दिगम्बर जैन महासमिति बुलेटिन	सम्पादक श्री नेमिचन्द जैन, दिल्ली. अप्रैल 1981 अंक.

16. सरिता	पाक्षिक प्रकाशन, दिल्ली प्रेस, दिल्ली श्री धीरेन्द्राचार्य का लेख : मार्च 1981
17. भू-भारती	पाक्षिक प्रकाशन. दिल्ली प्रेस दिल्ली श्रीचन्द मिश्र का लेख : अप्रैल प्रथम-1981
18. स्मारिका डायरी	भगवान् बाहुबली अभिषेक समिति, श्री दिगम्बर जैन पंचायती मन्दिर, मस्जिद खजूर दिल्ली द्वारा प्रकाशित

नोट—इनके अतिरिक्त तमिल, मलयालम और गुजराती में कुछ छुटपुट प्रकाशन देखने में आये, परन्तु उनकी पूरी जानकारी प्राप्त नहीं की जा सकी।

मराठी प्रकाशन

1. श्रीचाउण्डराय कारवियले (पद्य)	श्री पण्डिता सुमतिबाई शहा, मूल्य 7 00 श्राविका संस्थानगर, शेलापुर. पृष्ठ 84
2. गीत-गोमटेश (गीत संग्रह)	विद्युल्लता हिराचन्द शहा. श्राविक संस्थानगर सोलापुर पृष्ठ 40 · मूल्य 3 00
3. तीर्थंकर	सम्पादक श्री श्रेणिक अन्नदाते. विशेषांक फरवरी 81.
4. सन्मति	गोमटेश विशेषांक बाहुबली विद्यापीठ, बाहुबली—कुम्बोज (कोल्हापुर)
5. अमृत महोत्सव स्मरणिका	दक्षिण भारत जैन सभा की प्रगति 1902-1980
6. धर्म-युद्ध	ज ने क्षीरसागर : जिनसेनाचार्य के महापुराण के बाहुबली प्रसग का भावानुवाद, महाराष्ट्र मुद्रणालय, पुणे
7. भिन्न-सेवा	मार्च 81, लेख—'वराट मूर्ति का अभिषेक'
8. युवा-दर्शन	महामस्तकाभिषेक महिमा
9. सर्वोदय-साधना	विशेषांक 1981. सौ. सरयू दोशी का लेख

कन्नड़-प्रकाशन

1. स्मरण-संचिका	महोत्सव की कन्नड़ स्मारिका · सम्पादक—ए. आर. नागराज, प्रकाशक महोत्सव समिति, श्रवणबेलगोल. 1981.
2. विश्वतीर्थ श्रवणबेलगोल	श्री टी. ए. मुन्नोली, बाहुबली
3. भगवान बाहुबली की कहानी	विज्ञापन एव दृश्य प्रचार सचानलनालय, सूचना—प्रचार मन्त्रालय, भारत सरकार, दिल्ली
4. बेलगोलद गोमटेश्वर	श्री जी. एच. परमेश्वरैया, राज्य वेयस्कर शिक्षण समिति, मैसूर
5. जनवचन संग्रह	श्रवण संस्कृति योजना परिषद्, श्रवणबेलगोल

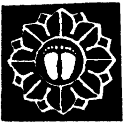
6. धर्मश्री	एम एन नागराज, . विश्व हिन्दू परिषद बंगलोर
7. सप्तगिरि	श्री के सुब्बाराव, तिरुपति
8. गोम्मट	विश्व हिन्दू परिषद्, बेंगलोर
9. सुवर्णका	जिनवाणी, मैसूर
10. भगवान बाहुबली	दिल्ली प्रकाशन
11. गोमटेश्वर श्रुदि	श्री जैनमठ श्रवणबेलगोल
12. महामस्तकाभिषेक	कर्नाटक राज्य पर्यटन विभाग
13. उत्थान	एस. आर रामास्वामी मैसूर
14. कस्तूरी	फरवरी 81, लेख—वीतराग वैभव
15. वनिता कन्नड-मराठी	फरवरी 81. लेख—बारह साल का महामस्तकाभिषेक
16 उस्नाना, कन्नड-मराठी	फरवरी 81 लेख—श्री एस. के रामचन्द्रराव
17 कर्नाटक (चित्रो मे)	कन्नड सस्कृति निदेशालय, नृपताजा रोड, बगलोर
18. तुषार कन्नड-मराठी	फरवरी 81, लेख—ईश्वर दौतोत
19 पेम्फलेट	महामस्तकाभिषेक कार्यक्रम . पर्यटन विभाग
20 उदय भारती	त्यागवीर बाहुबली वंले · श्रवणबेलगोल
21. माधवी	महिला सम्मेलन की स्मारिका . श्रवणबेलगोल 81. हिन्दी, कन्नड और अग्रेजी मे प्रकाशित
22. सुधा	अनन्तराम, बेगलोर
23. प्रजामत	विशेष लेख श्री जी. वी. अन्जी, बेगलोर
24 बेलगोलद गोम्मटेश	जी परमशिवैया, मैसूर
25 श्री गोमट वैभव	एच वी रमेश, हासन
26. कर्नाटक ओन्दु नोटा	बेगलोर

अंग्रेजी-प्रकाशन

1. होमेज टु श्रवणबेलगोल	सम्पादन—सौ सरयू दोशी, फरवरी 1981. रगीन सचित्र, मार्ग प्रकाशन . सचित्र पृष्ठ 186 · 275 00
2. गोमटेश्वर कॉमोमोरेशन वाल्यूम	महोत्सव की अग्रेजी स्मारिका · श्रवणबेलगोल 81. सम्पादक— डा टी. जी. कलघटगी
3. सैक्रेड श्रवणबेलगोल	ए सोसियो रिलीजस स्टडी : डा. विलास ए. सगवे, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली : पृष्ठ 135. मूल्य 25.00
4. पैनोरमा ऑफ जैन आर्ट (साउथ इण्डिया)	सम्पादक—श्री सी. शिवराममूर्ति, बहुरगा मुद्रण, टाइम्स ऑफ़ इण्डिया, बम्बई. मूल्य 600.00 महोत्सव के उपरान्त प्रकाशित
5. श्रवणबेलगोल	डा. एस. सैट्टार, धारवाड़, 1981
6. लॉर्ड बाहुबली ए प्रिंस आफ पीस	दिल्ली प्रकाशन
7. श्रवणबेलगोल	पुरातत्व विभग मैसूर. पृष्ठ 50. मूल्य 2.50

8. कामदेव बाहुबली	आर्यिका ज्ञानमती माताजी, हस्तिनापुर
9. बाहुबली	अमर चित्रकथा 231
10. द इलेस्ट्रेटेड वीकली आफ़ इण्डिया	महोत्सव विशेषाक, 15-21 फरवरी 1981
11. टाइम मैगजीन	क्रमाक 11, मार्च 1981
12. सण्डे	मार्च 1981. श्री एल. फरनान्डिस का लेख
13. मार्च ऑफ कर्नाटक	श्रवणबेलगोल अक : कर्नाटक सूचना विभाग फरवरी 81
14. इण्डिया टु-डे	मार्च 15, 1981
15. द मिरर	गोमटेश सहस्राब्दि सदर्भ . फरवरी 1981 श्री जाविद हसन और ए. आर. शरीफ का लेख 'द महामस्तकाभिषेक'
16. द हिन्दू	साप्ताहिक सस्करण, रविवार, 22-2-81
17 इण्डियन कॉफी	श्री वी बाहु का लेख—गोमटेश्वर, मार्च 1981
18. स्टेट बैंक ऑफ मैसूर	एनुअल रिपोर्ट, 1981

इसके अतिरिक्त जर्मन पत्रिका 'ऐरोन' के नवम्बर 81 के अक मे एक विस्तृत लेख के साथ दिलीप मेहता के सुन्दर चित्र प्रकाशित है। फ्रेन्च पत्रिका 'फीगारो' के मार्च 81 अक मे भी सचित्र लेख है।



भारतीय डाक व तार विभाग
फिलैटली शाखा—सूचना-पत्र

(9-2-81 को जारी की गयी टिकिट के सम्बन्ध में विभागीय परिपत्र)
गो म्म टे श्व र

पौराणिक जैन मान्यताओ के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ के दो पुत्र थे, भरत और बाहुबली। इन सौतेले भाइयो के बीच प्रभुत्व प्राप्त करने हेतु सघर्ष हुआ और उनकी शक्तिशाली सेनाएं आसन्न युद्ध के लिए एक-दूसरे के आमने-सामने मैदान मे आ डटी। दोनो पक्षो के मन्त्रियो की परिषद् के परामर्श पर दोनो राजाओ के बीच द्वन्द्व युद्ध की शृंखला के माध्यम द्वारा इस समस्या को निपटाने का हल ढूंढा गया। बाहुबली ने अपने प्रतिद्वन्द्वी को परास्त कर दिया, परन्तु मनुष्य की लोलुपता, सत्ता की लालसा, घमण्ड और हिंसा की कुत्सित प्रवृत्ति की चरम परिणति से हताश होकर वे विरक्त हो गये तथा उन्होने ससार का परित्याग कर दिया। उन्होने पूरे एक वर्ष तक कायोत्सर्ग मुद्रा मे कठिन तपश्चर्या की, जो भौतिक अस्तित्व की निवृत्ति के लिए किये जाने वाले कठिन योगासन थे।

बाहुबली की दक्षिण भारत मे गोम्मटेश्वर के रूप मे मान्यता है। गोम्मटेश्वर की विराट् अखण्ड मूर्ति गगराज राजा मल्लार सत्यवाक्य (जिसको कि रचामल्लार के नाम से भी जाना जाता है) के मन्त्री तथा सेनापति चामुण्ड राय द्वारा बनवायी गयी थी। यह मूर्ति श्रवणबेलगोल (कर्नाटक) मे ग्रेनाइट पर्वत के शिखर पर स्थापित है। इस स्थान ने अपना नाम पारभासक जल के सरोवर से (जिसको अब कल्याणी के बतौर जाना जाता है) जिसके कि चारो ओर जैन श्रमण (सन्यासी) चिन्तन किया करते थे, प्राप्त किया।

18 मीटर ऊँची विशाल मूर्ति 140 मीटर ऊंची पहाडी से भू-दृश्य तक फैली शोभा मे चार चाँद लगा रही है। परम्परागत कायोत्सर्ग मुद्रा मे, महापुरुष (लोकोत्तर व्यक्तित्व) के द्योतक उनके आजानु बाहु घुटनो तक पहुँचे हुए हैं तथा उनकी दोनो भुजाओ पर माधवी वल्लरियाँ आलिगनबद्ध है। जैसा कि परम्परागत भारतीय कला मे सन्निहित है, यह आकृति मानव सौहार्द एवं दिव्य अनुग्रह से अनुप्राणित है। मूर्ति का मुखमण्डल आभ्यतर परमानन्द से दैदीप्यमान है जिसकी कि अनुभूति एक योगी को समर्पित जीवन के चरम परितोष के पश्चात् ही उपलब्ध होती है। अपने आसपास के ससार का विस्मरण करते हुए उनके नेत्र उस लक्ष्य बिन्दु पर एकनिष्ठ हैं जहां हमारे अनुभव का ससार लौकिक भावनाओ से परे एकात्म स्थापित करता है।

एक अनाम सिद्धहस्त मूर्तिकार, जिसने इस मूर्ति की परिकल्पना की, मूर्ति शिल्प की दो विभिन्न पद्धतियो का सगम प्रस्तुत करता है। इसका ऊपरी भाग पूर्णतया गोलाकार रूप में पत्थर को खोद-खोदकर निर्मित किया गया है जबकि इसका निचला भाग उभरी उत्कीर्ण स्थिति में है। कणाश्म प्रस्तर की इस मनोहारी प्रतिमा को पालिशदार सतह के माध्यम से चमका-चमका कर उसके सौष्ठव एव परिष्कृति को और भी निखार कर दर्शाया गया है, जो कि ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी की अशोक की ओपदार मूर्तियो के समकक्ष है।

इस भव्य मूर्ति का लोक-समर्पण लगभग 981 ईसवी में उस समय किया गया जबकि इसकी प्रतिष्ठापना की गयी थी। इस विराट् प्रतिमा की संस्थापना की सहस्राब्दी के उपलक्ष्य मे 1981 मे इसके महामस्तकाभिषेक (पवित्र अभ्यंजन) का अनुष्ठान किया जा रहा है।

भारतीय डाक-तार विभाग इस शुभ अवसर के उपलक्ष्य में एक विशेष डाक-टिकट जारी करके अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।



डिज़ाइन का विवरण

डाक टिकट के डिज़ाइन मे श्रवणबेलगोल स्थित प्रतिमा का ऊपरी भाग चित्रित किया गया है। सुर्महन्दर सिंह के डिजाइन पर आधारित प्रथम दिवस आवरण कमल पुष्प के भीतर गोम्मटेश्वर के पदचिन्हो को दिग्दर्शित कर रहा है। चरणजती लाल के डिज़ाइन पर आधारित विशेष निरूपण में कलाकार के नज़रिए से महामस्तकाभिषेक हेतु प्रयोग किया जाने वाला पावन कलश अंकित है।

तकनीकी आंकडे

जारी करने की तारीख—9.2.1981	कागज़—बिना जलचिह्न का
मूल्य वर्ग—100 पै.	चिपचिपा डाक-टिकट कागज
कुल आकार—4.06 × 2.75 से. मी.	
मुद्रण आकार—3.70 × 2.40 से. मी.	मुद्रण प्रक्रिया—फोटोग्रेव्योर
प्रति शीट सख्या—40	मुद्रित टिकटो की सख्या—25,00,000
रंग—बहुरंगी	डिज़ाइन और मुद्रण—भारत प्रतिभूति मुद्रणालय
छिद्रण— 14 1/2 × 14	

कर्मयोगी भट्टारक स्वामीजी के बारह वर्ष के कार्यकाल में
क्षेत्र पर नव-निर्माण

1. नवीन चन्द्रप्रभ जिनालय की स्थापना

2. श्रेयासप्रसाद अतिथि-निवास	14 शिखर-द्वार एव पानी की टकी
3. मुनि विद्यानन्द निलय	15. 5000 गैलन की विभागीय पानी टकी
4. पर्यटन विभाग की केन्टीन	16. सुमतिबाई महिलाश्रम
5. 'भक्ति' गेस्ट हाउस	17. चामुण्डराय-भवन कमेटी कार्यालय
6. गगवाल गेस्ट हाउस	18 पुरानी धर्मशाला मे दो नवीन कमरे
7. पी. एस जैन गेस्ट हाउस	19 श्री महावीर-कुन्दकुन्द भवन
8. लाला सिद्धोमल जैन गेस्ट हाउस	10. धर्मचक्र वाटिका और महावीर कीर्तिस्तम्भ
9. मजुनाथ कल्याण-मण्डप	21 आयुर्वेदिक अस्पताल
10. मध्यप्रदेश भवन	22 ब्राह्मरी-भवन
11. सरसेठ हुकमचन्द त्यागी निवास	23 राज्य परिवहन बस स्टेण्ड
12. भट्टारक-भवन एव सरस्वती-कक्ष	24 चामुण्डराय उद्यान
13. गोडाउन	25. कल्याणी सरोवर का जीर्णोद्धार

एव सभी प्राचीन मन्दिरो की मरम्मत

अर्द्धनिर्मित और प्रस्तावित भवन

वर्तमान मे सात अन्य भवनो का निर्माण यहाँ प्रस्तावित है। इनमे से कुछ का शिलान्यास सम्पन्न हो चुका है और निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है। शान्तिप्रसाद कला-मन्दिर लगभग आधा बन चुका है। प्रस्तावित भवनो की तालिका इस प्रकार है—

1. साहु शान्तिप्रसाद कला-मन्दिर
2. गुरुकुल भवन
3. जन-मगल महाकलश भवन
4. सरस्वती भवन
5. मिश्री लाल जैन गेस्ट हाउस
6. भभूतमल भण्डारी गेस्ट हाउस
7. कर्नाटक भवन

श्रवणबेलगोल में तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के लिए उपलब्ध स्थायी आवास व्यवस्था

अतिथि-गृह

श्रवणबेलगोल में यात्रियों की सुविधा के लिए अनेक उदार दानदाताओं के द्वारा आधुनिक सुविधाओं से युक्त अतिथिगृहों का निर्माण कराया गया है। इनका विवरण इस प्रकार है—

1. 'श्रेयांसप्रसाद अतिथि-निवास' इस क्षेत्र पर बनने वाला प्रथम आधुनिक गेस्ट हाउस है। सन् 1975 में निर्मित इस अतिथिगृह को महोत्सव के समय दो मंजिला करा लिया गया है। अब इसमें सर्व-सुविधा सम्पन्न सात कमरे, एक रसोईघर और एक भोजन-वार्ता-कक्ष है। एक वर्ष पूर्व से इस अतिथिगृह ने महोत्सव के 'अध्यक्षीय-आवास' का रूप ले लिया था। इस बीच अनेक महत्त्वपूर्ण बैठकें, गोष्ठियाँ और विचार-विमर्श प्रायः यहीं सम्पन्न हुए। मेले के समय तो हर व्यक्ति के लिए, हर समय इसके द्वार खुले रहे।

2. सेठ लालचन्द हीराचन्द द्वारा निर्मित 'भक्ति अतिथि गृह' में सर्व-सुविधायुक्त तीन कमरे, एक रसोई तथा भोजनकक्ष है। नवम्बर' 80 में इसका उद्घाटन हुआ।

3. श्री रमेशचन्द जैन, दिल्ली द्वारा बनवाये गये 'पी. एस. जैन अतिथिगृह' में सर्व-सुविधा-युक्त चार कमरे, रसोईघर तथा भोजनकक्ष है। यद्यपि इसका विधिवत् उद्घाटन 19-12-1981 को सम्पन्न हुआ, परन्तु मेलाकाल में महोत्सव समिति तथा महासमिति के उप-कार्यालय के रूप में इस अतिथिगृह का उपयोग होता रहा।

4. कलकत्ता के श्री रतनलाल गंगवाल द्वारा निर्मित 'गंगवाल अतिथिगृह' में सुविधा-सम्पन्न चार कमरे, रसोईघर तथा भोजनकक्ष है।

5. अपनी निर्माण योजनाओं के लिए विख्यात 'अभिनव-चामुण्डराय' उपाधि से अलंकृत श्री वीरेन्द्र हेगड़े ने सभी आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न एक विशाल भवन का निर्माण यहाँ कराया है। भवन में कल्याण-मण्डप नाम का विस्तृत हाल है, जिसमें विवाह तथा बड़ी सभाएँ आयोजित की जा सकती है। हाल के साथ रसोईघर, भोजनशाला तथा वरपक्ष और वधूपक्ष के ठहरने की व्यवस्था है। ठहरने के लिए अन्य भी कई कमरे हैं। समापन समारोह के समय 15-3-81 को मुख्यमंत्री श्री गुण्डूराव ने इस 'मंजुनाथ कल्याण-मण्डप' का उद्घाटन किया।

6. दिल्ली के श्री ललितकुमार जैन द्वारा 'सिद्धोमल जैन अतिथिगृह' का निर्माण कराया गया है। इसमें सुविधायुक्त तीन कमरे और रसोईघर है।

धर्मशालाएँ

श्री ताराचन्दजी बड़जात्या परिवार द्वारा निर्मित 'राजश्री गेस्ट हाउस' और पूर्व निर्मित 'कहानजी याज्ञिक आश्रम' तथा शिखरद्वार से संयुक्त धर्मशालाएँ यात्रियों के उपयोग में आती हैं।

'मुनि विद्यानन्द-निलय' श्रवणबेलगोल की विशालतम धर्मशाला है। देश के विभिन्न भागों के दातारों के उदार सहयोग से 1976 में इस धर्मशाला का निर्माण हुआ। पहले निचली मंजिल

के चौबीस कमरे बने थे परन्तु अब इसे दो-मंजिला करा लिया गया है। अब इसमें 48 कमरे तथा अनेक कक्ष हैं जिनमे चौबीसों घण्टे जलपूर्ति के साथ रसोई, स्नानगृह और शौचगृह सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इसके दातारो की तालिका इस प्रकार है—

1. श्री सागरचन्द जैन
2. श्री अजितप्रसाद जैन, जौहरी
3. श्री प्रकाशचन्द शीलचन्द जैन जौहरी
4. श्री नानकराम जैन
5. श्री कश्मीरचन्द गोधा
6. श्री जयप्रसाद जैन
7. श्री सुरेशचन्द जैन, डिप्टीगंज
8. श्री सुरेशचन्द जैन, चाणक्यपुरी
9. श्री शंकरलाल कासलीवाल
10. श्री विशालचन्द जैन
11. श्री प्रेमकुमार जैन
12. श्री मीरीमल नेमीचन्द जैन
13. श्री रमेशचन्द्र जैन, पी. एस. मोटर्स
14. श्री बी.जे.नाभिराजैया
15. श्री ए. आर. नागराज
16. श्री श्रीचन्दजैन
17. श्री एस. एम. शाह
18. श्री महावीरप्रसाद जैन
19. श्री राजेन्द्रकुमार जैन गोधा
20. श्री पी. सी. जैन
21. श्री जे. पी. जैन
22. श्री प्रेमचन्द जैन, जैना वाच कं.
23. श्रीमती शकुन्तलादेवी जैन
24. श्रीमती खिल्लोदेवी जैन
25. श्रीमती विमला शीलचन्द जैन
26. श्री जितेन्द्र जैन वकील
27. श्री चन्द्रसेन जैन
28. श्री इन्द्रसैन जैन, पहाड़ी धीरज
29. श्री इन्द्रसैन जैन, ग्रीनपार्क
30. श्री मदनलाल जैन
31. श्री रघुनन्दनप्रसाद राजेन्द्रकुमार जैन

गोमटनगर में निर्मित अस्थायी उपनगरों के नाम

महोत्सव के अवसर पर यात्रियों के ठहरने के लिए ग्यारह उपनगर बसाये गये थे—

1. चन्द्रगुप्त नगर
2. चामुण्डराय नगर
3. गुल्लिकाअज्जी नगर
4. एलाचार्य नगर
5. एम. व्ही. कृष्णप्पा नगर
6. नेमिसागर वर्णी नगर
7. इन्दिरा नगर
8. एम. एस. वर्द्धमानय्या नगर
9. रामाशांति नगर
10. जिनचन्द्र नगर
11. श्रेयांस नगर

कार्यालयीन व्यवस्था

महोत्सव-समिति कार्यालय

1. श्री के. जी. राजन्ना, विशेष अधिकारी, 1-10-80 से 4-12-80
2. श्री टी. एन. हनुमन्तैया, लेखा अधीक्षक
3. श्री एम. अनन्तकृष्णाराव, कार्यकारी सहायक
4. श्री आर. एस. सुरेन्द्र, लेखा सहायक
5. श्री के. पी. सिद्धप्पा, प्रबन्धक

इसके अतिरिक्त अस्थायी रूप से 38 बिल कलेक्टर नियुक्त किये गये। विन्ध्यगिरि, चन्द्रगिरि, भण्डारबस्ती आदि प्रमुख केन्द्रों पर और मेलानगर में कलश राशि और दान संग्रह के लिए उनकी नियुक्ति की गयी थी। 17 दरबानों और चपरासियों की नियुक्ति भी अस्थायी तौर पर एक माह के लिए की गयी।

एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी का कर्मचारी मण्डल

1. श्री जी. बी. शान्तराज, सेक्रेटरी
2. श्री धनंजयकुमार
3. श्री अशोककुमार
4. श्री रत्नराजैया
5. श्री भरतकुमार
6. श्री कनकराजु
7. श्री नागप्पा
8. श्री वारिषेणकुमार
9. श्री पाणिराज
10. श्री निरन्जन
11. श्रीवृषभराज
12. श्री जिनदत्तराय
13. श्री यशोधर
14. श्री जयप्रभ
15. श्री बी. बी. दास

इसके अतिरिक्त महामस्तकाभिषेक महोत्सव में अस्थायी रूप से नियुक्त 35 चौकीदारों, भृत्यों और सफाई कर्मचारियों ने भी काम किया।

यन्त्री-विभाग

1. श्री एच.पी. जीवेन्द्रैया भूतपूर्व सहायक यन्त्री की सहायता हेतु विभिन्न कार्यों के क्रियान्वयन के लिए दो कनिष्ठ यन्त्री नियुक्त थे।
2. मंच और अभिषेक-मंच निर्माण कार्य के निरीक्षण हेतु वालचन्द इण्डस्ट्रीज ने श्रीधरने को इन्जीनियर नियुक्त किया।

महोत्सव के समय जैन मठ का स्थायी कर्मचारी-मण्डल

1. श्री विश्वसैन, स्वामीजी के निजी सचिव
2. श्री जिनप्पा
3. श्री के.पी. राजेन्द्र
4. श्री जयप्रभ
5. श्री रमेश देवदिग
6. श्री सोमशेखर
7. श्री महेश
8. श्री रत्नवर्मराज
9. श्री आदिराज (वाहन चालक)
10. श्री रविराज (वाहन चालक)
11. श्रीमती पोम्मकम्मा (भोजनशाला)
12. श्रीमती निर्मलम्मा (भोजनशाला)
13. श्री राज
14. श्री नेमीराज
15. श्री रंगप्पा
16. श्रीमती मलम्मा



जन
जन
की
अ
नु
भू
ति

शुभ-कामना सन्देश

गृह मन्त्री, भारत
नई दिल्ली
दिनांक 15-3-1983

प्रिय श्री नीरज जैन जी,

बम्बई से श्री श्रेयांसप्रसादजी जैन का पत्र आया है। मुझे श्रवणबेलगोल में गोमटेश्वर बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दी महोत्सव 1981 में सम्मिलित होने का अवसर मिला था। यह जैन समाज के लिए बड़े गौरव की बात है कि इस शुभ अवसर पर हमारी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी भी वहाँ उपस्थित थीं। एक टूरिस्ट स्थान पर लाखों लोगों का इन्तजाम और वह भक्ति-भावना और सन्त-समागम एक यादगार बन गयी है। यह सब कार्य स्वामी श्री विद्यानन्दजी महाराज के पुण्य प्रताप एवं प्रेरणा का परिणाम है।

शुभ कामनाओं सहित,

आपका
प्रकाशचन्द्र सेठी

मैं एक टक देखता ही रहा, अघाया नहीं

सन् 1940 में महामस्तकाभिषेक के समय मुझे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के श्रवणबेलगोल अधिवेशन का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। उस समय जब मैं श्रवणबेलगोल पहली बार पहुँचा, तब मध्यरात्रि से कुछ अधिक हो गयी थी। दर्शनों की उत्कंठा और भक्ति के अतिरेक में, पहुँचते ही स्नान कर अकेला प्रभु चरणों में जा पहुँचा। दर्शन कर अवाक् रह गया। मैं भगवान की ओर एकटक देखता ही रहा, अघाया नहीं।

इसके बाद भी गया और सन् 1953 मे सौभाग्यवश महासभा का सभापति फिर मनोनीत हुआ और मेरे जीवन में दूसरा महामस्तकाभिषेक देखने का पुन: सुअवसर मिला। इसी प्रकार तीसरे मस्तकाभिषेक के समय सन् 1967 में पहुँच गया था। इसके अतिरिक्त भी कई बार मैं बाहुबली भगवान् के चरणो में जाता आता रहा।

पूर्व के तीन महा-मस्तकाभिषेकों से इस बार कई विशेषताएँ रही। इस बार इसकी सुव्यवस्था चारुकीर्ति कर्मयोगी, सुयोग्य विद्वान भट्टारक स्वामीजी श्रवणबेलगोल के द्वारा अथक परिश्रम से हुई। उन्होंने दिन-रात इसके लिए एक कर दिया। जब 4-5 वर्ष पूर्व से इसकी नियोजना प्रारम्भ हुई, तभी से स्वामीजी इसके सफलीकरण मे संलग्न हो गये थे और यह सम्भव हुआ परम पूज्य एलाचार्यश्री विद्यानन्दजी महाराज के बहुमूल्य निर्देशन से। साहु श्रेयांसप्रसादजी जैन इस महोत्सव को इस विशाल स्तर पर सफलता से सम्पन्न कराने में जिस लगन निष्ठा से जुट गये उसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता।

अबकी बार आचार्य संघ, साधु, आर्यिका आदि सयमीगण काफी संख्या में पधारे। जितने तप:चरण इस बार पधारे, उतने पहले कभी नहीं पधारे। इससे महती प्रभावना हुई। उनके निवास, आहारदान, वैयावृत का सुन्दर प्रबन्ध रहा। यात्री भी बाहर से और खास तौर से दूर-दूर प्रान्तों से पधारे। उनके ठहरने की सुन्दर व्यवस्था थी। श्रवणबेलगोल से बाहर कुछ दूर यात्रियों के ठहरने के लिए कई टाउनशिप निर्माण की गयी जिनमें नल, विद्युत, स्वयंसेवक, पूछ-ताछ, टेलीफोन व सुरक्षा का पूर्ण प्रबन्ध रहा। इस बार महोत्सव में 4-5 लाख लोगों ने भाग लिया और खास बात यह रही कि कई महीनों तक अभिषेक का क्रम चलता रहा जिससे सबको लाभ मिला। वे वास्तव में बड़े भाग्यशाली हैं जो सहस्राब्दी समारोह में पहुँच सके, देख सके तथा उसके आनन्द का अनुभव कर सके, कि यह अभूतपूर्व अवसर इस छोटी-सी मानव पर्याय में आया, जो हमारे जीवन को कृतार्थ कर गया। लेकिन अब तो उस सबकी स्मृति ही शेष रह गयी है। अब तो लगता है—

राहत का इस तरह से जमाना गुजर गया,
जैसे हवा का झोंका इधर से उधर गया॥

—सरसेठ भागचन्द सोनी

महोत्सव पूरी तरह सफल रहा

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि भगवान बाहुबली के सहस्राब्दि प्रतिष्ठापना एवं महामस्तकाभिषेक की स्मृतियो को सुरक्षित रखने के लिए 'महोत्सव दर्शन' ग्रन्थ की आयोजना की गई है। आनेवाली पीढियो के लिए इस गौरवशाली उत्सव की स्मृति दिलाने वाला यह एक स्थायी आधार होगा। मैं समझता हूँ कि श्रीयुत श्रेयांसप्रसादजी का यह निर्णय बहुत महत्त्वपूर्ण और सराहनीय है।

महामस्तकाभिषेक की घोषणा के समय से ही लोग उत्सुकतापूर्वक उस शुभ दिवस की प्रतीक्षा कर रहे थे। पिछले उत्सवों की अविस्मरणीय स्मृतियो के कारण भी, यह दुर्लभ सयोग देख पाने की लालसा, लोगो के मन मे तीव्र होती गयी। साहु श्रेयासप्रसादजी के नेतृत्व मे महोत्सव समिति की अखिल भारतीय छवि इस उत्सव की व्यापकता का आभास देती थी। एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी के मार्ग-दर्शन के कारण, महोत्सव मे वैचारिक उत्क्रान्ति से युक्त, अनेक नवीनताओं का आश्वासन मिलता था। विशेषकर दक्षिण की जैन जनता के लिए यह धर्म-सवृद्धि की सम्भावनाओ से भरा हुआ सुअवसर था।

कर्नाटक शासन ने महोत्सव की आयोजना मे पर्याप्त रुचि लेकर हर प्रकार का सहयोग दिया। यात्रियो के निवास तथा अन्य सुविधाओ के उपयुक्त प्रबन्ध प्रचुर थे और उत्तम थे। खाद्य पदार्थों तथा अन्य आवश्यक वस्तुओ की कोई कमी नही होने पायी। किसी भी समय, कही भी, आने जाने मे, यात्रियों की सुरक्षा की व्यापक व्यवस्था सचमुच सराहनीय रही। अनेक विभागो के अधिकारियो की निष्ठा और कर्तव्य-बोध को मैं विशेष रूप से याद करता हूँ जिन्होंने कई बार थकान और अन्य कठिनाइयो की परवाह न करते हुए, दिन-रात एक करके, महोत्सव की सफलता के लिए सराहनीय काम किये। इस सबका श्रेय तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री आर. गुण्डूराव को था।

बहुत पहले से ही एस डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी की बैठको मे ब्योरेवार कार्यक्रम तैयार कर लिये गये और उनके लिए महोत्सव समिति की बैठक मे वांछित सख्या मे उप-समितियों का गठन कर लिया गया था। मुझे आवास व्यवस्था का भार सौंपा गया था। श्रवणबेलगोल मे रहते हुए मैंने अनुभव किया कि उत्सव के महत्त्वपूर्ण दिनो मे विन्ध्यगिरि पर जन-समुदाय का नियन्त्रण करने के लिए पर्याप्त व्यवस्था नही की गयी है। मैंने स्वस्तिश्री स्वामी जी से, और श्री श्रेयासप्रसादजी से इस सम्बन्ध में चर्चा की। मुझे इस योजना की रूपरेखा बनाने और उसे कार्यान्वित करने को कहा गया। तभी बेरिकेटिंग की यह योजना बनायी गयी जिसके तहत लोहे के मोटे पाइपो से, मन्दिर मे गोमटस्वामी के दर्शन का पूरा-पूरा पथ नियन्त्रित किया गया। इसी का फल था कि बिना किसी दुर्घटना के, बीस फरवरी और उसके बाद के दिनो मे, वहाँ अपरिमित जन-समुदाय को व्यवस्थित रूप से भगवान का दर्शन कराना सम्भव हो सका

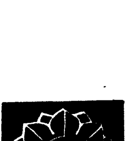
और किसी आकस्मिक दुर्घटना आदि का प्रसंग उपस्थित नहीं हुआ।

महोत्सव की विभिन्न समितियों के बीच समन्वय रखने का काम सबसे महत्त्व का और सबसे कठिन कार्य था। समितियों के संयोजक अलग-अलग प्रान्तो के थे और उनका मिलना-जुलना तथा विचार विमर्श करना प्राय: कठिन होता था। परन्तु मैंने देखा कि श्री श्रेयांसप्रसादजी के प्रयत्नों से समन्वय का यह कठिन कार्य भी आसानी से होता गया। मैंने भी इस प्रकार के समन्वय के लिए भरसक प्रयत्न किये और समिति-संयोजकों को बराबर उनके दायित्वो के प्रति सचेत करता रहा।

कर्मयोगी चारुकीर्ति स्वामीजी का धैर्य और साहू श्रेयासप्रसादजी का प्रोत्साहन हम सबके लिए प्रेरणा का अजस्र स्रोत था। थोडी-सी छुट-पुट खामियों के अलावा, महोत्सव हर दृष्टि से, पूरी तरह सफल रहा। जहाँ कभी कोई शिकायत मिली, मैंने लोगो से यही कहा कि जहाँ दस-बारह वर्ष के अन्तराल से इतना आयोजन होगा, वहाँ लोगो की ऐसी छोटी-मोटी असुविधाएँ होना स्वाभाविक है।

श्री डी. सुरेन्द्रकुमार 'विशिष्ट-अतिथि व्यवस्था समिति' मे कार्य कर रहे थे। पूरे आयोजन में अतिथियो से सम्पर्क रखने मे उनका उल्लेखनीय योगदान रहा। धर्मस्थल में समय-समय पर तरह-तरह के लोगो की अभ्यर्थना करने का दीर्घ अनुभव होने के कारण ही वे यह काम परी कुशलता से कर पाये। मेरे अन्य साथी सर्वश्री एन. वज्रकुमार और डी. हर्षेन्द्रकुमार भी स्वयंसेवक समिति में दिन-रात सेवा कार्यों मे लगे रहे। मैं ऐसा समझता हूँ कि जिन्हें भी इस महोत्सव में सेवा कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ वे सभी भाग्यशाली लोग थे।

—श्री वीरेन्द्र हेगड़े, धर्माधिकारी धर्मस्थल



स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य

भगवान गोमटेश बाहुबली की विशाल मूर्ति जो श्रवणबेलगोल में इन्द्रगिरि पर्वत पर प्रतिष्ठित है, विश्व के महान आश्चर्यों मे गिनी जाती है। मूर्ति इतनी भव्य है कि उसे देखकर मानस विकार शान्त हो जाते हैं। उस भव्य मूर्ति का महा-मस्तकाभिषेक सन् 1940 मे, मुझे देखने का सौभाग्य प्रथम बार प्राप्त हुआ था। उसके पश्चात् मूर्ति की प्रतिष्ठा को एक हजार वर्ष होने के उपलक्ष्य में जो विशाल महोत्सव हुआ उसमे भी मैं गया। उस समय की व्यवस्था का तो वर्णन करना भी असम्भव जैसा है। मुझे उस समय सबसे अधिक आकृष्ट किया चामुण्डराय सभा मण्डप ने। कितना आकर्षक उसका बाह्य रूप था! जब वहाँ पर पधारे हुए मुनिराजों और आचार्यों के समूह ने सभा मण्डप मे प्रवेश किया तो उस दृश्य को देखकर हृदय गदगद हो गया। एक साथ इतने साधुओ के समूह के दर्शन का भी मेरा यह प्रथम अवसर था।

इस महा महोत्सव के कर्ता-धर्ता एक तरह से एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी थे। किन्तु मुझे यह देखकर थोडा अचरज हुआ कि वे भी समस्त साधु समूह के मध्य मे ही बैठे हुए हैं। वहाँ जो सर्वधर्म सम्मेलन हुआ, और उसमे सब धर्मों के साधु सन्तो ने जो विचार प्रकट किये, वे समभाव के अपूर्व उदाहरण थे।

इस महा-मस्तकाभिषेक के अवसर पर मूर्ति के मस्तक पर कलश ढारने की जैसी सुन्दर व्यवस्था थी, वैसी पहले नही देखी थी। पहले तो कोई क्रम नही रहता था। जिसके जी मे आता वह मूर्ति के मस्तक पर कुछ भी चढा देता और मूर्ति का सिर नाना प्रकार की सामग्री से भर जाता था। इस बार ऐसा नही हुआ। यह सब सुविचारित व्यवस्था का परिणाम था। पहले जल कलशों से अभिषेक होने के पश्चात् ही पंचामृताभिषेक हुआ और वह भी क्रमबद्ध रूप मे हुआ। मूर्ति के चारो ओर जो मंच बनाया गया था, बहुत विशाल था। उससे दर्शको को बहुत ही आनन्दपूर्वक महा-मस्तकाभिषेक देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इस महोत्सव की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि भारत के ही नही, किन्तु अन्य देशों के पत्रो में भी इसका खूब प्रचार हुआ। वाराणसी में अनेक जैनेतर विद्वान उस महोत्सव का आँखों देखा विवरण जानने के लिए अत्यन्त उत्सुक थे। जिन्हें देवदर्शन मे आस्था नही है या जो नग्नता को देखकर मुँह पिचकाते हैं उनसे मेरा अनुरोध है कि वे एक बार इस परम पवित्र वीतराग मुद्रा से अंकित मूर्ति का दर्शन अवश्य करें। इसका दर्शन करने से उनके भावो मे अवश्य ही परिवर्तन हुए बिना नही रहेगा। स्व० काका कालेलकरजी ने इस मूर्ति का दर्शन करने के बाद अपनी लेखनी से जो उद्गार प्रकट किये थे वे स्वर्णाक्षरो में अंकित करने लायक हैं।

—सिद्धान्ताचार्य पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री

अहिंसा का प्रचार-प्रसार हुआ

वर्तमान पीढी के हम लोग बडे भाग्यशाली हैं जिन्होने अपने छोटे से जीवन मे ऐसे महान कार्य देखे हैं जो सैकडों हजारो वर्षों मे लोगो ने नही देखे। भगवान महावीर का 2500वाँ निर्वाण महोत्सव एक उमग और अत्यन्त उल्लास के साथ हमने मनाया। महावीर का धर्मचक्र एक अनोखी योजना थी जिसने सारे भारत मे ही नही विदेशो तक मे महावीर के नाम का, उनके उपदेशो का प्रचार प्रसार किया।

दूसरा सुयोग भगवान बाहुबली के सहस्राब्दि महोत्सव को देखने और उसमे सम्मिलित होने का मिला। यह कल्पना भी न थी कि इस जीवन मे इतना बडा अभूतपूर्व धार्मिक समारोह हमारी आँखो के सामने हो सकेगा। विश्व मे ऐसी विशाल सुन्दर, कलापूर्ण अन्य मूर्ति नही। एक हजार वर्ष से पहाड की चोटी पर दिगम्बरत्व को उद्घोषित करती हुई तूफान-मेघ वर्षा-गर्मी आदि के थपेडो से बची हुई अडिग खडी है। इस महोत्सव पर लाखो अनजानो ने इसको जाना, इसके निर्माता को जाना, इसके अनुयायियो को जाना, और जैन तत्त्व को जाना। महावीर की अहिंसा का प्रचार-प्रसार हुआ। भरत और बाहुबली के जीवन की घटनाये, उनके वैभव, राज्योचित कर्तव्य और उसी के साथ त्यागमय जीवन की झाकी लोगो के हृदयो पर अकित हुई। जैन धर्म का इतना प्रचार इस महोत्सव की एक महान देन थी।

महोत्सव मे शताधिक साधु-साध्वियो एव व्रतियो का सघ याद दिलाता था प्राचीन इतिहास की कि कभी सैकडो हजारो साधुओ के सघ भी होते थे, जिनके दर्शन पूजा-भक्ति कर लोग अपने को कृत-कृत्य मानते थे। एक ओर दिगम्बर साधु कलशाभिषेक को देखकर अपूर्व आनन्द ले रहे थे तो दूसरी ओर इन्द्र रूप मे सैकडो नर-नारी भगवान पर कलश ढाल रहे थे। अपार जन-समूह यत्रतत्र बैठकर, खडे होकर, जयकार के साथ कलशाभिषेक देख अपने को धन्य मान रहे थे।

समाज के वयोवृद्ध नेता आदरणीय साहु श्रेयांसप्रसादजी, श्री लालचन्द भाई आदि अनेक ढलती उम्र में भी युवकोचित उत्साह से योगदान कर रहे थे। इस महोत्सव के प्रेरणास्रोत रहे परम पूज्य एलाचार्य मुनि श्री विद्यानन्दजी महाराज। सहस्राब्दि मस्तकाभिषेक का यह विशाल आयोजन पूज्य विद्यानन्दजी महाराज की एक और अपूर्व देन रही है। इससे भारत के समूचे जैन समाज में एक अपूर्व जागृति हुई। ऐसे ऋषिराज को शत शत नमस्कार!

—भंवरलाल न्यायतीर्थ

सम्पादक—वीरवाणी,
मढ़िनारो का रास्ता, जयपुर

भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत

भगवान् बाहुबली सहस्राब्दि महा-मस्तकाभिषेक के सन्दर्भ की स्मृतियों को सुरक्षित रखने के लिए 'महोत्सव दर्शन' ग्रन्थ के प्रकाशन की योजना हो रही है यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई।

हमारी महान् नेता, प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने स्वयं उपस्थित होकर भगवान् बाहुबली के चरणो मे नमन किया। देश के कोने-कोने से सैकडो विचारधाराओ के, हजारो हजार लोग वहाँ एकत्र हुए और उन्होंने उन महान् क्षणो का आनन्द लिया।

महोत्सव को एलाचार्य मुनि विद्यानन्दजी के साथ-साथ अनेक महान् साधु सन्तो का सान्निध्य और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक विशेषताओ के कारण यह महोत्सव इस शताब्दि की एक महान् घटना के रूप मे याद किया जायेगा।

इतने महान और इतने विशाल आयोजन की ऐसी शानदार सफलता के लिए आयोजको को बधाई देना चाहता हूँ। उनकी सफलता हमारे धार्मिक इतिहास मे भावी पीढ़ियो के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी, और भगवान बाहुबली के पावन उपदेशो, अहिंसा, सह-अस्तित्व और अपरिग्रह का विश्व भर मे प्रचार होगा।

—श्री जे. के. जैन संसद सदस्य, नई दिल्ली

शान्ति विधाता तीर्थ और मनमोहक मूर्ति

तीर्थाटन हमारे परिवार का वार्षिक अनुष्ठान रहा है। छुटपन से प्रायः सभी तीर्थों पर जाता रहा। संसद सदस्य के नाते भी बहुत भ्रमण करना पड़ा, परन्तु श्रवणबेलगोल जैसा शान्ति-विधाता तीर्थ और गोमटेश्वर बाहुबली जैसी मन को मोह लेने वाली मूर्ति अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिली।

भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि समारोह केवल श्रवणबेलगोल के लिए नहीं वरन पूरे देश के लिए ऐतिहासिक महोत्सव था। यह मेरा सौभाग्य था कि राज्य-स्तरीय समिति के सदस्य के रूप मे प्रारम्भ से ही मैं इस आयोजन के साथ जुड़ा रहा। श्रीयुत साहु श्रेयांसप्रसादजी के स्नेह और अपनत्व के कारण भी बार-बार उत्सव की योजना मे, उसकी चर्चा में और गोमट-स्वामी की वन्दना यात्रा मे शामिल होने का अवसर मिला। मैंने अनुभव किया कि जिस दूर-दर्शिता पूर्वक, जिन सूक्ष्म विचार विमर्शों के साथ, इस महान् आयोजन की सयोजना की जाती रही, उसमे सफलता की कोई आशका रहती ही नही है। इस पर जहां वीतरागी तपस्वी सन्तो का आशीष प्राप्त हो, कर्मयोगी स्वामीजी और उनके साथ श्री वीरेन्द्र हेगडे जैसे कर्मठ व्यक्तित्व दिन-रात सलग्न हों, वहाँ सफलता तो निश्चित थी ही। उत्सव ने अपनी हर दिशा मे सफलता अर्जित भर नही की, उसका एक कीर्तिमान स्थापित कर दिया। श्रीमान साहुजी की अद्‌भुत कार्य क्षमता और विलक्षण कार्य पद्धति बहुत कुछ सीखने की प्रेरणा देती है।

हमारी पीढ़ी को इस महोत्सव का साक्षी बनने का अवसर मिला यह सचमुच हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य था।

—निर्मलचन्द्र जैन, पूर्व संसद सदस्य, जबलपुर

अतुलित क्षमता और अनन्त संभावनाएँ

भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव वर्ष में दिगम्बर जैन समाज ने एक नवीन चेतना का अनुभव किया था। उस महान् आयोजन की अनेक उपलब्धियों में से 'दिगम्बर जैन महासमिति' की स्थापना एक उल्लेखनीय उपलब्धि रही। महासमिति के ही माध्यम से मुझे समाज सेवा के क्षेत्र मे कुछ कार्य करने का अवसर मिला।

श्रीयुत साहु श्रेयांसप्रसादजी के मार्ग दर्शन मे श्रवणबेलगोल मे सहस्राब्दि महोत्सव मनाने की अनेक महत्वपूर्ण योजनाएँ बनती रहीं। उन पर निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार वर्षों तक काम होता रहा। महत्वपूर्ण बात यह रही कि इस देशव्यापी अनुष्ठान मे जन सहयोग भी देशव्यापी ही मिलता गया। चाहे जनमंगल महाकलश का भारत-भ्रमण हो, या महासमिति के द्वारा कलशो का अग्रिम आवटन हो, अथवा श्रवणबेलगोल में लाखो नर-नारियों की उपस्थिति का प्रसंग हो, ऐसा लगता था कि सारे देश की दिगम्बर जैन समाज मानसिक रूप से इस उत्सव के साथ जुड गयी है और समाज का बच्चा-बच्चा इसकी सफलता के लिए अपना योगदान अर्पित करने को स्वयं आतुर हो रहा है। सम्भवतः यह भगवान बाहुबली की अकल्पनीय, कठोर, परिषह-जयी तपस्या का ही माहात्म्य था कि जहाँ एक ओर धर्मानुरक्त नर-नारी गृहस्थो का समूह श्रवणबेलगोल मे खिचता चला आया, वही विरक्ति की प्रतिमूर्ति, नग्न दिगम्बर साधु, आर्यिका माताएं और त्यागी जन भी, इतनी बड़ी संख्या में एकत्रित हुए, जितने वर्तमान मे पहिले कही भी एक साथ देखने-सुनने में नही आये थे।

मेरे लिए वह सौभाग्य का क्षण था जब एक दिन आदरणीय बाबूजी श्रीयुत साहु श्रेयांस प्रसादजी ने मुझे अपना विशेष सहायक बनाकर महोत्सव के विभिन्न विभागो के बीच समन्वय का दायित्व सौंपा। इस कठिन दायित्व के निर्वाह के लिए मुझे अपने सहयोगियो के साथ बार-बार श्रवणबेलगोल जाने, और कई-कई दिन तक वहाँ रहने का अवसर मिला। इसी व्यवस्था के निमित्त रूप वहाँ 'पी. एस. जैन गेस्ट हाउस' का निर्माण सहज ही हो गया। उक्त दायित्व के वहन के लिए अपने परिवार के साथ, सभी आवश्यक साधनों सहित, फरवरी 81 मे पूरे समय श्रवणबेलगोल मे ही मेरा डेरा रहा। वहाँ श्री नेमीचन्दजी हर समय प्रमुख सहयोगी रहे।

इस प्रकार मुझे इस महोत्सव के अवसर पर पूरे समय वहाँ रहकर आयोजन के कार्यों में हाथ बँटाने का अवसर मिला। पूज्य एलाचार्यजी के सत्परामर्श, कर्मयोगी भट्टारक स्वामीजी का अथक परिश्रम और बाबूजी के सुयोग्य मार्ग दर्शन मे यह महोत्सव जो ऐतिहासिक सफलताएँ अर्जित करता रहा, मैं उनका प्रतिक्षण का प्रत्यक्ष साक्षी रहा हूँ। इतने भारी समुदाय का आह्वान करने पर संयोजकों को उनकी व्यवस्था के लिए कदम-कदम पर अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है, अतः उसमें त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। परन्तु श्रवणबेलगोल पहुँचने वाले यात्रियों के समूह यह अनुभव करते थे कि ऐसी त्रुटियाँ बहुत विरल ही हैं। इस

महोत्सव की शानदार सफलता ने हम सबको प्रसन्नता तो दी ही, यह भी बोध करा दिया कि दिगम्बर जैन समाज में अपनी संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए अतुलित क्षमताएं और अनन्त सम्भावनाएँ मौजूद हैं। क्षमता का यह पुंज सदा समाज के उत्कर्ष मे उपयोग होता रहे, यही मेरी भावना है।

अभिषेक करके लौटते समय सहसा मन मे विचार कौंधा कि विरक्ति में अनुरक्ति का संचार, अथवा विराग में राग का यह विपुल समावेश, क्या प्रतिमा को किसी प्रकार प्रभावित कर सका ? और तत्काल मेरी दृष्टि विन्ध्यगिरि के शीर्ष पर पहुँच गयी, जहाँ दृष्टिगोचर हुई भगवान् की वही मूर्ति, पूर्व की तरह शान्त, सौम्य, नासाग्र दृष्टि और निर्विकार। मानो हम सबको सन्देश दे रही हो कि 'बाह्य समावेश तरंगो के उत्पादन की सम्भावना जुटा सकते हैं, परन्तु वे स्वभाव की शुद्धता को, उसके अतीन्द्रिय आनन्द को खण्डित नही कर सकते, अतः यही अनुकरणीय है, यही साध्य है।'

परमात्मा के ऐसे विराट निर्विकार रूप को शत-शत नमन !

—श्री रमेशचन्द्र जैन, पी एस. मोटर्स, दिल्ली



पुण्य से प्राप्त पावन प्रसंग

इस चराचर सृष्टि में नारी जाति का विशिष्ट स्थान है। नारी के बिना सृष्टि की रचना, समाज का संघटन, जातीय कार्य-कलाप और गृहस्थ-जीवन, सब अधूरे हैं। विश्व की समस्त विभूतियों में अर्धांश नारी ही है। वास्तव में देखा जाय तो नारी ही विश्व की जननी, पालिका, शिक्षिका, स्वामिनी और निःस्वार्थ सेविका है। आदर्श नारी के रूप में सीता, चन्दना, कालल-देवी, अत्तिमब्बे, और मैनासुन्दरी आदि के उदाहरण हमारे सामने हैं। वर्तमान इतिहास के निर्माण मे भी नारी का योगदान किसी से छिपा नही है। नारी के बिना मानवता का इतिहास अधूरा-सा रहेगा। इसमे भी कोई सन्देह नहीं है कि जीवन के संघर्षों में धर्म, साहित्य और राज-नीति आदि सभी क्षेत्रों मे नारी पुरुषों के ही समान महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है और निभाती रहेगी।

श्रवणबेलगोल मे विन्ध्यगिरि पर विराजमान गोमटस्वामी की वह जयवन्त प्रतिमा भी एक नारी की ही भावना और संकल्प से निर्मित हुई है। उन महिलारत्न मातेश्वरी काललदेवी की वह पावन भावना सचमुच सराहनीय थी।

भगवान् बाहुबली का जीवन हमें उस मार्ग की ओर प्रेरित करता है जिस मार्ग पर वह महा-तपस्वी इस युग के आदि मे चला था। बाहुबली का वह पुण्य आख्यान, हजार साल से नहीं, वरन युग के प्रारम्भ से ही, विश्व को आत्म निग्रह और त्याग की प्रेरणा देता चला आ रहा है। हार कर तो भूमि का स्वामित्व सभी को छोड़ना पड़ता है, पर बाहुबली ने इसे जीत कर भी छोड़ दिया। जीतकर त्यागने मे जो महानता, जो निस्पृहता प्रस्फुटित होती है, हार कर छोड़ भागने में वह कहाँ? बाहुबली का वह त्याग अप्राप्ति की मजबूरी नही, अपितु उपलब्ध या अर्जित का परित्याग था। वह उदार मन की सहज विरक्ति का स्वाभाविक परिणाम था। इसीलिए उनकी क्षमा, कायर की मजबूरी नहो, वीर का आभूषण कही जाती है।

बाहुबली की यह विशाल मूर्ति बाहुओ के असीम बलधारी की नहीं, अपितु असीम आत्म-बलधारी महापुरुष की मूर्ति है। उनकी भुजाओ का बल तो मात्र युद्धभूमि में तब प्रदर्शित हुआ जब वे पोदनपुर के राजा थे। परन्तु यह प्रतिमा किसी राजा की नहीं वरन परम तपस्वी, आत्म-निष्ठ और अनन्त क्षमा के पुंज साधक की है। इसमें उनके अजेय तपोबल का धीरोदात्त रूप प्रस्फुटित हुआ है। उन जैसा स्वाभिमानी और दृढ़-सकल्पी व्यक्तित्व, इतिहास में तो दूर पुराणों में भी दिखाई नहीं देता।

ऐसा अनुपम त्यागी, ऐसा कठोर तपस्वी, और दृढ़ मनस्वी व्यक्ति था वह महामानव कि जिसने पीछे मुड़कर देखना सीखा ही नहीं था। जो जब युद्ध में जमा तो जमा ही रहा और विजयश्री का वरण करके ही शान्त हुआ। इसी प्रकार जब अपने में रमा तो ऐसा रमा कि बाहर की ओर फिर उसने देखा ही नहीं। कर्म शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करके उसने इस युग में

मुक्ति का प्रथम पथिक होने का गौरव प्राप्त किया। उन भगवान् बाहुबली की ऐसी लोक प्रसिद्ध और अद्वितीय मूर्ति का महामस्तकाभिषेक अत्यन्त भक्तिभाव से, देशी और विदेशी, लाखों यात्रियों की उपस्थिति में मनाया गया। ऐसे महोत्सव में सक्रिय भाग लेने का अवसर मिलना हमारे पुण्य का ही निदर्शक है।

अतिशय पुण्य से प्राप्त इस पावन प्रसंग पर उन पतितपावन पुरुषोत्तम के चरणों में शतशः नमन !

—श्रीमती विजया देवेन्द्रप्पा, दावणगेरे

महामस्तकाभिषेक में मेरी अनुभूति

मेरी समझ में इस महान् महोत्सव की विशेषता के मूल मे, कारण-पुरुष पूज्य एलाचार्य श्री विद्यानन्दजी और स्वस्तिश्री भट्टारक स्वामीजी हैं। इन दोनो के नेतृत्व मे ही यह पूरा कार्य सम्पन्न हुआ है। लाखों जनो को यह मगल-महोत्सव देखने का अवसर मिला और साथ ही अनेक आचार्यों, मुनिराजों और त्यागियो के एकत्र दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी अवसर पर श्रवणबेलगोल क्षेत्र का नव-निर्माण भी हो गया। लाखो रुपयो के खर्च से कई नूतन भवनो का निर्माण और प्राचीन मन्दिरो का जीर्णोद्धार कराया गया। ऐसे महान् सन्तो के प्रति कर्नाटक की जनता सदैव कृतज्ञ है।

मेले में धर्म-प्रभावना के लिए एक धार्मिक वस्तु-प्रदर्शनी भी लगायी गयी थी। स्वामीजी ने उसकी सज्जा की व्यवस्था का मुझे अवसर प्रदान किया। मैंने उस प्रदर्शनी में भगवान् आदि-नाथ के पंचकल्याणक सम्बन्धी दृश्यों को सजाया। मिट्टी, लकडी, कांच, प्लास्टिक और प्लास्टर आफ पेरिस से मैं अनेक कलाकृतियाँ बनाकर लायी थी। इस प्रदर्शन मे भगवान् की जननी के सोलह स्वप्न, गर्भावतरण, जन्माभिषेक, दीक्षा महोत्सव और निर्वाण कल्याणक आदि के दृश्यों को अलग-अलग कोष्ठकों में प्रदर्शित किया गया था। इनमे काँच की बोतल और छोटी शीशियों से निर्मित समवसरण की रचना सर्वाधिक आकर्षण और प्रमुख दर्शनीय वस्तु थी। इसमें रंग-बिरंगे जिन बिम्बों और दीपालंकारों की शोभा मनोहर थी। मुझे यह सब करने का अवसर मिला यह मेरा परम सौभाग्य था।

हर साल प्रकृतिजन्य मेघ-समूह भगवान् के मस्तक पर जल वृष्टि करके कृतार्थ होते हैं, परन्तु मानव कई वर्षों के बाद, बहुत परिश्रम के साथ, अनेक अनुकूल सुयोग जुटाकर, यह महामज्जन करने का अवसर पाता है। तीर्थंकर का वैभव, देवागमन, समवसरण-विहार, भक्तों का जन-समुद्र आदि प्रसंग हम केवल पुराणो में पढ़ते थे। श्रवणबेलगोल में इस पंचम काल में भी ऐसे दृश्यों को प्रत्यक्ष देख पाना जनता का सौभाग्य था। ऐसा अवसर हमें और भी भव-भव में मिलता रहे और वह हमारे भवसागर पार करने का निमित्त बने, बस, यही कामना है।

—श्रीमती शान्ता सन्मतिकुमार, हुमचूर

महोत्सव अपने आपमें विशिष्ट

गोमटेश्वर भगवान् बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि के महामस्तकाभिषेक महोत्सव का संक्षिप्त इतिहास 'सहस्राब्दि महोत्सव दर्शन' के रूप में तैयार करने का निर्णय एक महत्त्वपूर्ण निर्णय है। इस ऐतिहासिक महोत्सव का इतिहास चिरस्थायी बनाना अत्यन्त आवश्यक कार्य था।

मैंने भी इस महाधार्मिक महोत्सव का यथासम्भव लाभ लिया है। मैं समझता हूँ इस महोत्सव के कार्यक्रम की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि केवल भारत के लोगों को ही नहीं, भारत के बाहर की जनता को भी, दिगम्बर जैन धर्म क्या है उसका सचित्र प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त हुआ। इस महोत्सव के साथ-साथ भगवान् बाहुबली की विशाल व भव्य दिगम्बर मूर्ति के विज्ञापन द्वारा सारा जगत यह जान सका कि दिगम्बर जैन धर्म के नग्न दिगम्बर रूप धारण करने वाले साधु क्या हैं। यह महोत्सव अपने आपमे एक विशेषता रखता है।

8, राडन स्ट्रीट
कलकत्ता-20

—रतनलाल गंगवाल

भविष्य के लिए मार्गदर्शन

"श्रवणबेलगोल में गोमटेश्वर बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि महोत्सव हुआ, जो वास्तव में जैन धर्म के इतिहास की एक महान् घटना है। जैन धर्म इधर बहुत वर्षों से आहिस्ते-आहिस्ते शिथिल पड़ता जा रहा था, इसे एक नयी प्रेरणा मिली इस महोत्सव से। केवल दक्षिण में ही नहीं, समस्त भारत में खूब प्रचार-प्रसार का कार्य हुआ। पूज्य श्री विद्यानन्दजी महाराज व कर्मयोगी भट्टारक स्वामीजी एवं समाज के प्रमुख महान् व्यक्तियों एवं कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम द्वारा महामस्तकाभिषेक महोत्सव व्यवस्थित ढंग से आयोजित एवं सम्पन्न हुआ। तथा इस माध्यम से धार्मिक व जन-कल्याण का अद्भुत कार्य हुआ। इसकी प्रेरणा भविष्य में मार्गदर्शन करती रहेगी। इस तरह का पुनीत स्वर्ण अवसर देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसके लिए मैं अपने को धन्य समझता हूँ।

55, नलिनीसेट, रोड,
कलकत्ता-7,

—भवमल सेठी

जो किसी ने नहीं देखा

श्रवणबेलगोल की प्रथम यात्रा विद्यार्थी जीवन मे ही कर चुका था। बाद में भी अवसर मिलता रहा। पर इस महोत्सव के अवसर पर वहाँ की यात्रा का प्रलोभन कुछ निराला ही था। आयोजन की तैयारियों की जैसे-जैसे जानकारी मिलती रही, वैसे ही वैसे वहाँ जाने की अभिलाषा बलवती होती गयी। नीरज की अमर रचना 'गोमटेश-गाथा' के प्रायः सारे अध्याय, प्रथम लेखन के साथ ही मुझे पढने को मिलते रहे हैं। मैं ही उनका प्रथम पाठक बना, तब तो मन की वह इच्छा अदम्य हो उठी और अभिषेक के तीन सप्ताह पूर्व मैं उन्ही के साथ श्रवणबेलगोल पहुँच गया। फिर पूरे माहभर वहाँ रहकर, हम लोग वहाँ से लौटे। मेरे लिए गोमटेश-गाथा के जीवन्त आख्यानों की पृष्ठभूमि मे इस महातीर्थ की वन्दना का आनन्द कुछ अलग ही रहा।

श्रवणबेलगोल मे जो-जो देखा उस सबका वर्णन तो इस ग्रन्थ मे श्री नीरज ने किया ही है, अन्य अनेक जनों ने भी अपने अपने ढंग से उसे अभिव्यक्त किया है। मैं सिर्फ वह याद करना चाहता हूँ जो मैंने वहाँ नही देखा। मुझे विश्वास है कि वह किसी ने भी नही देखा होगा।

उदाहरण के लिए विन्ध्यगिरि की सीढियो को हम लोगो ने कभी जन-विहीन नही देखा, प्रातःकाल से देर रात्रि तक यात्रियो का कोई न कोई समूह उन सीढियो पर आता-जाता रहता ही था। मेले में कभी भी रात्रि के समय बिजली गुल होती नही देखी। आधी रात तक घूमते हुए भी कमेटी कार्यालय व चामुण्डराय भवन के द्वार कभी बन्द नही देखे। देर-सबेर पहुँचनेवाले यात्रियों के स्वागत के लिए वहाँ हमेशा कोई न कोई उपस्थित रहता ही था। आचार्यों और साधु-सन्तों के दरबार कभी खाली नही देखे। मुनिराजो की सेवा में कुछ न कुछ लोग बने ही रहते थे। अनेक तो वहीं, ग्रेनाइट के उन खुरदरे पत्थरों पर लेटकर ही रात बिता लेते थे।

महोत्सव के बहु-आयामी कार्यक्रमो की संरचना कुछ इस प्रकार की गयी थी, कि प्रातः से मध्यरात्रि तक उनमें कभी अन्तराल देखने को नही मिला। रोज लगभग अठारह घण्टो तक चामुण्डराय मण्डप मे या भद्रबाहु मण्डप में, विन्ध्यगिरि पर या चन्द्रगिरि पर, मठ मे या भण्डारी बस्ती में कहीं न कहीं, कोई न कोई, कार्यक्रम चलता ही रहता था। लोगो मे उत्साह इतना था कि वयोवृद्ध और अस्वस्थ लोगो को भी वहाँ कभी थकित और निराश नहीं देखा गया। न जाने कौन-सी लगन, कौन-सी प्रेरणा थी जो सदैव उन सब मे उत्साह और शक्ति का संचार करती रहती थी। और अन्त मे यह कहे बिना मैं नही रह सकता कि कई दिन आठों याम सम्पर्क में रहते हुए भी कर्मयोगी भट्टारक स्वामीजी को मैंने कभी उद्विग्न नहीं देखा। इतनी कठिन जिम्मेदारियों के बीच भी साहु श्रेयांसप्रसादजी को एक बार भी तनाव-ग्रस्त नही देखा और स्वामीजी के सहायक श्री विश्वसेन को कभी मैंने आराम से बैठे नहीं देखा। इसी से तो मैं कहता हूँ कि यह महोत्सव अद्भुत था, अपूर्व था और अविस्मरणीय था।

—श्री अमरचन्द जैन, मेडिकोर लेबोरेटरीज, सतना,

वहाँ क्या नहीं था ?

व्यक्ति धर्मक्षेत्रों में सुखानुभूति एवं परिणामों की निर्मलता हेतु जाता है। सभी तीर्थों पर उसे कुछ न कुछ उपलब्धियाँ होती ही हैं। भगवान् बाहुबली सहस्राब्दि महा-मस्तकाभिषेक 1981 एक ऐसी ही अनुभूति है जो कभी भुलाई न जा सकेगी। सोचना पड़ेगा कि वहाँ क्या नहीं था। आखिर सभी कुछ तो था—अरहत बाहुबली, आचार्य, मुनिगण, व्रती और अव्रती श्रावक-श्राविकाएँ आदि।

अभिषेक जहाँ शारीरिक शुद्धि का साधन है, वहाँ भावात्मक रूप में इसका सम्बन्ध परिणामों की निर्मलता से भी है। अन्तरंग कषायों का प्रक्षालन जब तक न हो, हमारे सभी आयोजन निष्फल हैं। अतः मैंने तो वहाँ ऐसा ही अनुभव किया कि अभिषेक की सार्थकता परिणामों की निर्मलता में है।

ऐसे उत्सव जीवों के पुण्यों से ही फलित होते हैं। आयोजकों का साधुवाद जिन्होंने इतना बड़ा आयोजन सरल बना दिया। श्री साहु श्रेयांसप्रसादजी आदि का प्रयत्न सराहनीय रहा।

धन्यवाद !

1266, चांदनी चौक,
दिल्ली-6

—शीलचन्द जैन,

जीवनभर याद रहेगी

इस मस्तकाभिषेक के अवसर पर त्यागीजनों के दर्शन, प्रतिमाजी की छवि, जैन समाज मे उत्साह, इसका अन्तर्राष्ट्रीय प्रचार और जैन धर्म की जानकारी, इस समारोह की विशेषता थी। यह जीवन भर याद रहेगी।

बाजार खजांचियान,
सिविल लाइन्स, हिसार

—महावीरप्रसाद जैन, एडवोकेट

अत्यन्त प्रभावक और चिर-स्मरणीय

श्रवणबेलगोल में जैनों का विशाल मेला व बाहुबलीजी का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ। मेरी दृष्टि मे यह जैनो का एक अत्यन्त सफल एवं अभूतपूर्व आयोजन रहा। इस विशाल आयो- में प्रत्येक हृदय अलौकिक आनन्द से परिपूर्ण हो रहा था। मैं पूरे आयोजन में तथा इसके पूर्व भी वहाँ रहा हूँ, अतः मैं पूर्ण विश्वास और पूरे बल से कह सकता हूँ कि यह आयोजन अत्यन्त प्रभावकारी एव चिरस्मरणीय सिद्ध हुआ। इसने सब अफवाहो को झुठला दिया। आदि से अन्त तक सारा प्रबन्ध बहुत ही सुन्दर रहा।

विशेष उल्लेखनीय तीन बातें मुझे बहुत अच्छी लगीं—प्रथम, पहाड पर ऊपर जाने एवं बैठने की समुचित व्यवस्था एव अभिषेक का मनोमुग्धकारी दृश्य। अभिषेक के दृश्य को देखकर मेरा मन अलौकिक आनन्द मे मग्न हो गया था। मेरा रोम-रोम पुलकित हो उठा था। जीवन के वे क्षण धन्य हैं।

दूसरी महत्त्वपूर्ण बात थी कर्नाटक राज्य-सरकार द्वारा खाद्य-पदार्थों एवं दुग्ध आपूर्ति की सुन्दर व्यवस्था। किसी वस्तु का अभाव नही हुआ। तीसरी किन्तु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात थी इतने आचार्य, साधु एवं साध्वियों का एक साथ दर्शन एवं उनके अमूल्य प्रवचन। इतना बड़ा समागम सम्भवतः कभी कही भी देखने और सुनने को नही मिला। इतने अधिक श्रमण साधु सम्भवतः प्रथम बार इस पचम काल मे एक स्थान पर एकत्र हुए थे। उनके ठहरने, रहने व आहार की बड़ी सुन्दर व्यवस्था, समिति की ओर से की गयी थी। इसके लिए पूज्य भट्टारकजी साधुवाद के पात्र हैं।

सम्पूर्ण आयोजन के पीछे एलाचार्य श्री विद्यानन्दजी एवं कर्मयोगी भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी का निर्देशन, प्रेरणा एवं प्रयत्न रहे हैं। इस छोटी अवस्था मे पूज्य भट्टारकजी ने बड़ी सूझ-बूझ एवं दूरदर्शिता का परिचय दिया। उनके अथक परिश्रम से हम अत्यधिक प्रभावित हुए हैं। इस वृद्धावस्था मे साहु श्रेयांसप्रसाद जैन का सहयोग व सरकार से ताल-मेल बैठाना भी चिरस्मरणीय रहेगा।

—राय देवेन्द्रप्रसाद एडवोकेट

मुरारी, नन्द भवन,
गोरखपुर

समाज संगठन को बल मिला

भगवान् गोम्मटेश्वर बाहुबलीजी के महामस्तकाभिषेक पर सपरिवार भगवान् बाहुबली के दर्शनों का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्रवणबेलगोल में इस शुभ अवसर पर एलाचार्य उपाध्याय मुनि विद्यानन्दजी विराजमान थे। जिनेन्द्र भगवान् की वाणी को जन-जन तक पहुँचाने का जो कार्य भगवान् महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव पर, तथा भगवान् बाहुबली के महामस्तकाभिषेक पर जो योगदान तथा मार्ग-दर्शन मुनिश्री जी का रहा है, वह पिछले 1000 वर्ष के इतिहास में किसी त्यागी का नहीं रहा। ऐसे मुनिश्री जी के चरण स्पर्श कर जो शान्ति मुझे मिली, वह भी सौभाग्य की बात है।

माननीय साहु श्रेयांसप्रसादजी की अध्यक्षता में इतने विशाल आयोजन का होना बड़ी बात है। इसका असली लाभ यह हुआ कि भारत की विभिन्न दिशाओं से आये हुए लाखों यात्रियों का एक दूसरे से सम्पर्क हुआ तथा विचार-विमर्श हुआ, जिसके कारण समाज मे संगठन को बल मिला तथा धर्म प्रचार व प्रसार में काफी गति आयी।

मुनि श्री विद्यानन्दजी तथा अन्य मुनि महाराजो के प्रयत्नो से ऐसे ही विशाल आयोजन होते रहेंगे, जिससे कि समाज में एकता की भावना बलवती होगी तथा जन-साधारण तक जिनेन्द्रवाणी पहुँचती रहेगी।

—नरेशकुमार जैन आबीपुरिया
संयुक्त महामन्त्री
दिगम्बर जैन महासमिति

महामस्तकाभिषेक : चित्र-सूची

रंगीन चित्र

श्याम-श्वेत चित्र

□ कर्नाटक के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री आर० गुण्डुराव जिनके सक्रिय सहयोग से महोत्सव निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

1. महामस्तकाभिषेक समिति की बैठक : सर्वश्री साहु श्रेयांसप्रसादजी जैन, स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, श्री जी. एच. आदिराजैया, डॉ० धनंजय गुडे एवं श्री प्रेमचन्द जैन।
2. महामस्तकाभिषेक समिति की बैठक : सर्वश्री एस. एस. इंगले, श्री चंदूलाल शाह, सौ० विजया देवेन्द्रप्पा, श्री पाटिल एवं श्री कागवाल।
3. 27 जनवरी 1981 को श्रवणबेलगोल में स्टेट लैवल कमेटी की बैठक।
4. 27 जनवरी 1981 को श्रवणबेलगोल में स्टेट लैवल कमेटी की बैठक।
5. नलकूप का निरीक्षण करते हुए : सर्वश्री ए. बी. जखनूर, श्री एच. सी. श्रीकण्ठैया, मुख्यमंत्री गुण्डुराव, ए. पी. एल. नन्जुडस्वामी मैनेजिंग डायरेक्टर और श्री नंजप्पा कार्यकारी अभियन्ता जलप्रदाय।
6. 1967 के अभिषेक-मंच का एक दृश्य। हेलीकॉप्टर से पुष्पवृष्टि उस महोत्सव का विशिष्ट आकर्षण था।
7. सौ साल पूर्व का विन्ध्यगिरि जब गोमटस्वामी तक जाने के लिए सीढियाँ नही थीं।
8. महामस्तकाभिषेक 1967 : चरणाभिषेक।
9. महामस्तकाभिषेक 1967 : गोमटेश्वर के चरणों में बिखरी पाखुरियाँ।
10. महामस्तकाभिषेक 1967 : दुग्ध से अभिषिक्त गोमटेश्वर।
11. महामस्तकाभिषेक 1967 : अभिषेक की तैयारी मे साहु शान्तिप्रसाद जैन।
12. महामस्तकाभिषेक 1967 . आचार्यश्री देशभूषणजी से व्यवस्था सम्बन्धी मार्गदर्शन लेते हुए एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी के उपाध्यक्ष साहु शान्तिप्रसाद जैन।
13. महामस्तकाभिषेक 1967 आचार्यश्री देशभूषणजी की वन्दना करते हुए तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री एस निजलिंगप्पा। स्वर्ण पिच्छी लेकर खडे हुए जैन मठ श्रवणबेलगोल के श्री भट्टाकलक चारुकीर्ति स्वामीजी।
14. जैन मठ के पूर्व भट्टारक स्वस्तिश्री नेमिसागर वर्णी चारुकीर्ति स्वामीजी, श्रवण-बेलगोल।
15. जैन मठ के पूर्व भट्टारक स्वस्तिश्री भट्टाकलंक चारुकीर्ति स्वामीजी, श्रवणबेलगोल।
16. स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के पुन. पट्टाभिषेक की तैयारी। गुरुपीठ वन्दना, मठ मन्दिर। (4 अप्रैल 1982)
17. पालकी मे शोभा-यात्रा।
18. पुन: पट्टाभिषेक की बधाईयाँ।
19. जनमंगल महाकलश।
20. 29 अगस्त, 1980 को दिल्ली में जनमंगल महाकलश का आयोजन। सभामंच की एक झाँकी।
21. प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने जनमगल महाकलश का प्रवर्तन किया।
22. स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने श्रीमती गांधी को महाकलश की ताडपत्रांकित

प्रशस्ति भेंट की।

23. श्रीमान् साहूजी ने वहीं श्रीमती गाँधी से महोत्सव के अवसर पर श्रवणबेलगोल पधारने का अनुरोध किया।

24. श्री साहुजी ने श्रीमती गाँधी को महाकलश प्रवर्तन के उद्देश्य और प्रगति की जानकारी दी।

25. 18 जनवरी, 1981 को बम्बई में महाकलश का स्वागत किया गया। समारोह में उपस्थित थे महाराष्ट्र के मन्त्री श्री जवाहरमल दरडा, मुख्यमन्त्री श्री ए०आर० अन्तुले और केन्द्रीय मन्त्री श्री प्रकाशचन्द सेठी और उन सबका स्वागत करते हुए श्री साहु श्रेयांस प्रसाद जैन।

26. महाकलश के स्वागत के लिए खड़े हैं राज्य मंत्री श्री जवाहरमल दरडा, मुख्य मन्त्री श्री अन्तुले, स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, श्री प्रकाशचन्द सेठी, साहु श्रेयांस प्रसाद जैन और श्री हंसमुख लाल शाह।

27. मठ के प्रागण मे महाकलश का आगमन।

28. भारत-भ्रमण के उपरान्त भण्डारी बस्ती के समक्ष महाकलश की स्थापना।

29. 20 फरवरी 1981 को गोमटेश के प्रागण मे जनमंगल महाकलश की उपलब्धियो को रेखांकित करने के लिए साहु श्रेयांस प्रसाद जी की अध्यक्षता मे समारोह आयोजित हुआ।

30. कल्याणी के मार्ग पर महाकलश की शोभा-यात्रा।

31. स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने मुख्य अतिथि श्री वीरप्पा मोइली को महा-कलश की अनुकृति भेंट की।

32. महाकलश-यात्रा के सचालक विद्वान प० जयसेन और डॉ० प्रकाशचन्द जैन को समारोह मे सम्मानित किया गया।

33. 'विद्यानन्द निलय' का उद्घाटन करते हुए श्री अक्षय कुमार जैन।

34. जनमगल महाकलश की सफलता के लिए देश की जनता को धन्यवाद देते हुए भैया मिश्रीलाल गगवाल। मच पर दिखाई दे रहे हैं—श्री वीरेन्द्र हेगड़े, श्री प्रेमचन्द जैन, एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्द जी, सेठ लालचन्द हीराचन्द, मुख्य अतिथि श्री वीरप्पा मोइली, स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी तथा अन्य साधु वृन्द।

35. जिनकांची मठ से प्रवर्तन करता हुआ तमिलनाडु का महाकलश श्रवणबेलगोल में। वाहन पर विराजमान हैं स्वस्तिश्री चारुकीर्ति स्वामीजी और जिनकांची मठ के भट्टारक श्री लक्ष्मीसेन स्वामी जी।

36. गरीबों को वस्त्र वितरण किया गया। जनकल्याण का यह यह कार्य मठ-मन्दिर मे से सम्पन्न हुआ (11 फरवरी 1981)।

37. वस्त्र प्राप्त करने के लिए ग्रामीण महिलाओ की भीड़।

38. सभी आचार्य परस्पर विनय करते थे। अपने गुरु आचार्यरत्न देशभूषणजी महाराज को सहारा देकर एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी मंच पर ले जाते हुए।

39. प्रवचन करते हुए एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी, साथ में विराजमान हैं—आचार्य विमलसागरजी, आचार्य कुन्थुसागरजी और आचार्य सुमतिसागरजी ।

40. मच पर सभी मुनिराज अपने पदानुसार विराजमान होते थे। आचार्य विमलसागरजी और आचार्यरत्न देशभूषणजी के मध्य बोलते हुए एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी।

41. ज्ञान, ध्यान और जप-तप मे ही मुनियों का समय व्यतीत होता था।

42. परस्पर विचार-विमर्श करके इन धर्म-गुरुओं ने 'श्रमण परिषद' की प्रस्तावना तैयार की।

43. केन्द्रीय सचारमन्त्री श्री सी. एम. स्टीफन ने गोमटेश्वर का गुणानुवाद किया (9 फरवरी 1981)।

44. श्री स्टीफन के भाषण का कन्नड अनुवाद प्रस्तुत किया श्री विश्वसेन ने।

45. मुख्यमन्त्री श्री आर. गुण्डुराव के साथ परामर्श।

46. चामुण्डराय मण्डप मे अपार जन-समूह एकत्र हुआ (9 फरवरी 1981)।

47. श्री आर. गुण्डुराव और श्री सी. एम. स्टीफन ने दीप प्रज्वलित करके महोत्सव का शुभारम्भ किया।

48. सिहासन पर आसीन हैं एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी, आचार्यरत्न देशभूषणजी महाराज, आचार्य विमलसागरजी और उनके बाद स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी तथा अन्य साधुगण।

    आचार्यों, मुनियो के सानिध्य मे चामुण्डराय मण्डप में महोत्सव का उद्घाटन दिनाक 9 फरवरी 1981 को हुआ।

    चित्र मे बैठे दिखाई दे रहे हैं सर्वश्री साहु श्रेयांसप्रसाद जैन, सेठ लालचन्द हीराचन्द, सहकारिता मन्त्री श्री एस. सी. श्रीकण्ठैया, केन्द्रीय सचारमन्त्री श्री सी. एम. स्टीफन, मुख्यमन्त्री श्री आर. गुण्डुराव, श्रीमती वरलक्ष्मी गुण्डुराव और सौ० विजया देवेन्द्रप्पा।

49. महोत्सव समिति के अध्यक्ष के नाते साहु श्रेयासप्रसाद जैन ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए उद्घाटन के लिए अतिथियो को आमन्त्रित किया।

50. उत्सव की सफलता के लिए कर्नाटक शासन का सकल्प घोषित करते हुए मुख्यमन्त्री।

51. जैन सस्कृति की उदारता और श्रवणबेलगोल की महत्ता को रेखाकित करते हुए भारत सरकार के सचारमन्त्री श्री सी. एम. स्टीफन।

52. श्रा एच. सी. श्रीकण्ठैया अध्यक्षीय भाषण करते हुए।

53. उद्घाटन-सभा मे महिलाओ की उपस्थिति भी पर्याप्त रही।

54. संचारमन्त्री ने गोमटेश्वर का एक रुपये मूल्य का बहुरगी डाक टिकट जारी करके 'प्रथम दिवस आवरण' के साथ एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी को भेंट किया।

55. सहकारिता मन्त्री ने आचार्यरत्न देशभूषणजी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त किया (9 फरवरी 1981)।

56. नान्दीमंगल विधान से पंचकल्याणक के अनुष्ठान प्रारम्भ हुए। शान्तिमन्त्र के सवा लाख जप का संकल्प किया गया।

57. इन्द्र सभा की एक छवि। विराजते हैं—कुबेर श्री देवकुमारसिंह कासलीवाल, सौधर्म इन्द्र और इन्द्राणी श्री व श्रीमती लालचन्द हीराचन्द, ईशानेन्द्र दम्पती श्री एम. सी. अनन्तराजैया और अष्टकुमारी देवियाँ।
58. तीर्थंकर की जननी की सेवा मे देवागनाओं का समूह।
59. बाललीला उत्सव मे नेमिजिनेश की लुभावनी छवि।
60. बाललीला उत्सव की शोभायात्रा मठ-मन्दिर के सामने।
61. राजसभा मे भेंट लेकर उपस्थित होते हुए छप्पन देशों के पृथ्वीपति।
62. आहार के लिए विहार करते हुए योगी तीर्थंकर। सामने दिखाई दे रहे हैं, पूज्य आर्यनन्दीजी मुनिराज, पडिता सुमति बाई शाह, आचार्य विमलसागरजी और नान्दणी के मठाधीश जिनसेन भट्टारकजी।
63. विरागी नेमिनाथ को आहार कराते हुए आचार्य विमलसागरजी और मुनिश्री आर्यनन्दीजी।
64. मधुर स्वर लहरी में अनूदित उत्साह और उल्लास।
65. कर्नाटक के पारम्परिक वाद्य।
66. केरल के चण्डे वादकों का समूह।
67. कल्याणी बस्ती की परिक्रमा मे बहुरंगी शोभायात्रा।
68. शोभा-यात्रा मे सम्मिलित चतुर्विध संघ।
69. महोत्सव में उपस्थित गणमान्य अतिथियो के साथ नरसिंहराजपुरा, कोल्हापुर, कारकल, मूडबिद्री, श्रवणबेलगोल के भट्टारक स्वामीजी और धर्मस्थल के अधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगड़े। सामने साहु श्रेयासप्रसादजी के साथ खड़े हुए सहकारिता मन्त्री श्री श्रीकण्ठैया।
70. लातूर मठ के भट्टारकश्री विशालकीर्ति और कोल्हापुर मठ के भट्टारकश्री लक्ष्मीसेन स्वामीजी।
71. जिनालय मे प्रवेश करती हुई नवप्रतिष्ठित जिनप्रतिमा। आगे-आगे चल रहे हैं, स्वादि-मठ के श्री भट्टाकलंक स्वामीजी, नान्दणी के श्री जिनसेन स्वामीजी, कोल्हापुर के श्री लक्ष्मीसेन स्वामीजी और स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी।
72. क्षेत्र की शासनदेवता कुष्माण्डिनी महादेवी।
73. कल्याणी सरोवर में फव्वारा, 'जल-वृक्ष'।
74. कल्याणी सरोवर में विद्युत्-छटा।
75. दीपालंकृत भण्डारी बस्ती और विंध्यगिरि।
76. दीपालकृत चामुण्डराय-मण्डप।
77. विंध्यगिरि की पश्चिमी सीढ़ियो पर विद्युत् व्यवस्था का प्रारम्भ—विद्युत्मन्त्री श्री अश्वत्थ रेड्डी द्वारा (15 फरवरी 1981)।
78. गंगवाल अतिथि-निवास का उद्घाटन, श्री वीरेन्द्र हेगड़े द्वारा (19 फरवरी 1981)।
79. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आयोजित 'जैन कला चित्र प्रदर्शिनी' का उद्घाटन श्री रमेशचन्द जैन द्वारा।

80. प्रदर्शिनी का अवलोकन कर रहे हैं, साहु श्रेयांसप्रसाद जैन, सर सेठ भागचन्द सोनी। चित्रों का विश्लेषण श्री नीरज जैन कर रहे हैं।

81. गोमटेश का गुणानुवाद करने वाले दम्पती रचनाकार श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन और श्रीमती कुन्था जैन अपनी रचनाएँ एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी को भेंट करते हुए।

82. श्री रंगनाथ शर्मा के संस्कृत नाटक 'बाहुबली-विजयम्' का विमोचन किया—साहु श्रेयांसप्रसादजी जैन ने और प्रथम प्रति भेंट की स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी को।

83. आचार्यरत्न देशभूषणजी महाराज की पचासवी दीक्षाजयन्ती के अवसर पर उन्हें 'विनयांजलि' अर्पित करते हुए श्री वीरेन्द्र हेगड़े।

84. सर्वधर्म सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर पेजावर मठ के स्वामीजी का स्वागत, स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी और महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयास-प्रसादजी द्वारा।

85. उडूपी के पेजावर मठाधीश श्री विश्वेशतीर्थ स्वामी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। साथ में बैठे हैं—स्वामी बालगगाधरजी, स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, मुनि सुशील कुमार जी एवं उनके शिष्य तथा एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी महाराज।

86. बाहुबली के कालजयी उपदेशों की अमृत वर्षा की सिद्धान्ताचार्य पंडित कैलाशचन्द्रजी शास्त्री ने।

87. मेजर जनरल श्री एस. एस. उबान ने सम्मेलन मे गुरुवाणी का प्रतिपादन किया।

88· श्री ए. आर. नागराज द्वारा सम्पादित 'रत्नाकर शतक' का विमोचन अध्यक्ष द्वारा।

89. श्री वीरेन्द्र हेगडे ने अध्यक्षीय भाषण मे सर्वधर्म समभाव पर जोर दिया।

90. महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयांसप्रसाद जैन ने अतिथि वक्ताओ का सम्मान व अभिनन्दन किया।

91. आदि चुंचुनागिरि के मठाधीश श्री बालगगाधर स्वामीजी के साथ परिचर्चा।

92. श्रवणबेलगोल यात्रा पर राष्ट्रनायक जवाहरलाल नेहरू का आत्मोद्गार।

93. 21 फरवरी 1981 को मध्याह्न में हेलीपेड पर श्रीमती इन्दिरा गांधी का आगमन हुआ। अगवानी करने वालो मे हैं—मुख्यमन्त्री श्री गुण्डुराव, महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयासप्रसाद जैन, और कर्नाटक के राज्यपाल श्री गोविन्द नारायण।

94. सभा मच पर महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्रीमान् साहुजी ने माला और शाल से प्रधानमन्त्री को सम्मानित किया।

95. महोत्सव समिति की ओर से श्रीमती इन्दिरा गांधी को चन्दन मे उकेरी गई गोमटेश्वर की अनुकृति भेंट की गई।

96. श्रीमती गांधी ने गोमटेश्वर के चरणों में चढ़ाने के लिए चाँदी जड़ा हुआ नारियल स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी को भेंट किया।

97. जैन संस्कृति के महत्त्व को रेखांकित करता हुआ श्रीमती गांधी का भाषण उत्सुकता और प्रसन्नता से सुना गया।

98. प्रधानमन्त्री की सभा में श्रोताओं की प्रथम पंक्ति। दिखाई दे रहे हैं राय बहादुर

श्री हुकमचन्द जैन, केन्द्रीय पेट्रोलियम एवं ऊर्जामन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी, साहु अशोककुमार जैन और श्री प्रेमचन्द जैन।

99. श्रीमती गांधी को सुनने के लिए दूर विन्ध्यगिरि तक उमड़ता हुआ जनसमूह।

100. सभा मंच के दायीं ओर छात्रावास-भवन तक प्रधानमन्त्री की सभा में महिलाओं की अपार भीड़ थी।

101. टी. वी. पर महामस्तकाभिषेक की छवियाँ।

102. विचार-विमर्श : श्री रमेशचन्द जैन, साहु श्रेयांसप्रसाद जैन एवं श्री विम्बसेन।

103. आकाशवाणी पर महोत्सव का आँखों-देखा हाल प्रसारित करते हुए स्वस्तिश्री भट्टारक स्वामीजी।

104. महोत्सव की छवि अंकित करने के लिए देशी-विदेशी छायाकारों की भीड़।

105. सहस्राब्दी अभिषेक का रजत निर्मित कुम्भ।

106. समाचार-पत्रों में मस्तकाभिषेक।

107. विन्ध्यगिरि पर जाता हुआ जन-समुदाय।

108. वर्षों की साध पूरी हुई गोमटेश के द्वार पर पहुँच कर।

109. कोई पैदल, कोई डोली के सहारे।

110. मन्दिर के बाहर ही हमारे फील्ड मार्शल डॉ. धनंजय गुंडे स्वयं कलशधारियों के अनुज्ञापत्रों की जाँच कर रहे हैं।

111. लोह पाइप का ढाँचा खड़ा किया गया।

112. अभिषेक का मंच तैयार हो गया।

113. महोत्सव समिति के अध्यक्ष और स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी अभिषेक मंच पर जाते हुए।

114. अभिषेक पूर्व निरीक्षण और व्यवस्था।

115. अभिषेक के लिए जल-संग्रह करते हुए पूजा समिति के सदस्य।

116. अभिषेक सामग्री तैयार करते हुए पूजा समिति के सदस्य।

117. कलश भरकर देते हुए पूजा समिति के सदस्य श्री सुरेशचन्द जी।

118. तैयारियों का निरीक्षण करते हुए पूजा समिति के संयोजक श्री डी. निर्मलकुमार और डॉ० धनंजय गुंडे।

119. आँगन में सजाये हुए एक हजार आठ कलश।

120. पुरोहितो और प्रतिष्ठाचार्यों द्वारा कलश-स्थापना।

121. ऊपर से कलशों की छवि।

122. संकल्प का शुभारम्भ।

123. हाथोंहाथ मंच तक जाते हुए कलश।

124. कलश ऊपर पहुँचाने की व्यवस्था।

125. प्रथम शताब्दी कलश लेकर अभिषेक मंच पर जाते हुए कलकत्ता के गंगवाल बन्धु।

126. इस प्रकार प्रारम्भ हुआ महामस्तकाभिषेक।

127. अभिषेक देखते हुए मुनियों का समूह।

128. महोत्सव के दर्शनार्थ आतुर जनमेदिनी।
129. अभिषेक करने के लिए प्रतीक्षा करता हुआ जनसमुदाय।
130. मंच पर चारों तरफ भक्तों की भीड़।
131. विशिष्ट अतिथियों के मच पर प्रतीक्षा की घडियाँ।
132. अभिषेक की छटा से परितृप्त साहु परिवार।
133. समापन धारा के चतुष्कोण-कलश और पूर्ण कुम्भ।
134. अपने आराध्य का अनोखा रूप।
135. सवरती पीढी के हाथ में अभिषेक का उत्तराधिकार।
136. स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी के साथ 'कर्मयोगी' अलकरण जोडने वाला मान-पत्र समर्पित कर रहे हैं—सिद्धान्ताचार्य पं० कैलाशचन्द्रजी शास्त्री।
137. कृतज्ञता ज्ञापन के अवसर पर स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी का अभिनन्दन किया सेठ लालचन्द हीराचन्द ने।
138. स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी को माल्यार्पण करते हुए सरसेठ भागचन्द सोनी।
139. महोत्सव समिति के अध्यक्ष साहु श्रेयासप्रसादजी जैन को समाज का अभिनन्दन दिया गया श्री प्रेमचन्द जैन के द्वारा।
140 साहुजी को 'श्रावक शिरोमणि' की सर्वोच्च उपाधि से सयुक्त मानपत्र भैया मिश्रीलाल गंगवाल ने समर्पित किया।
141. स्व० साहु शान्तिप्रसाद जैन की समाज-सेवाओं को रेखांकित करनेवाला प्रशस्ति-पत्र उनके पुत्र साहु अशोक कुमार जैन को सर सेठ भागचन्द सोनी द्वारा भेंट किया गया।
142. भद्रबाहु मण्डप का उद्घाटन श्री प्रेमचन्द जैन द्वारा।
143. श्रीराम कला केन्द्र दिल्ली द्वारा मचित 'महाप्राण बाहुबली' नृत्य नाटिका का समारम्भ सेठ लालचन्द हीराचन्द द्वारा। चित्र मे लेखिका श्रीमती कुन्था जैन, आशीर्वाद देते हुए स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी और सास्कृतिक कार्यक्रम समिति के संयोजक श्री ओमप्रकाश जैन।
144. नृत्य-नाटिका एक दृश्य।
145. भद्रबाहु मण्डप मे दर्शक समुदाय—दिखाई दे रहे हैं—श्रीमती दुर्गा जैन, साहु अशोक-कुमार जैन, श्री वीरेन्द्र हेगडे, श्री रत्नत्रयधारी जैन, श्री रतनलाल गगवाल और श्रीमती अलका जालान।
146. सांस्कृतिक कार्यक्रम की झाँकी।
147. संस्कृत नाटक 'बाहुबली-विजयम्' का एक दृश्य।
148. नृत्य-नाटिका का एक दृश्य।
149. चामुण्डराय मण्डप में धर्मस्थल की मण्डली द्वारा प्रस्तुत भरत-बाहुबलि यक्षगान। यशस्वती और सुनन्दा के साथ आदिनाथ ऋषभदेव।
150. विख्यात संगीतकार श्री रवीन्द्र जैन द्वारा प्रस्तुत धार्मिक संगीत। साथ में बैठे हैं, श्री ताराचन्द प्रेमी।

151. चामुण्डराय मण्डप में सांस्कृतिक कार्यक्रम में मन्त्र-मुग्ध दर्शक। दिखाई दे रहे हैं: श्री नेमीचन्द जैन, साहु श्रेयांसप्रसाद जैन एवं श्री प्रेमचन्द जैन। पिछली पंक्ति में श्री अश्विनीकुमार जोशी व श्री के. नेमीनाथ।

152. कवि-दरबार का एक दृश्य।

153. सम्मेलन में कन्नड़ भजन प्रस्तुत करते हुए दावणगिरि का बी. टी. परिवार।

154. कवि दरबार के शुभारम्भ का दीप प्रज्वलित किया सरसेठ भागचन्द सोनी ने।

155. चामुण्डराय मण्डप में विद्वत् समाज के अभिनन्दन के लिए साहुजी की अध्यक्षता में एक गरिमापूर्ण आयोजन किया गया। दिखाई दे रहे हैं सर्वश्री पं० पन्नालाल जैन, ब्र० धर्मचन्द शास्त्री, पं० महेश जैन मेरठ, पं० स्वतन्त्र विदिशा, ब्र० रवीन्द्र, डॉ० जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल आगरा, श्री बाबूलाल पाटोदी इन्दौर, श्री नीरज जैन सतना, पं० दरबारीलाल कोठिया वाराणसी, पं० सत्येन्द्र सेठी, श्री वीरेन्द्र हेगड़े धर्मस्थल, साहू श्रेयासप्रसाद जैन, स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, पं० जगन्मोहन लाल शास्त्री, पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री वाराणसी, श्री लक्ष्मीचद्र जैन, सरसेठ भागचन्द सोनी, पं० श्रीकान्त भुजबली शास्त्री आदि।

156. सम्मानित होने वाले प्रथम विद्वान् थे बड़े पण्डितजी श्री जगन्मोहनलाल शास्त्री, कटनी। उन्हें सहारा दे रहे हैं उनके शिष्य श्री नीरज जैन।

157. सरसेठ भागचन्द सोनी ने उसी कार्यक्रम में गोमटसार के टीकाकार सिद्धान्ताचार्य पं० कैलाशचन्द्रजी शास्त्री का सम्मान किया।

158. महोत्सव के समय मुनि समुदाय को स्वाध्याय कराने वाले डॉ० दरबारीलाल कोठिया का अभिनन्दन साधुओं के लिए हर्ष का विषय रहा।

159. हिन्दी तीर्थंकर के सुधी सम्पादक डॉ० नेमीचन्द जैन ने सम्मानित होने पर एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

160. केरल के प्रतिष्ठाचार्य प० श्रीकान्त भुजबली शास्त्री का अभिनन्दन हुआ।

161. श्रवणबेलगोल के पं० शान्तिराज शास्त्री सम्मान प्राप्त कर रहे हैं।

162. समाज के वरिष्ठ पत्रकार 99 वर्षीय श्री मूलचन्द कापड़िया का अभिनन्दन करते हुए साहु श्रेयासप्रसाद जैन।

163. आचार्यश्री शान्तिसागर महाराज के प्रमुख गुणानुरागी विद्वान् पं० सुमेरचन्द दिवाकर का अभिनन्दन भण्डारी बस्ती में से सम्पन्न हुआ।

164. महिला सम्मेलन: दीप प्रज्वलित किया श्रीमती रत्नम्मा हेगड़े ने।

165. महिला सम्मेलन (18 फरवरी 1981): एक झाँकी। सम्मेलन प्रारम्भ होने वाला है। तैयारी में खड़ी दिखाई दे रही हैं—सौ० राजलक्ष्मी, सौ० सरयू दफ्तरी, डॉ० सरयू दोसी, श्रीमती रत्नम्मा हेगड़े, सौ० हेमावती वीरेन्द्र हेगड़े और प्रो० प्रेमकुमारी।

166. आचार्यों के सान्निध्य में महिला सम्मेलन प्रारम्भ हुआ।

167. महिला सम्मेलन में उद्घाटन भाषण करती हुई मुख्य अतिथि श्रीमती रत्नम्मा हेगड़े।

168. दत्तचित्त होकर सम्मेलन की कार्यवाही हृदयंगम करती हुई देश भर की महिला प्रतिनिधि।

169. पद्मश्री पंडिता सुमतिबाई शाह का अभिनन्दन महिला सम्मेलन का विशिष्ट कार्यक्रम रहा।

170. महिला सम्मेलन की स्मरणिका 'माधवी' का विमोचन किया श्रीमती दुर्गा जैन ने। चित्र में प्रथम पंक्ति में बैठी हैं 'मार्ग' की सम्पादक डॉ० सरयू दोसी, श्रीमती कमलावती, साहु श्रेयांस प्रसाद जैन, श्रीमती जयप्पा बागी हुबली, श्रीमती रत्नम्मा हेगड़े, श्रीमती सरयू दफ्तरी। विमोचन करा रही हैं सम्मेलन की सयोजिका सौ० विजया देवेन्द्रप्पा।

171. श्रीमती दुर्गा जैन ने आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज को पत्रिका समर्पित की।

172. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा का अधिवेशन (25 फरवरी 1981)।

173. सहस्र यात्रियों के सघ के सघपति श्री उम्मेदमलजी पांड्या को सम्मानित किया गया (25 फरवरी 1981)।

174. सर सेठ भागचन्द सोनी श्रमण-परिषद् के सूत्रधार नियुक्त किये गये।

175. मुनिराजो के मध्य बोलते हुए मूडबिद्री के स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी।

176. कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी को परामर्श देते हुए मुनिश्री आर्यनन्दीजी महाराज।

177. महोत्सव के मंच पर केशलोच और नवीन दीक्षाओ के कार्यक्रम प्राय: सम्पन्न होते रहे।

178. श्रमण परिषद् की प्रस्तावना के लिए चिन्तित होकर प्रयत्न किया—क्षुल्लक सन्मति सागरजी ने।

179. पंचमुष्टि केशलोच दीक्षा का दूसरा विधान होता था।

180. कभी-कभी अनेक दीक्षाएँ एक साथ सम्पन्न हुईं।

181. आर्यिका दीक्षाएँ भी अनेक होती रही।

182. इधर केशलोच हो रहा है और उधर विजयमती माताजी संसार की असारता पर उपदेश देकर वैराग्य की बेल सींच रही हैं।

183. दीक्षा के अवसर पर भैया मिश्रीलाल गगवाल के भक्ति भीने भजन अपनी अलग छाप छोड़ते थे।

184. भरतेश प्रदर्शनी—प्रवेश द्वार।

185. दीप प्रज्ज्वलित करके भरतेश प्रदर्शनी का उद्घाटन किया श्रीमती वरलक्ष्मी गुण्डुराव ने। साथ मे दिखाई दे रही हैं सयोजक मण्डल की सदस्याएँ (9 फरवरी 1981)।

186. धार्मिक प्रदर्शिनी मे बाहुबली की जीवन-झांकी दिखा रही हैं रचनाकार श्रीमती नवरत्ना इन्दुकुमार।

187. समवसरण की रचना की है श्रीमती शान्ता सन्मतिकुमार ने।

188. जैन वाङ्मय के प्रकाशन सस्थान भारतीय ज्ञानपीठ का स्टाल।

189. कर्नाटक सूचना एव प्रसार विभाग ने महोत्सव को दूर-दूर तक विज्ञापित किया।

190. 'गोमटवाणी' जैन मठ का मुख-पत्र।

191. इण्डियन टेलीफोन इण्डस्ट्रीज के मण्डप में आधुनिकतम दूरभाष के उपकरण प्रदर्शित किये गये।

192. कन्नड़ भाषा और संस्कृति विभाग की मनोरम झाँकी।

193. खुले मैदान में संवारा गया एक प्राकृतिक प्रदर्शन : 'संसार वृक्ष'।

194. गोमटेश्वर के दर्शनार्थ जाते हुए कर्नाटक के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री देवराज अर्स।

195. महोत्सव की संयोजना में अपने निकटतम सहायक श्री रमेशचन्द जैन का सम्मान करके साहू श्रेयांसप्रसादजी भी आह्लादित हुए।

196. साधु-समुदाय की बहुमूल्य सेवाओं के लिए आयुर्वेदज्ञ श्रीसुशील कुमारजी का सम्मान।

197. दिल्ली के श्री ओमप्रकाश जैन द्वारा प्रदत्त 'साहित्य संस्कृति पुरस्कार' कर्मयोगी चारुकीर्ति स्वामीजी के द्वारा वितरित कराया गया। चित्र मे श्री ओमप्रकाश जैन के साथ पुरस्कृत व्यक्ति हैं—गोम्मटवाणी के प्रमुख सवाददाता श्री अशोककुमार, कुमारी शोभा अनन्तराजैया, लेखनी और तूलिका की कलाकार कुमारी मधु, गुरुवाणी की सयोजिका कुमारी प्रीति जैन और मच की प्रशसित कुमारी सन्ध्या आर. नागराज। पुरस्कार वितरण श्री वीरेन्द्र हेगडे और सरसेठ भागचन्दजी सोनी के सान्निध्य में साहू श्रेयांसप्रसादजी जैन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

198. दिगम्बर जैन महासमिति और भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्षों ने मिलकर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामन्त्री श्री जयचन्द लोहाड़े का सम्मान किया।

199. श्री श्रेयांस प्रसादजी ने सक्रिय सहयोग के लिए श्री सुरेन्द्र हेगडे को सम्मान से प्रोत्साहन दिया।

200. कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के सान्निध्य मे श्रीमान् साहूजी ने अभिनन्दन-पत्र देकर मुख्यमन्त्रीजी को सम्मानित किया।

201. पूजा-समिति के सयोजक श्री डी. निर्मलकुमार का सम्मान किया गया।

202. श्री गुण्डुराव को कलश प्रतीक का उपहार भी दिया गया।

203. उपनगरों की बनावट के लिए पूरे समय दौड़-धूप करने वाले मेरठ के बाबू सुकुमार-चन्द्रजी जैन की सेवाओ का समापन समारोह मे विशेष उल्लेख हुआ।

204 सभा-संयोजन और पूरे मेले की विद्युत्-व्यवस्था के सराहनीय योगदान के लिए व्याख्यान केसरी श्री ए. आर. नागराज का सम्मान किया गया।

205. महिला सम्मेलन की सयोजिका सौ० विजया देवेन्द्रप्पा ने अध्यक्ष महोदय के हाथों से सफलता का प्रमाण-पत्र प्राप्त किया।

206. त्यागी सेवा-समिति के संयोजक श्री एम. सी. अनन्तराजैया का सम्मान किया गया।

207. 'विशिष्ट अतिथि-समिति' के संयोजक डॉ० आर. एस. सुरेन्द्र के साथ 'प्रदर्शिनी-समिति' के संयोजक श्री एच. बी. आदिराजैया का सम्मान श्रीमान् साहुजी ने किया।

208. पंडाल समिति के संयोजक श्री एच. एन. नागरत्नराज अध्यक्ष द्वारा प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए।

209. मेलानगर की बिजली सजावट के लिए अथक परिश्रम करने के उपलक्ष्य में ठेकेदार श्री देवराज को भी सम्मानित किया गया।

210. एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी के सचिव श्री जी. वी. शान्तिराजु को सम्मानित किया गया।

211. श्री एच. एम. राजेन्द्रकुमार का सम्मान।

212. जलप्रदाय कार्यकारी अभियन्ता श्री नजप्पा को श्रीमान् साहुजी ने शाल उढ़ाकर सम्मानित किया।

213. शासकीय अधिकारियों को सम्मान के प्रतीक स्वरूप रजत कलश भेंट किये गये। कलश प्राप्त करते हुए राजस्व आयुक्त श्री एम. के. वेंकटेशन।

214. पुलिस महानिरीक्षक श्री जी. वी. राव ने श्रीमान् साहुजी के सान्निध्य में स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी से कलश प्रतीक प्राप्त किया।

215. स्वास्थ्य उपनिदेशक श्री इकबाल अहमद को गोमटेश्वर की अनुकृति प्रदान करके सम्मानित किया गया।

216. हासन मे पुलिस अधीक्षक श्री भोंसले कर्मयोगी स्वामीजी से रजत कलश प्राप्त करते हुए।

217. श्रवणबेलगोल मे जनमगल महाकलश स्मारक भवन का शिलान्यास श्री ज्ञानी जैलसिंह ने किया। चित्र मे दिखाई दे रहे हैं—श्री देवकुमारसिंह कासलीवाल, श्रीमान साहुजी, श्री वीरेन्द्र हेगड़े एव श्री कैलाशचन्द्र चौधरी।

218. समाज के वयोवृद्ध प्रतिष्ठाचार्य विद्वान् प० नाथूलालजी शास्त्री इन्दौर का ज्ञानी जैलसिंह द्वारा सम्मान।

219. गोमटेश्वर जन कल्याण ट्रस्ट की ओर से सिलाई मशीनो का वितरण करके ट्रस्ट की जनहितैषी गतिविधियो का शुभारम्भ ज्ञानीजी ने किया।

220. गोमटेश्वर जनकल्याण ट्रस्ट की ओर से ज्ञानीजी का अभिनन्दन करते हुए कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी और श्रावक शिरोमणि साहु श्रेयासप्रसाद जैन।

221. 20 दिसम्बर 1981 को ही एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्दजी ने श्रवणबेलगोल से धर्मस्थल की ओर विहार किया। महोत्सव समिति की ओर से उन्हें चन्दन मजूषा मे 'विनयाजलि' ज्ञानीजी द्वारा समर्पित की गई।

222. महोत्सव की व्यवस्था मे स्वयसेवक दलो का सराहनीय योगदान रहा। ध्वज लेकर जाते हुए स्वयसेवको का एक दल।

223. अतिशय भीड में पथ की बाधाओं को बचाकर मुनियों के समूह को विहार कराना कठिन कार्य था। स्वयसेवको की तत्परता से वह सफलतापूर्वक सम्भव होता रहा।

224. यात्रियो को अव्यवस्था मे बचाने और भीड़ मे व्यवस्था बनाये रखने के लिए स्वयं-सेवको को सूझ-बूझ के साथ शक्ति से भी काम लेना पड़ा।

225. आवश्यकता पड़ने पर स्वयंसेवकों को होम गार्ड्स और पुलिस दोनों की सहायता प्राप्त होती रही।

226. विन्ध्यगिरि की तलहटी में तम्बुओं का नगर।

227. पर्यटन विभाग का एक सूचना-पट।

228. स्वास्थ्य विभाग का बोर्ड।

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
11	1	अनुपम	अनुपम निधि को अग्नि में
18	10	राजकाल	राजकाज
23	5	संघर्ष	संचय
26	34	मानव	मानस
30	17	अभिनय	अभियान
32	14	स्वमेव	सदैव
35	33	चककते	चमकते
60	13	प्रकार	प्रकरण
77	26	समस्त	सम्मत
90	5	ज्ञान	शान
93	12	परिक्रम	परिश्रम
100	33	शीलवर्णी	शीलवर्णी शान्तराज
101	16	श्री नेमिसागरजी वर्णी	श्री चेल्लुवर स्वामीजी
109	2	राजकिशोर जी	राजकृष्णजी
142	4	निश्चल	निश्छल
204	27	तरंगाचित	तरंगायित
216	29	में	ने
233	7	झालावाड़	भीलवाड़ा
248	14	यात्रा को	यात्रा करके
253	14	देवभूषण	देशभूषण
263	अंतिम	श्रमणसंख्या	श्रमण संस्था
273	32	ही	नहीं
295	17	1980	1981
328	4	मुकट	मुक्त

229. उपनगर का सूचना-पट।

230. इण्डियन आयल कॉरपोरेशन के अस्थायी पेट्रोल पम्प का उद्घाटन, स्वस्तिश्री चारु-कीर्ति भट्टारक स्वामीजी द्वारा।

231. अस्थायी डाकघर, लेटर-बाक्स और मोबाईल पोस्ट-ऑफिस।

232. उपनगरो की बसावट एक दृष्टि मे।

233. प्रत्येक उपनगर में व्यवस्था, चिकित्सा, सुरक्षा में नियोजित कर्मचारियों के लिए बनाई गई झोंपड़ियाँ।

234 से 288 तक : शताब्दी कलशधारी तथा महोत्सव समिति और एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग समिति के कतिपय प्रमुख सदस्य एवं सक्रिय कार्यकर्ता (55 चित्र)

289. एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी का कर्मचारी मण्डल, भट्टारक स्वामी के साथ।

290. महोत्सव से सम्बन्धित उपहार सामग्री।

291. चित्रो का अवलोकन : फोटो समिति के सयोजक।

• •

